गाधीजी इन्दौरमे, १९३५

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

६०

(१६ दिसम्बर, १९३४ – २४ अप्रैल, १९३५)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

भूमिका

प्रस्तुत खण्ड (१६ दिसम्बरसे २४ अप्रैलतक) की प्रारम्भिक तारीखके दो दिन पूव वर्धामे अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके गठनकी घोषणा की गई थी। जे० सी० कुमारप्पा इसके सयोजक तथा मत्री नियुक्त हुए थे। अक्तूबरके आखिरी समयमें बम्बईमे हुए काग्रेस अधिवेशनमे एक प्रस्ताव पारित हुआ था। यह सघ उसीको अमलमे लाते हुए बनाया गया था। उसी अधिवेशनने गाधीजी के बहुत दिनोसे सोचकर किये गये काग्रेस छोडनेके उस फैसलेपर मोहर लगा दी, जिसके कारण पिछले खण्डमे गिनाये गये है।

ये दोनो घटनाएँ एक दूसरेसे सम्बन्धित है ओर राष्ट्रीय सघषके गाधीजी के नेतत्व मे एक ऐसी नई मजिलकी सूचक है जो तात्कालिक परिस्थितियोके सन्दभमे उन्हे सुसगत ही नही, अनिवाय तक प्रतीत हुई थी। उस समय सारा देश ऐसे दमनकारी कानूनोकी गिरफ्तमे जकडा हुआ था, जिनकी टीका करते हुए गाधीजी को यह कहना पडा था कि ऐसा दमन चक्र ब्रिटिश भारतके इतिहासमे अभूतपूव है। अपने इस कथनके औचित्यके विषयमे उन्होने कहा, "जलियावाला बागकी याद मेरे दिमागमे बिलकुल सजीव है। मैने १८५७ के सिपाही गदरके बारेमे के ओर मेलेसन द्वारा लिखी पुस्तके पढी है। खैर, तब तो नगी तलवारका खुला खेल था। लेकिन यह दमनचक्र तो छिपा हुआ हथियार है, और इस कारण और भी घातक है" (पष्ठ ५३)। भारतीय जनताकी स्वतन्त्रताकी मागके बारेमे ब्रिटिश सरकारकी नीतिके विषयमे उन्होने कहा "उन्होने निश्चित रूपसे यह नीति अपना ली है कि जनताकी मागको स्वीकार न किया जाये। जो उन्होने पहले कभी करनेकी हिम्मत नही की, आज वे उसे कर रहे है। उन्होने एक नया दशन अपना लिया है" (पष्ठ ४१५)। देश इस पूरी शक्तिसे चलाये जा रहे दमन चक्रका प्रतिरोध करनेकी स्थितिमे नही था। उसका उत्साह क्षीण हो चला था और उसकी मनोदशा यदि निराशासे नही तो पराजयकी भावनासे आक्रान्त थी। लेकिन गाधीजी तब भी आशावान् थे। श्रीमती लिडसेको लिखते हुए उन्होने कहा, हम बहुत कठिन समयसे गुजर रहे है लेकिन मै जानता हूँ कि हेमन्तके बाद वसन्त तो आता ही है (पष्ठ ५५)। गाधीजी की आशा का उद्गम स्रोत अहिसामे उनका विश्वास था। प्रेमाबहन कटकको अपने पत्रमे उन्होने लिखा, "जैसे अहिसाकी शक्ति अपार है वैसे ही अहिसककी शक्ति भी अपार है" (पष्ठ ४२६)। उन्हे इतना ही लगा कि उनकी अहिसाकी परीक्षा हो रही है। उन्होने अगाथा हैरीसनको लिखा, "यदि मुझमे अहिसाका तत्त्व है तो वह सूयकी

तरह स्वयप्रकाशित होना चाहिए" (प० ३०४)। जसा कि उन्होने एक अग्रेज सवाददाताको बताया भी था, काग्रेससे उनके हट जानेके पीछे जो कारण थे उनमे एक मुख्य कारण यह था कि "मै सरकारके राजनीतिक कदमोके बारेमे अपने ऊपर खामोशी थोपना चाहता हूँ।" और "म अहिसामे छिपी हुई सम्भावनाओकी खोज करना चाहता हू ' (पष्ठ ५४)। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके जरिये गावोके पुर्नानर्माणका जो कायक्रम गाधीजी ने हाथमे लिया था उसकी योजना इसी मानसिक स्थितिकी उपज थी। सघके उद्देश्यको स्पष्ट करते हुए उ होने बताया कि "सघको जान-बूझकर गर-राजनीतिक और स्वशासी सगठन बनाया गया है। सघके सदस्य अपनी सदस्यताके दौरान सविनय अवज्ञाके किसी भी अभियानमे भाग न लेनेको वचनबद्ध है। सघके सलाहकार ओर मागदशककी हैसियतसे मै कह सकता हू कि सघका उद्देश्य गाववालोका आर्थिक, शारीरिक और नतिक उत्थान करनेके सिवा ओर कुछ नही है" (पष्ठ १८)।-

सघकी योजना "उन सब उद्योगोको पुनरुज्जीवित और प्रोत्साहित करनेकी थी जो ग्रामीण जीवनके नैतिक और भौतिक विकासके लिए आवश्यक है" (पष्ठ ११७)। उनमे कताई, बुनाई, चमशोधन, तेल निकालना, साबुन बनाना, मधुमक्खी-पालन, चावलकी हाथ-कुटाई और गेहूकी हाथ पिसाई, गुड बनाना, कागज बनाना आदि शामिल थे। जैसी कि उनकी आदत थी, गाधीजी ग्रामोद्योग सघके लिए काय क्रमकी एक सामा य रूपरेखा बनाकर ही सन्तुष्ट नही हो गये, उन्होने उसे कार्या वित करनेकी योजनाको भी ब्यौरेवार बारीकीसे बतलाया। ग्रामोद्योगोके पुनरुज्जीवनके कायका आरम्भ कैसे किया जाये, इस प्रश्नका विस्तत उत्तर देते हुए उ होने कहा, "हमम से हरएक आदमी खाने पीने, पहनने ओढने और अपन नित्यके उपयोगकी चीजोको जाच परख सकता है और विलायती अथवा शहरकी बनी चीजोकी जगह ग्रामवासियोकी बनाई हुई उन चीजोको काममे ला सकता है, जि हे कि वे अपनी मडैयामे या खेत खलिहानमे बहुत सस्ते ओर मामूली ओजारोसे सहज ही तयार कर सकते है" (पष्ठ १२३)। इस योजनाका उद्देश्य, जैसा कि कुछ सदाशयी समा लोचकोको अदेशा था, यह नही था कि देशको कुटीर उद्योगो द्वारा निर्मित ऐसे घटिया मालसे भर दिया जाये जिसे खरीदनेवाला कोई न हो। उ होने कहा "गावोमे रद्दी चीजे बनाने और उ हे बेमनसे खरीदनेवालोके मत्थे मढनेकी तो कोई बात इस काय-क्रममे है नही। एक ही प्रकारकी विदेशी या स्वदेशी चीजोके साथ जब प्रतिस्पर्धाकी कोई बात ही नही तब असफलता का तो सवाल ही नही आता। गावोके लोग खुद तयार करेगे और खुद ही खरीदेगे। अपने बनाये मालको अव्वल तो वे खुद ही खपा लेगे, क्योकि नब्बे फीसदी जनसख्या ग्रामवासियोकी ही है" (पष्ठ ४५५)। इस तरह उद्देश्य यह था कि गावोको शहरोपर निभर रहनेसे और केन्द्रीकृत उत्पादनके क्रूर अकुशसे मुक्त किया जाये ओर इस तरह ऐसी आर्थिक आत्मनिभरताको पुष्ट

किया जाये जो स्वराज्यके लिए विश्वसनीय नीव मुहैया कर दे। कारण, गाधीजी को भारतके लिए बडे उद्योगोकी उपयोगितामे पूरी पूरी शका थी। उनका कहना था कि "भारत जैसा विशाल देश, जहा करोडो व्यक्तियोको वषमे चार महीने बेकार रहना पडता है, बडे उद्योगोको बढावा देकर कैसे खुशहाल हो सकता है? बडे तथा केन्द्रीकृत उद्योगोका अथ यह होगा कि लाखा व्यक्ति बेरोजगार हो जायेगे ओर अगर उनके लिए किसी सम्मानजनक रोजगारकी व्यवस्था नही की गई तो वे भूखो मरेगे" (पष्ठ ११८)।

गाधीजी ने अपने आपको ग्रामीण जनताके केवल आर्थिक हिततक ही सीमित नही रखा। कायक्रम सच्ची अथनीतिपर आधारित हे, यह स्पष्ट करते हुए उन्होने बताया कि "ग्रामवासियोके स्वास्थ्य एव शक्तिकी वद्धि ही उसका उद्देश्य हे' (प० २९४)। इसलिए ज्योही उन्होने उसे कार्यान्वित करनेकी दिशामे काम करना शुरू किया त्योही आनुषगिक पश्न, जो इसम पहले वहुत निश्चित रूपसे नही उठाये गये थे तत्काल उनके लिए महत्त्वपूण बन गये। उदाहरणके लिए, खाद्य सामग्रीके मामलेमे बहुत दिनोसे यह शका की जा रही थी कि मिलकी बनाइ या मिलमे तयार की गयी चीजे, खासकर मिलका कुटा अतिपरिष्कृत (पालिश्ड) चावल, बारीक पिसा आटा और दानेदार शक्कर स्वास्थ्यके लिए हानिकर ह। इस शकाके लिए समुचित आधार हे, यह सिद्ध करनेका काम गाधीजी ने अपने ऊपर ले लिया। खासकर चावलके मामलेमे गाधीजी ने विशेष ध्यान दिया। उन्हाने डाक्टरा, वद्यो, जीव-रसायन-शास्त्रियो ओर वज्ञानिक कायकर्त्ताओको आमन्त्रित किया कि वे इस बातकी जाच पडताल करे कि चावल जब मिलोमे कूटा जाता है ओर पालिश किया जाता है तो उसमे क्या परिवतन हो जाता है। उनका निणय यह था कि पालिश करनेकी प्रक्रियामे चावलकी ऊपरी परतके साथ-साथ उसमे निहित विटामिन बी और प्रोटीन भी नष्ट हो जाते है। गाधीजी ने 'हरिजन' मे एक लेखमालामे इस विषयपर चर्चा की और इस बातकी वकालत की कि चावलका ऊपरी छिलका उसे लकडीकी चक्कीमे दलकर साफ किया जाना चाहिए ताकि उसका पूरा दाना, ऊपरी परत सहित, पूरा निश्चित रूपसे बच जाये। जब यह कठिनाई व्यक्त की गई कि ऐसा चावल हजम कर पाना कठिन होता है तो उन्होने इस बातकी ओर ध्यान दिलाया कि इसका कारण उसका अधिक पोषणयुक्त होना है। उन्होने 'अभ्यस्त रसोइया' के रूपमे अपने अनुभवोपर आधारित चावल पकानेकी एक विधिका सुझाव दिया — कि चावलको कम से कम तीन घटेतक पानीमे भिगोकर रखे और फिर उसे उबलते पानीमे डालकर पकाये और तबतक पकाते रहे जबतक वह एक ठोस लौदा न बन जाये। (पष्ठ १९६, २५३, २८२, ३०२, ३४१)

दूसरी चीज जिसे उन्होने आहारशास्त्रीय विश्लेषणके लिए चुना, वह था दूध प्रश्न यह था कि क्या पोषणकी दष्टिसे गायका दूध किसी तरह भसके दूधसे भिन्न

प्रकारका होता है। उन्होंने एक प्रश्नमाला तयार की और उसे भैषजिक विशेषज्ञोंके पास उनकी सम्मतिके लिए भेजा। उनकी सम्मतियोका साराश देते हुए गाधीजी ने कहा ' सम्मतिया इस बातको पर्याप्त रूपसे सिद्ध करती है कि गायका दूध भैसके दूधसे अच्छा होता है' (पष्ठ २७४)। इसी तरह गुडके मामलेमे निष्कष यह रहा कि वह शक्करसे ३३ प्रतिशत अधिक पोषणकारी है (पष्ठ ३५)। जिसे पालिश न किया गया हो ऐसे हाथ कुटे चावल, हाथके पिसे गेहूँ ओर गुडके सिवा गाधीजी ने दनिक खुराकमे कई सब्जियोकी अनपकी पत्तियोको भी शामिल करनेका सुझाव दिया और इस विषयपर एक अलग लेख भी लिखा। (पष्ठ २५१-५२)

गाधीजी ने गावोकी सफाइपर भी बडा जोर दिया। उन्होने मैला ठिकाने लगानेके तरीके विस्तारसे बतलाये। पूर और फाउलरका हवाला देते हुए उन्होने गावोमे शौचालयोके लिए "छ इच चौडी और एक फुट गहरी" खाइया खोदनेकी सिफारिश की। उन्होने बताया कि इस तरह सारा मैला धरतीके लिए अच्छी खादके रूपमे बदला जा सकता है। ब्रुलटिनीको उद्धत करते हुए उन्होने कहा कि "दिल्लीमे रहने-वाले २,८२,००० मनुष्योके मलेसे जो नाइटोजन प्राप्त होगा, उससे कम-से कम १० हजार और अधिक से-अधिक ९५ हजार एकड जमीनको पर्याप्त खाद मिल सकती है" (पष्ठ ३३१)। उन्होने कहा कि "अगर हम सब भगी बन जाएँ तो यह तो हमे मालूम हो ही जायेगा कि हमे खुद अपने प्रति कैसा बरताव करना चाहिए। हमे यह भी ज्ञात हो जायेगा कि आज जो चीज जहरका काम कर रही है उसे पेड-पौधोके लिए हम किस प्रकार उत्तम खादमे परिणत कर सकते ह" (पष्ठ ३३१)। इस बातका उदाहरण पेश करनेके लिए उन्होने अपने नजदीकी सहयोगियोके साथ वर्धाके एक समीपवर्ती गाव सिदीमे सफाईका काम अपने हाथो करना शुरू कर दिया। (३२९)

आर्थिक और सामाजिक पुनर्निर्माणकी ऐसी व्यापक योजनाके सफल कार्यान्वयनमे बडी सम्भावनाएँ निहित थी। इन सम्भावनाओकी चर्चा करते हुए गाधीजी ने कहा " सघ करोडो गाववालोके लिए आशाका प्रतीक बन जायेगा और शहरमे रहनेवालोको, जो आज शोषक है सच्चा सहायक और सेवक बना देगा। सघ प्रबुद्ध वग और अनपढ जनताके बीच एक जीवन्त सम्बन्ध स्थापित करेगा, मनुष्य-मनुष्यके बीच जो भेद है, उन्हे दूर करनेका प्रयत्न करेगा। गाववाले आज केवल कच्चा माल पदा करते है, सघ उन्हे आत्मनिभर इकाइयोमे बदल देगा" (प० १८)। सरकार इस कायक्रमसे प्रसन्न नही हुई। इसके कारण तो स्पष्ट ही थे। उसे इसमे विध्वसक सम्भावनाओके सिवा और कुछ दिखाई नही दिया और उसने तत्काल एक गोपनीय गश्ती चिठ्ठी जारी की जिसमे हर जगहके अधिकारियोको यह निर्देश दिया गया था कि वे अ० भा० ग्रा० उ० स० के कामपर निगाह रखे। साथ ही उसने "गावोमे काग्रेसकी गतिविधियोके विरुद्ध पेशबन्दी करनेके खयालसे" प्रान्तोको

"गावोके आर्थिक विकास और सुधार कार्योंके लिए" एक करोड रुपये देनेका प्रस्ताव किया। गाधीजी ने कहा "सरकार अगर खुद मेरे कामको अपने हाथमे लेकर मेरे पर तलेकी धरती निकाल दे तो मुझे अपार आनन्द होगा। जो काम मै करना चाहता हूँ, वह बहुत कुछ सरकारके ही करनेका था। जो काम सरकार कर सकती है वह करे, मगर जनताको व्यथ भुलावेमे न डाला जाय।" (पष्ठ ७९ ८०)

भारतके ग्रामीण जीवनको पुनस्फूर्त्ति प्रदान करनेके गाधीजी के प्रयत्नको कुछ सदाशयी मित्रो और समालोचकोने भी अव्यावहारिक माना। उनकी दृष्टिमे अथशास्त्रके नियम मानवीय इच्छाओके अधीन नही थे। गाधीजी का मत इससे भिन्न था। उन्होने कहा "अथशास्त्रके सिद्धान्त गणितकी तरह देशकाल-निरपेक्ष नही होते। ये प्रत्येक देशकी परिस्थितिका अनुसरण करते है। जो देश अन्न उपजानेके बजाय खनिज भर निकालता है उसका अथशास्त्र उस देशके अथशास्त्रसे भिन्न होगा जो अन्न उप जाता हे ओर खनिज नही निकालता। भारत कभी स्वण भूमि थी आज भी हमारे वे पुराने दिन लौट सकते है" (पष्ठ २८०)। ओर फिर गाधीजी को यह विचार भी स्वीकाय नही था कि अथशास्त्रके नियम नीतिसे परे ह। उन्होने कहा "बहुत से नियमोकी तरह आर्थिक नियम भी दो प्रकारके दिखते ह — अच्छे और बुरे। अच्छे नियम सभीके लिए अच्छे होने चाहिए' (पष्ठ ३१)। इसी तरह जब श्रीनिवास शास्त्रीने गाधीजी को यदि उनसे हो सके तो सभ्यताको "जिस रास्ते पर यह कुछ लाख बरस, चलती रही' उसीपर वापस ले जानेका प्रयत्न करनेके लिए फटकारा तो गाधीजी ने जवाबमे लिखा "यदि मै कर सकू तो यकीन मानिए, आधुनिक सभ्यताके नामपर आज जो कुछ चल रहा है, उसे नष्ट कर डालू अथवा उसमे आमूल चूल परिवतन कर दू तथापि लाभकारी ग्रामोद्योगोका पुनरुद्धार करने अथवा उन्हे प्रोत्साहन देनेका काय ऐसे किसी प्रयासका अग नही है" (पृष्ठ ५९-६०)। अपना तात्कालिक उद्देश्य बताते हुए उन्होने कहा, "मेरा प्रथम उद्देश्य तो लोगोकी मनोवत्ति बदलना है। देशी उद्योगोके पक्षमे भी उनकी मनोवृत्ति बदलनेकी उम्मीद रखता हूँ" (पष्ठ ६१ ६२)। और वे जानते थे कि इस सीमित उद्देश्यके लिए भी लम्बे और धैययुक्त प्रयत्नकी आवश्यकता होगी। लेकिन जसा कि उन्होने एक दूसरे प्रसगमे कहा "दुनियामे व्यक्तियोका इतिहास तो अभी बन ही रहा है। काल-भगवानके अनन्त चक्रमे आपके ये हजार या लाख बरस किस लेखेमे आते है?" (पृ० १०५)

फिर कुछ ऐसे कायकर्त्ता थे जिन्होने इस बातपर आपत्ति की कि जहा 'हरिजन'के पृष्ठोका उपयोग मात्र अस्पश्यता-विरोधी आन्दोलनके लिए होना चाहिए था वहा उसे ग्रामोद्योगोके विकासकी चर्चासे ही भरा जा रहा है। गाधीजी का स्पष्टीकरण यह था "गावके कल्याणसे सम्बन्धित किसी भी समस्याका कुल मिलाकर हरिजनोसे घनिष्ठ नाता है, क्योकि हरिजनोकी सख्या भारतकी कुल आबादीका छठा भाग है।

यदि गाववालोको अच्छा चावल और आटा मिले तो इस परिवतनसे हरिजनोको भी उतना ही लाभ होगा जितना शेष लोगोको। लेकिन हरिजन लोगोको एक विशेष अथमे लाभ होगा। चमडा कमाने और कच्चा चमडा तैयार करनेका सारा धन्धा पूरी तरह हरिजनोके ही हाथमे है, ओर आर्थिक दष्टिसे यह धन्धा नई योजनाका सबसे बडा अग होगा।" (पष्ठ १५)

जनताको व्यावहारिक लाभाके अलावा इस कायक्रमने कायकर्त्ताओको जडता और अवसादकी उस स्थितिसे जिसमे वे उस समय जा पडे थे, बचनेका एक अवसर प्रदान किया। इस कायक्रमको पेश करके गाधीजी मानो उन्हे मानवताके उस धममे दीक्षित होनेका आमन्त्रण दे रहे थे जिसके पालनमे, जैसा कि उन्होने राधाकृष्ण की "कन्टेम्परेरी इडियन फिलासफी" के लिए लिखित अपने सक्षिप्त लेखमे घोषित किया था, "हमे प्राणिमात्रकी अनवरत सेवामे तन्मय होना पडेगा।" उन्होने यह भी कहा कि "इस असीम जीवन सागरमे अपना पूण विलयन ओर इसके साथ अपना एकात्मीकरण किये बिना हम सत्यको नही प्राप्त कर सकते।" स्वय उनके लिए तो इस प्रकारकी समाजसेवा आध्यात्मिक दष्टिसे बिलकुल जरूरी थी। "पथ्वीपर इसके परे या इससे अलग कोई सुख नही है" (पष्ठ १२१)। ऐसा प्रतीत होता है कि गाधीजी के लिए यह जरूरत ईश्वर और इश्वरके प्रति व्यक्तिके कत्तव्यके सम्बन्धमे किन्ही अमूत्त दाशनिक विचारोसे नहीं बल्कि गरीबा और दलितोकी दुदशाके विषयमे उस सजीव चितासे पैदा हुई जिसने उन्हे कभी चनसे नही बठने दिया, हालाकि उन्होने कई वर्षोंसे काई आराम नही किया था। "जिसके हृदयमे दावानल जल रहा हो, वह चैनसे कसे बैठ सकता है?" (पष्ठ ४९)

सभी सामाजिक, राजनीतिक ओर आर्थिक प्रश्नोपर गाधीजी के जो भी विचार थे उनका मूल मनुष्यके विषयमे उनकी इस धारणामे था कि वह स्वभाव से नैतिक है—नीतिके प्रश्नकी अवज्ञा वह नही कर सकता। और उन्हे जो कोई सस्था या प्रथा उस स्वभावको नकारती हुई दिखती थी उसका वे विरोध करते थे और उसमे कोई समझौता नही करते थे। यह बात सतति नियमनके प्रश्नपर—जो कि इस समय सावजनिक चर्चाका एक महत्त्वपूण विषय बनता जा रहा था—उनके रखमे विशेष रूपसे स्पष्ट थी। गभ निरोधकोके इस्तेमालका वे खुले दिलसे साफ सीधे शब्दोमे विरोध करते थे। उन्हे इस बातका भय था कि जसे-जसे उनका प्रयोग बढेगा "स्त्री ओर पुरुषोके जीवनका उद्देश्य केवल यौन-सुख ही रह जायेगा।" उनका विश्वास था कि अच्छी तरहसे नियमित परिस्थितियोमे सामान्य स्त्री और पुरुषोके लिए आत्म-सयम कर सकना सम्भव है। उन्होने कहा, "गभ-निरोधक तो वास्तवमे शिक्षित लोगो के लिए ह, जो कि मानव समाजके 'रोगी व्यक्ति' है। मैं उन्हे 'रोगी' इसलिए कहता हूँ क्योकि उनके खान पानने और जो अत्यन्त कृत्रिम जीवन वे व्यतीत कर रहे ह, उसने उनकी इच्छा शक्तिको कमजोर बना दिया है और वे वासनाके दास बन

गये है" (पष्ठ ७४ ७५)। मनुष्य अपना जीवन उस नियमके अधीन नही जीता है जिसके अधीन अन्य पशु जीते है। अपनी इस बातको एक उदाहरणके द्वारा स्पष्ट करते हुए उन्होने कहा "अपनी गरिमासे मडित सिह एक शानदार प्राणी है और उसे पूरा अधिकार है कि वह मुझे खा जाये। लेकिन मुझे इस बातका अधिकार नही है कि मै भी नाखूनदार पजे विकसित कर ल और आपपर झपट पडूँ।" लेकिन मनुष्य आसानीसे अधोगामी पथ चुनने और हिसक पशुकी तरह जीवन बितानेको ललचा जाते है, खासकर तब जब कि वह माग "उसके सामने एक खूबसूरत आवरणसे ढँक कर पेश किया जाता है।" गाधीजी का विश्वास था कि गभ निरोधकोके हिमायती ऐसा ही कर रहे है। गाधीजी ने यह तक भी स्वीकार नही किया कि स्त्रियोकी सुरक्षाके लिए गभ निरोधकोका प्रयोग जरूरी है क्योकि इस प्रसगमे स्त्रीकी स्थिति पुरुषके आक्रमणके शिकारकी है। उन्होने कहा "कोई औरत बेचारी नही है। बेचारी औरत पुरुषसे भी ज्यादा शक्तिवान है" (पृष्ठ १०६ ७)। इसलिए "स्त्रीको अपनी गरिमाको समझना चाहिए ओर जब उसका मन न हो, तब उसे 'ना' कह सकनका अभ्यास करना चाहिए" (पष्ठ ७४)। व्यवसायी अथशास्त्रियोने धीरे धीरे ही सही गाधीजी के इस विचारको तो मान्यता दे दी है कि हमारी अथ-व्यवस्था ग्रामोन्मुख होनी चाहिए किन्तु इस विचारके नैतिक आधारका मूल्य अभी भी पूरी तरह नही समझा गया है और यही कारण है कि उनके सन्तति नियमनसे सम्बन्धित विचाराको जो उसी नैतिक आधारपर खडे ह अभीतक समथक नही मिल पाये है।

प्रस्तुत खण्ड जिस कालावधिसे सम्बन्ध रखता है उसमे से उस एक माहको छोडकर जो गाधीजी ने दिल्लीमे बिताया, बाकी समय वे वर्धामे रहे ओर एक महीना उन्होने मौन रखा। मोनके इस एक माहमे उन्होने पत्र-व्यवहारका काम किया। यह पत्र व्यवहार काफी ज्यादा था। खण्डमे सकलित ६४३ शीषकोमे से ४३४ तो पत्र ही ह। ये पत्र दिनमे हर समय हर तरहके लोगोको लिखे गये थे और हर तरहकी समस्याओपर उनमे विचार किया गया था। वे हाथ कागजपर गावमे तयार की गई स्याहीसे और, जैसा कि गाधीजी ने कभी कभी जिन्हे ये लिखे जा रहे थे उन्हे बताया भी है, सरकडेकी कलमसे लिखे गये ये (पृ० ९, १४, ३१, ९१)। जो पत्र उनके निकटतम सहयोगियो ओर सम्बन्धियोको लिख गये थे, उनमे उन्हे मागदशन तथा सलाह दी गई है। मणिलाल गाधीको उन्होने कहा 'आलोचना करनेकी अहिसक भाषा सीखनी चाहिए। तू अथवा जिसने यह लिखा हो, वह यही बात मधुर भाषामे कह सकता था" (प० २९१)। और अमतकौरको उन्होने लिखा "उस व्यक्तिसे जो दूसरोके साथ बुरा बरताव करता है और लोगोको सदा शककी नजरसे देखता है और डीग मारता है कि मैने कभी धोखा नही खाया, ऐसा आदमी हजार गुना अच्छा है जो दूसरोपर विश्वास करता है और धोखा खा जाता है" (प० ३९३-९४)। कुछ अन्य लोगोको लिखे गये पत्रोमे सामाजिक प्रश्नो की चर्चा है जिसमे उन्होने उन प्रश्नोके

विषयमे अपनी राय दुहराई है। एक पत्र लेखकको उन्होने लिखा "जातिया आज जिस रूपमे है मै उनके उन्मूलनका समथक हू लेकिन वर्णाश्रम धमके उन्मूलनके पक्षमे नही हू, क्योकि वह मुझे जाति प्रथाके विरुद्ध लगता है" (पृ० १५४)। प्रेमा बहन कटकको विस्तारसे लिखते हुए उन्होने प्राथनाके सम्बन्धमे अपने विचार व्यक्त किये। उन्होने कहा "समुद्रसे अलग पड जानेवाली बूद यदि समुद्रसे विनती न करे तो किससे करे? परन्तु उससे क्या यह समुद्रके लिए कुछ करने या न करनेकी बात हो जाती है। प्राथना वियोगीका विलाप है, उसके बिना देहधारी जी ही नही सकता।" (पृ० १८२)। अपनी दृश्यमान निष्क्रियताको समझाते हुए उन्होने पत्र लेखकको आश्वस्त किया "मै निद्रित अवस्थामे भी पूणत जाग्रत रहता हू। मेरी निद्रा विस्मतिकी अवस्था नही है, वह नयी स्फूर्ति प्रदान करती है" (पृ० ४४२)।

एक अच्छे अद्वैतवादीकी तरह गाधीजी किस तरह 'ज्ञान'को अन्तिम लक्ष्य और 'कम'को उसकी प्राप्तिका साधन मानते थे यह बात पुनजन्मके सवालपर उनके इस मन्तव्यमे स्पष्ट दिखलाई देती है "पुनजन्म माननेके लिए 'मै' हू, इसे मानना आवश्यक होता है। यदि म र्नाह और ईश्वर ही है तो पुनजन्म कैसे और किसका? ईसीमे पूनजन्म आता हे ना? जबतक 'म' है तबतक ही पूनजन्म हे। जब सचमुच तुम 'ईश्वर ही हे' ऐसा मानोगे (कहने मात्रसे काफी नही होगा) तब तुम्हारे लिए पुनजन्म नही हे। जो मनुष्य ईश्वरमय बन जाता है वह मुक्त हो जाता है।" (पृ० १७७)। फिर भी मानवीय धरातलपर गाधीजी ने अच्छे और बुरेका द्वैतभाव स्वीकार किया। गाधीजी से अपनी बातचीतके दरम्यान जब श्रीमती होवे मार्टिनने यह मान्यता प्रगट की कि "दैवतातुल्य और शतानतुल्य इन दोनोके बीच कोई फक नही है और लोग जितना समझते ह, उसकी अपेक्षा ये कही ज्यादा एक समान है" तो उन्हे जवाब देते हुए गाधीजी ने उनसे पूछा 'क्या आपको सूयमे विश्वास है? और यदि है तो क्या आपको ऐसा नही लगता कि आपको छायामे भी विश्वास करना चाहिए?" (पृ० १०८)

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित सस्थाओ, व्यक्तियो, पुस्तकोके प्रकाशको तथा पत्र पत्रिकाओके आभारी है

सस्थाएँ असम सरकार, गाधी स्मारक निधि और सग्रहालय, नई दिल्ली, गुजरात विद्यापीठ ग्रथालय, अहमदाबाद, जामिया मिलिया इस्लामिया पुस्तकालय, नई दिल्ली, डकन एजुकेशन सोसाइटी, पूना, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय, ब्रिटिश हाई कमीशन इन इडिया, राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली, साबरमती आश्रम सरक्षक तथा स्मारक न्यास और सग्रहालय, स्वाथमोर कालेज, फिलाडेल्फिया।

व्यक्ति श्री आनन्द तो० हिंगोरानी, इलाहाबाद, श्री आनन्द स्वरूप गुप्ता, श्री आर० के० प्रभु, श्रीमती एफ० मेरी बार, श्री एम० आर० मसानी बम्बई, श्रीमती एस० अम्बुजम्माल, मद्रास, श्री कनुभाई मशरूवाला, अकोला, श्री कान्तिलाल गाधी, बम्बई, श्रीमती गगाबहन वैद्य, बोचासण, श्री चन्द त्यागी, श्री घ० दा० बिडला, कलकत्ता, श्री जी० सीताराम शास्त्री, श्रीमती तेहमीना खम्भाता, बम्बई, श्री नारायण एम० देसाई, वाराणसी, श्री नारायण सम्पत, अहमदाबाद, श्री पुरुषोत्तम बावीशी, श्री प्यारेलाल नैयर, नई दिल्ली, श्री प्रभुदास गाधी, अल्मोडा, श्रीमती प्रेमाबहन कटक, सासवढ, श्री ब्रजकृष्ण चादीवाला, नई दिल्ली, श्री भगवानजी पु० पण्डया, बधवान, श्रीमती मनुबहन एस० मशरूवाला, बम्बई, श्रीमती महावीर प्रसाद गुप्ता, कानपुर, श्री राजमोहिनी रुद्र, श्री लक्ष्मीबहन खरे, अहमदाबाद, श्रीमती लीलावती आसर, बम्बई, श्रीमती वसुमती पण्डित, बारडोली, श्रीमती वालजी गो० देसाई, पूना, श्री वेणीलाल ए० गाधी, नासिक, श्री शिवाभाई जी० पटेल, बोचासण, श्री हरिभाऊ उपाध्याय।

पुस्तके 'अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन' काय-विवरण, इन्सीडेन्ट्स आफ गाधीजीज लाइफ,' 'कन्टम्परेरी इडियन फिलोसफी,' 'माई डियर चाइल्ड,' 'टु सर्वेन्ट्स आफ गाड,' 'दिल्लीका राजनैतिक इतिहास,' 'नरसिहरावनी रोजनिशि', 'पाचवे पुत्रको बापुके आशीर्वाद', 'बापुना पत्रो – ६ ग० स्व० गगाबहेनने,' 'बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने,' 'बापुनी प्रसादी,' 'बापूकी छायामे मेरे जीवनके

सोलह वष,' 'महात्मा द लाइफ आफ मोहनदास करमच द गाधी, खण्ड – ४,' तथा मध्यप्रदेश ओर गाधीजी ।

पत्र पत्रिकाए 'अमत बाजार पत्रिका,' 'गुजराती,' 'बाम्बे क्रानिकल,' 'लीडर, 'वीणा,' 'हरिजन,' 'हरिजन ब धु, '' हरिजन सेवक,' 'हितवाद,' 'हि दुस्तान टाइम्स,' और 'हि दू'।

अनुस धान एव स दभ सम्ब धी सुविधाओके लिए सूचना एव प्रसारण म त्रालयका अनुस धान और स दभ विभाग, राष्ट्रीय अभिलेखागार और श्री प्यारेलाल नैयर, नई दिल्ली हमारे ध यवादके पात्र ह। प्रलेखोकी फोटो नकल तैयार करनेमे मदद देनेके लिए हम सूचना एव प्रसारण म त्रालयके फोटो विभाग, नई दिल्लीके भी आभारी है।

पाठकोको सूचना

हिंदीकी जो सामग्री हमे गाधीजी के स्वाक्षरोमे मिली है, उसे अविकल रूपमे दिया गया है। किन्तु दूसरोके द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिम हिज्जाकी स्पष्ट भूले सुधार दी गई है।

अग्रेजी ओर गुजरातीसे अनुवाद करते समय उसे यथासम्भव मूलके समीप रखने का पूरा प्रयत्न किया गया हे, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठय बनानेका भी पूरा ध्यान रखा गया है। जो अनुवाद हमे प्राप्त हो सके है, उनका हमने मूलसे मिलान ओर सशोधन करनेके बाद उपयोग किया है। नामोको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखनेकी नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोके उच्चारणमे सशय था, उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा कि गाधीजी ने अपने गुजराती लेखोमे लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोमे दिये गये अश सम्पादकीय ह। गाधीजी ने किसी लेख, भाषण, आदिका जो अश मूल रूपमे उद्धत किया है वह हाशिया छोड-कर गहरी स्याहीमे छापा गया है लेकिन यदि ऐसा कोई अश उ होने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोडकर साधारण टाइपमे छापा गया है। भाषणोकी परोक्ष रिपोट तथा वे शब्द जो गाधीजी के कहे हुए नही है, बिना हाशिया छोडे गहरी स्याहीमे छापे गये है। भाषणो और भेटकी रिपोर्टोके उन अशोमे जो गाधीजी के नही है, कुछ परिवतन किया गया है और कही कही कुछ छोड भी दिया गया है।

शीषककी लेखन तिथि दाये कोनेमे ऊपर दी गई है। जहा वह उपलब्ध नही है, वहा अनुमानसे निश्चित तिथि चौकोर कोष्ठकोमे दी गई है और आवश्यकता होनेपर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोमे केवल मास या वषका उल्लेख है उन्हे आवश्यकतानुसार मास या वषके अन्तमे रखा गया है। शीषकके अन्तमे साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशनकी है। गाधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहा उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहा किसी दृढ आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहा लेखन-तिथिके अनुसार और जहा ऐसा सम्भव नही हुआ है, वहा उनकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये है।

साधन-सूत्रोमे 'एस० एन०' सकेत साबरमती सग्रहालय, अहमदाबादमे उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' गाधी स्मारक निधि और सग्रहालय, नई दिल्लीमे उपलब्ध

कागज-पत्रोका, 'एम० एम० यू०' गाधी स्मारक निधि और सग्रहालयकी मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिट द्वारा तयार कराई गई रीलोका, 'एस० जी०' गाधी स्मारक निधि और सग्रहालय नई दिल्लीमे उपलब्ध सेवाग्रामकी सामग्रीकी फोटो नकलका, और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूण गाधी वाड्मय (कलेक्टेड वर्क्स आफ महात्मा गाधी) द्वारा सगहीत पत्रोका सूचक है।

सामग्रीकी पष्ठ भूमिका परिचय देनेके लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट दिये गये है। अन्तमे साधन सूत्रोकी सूची और इस खण्डसे सम्बधित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई है।

विषय-सूची

१ पत्र प्रेमाबहन कटकको

१६ दिसम्बर, १९३४

चि० प्रेमा,

तेरे पत्र नारणदासको भेजूगा। आज भी सुबहके १ ४५ बजे उठकर पत्र लिख रहा हूँ। दो बजेके आसपास उठनेकी आदत ही हो गई है। रात नौ बजेसे पहले सोता हूँ। दिनमे एक दो बार मिलाकर आधेसे एक घटेतक सोनेको मिल जाता है। यही काफी मानता हूँ।

'दुबारा नही पढा' लिखकर अपने लिए और जिसको लिखता हूँ उसके लिए न्याय प्राप्त कर लेता हूँ। कही 'अजमेर' का 'आज मर' हो जाये तो सुधार लिया जाये, ओर शका हो तो पूछ लिया जाये। दुबारा न पढा हुआ पत्र अधूरा ही मानना चाहिए। परतु तेरे जसीको न लिखनेकी अपेक्षा अधूरा लिखू, तो भी मुझे तो अच्छा लगेगा और तुझे भी अच्छा लगेगा।

मेरा दिल्ली जाना बहुत करके २७ तारीखके आसपास होगा। मै न लिखू अथवा तू अखबारमे न देखे, तबतक वर्धाके पतेपर ही लिखती रहना।

स्वप्नमे व्रतभग हो तो उसका प्रायश्चित्त आम तौरपर अधिक सावधानी रखना और जाग्रत होनेपर रामनाम जपना है। स्वप्नमे होनेवाले दोष हमारी अपूर्णताके चिह्न है। अनजानेमे भी हम उन विषयोका मनके किसी न किसी कोनेमे सेवन करते है और स्वप्नमें उनकी पूर्ति करते है। इसलिए असफल होने पर अधिकाधिक प्रयत्नशील बने। असफलतासे निराशा विषयासक्तिकी निशानी होती है, अश्रद्धाकी तो होती ही है। जो रामनाम लेनेसे थक जाये – निराश हो जाये – उसकी श्रद्धाको हम समाप्त हो चुकी ही कहेगे न? जब कोलम्बसके साथियोकी श्रद्धा खत्म हो गई, तब वे उसे मार डालनेको तैयार हो गये। कोलम्बस श्रद्धाकी आखसे किनारेको स्पष्ट देख रहा था। उसने थोडी सी मोहलत मागी और वह अमरीका पहुँच गया!!! न खानेकी चीज सपनेमे खा जाये तो उसका भी यही अर्थ है। ऐसे सपनोके बाहरी कारण होते है। उनका पता चलते ही उन्हे दूर करना चाहिए। "जो सब अवस्थाओका साक्षी है, वह निष्कलक ब्रह्म मै हूँ," ऐसा हम गाते है। ऐसा बननेका हम सतत प्रयत्न करे, तभी इसे गा सकते है। ऐसे हम नही बन पाये है, इसीके सकेतस्वरूप सपने आते है। वे हमारे लिए दीपस्तम्भका काम करते है।

ईश्वरकी कृपाके बिना पत्ता भी नही हिलता। परतु प्रयत्नरूपी निमित्त के बिना भी, जो ईश्वरकी कृपाका साधन है, वह नही हिलता। प्राणिमात्रकी शुद्धतम सेवा ही ईश्वरका साक्षात्कार है।

किसन[1] तेरे साथ रहेगी, यह बहुत अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३६४)से। सी० डब्ल्यू० ६८०३से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक।

२ पत्र शिवाभाई जी० पटेलको

१६ दिसम्बर, १९३४

चि० शिवाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। जो छूट तुमने अपने लिए रखी है वही छूट पत्नीको भी देना। जिसमें दोनों सहमत न हों, उसमें दोनोंको अपना मार्ग चुननेकी छूट होनी ही चाहिए। इसमें मैं तुम दोनोंका उद्धार देखता हूँ।

ग्रामोद्योगके काममें पूरी दिलचस्पी लेना। यह न भूलना कि खादी इस कार्य का केन्द्रबिन्दु है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९५१३)से। सी० डब्ल्यू० ४२९ से भी सौजन्य शिवाभाई जी० पटेल।

३ पत्र वेणीलाल ए० गांधीको

वर्धा
१६ दिसम्बर १९३४

चि० वेणीलाल,

तुम्हारे परिवारमें पांच सदस्य कौनसे हैं? उनकी आयु आदि लिखना। गरीब लोग अपने बच्चोंको जितना पढ़ा सकते हैं, मेरा खयाल है, तुम्हें उतने से सन्तोष मानना चाहिए। क्या तुम अपनी आंखोंसे सामान्य पढ़ाई कर पाते हो? दूसरी तरहसे क्या शरीर अच्छा रहता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९२०) से, सौजन्य वेणीलाल ए० गांधी।

१ किसन घूमटकर।

४. पत्र लाभूबहन ए० शेठको

१६ दिसम्बर, १९३४

चि० लाभू,

यदि मैंने अमतलालको लिखे पत्रमे तेरे नामका उल्लेख कर दिया होता तो तेरे पत्रसे मै मूख बन जाता न? रूढिकी लीक छोडनेवालेका यही हाल होता है। यह कौन बता सकता है कि तेरे पत्रमे मौलिक जिज्ञासा है या बकवास? किन्तु मुझे तो तेरी नजरोम महान बने रहना है। इसलिए तेरे पमानेसे नापनेपर ही मेरा निस्तार हे। तुझसे कुछ नही तो चौगुनी उम्रका तो हूँ ही न?

स्थिरताकी कोई हाट नही है कि मै तुझे उसका ठिकाना बता सकू। यदि मै पसारीकी दुकान चला रहा होता, जो मेरा खानदानी पेशा था, तो यह तो मै तुझे बिना मागे ही भेज देता। तूने तो एक आना भी भेजा है। तेरा समय बेकार गया। अमतलालने पिताका पद गँवा दिया, क्योकि जो चीज तेरे पास ही हे वह उसे मुझे बता नही सका। किन्तु देहिना स्नेही सकल स्वारथीया"। आखिरकार वह तेरा देहधारी पिता हे। विदेही और सच्चा पिता तो तेरे अतरमे विराजता है। उसे पहचान और फिर तेरा एक आना भी खच नही होगा। यदि तेरी पढाई लिखाई उसकी खोजके लिए न हो तो तेरा लिखना पढना बेकार है। लेकिन यदि तू इस उद्देश्यसे पढ रही हे तो तू खानसाहब,[1] शेख, जवाहर और अन्य लोगोको छुडानेमे समथ होगी। और यदि तुझे बेकारकी बाते करके गुड्डे गुडियोका खेल करना हो तो वह तू कर ही रही है। यदि इतनेसे तुझे अपने प्रश्नका उत्तर न मिला हो, तो अपनी महानताको इसमे प्रतिष्ठित कर देना अथवा नम्रतापूवक यह स्वीकार कर लेना कि तुझमे सच्ची जिज्ञासा नही थी। इस सम्बन्धमे इन्द्र और विरोचनकी कथा स्मरण करना। और यदि तू उक्त कथा नही जानती हे तो अमतलालसे पूछकर उसका मनोरजन कर तथा अपने ज्ञानमे वृद्धि कर।

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ खान साहब अब्दुल गफ्फार खाँ।

५ पत्र अमृत कौरको

१७ दिसम्बर, १९३४

प्रिय बहन,

मुझे पूरी आशा हे कि कराचीमे तुम्हारी सभा[1] को पूण सफलता मिलेगी ओर वहा इकट्ठा होनेवाली बहने पुरुषोके छोटे छोटे झगडोसे ऊपर उठेगी और अपनेको विभिन्न गुटोमे विभाजित होनेसे इनकार करके एक उदाहरण कायम करेगी। निश्चय ही धर्मोका उद्देश्य हमारे बीच झगडा कराना नही है। मै यह भी आशा करता हूँ कि तुम्हारी सभा नव स्थापित ग्रामोद्योग सघकी गतिविधियोको अपना पूरा समथन प्रदान करेगी। यह मूलत स्त्रियोका काम है। शहरी स्त्रियोके बारेमे कोई यह न कहने पाये कि उ होने ७००,००० गावोमे रहनेवाली अपनी करोडो बहनोकी परवाह नही की।

डा० माड रायडनके लिए एक पत्र[2] यह रहा।

तुम्हारा पुर्जा अभी अभी आया है। उसके साथ सलग्न कतरन दिलचस्प हे। सी० एफ० एण्ड्रयूज आज आ रहे है।

तुम दोनोसे मिलकर बहुत खुशी हुई थी। मुझे आशा है कि यहा रुकनेसे तुम्हे कोई शारीरिक कष्ट नही हुआ होगा।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च]

मेरा इरादा २० तारीखको दिल्लीमे होनेका था, लेकिन मै देखता हूँ कि उस दिन वहा नही होऊँगा। मेरे वहा २७ और २९ तारीखके बीच होनेकी सम्भावना है। वहा जानेपर कमसे कम दो हफ्ते और ज्यादासे ज्यादा चार हफ्ते दिल्लीमे रुकनेकी आशा है।

मो० क० गाधी

राजकुमारी अमत कौर
४ ए, स्टाफ लाइ स
कराची

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५१६) से, सौज य राजकुमारी अमत कौर। जी० एन० ६३२५ से भी।

१ आशय अखिल भारतीय महिला सम्मेलनसे है।

२ यह पत्र उपल ध नही है।

६ पत्र वारीन्द्रकुमार घोषको

१७ दिसम्बर, १९३४

मैंने आपकी किताबको[1] सरसरी तौरपर देख लिया है। इसे पढकर मुझे बहुत निराशा हुई। आप खुद अपनी ही भाषाके प्रवाहमें बह गये हैं। आपने असहयोग और सविनय अवज्ञाकी भावनाको नही समझा है। आपने दासताकी प्रशसा की है, आपकी दृष्टिमे हमारी बुराई हमारा गुण बन गई है। म आपसे तक नही करूँगा। समय हमे सच्चा रास्ता दिखायेगा। जो रास्ता हमे ठीक लगता है, जबतक हम उस पर चलते रहे तो और चीजोसे क्या फक पडता है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]

महादेव देसाइकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

७ पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको

१७ दिसम्बर, १९३४

भाई ठक्कर बापा,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने तो केवल अनुसधानके लिए ५,००० रुपये भेजनेका तार[2] दिया था। मैंने अपने तारमे यह लिखा था न कि बजट तो दिल्लीमे ही पास होगा ?

नसिहप्रसादका उदाहरण अच्छा है। काठियावाडमे ऐसे कितने सनातनी मिले ? अन्य कुछ लिखनेका समय नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ११४९)से।

१ वूडेड ह्यूमैनिटी।

२ तार उपलब्ध नही है।

८ पत्र वल्लभभाई पटेलको

१७ दिसम्बर, १९३४

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। खानसाहबका बयान[1] वकीलोको भला क्यो पसन्द आने लगा? हमारे वकीलोको पसन्द आया हो तो गनीमत समझो। वैसे हमारे कामके लिए तो वही ठीक था। सरकारकी समझमे आ सके, ऐसा आज कहा सम्भव है?

दीनबधु[2] आज आ रहे है, इसलिए पता चल जायेगा कि क्या हुआ।

मेरा अनुमान है कि जमनालालजी यहा से गुरुवारको रवाना होगे। वे आये, तबतक तुम वही ठहरना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १४५-४६।

९ पत्र हीरालाल शर्माको

१७ दिसम्बर, १९३४

चि० शर्मा,

तुमको खत लिखनेमे मै डरता हूँ। तुमारा खत अभी मिला। मैंने ऐसी कोई बात नही लिखी थी जिससे तुमको ऐसा खत लिखना पडा। पुत्र पिताके लिए वहममे कैसे पड सकता है? मै सच्चा पिता बननेके लायक नही हूँगा?

जब वहा किसीका शरीर अच्छा नही है तो कयो खुर्जामे पडे रहते हो? जाओ हरिजन आश्रम [दिल्ली] मे। वहा एक स्वतत्र मकानमे सब रहो। बहूत खच भी नही होगा। यहाकी देहातमे रहो। तुमारा बीमार पडना और रहना मेरे से सहन नही होता है।

रामदास मेरे पास नही रहेगा। मेरी चिकित्सामे उसका विश्वास नही रहा है। मेरे साथ मश्वरा तो करता रहता है। अडे छोड दिये है। सामान्य खुराक लेता है। कलसे नीमुके साथ रहना शुरू कर दिया है। मुबई जानेकी तैयारी कर रहा

१ न्यायालयमें राजद्रोहके अभियोगमें उनपर मुकदमा चल रहा था, देखिए खण्ड ५९, पृ० ४७३।
२ सी० एफ० एन्ड्रूज।

हे। मैन इजाजत दे दी है। शक्ति ठीक आ गई है। घूमता फिरता है। मैं चिता नही करता हू। अतमे उसका कुशल ही होगा।

अमतुल परसो मुबई गई। इस मासके अतमे शायद दिल्ली आवेगी।

मेरा दिल्ली जाना शायद २७ ता० के बाद होगा।

'हरिजनबधु' मे तुमारे बारेमे गत हफतामे नोव आ गई। 'हरिजन' मे इस वखत आई हे। नाथ गफलतसे एक हफता रह गई। जब तुमारा खत आ गया तब ही 'हरिजन' तुमको भेजनेको लिख दिया था।

दा० अनसारीका खत आज आया उसमे और चीजोके साथ तुमारे बारेमे लिखते ह

> **जहातक डा० शर्माका सम्बन्ध है, मै चाहूँगा कि मै उनसे मिलकर उनकी सही जरूरतोको जान लू, तभी मै उनकी मदद कर सकूगा।**[1]

दिल्ली जाओ तो अच्छा होगा। मेरे पहूचनेके बाद आना है तो ऐसे किया जाय। भाईओने नही लिखा उसका कारण तुम ही हो, ऐसे तुम्हीने मुझे बताया था। वे ऐसे विवेकहीन हो सकते है कि मुझे उत्तर तक न दे? यदि आजतक उनको नही मिले हो तो यह अव्यवस्थाका एक नमूना ही है न? यदि अव्यवस्थाकी प्रतीती तुमको नही हे तो मै बता नही सकुगा। मै तुमारी बातोमे, कामोमे, खतोमे अव्यवस्था ही देख पाता हू। मेरा ख्याल रहा था कि यह ज्ञान तुमको हो गया था। खैर, उसकी चिता नही हे। सब कुछ अच्छा ही हो जायगा। तुमारा चित्त अच्छा हे, मेरा प्रयत्न यथाशक्ति पूण है। तुमारे श्रेयका ही ख्याल रहता है, अश्रेयका कभी नही। तुमारे पाससे काफी सेवा लेनेकी आशा रख रहा हू। द्रोपदीसे कहो, मुझे सब हाल लिखे।

बापूके आशीर्वाद

बापूकी छायामे मेरे जीवनके सोलह वष, प० १३६ और १३७के बीचकी प्रतिकृतिसे।

१० पत्र कान्ति गाधीको

१८ दिसम्बर, १९३४

चि० कान्ति,

अभी हालमे तेरा कोई पत्र नही आया। किसी एक नियमके अनुसार लिखता रहे तो अच्छा हो। मैने तुझे तेरे आखिरी पत्रका जवाब दिया ही था। कैसी गुजर रही है? रामदास फिलहाल यही है, ठीकसे है। देवदास दो दिन रहकर चला गया। लक्ष्मी राजाजीके साथ गई है। काकासाहब मद्रासमे है। हिन्दीके काममे मदद करनेके लिए गये है। बा मजेमे है। बाकी समाचार तो तू 'हरिजन'मे देखना।

बहुत करके मै इस महीनेके अतमे दिल्ली जाऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९१)से, सोजन्य कान्ति गाधी।

१ मूलमें यह अश अग्रेजीमें है, यहाँ उसका अनुवाद दिया गया है।

११ पत्र जुगलकिशोर बिडलाको

१८ दिसम्बर, १९३४

भाई जुगलकिशोरजी,

साथका पत्र पढे। जो जमीन क्षितिश बाबू चाहते है, वह यदि आपके कामकी नही है और उसकी कीमत बहुत नही हे तो क्षितिश बाबूको दे और रु० १५०० वापिस ले ले। यदि जमीन किमती है तो कुछ बात नही है।

'हरिजन' और 'हरिजनसेवक' पढते होगे।

बापूके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८००४ से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला।

१२ पत्र हातिम अल्वीको[1]

१९ दिसम्बर, १९३४

मेरे मनमे स्वर्गीय मौलानाकी अनेक सुखद स्मतिया ह। लेकिन जिस एक चीजकी स्मति मेरे मनमे सबसे प्रबल है वह दिल्लीमे मेरे २१ दिनके उपवासकी समाप्ति पर उनके द्वारा मुझे एक गाय भेट करनेकी घटना है।[2] यह गाय हिदू मुसलमानोके बीच हार्दिक एकता देखनेकी उनकी उत्कट इच्छाका प्रतीक थी। अगर वह हमारे बीच होते तो उन्होने हालमे की गई उन दो हिदुओकी आयोजित हत्याओ[3] के खिलाफ जिन्होने मूखतावश इस्लामके पैगम्बरकी आलोचना की थी, अपनी आवाज उठाई होती। हाय! अब हम इन हत्याओका सावजनिक रूपसे गुणगान होते सुनते है, गोया कि ये हत्याएँ भी कोई श्लाघ्य कम हो।

पता नही आपने और आपकी लीगने जनताको सही रास्ता दिखानेके लिए कोई कदम उठाये है या नही।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

१ हातिम अल्वीने गाधीजीसे मुहम्मद अलीक प्रति एक श्रद्धाजलि सदेश भेजनेको कहा था।

२ १९२४ में देखिए खण्ड २५ पृष्ठ २४२।

३ कराची और लाहौरमें।

१३ पत्र डॉ० पट्टाभि सीतारामैयाको

[१९][1] दिसम्बर १९३४

प्रिय डा० पट्टाभि,

यह ग्रामीण कागज है। स्याही गावमे बनी हुई है तथा कलम गावके नरकुलकी बनी हुई है। क्या वहा गावके लोग कागज बनाते है? यदि बनाते ह, तो उसकी कीमत क्या होती है?

आपका पूरा पत्र मिला। हा, हम अवश्य मिले। चकि आपके पास समय है, इसलिए आपको इतना विनीत तो होना ही पडेगा कि आप वह काम मागे जो आप कर सकते है। फिर इस उच्च कोटिके कामके लिए पदकी चाहे जरूरत हो या न हो। अनाथोकी सेवामे दिखावेके लिए कोई स्थान नही है।

चावल, आटा गुड, तेल, घी आदिका विषय बहुत व्यापक है। आपको दवा-दारूके अपने ज्ञानको पुनर्जीवित करना होगा।

काम करनेके दो तरीके है—सरकारी व्यवस्थाके अन्तगत बाध्य होकर अथवा स्वेच्छासे। स्वैच्छिक प्रयासका अथ है, सच्चाई या अहिसा ।[2]

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
इसिडेन्टस आफ गाधीजीज लाइफ, पष्ठ २२४।

१ साधन सूत्रमें २९ है, लेकिन महादेव देसाई की हस्तलिखित डायरीमें इस पत्रका अन्तिम अनुच्छेद १९ दिसम्बर, १९३४ के अ तर्गत दर्ज है। यही ठीक जान पड़ता है क्योकि गाधीजी २८ दिसम्बरको वर्धासे चले गये थे।

२ साधन सूत्रमें यहाँ छूटा हुआ है।

१४ पत्र जी० सीताराम शास्त्रीको

[१९ दिसम्बर, १९३४][1]

प्रिय शास्त्री,

मैं आशा करता हूँ कि जयती समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न होगा और इसके फलस्वरूप जनता तुम्हारे प्रयत्नोंकी और अधिक कद्र कर सकेगी, साथ ही कार्यकर्त्ताओंमें अपने कर्त्तव्यके प्रति और ज्यादा लगन पैदा होगी।

तुम [2] पत्रोंको देखोगे।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री सीताराम शास्त्री
विनय आश्रम, कल्याणकावर
चेब्रोल डाकखाना, जिला गूंटूर

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९१७६)से, सौजन्य जी० सीताराम शास्त्री।

१५ अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके उपनियम

[२० दिसम्बर, १९३४][3]

(१) संघकी साधारण आम बैठक वर्षमें एकबार होगी। संघका मन्त्री संघके अध्यक्षकी सहमतिसे किसी भी समय संघकी असाधारण बैठक बुला सकता है। और पंजीपर दर्ज कुल सदस्य संख्याके कमसे कम षष्ठांशकी मांगपर असाधारण बैठक बुलाई जायेगी। बैठकका कोरम पूरा करनेके लिए कुल सदस्योंके पंचमांशकी उपस्थिति आवश्यक होगी और पंचमांश सदस्योंकी न्यूनतम संख्या ७ होगी।

(२) संघका प्रथम वित्त वर्ष १४ दिसम्बर १९३४से ३१ दिसम्बर १९३५ होगा और उसके बादसे यह कैलेण्डरके अनुसार होगा।

(३) प्रबन्ध मण्डलकी बैठक, मन्त्री जब आवश्यक समझे तब बुला सकता है, अथवा जब प्रबन्ध मण्डलके एक तिहाई सदस्य मन्त्रीसे मण्डलकी बैठक बुलानेको कहें तब बुलाई जायेगी।

१ डाककी मुहरसे।

२ यहाँ साधन सूत्रमें ही छूटा हुआ है।

३ उपनियम १० के अन्तर्गत बनाये गये नियम इसी तारीखको समाचारपत्रोंको जारी किये गये थे।

मत्री कोई भी प्रस्ताव मण्डलके सदस्योमे वितरित कर सकता हे ओर यदि सब सदस्यो द्वारा उसे स्वीकार कर लिया जाता है, तो उस प्रस्तावको वही मायता प्राप्त हागी जो मण्डलकी बैठकमे पास किये गये प्रस्तावको प्राप्त होती हे।

प्रब ध मण्डलकी बैठकके लिए सदस्योकी एक तिहाई सख्याकी, जो न्यनतम चार होगी, उपस्थिति आवश्यक होगी।

प्रब ध मण्डलका कोई सदस्य यदि बिना अनुमति लिए लगातार तीन बैठकोमे अनुपस्थित होगा तो उसकी जगह खाली मानी जायेगी।

(४) मत्री आम बठको और मण्डलकी बठकोकी सारी कायवाहीका और इनमे उपस्थित सदस्योका समुचित विवरण रखेगा ओर जिस बैठकमे इन काय-विवरणोकी पुष्टि की जायेगी, उसमे अध्यक्ष इन विवरणोपर हस्ताक्षर करेगा।

(५) सघ द्वारा अधिकारप्राप्त व्यक्तिकी लिखित अनुमति प्राप्त किये बिना, यदि कोई व्यक्ति वित्तीय अथवा अय किसी प्रकारका कोई समझौता या करार करता है, तो उसके लिए सघ उत्तरदायी नही होगा।

(६) प्रब ध-मण्डलको यह अधिकार होगा कि वह अपनी बठकमे कम से-कम तीन-चौथाई सदस्यो द्वारा पास किये गये एक प्रस्तावके जरिये किसी भी सदस्यको सदस्यतासे हटा सकता है। शत यह होगी कि इस बैठककी उचित पूव सूचना सदस्योको दी गई हो और मामलेको विषय-सूचीमे रखा गया हो।

(७) प्रत्येक सदस्य अपने निर्धारित कामकी तिमाही रिपोट मन्त्रीको भेजेगा। यह रिपोट उस तिमाहीके अतमे एक महीनेके भीतर केद्रीय कार्यालयमे पहुँच जानी चाहिए।

यदि कोई सदस्य लगातार तीन तिमाहियोकी अपनी रिपोट नही भेजता तो उसकी सदस्यता समाप्त हो जायेगी और यदि वह किसी पदपर है तो वह पद रिक्त माना जायेगा।

(८) जो सस्थाएँ प्रब ध-मण्डल द्वारा बनाये गये सम्बद्धता सम्ब धी नियमादिका पालन करनेका वचन देगी उहे अर्जी देनेपर मत्री सम्बद्ध कर सकता है।

(९) सघके क्षेत्रमे आनेवाली गावमे तैयार की गई चीजोका व्यापार करनेके इच्छुक व्यक्तिको मण्डल प्रमाण पत्र प्रदान कर सकता है।

(१०) मण्डल एजेटोके कत्तव्योका समय समयपर निर्धारण कर सकता है।[1]

एजेंटोके कत्तव्य

प्रबन्ध-मण्डलने उप नियम सख्या १०के अतगत एजेटोके कत्तव्योकी व्याख्या करते हुए कुछ नियम बनाये है। वे निम्नलिखित है

(१) एजेटसे आशा की जायेगी कि वह केद्रीय कार्यालय द्वारा पहले से निर्धारित कायक्रमको लागू करेगा। केद्रीय कार्यालयके कायक्रमके अनुसार कुछ काम शुरू कर देनेके बाद उससे अपेक्षा की जायेगी कि वह ऐसे उद्योगोका सर्वेक्षण करे जिहे

१ इसके बादका अश भी प्रेसको जारी किये गये एक वक्तव्यमें दिया गया था।

उसके क्षेत्रमे पुनरुज्जीवित किया जा सकता है, या जिनमे सुधार लाया जा सकता है या जिन्हे आरम्भ किया जा सकता है। अपने इस सर्वेक्षण और जाच-पडतालकी रिपोट और अपनी रिपोटपर आधारित एक कायक्रम वह केन्द्रीय कार्यालयको देगा।

(२) प्रत्येक एजेटसे अपेक्षा की जायेगी कि वह अपने क्षेत्रके गावोमे सफाई और स्वास्थ्य सम्बन्धी कायकी देखभाल करेगा।

(३) गावोके फालतू उत्पादनके लिए बाजार ढूढनेकी दष्टिसे एजेटको चाहिए कि वह भरोसे लायक व्यापारियोको गावोमे उत्पादित वस्तुओको बिक्रीके लिए अपने पास रखनके लिए प्रेरित करे। इन वस्तुओका मूल्य व्यापारियो और एजेटके बीच परस्पर समझौतेसे नियत किया जायेगा, ताकि ऐसे मालकी शुद्धता भी सुनिश्चित हो।

(४) कायक्रमके प्रति अपने क्षेत्रमे अनुकूल लोकमत तैयार करनेके लिए एजेटोको गहन प्रचार करना चाहिए।

(५) अपने कामका खच पूरा करनेके लिए एजेट लोगोसे चन्दा और दान ले सकता है, उसे केन्द्रीय कार्यालयसे किसी प्रकारकी आर्थिक मददकी अपेक्षा नही करनी चाहिए। लेकिन दान और चन्देमे प्राप्त ऐसी रकमका उपयोग वह अपनी निजी जरूरतोके लिए नही करेगा।

(६) अगर जरूरी हो और पर्याप्त धन हो, तो एजेट अपने कामके लिए वतनिक कायकर्त्ता भी नियुक्त कर सकता है।

(७) वह सभी प्राप्तियो और खर्चोंका सही सही ब्यौरा रखेगा। उसके हिसाबकी जाच केन्द्रीय कार्यालय करा सकता है।

(८) केन्द्रीय कार्यालय उसके कायका निरीक्षण कर सकता है।

(९) वह प्रत्येक माहके अपने कायकी रिपोट और आय तथा भुगतानका सक्षिप्त ब्यौरा केन्द्रीय कार्यालयको भेजेगा, जो हर हालतमे अगले महीनेकी १५ तारीखसे पहले पहुँच जाना चाहिए।

(१०) मासिक रिपोट और हिसाबका ब्यौरा भेजनेमे, या केन्द्रीय कार्यालयके निर्देशोका पालन करनेमे चूक होनेपर एजेटकी एजेसी खत्म की जा सकती है।

मेरे पास कुछ कायकर्त्ताओके नाम है जिन्होने सघके एजेटोके रूपमे काम करने की इच्छा व्यक्त की है। मै चाहूँगा कि जिन लोगोके नाम मुझे पहले ही मिल चुके है वे तथा अन्य लोग अपने नाम तथा पर्याप्त विस्तत सूचना वर्धामे श्री कुमारप्पाके पास भेजे, ताकि मण्डल उनमे से अपनी पसन्दके लोग चुन सके। खास बात ध्यानमे रखनेकी यह है कि प्रत्येक व्यक्ति उतने ही गावोका भार अपने ऊपर ले जिनका काम वह सह कायकर्त्ताओकी मददसे या अकेला सम्भाल सके, उनसे ज्यादा नही। यह बात भी ध्यानमे रखनेकी हे कि मण्डल कोई आर्थिक जिम्मेदारी नही लेगा। ऐसा महसूस किया जाता हे कि भारतके तमाम सात लाख गावोमे काम करनेके लिए यदि मण्डल वैतनिक एजेटोको नियुक्त करनेकी बात सोचे तो यह उसके लिए कभी सम्भव नही होगा। उसने अपना काय इस विश्वासके साथ शुरू किया है कि ऐसे आत्मत्यागी स्त्री और पुरुष पर्याप्त सख्यामे मौजूद है जो गावोकी सेवा करनेकी

आवश्यकता अनुभव करते है -- उन गावोकी जो एक लम्बे अरसेसे उपेक्षित पडे रहे है, हालाकि हर कोई जानता है कि यदि शहरोकी जरूरते पूरी करनेवाले गाव न हो, तो शहरवालोका जीवन दूभर हो जाये।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१२ १९३४

१६ पत्र अगाथा हैरिसनको

२० दिसम्बर, १९३४

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा निराशापूण पत्र मिला। जो स्थिति है उससे हम लोग यहा उतने विचलित नही ह जितना विचलित उमने तुमको कर दिया है। बात यह है कि तुम सर सैमुअल होरको नही जानती। भारत सरकार तो हमेशासे एक व्यक्तिकी सरकार रही है। सर सैमुअल होरका सिद्धात यह है कि भारतीयोकी इच्छाका आदर करनेकी बात तो दूर रही, उनपर विचार भी नही करना चाहिए, उनपर तभी विचार करना चाहिए जब वे उनके सलाहकारोकी इच्छाओको प्रतिबिम्बित करती हो। सलाहकारोने यह तय कर लिया है कि श्वेत-पत्र,[1] जो अब सयुक्त ससदीय समिति[2] की रिपोटका रूप ग्रहण कर चुका ह, अतिम शब्द है। काग्रेसने निश्चय किया है कि जबतक उसकी इच्छाओको ध्यानमे नही लिया जाता, तबतक उसे कुछ भी स्वीकाय नही है। काग्रेस यह भी स्वीकार करती हे कि सर सैमुअलके हाथमे सत्ता है और काग्रेसको जो थोडी सी शक्ति प्राप्त है उसका उसे प्रयोग नही करना चाहिए। इसलिए वहा तुम सब मित्रोको यदि कह सको तो दृढतापूवक कहना चाहिए कि जबतक 'शासित लोगो' की सहमतिसे परिवत्तन करनेका समय न आ जाये तबतक वतमान व्यवस्था ही जारी रहनी चाहिए। ऐसी बात नही कि इसमे तुम्हारे प्रयत्न सफल ही होगे। लेकिन कमसे कम तुम्हे यह जाननेका सन्तोष तो रहेगा कि तुमने सही चीज की है। इसके विपरीत, यदि वहा के मित्रोको लगे कि वे ईमानदारीके साथ यह रुख नही अपना सकते, और यदि रिपोटमे परिवतन नही किया जा सकता तो उसे स्वीकार कर ही लेना चाहिए, तो तुम्हे योजनाको कार्यान्वित करना चाहिए। यदि मै तुम्हारे मित्रोकी जगह होता तो भारतके दष्टिकोणका प्रतिनिधित्व न कर सकनेपर खामोश होकर बैठा रहता। यदि सविधान पास हो जाता है तो यह उस सविधानको भारतके ऊपर बलपूवक थोपने' जसा होगा, और मित्र लोग कमसे-कम इतना तो कर ही सकते है कि वे प्रत्यक्ष या परोक्ष, किसी भी रूपमे

१ इसमें गोलमेज सम्मेलन (१९३१ ३२) में हुए बिचार विमशके आधारपर सुधारके निमित्त ब्रिटिश सरकारके प्रस्ताव थे।

२ जिसने श्वेत पत्रकी जाँच की थी और कुछ परिवर्तनोके साथ उसके प्रस्तावोको मजूरी दी थी।

इसमे हाथ न बँटाये। चिन्तामणिकी चेतावनी सलग्न है। उसे पढो। इसका कोई बहुत महत्व है, सो बात नही। इस सम्बन्धमे गृह सदस्य बिलकुल स्पष्ट थे। लेकिन उनकी स्पष्टवादिता बहुत क्रूरतापूर्वक फिरसे याद दिलाती है कि भारत कितना असहाय है।

मेरा मामला विचाराधीन है। वहा भी वही कहानी है। उन्होने निश्चय कर लिया है। लेकिन मुझे पहले से कोई बात मान नही लेनी चाहिए। सी० एफ० एण्ड्रयूज कलकत्तामे है। वे जबरदस्त कठिनाइयोके विरुद्ध एक टोजनी योद्धाके समान सघष कर रहे है और व शीघ्र ही तुम्हे सभी ताजा समाचार देगे। इस बीच तुम्हे और तुम्हारे मित्रोको मै विश्वास दिलाता हू कि म जल्दबाजीमे कोई कदम नही उठाऊँगा। मेरे इरादोकी पर्याप्त पूर्व सूचना दे दी जायेगी। लेकिन मेरे इरादोका मूल्य क्या है! मनुष्य कुछ सोचता है और ईश्वर कुछ करता है। मै नही तुम नही, ईश्वर जो चाहता है वही होने दो।

जिस कागजपर और जिस स्याही तथा जिस कलमसे यह पत्र लिखा गया है उनकी एक कहानी है, लेकिन उसे बतानेका मेरे पास समय नही है।

स्नेह!

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४८३)से।

१७ पत्र हरिभाऊ उपाध्यायको

२० दिसम्बर, १९३४

भाई हरिभाऊ,

तुमारा खत मिला है। अखबारोमे तो देखा कि फिर कुछ झगडा पदा हो गया है। हि० वि०[1] की योजना मिलनेपर देख लूगा।

पत्र व्यवहारसे शिक्षा देनेकी प्रथा महिला आश्रममे दाखल की है। इसमे जो शिक्षक नियुक्त करनेके है उसमे तुम्हारा नाम दाखल करनेकी इच्छा है, करूँ?

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ६०८१ की नकलसे, सौजन्य हरिभाऊ उपाध्याय।

१ हिन्दी विद्यापीठ।

१८ 'हरिजन' का विस्तार

आजकल 'हरिजन'के पष्ठ जिस तरह ग्रामोद्योग योजनाके विकास कायकी चर्चासे भरे रहते है उसे लेकर जहा कुछ पाठकोने आपत्ति व्यक्त की है, वहा कुछ अय पाठकोने सामग्रीके प्रस्तुतीकरणकी एकरसतामे परिवतनको देखते उसका स्वागत किया है। दोना ही राये शायद बिना सोचे-समझे और जल्दबाजीमे जाहिर की गई है। गावोके कल्याणसे सम्बधित किसी भी समस्याका कुल मिलाकर हरिजनोसे घनिष्ठ नाता होता है क्योकि हरिजनोकी सख्या भारतकी कुल आबादीका छठा भाग है। यदि गाववालोको अच्छा चावल और आटा मिले तो इस परिवतनसे हरिजनोको भी उतना ही लाभ होगा जितना शेष लोगोको। लेकिन हरिजन लोगोको एक विशेष अथमे लाभ होगा। चमडा कमाने और कच्चा चमडा तैयार करनेका सारा धधा पूरी तरह हरिजनोके ही हाथमे है, और आर्थिक दृष्टिसे यह धन्धा नई योजनाका सबसे बडा अग होगा। अभीतक हरिजनोकी जो राय प्राप्त हुई है, उसमे तो उहोने इस विस्तारका स्वागत किया है। जो लोग एकरसतासे ऊब गये थे, वे भी मेरी रायमे गलतीपर थे। 'हरिजन'के पष्ठोको ऐसी सामग्रीसे नही भरा जा सकता था जिसका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे उन लोगोके साथ कोई सम्बध न हो जिनके हितके लिए इस पत्रिकाका प्रकाशन होता हे। जो लोग एकरसताकी शिकायत करते थे, उहे शायद हरिजन-कायमे पर्याप्त रुचि नही थी।

यदि आलोचनामे मुझसे यह कहा जाये कि 'हरिजन की सामग्री जितनी दिलचस्प बनाई जा सकती हे, उतनी दिलचस्प नही होती तो बेशक यह सच्ची बात होगी। इसके कुछ कारण है जो स्वय आदोलनमे ही अन्तर्निहित है। यह बात स्वीकार करनी होगी कि अस्पश्यता-उमूलनका आदोलन उस अथमे एक लोकप्रिय आदोलन नही है जिस अथमे बडे बडे राजनीतिक आदोलन लोकप्रिय रहे है और दुनिया भर मे लोकप्रिय हो गये है। अस्पश्यता निवारण एक जबदस्त सामाजिक सुधार है। लेकिन इस काममे सनसनी पैदा करनेवाली कोई चीज नही है। यह एक ऐसा नीरस काम है जिसमे कोल्हूके बैलकी तरह बराबर परिश्रम करना होता है। और ऐसा काम करनेवालोके कायका विवरण दिलचस्प ढगसे प्रस्तुत करनेके लिए अत्यत उच्च कोटिके सम्पादकीय कौशलकी आवश्यकता हे। और नीरस काम करने वालोके काममे केवल किसी नीरस सम्पादकको ही दिलचस्पी हो सकती है। इसलिए हरिजन-आदोलनसे जिन लोगोका घनिष्ठ सम्बध हे, उनके सामने यही रास्ता है कि वे अपने अनुष्ठानमे उत्तरोत्तर बढती हुई आस्थाके साथ अपना काम जारी रखे और परिणामकी चिता न करे।

अभी कुछ दिन पहले अखबारोमे इस आशयकी सूचना छपी थी कि ‘हरिजन-बन्धु’के नामसे निकलनेवाला ‘हरिजन’का गुजराती सस्करण बन्द किया जानेवाला है क्योकि वह घाटेपर चल रहा है। यह खबर अविचारित और अनधिकृत थी। वस्तुत इसकी बात जरूर हुई थी। लेकिन जब ठक्कर बापाने यह सुना तो उन्होने कह दिया कि हिन्दी, गुजराती और अग्रेजी इनमे से किसी भी सस्करणको बन्द नही किया जा सकता। इन साप्ताहिक पत्रोपर होनेवाले घाटेको बचानेके तीन उपाय है

(१) चन्देकी दर बढा दी जाये,

(२) छपाई और सम्पादकीय विभागोके कमचारी अपने कामके लिए जो वेतन पाते है उसमे स्वेच्छासे कटौती करा दे

)(३) ग्राहकोकी सख्यामे वद्धि करनेके लिए अपील की जाये।

इनमे से दूसरे नम्बरके उपायको आजमाया गया और अभी भी आजमाया जा रहा है। पत्रिकाओके प्रकाशन व्ययमे कटौती जारी है। ग्राहक सख्यामे वद्धिके लिए असीम गुजाइश है और अब चूकि ‘हरिजन मे ग्रामोद्योग और व्यापक ग्रामोत्थानके बारेमे काफी-कुछ सामग्री रहेगी, इसलिए ग्राहकोकी सख्या भी अपने आप बढनी चाहिए।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २१-१२-१९३४

१९ नया बच्चा

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघने, जिसकी बहुत चर्चा रही है बिना किसी धूम धडाकेके शान्त वातावरणमे वर्धामे इसी १४ तारीखको जन्म ले लिया। वर्धा ही इसका सदर मुकाम रहेगा क्योकि सेठ जमनालालजीने उदारतापूवक सघके उपयोगके लिए कुछ जमीन और भवन वहापर दे दिये है। लेकिन इसके बारेमे फिर कभी।

आइए, हम सघके सस्थापक सदस्योका परिचय प्राप्त करे जो इसके प्रथम प्रबन्ध मण्डलके सदस्य भी है। इसके अध्यक्ष श्री श्रीकृष्णदास जाजूजी एक वकील है और स्कूल व कालेजमे एक बहुत अच्छे विद्यार्थीके रूपमे उनका नाम था। उन्होने, बहुत समय हुआ, अपनी खूब चलती हुई वकालत छोड दी थी। वे सेठ जमनालालजीकी लोकोपकारी गतिविधियोसे सम्बद्ध रहे है और अखिल भारतीय चरखा सघकी महाराष्ट्र शाखाके अध्यक्ष है।

सघके सगठनकर्त्ता और मन्त्री श्री कुमारप्पा है। वे एक चार्टर्ड एकाउन्टेट है। उन्होने बम्बईमे अपना फलता फूलता धन्धा छोडकर काका साहब कालेलकरके अधीन गुजरात विद्यापीठमे अवैतनिक प्रोफेसरका पद ग्रहण कर लिया था। सवश्री भुलाभाइ देसाई ओर डी० एन० बहादुरजी दोनो भूतपूव एडवोकेट-जनरल रह चुके है, और इन दोनोके साथ श्री कुमारप्पाने काग्रेस द्वारा नियुक्त सावजनिक ऋण समिति

के सदस्यके रूपमे काम किया है ओर स्वय बिहार केन्द्रीय सहायता-समितिके आर्थिक सलाहकार रहे है।

श्री गोसीबहन कैप्टेन अथक परिश्रम करनेवाली चार नौरोजी बहनोमे से एक है। ये चारो बहने वर्षोसे खादी-काय कर रही है। बम्बईमे श्री मीठूबहन पेटिटने, जिन्होने अपनेको गुजरातके गावोमे रहनेवाले गरीब भाई-बहनोकी सेवामे समर्पित कर दिया है, गरीब बहनोके लिए खादीकी कढाईका एक स्कूल खोला था, और ये चारो बहने उस स्कूलको चला रही ह।

सेठ शूरजी वल्लभदास बम्बईके एक विख्यात व्यापारी है। वह खादी केन्द्रोका सगठन करते रहे हैं और उन्होने स्वदेशी बाजारकी स्थापना की है। इससे होनेवाला मुनाफा पूरी तरह ग्रामोद्योगोकी उन्नतिपर खच किया जाता है।

डा० खान साहब भारतीय स्वास्थ्य-सेवाके भूतपूव सदस्य हैं और खान अब्दुल गफ्फार खाके बडे भाई हैं। वे अपने भाईके स्थानपर बोडके सदस्य हैं। यदि खान अब्दुल गफ्फार खा जेलमे न होते तो बोडके सदस्य होते।

श्री लक्ष्मीदास पुरुषोत्तम साबरमतीके सत्याग्रह आश्रममे आनेसे पहले मलाबारके एक प्रतिष्ठित व्यापारी थे। गुजरातमे खादी कायका सगठन इन्होने ही किया। १९२७मे गुजरातमे जो भयकर बाढ आई थी, उस जमानेमे ये सरदार वल्लभभाई पटेलके दाहिने हाथ बन गये थे, और बिहारके भूकम्प-पीडितोके सहायता कायमे राजेन्द्र बाबूके दाहिने हाथ रहे हैं।

डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष, डी० एस सी० हैं और उन डा० पी० सी० रायके प्रिय शिष्योमे से हैं जिन्होने सरकारी टकसालमे एक उच्च पद छोड दिया, जो वर्षोसे मामूली वेतनपर गुजारा कर रहे हैं और जिन्होने अपना सारा जीवन जन सेवामे समर्पित कर दिया है।

श्री शकरलाल बैंकरने इग्लैंडमे रसायन शास्त्रमे ऊँची शिक्षा पाई और वापस लौटनेपर सन् १९१६ मे सावजनिक क्षेत्रमे प्रवेश किया। वे अखिल भारतीय चरखा सघके मन्त्री और उसकी जान हैं ओर खादीका उनको चहुँमुखी ज्ञान है। इसी कारण उन्हे गावोकी दशाका जैसा व्यापक ज्ञान है वैसा शायद ही किसीको हो।

इस प्रकार सेठ शूरजीभाईको छोडकर मण्डलमे सभी सदस्य ऐसे हैं जिनका अपना कोई धन्धा या रोजगार नही है और जिनकी एकमात्र चिन्ता यही होगी कि गाववालोके कल्याणके लिए काम किया जाये। ये लोग मण्डलमे केवल इसीलिए हैं कि सघके उद्देश्योको पूरा करनेकी जबदस्त जिम्मेदारीको निभानेका प्रयत्न करेंगे। पाठक सघके सीधे-सादे सविधान[1] को पढे। यदि सघको जनताका ठोस सहयोग प्राप्त हुआ तो वह करोडो गाववालोके लिए आशाका प्रतीक बन जायेगा ओर शहरमे रहने-वालोको, जो आज शोषक हैं, सच्चा सहायक और सेवक बना देगा। सघ प्रबुद्ध वग और अनपढ जनताके बीच एक जीवन्त सम्बन्ध स्थापित करेगा, मनुष्य-मनुष्यके

१ देखिए खण्ड ५९, पृ० ४७७ ८१।

बीच जो भेद है, उन्हें दूर करनेका प्रयत्न करेगा। गाववाले आज केवल कच्चा माल पैदा करते है, सघ उन्हे आत्मनिभर इकाइयोमे बदल देगा और तब वे शहरवालोकी अधिकाश जरूरतकी वस्तुओको भी तैयार करने लगेगे। इस प्रकारके काममे राजनीतिक मतभेद भुला दिये जाते है। जो लोग मदद करना चाहते है, उन्हे हम आमन्त्रित करते है कि वे अपनी इच्छा और क्षमताके अनुसार सदस्य, एजेट, कार्यकर्त्ता, सहयोगी या सलाहकारके रूपमे सघमे शामिल हो।

यह कार्य बहुत बडा है। सघके कामके बारेमे लोगोके अन्दर जो उम्मीदे पैदा हुई है, उन्हे केवल ईश्वर कृपासे ही पूरा किया जा सकता है। ईश्वर कृपा तभी प्राप्त होती हे जब बुद्धिमानीके साथ अथक प्रयत्न किया जाये। मण्डलके सदस्योने ऐसा ही प्रयत्न करनेकी प्रतिज्ञा की हे। उनके पिछले कामोका इतिहास इस बातका सबूत हे कि वे आगे भी वैसा ही काम करेगे।

सघकी स्थापना यद्यपि काग्रेसने ही की है, लेकिन इसे जान बूझकर गैर राजनीतिक और स्वशासी सगठन बनाया गया है। सघके सदस्य अपनी सदस्यताके दौरान सविनय अवज्ञाके किसी भी अभियानमे भाग न लेनेको वचनबद्ध है। सघके सलाहकार और मार्गदर्शककी हैसियतसे मै कह सकता हूँ कि सघका उद्देश्य गाववालोका आर्थिक, शारीरिक और नैतिक उत्थान करनेके सिवा और कुछ नही है।

पाठक इस बातपर ध्यान देगे कि प्रबन्ध मण्डलका कार्य कमसे कम आरम्भमे अवैतनिक एजेटोके जरिये किया जायेगा। एजेट लोग अपने अपने कार्य क्षेत्रको स्वय चुनेगे और उनसे अपेक्षा की जायेगी कि वे केवल उन्ही क्षेत्रो तक अपना कार्य और ध्यान सीमित रखे। इस तरहसे सम्भव है कि अकेले एक गावके लिए ही एक एजेट हो। अत सघके पास उतने एजेट भी हो सकते है जितने कि भारत भरमे गाव है। इसलिए किसी भी ईमानदार व्यक्तिको, वह कितना ही नगण्य क्यो न हो, अपनी सेवाएँ अर्पित करनेसे हिचकना नही चाहिए। हमारा विचार इसके पीछे यह है कि इस कार्यका ज्यादासे ज्यादा विकेन्द्रीकरण कर दिया जाये तभी जाकर ज्यादासे ज्यादा मितव्ययिताके साथ और कुशलतापूर्वक सघन रूपसे काम किया जा सकता है। मै आशा करता हूँ कि स्वैच्छिक ग्रामोत्थानके इस शानदार काममे भाग लेनेके लिए देश भरमे ऐसे कार्यकर्त्ता मिलेगे जो खुशीके साथ, ईमानदारीके साथ यह काम हाथमे लेगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २१ १२ १९३४

२० पत्र जॉन हेन्स होम्सको

२१ दिसम्बर, १९३४

आपका अत्यन्त कृपापूर्ण और सुविस्तृत पत्र मिला। हां, मीराबहनने ब्रिटेन ओर अमेरिका, दोनो जगह् बहुत अच्छा काम किया। सत्य मनुष्यको ऐसी शक्ति प्रदान करता है जो किसी अन्य चीजसे नही मिल सकती और मीरा अपनी वाणीसे केवल वही बात कहना चाहती थी जिसे वह पूर्ण सत्य मानती हे। जब भी उसे आवश्यक लगेगा, वह आपके पास निश्चय ही आयेगी।

जहातक मेरा सवाल है, मुझे आनेकी कोई आवश्यकता नही अनुभव होती। मुझे लगता है कि मेरा कार्य यही है और मुझे दुनियासे जो कुछ कहना है, वह म भारतमे अपने कामके जरिये सबसे अच्छे ढगसे कह सकता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

२१ पत्र एक इटालियनको

२१ दिसम्बर, १९३४

मेरे लिए सत्यका आतरिक अर्थ यह है कि वह मुझे एक ऐसी शान्ति प्रदान करता है जो समझके परे है। इसका बाह्य अर्थ यह हे कि वह मुझे सेवाका एक अधिक उपयोगी साधन बनाता है।

मिशनरियोके कार्यका महत्व मेरी दृष्टिमे इस तथ्यमे निहित है कि उन्होने हमारे अन्दर जिज्ञासाकी भावना उत्पन्न की है और हमे आत्म-निरीक्षण करनेके लिए प्रेरित किया है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

२२ पत्र क० मा० मुशीको

२१ दिसम्बर, १९३४

भाई मुशी,

तुम बराबर आराम करना। मेरे विचारसे तो खान साहब सच्चे भक्त है।

मैंने तुम्हारा अन्तिम अध्याय[1] लगभग पूरा कर लिया हे। अन्य अब पढ़गा। तुमने जो यह सब अग्रेजीमे लिखा तो किसके भलेके लिए? यदि तुमने इसका हेतु आरम्भके अध्यायोमे बताया हो तो मैं नही जानता।

मुझसे लम्बी प्रतास्वनाकी अपेक्षा न करना।

तुम दोनोको
बापूके आशीर्वाद

एडवोकेट क० मा० मुशी
पचगनी

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५६५) से, सोजन्य क० मा० मुशी।

२३ पत्र अन्नपूर्णाको

२१ दिसम्बर, १९३४

चि० अन्नपूर्णा

तुमारा खत मिला था। देहातीओका सूतके आक समानता, मजबूती निकालो। शीघ्र बुनवा लो। देहातीओके दूसरे धधेका ख्याल रखो। चावल कैसे खाते है। घरके आगणमे थोडा कपास और भाजीके बीज डालो। यथासभव सब मजदूरी हाथसे ही करना अच्छा है।

सब मजेमे होगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७८४) से।

१ **गुजरात और उसका साहित्य**का।

२४ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

२१ दिसम्बर, १९३४

चि० अबुजम,[१]

तुमारा खत मिला। पिताजीका भी मिला है। तुमने मुझको कुछ भी तकलीफ नही दी है। मुझको सब-कुछ कहनेका तुमको अधिकार था और हमेशा रहेगा। यदि वगैर सकोचके मुझे सब कुछ न कह सके तो मै मदद भी कसे दे सकता हूँ।

अब चित्त स्थिर करके जो-कुछ सेवा-काय हो सके किया करो।

तुमारे लिये हाथके बने हूए कागद भेज दिये गये है। कागज कुछ मेघे है। बिल तुमको भेजा जायगा। पैसे यहा से दिया जायगा। तुमारे पैसे पडे है ना ?

रामायणका अभ्यास कायम रखो।

मुझे लिखा करो।

जानम्माल[२] मुझे लिखे।

मुझे बताओ कया यह खत पढनेमै कुछ कष्ट हुआ ?

मातपिताको खुश रखेगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ९५९८)से, सौजन्य एस० अम्बुजम्माल।

२५ पत्र अमृत कौरको

२२ दिसम्बर, १९३४

प्रिय बहन,

मैने तुम्हारे प्रस्तावोके मसविदोको कल रात पढा। वे दोपहरमे प्राप्त हुए थे। मुझे पहलावाला पसन्द है। अन्तिम मुझे बिलकुल पसन्द नही है। आशा है कि तुम्हे मेरा वह पत्र यथासमय मिल गया होगा जिसके साथ मेरा सन्देश[३] और डा० माडके लिए एक पत्र सलग्न थे।

१ श्रीनिवास आयगारकी पुत्री।

२ एस० अम्बुजम्मालकी भाजी।

३ अखिल भारतीय महिला सम्मेलनके लिए, देखिए "पत्र अमृतकौरको पृ० ४।

तुम्हे अपने शरीरपर बहुत जोर नही डालना चाहिए। मै यह मान रहा हूँ कि तुम जहा भी जाती हो कर्नल भी तुम्हारे साथ होते है। उन्हे अबतक उत्तर प्राप्त हो जाना चाहिए।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५१७) से, सौजन्य अमृत कौर। जी० एन० ६३२६ से भी।

२६ पत्र होमी मोदीको

२२ दिसम्बर, १९३४

प्रिय श्री मोदी,

आसामको भेजे गये कम्बलोके बारेमे आपका इसी १९ तारीखका पत्र मिला। धन्यवाद।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८८१) से सौजन्य एम० आर० मसानी।

२७ पत्र जमनालाल बजाजको

२२ दिसम्बर, १९३४

चि० जमनालाल,

तुम्हारे कानके सम्बधमे मुझे अभीतक कोई समाचार नही मिला, सो क्यो? किशोरलाल और गोमती बिस्तरपर पडे है। गोमती ठीक है। किशोरलालको अभी बुखार है। लेकिन धीरे धीरे उतर रहा है। उद्योग सघको बगीचेमे ले जानेकी तैयारिया हो रही है। मकानके ऊपर दो कमरे बनवानेकी योजना है। राधाकृष्ण एक कमरा बनवानेकी खबर लाया था। अब दो बनवानेकी बात चल रही है। लगभग २,००० रुपयेके खर्चका सवाल है। यह करना ही चाहिए, ऐसी कोई बात नही। उनका असली उपयोग वर्षा ऋतुमे ही है। दिनको तो मै नीचे पडा रह सकता हूँ। रातको अवश्य ऊपर सोनेके लिए जाऊँगा। ऊपरके कमरे भविष्यकी दृष्टिसे बनाये जाने चाहिए। चूकि उनकी बात निकली, इसलिए मुझे हामी भरनेका लोभ हो आया। यदि तुम इनकार कर दोगे तो बात खत्म हो जायेगी और २,००० रुपया

भी बच जायेगा। लेकिन यह रुपया अब तुम्हारा कहा रह गया है? यह लिखते हुए ही अब मनमे विचार आ रहा हे कि फिलहाल मुझे ही ऊपरके कमरे बनानेके सम्बन्धमे मना कर देना चाहिए। ऐसा ही होगा। इसलिए मैने जो कुछ ऊपर लिखा है उसे रद्द मानना।

स्वरूपरानीकी ओरसे कृष्णाने मुझे लिखा है और हलके स्वरमे प्रभावतीको भेजनेकी भी माग की हे। मने उसे लिखा है[1] कि प्रभावती काममे इस तरह गुथ गई है कि उसे उससे मुक्त नही किया जा सकता। लेकिन वहासे किसी अन्य अच्छी सी महिलाको भेजा जा सकता है। और मै समझता हूँ कि ऐसी कोई महिला अवश्य मिल जायेगी जो उसके साथ रह सकती हो। तुम यदि कर सको तो स्वरूपरानीकी मदद करो। नही तो सारा मामला मुझ पर ही छोड देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० २९४७) से।

२८. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

२२ दिसम्बर, १९३४

भाई वल्लभभाई,

चार्ली[2] भाईको रोकना मुश्किल है। ऐसोके हाथसे नुकसान हो तो भी हमे सहन करना चाहिए। परन्तु मै जाग्रत हू। मैने उनसे साफ कह दिया हे। इस मामलेमे चिन्ता न करना। लोग भी जान गये है कि उनके आने-जानेमे कोई अर्थ नही होता।

कृपलानीकी बात अलग है। उन्होने राजारामको निकाल दिया,[3] यह भी ठीक नही हुआ। मुझे लगता है कि कृष्णदास इस कामको नही कर सकता। मगर यह किस्सा मै पूरी तरहसे नही जानता। कृपलानीको क्यो नही लिखते? उनके बयान मैने नही पढे। उनमे कुछ उलटा-सीधा कह डाला है क्या? ऐसा हो तो मै भी उन्हे लिखूगा। वे लिखनेसे तुरन्त सुधार कर लेगे।

वहाकी सभा[4] को तो तुमने खूब काबूमे रखा। तुम्हारा भाषण मुझे बहुत पसन्द आया। यह सब जनताको बताना जरूरी ही था।

रामदास अभी तो बम्बई जायेगा। २७ या २८ तारीखको स्वामीके साथ रवाना होगा। मणिभवनमे रहेगा।

१. यह पत्र उपलब्ध नही है।

२. सी० एफ० एन्ड्रयूज।

३. अ० भा० का० क० के वैतनिक सचिवके पदसे।

४. खान अब्दुल गफ्फार खाँको राजद्रोहके अभियोगमें दो सप्ताहके लिए जेलकी सजा हुई थी। सभा उसीके विरोधमें हुई थी, देखिए खण्ड ५९, पृ० ४५६।

मुस्लिम भाइयोंके लिए खेद कैसा? हम अपने धर्मका पालन करें। सिन्ध और लाहौरकी हत्याओंके बारेमें मैंने मौलाना और डा० अन्सारीको लिखा है।[1] दोनोंके जवाब आ गये हैं। लिखते हैं, कुछ न कुछ करेंगे। सारा काम ही मुश्किल है। जहां दृष्टिकोण अलग अलग रहे हों, वहां सहन करना ही होगा। यदि हम अपनी सामर्थ्य भर कर सकें तो इससे हमें सन्तुष्ट होना चाहिए।

मैं यहां से २८ तारीखको दिल्लीके लिए रवाना होऊँगा। दिल्लीमें ज्यादासे ज्यादा एक महीना लगेगा। ग्रामोद्योग संघकी बैठक ३१ जनवरीको है। दिल्ली तो तुम आओगे ही। कार्य-समितिकी बैठक १५ जनवरीके आसपास हो तो अच्छा। मैं दिल्लीसे जितनी जल्दी रवाना हो जाऊँ, उतना अच्छा।

अभयकरका क्या हाल है? तुम्हारी नाकका क्या हुआ?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १४६–४७।

२९. पत्र : हीरालाल शर्माको

२२ दिसम्बर, १९३४

चि० शर्मा,

तुमारे उपवास[2]से कुछ दुःख तो नहीं होता है। निर्विघ्न समाप्त हो ही जायगा। समाप्त होनेपर मुझे दिल्ली खबर देना। २९को दिल्ली हूंगा। उपवासमें जो अनुभव मिले, वह भी बताना।

कृष्णा अच्छी हो जाय तो बड़ी बात होगी।

मेरे कागजात नहीं मिले हैं।

नोटीस किसी अखबारवालोंने ली या नहीं, मुझे पता नहीं है।

रामदास तुमको लिखेगा। यहां उसका चित्त शांत नहीं रहता है। अब तो सब कुछ खाता है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १३८के सामनेकी प्रतिकृतिसे।

१. ये पत्र उपलब्ध नहीं है।

२. हीरालाल शर्माने १४ दिनका उपवास रखा था।

३० पत्र मिर्ज़ा इस्माइलको

२३ दिसम्बर, १९३४

सीमा प्रान्तकी यात्राके विषयमें मैंने समाचारपत्रोंको जो वक्तव्य जारी किया था,[१] आशा है कि आपने उसे देखा होगा। मैं संघर्ष बचानेकी हर चन्द कोशिश करूँगा। मेरी दृष्टिमें यह किसी चीजके लिए किसी भी अन्य चीजका बलिदान कर देनेकी बात नहीं है। क्या बलिदानका व्यापक अर्थ आत्म-शुद्धि नहीं है? वाइसरायकी इच्छाके आगे मेरे झुकनेसे जबतक हमारे उद्देश्यको हानि नहीं पहुँचती, तबतक मैं उसकी अधीनता स्वीकार करता रहूँगा। मैं जल्दबाजीमें कोई कदम नहीं उठाऊँगा, इसपर तुम यकीन कर सकते हो।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

३१ पत्र नारणदास गांधीको

२३ दिसम्बर, १९३४

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। आज हरखचन्द और विजया यहाँ से गुजरे। कनु[२] स्टेशन पर मिलने गया था।

तुमने देखा होगा कि जमना[३] को तुम्हारे वहाँसे जानेकी बात पसन्द नहीं है। निर्णय तुम्हींको करना चाहिए। यदि वहाँ तुम्हारी उपस्थिति आवश्यक हो तो मैं तुम्हें वहाँसे बुला लेनेका विचार ही नहीं करूँगा। मैंने बात तुम्हारे सामने रख तो दी, किन्तु इसपर दुबारा विचार कर लेना ठीक होगा।

रामदासकी बड़ी इच्छा है कि उसके दोनों बच्चे किसी बालमन्दिरमें पढ़ें। ऐसी हालतमें नीमूको उनके साथ रहना चाहिए। रामदासकी नजर भावनगर पर है। किन्तु नीमू भावनगरमें कहाँ रहेगी? कोई बीमार वगैरा पड़ जाये तो क्या होगा? इसलिए मैंने राजकोट भेजनेकी सलाह दी है। सलाह नीमूको पसन्द आई है। मैंने कहा है कि नारणदास वहाँ रहे न रहे, परन्तु बालमन्दिर तो चलेगा ही। यह ठीक

१ देखिए खण्ड ५९, "वक्तव्य समाचारपत्रोंको" पृ० ४७०-७१।

२ नारणदास गांधीका पुत्र।

३ नारणदास गांधीकी पत्नी।

है न? बालमंदिरके कामके विषयमें मुझे लिखना। यह भी लिखना कि बच्चोंको लेकर नीमूको वहां आनेके बारेमें तुम्हारा क्या खयाल है। जवाब मुझे बिड़ला मिल्स, दिल्लीके पतेपर देना। नीमूको भी छोटा सा पत्र लिख देना। मेरे खयालसे रामदास तो बम्बई गया होगा। यह तो नहीं कह सकते कि वह एकदम चंगा हो गया है। वह आजकल अपनी इच्छानुसार उपचार करा रहा है। थोड़ा बहुत चलता-फिरता भी है। नीमू भी कुछ सीखना चाहती है। वह यहां सितार और अंग्रेजी सीख रही है। मैंने कहा है कि यह वहां भी सीखती रह सकेगी।

बुआ[1]का पत्र साथ है। अब वे बहुत वृद्ध हो गई है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१)से। सी० डब्ल्यू० ८४२६ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी।

३२. पत्र: वल्लभभाई पटेलको

२३ दिसम्बर, १९३४

भाई वल्लभभाई,

मिल मालिकोंके प्रस्ताव देखे होंगे। देखना कि कहीं व्यर्थ न लड़ पड़ें। कोई सुने तो अपनी बात सुनाना। मैंने कस्तूरभाई और चमनभाईको लिखा है।

जहां जहां दौरा करो, वहां ग्रामोद्योग संघकी बात अवश्य करो। इसके द्वारा बहुत-कुछ हो सकता है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५०।

१. रलियातबहन, गांधीजीकी बड़ी बहन; पत्र उपलब्ध नहीं है।

३३ पत्र वेणीलाल ए० गांधीको

२३ दिसम्बर, १९३४

चि० वेणीलाल,

मैं देखता हूँ कि तुम्हारा मामला जरा कठिन है। तुम्हारी जरूरत कमसे-कम ५० रुपयेकी है। और मेरे विचारसे इतनी तनख्वाह हरिजन सेवाकार्यसे निकालना मुश्किल है। बड़ी उम्रके लड़कोंको अपनी इच्छानुसार पढ़ने देना चाहिए, ऐसी मेरी मान्यता है। इसलिए तुम्हें किसी धन्धेकी तलाश करनी होगी। मेरी आशा छोड़ देना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीयुत वेणीलाल गांधी
मार्फत माणेकलाल अमृतलाल गांधी
राणावाव
पोरबन्दर रियासत, काठियावाड़

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९२१) से, सौजन्य वेणीलाल ए० गांधी।

३४ पत्र डॉ० जेम्स हेनरी कजिन्सको[1]

२४ दिसम्बर, १९३४

प्रिय मित्र,

निश्चय ही मित्रोंने मजाक किया है। मैं साहित्य जगतका प्रतिनिधि बिलकुल नहीं हूँ। मेरे पास कोई विश्वविद्यालयीय उपाधि नहीं है। मैंने तो लन्दनसे मैट्रिकुलेशन किया था, उसके आगे कुछ नहीं, और मैं अपने नामके आगे 'बी० ए० फेल' भी नहीं लिख सकता। न मैं अभ्यास और प्रशिक्षणके आधारपर ही अपने-आपको साहित्यिक कह सकता हूँ। कविताकी तो बात ही दूर रही, मुझे गद्यकी भी समझ नहीं है। कुछ कविताएँ तो मैं समझ ही नहीं सकता। साहित्यके क्षेत्रमें मेरा अज्ञान भयानक है। इसीलिए मुझे आपको एक नकारात्मक तार[2] भेजना पड़ा था जो, आशा है,

१ डॉ० कजिन्सने गांधीजीसे अनुरोध किया था कि वे उनका नाम नोबेल पुरस्कारके लिए प्रस्तावित कर दें।

२ यह तार उपलब्ध नहीं है।

आपको समयसे मिल गया होगा। इसलिए यद्यपि मैं आपका नाम तो प्रस्तावित नही कर सकता, लेकिन कमसे कम आशा कर सकता हूँ कि आप पुरस्कार जीत लेगे।

नव वर्षकी शुभ कामनाओ ओर आपको तथा श्रीमती कजिन्सको अभिनन्दन सहित,

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

३५ पत्र अमृत कौरको

२४ दिसम्बर, १९३४

प्रिय बहन,

मुझे तुम्हारे कई पत्र मिले। निश्चय ही मेरी प्रार्थनाएँ तुम्हारे शुभ प्रयासके साथ है।

सी० एफ० एण्ड्र्यूज यहा २६ तारीखको आयेगे।

मेरे हस्ताक्षरोके साथ सन्देश यह रहा।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५१८) से, सौजन्य अमृत कौर। जी० एन० ६३२७ से भी।

३६ पत्र अमतुस्सलामको

२४ दिसम्बर, १९३४

प्रिय बेटी,[1]

तुमने इससे पहले पत्र नही लिखा, जिससे मुझे बहुत चिन्ता रही। लेकिन ऐसा न करती तो फिर तुम, तुम नही रहती। ईश्वरका धन्यवाद है कि तुम्हारा कार्ड और पत्र मुझे कल मिल गये। यहा सब लोग अच्छे है। लाली[2] बम्बईमे खेल रहा है। मेहर[3] यहा है, थोडा-बहुत पढती है और खेलती हे। वह खुश नजर आती है। हम २८ तारीखको दिल्लीके लिए रवाना होगे।

१ यह उर्दू लिपिमें है।
२ अब्दुल गफ्फार खाँका पुत्र।
३ मेहरताज, अब्दुल गफ्फार खाँकी पुत्री।

आशा है तुम खूब खा पी रही हो। आज इससे ज्यादा नही।
स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ३१२) से।

३७ पत्र जमनालाल बजाजको

२४ दिसम्बर, १९३४

चि० जमनालाल,

गगाधररावके बारेमे तुम्हारा पत्र मिला। यह एक मुश्किल सवाल है। मुझे लगता है कि पैसा इस तरह तो नही दिया जा सकता। लेकिन गगाधररावके साथ बातचीत किये बिना कोई निणय नही दे सकता। मै उन्हे लिख रहा हू। मेरा पत्र इसी आशयका होगा।

गगाधररावका पत्र इसके साथ वापस भेज रहा हूँ।

कान बिलकुल ठीक करा लेना।

कमलनयनको कोलम्बो जाने देनेकी बात तो तुम सुन ही चुके होगे।

अब्दुल गनी[1] के बारेमे खान साहबके साथ बात की है। वे गनीको लिखेगे। उन्होने कहा है कि जो भी खच आयेगा, मै दूगा। गनीको उसके टासिलसके इलाजके लिए दिल्ली बुलाया हे। खान साहब वहा जा सकेगे अथवा नही, यह निश्चित नही है। ऐसा आदेश है कि वे पजाबमे भी न जाये। दिल्ली जाते हुए रास्तेमे कुछ पजाबके स्टेशन आते ह। सवाल यह है कि इनमे से होकर जाया जा सकता है या नही। पजाब सरकारको तार दिया हे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मदनमोहन हो तो उससे कहना कि वह सरहदके अपने अनुभव लिख भेजे। मेरे साथ तो बात ही न हो सकी।

आदेश[2] रद्द हो गया हे, ऐसा तार आज आ गया है।

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० २९४८) से।

१ अब्दुल गफ्फार खाँका पुत्र।
२ खान साहबके पंजाबमें न जाने देनेके सम्बन्धमें सरकारी आदेश।

३८ पत्र मणिलाल और सुशीला गांधीको

२४ दिसम्बर, १९३४

चि० मणिलाल ओर सुशीला,

तुम्हारी ओरसे पत्र आना चाहिए था, लेकिन नही आया। उम्मीद है, सब सकुशल होगे।

अब तो तुम्हे नया एजेंट[1] मिलेगा। अच्छा निकले तब बात है।

तेरा दिवाली अक क्या अधिक बिका?

रामदासका हाल ठीक चल रहा है। क्या मै यह समझ लू कि तुम परमिट नही भेज सकते?

म ज्यादासे ज्यादा एक महीनेके लिए दिल्ली जाऊँगा। २८ तारीखको यहा से रवाना होऊँगा। बा साथ होगी।

मेरी जेल यात्राकी तयारिया चल रही है। लेकिन अभी देर है। फरवरीसे पहले नही होगी।

क्या तुम श्री री जोसससे मिले हो? वे बहुत भले व्यक्ति है। यहा थोडे दिन रहकर गये है।

लक्ष्मी राजाजीके साथ मद्रास गई है। देवदासकी गाडी ठीक चल रही है।

किशोरलाल और गोमती दो तीन दिन बिस्तरपर रहे। अब ठीक है। चिन्ताकी कोई बात नही।

मेरी तबीयत अच्छी रहती है। अभी तीन महीनोसे कच्चा दूध, कच्ची सब्जिया और फल ले रहा हूँ। गम पेयमे मात्र गम पानी और शहद अथवा गन्नेका गरम किया हुआ रस होता है। इससे तनिक भी नुकसान नही हुआ।

वहाके खेतमे फिलहाल क्या उगाते हो? आबादी कितनी है? क्या सारे मकान काममे आते है?

सैम क्या करता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ४८२९) से।

१ सैयद रज़ा अली।

३९ पत्र साहबजी महाराजको

२५ दिसम्बर, १९३४

प्रिय साहबजी महाराज,

आपका तत्परतापूवक भेजा गया सुविस्तत पत्र और स्टेनलेस स्टीलकी निबे मुझे कल मिली। इन्हे देखकर मुझे हष ओर गव दोनो होता है। मै इनको आजमाऊँगा। लेकिन फिलहाल मेरी आत्मा गावोमे बसी हुई है। जिस कागजपर मै लिख रहा हूँ वह गावमे बना हुआ है और किलिककी जिस कलमसे म लिख रहा हूँ, वह भी गाँवमे उगाई गई है। बहुत से नियमोकी तरह ही आर्थिक नियम भी दो प्रकारके दिखते है — अच्छे और बुरे। अच्छे नियम सभीके लिए अच्छे होने चाहिए। इस समय तो गायोकी तरह मनुष्य भी भूमिपर भार-जसे प्रतीत होते है। चद शहरी लोग जीवित रह सके, क्या इसीलिए अधिकाश लोगोको मरनेकी जरूरत हे? मेरा तुच्छ प्रयास यह दिखानेका ह कि गाववालोको मरनेकी जरूरत नही है, और अगर वे अपना आलस्य त्याग दे और जीवित रहनके लिए सामूहिक रूपसे प्रयत्न करे तो उनके अन्दर जीवित रहनेकी अर्तानिहित क्षमता हे। शहरी लोगोमे ऐसी कोई अर्तानिहित क्षमता नही है। इसीलिए उन्हे चगेजखाकी तरह नरमेध यज्ञ करनेकी जरूरत पडती है।

मै आपसे तक करने लगा, इसके लिए क्षमा करे। मै यह तक इसलिए करता हूँ क्योकि चहुँमुखी हर्षोल्लासकी स्थिति पैदा करनेका हमारा जो समान उद्देश्य है, उसके लिए मेरे तरीकेमे यदि कोई त्रुटि हो तो मै उसे जानना चाहता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० २१६०) से।

४० पत्र आनन्द तो० हिंगोरानीको

२५ दिसम्बर, १९३४

प्रिय आनन्द,

अभी-अभी पिताजी मुझसे मिले हैं। उन्होंने अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके लिए काम करनेका निश्चय किया है। वे पूरे आशावान हैं। वे मौजूदा घरपर एक और मंजिल बनाना चाहते हैं, ताकि उसमें तुम स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर सको। वे तुम्हारी सहायता भी करना चाहते हैं। मैं चाहता हूँ कि तुम यह प्रस्ताव स्वीकार कर लो। आशा है तुम अपना खयाल रखोगे और पूरी तरह स्वस्थ हो जाओगे। विद्याको पत्र लिखना चाहिए। अभी और नहीं।

बापू

श्री आनन्द हिंगोरानी
मार्फत ए० एस० भागचन्द केवलरामानी
कास्मोपोलिटन बिल्डिंग कॉटेज कालोनी,
सरोजिनी नायडू रोड
सक्कर (सिंध)

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी।

४१ पत्र जमनालाल बजाजको

२६ दिसम्बर, १९३४

चि० जमनालाल,

तुम अभी दो कमरे बनवानेका आग्रह मत करो। मैंने सोच-समझकर 'ना' कहा है। सब कुछ तो ट्रस्ट ही है न? कौड़ी कौड़ी बचानेसे ही बरकत होती है। फिर भले ही वह निजी पेढ़ी हो अथवा दरिद्रनारायणकी। और फिर, दरिद्रनारायणकी पेढ़ीमें तो अधिक सावधानीकी जरूरत है। मगनलाल स्मारकके विषयमें मैं मसविदा तैयार नहीं कर सका। तैयार करनेका भरसक प्रयत्न करूँगा।

यदि अभयकर बच जाये तो बहुत अच्छा हो। उससे मिलो तो कहना कि मैं उसे बहुत याद करता हूँ।

खान साहब मेरे साथ दिल्ली आ रहे है। मेहर तो होगी ही। मेहरका भी ठीक चल रहा है। आजकल यहा आनन्दके पिता और बैकुण्ठ मेहता है। आनन्दके पिता सारी दुनिया घूम आये है। वे उद्योग सघमे खूब रुचि लेगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० २९४९) से।

४२ पत्र वल्लभभाई पटेलको

२६ दिसम्बर, १९३४

भाईश्री वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिला।

मैने गगाधररावको पत्र लिखा है। जमनालालने उनका पत्र मेरे पास भेजा था। मुझे उनकी बात समझमे नही आई। इसलिए मैने उन्हे दिल्ली आनेको लिखा हे। इस तरह रुपया कबतक दिया जाये? और किसके आगे हाथ फैलाया जाये?

कराची और लाहौरकी हत्याओके बारेमे ब्रेल्वीका लेख पढा होगा। देखता हूँ कि अब दिल्लीमे क्या हो सकता है।

एण्ड्रयूज का पत्र आया है। उनको तो अच्छा लगा है। आज आना चाहिए। म यह नही मानता कि उनके अच्छा लगनेमे कोई अथ हे।

डा० खान साहबके नाम पजाब सरकारका भी हुक्म था। दिल्ली तो उन्हे जाना ही हे। इसलिए उन्होने पूछा कि रास्तेमे पजाबकी हद आती है, उसका क्या होगा? अत तार दिया कि हुक्ममे स्टेशनोसे गुजरना आता है या नही? जवाब आया है कि यह हुक्म ही २८ तारीखको रद्द हो जायेगा। सरहदका हुक्म तो अपने-आप ही २९ तारीखसे रद्द हो जायेगा। इसलिए यदि उसे फिरसे जारी न करे तो खान साहब सरहदमे भी जा सकेगे। मेहर तो मेरे साथ आ ही रही है। साथ तो मेरा ही है।

ग्रामोद्योग सघके सिलसिलेमे वैकुण्ठ मेहता यहा आये है। अभी दो दिन ठहरेगे।

नाकके बारेमे समझा। जब डाक्टर ही मना करते है, तब फिर क्या कहा जाये?

रचनात्मक कायके बारेमे खूब दृढ रहना। लोग आलस्य नही छोडेगे और करने योग्य काम नही करेगे, तो न लडाई ही होगी और न स्वराज्य ही मिलेगा। हममे सहयोग तो होना ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५०५१।

४३ पत्र हरिभाऊ उपाध्यायको

२७ दिसम्बर, १९३४

भाई हरिभाऊ,

तुमारा खत मिला है। अखबारोमे तो देखा कि फिर कुछ झगडा पैदा हो गया है। हि० वि०[1] की योजना मिलनेपर देख लूगा।

पत्र व्यवहारसे शिक्षा देनेकी प्रथा महिला आश्रममे दाखल की है। इसमे जो शिक्षक नियुक्त करनेके है, उसमे तुमारा नाम दाखल करनेकी इच्छा है। करू ?

बापुके आशीर्वाद

श्री हरिभाऊ उपाध्याय
काग्रेस आफिस
अजमेर, राजपुताना

हरिभाऊ उपाध्याय कागजातसे, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

४४ गॉववालोके हाथ

बिना पालिश किये चावल, गेहूँके आटे और गुडके बारेमे जो युक्तियुक्तपूर्ण राये प्राप्त हुई है उनमे डा० अन्सारीकी राय सबसे ताजा है। मै उसे नीचे पाठकोके सामने भी रख रहा हूँ। इसी प्रकारके सुनिश्चित उत्तर अन्य प्रतिष्ठित डॉक्टरोसे भी प्राप्त हुए है। श्रीयुत कुमारप्पा इनका सार सग्रह तैयार कर रहे है और यथा-समय इन पृष्ठोमे उसे प्रकाशित किया जायेगा। इस बीच कार्यकर्त्ताओ और अन्य लोगोको निम्नलिखित बातोपर विचार करना चाहिए[2]

चावलको पालिश करनेकी प्रक्रियामे दानेपर से सभी बाहरी छिलके उतर जाते ह, जिनमे भूसी और साथ-ही साथ रजित छिलका भी शामिल है। रजित छिलकेमे विटामिन बी, चर्बी और प्रोटीन होते ह जो स्वास्थ्य और विकासके लिए आवश्यक ह। यह सिद्ध किया जा चुका है कि पालिश किये हुए चावलमें विटामिन बी का अभाव बेरी-बेरी नामक रोगका कारण होता है। इसके विपरीत, बिना पालिश किये चावलमे विटामिन बी, प्रोटीन, चर्बी और खनिज तत्व बने रहते ह, क्योकि पालिश करनेके लिए

१ हिन्दी विद्यापीठ।

२ यहाँ केवल कुछ अश ही दिये गये हैं।

चावलको मिलोमे उबाले जानेकी जिस प्रक्रियासे गुजरना पडता है, उससे बिना पालिश किये चावलको नहीं गुजरना पडता।

गेहूँके दानेमें चोकर या बाहरी आवरण होता है जिसमे मुख्यत सेलूलोज होता है, इसके अलावा उसमें गिरी होती है और बीज होता है। गिरीमे स्टाच होता है और बीजमे स्टाच, प्रोटीन और कुछ चर्बी होती है।

मिलोमें आटेकी पिसाईकी प्रक्रियामें चोकर और बीज निकल जाते ह, और इसक साथ ही गहूके कुछ अत्यन्त उपयोगी तत्त्व भी निकल जाते है, क्योकि बीजके साथ ही प्रोटीन और चर्बीका बहुत बडा भाग निकल जाता है, और चोकरके साथ खनिज तत्व और कुछ प्रोटीन निकल जाता है।

दानेदार चीनी बनानेकी प्रक्रियामे कुछ उपोत्पादन तयार होते ह जसे गुड, खाड या सीरा। गन्नेकी चीनीकी कोई मात्रा अकेली ली जाये तो उसे शरीर जितनी तेजीसे आत्मसात करेगा, उसकी अपेक्षा उतनी ही मात्रामे गुड, जिसमें गन्नेकी चीनी और फलकी चीनी क्रमश २ और १ के अनुपातमे मिली होती है, लेनेपर उसे शरीर कहीं अधिक तेजीसे आत्मसात कर लेगा। इसलिए गुडकी पौष्टिकता साफ की हुई चीनीसे कमसे कम ३३ प्रतिशत अधिक होती है। इस रायकी सत्यताको शुद्ध गुड, चक्कीका पिसा आटा और बिना पालिशका हाथ कुटा चावल लेकर कोई भी व्यक्ति परख सकता है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २८-१२ १९३४

४५ पत्र जानम्मालको

वर्धा
२८ दिसम्बर, १९३४

प्रिय जानम्माल,

तुम्हारा पत्र पाकर खुशी हुई। अंग्रेजीमे लिखनेमे हुई अशुद्धियोके लिए खेद प्रकट करनेकी कोई आवश्यकता नही है। विदेशी भाषामे लिखनेमे हम निपुण हो ही नही सकते। हम अपनी मातृभाषामे ही निपुण बननेकी कोशिश करे।

यह अच्छा है कि तुम घी के बदले मक्खन ले रही हो।

अब तुम मुझे दिल्ली, बिडला मिल्सके पतेपर लिखना।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे अम्बुजम्माल कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

४६ पत्र अम्बुजम्मालको

वर्धा
२८ दिसम्बर, १९३४

चि० अम्बुजम,

तुमारा खत मिला। मुझे बता दो क्या चाहती हे। मैं इग्रेजीमे लिखु या हिदीमे? तुमारे भी दिल चाहे उसी भाषामे लिखना।

जब पुनीया चाहिये तब तुमारे यहासे मगवाना। लेकिन कोशीश वहा धुननेकी करना।

खुराकसे वायु रहे तो दूधके बदले दही लेना। फुलकेके बदले थोडे चावल लेना। कच्ची भाजी और फल नही छोडना।

आश्रम खोलनेका हो जायगा तब मैं देवकी लीलावतीका देख लुगा।

आज हम सब दिल्ली जाते है।

टीकट व कागद बचानेके लिये इसके पीछे जानमालको[1] लिखता हूँ।

बापुके आशीर्वाद

अम्बुजम्माल कागजातसे, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

४७ पत्र हीरालाल शर्माको

बिडला मिल्स, दिल्ली
२९ दिसम्बर, १९३४

चि० शर्मा,

तुमारा उपवास आज पूरा होना चाहीये। मुझे शीघ्र सब बयान दे दो। मैं यहा आज फजरमे आ गया।

रामदास देवलाली स्वामीके साथ गया, वहा से मुबई जायगा।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, पृ० १४० के सामनेकी प्रतिकृति से।

१ जानम्माल।

४८ सन्देश

२९ दिसम्बर, १९३४

हकीम साहबकी रगरगमे हिंदु मस्लीम इतेहादकी बाते भरी थी। आज जब हम उनको याद करते है तो सबसे अच्छा यही होगा कि हम सब अपने दिलोको साफ करे। और हमसे बन सके इतनी कोशीश इतेहाद बडानेकी करे।

मो० क० गाधी

दिल्लीका राजनैतिक इतिहास, भाग–२, पृ० २१३ की प्रतिकृतिसे।

४९ भेट एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिको

२९ दिसम्बर, १९३४

महात्मा गाधीने कहा कि मै २८ जनवरी, १९३५को दिल्ली छोडनेकी आशा करता हूँ, क्योकि मुझे २९ तारीखको निश्चित रूपसे वर्धामें होना है। मेरा काय मुख्य रूपसे इस क्षेत्रमें हरिजन उत्थानसे, और साथ ही आस-पासके क्षेत्रोमें ग्रामोद्योगोको बढ़ावा देनेसे सम्बन्धित है।

उन्होने कहा, मै यह बात बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मेरी २१ जनवरीसे आरम्भ होनेवाली दिल्ली-यात्राका नई विधान सभाके कायसे कोई सम्बन्ध नहीं है। यह केवल सयोगकी बात है कि जिस समय म यहा हरिजन और गावोके उत्थान-सम्बन्धी कायके सिलसिलेमे आया हुआ हूँ, उसी समय काग्रेसजनोका विधान-सभा सम्बन्धी काम भी शुरू हो रहा है।

वाइसरायने गाधीजीको सीमा प्रान्त न जानेकी जो सलाह दी थी, उसको देखते गाधीजीकी वहाकी प्रस्तावित यात्राके बारेमें प्रश्न किये जानेपर उन्होने कहा

यह मेरे वशके बाहर है और मुझे इस समय कुछ नही कहना है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, ३०-१२-१९३४

५० बातचीत हरिजन-निवास, किंग्जवे कैम्प, दिल्लीमें[1]

[२९ दिसम्बर, १९३४][2]

[गाधीजी] यही वह कुटिया है जिसके बारेमे मुझे बताया गया था कि मेरे लिए जल्दी जल्दी तैयार की जा रही है? यह १६ फुटकी ऊँचाई, ये खम्भे और यह ऊँचा चबतरा क्यो? मेरे दिमागमे तो एक सादी सी फूसके छप्परवाली कच्ची झोपडी थी और मैने यहा वही देखनेकी आशा की थी। उसपर ५०० रुपयेसे ज्यादा नही लगते, जबकि इसपर २,५०० रुपये लगे है।

[मलकानी] इसे जल्दी में तैयार कराना पडा है। हमारे पास दो कमरे से ज्यादा नहीं थे। हमने सोचा कि हमें एक छोटा सा छज्जा बना देना चाहिए जहा एक छोटा शामियाना लगाया जा सके और जहाँ आपको पर्याप्त धूप और एकान्त मिल सके। लकडीकी धनिया और कडियाँ लगानेमें समय बहुत लगता, इसलिए हमने लोहेकी लगवा दीं।

[गा०] कोई बहाना नही चलेगा। अगर तुम जानते थे कि इस चीजपर इतना धन लगेगा तो तुमने इसका विचार एकदम त्याग क्यो नही दिया? मुझे तम्बूमे भी पूरा आराम रहता। दुखकी बात तो यह है कि तुम भूल गये कि तुम हरिजनो और गाववालोके प्रतिनिधि हो। तुमने श्रीयुत घनश्यामदासके प्रतिनिधिके समान काय किया। अगर तुमने ठीक गावकी असली झोपडी बनानेके लिए गाववालोको काम पर लगाया होता तो तुम्हे देखनेको मिलता कि हमारे गाववाले अभी भी कैसा काम कर सकते है ओर वह हमारी स्थितिके अनुकूल भी होती। और यह घुमावदार सीढी क्यो? तुम आसानीसे लकडीकी एक सीढी प्राप्त कर सकते थे।

[म०] नही बापू, इसे हमने किसीसे मागा है, और जरूरत खत्म होते ही इसे वापस कर दिया जायेगा।

हमारी मुसीबतको जसे और बढानेके लिए शामको एक नया खरीदा गया उगालदान आया और उसे एक असावधान मित्रने गाधीजीकी मेजपर रख दिया। यह जसे अन्तिम विस्फोटका सकेत था।

[गा०] इसे किसने मँगवाया ओर इसे क्यो खरीदा गया?

[ब्रजकृष्ण] मने एक मँगाया था। मेरा खयाल था कि इसे मँगनी ले लिया जायेगा।

१ यह महादेव देसाईके झोपड़ी नही महल शीषक लेखसे उद्धृत है।

२ इस तारीखको गाधीजी हरिजन निवास पहुँचे थे।

[गा०] लेकिन क्या तुम यह भी नही जानते थे कि अगर मॅगनीमे यह फौरन नही मिल सका तो शहरके हमारे मित्र निश्चित रूपसे एक खरीद लेगे ?

[ब्र०] म जानता था, लेकिन मने यह नही सोचा था कि डेढ़ रुपयेकी चीज खरीदी जायेगी। मने तो चार-पाँच आने वाला उगालदान खरीदा होता।

[गा०] और तुम चार आनेकी परवाह नही करते ! खर, इसे फौरन वापस कर दो। मै मिटटीके कुल्हडसे सतुष्ट हो जाऊँगा उसकी कीमत भी लगभग कुछ नही होगी। मेरा खयाल था कि तुम इन चीजोको सहज ही समझ जाओगे। खर, अब मैं तुम्हे बताये देता हूँ कि अगर मेरी अनुमतिके बिना कोई चीज खरीदी गई, तो मै तुम्हारे साथ असहयोग करनेपर मजबूर हो सकता हूँ।

सोनेका समय हो रहा था। बिस्तर लाये जा रहे थे। गाधीजी ने फौरन कहा

खाटोकी कोई जरूरत नही है। चटाईके ऊपर दरी काफी है। ऐसा नही कि स्वास्थ्यको देखते आवश्यक हो तो मै चारपाई इस्तेमाल नही करूँगा ! लेकिन जब तक सभव है, मै उसके बगैर काम चलाना पसद करूँगा।

लेकिन बापू, गावोमें गरीबसे गरीब आदमीके पास अपनी चारपाई है।

[गा०] मै जानता हूँ, जानता हूँ। लेकिन क्या इसका यह मतलब है कि इस सुविधाजनक मामलेमे हम उनकी नकल करे, जबकि अन्य चीजोमे हम उनकी नकल नही कर सकते ? अगर हम उनकी तरह नही रह सकते, यदि हमे उनसे ज्यादा अच्छा भोजन और अच्छा कपडा चाहिए, तो कमसे-कम हम चारपाइयोके बिना काम चलाकर कुछ थोडी सी सात्वना तो प्राप्त करे।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ११-१ १९३५

५१ भाषण हरिजन औद्योगिक प्रदर्शनी, दिल्लीमें

३० दिसम्बर, १९३४

एसी करोडो स्त्रिया जिन्हे कातना और खादी बुनना आता है, आज भूखो मर रही है। उन्हे सूखी रोटी मिल सके, इसके लिए हमे खादी पहननी चाहिए। हम करोडो हरिजनोको अस्पृश्य माननेमे धर्म समझते है। हम चमार, ढेढ आदिका बहिष्कार कर उन्हे अपनी सस्कृतिसे विमुख रखते है। मनुष्य जीवनके पोषणके लिए यदि ईमानदारीसे कोशिश की जाये तो किसी भी धधे अथवा उद्योगको निन्दनीय नही कहा जा सकता। यदि हम हरिजनोका प्रेम प्राप्त नही करते तो गायोका सरक्षण असम्भव हो जायेगा। हमारे देशसे करोड़ो रुपयेके चमडेका निर्यात होता

है। अ य देशोकी अपेक्षा अधिक चमडेका निर्यात करके हमारा देश मूखताका काम करता है। इस तरह चमडेका निर्यात कर हम हरिजनोकी रोटी छीन लेते है।

किसी भी मनुष्यको नीच अथवा छोटा समझना महापाप है, अपरा ग है।

[गुजरातीसे]

गुजराती, ६ १ १९३५

५२ पत्र प्रेमाबहन कटकको

बिडला मिलस, दिल्ली
३१ दिसम्बर, १९३४

चि० प्रेमा,

इस समय छ बजनेको है। परन्तु अ धकार घना बना है। हाथ ठिठुर गये है। यहा लगभग वीरान है। हरिजन आश्रम बसाना है। दो कमरे खास तौरपर बनाये गये है, और तीन-चार तम्ब् है।

तेरा पत्र मिल गया। तेरे जी मे जो आये, पूछती रहना। अपनी फुरसतसे जब जितने प्रश्नोके उत्तर दे सकूगा, देता रहूँगा।

किसन कैसी है? तेरे पास कुछ समय रहने आनेवाली थी, उसका क्या हुआ?

तेरा काम आगे चलता ही रहेगा और रुपयेकी मदद मिलती ही रहेगी।

रामनाम रामबाण है, यह अटल विश्वास तू रखती है, अत इस सत्यका तू अनुभव करेगी। सवत्र अ धकार दिखाई देता हो तो भी रामनामका रटन करती ही रहना। इससे भला ही होगा।

किसानोकी जमीनके टुकडोका प्रश्न बहुत बडा है। हमारे हाथमे सत्ता हो तो भी वह कठिन ही रहेगा। अभी तो हमारा प्रयोग यही देखनेका है कि सत्ताके बिना क्या करना सम्भव है। छोटे टुकडेपर भी बुद्धिपूवक खेती हो तो वह लाभप्रद हो सकता है। यह सब प्रयोग करके ही बताया जा सकता है। इस क्षेत्रमे हमारा अपना ज्ञान भी छिछला है, इसलिए हम पगु जैसे है। इसीलिए हम खेतीके प्रश्नको सीधे नही छूते। अभी तो हमे आसानीसे सूझनेवाले और आसानीसे चलाये जा सकनेवाले उद्योगोको ही हाथमे लेना हे, ताकि किसानोका आलस्य हटे और उद्योगके साथ बुद्धिका मेल साधा जा सके। दूसरी सब बाते फिर अपने आप हो जायेगी।

आजकलकी अपेक्षा पहले लोगोकी स्थिति अच्छी तो थी ही। यह बात सिद्ध की जा सकती है। पहले बाहरसे धन बहा चला आता था, जमीनके इतने टुकडे नही थे, इतना धन कभी बाहर नही जाता था, कुदरत अपना काम कुदरती ढगसे करती रहती थी। अब हमने पूरे ज्ञानके बिना प्रकृतिके काममे हाथ डाला है, और वह भी निरकुश ढगसे, इसलिए हमारा शोषण हो रहा है।

रामराज्य अवश्य काल्पनिक है। परन्तु वैसा कुछ-न कुछ पहले था तो सही, यह भी हम सिद्ध कर सकते है। वैसे असत्य और दारिद्रयका पूरा पूरा लोप बिलकुल तो न पहले किसी समय हुआ और न भविष्यमे कभी होना सम्भव है।

पहाडोकी गुफाओमे भाग जानेकी प्रथामे दुनियासे ऊब उठनेकी बात तो भरी ही है। इसका कुछ तो उपयोग जरूर रहा होगा। परन्तु आज बिलकुल नही है। सेवा करते करते मरना गुफामे रहनेके बराबर ही है।

जैसा अपने बारेमे वैसा ही दूसरोके बारेमे। अपने बारेमे अनासक्त रहनेपर भी सरदी गरमीका भान तो रहेगा ही। ठण्डमे गरमी और गरमीमे ठण्ड तो हम ढूढेगे ही, परन्तु खोज सफल न हो तो रोने नही बैठेगे — यही अनासक्ति है। यही बात सरदीसे कापनेवालोके लिए भी है। उनके लिए प्रयत्न तो हम जरूर करेगे। उन्हे कापते देखकर हमारे पास जो कपडे होगे, वे अथवा उनमे से कुछ हम अवश्य उन्हे दे देगे। इतनेपर भी अगर वे कापेगे तो हम उसे सहन करेगे। उससे अधीर होकर मारधाड नही करेगे असत्याचरण नही करेगे — यही अनासक्ति है।

खादी पेटका धधा है भी और नही भी है। मैने उसे अन्नपूर्णा कहा है।

हिंसाको छोडकर रूससे बहुत कुछ लेने लायक है, ऐसा मै मानता हूँ। परन्तु सम्भव है कि जो इस समय केवल बलपूर्वक करानेसे सम्भव होता जान पडता है वह स्वेच्छासे स्वीकार्य न हो सके। परन्तु हम सब पढी हुई बातोसे अनुमान लगाते है, यह ठीक नही। हमे स्वतन्त्र रूपसे विचार करना चाहिए। हमारे लिए क्या हितकर है, यह हमीको सूझ सकता है।

विषमताका सर्वथा नाश होना असम्भव है। परन्तु अधिकसे अधिक समतातक पहुँचनेका एक ही मार्ग है, जो मैने बताया है। मैने जो बताया है वह नया नही है। पुराना ही (कदाचित नये रूपमे) मै बता रहा हूँ।

किसानोके लिए यह बडा आश्वासन है कि फुरसतके समयमे सहायक उद्योग मे लग कर वे अपनी आयमे अच्छी वृद्धि कर सकते है।

किसानोके आर्थिक हितोकी ठीक व्यवस्था द्वारा रक्षा की जानी चाहिए। हमे चाहिए कि हम उन्हे समझाये कि व्यवस्थित ढग अपनाये बिना वे अपनी आर्थिक उन्नति नही कर सकेगे।

कर्मका नियम समझना आसान है। जो कानून हम यन्त्रशास्त्रमे देखते है वही इसमे है। कई शक्तिया एकसाथ काम करती है और उनका एक ही दृश्य परिणाम हम देख सकते है। यही बात कर्मोके विषयमे भी है।

तू बिलकुल छोटे गावमे जाना चाहे तो जा सकती है। परन्तु जिस गावमे है, उसीसे तू चिपटी रहेगी तो भी काफी है। एक जगह पूरी सफलता मिले तो वह सफलता एक मापदण्ड बन जायेगी। आज हमारे पास ऐसा मापदण्ड नही है।

यहा २० तारीखतक रहूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० १०३६५) से। सी० डब्ल्यू० ६८०४ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक।

५३ पत्र विद्या आर० पटेलको

३१ दिसम्बर, १९३४

चि० विद्या,

तेरा पत्र मिला। तू आश्रममे किसीको पत्र लिखती नही जान पड़ती। वहा तूने पठन पाठन जारी रखा हे अथवा नही? यदि आलस्य करेगी तो जब घर बनायेगी तब चला नही सकेगी। इसलिए एक मिनटके लिए भी खाली न बैठना। कुछ समय अच्छा स्वाध्याय करना और कुछ समय अच्छे उद्योगमे लगाना।

मुझे नियमपूवक लिखा करे तो अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ९५८९) से।

५४ पत्र रामेश्वरप्रसाद नेवटियाको

३१ दिसम्बर, १९३४

चि० रामेश्वर,

तुमारा खत मिला था। विस्तारपूवक लिखा सो अच्छा किया। ऐसे ही मुझे लिखा करो। यथासभव सादगीका पाठ भाई गनीको दिया करो। अगर वह यहा चाहता है तो आने दो। उसके टानसिल दा अनसारी को बता देगे। स्वामीके माफत मैंने एक खत शक्करकी मिलके मजदूरोके बारेमे भेजा है। उसका उत्तर भेज दो।

तारीख २० तक मै दिल्लीमे हूगा। बिरला मिलसे ठिकाना करो। मै तो नयी जमीन हरिजनोके लिये ली गई है उसपर रहता हूँ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०४१) से।

५५ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

३१ दिसम्बर, १९३४

चि० अबुजम,

तुमारा खत मिला है। काकासाहेबसे मिला करो। आश्रम खुलेगा तब दोनो देवकी आ सकेगी, ऐसा कृष्णनायर कहते है। लीलावतीके बारेमे तो कोई बात ही नही। जब बिलकुल तैयारी हो जाय तब बताओ।

बारडोलीसे सामान मिल गया होगा।

दिल्लीमे कमसे कम २० तारीख तक रहना होगा। मुझे लिखा करो। साथमे बा मीराबहन मेरी बहन और खुरशेदबहन है। लीलावती दिल्लीमे ही है। ठडी अच्छी पडती है। रामदास मुबई गया है। प्रभावती वर्धामे है। महेरताज यहां है। डा० अनसारीके यहा रहती है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

दूधके बदलेमे दही ले सकती है। घेउके बदलेमे चावल, दूधका वजन वही रखा जाय।

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५९९)से, सौजन्य एस० अम्बुजम्माल।

५६ भेंट 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के प्रतिनिधिको

दिल्ली

१ जनवरी, १९३५

यह सच है कि जनरल स्मटसके साथ मेरे मैत्रीपूण सम्बन्ध है।[1] दूसरे गोल-मेज सम्मेलनके अवसरपर हम दोनो लन्दनमे मिले भी थे और हमने भारतके लक्ष्यके बारेमे चर्चा की थी। यह भी सच है कि सयुक्त ससदीय समितिकी रिपोटसे अलग श्वेत पत्रमे जिन प्रस्तावोकी रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी, उन प्रस्तावोको उन्होने स्वीकार करनेकी सलाह दी थी। जनरल स्मटसने यह सलाह कुछ शर्तोके साथ दी

१ गाधीजीसे इस समाचारके बारेमें टिप्पणी करनेको कहा गया था कि जनरल स्मटसने 'गाधीजी को सलाह दी थी कि टोरी पार्टीके अन्दर जो एक कट्टरपथी विद्रोही गुट है वह सवैधानिक सुधारोकी सम्पूर्ण योजनाको भग और नष्ट करना चाहता है, इसे देखते आपको सरकारके साथ सहयाग करना चाहिए।'

थी। मै यह बता दू कि जनरल स्मटसको मैने कोई उत्तर नही भेजा था। उनका ता एक अनोपचारिक निजी पत्र था जिसका उत्तर देनेकी आवश्यकता नही थी।

मै जनताको सलाह दूगा कि वह एक बिलकुल निजी मामलेको कोई महत्व न दे। इस मामलेका कोई सावजनिक महत्व नही हे, विशेष रूपसे तब जबकि श्वेत पत्रके पस्तावोके बारेमे मेरी राय अपरिवर्तित है।[1]

कुछ समाचारपत्रोमे हालमे इस आशयकी रिपोर्टें छपी थी कि श्री एण्ड्रचूजकी हालकी यात्राका सम्ब ध सयुक्त ससदीय समितिकी रिपोटसे था। जब इस रिपोटकी ओर गाधीजीका ध्यान आकृष्ट किया गया तो उ होने जोरदार शब्दोमे कहा कि उनकी यात्राका रिपोटसे कोई सम्ब ध नही और न श्री एण्ड्रचूज जनरल स्मटसका कोई पत्र ही लाये थे।

उनकी यात्रा मुख्यत इसी माह होनेवाले उनके रेडियो-भाषणसे सम्बन्धित थी। जहातक सयुक्त ससदीय समितिकी रिपोटका सम्ब ध है, हमने यो ही अत्य त सक्षेपमे च द मिनट उसके बारेमे बात की थी। इस बातचीतसे मैने जाना कि श्री सी० एफ० एण्ड्रचूज मेरी इस रायसे काफी सहमत थे कि रिपोटमे जो प्रस्ताव किये गये है, वे सवथा अस्वीकाय है।

[अग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, २ १ १९३५

५७ पत्र मणिलाल और सुशीला गाधीको

दिल्ली
२ जनवरी, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम्हारे पत्र मिले। रामदास और नीमूके विषयके तार भी मिले। मै ऐसा ही कुछ चाहता था, लेकिन तार देनेके लिए मैने नही कहा था। कह नही सकते रामदास वहा [दक्षिण आफ्रिका] जायेगा या नही, फिलहाल तो बम्बईमे किसी कामधन्धेकी तलाश कर रहा है। कुछ भी हो, मणिलालने आगे पीछे ही सही अपना फज उतार दिया।

हरिलाल फिलहाल तो राजकोटमे स्थिर हो गया है। लगता हे, कायाकल्प हो गया।

सीताके बारेमे सुशीलाके उदगार पढे। मैने तुम चार भाइयोको जसे पढाया, सीताको वैसे ही पढाया जाये तो काफी हे। मुझे उसका पछतावा नही है, भले ही स्कूली शिक्षा नही दी गई, कि तु उससे कोई नुकसान नही हुआ। हरिलाल जिद

१ देखिए "पत्र अगाथा हैरिसनको" पृ० १३ १४।

करके पाठशालामे भरती हो गया और उसने हानि उठायी। मा बापकी गोदमे बच्चोको जो कुछ मिलता है, उन्हे वह और कही नही मिल सकता। सीताको यहा भेजना जरूरी नही है। अन्य कर्त्तव्योकी तरह, सीताके प्रति भी तुम्हारा एक कर्त्तव्य है। यदि तुम इस कर्त्तव्यको समझ जाओ तो शुद्ध ब्रह्मचर्यका पाठ पढ लोगे। सीता, तुम जो कुछ करते हो, वही सीखकर ठीक तैयार हो जायेगी। वह तुम्हारी भाषा सीख लेगी, फिर वह भाषा सभ्य है या असभ्य। यदि तुम ठीक व्याकरण जानते हो तो वह उसे सीख लेगी। यदि तुम ठीक हिसाब रख लेते हो, तो उसे गणित आ जायेगा। उसे झाडना, बुहारना, रसोई करना, पानी भरना, पौधोकी देखरेख और छापाखानेका काम आ जायेगा। इस तरह स्वय सीखकर और दूसरोको सीखनेमे मदद पहुँचाकर, तुम स्वय ऊँचे ऊँचे उठते जाओगे। जब वह बडी हो जायेगी और तुम उसे अधिक सीखनेके लिए कही भेजना चाहोगे, तब वह सम्भव हो सकेगा। वर्णाश्रमका यही अर्थ है। इसमे अर्थशास्त्र भी है और यह सच्ची विद्या भी है। पाठशालाओका मोह छोड देना चाहिए। पाठशालाओमे बुद्धि विलासकी सुविधा मिल सकती है वहा चरित्र-गठन नही होता, यह मेरा निश्चित मत है। मै ऐसे बहुत-से लोगोको जानता हूँ जो वहा जाकर चरित्र खो बैठे। मै ऐसे बहुत कम लोगोको जानता हूँ, जिनका चरित्र पाठशालाओके कारण उज्ज्वल हुआ हो। मै तो यही मानता हूँ कि अपने बच्चोको पाठशालामे भेजनेवाले माता पिता अपने धर्मका पालन नही करते। बच्चे जब बडे हो जाते है, अर्थात सोलह वर्षके तो वे अवश्य ही अपने मनोनुकूल शिक्षण प्राप्त कर सकते है। इसका यह अर्थ हुआ कि सोलह वर्षकी उम्रतक सीताको अपनी व्यक्तिगत देख रेखमे रखो, जिससे उसका विकास हो और वह अपाहिज न बनने पाये। इसके लिए उसे तुम्हारे सब कामोमे हाथ बँटाना चाहिए और यदि वह समझदारीके साथ हाथ बँटाये तो समझ लो कि तुमने अपने धर्मका पालन कर लिया।

यह सब लिखनेका तात्पर्य इतना ही है कि तुम सीताके लिए वहा किसी भी पाठशालाके मोहमे न पडो। दोनो मिलकर उसे जितनी गुजराती, हिन्दी, अग्रेजी सिखा सकते हो सिखाओ। तुम जो काम करते हो, सो भी सिखाओ। उसके साथ बातचीत करते हुए बहुत सी बाते बताई जा सकती है। इस तरह वह बडी तेजीसे प्रगति करेगी। उसका वही रहना ठीक है। उसे प्रार्थना, भजन इत्यादि भी सिखाना चाहिए। उसे रामायण आदि आना चाहिए। गीता इत्यादि क्या है, यह उसे मालूम रहना चाहिए। तुम और सुशीला, दोनो सीताके विचारसे ही कुछ पुस्तके पढ लो। तुममे से किसीको भी फिलहाल देशकी बात नही सोचनी चाहिए। जब आना हो सभी साथ आना। इस सबपर विचार करनेके बाद 'यथेच्छसि तथा कुरु'[१]।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३१) से।

१ **भगवद्गीता,** अध्याय १८, श्लोक ६३।

५८ पत्र हीरालाल शर्माको

२ जनवरी, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। हा, मै जिमेदार तो हूँ[1], लेकिन मै समजा था कि अब तुमारे पास कोई छुपानेकी चीज नही है। जो खत आते रहते ह उसको मत पढो अथवा उसका असर कुछ भी मत होने दो। अमतुल सलाम अबतक यहा नही आइ है। शायद इदौर है। कृष्णा बच गई, वह बडी बात है। अब कया खाते हो?

बापूके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, प० १४० और १४१के बीचकी प्रतिकृतिसे।

५९ बातचीत हरिजन सेवक सघके केन्द्रीय मण्डलमें[2]

[२ जनवरी, १९३५][3]

कुछ लोगोने पूछा "इसे शपथ[4] के रूपमें क्यो रखा जाये? फिर इस शपथका स्वरूप लोकोपकारी कम, सामाजिकतापूण ज्यादा लगता है। अस्पश्यताका निवारण एक चीज है, लेकिन सब प्रकारके दर्जोको खत्म करके सबको एक दर्जेपर रखना बिलकुल भिन्न चीज है। क्या हमसे यह अपेक्षा की जाती है कि हम अपने नौकरोको दर्जेमें अपने बराबर मानें? आप तो हमें धीरे-धीरे सामाजिक और आर्थिक क्रातिके पथपर ले जा रहे ह।"

[गाधीजी] मुझे आश्चय है कि इस सत्यको आपने इतनी देरसे समझा। अगर आप समझते है कि हरिजनोको आपसे इससे कमकी अपेक्षा है तो आप भूल कर रहे है। आप शायद कुछ हरिजनोके साथ बराबरीके स्तरपर व्यवहार करनेको

१ हीरालाल शर्माके उपवासकी बात दूसरे लोगोंके सामने प्रकट होनेके लिए।

२ महादेव देसाई लिखित 'आत्म विश्लेषण सप्ताह से उद्धृत।

३ शपथ पर, जो सविधानका एक भाग था, २ जनवरीको बातचीत हुई थी और उसे स्वीकार कर लिया गया था।

४ इसमें कहा गया था "मैं किसी मनुष्यको दर्जेमें अपनेसे हीन नही मानता, और मै अपने विश्वासके अनुसार आचरण करनेका भरसक प्रयत्न करूँगा।"

बिलकुल तैयार हो। लेकिन जबतक आप किसी अदालतके हरिजन जजको ही नही बल्कि सभी हरिजनो — मेहतर और भगियोको — बराबरका स्थान देनेको तैयार नही होगे, तबतक आप अस्पश्यताकी बुराईसे छुटकारा नही पायेंगे। श्रेष्ठताका विचार ही अत्यत घण्य है। ससारमे विभिन्न जातियोके बीच जो भी विग्रह चलते है, उनके पीछे इसी श्रेष्ठताकी भावनाका हाथ होता है। मुझे भय है कि श्रेष्ठताकी यह मिथ्या भावना सार्वत्रिक है, लेकिन हमारे बीच यह अपने क्रूरतम रूपमे मौजद है, क्योकि ऐसा दावा किया जाता है कि इसे धार्मिक समथन प्राप्त है।

"आप ठीक कहते ह, महात्माजी", एक सदस्यने कहा, "हमारे मण्डलमे भी कुछ ऐसे सदस्य ह जो मानते ह कि ब्राह्मण लोग वश्योसे श्रेष्ठ ह।"

[गाधीजी] ऐसे लोगोका हमारे मण्डलमे कोई काम नही है। अस्पश्यता-निवारणका एक हरिजनके लिए एक अथ है, सवण हिदूके लिए दूसरा अथ है और हरिजन सेवकके लिए बिलकुल कुछ और ही अथ है।

श्रीमती रामेश्वरी नेहरूने कहा "म इस बातको समझती हूँ, लेकिन जब मै जानती हूँ कि म अपने नौकरको दर्जेमे अपने बराबरका मानकर उसके साथ वैसा व्यवहार नहीं करती, तब म शपथपर हस्ताक्षर कसे कर सकती हूँ? मेरे मनकी शान्ति समाप्त हो जायेगी।

[गा०] मनकी शान्ति समाप्त होनेकी जरूरत नही है। तुम उसके साथ अपने परिवारके सदस्य जैसा व्यवहार करोगी।

[रा० ने०] यह कहना आसान है, करना कठिन, महात्माजी। जब म खाट या सोफेपर सोती हूँ और वह दरवाजेपर खडा रहता है, तब म यह दावा कसे कर सकती हूँ कि म उसके साथ परिवारके सदस्य जसा व्यवहार करती हूँ?

[गा०] तुम कर सकती हो, और उसका सीधा सादा कारण यह है कि तुम अपने मुलायम बिस्तरपर अगर सोती हो तो इस कारण नही कि तुम उस नौकरसे श्रेष्ठ हो, बल्कि इस कारण कि यह तुम्हारे लिए एक जरूरत बन गया है। नही, नही। तुम बेकार ही डर रही हो। यह प्रश्न शारीरिकसे मानसिक समजनका अधिक है। मै तुम्हे एक दो उदाहरण दूगा। जब मै लेडी ऐस्टरके घर गया, तो वह अपने सब नौकरोको मुझसे हाथ मिलानेके लिए बुला लाई। पहले तो वे झिझके, लेकिन फिर उन्होने देखा कि झिझकनेकी कोई जरूरत नही है। जब म लॉयड जाजके यहा कुछ घटे मेहमानके तौरपर रुका था, तब उन्होने अपने नौकरोको मेरे हस्ताक्षरोके लिए अपनी-अपनी हस्ताक्षर पुस्तिका मुझे देनेके लिए उसी प्रकार उत्साहित किया जिस प्रकार वे अपने बच्चोको उत्साहित करते।

[रा० ने०] मै जानती हूँ, महात्माजी, म जानती हूँ। बर्ट्रेंड रसेल भी अपने नौकरोके साथ बराबरीका व्यवहार करते ह।

[गा०] तो फिर तुम्हे बर्ट्रेंड रसेलसे कम क्यो होना चाहिए? तुम्हे ऐसा पिता मिला है जो तुम्हारे रास्तेमे बाधा नही डालेगा, और ऐसा पति मिला है जो तुम्हारा पूरी तरह साथ देगा।

नही, नही। यह शपथ नितान्त आवश्यक हे। यदि आप लोग यह शपथ नही रखेगे तो आप [अस्पश्यता निवारण] आन्दोलनकी जड ही काट देगे ओर आप सनातनियोके रवैयेको उचित सिद्ध करेगे। चूकि आपको वित्त-विषयक दायित्वको निभाना हे, इसलिए आपको नैतिक उत्तरदायित्वको भी निभाना होगा और मै कहे बिना नही रह सकता कि अगर मै देखू कि मैने जो धन इकटठा किया है, वह गलत ढगसे खच हो रहा है तो मै उस दिनको कोसूगा जब मैने वह धन इकटठा किया था। उसी प्रकार यदि मै पाऊँगा कि मै नतिक दायित्वको नही निभा रहा हूँ तो मै अपनेको अपराधी मानूगा। इस आन्दोलनमे शामिल होते समय आपको इसके फलिताथ समझ लेने चाहिए थे। मै सब प्रकारके भेदोको खत्म करनेकी कोशिश नही कर रहा हूँ। स्वाभाविक भेदोको कौन समाप्त कर सकता हे? क्या एक ब्राह्मण एक कुत्ते और कुत्तेको खानेवालेमे कोई अन्तर नही है? और फिर भी 'गीता' कहती है

विद्याविनयसपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पडिता समदर्शिन ॥[1]

अर्थात 'जिस मनुष्यने सत्यको जान लिया है वह विद्वान और सुसस्कृत ब्राह्मणको, गायको, हाथीको, कुत्तेको, और कुत्तेका मास खानेवाले व्यक्तिको समदष्टिसे देखता है।' इन सबमे भेद है, किन्तु जो व्यक्ति जीवन विज्ञानको समझता है, वह कहेगा कि इन सबके दर्जेमे कोई अन्तर नही हे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि हाथी और चीटीके बीच, साधु और जगली मनुष्यके बीच कोई अन्तर नही हे। बेशक, एक जगली मनुष्य किसी साधुके सामने हतप्रभ हो सकता है, लेकिन साधुके मनमे किसी प्रकारकी श्रेष्ठताका भाव नही होना चाहिए। नही, कानून और ईश्वरकी दृष्टिमे हम सब समान है। यही आदश है जिसके अनुसार हमे आचरण करना चाहिए।

लेकिन तब कोई स्वामी, कोई अनुचर नहीं होना चाहिए?

नही, लैटिनकी एक सुन्दर कहावत है "एक समान लोगोमे प्रथम" ओर स्वामी या राष्ट्रपति बराबरवाले लोगोमे प्रथम होगा। मै देख सकता हूँ कि इस चीजपर आचरण कर सकना कठिन है और इसीलिए आप लोग अपनी शपथमे कहेगे कि आप अपने विश्वासके अनुसार आचरण करनेकी भरसक कोशिश करेगे। हम लोग इस शपथपर तुरन्त अमल नही कर सकते, अथवा इसपर पूरी तरह अमल नही कर सकते, तो इससे यह सिद्ध नही होता कि शपथ गलत हे। इससे यही सिद्ध होता है कि मानव-स्वभाव नीचतापूण हो सकता है। नही, आपको यह बात समझनी होगी कि यह चीज आन्दोलनकी एक बुनियादी चीज हे। अन्यथा आप इस आरोपको उचित ठहरायेगे कि यह आन्दोलन एक धोखा है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, ११-१-१९३५

१ **भगवद्गीता**, अध्याय ५, श्लोक १८।

६० भाषण हरिजन-बस्ती, दिल्लीमे[१]

२ जनवरी, १९३५

हरिजन-कर्मालयका यह विचार शुरू-शरूमें श्री घनश्यामदास बिडलाके मनमें आया था और आज उन्होने साढ़े बत्तीस हजारकी भूमि व भवन खरीदकर कर्मालयको अर्पित भी कर दिया है। चूकि श्री बिडलाजी सघके अध्यक्ष हैं और पसेवाले भी ह, इसलिए वे सदा ही हरिजनोकी आर्थिक उन्नतिके उपायो और साधनोके विषयमें सोचते रहते थे। दिल्लीमें एक ऐसा हरिजन केन्द्र बनाया जाये कि जहासे अन्य प्रकाश ग्रहण करे, यह बिडलाजी की अभिलाषा थी। गाधीजीसे आधारशिला रखने के लिए प्राथना करते हुए उन्होने कहा, "मसूबे तो मेरे बडे-बडे है, पर कहनेसे कोई लाभ नहीं। हर चीज हम काम करनेवालो पर निभर करती है। रुपयेके बिना कोई काम रुकता नहीं। सच्चे कायकर्त्ता चाहिए, रुपया तो आ ही जाता है, यह मै कई सस्थाओके अपने अनुभवसे कह सकता हूँ।" गाधीजी ने बस, यह सूत्र पकड लिया और इसी सूत्रमें अपने भाषणके शब्द गूथ दिये। उनका उस दिनका भाषण आदिसे अन्ततक आत्मशुद्धि और आत्मनिरीक्षणकी ज्वलन्त भावनासे भरा हुआ था।

याद रखिए कि हम देनदार है और हरिजन लेनदार। हम आजतक उनके कन्धोपर सवार रहे। हमने उनसे बेगारमे काम कराया और अगर उन्होने बेगार देनेसे कभी इनकार किया तो हमने उन्हे मारा-पीटा और किसी-किसीके प्राणतक ले लिये। सुनते है कि कोताना (मेरठ) के एक जमीदारने अपने हरिजन असामियोको उनके बेगार न देनेपर बडी निदयतासे मारा-पीटा। कई हरिजन और उनकी कुछ स्त्रियाँ सख्त घायल हुई और एक बुडढा तो मर ही गया। मेरी जन्मभूमि काठियावाडमे भी इसी तरहके जुल्म हुए है और वहा भी एक हरिजन मर गया। हम सदियोसे यह घोर पाप करते आ रहे है, पर इस पापसे मुक्त होनेका समय अभी हाथसे निकला नही। इस सघकी रचना इसी अभिप्रायसे हुई है कि हम अपने पापका समय रहते प्रायश्चित्त कर डाले। है तो यह भगीरथ काय, पर इसे पूरा तो करना ही है। यह मैने सैकडो बार कहा है और आज भी कहता हूँ कि अगर हम हरिजनोके ऋणसे मुक्त न हुए तो हिन्दू धमका नाश हो जायेगा। या तो अस्पश्यता न रहेगी, या हिन्दू-धम नष्ट हो जायेगा। मुझे आज आरामकी जरूरत है, पर आराम लू कैसे? जिसके हृदयमे दावानल जल रहा हो, वह चैनसे कैसे बैठ सकता है? जो हिन्दू यह प्रत्यक्ष देख रहा हो कि हमारा हिन्दू धम तो धधकते हुए ज्वालामुखीके

१ महादेव देसाई लिखित "आत्म विश्लेषण सप्ताह" से उद्धृत।

मुँहपर रखा हुआ है, उससे एक क्षण भी भला आरामसे बैठा जा सकता है? जबतक वह ज्वालामुखी शान्त नहीं हो जाता, तबतक उसे निश्चय ही चैन नहीं। घनश्यामदासजी ने आज जो इस कामके लिए ३,५०० रुपये दिये हैं, वह तो 'सिन्धुमें बिन्दु'के समान दान है। यह काम तो बहुत बड़ा है। मेरे लेखेमें तो यह रकम एक कौड़ीके समान है। इस प्रकारके धर्म कार्यमें तो सैकड़ों करोड़पति और लखपति अपना खजाना लुटा दें तब भी कम है। जैसाकि घनश्यामदास ने कहा है, रुपयेकी कोई कमी नहीं है। आवश्यकता तो दृढ़ संकल्प और लगनकी है। हरिजन-सेवा हिन्दू-धर्मकी सेवा है, और हिन्दू-धर्मकी सेवा मनुष्य मात्रकी सेवा है। हिन्दू धर्म असहिष्णुताको बर्दाश्त नहीं करता। असहिष्णुताको वह पाप मानता है पर जबतक हम हरिजनोंके साथ मैत्री करते, उनके साथ बन्धुवत बरताव नहीं करते तबतक हम समस्त जगतके साथ, समस्त मानव-जातिके साथ मैत्री करना चाहें तो यह हो नहीं सकता। अस्पृश्यता निवारणकी यह सारी प्रवृत्ति विश्व-बन्धुत्वकी स्थापनाकी ही प्रवृत्ति है।[1]

हरिजन-सेवक, ११-१-१९३५

६१. तार: जमनालाल बजाजको

(२ जनवरी, १९३५ या उसके पश्चात्)[2]

अभयंकरकी मृत्यु बड़े दुखकी बात है। उनकी पत्नी और परिवारको सान्त्वना दो। उनसे कहो कि यदि उन्हें एक वीर पतिके योग्य बनना है तो उन्हें भी वीरतासे काम लेना चाहिए। अभयंकरने सेवाकी जो परम्परा छोड़ी है, मैं अपेक्षा करता हूँ कि वह उन्हें कायम रखेगी।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, ४-१-१९३५

१. इसी भाषणको मामूली फेर-बदलके साथ अंग्रेजीमें ११-१-१९३५ के **हरिजन**में प्रकाशित किया गया था।

२. एम० वी० अभयंकरका निधन २ जनवरी, १९३५ को हुआ था।

६२ पत्र कार्ल हीथको

३ जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका गत २१ तारीखका पत्र मिला था। धन्यवाद। उससे पहलेवाले आपके पत्रको मीराबहन, महादेव और बादमे एन्ड्रयूजने पढा था। उन सबने स्वतन्त्र रूपसे उसका वही अर्थ लगाया जो मैंने लगाया था। हाँ, आपने जो सुधार सुझाया है, उसे मैं मुक्त हृदयसे स्वीकार करता हूँ। मैं केवल यह कहना चाहता हूँ कि आपके पत्रको तीनसे ज्यादा बार सावधानीसे पढनेके बाद ही मैंने उसका वह उत्तर[1] दिया था। एन्ड्रयूजने भी मेरा उत्तर पढा था और उन्होने उसमे परिवर्तनका कोई सुझाव नही दिया।

बेशक आपको दमनकारी कानूनोके बारेमे जानकारी थी। लेकिन न आपको तब यह मालूम था और न अब ही मालूम है कि उनके जारी रहनेका यहाँ हमारे लिए क्या मतलब था और है। इस बातकी एक विचित्र पुष्टि डॉ० माड रॉयडेनने की है। उन्होने कराचीमे यह कहा बताते है कि भारतकी अत्यन्त सन्तुलित विचारोवाली महिलाओके बीच रहकर उन्होने दो या तीन दिनमे जो आश्चर्यजनक बाते जान ली, उनके बारेमे इग्लैडके लोगोको दैनिक अखबारोसे या अन्य किसी साधनसे कोई जानकारी नही है। एन्ड्रयूजने बगालमें जो-कुछ देखा और समझा उसके बारेमे वे आपको खुद बता सकते है।

ऐसा लगता है कि आप आगामी विधेयक[2] के वापस लिये जानेकी सम्भावनाको बहुत बडे सकटकी बात मानते है। मेरी रायमें, यदि इसे अन्तिम क्षणपर भी वापस ले लिया जाये तो यह इग्लैड और भारत दोनोके लिए वरदानस्वरूप होगा। इसका सीधा-सादा कारण यह है कि भारतीय लोग लगभग एकमतसे इस विधेयकका विरोध कर रहे हैं, और उसके बावजूद इस विधेयकको पास करानेकी कोशिश जारी रखनेका मतलब होगा कि ब्रिटिश ससद हठपर अडी है और उसके मनमे भारतके लोकमतके लिए घोर तिरस्कारका भाव है। आशा है, आपने राइट आनरेबिल शास्त्री द्वारा की गई कटु आलोचना पढ ली होगी। श्री शास्त्री एक समय इडिया ऑफिसके परम मित्र थे और उसका पूरा विश्वास उन्हे प्राप्त था। आनरेबिल सी० वाई० चिन्तामणिने भी उतनी ही कडी आलोचना की है और उसे भी आपने देखा होगा। चिन्ता

१ देखिए खण्ड ५९, पृ० ४६२-६४।

२ भारतके लिए एक नये सविधानकी व्यवस्था करनेवाला, गवर्नमेंट ऑफ इडिया बिल। राजकीय स्वीकृतिके बाद यह २ अगस्त, १९३५ को कानून बन गया।

मणिको नरम विचारवालोमे भी अत्यन्त नरम विचारोका माना जाता है और वे मौके बेमौके काग्रेसके रवैयेकी अत्यन्त कडी निन्दा करते रहे है।

अब सयुक्त ससदीय समितिकी रिपोटपर मेरी जो आपत्तिया है, उन्हे मै अत्यन्त सक्षेपमे बताता हूँ। मैने उस रिपोट और श्वेत पत्रको एक ही दस्तावेज माना है। रिपोटमे जो कुछ नई बाते जोडी गई है उन्हे यहा सुधार नही माना जाता, बल्कि ठीक उसका उल्टा माना जाता है, और उसने उदारपथियोकी कमर तोड दी है। उन्होने यह आशा की थी कि आगा खाके नेतत्वमे उन्होने जो मेमोरेडम भेजा था उसपर सयुक्त ससदीय समिति अनुकूल दष्टिसे विचार करेगी और यदि सब नही तो उसकी कुछ सिफारिशोको समिति स्वीकार कर लेगी। लेकिन रिपोटमे मेमोरेडमका सौजन्यतावश उल्लेख मात्र करके जिस हिकारतके साथ उसे नजरअन्दाज कर दिया गया है, उसे देखकर शास्त्रीने निम्नलिखित टीका की है

> **नहीं, महोदय, लिबरल पार्टीके लिए रत्तीमात्र सहयोग देना भी असम्भव है। हमारा शुभ चाहते हो, ऐसे मित्रोके साथ सहयोग करना लाभप्रद है। लेकिन मै पूछता हूँ कि ऐसे लोगोके साथ सहयोग करनेका क्या अथ है जिन्होने हमारे प्रति पूरा अविश्वास प्रकट किया है, जो हमारे दृष्टिकोण और हमारी माँगोकी परवाह नहीं करते, और जो हमारी इच्छाओकी बिलकुल अवहेलना करते हुए एक सविधान पास करते ह? म इस सहयोगको आत्मघात कहूँगा।**

सार-सक्षेप

१ सयुक्त ससदीय समितिकी रिपोटमे इस आशयका कोई सुझाव नही है कि सविधानमे एक धारा ऐसी होनी चाहिए जिसमे अपने आप पूण स्वराज्य अथवा भारतके चुने हुए प्रतिनिधि जो कुछ चाहे उसे प्राप्त करनेकी व्यवस्था हो।

२ प्रस्तावित सविधानमे भारतके ऊपर और ज्यादा वित्तीय भार डाला गया है, जबकि वह पहले ही बहुत बडे वित्तीय भारसे दबा हुआ है और उसकी आर्थिक या राजनीतिक उन्नतिकी कोई सम्भावना नही दिखती।

३ केन्द्रमे राजस्वके ८० प्रतिशत भागको निर्वाचित सदस्योके नियन्त्रणसे बाहर रखा गया है।

४ सेनाके ऊपर निर्वाचित सदस्योका कोई नियन्त्रण नही है, न नीति विषयक, न व्यय विषयक।

५ देशकी मुद्रा या विनिमयके ऊपर जनताके प्रतिनिधियोका कोई नियन्त्रण नही है।

६ राजस्वके जिस २० प्रतिशत भागपर नियन्त्रणको वित्तमन्त्रीके हाथमे रखने का प्रस्ताव है, उसे भी गवनर-जनरल चाहे तो खत्म कर सकता है।

७ रिपोटमे प्रान्तोको जो स्वायत्त शासन सौपा गया है, वह तो केवल नाम मात्रका है, क्योकि गवनरोको इतने व्यापक अधिकार दिये गये है कि वे जब चाहे तब उत्तरदायित्वका अन्त कर सकते ह। किसी अग्रेजके लिए अन्य उपनिवेशोके

उदाहरणोसे ऐसा मान लेना कि इन अधिकारोको बिरले ही प्रयुक्त किया जायेगा, कतई गलत होगा। भारतमे पिछले जो अनुभव रहे है, वे इसके ठीक विपरीत है।

८ उत्तरदायी मन्त्रियोको अखिल भारतीय सेवा या प्रातीय सेवाके किसी सदस्यका तबादला करनेतकका भी अधिकार नही है।

९ तथाकथित स्वायत्तशासी विधान मण्डलोको पुलिस अधिनियमो या पुलिस विनियमोतक मे सशोधन करनेका कोई अधिकार नही होगा।

१० ब्रिटेन द्वारा भारतके शोषणकी बुनियाद और पुरता हो गई है।

ऊपर बताई गई आपत्तियोपर कुल मिलाकर विचार किया जाये तो दिमाग पर इस बातकी एक अमिट छाप पडती है कि मौजूदा सविधान तो खराब है ही, लेकिन प्रस्तावित सविधान तो इससे कई गुना ज्यादा खराब होगा। और इससे भी बडी बात यह है कि यदि प्रस्तावित सविधान पास कर दिया गया तो इसके अतगत जो हानि होगी, उसे आनेवाले बहुत-से वर्षोमे भी सुधार सकना अत्यत कठिन होगा।

इन सारी आपत्तियोको पूरी तरह समझनेके लिए यह याद रखना जरूरी है कि इस सविधानको उस जनताके ऊपर थोपनेकी कोशिश की जा रही है जो पहले ही दमनचक्रमे फँसी हुई कराह रही है — ऐसा दमनचक्र जो ब्रिटिश भारतके इतिहासमे अभूतपूव है। मै पूरी जिम्मेदारीके साथ यह बात कह रहा हूँ। जलियाँवाला बागकी याद मेरे दिमागमे बिलकुल सजीव हे। मैने १८५७ के सिपाही-गदरके बारेमे के और मैलेसन द्वारा लिखी पुस्तके पढी है। दोनो पुस्तकोमे दमनकारी घटनाओका वीभत्स चित्रण किया गया है। खैर, तब तो नगी तलवारका खुला खेल था। लेकिन यह दमनचक्र तो छिपा हुआ हथियार है, और इस कारण और भी घातक है।

आप इस पत्रका निजी तौरपर, जैसा भी चाहे, उपयोग कर सकते है। इसमे मैने जो राय जाहिर की है उसके लिए कोई अन्य व्यक्ति जिम्मेदार नही है। महादेव, मीरा और टाइपिस्टको छोडकर इसे किसी अय मित्रको नही दिखाया गया है।

मेरा पत्र कटुतापूण लग सकता है, लेकिन मै आपको सावधान करना चाहूँगा कि आप इसका ऐसा कोई अथ न लगाये। सत्यको मैने जैसा देखा और अनुभव किया है, केवल वैसा ही पत्रकी भाषामे व्यक्त किया है। उसमे पूण सत्य नही दिया गया है। अगर पूण सत्य आपको बतानेका मेरे पास समय होता और क्षमता होती, तो यह विवरण और भी ज्यादा खराब होता।

हालाकि मुझे इसमे काली तस्वीर ही दिखाई पडती है, तथापि मेरे मनमे एक भी अग्रेजके प्रति कोई कटुता नही है। मै मानता हूँ कि ब्रिटिश मत्रीगण जो नीति चला रहे है, उसे वे ईमानदारीसे भारतके हितमे समझते है। उनका ईमानदारीके साथ ऐसा विश्वास है, कि कुल मिलाकर, भारतमे ब्रिटिश राज भारतके लिए हितकर रहा है। वे ईमानदारीके साथ ऐसा मानते है कि ब्रिटिश राजके अतगत भारतने आर्थिक उन्नति की है और उसकी राजनीतिक क्षमता बढी है, और भारतके प्रबुद्ध जनोकी विशाल सख्या जिस प्रकारके सविधानकी कामना करती है, वह सविधान भारतको यदि मिल गया तो यह भारतके लिए अत्यन्त अनिष्टकर होगा। किसी सच्चे

विश्वासके साथ लडना बहुत मुश्किल होता है, फिर भले ही वह विश्वास भ्रामक क्यो न हो, जैसाकि मेरी रायमे वह इस मामलेमे है। लेकिन किसी व्यक्तिके सच्चे विश्वासपर गुस्सा करना भी गलत होगा। मैने ऊपर लिखित सार-सक्षेपमे जो राय प्रकट की है, उसपर मै दृढतासे विश्वास करता हूँ, लेकिन मेरा अनुरोध है कि आप मेरे इस आश्वासनपर पूरा यकीन करे कि ईश्वरने चाहा तो मै जल्दबाजी या गुस्सेमे कोई कदम नही उठाऊँगा।

कांग्रेससे मैने जो अवकाश ग्रहण किया है, उसके अनेक कारणोमे से एक कारण यह है कि मै सरकारके राजनीतिक कदमोके बारेमे अपने ऊपर खामोशी थोपना चाहता हूँ। स्वेच्छासे मैने जो एकान्त चुना है, उसमे मै अहिसाकी छिपी हुई सम्भावना-ओकी खोज करना चाहता हूँ। जीवनके किसी भी क्षेत्रमे मै जो भी कार्य कर रहा हूँ, वह उसी उद्देश्यको दृष्टिमे रखते हुए कर रहा हूँ। इस धरतीपर मेरा एक ही स्वार्थ है, और वह है अन्तिम सत्यको समझना। इस सत्यकी अभी मै धुधली-सी झलक-भर देख पाता हूँ। अत्यन्त श्रमसाध्य खोजके बाद मै इस निष्कर्षपर पहुँचा हूँ कि अगर मै सत्यको पूरे रूपसे देखना चाहता हूँ तो मनसा, वाचा और कर्मणा अहिंसाका पालन करके ही देख सकता हूँ। यह खोज मुझे कहाँ ले जायेगी, मै नही जानता, और मेरी तनिक भी ऐसी इच्छा नही है कि मुझे उस सत्यके दर्शन समयसे पहले हो जाये। अत मै तो ईश्वरसे अनवरत प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे अगला कदम दिखाये, और यदि आप मित्र लोग पूरे हृदयसे इस खोजमे मेरी मदद करेगे तो मै कृतज्ञ होऊँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

कार्ल हीथ, महोदय
लन्दन

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२८) से।

६३ पत्र श्रीमती लिडसेको[1]

३ जनवरी, १९३५

प्रिय बहन,

आप सबको नव-वर्ष शुभ हो। आपका पत्र मुझे ठीक ऐसे वक्तपर मिला कि मै आपको यह छोटा-सा पत्र लिख सकू।

मै आपकी और आक्सफोर्डकी अपनी यात्राओकी अक्सर याद करता रहता हूँ, लेकिन हाथमे जो काम है उसके कारण सारे प्रेम पत्र धरे रह जाते ह।

हमारे सामने यहा हर दृष्टिसे बहुत कठिन समय चल रहा है। लेकिन मै आशा नही छोडता। मै जानता हूँ, शीतकालके बाद ग्रीष्म ऋतु आती ही है।

अपनी बिल्लियो और कुत्तोको अपने परिवारका सदस्य मानना प्रेममय विचार है।

आप जानती है कि एड्रयूज कुछ दिनो हमारे बीच रहे। वे अप्रैलमे वापस आनेकी आशा करते है। डा० मॉड रायडेन कराचीमे है। मै इस समय दिल्लीमे हूँ और आशा करता हूँ कि तीन सप्ताहसे ऊपर यहाँ रहूँगा। मै उनसे यही मिलनेकी आशा करता हूँ।

मीरा, महादेव और देवदास यहाँ है। प्यारेलाल बम्बईके निकट एक स्थान पर है।

हम सबोकी तरफसे आप सबको प्यार,

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७४३) से, सौजन्य दिल्ली स्थित ब्रिटिश उच्चायोग।

१ बैलिओल कॉलेजके मास्टर डॉ० लिडसेकी पत्नी। इस पत्रकी मूल प्रतिकी एक फोटो-नकल १९६९-७० में नई दिल्लीमें आयोजित गांधी-दर्शन प्रदर्शनीके ब्रिटिश मडपमें प्रदर्शित की गई थी।

६४ भेंट समाचारपत्रोंको

३ जनवरी, १९३५

श्री अभयकरकी मृत्युसे एक बहादुर और निर्भीक व्यक्ति उठ गया। उनकी मृत्युसे राष्ट्रको बहुत बड़ी हानि हुई है। मेरे और उनके सम्बन्ध दिनों दिन इतने घनिष्ठ होते जा रहे थे कि उनका निधन मुझे निजी हानि जैसा लगता है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, ४-१-१९३५

६५ टिप्पणियाँ

भूल सुधार

हमारे ९ नवम्बरके अंकमें प्रकाशित आत्म निर्भरता सम्बन्धी रिपोर्टमें अखिल भारतीय चरखा संघके मंत्रीने उत्पादन और बिक्रीके जो आंकड़े दिये थे, उनके बारेमें वे लिखते हैं:[1]

> **९ ११ ३४ वाले 'हरिजन' के अंकमें पृष्ठ ३१२ पर अखिल भारतीय चरखा संघकी शाखाओंके खादी उत्पादन और बिक्री सम्बन्धी आँकड़े प्रकाशित हुए हैं। उसमें कर्नाटक और उत्कल शाखाओंके सम्बन्धमें पाद-टिप्पणीमें कहा गया है कि "इन शाखाओंमें खादीका उत्पादन अपर्याप्त होनेके कारण माँगकी पूर्तिके लिए अन्य शाखाओंसे खादीका आयात करना पड़ा था।" यह बात उत्कलपर लागू नहीं होती। १९३३ में उत्कल शाखाने अन्य शाखाओंसे जो सामान खरीदा वह केवल ५५७ रुपयेका था, न कि १७,००० रुपयेका, जैसाकि इस टिप्पणीसे लगता है। हमें इस भूलपर खेद है।**

हरिजनोंका प्रतिनिधित्व

एक पत्र लेखकके अनुरोधपर मैंने ठक्कर बापासे यह बतानेको कहा था कि सारे भारतमें हरिजन सेवक मण्डलोंमें हरिजनोंकी संख्या कितनी है। अभीतक दस प्रान्तोंके जो आंकड़े मिले हैं, उनसे पता चलता है कि १,१५८ गैर-हरिजनोंके विरुद्ध हरिजनोंकी संख्या १७१ है। मैं ये आंकड़े केवल सूचनार्थ दे रहा हूँ। ऐसा मान

१ यहाँ केवल कुछ अंश ही दिये गये हैं।

लेना गलत होगा कि ये आँकडे ठोस कामके द्योतक हैं। लेकिन दो चीजोके तो ये निश्चित रूपसे सूचक हैं

(१) मण्डलोने अपनी सहायताके लिए जितने हरिजन मिल सके, उतने हरिजनोको सह-सदस्यके रूपमे लेनेका प्रयत्न किया है।

(२) ऐसे बहुत सारे प्रतिष्ठित हिदू हैं जो मण्डलोमे शामिल होनेको तैयार हैं। मण्डलोका प्रकट उद्देश्य उन्हे मालूम है। वे जानते हैं कि मण्डलोका उद्देश्य हरिजनोको सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक दष्टिसे अन्य हिन्दुओके साथ समानताका दर्जा दिलाना है।

कितना अच्छा होता अगर मैं यह भी कह सकता कि मण्डलोमे इतने सारे सवर्ण हिदुओ और हरिजन हिदुओका होना ठोस प्रगतिका सूचक है। वस्तुत मण्डलोमे सदस्योकी बडी सख्याके कारण प्रशासन-व्यय तो बढता है, लेकिन कार्य-क्षमता अथवा कार्य उत्पादनमे वृद्धि नही होती। योग्यता और उत्पादन-मात्रामे वृद्धि करनेके उपाय किये जा रहे हैं, भले ही इसके लिए सदस्योकी सख्या कम क्यो न करनी पडे। गरीबो और दलितोकी सेवाकी खातिर यह अत्यन्त जरूरी है कि उपरला खर्च कमसे-कम कर दिया जाये। असहाय लोग अपने सहायकोकी फिजूलखर्चीपर कोई प्रतिबन्ध नही लगा सकते, फिर ये सहायक कितने ही उदार क्यो न हो और भले ही यह फिजूलखर्ची अनजाने ही क्यो न होती हो। अगर सहायक लोग बेहतर प्रबन्धके नामपर अनजाने की जानेवाली अपनी इस फिजूलखर्चीपर रोक नही लगाते तो सम्भावना यही है कि वे जरूरतसे ज्यादा खर्च करेगे। अनेक परोपकारी सस्थाओका अगर आलोचनात्मक अध्ययन किया जाये तो या तो वहा भयकर फिजूलखर्ची दिखाई पडेगी या देखा जायेगा कि वहाकी प्रबन्ध व्यवस्था बहुत ही खराब है और न्यासी लोगोमे अपने न्यासके प्रति घोर उदासीनताकी भावना है। हरिजन मण्डलोका एकमात्र उद्देश्य हरिजनोकी सेवा करना है, और यदि वे हरिजनोके लिए अच्छा काम करके दिखाना चाहते हैं तो ऊपर बताई गई दोनो खराबियोसे बचना होगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ४-१-१९३५

६६ टिप्पणियाँ

बगाल हरिजन सेवक सघ

बगाल प्रातीय हरिजन सेवक सघने पिछले अक्तूबर और नवम्बर मासमे जो काम किया, उसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

२ महीनोमें खर्च	रु० २,३०५
सघकी शाखाएँ और सगठन जो पूरी तरह हरिजन सेवाके कायमें लगे हुए ह और प्रान्तीय सघसे सम्बद्ध ह, या सहायताप्राप्त है	९
पूरा समय काम करनेवाले अवतनिक काय-कर्त्ता	३३
अस्पताल	१ (इसमें ६ बिस्तर ह।)
औषधालय	१ (इसमें प्रति माह १,००० मरीज आते ह।)
औषधि-वितरण करनेवाले	६ केन्द्र
स्कूलोकी सख्या जिनका पूरा खच उठाया जाता है, और ऐसे स्कूल भी जिनको आशिक सहायता दी जाती है	६५
विद्यार्थियोकी सख्या	१,९००
छात्रवृत्तियोकी सख्या	३६
औद्योगिक सस्थान	१ कुटीर चमडा-सिझाई सस्थान, कलकत्ता

इस कायकी कुछ तफसीलोकी चर्चा मैं किसी अगले अकमे करूँगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ४ १-१९३५

६७ इसका अर्थ

मुझे ऐसा लगता है कि आप आधुनिक सभ्यताके विरुद्ध कभी न खत्म होनेवाला और अव्यावहारिक युद्ध चला रहे ह। बहुत समय पहले आपने अपने आपको आधुनिक सभ्यताका घोर शत्रु घोषित किया था और अब भी यदि सम्भव हो तो आप हजारो सालसे चली आ रही इस आधुनिक सभ्यताका रुख पीछेकी ओर मोड देना चाहेगे। इसके विचार मात्रसे ही मेरा सिर चकरा जाता है।[1]

ऊपर लिखित अश मैंने अपने एक प्रिय मित्रके पत्रसे उद्धत किया है जो उन्होने मुझे मेरे पत्रके उत्तरमे लिखा था। अपने पत्रमे मैंने उनसे यह भी पूछा था कि क्या ग्रामोद्योगके पुनरुत्थानके कायमे मुझे उनका सहयोग प्राप्त हो सकता है। और चूकि मै जानता हूँ कि मेरे बारेमे उक्त मित्रने जो मत व्यक्त किया है, अ य अनेक लोगोका भी यही मत है, इसलिए मेरे लिए बेहतर होगा कि मैं अपनी स्थितिका खुलासा कर दू। मेरी जो स्थिति है, यदि वही स्थिति अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघकी भी न होती तो मेरे लिए ऐसा करना अशिष्टतापूण होता।

जिनका पुनरुद्धार किया जा सकता है, ऐसे उद्योगोका पुनरुद्धार करके मै ऐसा कोई काय नही कर रहा हूँ जिसका वे मुझपर आरोप लगा रहे है। मै तो केवल वही कर रहा हूँ जो ग्राम्य जीवनसे प्रेम करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति कर रहा है अथवा करनेकी कोशिश कर रहा है और जो गावोके विघटनके अथको समझता है। जब मैं किसी गाववालेसे यह कहता हूँ कि वह अपना आटा खुद पीसे, पौष्टिक चोकर मिले आटेकी रोटी खाये अथवा यह कहता हूँ कि वह बिक्रीके लिए नही तो कमसे कम अपने उपयोगके लिए गन्नेके रसका गुड बनाये, तो उस हालतमे मैं आधुनिक सभ्यताके रुखको किस प्रकार पीछेकी ओर मोडता हूँ? जब मैं गाववालोसे यह कहता हूँ कि वे केवल कच्चा माल ही न पैदा करे, अपितु उससे बिक्री-योग्य तयार माल बनाये और इस तरह अपनी आयमे च द पैसोका इजाफा करे, तब क्या म आधुनिक सभ्यताको पीछेकी ओर ले जाता हूँ?

और निश्चय ही आधुनिक सभ्यता कोई हजारो साल पुरानी नही है। हम उसके ज मकी लगभग निश्चित तारीख भी बता सकते है। यदि मै कर सकू तो यकीन मानिए, आधुनिक सभ्यताके नामपर आज जो-कुछ चल रहा है, उसे नष्ट कर डालू अथवा उसमे आमूल-चूल परिवतन कर दू। लेकिन वह तो जीवनकी एक पुरानी कहानी है। उस दिशामे प्रयत्न तो अवश्य किया जा रहा है, लेकिन उसकी

१ देखिए खण्ड ५९, पृ० ३८५ पा० टि० १।

सफलता ईश्वरके हाथमे है। तथापि लाभकारी ग्रामोद्योगोका पुनरुद्धार करने अथवा उन्हे प्रोत्साहन देनेका काय ऐसे किसी प्रयासका अग नही है, सिवाय इसके कि मेरी हर प्रवत्तिका, जिसमे अहिसाका प्रसार भी शामिल है, ऐसे प्रयासके रूपमे वणन किया जा सकता है। ग्रामोद्योगोका पुनरुद्धार और कुछ न होकर खादी प्रवत्तिका विस्तार ही है। हाथका बुना कपडा, हाथका बना कागज, हाथसे कुटा हुआ चावल, घरकी बनी रोटी और मुरब्बा पश्चिममे विरल नही हैं। फक सिफ इतना ही है कि भारतमे इनका जो महत्व है, उसका सौवा हिस्सा भी पश्चिममे नही है। कारण, यह बात कोई भी आदमी स्पष्ट देख सकता है कि भारतमे ग्रामोद्योगोके पुनरुद्धारका अथ है गाववालोको जीवनदान देना और उनके विनाशका अथ है गॉववालोका भी विनाश। मशीन-युगकी चाहे जो उपलब्धिया हो, लेकिन वह उन लाखो लोगोको कदापि रोजगार नही दे सकेगा जो शक्ति-चालित मशीनीकरणके कारण बेरोजगार हो जायेंगे।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ४ १ १९३५

६८ पत्र छगनलाल जोशीको

४ जनवरी, १९३५

चि० छगनलाल,

साथका पत्र देख जाना। वेणीलाल सज्जन हे। हरिलालसे उसका परिचय हे। जयसुखलालका भाई यदि इस हरिजन सेवाकायमे शामिल हो जाये तो अच्छा हो।[१] उसे वेतनकी अपेक्षा कामकी अधिक जरूरत जान पडती है। तुम उससे मिलना। यदि वह तुम्हे जॅच जाये, नारणदासकी सहमति हो और यदि वैसे व्यक्तिकी राजकोटके आसपास आवश्यकता हो, तो उसे रख लेना।

लगता है, बापाको तुमने खब खुश कर दिया है। धीरू और विमुका कैसे चलता है?

रामदासकी किश्ती मझधारमे है। अभी वह बम्बईमे है।

मैं यहाँ २० तारीखतक हूँ। तुम 'हरिजन' से यहाकी प्रवृत्तियोके बारेमे जान सकोगे।

यदि हरिजन-सेवक सहज ही खादीको सूय जैसा मानकर अन्य ग्रामोद्योगोको इस सूयके चारो ओर घूमनेवाले ग्रहोकी तरह नियोजित कर सके, तो इसमे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए, बल्कि यह अभीष्ट है। यदि यह बात समझमे आ गई हो तो इसका उपयोग करना।

१ देखिए 'पत्र वेणीलाल ए० गांधीको", पृ० २७।

पण्डितजी[1] यही है। वे साबरमती रहनेके लिए जा रहे है। फिलहाल तो लक्ष्मीबहन[2] वर्धामे ही रहेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ५५२८) से।

६९ पत्र वसुमती पण्डितको

४ जनवरी, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। कच्चा दूध न मिले तो भले उबला हुआ हो। कच्ची सब्जियाँ खाना न छोडना। फल न छोडना। चोकरयुक्त आटेकी भाखरी[3] साथ रखना, कसार भी अपने पास रखा करो। यहा बहुत सर्दी है। दोनो बार घूमने जाता हू, मण्डली तो साथ होती ही है। अमतुल कल आई। अम्बुजम तुम्हारे बारेमे पूछती रहती है। सक्रान्ति[4] तक उसका आश्रम खुल जायेगा। रामदासको पत्र लिखती रहना। म यहा २० तारीखतक तो हूँ ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९३९०) से। सी० डब्ल्यू० ६३५ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित।

७० भेट शिष्टमण्डलोको

४ जनवरी, १९३५

श्री रघुवीर नारायण सिहके नेतृत्वमें शिष्टमण्डल ने गाधीजीको ग्रामोद्योगोको पुनरुज्जीवित करनेमे आनेवाली विभिन्न कठिनाइयोसे अवगत कराया और अनुरोध किया कि वे उनकी मदद और मार्गदर्शन करें। इसके उत्तरमे महात्माजी ने कहा

मेरा प्रथम उद्देश्य तो लोगोकी मनोवत्तिको बदलना है। उनको दबावसे कुछ करनेको मजबूर करना नही है, जैसाकि रूजवेल्ट, हिटलर अथवा मुसोलिनी अपने

१ नारायण मो० खरे।

२ नारायण मो० खरेकी पत्नी।

३ गेहूँके आटेकी मोटी रोटी।

४ १४ जनवरी।

अपने देशोमे कर रहे है। जिस तरह खादीके प्रति लोगोकी मनोवृत्ति बदल गई है, उसी तरह मै देशी उद्योगोके पक्षमे भी उनकी मनोवृत्ति बदलनेकी उम्मीद रखता हूँ।

मेरी सारी कोशिशे, हमारी जो सभ्यता व सस्कृति है, उसे बनाये रखनेकी है और मै इस दिशामे भरसक प्रयत्न करता रहूँगा।

गाधीजी ने शिष्टमण्डलके प्रतिनिधियोको सलाह दी कि वे मिलकी बनी चीजोके विरुद्ध लोकमत तयार करे जिससे कि कुटीर-उद्योगोका पुनरुत्थान किया जा सके।[1]

मेरठमें बडौत तहसीलके कोताना गाँवके एक अन्य शिष्टमण्डलने भी गाधीजी से भेंट की, शिष्टमण्डल चमारोका था। वे एक मुकदमा चलानेके लिए, जिसे घायल चमारोने[2] **दायर किया था, हरिजन-कोषमें से सहायता प्राप्त करना चाहते थे। गाधीजी ने उन्हे सलाह दी कि वे परस्पर समझौता कर ले और स्थानीय रूपसे चदा इकट्ठा करनेकी कोशिश करे।**

[अग्रेजीसे]

बाम्बे क्रॉनिकल, ५-१-१९३५

७१ सन्देश दिल्लीकी सार्वजनिक सभाके लिए[3]

[४ जनवरी, १९३५]

स्वर्गीय श्री अभयकरकी मृत्यु देशके लिए शोककी बात है। उनके देशवासी यदि उनकी स्मृतिका आदर करना चाहते है तो उसका सबसे अच्छा तरीका यह है कि वे उनकी निर्भीकता और लगनका अनुकरण करे।

[अग्रेजीसे]

हिन्दुतान टाइम्स, ५-१-१९३५

१ यह निश्चय किया गया कि शिष्टमण्डल द्वारा उठाये गये विभिन्न मुद्दोंका जवाब देनेके लिए गांधीजी उससे ११ जनवरीको एकबार फिर भेंट करेंगे।

२ चमारोंने गाँवके जमीदारपर उनके साथ दुर्व्यवहार करनेका अभियोग लगाया था।

३ यह सभा ४ जनवरीको जिला कांग्रेस कमेटीके तत्वावधानमें आयोजित की गई थी, जिसमें श्री एम० वी० अभयकरको श्रद्धांजलि अर्पित की गई थी। गांधीजी ने यह सन्देश महादेव देसाईकी मार्फत भेजा था।

७२ पत्र एस्थर मेननको

दिल्ली,
५ जनवरी, १९३५

प्यारी बिटिया,

मैं इस पत्रके द्वारा तुम्हारी इच्छाओके प्रति अपनी सहमति व्यक्त करता हूँ। यहा कडाकेकी सर्दी पड रही है। ४ बजेकी प्राथनाकी घण्टी बज चुकी है।

बेशक, हरिजनोको अपने आध्यात्मिक सन्तोषके लिए मन्दिर-प्रवेशसे कही कुछ अधिककी जरूरत है। मन्दिर प्रवेश हरिजनोके आध्यात्मिक रूपसे उतना आवश्यक नही है जितना कि उद्धत सवण हिदुओके लिए उहे मदिर प्रवेशकी अनुमति प्रदान करना है। उहे तबतक भगवत् कृपाकी उपलब्धि नही हो सकती, जबतक वे समानधर्मी भाइयोको पूजाका वही अधिकार नही देते जिसका कि वे अपने लिए दावा करते है। यह बात क्या बिलकुल स्पष्ट नही है?

बच्चोको प्यार व चुम्बनो सहित,

तुम्हारा,
बापू

[पुनश्च]

मै दिल्लीमे कमसे-कम २० तारीख तक और ज्यादा-से-ज्यादा २८ तारीख तक हूँ।

अग्रेजीकी फोटो-नकलसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार। **माई डियर चाइल्ड**, पृ० १०९ से भी।

७३ भाषण हरिजन-सेवक सघके केन्द्रीय बोर्डकी बैठकमें[1]

[५ जनवरी, १९३५][2]

आप लोगोने बजट बनाते समय यथेष्ट सूक्ष्मतासे काम नही लिया। ऐसी सूक्ष्मतासे आपको हिसाबकी मदे रखनी चाहिए कि किसीको कुछ कहनेका मौका न मिले। हरिजन-सेवकका माग तो छुरेकी सीधी और तेज धारके समान है। हमारा लक्ष्य पूण आत्मशुद्धिका है न? तो हम अपने दोषोको जितना भी देखे उतना कम है। हमे तो पग-पगपर अन्तर्निरीक्षण करना है। जो अपने और अपने पूवजोके पापका प्रायश्चित्त करना चाहता है, उसकी दृष्टिमें हरिजनोके निमित्त सग्रहीत धन 'शिव-

१ महादेव देसाई लिखित आत्म विश्लेषण सप्ताह" से उद्धृत।
२ **गांधीजीनी दिनवारीसे**।

निर्माल्य' के समान है। हरिजन-कोषकी एक एक पाईके हम ट्रस्टी है। बडी सावधानी और सच्चाईसे हमे यह पैसा खर्चना है। आपको ब्योरेवार यथाशक्य सूक्ष्मतासे बजट बनाना चाहिए। बिना पूरे ब्योरेके ये मोटी मोटी मदे रख देनेसे काम नही चलेगा। आपके बजटमे 'इत्यादि-इत्यादि' और 'फुटकर' जसे अस्पष्ट शब्दोके लिए जगह नही होनी चाहिए। जैसे, 'किताब, स्लेटे वगैरह-वगैरह मुफ्त दी गईं' इस मदको मै कभी सहन नही करूँगा। मान लीजिए, किसीने हमे मुफ्त मे भाग या गाजा दे दिया तो क्या हम उसे हरिजनोमे बाट देगे? न तो 'पत्र, तार इ यादि' की मद रखनेकी ही जरूरत है, और न अखबारो और मकान भाडेकी। अखबार तो आपको चाहे जहा पढनेको मुफ्त मिल सकता है। और अखबार मँगाना ही है तो 'हरिजन-सेवक' को अपने दफ्तरोमे मँगाइए। यह पत्र अभीतक अपने पैरोपर खडा नही हो सका। इसलिए चाहे तो इसे आप अपना सकते है। क्या अच्छा हो कि आपसे जब कोई पूछे कि आप कैसे काम चलाते है तो आप यह कह सके कि हमे चिटिठयो व तारो पर पैसा खच करनेकी जरूरत नही, हम तो अपने आते-जाते मित्रोके जरिये सन्देशा भिजवा देते है, हमे किरायेपर मकान लेनेकी जरूरत नही, क्योकि हमने अपने कुछ कृपालु मित्रोको हरिजन-सेवाके निमित्त अपना मकान देनेको राजी कर लिया है। प्रब ध व्ययको तो मै एक हदतक सहन कर भी सकता हूँ, पर प्रचार व्ययको नही। प्रचार कायमे पैसा खच किया जाये इसकी तो मुझे रचमात्र भी जरूरत मालूम नही पडती। प्रचार बेशक कीजिए, पर यह ध्यान रहे कि उसमे एक कौडी भी खच न हो। हमारा सेवा काय ही सबसे सु दर प्रचार काय है। दुनिया मुझे एक जबरदस्त 'प्रोपेगैडिस्ट' कहती है। निस्स देह मै एक अच्छा प्रचारक हूँ, पर अपने प्रचार कायमे कभी पसा खच नही करता। मै मानता हूँ कि पिछले साल मेरी हरिजन-यात्रामे रेल और मोटरोमे पैसा खच हुआ था, पर उसका पाप तो ठक्कर बापाके सिरपर है। मै तो उस रेल और मोटरकी यात्राको सच्चे अथमे सफल यात्रा नही कह सकता। मेरी यह मा यता है कि सच्चा प्रचार काय तो मेरे द्वारा तब हुआ जब मैने उत्कलके गावोमे पद-यात्रा की। ग्रामोद्योग सघकी कल्पना मेरी वही बनी। आप चाहे तो मेरी उस पद-यात्राका अनुकरण कर सकते है। पैसेसे होनेवाले प्रचार-कायको तो अब आप दफना ही दीजिए। चुपचाप सेवा काय करनेवाला जन-सेवक ही सबसे सुन्दर प्रचारक है। इसलिए आपको प्रचारकी यह मद तो उडा ही देनी चाहिए। हरिजनोके लिए आप एकाध पाठशाला चलाइए, एकाध कुँआ या म दिर खोल दीजिए, कुँआ खुदवाने या गावमे हरिजन-पाठशालाके लिए मकान बनवानेमे कुछ मदद कीजिए। बस, यह आपका सच्चा प्रचार-काय हो जायेगा। मै चाहता हूँ कि आप श्री फ्रेज़र हॉयलैड का अनुकरण करे। वे दक्षिणी वेलसके एक स्कूल मास्टर है। भूकम्प-विध्वस्त बिहारमे श्री पियरे सेरेसोलके नेतत्वमे खुद अपने हाथामे काम करनेके लिए वे यहाँ आये हुए है। उन्होने इग्लैड और वेलसके बेकार लोगोमे काम किया है। उन्होने यह समझ लिया है कि बेकार आदमियोके साथ वाद विवाद करना ठीक नही, उनके साथ तो खुद काम करना चाहिए। वे यह खूब जानते है कि पुस्तको और निबन्धोका लिखना-

लिखाना कोई प्रचार काय नही है। सच्चा प्रकार काय तो निष्काम मूक सेवाके द्वारा ही होता है। इस प्रचारकी मदमे आपको कुछ रखना ही है तो 'सिफर' रख दे। अब एक मद आपके आफिसके खर्चेकी है। मै यह समझ सकता हूँ कि हमारे गरीब देशमे बिना पैसेके आफिसोका काम नही चल सकता। आपको चपरासी रखने ही है तो हरिजनोको ही रखिए पर उनके साथ चपरासियोकी तरह नही, बल्कि अपने दत्तक पुत्रो या कुटुम्बियोकी तरह बरताव कीजिए। आश्रमोके खचके बारेमे आपको सरत चेतावनी दूगा। आश्रम एक भयानक चीज है। 'आश्रम' नामका मोह तो हम छोड ही दे। बिना चारित्रिक और आध्यात्मिक पूजीके 'आश्रम' चल ही नही सकता। प्राचीन वातावरण आश्रमके साथ न होगा, तो 'आश्रम नामसे कोई लाभ नही। सघकी एक शाखाने एक आश्रमके लिए ८,००० रुपये अपने बजटमे रख ह। जबतक मुझे यह इत्मीनान नही हो जाता कि वहा वे ८ लाखका काम करके दिखा देगे, तबतक मै कैसे उसपर मजूरी दे सकता हूँ? मोटे तौरपर मै तो यही कहूँगा कि जबतक आपको यह यकीन न हो जाये कि हम अमुक काममे एक रुपया खच करके दस रुपये वसूल कर सकेगे, तबतक आपको उसमे हाथ नही डालना चाहिए। बिना मुनाफेका व्यापार कसा? मुझसे पूछे तो मेरा तो सच्चा सतोष ही मेरे कायका मुनाफा होगा।[1]

हरिजन-सेवक, ११-१-१९३५

७४ पत्र उमादेवी बजाजको

[७ जनवरी, १९३५से पूव][2]

चि० ओम,

यह खाते-खाते लिख रहा हूँ। इसलिए पैसिलसे।

खाते हुए लिखना कुटेव है। पैसिलसे लिखना भी कुटेव है। इसकी नकल न करना।

ऐसा लगता है कि तेरा कान अभी भी तुझे तकलीफ दे रहा है। तुझे बम्बई जाना चाहिए। तार भेजनेकी बात सोच रहा हूँ।

मदालसाके[3] विषयमें भी लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृष्ठ ३४१

१ इसी भाषणको मामूली फेर-बदलके साथ अंग्रेजीमें ११ १ १९३५ के **हरिजन**में प्रकाशित किया गया था।

२ देखिए पत्र जमनालाल बजाजको , ७ १ १९३५।

३ उमादेवी बजाजकी बड़ी बहन।

७५ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

दिल्ली
७ जनवरी, १९३५

चि० अम्बुजम,[1]

तुम्हारा पत्र मिला। हा, तुम उन लडकियोके साथ काम शुरू कर सकती हो जो वर्धासे आ सकती है। लेकिन यह सब तुम्हे सिफ तभी करना चाहिए जब तुम्हे और जानम्मालको अपने कामपर डटे रहना निश्चित जान पडे। तुम्हे इस बातका भरोसा नही करना चाहिए कि अय लोग तुम्हारी मदद करेगे। हो सकता है कि वे आये और बादमे तुम्हारा साथ छोड दे। निस्सदेह यदि तुम्हे आश्रम चलाना है तो तुम्हे एक तरहसे आश्रम जीवन अपनाना होगा। स्थानीय परिस्थितियोको अनुकल बनानेके लिए तुम कुछ नियमोमे ढील दे सकती हो।

जहातक तुम्हारे भोजनकी बात है, तुम्हे ऐसे परिवतन करने चाहिए जो जरूरी हो। हरी शाक सब्जिया, दही और अच्छी तरह उबाला हुआ अनकुटा चावल तुम्हे माफिक आना चाहिए। खुराकका चुनाव करते समय मेरे सामने सबसे पहले तुम्हारे स्वास्थ्यका ध्यान रहा है। इसलिए तुम निस्सकोच ऐसे परिवतन करो जो तुम्हारे स्वास्थ्यके लिए जरूरी हो।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजीसे। अम्बुजम्माल कागजात, सौजय नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

७६ पत्र जमनालाल बजाजको

दिल्ली
७ जनवरी, १९३५

चि० जमनालाल,

दिल्लीकी ठण्ड अधिक काम करने देनेके बजाय कुछ कम ही करने देती है और काम है कि बहुत इकटठा हो गया है। अभयकरके बारेमे जैसा तुम लिखते हो वैसा ही हुआ है। उनकी कमीको महसूस किया ही जायेगा।

लगता है, तुम्हारे कानके बिलकुल ठीक होनेमे काफी समय लग रहा है। यदि तुम न आ सको तो कोई हज नही। कानके इलाजमे कोई व्यवधान नही पडना

१ यह हिन्दीमें है।

चाहिए। कमलनयन[1] को फिलहाल तबतक सीलोन नही भेजा जा सकता जबतक वहा मलेरियाका जोर है।

ओमका कान बहता रहता है। मैने पिछले हफ्ते उसे तार दिया था कि वह बम्बई जाकर दिखा आये। लगता है, वह अभीतक वहा नही गई है। यदि तुम उसे बुलाकर किसी डाक्टरको दिखा दो तो अच्छा होगा।

लगता है, लालीकी गाडी चलने लगी है।

मेहरका मामला कठिन हे। जबसे वह आई हे, तबसे डॉ० अ सारीके यहा है। एक दिन आकर मुह दिखा गई थी। उसके मनमे आश्रमके प्रति घणा पदा हो गई है। हमे उसे यही छोडकर जाना होगा। सौभाग्यसे डा० खान साहबकी पत्नी यहा आ रही है। वह कदाचित् उनके साथ रहेगी। मेरी इच्छा तो २२ तारीखके बाद वर्धा पहुँचनेकी है। २९ तक तो अवश्यमेव। आज शकरलाल[2] और गुलजारी-लाल[3] आये है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

रामदासका विचार अपने कागजात लाने और उनको पढ जानेके लिए बारडोली और लखतर जानेका है। उसे भाडे आदिका पसा देना।

बापू

[पुनश्च]

देव शर्मा आकर मिल गये है। उनका कहना है कि आज शलआश्रममे जो खच होता है, यदि उतना पैसा उ हे मिले तो वे उसकी व्यवस्थाका काय सँभालनेके लिए तैयार है। इस बारेमे मुझे लिखना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९५०) से।

७७ पत्र वालजी गो० देसाईको

७ जनवरी, १९३५

चि० वालजी,

रामायण' के प्रसगोके बारेमे मै अभी कुछ लिख नही सका हूँ। म तो उनके विषयमे मुझसे जो कुछ कहा गया था, वह सब भूल गया हूँ। अब तो नये सिरेसे लिखना होगा इसलिए मुझे प्रसगोके बारेमे सोचना होगा। हमे उन शास्त्रा महोदयके

१ जमनालालजीके पुत्र।

२ शकरलाल बैंकर

३ गुलजारीलाल नन्दा।

गोरक्षासे सम्बन्धित निबन्धका पता लगाना होगा। यदि तुम दूसरा गोसेवक मन्त्री ढूढ लो तो यह काम मै उसे सौप दू। अन्यथा अभी तुम जो केवल नामके (मन्त्री) हो सो उसके बजाय कामके बनो। इसके लिए शरीरबलकी अपेक्षा मनोबलकी अधिक जरूरत होती है। तुम्हारी आखे कसी है? आँखे अच्छी हो अथवा खराब, क्या तुम रोज रातको कच्चे दूधमे भिगोई हुई पटटी बाधकर सो सकते हो? इसे आजमा कर देखो। इससे तुम्हे कोई नुकसान नही होगा। तुम्हारी 'रामकथा' पढनेके लिए मैने अपने सामने रख छोडी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ७४६८)से, सौजन्य वालजी गो० देसाई।

७८ पत्र दुनीचन्दको

दिल्ली
८ जनवरी, १९३५

प्रिय लाला दुनीचन्द,

आपका पत्र मिला। आपके सुझाव अच्छे है, लेकिन सघ ऐसा कुछ नही कर सकता जिससे अधिकारियोके साथ सघष होनेका भय हो। आप जिस तरहकी राहतकी बात करते है, वह निश्चय ही राजनीतिक है और राजनीतिक सस्थाएँ ही इस समस्याका निराकरण कर सकती है। फिर भी कुछ ऐसी चीजे है जिन्हे हम, जसे जैसे काम तरक्की करता जायेगा, वसे वसे अपने हाथमे ले लेगे।

यदि गाँववालोको फुसतके समय कोई लाभकारी धन्धा दिया जाये और इस तरह उनकी सहायता की जाये तो उसमे निश्चय ही उन्हे किसी प्रकारके प्रोत्साहनकी आवश्यकता न होगी। जहातक ग्रामोद्योगोका सवाल है, उन्हे कोई कुर्बानी नही देनी पडेगी।

दिक्कत तो तब होगी जब सफाई सम्बन्धी काय और नैतिक सुधार आरम्भ किया जायेगा।

बहरहाल, मुझे पूरा यकीन है कि ग्रामोद्योगोको आगे बढानेकी दिशामे आपसे जो बन सकेगा, सो आप करेगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५९१) से।

७९ पत्र वेरियर एल्विनको

८ जनवरी, १९३५

प्रिय वेरियर,

मेरे पास इससे पहले भी ये दो सुझाव आये थे, हालाकि वे तुम्हारे सुझावसे जरा भिन्न थे। मै तुम्हारा पत्र कुमारप्पाको दे रहा हूँ। चूकि ये सुझाव तुम्हारी ओरसे आये है इसलिए इनका महत्व और भी बढ जाता है। देखे क्या होता है?

तुम सबको स्नेह।

बापू

[पुनश्च]

नया साल मुबारक हो।

[पुनश्च]

दिल्लीमे २० तारीखतक हूँ।

फादर एल्विन
गोड एस० मण्डल
करजिया पो० आ०, मडला डिस्ट्रिक्ट (सी० पी०)

अग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ८९३०) से।

८० पत्र मणिलाल और सुशीला गाधीको

८ जनवरी, १९३५

चि० मणिलाल और सुशीला,

तुम दोनोके अलग-अलग पत्र मिले है। रामदासके बारेमे समझा। मुझे तो वहाका अनुमति पत्र चाहिए था, लेकिन नही मिलता तो न सही। रामदास यदि तयार होगा तो यहीसे देख लेगे।

मेढ[1]के बारेमे मामाने सरत पत्र लिखा था। वह और हरिलालका पत्र इसके साथ भेज रहा हूँ। मेढको पढाना हो तो पढवाना। तुम्हारी सिफारिशमे और इसमे तो बहुत अन्तर है। अब तो प्रागजीसे ही पूछना बाकी है।

१ सुरेन्द्र मेढ।

नया एजेंट मुझसे मिलने आया था। वह वहाँ (दक्षिण आफ्रिका) एक बार तो हो आया है। तुमसे मिलेगा जरूर। मुझे अपने अनुभवके बारेमें लिखते रहना। उसने झगड़ा मिटानेकी बात कही तो है।

मैं अभी दिल्लीमें हूँ। बा आदि साथ हैं। अभी थोड़े दिन यहीं हैं। इस मासके अन्ततक तो वहाँ पहुँचना ही है। यहाँ ठंड खूब पड़ती है।

उम्मीद है, तुम सब आनन्दपूर्वक होगे।

लगता है, सुशीलाने काफी ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

कलेनबैक जो कहते हैं, वह बिलकुल सच है। अच्छे यहूदी हमारा विरोध नहीं करते। नारणदासका कनु हमारे साथ है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मेढसे कहना कि मैं उसे अलगसे पत्र नहीं लिख रहा हूँ।

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ४८३०) से।

८१ पत्र नन्दलालको

८ जनवरी १९३५

भाई नन्दलाल

काव्यकी तरंगमें तुम ग्रामोद्योग संघका परिहास करनेमें लगे मालूम होते हो। और फिर भी पत्रमें अपनी सही करते समय "आपका विश्वासपात्र" लिखते हो। यह तो कविको ही शोभा दे सकती है। लेकिन लीलावती बहनको पछतानेका कारण न देना। सत्यके पीछे असत्य तो चलेगा ही, किन्तु अन्तमें थककर रह जायेगा। देशी मिलें भी हजारों आदमियोंको बेकार करेंगी। इसलिए हाथकुटे चावलका ही उपयोग होना चाहिए। तुम्हारे मनमें इतने ज्यादा विचार आते जाते रहते हैं कि यदि तुमने उत्साहपूर्वक कुछ न किया तो तुमसे कुछ भी नहीं होगा। अच्छा यह होगा कि सोच-विचार करनेके बाद जितना स्वीकार कर सको, उतना करो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

८२ पत्र चन्द त्यागीको

दिल्ली
८ जनवरी, १९३५

भाई चन्द त्यागी,

तुमारा खत पाकर बहूत खुशी हासिल हुई। यदि सभव हे तो राजकिशोरीको लेकर यहा मिल जाओ। देखनेके बाद कह सकुगा क्या उचित है। शरीर अच्छा होगा। बलवीर सतोष दे रहा है, सुनकर आनद होता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ६६३०) से। सी० डब्ल्यू० ४२७८ से भी, सोजन्य चन्द त्यागी।

८३ सलाह अहमदाबादसे आये शिष्टमण्डलको[1]

८ जनवरी, १९३५

गाधीजी ने शिष्टमण्डलके सदस्योको सलाह दी कि अहमदाबादमें मालिको और मजदूरोके बीच पिछले पन्द्रह वर्षोसे जो सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध चले आ रहे है, वे उन्हे बनाये रखे और भविष्यमे होनेवाले समस्त श्रमिक विवादोको मत्रीपूर्ण ढगसे सुलझाने के लिए एक स्थायी योजना बनाये।[2]

[अंग्रेजीसे]
बाम्बे क्रानिकल, ९-१-१९३५

१ अहमदाबाद मिल मालिक सघके उपाध्यक्ष कस्तूरभाई लालभाई मजदूर सघके उपाध्यक्ष शकरलाल बेंकर और मन्त्री गुलजारीलाल नन्दा वेतन सम्बन्धी झगड़ेके सिलसिलेमें गाधीजीसे मिलने आये थे।

२ इस बेठकके परिणामस्वरूप दोनो सघोके प्रतिनिधियोंका एक बड़ा सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया गया।

८४ एक पत्र

८ जनवरी, १९३५

प्रिय बहन,

इतने वर्षोंके बाद तुम्हारा समाचार पाकर मुझे बहुत खुशी हुई।

मै शातिलालसे सम्पक बनाये हुए हूँ। मै उसकी जो भी मदद कर सकता हूँ करूँगा। किन्तु यह मेरे लिए लगभग असम्भव हो गया है कि मै किसीपर व्यक्तिगत ध्यान दे सकू। मेरे जीवनका वह अध्याय लगभग समाप्त हो गया प्रतीत होता है।

खुर्शीदबहन यही है। मुझे डर है कि अब वह तुम्हारे पास नही जा सकती। वह ग्राम सेवाके कामने [1] है। उसने तुम्हारा पत्र देख लिया है। निश्चय ही यदि तुम सीमा प्रान्त जाओ, तो वहा कई प्रकारसे सीमा प्रान्तके लोगोकी मदद कर सकती हो। मै तुम्हे यहा आनेका लालच नही दे सकता, क्योकि यदि तुम यहा आओगी तो मै तुम्हे कुछ क्षण ही दे सकूगा।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

८५ भेट श्रीमती सी० कुट्टन नायरको[2]

८ जनवरी १९३५

श्रीमती नायर मेरी धारणा है, विशेष रूपसे कराचीमें अखिल भारतीय महिला सम्मेलनमें भाग लेनेके बादसे मुझे लगता है कि भारतमें महिला-आन्दोलन महिलाओ का सही प्रतिनिधित्व नही करता। यह आन्दोलन अभिजात-वग और उच्च मध्यम-वगका प्रतिनिधित्व करता है। इस आन्दोलनको वास्तवमे जन-आन्दोलन बनानेके लिए क्या आप कुछ कारगर तरीके सुझा सकते ह?

गाधीजी इसका स्पष्ट उपाय यही है कि महिला सम्मेलनकी वतमान सदस्याएँ खद्दर तथा अन्य ग्रामोद्योग आन्दोलनोमे सक्रिय रूपसे लग जाये और इस प्रकार अपने

१ साधन सूत्रमें यहाँ छूटा हुआ है।

२ श्रीमती कुट्टन नायर कोचीनकी एक प्रमुख समाज-सेविका थी। भेंटका जो विवरण श्रीमती नायरने तैयार किया था, उसे बादमें गाधीजीने पढ़ा और सुधारा था।

अन्दर ग्रामीण वत्तिको विकसित करे और अपनी सभी आवश्यकताओके लिए गावोपर निभर करनेमे गवका अनुभव करे।

श्रीमती ना० क्या आप ऐसा नही सोचते कि यदि बिलकुल आरम्भिक अवस्थासे लेकर विद्यार्थी जीवनके अन्ततक सह-शिक्षा दी जाये तो आज हमारे बीच यौन-सम्बन्धोको लेकर जो एक गभीर समस्या खडी है, उसे दूर करनेमें काफी मदद मिलेगी ?

गा० अभी मै निश्चित रूपसे यह नही कह सकता कि सह-शिक्षाका प्रयोग सफल होगा या नही। पश्चिममे यह सफल हुई नही दिखती। स्वय मने कई साल पहले यह प्रयोग किया था। मैने तो यहातक किया था कि लडके और लडकियाँ एक ही बराण्डेमे सोते थे और उनके बीचमे कोई ओट या आड नही होती थी मै और श्रीमती गाधी भी उनके साथ उसी बराण्डेमे सोते थे। मुझे कहना होगा कि इसके अवाछित परिणाम निकले।

श्रीमती ना० लेकिन जिन समाजोमे परदा प्रथा लागू है, क्या वहाँ इससे भी ज्यादा खराब चीजें नहीं होती ?

गा० हा अवश्य होती है, लेकिन सह शिक्षा अभी भी प्रयोगावस्थाम है और इसके परिणाम अच्छे होगे या बुरे, इसे हम निश्चयपूवक नही कह सकते। मेरे विचारसे हमे यह प्रयोग पहले परिवारसे शुरू करना चाहिए। परिवारमे लडके और लडकियोको एकसाथ स्वतत्र और स्वाभाविक रूपसे बढना चाहिए। तब सह-शिक्षा अपने आप आ जायेगी।

श्रीमती ना० एक शिक्षिकाके रूपमें म अपने विद्यार्थियोके साथ काफी घनिष्ठरूपसे मिलती जुलती रही हूँ। इस नाते मुझे कुछ ऐसे विद्यार्थी भी मिले ह जो अज्ञानवश और किशोरावस्थामें अस्वस्थ साधनोसे प्राप्त जानकारी के कारण ऐसे काय करते रहे ह जो उनके शारीरिक और नतिक कल्याणके लिए हानिकर ह। स्कूलोमे बच्चोको यौन विषयक स्वच्छता और सफाईकी वज्ञानिक और अनौपचारिक रूपसे शिक्षा देना क्या वास्तवमे हमारे लडको और लडकियोके लिए लाभजनक नहीं होगा ?

गा० हा। और कोई कारण नही हे कि इस विषयपर कोई मुक्त रूपसे बात क्यो न कर सके।

श्रीमती ना० बहुत-सी विवाहित स्त्रियोके साथ सतति-निरोधके सवालपर बात-चीत करनेके बाद मने पाया है कि बहुत से मामलोमें, खासतौरसे उन औरतोके मामले में जिनके परिवार बडे बडे ह, स्त्रियोपर मातत्व थोपा जाता है। जबतक स्त्रीको अपने शरीरपर कोई अधिकार नही है, तबतक उसको सही अथमें कोई स्वतत्रता नहीं है। इसलिए उस माताकी खातिर जिसका स्वास्थ्य बहुत सारे बच्चे जननेके कारण बर्बाद हो जाता है, और उन बच्चोकी खातिर जो हमारे लिए आनन्दका स्रोत होने चाहिए, किन्तु जो अब अनचाहे इतनी बडी सख्यामें जन्म लेते जाते ह, क्या

गभ निरोधक उपायोके जरिये सतति निरोध नहीं अपनाया जाना चाहिए? बशक आत्म सयम सबसे अच्छा तरीका है, लेकिन साधारण पुरुष या स्त्रीके लिए आत्म सयमका आदश अत्य त ऊँचा आदश है। गभ निरोधक उपाय क्या उसके बाद दूसरे नम्बरके सर्वोत्तम उपाय नहीं है?

गा० क्या आप ऐसा समझती ह कि गभ निरोधकका उपयोग करनेसे शरीरकी स्वतत्रता प्राप्त हो जाती है? स्त्रियोको अपने पतियोका प्रतिराध करना सीखना चाहिए। यदि पश्चिमकी भाति ही यहा भी गभ निरोधकोका सहारा लिया गया तो उसके परिणाम अत्य त भयकर होगे। स्त्री और पुरुषोके जीवनका उद्देश्य केवल यौन सुख ही रह जायेगा। वे शिथिल बुद्धि और सतुलनहीन हो जायेगे और यदि शारीरिक दष्टिसे न भी सही तो मानसिक ओर नैतिक दष्टिसे बिलकुल नष्ट हो जायेगे। फिर, हालाकि मै पुरुषको ज्यादा बडा अपराधी मानता हूँ लेकिन स्त्री उससे बहुत ज्यादा पीछे नही हे। कुल मिलाकर दोनो ही पाप करते है। स्त्री हमेशा शिकार नही होती। उसे अपनी गरिमाका समझना चाहिए और जब उसका मन न हो, तब उसे 'ना' कह सकनेका अभ्यास करना चाहिए।

श्रीमती ना० लेकिन क्या इस समय भी अत्यधिक विषय भोग नहीं होता, और क्या गभ निरोधकका प्रयोग करनेसे व्यक्तिके यौन जीवनमे बहुत ज्यादा फक पड जायगा?

गा० निस्स देह लागामे पहले ही विषय भाग बहुत ज्यादा हे बल्कि विकृत यौनाचार भी बहुत है। लेकिन गभ निरोधकोका इस्तेमाल तो इनका और बढावा देगा। गभ निरोधक असयमित विषय भोगको एक ऐसा दर्जा प्रदान कर देगे कि जो उसे अभी नही प्राप्त हे।

श्रीमती ना० क्या ऐसे विशिष्ट मामलोमे भी इस उपायका सहारा नही लिया जा सकता जिनमे या तो स्त्री इतनी कमजोर है कि उसे बच्चे नहीं पदा करने चाहिए, अथवा माता या पितामें से कोई एक रोगी है?

गा० नही। एक मामलेमे छूट देनेका मतलब होगा कि किसी दूसरे मामलेमे छूट देनी होगी, और अ तत सभी मामलोमे छूट देनी होगी। ऊपर जो मामले बताये गये ह, उनमे बेहतर यह है कि पति पत्नी अलग-अलग रहे। पश्चिमी देशोमे जिन गभ-निरोधक उपकरणोका प्रयोग किया जा रहा है, उनके कारण वहा भयकर अनैतिकता फल रही है, और मुझे विश्वास है कि कुछ वर्षोके पश्चात पश्चिमी देशोके लोग स्वय अपनी गलती अनुभव करेगे। क्या आप नही जानती कि इटलीमे मुसोलिनी उन माता पिताओको आर्थिक सहायता दे रहा है जिनके परिवार बडे बडे है?

श्रीमती ना० शायद मुसोलिनीको तोपोके मुहमे झोकनेके लिए चारा चाहिए।

गा० उन अग्रेजो और डच लोगोके बारेमे आप क्या कहेगी जिनमे गभ-निरोधक बहुत लोकप्रिय है? क्या वे युद्धके विरुद्ध है?

श्रीमती ना० क्या भारत जसा गरीब देश अपनी इतनी बडी मौजूदा आबादी का बोझ सँभाल सकता है जो निरन्तर तेज रफ्तारसे बढ़ती प्रतीत होती है ?

गा० अगर हम प्रकृतिके मागमे बाधा न डाले तो प्रकृति ही हमारी समस्याको हल कर देगी। गभ निरोधक उपकरण प्रकृतिके नियमोमे अस्वाभाविक हस्तक्षेप करते हैं। यदि लोग खरगोशोकी तरह तेजीसे अपनी आबादी बढाना चाहते ह तो उन्हे खरगोशोकी तरह मरना भी होगा। यदि हम अपने आचारमे स्वच्छद हो जायेगे तो फिर कोई स देह नही कि प्रकृतिका कोप भी हमे झेलना होगा। प्रकृतिका यह कोप हमारे लिए छिपा हुआ वरदान होगा।

श्रीमती ना० लेकिन क्या साधारण पुरुष और स्त्रीके लिए आत्म-सयम बरत सकना सम्भव है ?

गा० हा सुनिर्धारित परिस्थितियोमे सम्भव है। गभ-निरोधक ता वास्तवमे शिक्षित लोगोके लिए है जो कि मानव समाजके 'रोगी व्यक्ति' हैं। मै उ हे 'रोगी' इसलिए कहता हूँ क्योकि उनका खान पान और जो अत्य त कृत्रिम जीवन वे व्यतीत कर रहे हैं, उसने उनकी इच्छा शक्तिको कमजोर बना दिया है और वे वासनाके दास बन गये हैं।

श्रीमती ना० तो क्या, महात्माजी, आज जो विषय भोगका अतिरेक हो रहा है, उसके व्यावहारिक उपचारके रूपमे आप यह सुझाव देगे कि मनुष्यमें जो रचनात्मक शक्ति है उसको विषय भोगके अतिरिक्त अ य रास्तोमे मोडनेके लिए कला, विज्ञान, साहित्य आदि विषयोपर ध्यान केन्द्रित किया जाये।

गा० एक हदतक यह सही हे। मन और शरीर दोनोको स्वच्छ रखनेके लिए आपको अपने खान पानकी वस्तुओके चुनावमे अत्यन्त सावधान रहना होगा। जिस प्रकार यह जानना जरूरी है कि दिमागमे क्या पहुँच रहा है, उसी प्रकार शरीरमे क्या पहुँचता है सो जानना भी उतना ही जरूरी है। ये अत्य त सरल चीजे है जो आपको आत्म सयमके मामलेमे बहुत मदद करेगी।

श्रीमती ना० आप जानते ह कि भारतमें शारीरिक दष्टिसे अक्षम या अयोग्य व्यक्तियोके विवाह करने और स तान पदा करनेपर कोई रोक नहीं है। फिर, हि दू धम कहता है कि जबतक परिवारमे कोई पुरुष सदस्य श्राद्ध काय सम्पन्न करने-वाला न हो, तबतक किसीको मुक्ति नहीं मिल सकती। सामा य परिस्थितियोमें यह चीज हि दू जातिको पतित बनाती जा रही है। क्या आप इन परिस्थितियोमें इस बातके पक्षमें ह कि वन्ध्यकरण या नसब दी करदी जाये, जैसाकि हिटलरके शासनमें जमनीमें किया जा रहा है ?

गा० ऐसे करोडो हि दू हैं, विशेष रूपसे अछूत लोग, जो श्राद्ध काय नही करते। जहातक नसब दीका सवाल है, इसे लोगोके ऊपर कानूनके रूपम थोपना मै अमानुषिक मानता हूँ। लेकिन ऐसे लोगोके मामलेमे जो असाध्य रोगोसे पीडित

हैं, यह वाछनीय है कि यदि वे लोग राजी हो तो उनकी नसबन्दी कर दी जाये। नसबन्दी एक प्रकारका गर्भ निरोधक है, और हालाकि मैं औरतोके मामलेमे गर्भ-निरोधकके प्रयोगके विरुद्ध हूँ, लेकिन चूकि पुरुष ही आक्रमणकर्ता होता है, इसलिए यदि वह स्वेच्छासे नसबन्दी करा ले तो मुझे परवाह नही है।

श्रीमती ना० महात्माजी, आप कहते है कि स्त्रीको अपने ऊपर बलात मातृत्व नही थोपने देना चाहिए, बल्कि उसे दृढ़तासे काम लेना चाहिए और अपने पतिसे निश्चयात्मक रूपसे 'ना' कह देना चाहिए। क्या आपने यह विचार किया है कि हिन्दू स्त्रीका विशेष रूपसे कोई आर्थिक दर्जा नहीं होता और यदि वह अपने 'स्वामी'की इच्छाकी अवहेलना करेगी तो इसके परिणाम उसके लिए बहुत भयानक हो सकते है, और कानूनके अनुसार उसे कोई दूसरा घर मिलनेकी बात तो दूर रही, गुजारेसे भी वंचित किया जा सकता है?

गा० यदि आप आकडोका अध्ययन करे तो देखेगी कि हिन्दू स्त्रियोकी आर्थिक अवस्थाके बारेमे आपका कथन सारे समाजकी बस मुट्ठी-भर स्त्रियोके मामलेमे ही लागू होता है। क्या आप जानती है कि भारतीय घरोमे सामान्यत स्त्री ही वास्तविक स्वामिनी होती है?

श्रीमती ना० क्या मै जान सकती हूँ कि साबरमती आश्रममें आत्म-संयम सम्बन्धी आपके प्रयोग किस हदतक सफल हुए है?

गा० यह कह सकना बहुत कठिन है। हमारे यहा कुछ अत्यन्त दुखद मामले हुए है। लेकिन जिन लोगोने आश्रममे आकर वहाँका अध्ययन किया है, वे वहा स्वतन्त्रताके सामान्य वातावरणको देखकर और वहाके अन्तेवासियोमे यौन-विषयक चेतनाका अभाव देखकर बहुत प्रभावित हुए है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, ११ १ १९३५

८६. भेट हालिदा अदीब हानुमके साथ[1]

९ जनवरी, १९३५[2]

[हालिद अदीब] गांधीजी, आप यन्त्रीकरणके अभिशापके विरुद्ध किस प्रकार संघर्ष करेंगे? आप आदमीको इन्सान किस तरह बनाये रख सकेंगे?

[गांधीजी] यह सब कुछ मेरी अहिंसामें समाया हुआ है — हिन्दू-मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता निवारण और जो कुछ गाँववालोंका है, उसे गाँववालोंको देनेकी बात, हरिजन कार्य और ग्रामोद्योगोंको पुनरुज्जीवित करनेका आन्दोलन — ये सब बातें अहिंसाके कारण ही मुझे सहज सुलभ प्रतीत होती हैं। ३५ करोड़ मनुष्योंवाले देशमें यन्त्रीकरणकी बात सोचना भी पाप है। प्रत्येक मनुष्य एक यन्त्र ही तो है। उसे तेल डालकर चुस्त-दुरुस्त हालतमें रखनेकी जरूरत है। मैं यही करनेकी कोशिश कर रहा हूँ।

मुझे विश्वास है कि राजनीतिक स्वतन्त्रता तो आप ले लेंगे, लेकिन मुझे भय है कि यन्त्रीकरण भारतपर हावी हो जायेगा।

वैसी स्थितिमें हिंसासे बचनेका कोई रास्ता नहीं है। यह चीज मैंने १९०८ में ही देख ली थी और तभीसे मैंने अपने सारे कार्य अहिंसाके सिद्धान्तके अनुसार किये हैं। भारतमें पूर्ण यन्त्रीकरण यदि हुआ तो उसके परिणामस्वरूप हिंसा किसी न किसी रूपमें अवश्य फूटेगी।

मैं जानती हूँ। लेकिन यह अत्यन्त कठिन कार्य है। आत्माकी रक्षा की ही जानी चाहिए। मैंने "मास्कस एण्ड सोल्स" नामक एक नाटक लिखा है। जितनी आत्माएँ हैं उनसे ज्यादा मस्जिदें हैं, लेकिन यदि आप आत्माओंको शिक्षा देनेवाली एक पाठशाला खोलें तो बहुत अच्छा होगा।

अवश्य, बशर्ते कि हम एक भी सच्चा सत्यदर्शी पा सकें।

मैं बहुत आशान्वित नहीं हूँ, क्योंकि विरोधी पक्ष बहुत शक्तिवान है।

मैंने अपनी आशावादिता कभी नहीं छोड़ी है। घोर अन्धकारके समय भी मेरे मनमें आशाकी प्रखर ज्योति जलती रही है।

१. महादेव देसाईकी "साप्ताहिक चिट्ठी" से उद्धृत। भेंटकर्त्री एक तुर्क महिला थीं, जिन्होंने तुर्कीकी क्रान्तिमें प्रमुख भाग लिया था। वे जामिया मिलियाके निमन्त्रणपर व्याख्यान देनेके लिए भारत आई थीं। महादेव देसाईने लिखा है: "वे आईं और गांधीजीके निकट बैठकर बोलीं, 'मैं आपसे शिक्षा ग्रहण करने और अपने देशवासियोंके लिए जो कुछ ले जा सकूँ, वह लेनेके लिए आई हूँ'।"

२. *हिन्दुस्तान टाइम्स*, १०-१-१९३५ के अनुसार।

म जानती हूँ कि आप अपनी आशाको स्वय नही मार सकते।

आप बिलकुल ठीक कहती है। इस आशाको मै स्वय नही मार सकता। मै मानता हूँ कि अपनी आशाको उचित सिद्ध करनेके लिए मै कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नही दे सकता। लेकिन मेरे मनमे पराजयकी कोई भावना नही है।

मुझे यकीन है कि यह पराजय भावना आपके अन्दर कभी नही होगी, कभी नही होगी।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २५ १ १९३५

८७ पत्र मार्गरेट स्पीगलको

दिल्ली
१० जनवरी, १९३५

चि० अमला

मुझे तुम्हारा पेंसिलसे लिखा हुआ पुर्जा मिला। मेरा खयाल है कि तुम्हे जर्मनीसे एक अन्य पासपोर्टकी जरूरत नही होगी। उसकी जरूरत तब होगी जब तुम वापस जर्मनी जाना चाहो। मुझे पूरा यकीन है कि यहा रहनेके लिए वह अनावश्यक है। साथ ही, सरकार किसी भी विदेशीको किसी भी क्षण बिना कोई कारण बताये भारतसे चले जानेके लिए कह सकती है। और अब तो भारतमे जन्मे किसी व्यक्तिमे और विदेशीमे शायद ही कोई अन्तर हो, क्योकि अध्यादेश द्वारा बनाये गये कानूनके अन्तर्गत किसी भी व्यक्तिको देश निकाला दिया जा सकता है।

तुम मुझे यह अवश्य बताना कि शान्तिनिकेतनमे तुम्हे कैसा लग रहा है। हम यहा सम्भवत २८ तारीखतक है, २० तारीखतक तो निश्चय ही है।

बापू[1]के आशीर्वाद

श्रीमती अमलाबहन
(डा० मार्गरेट स्पीगल)
शान्तिनिकेतन

[अग्रेजीसे]

स्पीगल-कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय।

१ हस्ताक्षर गुजरातीमें है।

८८ भेट समाजवादियोसे

१० जनवरी १९३५

समाजवादी एकबार फिर गाधीजीसे मिले और उन्होने समाजवादी दष्टिकोणसे ग्रामोद्योग समस्यापर बातचीत की। उन्होने यह कहा बताते है कि ग्रामीण कायक्रममे सबसे पहला काम किसानोकी हालत सुधारनेका होना चाहिए, जो कि जमीदारो द्वारा पीडित किये जाते ह। और किसानोमे यह प्रचार किया जाना चाहिए कि उनके प्रति किये जानेवाले अमानुषी व्यवहारके आगे वे अपना सिर न झुकायें।

ऐसा समझा जाता है कि गाधीजी उनकी इस रायसे सहमत नहीं थे और उन्होने यह राय व्यक्त की कि दोनो दलोमे सौहादपूण सम्बन्ध बनाये रखनेकी दिशामे प्रयास किये जाने चाहिए। किसी किस्मके झगडेसे बचना चाहिए और जमींदारोकी सहानुभूतिको नही खोना चाहिए, ताकि वतमान कायक्रमको सफल बनाया जा सके उन्होने कहा कि एकाएक पूण परिवतन लानेका अभी समय नही आया है, हालाँकि कुछ समय बाद हम उस स्थितिको पहुँच सकते ह। महात्मा गाधीने कहा कि वतमान परिस्थितियोमे क्रान्ति लानेका समाजवादियोका जो विचार है, उसके परिणामस्वरूप जमींदार लोग किसी तीसरे पक्षकी शरण ले सकते ह।

[अग्रेजीसे]
बाम्बे क्रानिकल, ११ १ १९३५

८९ भेट समाचारपत्रोको

१० जनवरी, १९३५

आपकी इस ग्रामोद्योग योजनाके प्रति सरकारने जो रुख अख्तियार किया है, उसके सम्बन्धमे आपका क्या खयाल है? [१]

सरकार अगर खुद मेरे कामको अपने हाथमे लेकर मेरे पैर तलेकी धरती निकाल दे तो मुझे अपार आनन्द होगा। जो काम मै करना चाहता हूँ वह बहुत कुछ सरकारके करनेका था। जो काम सरकार कर सकती है वह करे, मगर जनताको व्यथ भुलावेमे

१ गाँवोमें काग्रेसकी गतिविधियोके विरुद्ध पेशबन्दी करनेक खयालसे सरकारने गाँवोके आर्थिक विकास और सुधार कार्योके लिए प्रान्तोको १ करोड़ रुपये देनेका प्रस्ताव किया था और इस सिलसिलेमें एक गोपनीय परिपत्र जारी किया था।

न डाला जाये। अगर सरकार मेरे काममे मेरी मदद करे तो मै चमत्कार करके दिखा दू। पर यह तभी हो सकता है जब वह सच्चे अथमे मुझे सहायता दे, अर्थात इस कायक्रमके रहस्यको सरकार समझे और उसकी कदर करे।[1] करना चाहे तो वह अनेक तरीकोसे मेरी मदद कर सकती है। जैसे, आवश्यक कानून बनाकर वह ग्रामोद्योग कायमे मेरा हाथ बँटा सकती है। मगर सरकार क्या कर रही है और क्या नही, इस सबके बारेमे कृपाकर आप मेरी राय न पूछे। मै सरकारके कामकी टीका नही करना चाहता। अगर इसे जरूरी समझूगा, तो मै सरकारको लिख दूगा। जहातक मेरा सम्बन्ध है, मेरी हर बात जग उजागर है सरकारसे मेरी कोई भी बात छिपी नही है। मने अपने कायक्रममे ऐसी ही चीजोको लिया है जिनके ऊपर अभीतक किसीका भी ध्यान नही गया था, और दूसरे लोग जो काम कर रहे है उसमे अनधिकार हस्तक्षेप करनेकी मेरी नीयत नही है। हाथका कुटा चावल, हाथका पिसा आटा और गाँवका बना गुड, इन चीजोका प्रचार मै केवल इसलिए कर रहा हूँ कि लोग मशीनकी कुटी पिसी बाजारू चीजे खा-खाकर अपने स्वास्थ्यको खराब न करे, क्योकि आज देखा जाये तो यही हो रहा है। मुझे खुशी है कि मिलके चावल आटे और शक्करके बारेमे मेरी जो राय है उसका समथन देशके ऊँचेसे ऊँचे डाक्टरो और वैज्ञानिकोने किया है। जमीन और खेतबाडीकी तरक्की किन किन तरीकोसे हो सकती है इस बातपर मै अपना खयाल नही दौडाऊँगा, क्योकि मै अपनी सीमाओको भली भाति जानता हूँ। बिना किसी बाहरी मददके लोग जो खुद कर सकते हो, वह सब करे, बस इतना ही मै चाहता हूँ। आलस्य दूर हो जाये, अपना समय लोग अच्छे कामोमे लगाने लगे, रोगवधक खाद्य वस्तुओका उपयोग न करे और अपनी सब फिजूलखर्चिया बन्द कर दे—मेरा बस, यही एकमात्र उद्देश्य है। हाथ कुटे चावल, हथ-चक्कीके पिसे आटे, गावके बने गुड, कोल्हूके पिरे तेल और गहचम उद्योग सम्बन्धी मेरे तमाम आन्दोलनको बस इसी दष्टिसे देखना चाहिए।[2]

ग्रामोत्थानका कायक्रम कोई नई चीज नही है, हालाकि काग्रेसने हाल ही मे अपने बम्बई अधिवेशनमे इसे रचनात्मक कायक्रमके एक अगके रूपमे स्वीकार किया था।[3] पिछले आठ महीनोसे मै जनताको इसके बारेमे बताता आ रहा हूँ।

गाधीजीने तकलीकी क्षमताओको मुक्तकठसे सराहते हुए बताया कि हाल ही में मनचेस्टरके एक कतैयेने तकलीकी परीक्षा करनेके बाद यह स्वीकार किया कि इसमें बडी सम्भावनाएँ छिपी हुई ह। किसी समय तकलीपर प्रतिघटे एक सौ गज सूत ही काता जा सकता था, पर अब उसपर चार सौ गज प्रति घटेकी रफ्तार से सूत निकाला जाता है। उन्होने कहा

१ यह वाक्य **हिन्दुस्तान टाइम्स**में छपी रिपोर्टसे लिया गया है।

२ इसके बादका अश **हिन्दुस्तान टाइम्स**में छपी रिपोर्टसे लिया गया है।

३ परिपत्रमें सरकारने कांग्रेसके बम्बई अधिवेशनको गाधीजीकी सबसे बड़ी वैयक्तिक विजय बताया था।

तकली एक बहुत ही अदभुत चीज है और इसका बुद्धिमानीके साथ प्रयोग किया जाये तो इससे जबदस्त लाभ हो सकता है।

महात्माजी ने इस बातपर जोर दिया कि ग्रामोद्योग सघका राजनीतिसे कतई कोई सरोकार नही है।

यह पूछे जानेपर कि दिल्लीमें आपने अपने काममें कितनी प्रगति की है, गाधीजी ने कहा कि म सामग्री इकट्ठा करनेका काम धीमी गतिसे कर रहा हूँ और इसकी महान सम्भावनाओको देखना चाहता हूँ। चरखा सघने डेढ करोड रुपया १ लाख ६० हजार लोगोमे वितरित किया है। इनमें १ लाख २० हजार कतैये, २४,००० धोबी और शेष बुनकर ह। ग्रामोद्योगोका उद्देश्य गाववालोके हितोको बढाना है और अगर यह बात स्पष्ट रूपसे समझ ली जाये कि गावमे तयार होनेवाली वस्तुए उस गावकी आवश्यकताओकी ही पूर्तिकी खातिर ह, तो प्रतियोगिताकी दष्टिसे कोई कारण नही है कि ग्रामोद्योग यत्रचालित उद्योगोका मुकाबला न कर सके।

इस नीतिको भारतके बाहरके देशोमें भी आर्थिक दष्टिसे लाभजनक माना गया है और यदि इसको कायरूप दिया जाये तो इससे भारतको जबदस्त लाभ होगा। जहातक चावल, गेहूँ और चीनीका सवाल है, यह नीति सामा`य आर्थिक दृष्टिसे ही नही, बल्कि अ`य दष्टियोसे भी महत्वपूण है, क्योकि गावोके हाथ कुटे, हाथ पिसे चावल और आटेमे तथा गुडमे विटामिनो और प्रोटीनोकी मात्रा अधिक होती है, जबकि मिलोके चावल, आटे या चीनीमें ये तत्व नहीं होते।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २५-१ १९३५ और **हिन्दुस्तान टाइम्स,** ११ १-१९३५

९० पत्र एस० अम्बुजम्मालको

दिल्ली

११ जनवरी, १९३५

चि० अम्बुजम,[1]

तुम्हारा पत्र मिला। जो खाना तुम्हे सबसे ज्यादा माफिक आता है, वही खाकर तुम्हे अपना शरीर पूणतया स्वस्थ कर लेना चाहिए। तुम्हे क्या माफिक आता है, इसका निणय तुम स्वय सबसे अच्छी तरह कर सकती हो, बशर्ते कि तुम खानेका चुनाव स्वास्थ्यके लिए करो न कि स्वादके लिए। मुझे ऐसी कोई आशका नही है कि तुम अपने खानेका चुनाव स्वादको ध्यानमे रखकर करोगी। यहा हमे तरह तरहकी भाजी मिल जाती है–मटरका साग, सरसोका साग, गाजरकी पत्तिया, अच्छी मूलीकी

१ यह हिन्दीमें है।

पत्तिया और पालक। तुम मक्खन ले रही हो, यह अच्छी बात है। क्या तुम काफी कसरत कर रही हो?

जानम्मालके बिना तुम्हारा आश्रम खोलना ठीक नही होगा। इसलिए यदि वह गाव नही आ सकती तो तुम्हे अपना आश्रम मद्रासमे रखना चाहिए, बशर्ते कि पिताकी इच्छा अन्यथा न हो।

मुझे पिताके किसी गावमे बसनेका विचार पसन्द है, चाहे वह कुछ समयके लिए ही हो।

हम एक खुले बरामदेमे, जिसके ऊपर छत पडी है, सो रहे है। यहा सुबहकी ओसका खतरा है और मेरे लिए इस बातकी काफी सुविधा नही है कि खुले आसमानके नीचे सोनेके प्रयोगकी मै कोशिश करूँ।

यह अच्छी बात है कि तुम काका साहबसे मिली और हिन्दी सीखनेके सबसे अच्छे तरीकेके प्रश्नपर उनसे बातचीत की। उनसे निकट सम्पर्क स्थापित करो। वे शिक्षा-सम्बन्धी मामलोमे अच्छे पथदर्शक होगे।

मेरा खयाल है कि कागज और लिफाफोका बिल लगभग २२ रु० था। मेरा खयाल था कि वह बिल तुम्हे भेज दिया गया था। मै पता करूँगा। मुझे कोई लिफाफे मत भेजना। खुद मेरे पास कुछ है। लेकिन मै उन लिफाफोको काममे ला रहा हूँ जिन्हे हमने रद्दी कागजोसे बनाया था और जबतक ये चलेगे, इन्हीसे काम लूगा। निर्मला वर्धामे है। बीबी अमतुल हमारे साथ है।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजीसे। अम्बुजम्माल कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

९१ पत्र उमादेवी बजाजको

११ जनवरी, १९३५

चि० ओम,

तू अपना आलस्य कब छोडेगी? तेरे पत्रमे अक्षर मोतीके दानेके समान नही है। इतने लम्बे पत्रमे भी खबरे कुछ नही दी। मुझे अब ऐसा लगता है कि तेरा बम्बई जाकर एकबार कान दिखा लेना अच्छा होगा। यहा ठड अच्छी पड रही है। हमे तो ऐसा लगता है, जैसे जगलमे पडे है। अच्छा है। लोगोसे मिलना बहुत रहता है, इसलिए काम पूरा नही हो पाता।

मदालसाको कहना कि मुझे लिखे। उसकी खुराक क्या चल रही है? वजन कितना है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मेहरताज तुझे मुझे सबको भूल गई है। चैनसे डा० असारीके घर रहती है।

[गुजरातीसे]
पाचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पष्ठ ३४०-४१।

९२ तार जमनालाल बजाजको

दिल्ली
१२ जनवरी, १९३५

जमनालाल
बिडला हाउस
माउण्ट प्लेजेट रोड
बम्बई

अभी अभी पता चला कि स्वरूपरानी बेहोश है। पूरा विवरण भेजो।

गाधी

[गुजरातीसे]
पाचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पष्ठ १४६

९३ मिल-मजदूरोसे

दिल्ली
१३ जनवरी, १९३५

तुम्हारी मजदूरीके विषयमे जो झगडा चल रहा था उसके सम्बधमे हुए समझौतेका तुम लोग सहर्ष स्वागत करोगे, ऐसी मैं आशा करता हूँ [1] मजदूरीमे हुई कमीको यदि तुम स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लेते हो तो इसमे तुम्हारा हित ही है। मुझे इसमे बिलकुल शक नही है कि इससे तुम्हारी प्रतिष्ठा बढेगी। हम जिस नीतिको वर्षोंसे मान्य कराना चाहते रहे है उसके मुख्य सिद्धातको इस समझौतेमे स्वीकार किया गया है। यह कोई छोटी बात नही है। इसपर अमल कसे किया जाये इसकी योजना हमे जल्दीसे जल्दी बनानी है। यहा मुझे यह कहनेकी जरूरत नही होनी चाहिए कि इस योजनाका आधार अधिकाशमे तुम्हारे उद्देश्यकी शुद्धता और आचरण पर है। मालिक और मजदूर दोनोका हित इस बातमे है कि मिल चलती रहे। जो इस बातको याद रखेगा उसे इस समझौतेका औचित्य समझना बिलकुल भी कठिन नही होगा। जबसे हम लोगोका सम्बन्ध आरम्भ हुआ तभीसे मैं तो आप लोगोसे

१ साधन सूत्रमें छूटा हुआ है।

यह कहता आ रहा हूँ कि कोई भी उद्योग न तो सिर्फ मालिकका है, और न सिर्फ मजदूरोंका। यदि उसमें मालिककी पूंजी यानी उसका पैसा लगा हुआ है, तो तुम्हारी पूंजी भी लगी हुई है। तुम्हारी पूंजी तुम्हारा परिश्रम है। ये दोनों ही तबतक किसी कामकी नहीं हैं जबतक उनमें मेल न हो। यदि यह बात तुम्हारे हृदयमें उतर गई हो, तो तुम इस समझौतेमें दोनों पक्षोंका हित देख सकोगे, और यह भी देख सकोगे कि हमारे मनमें जो स्वप्न रहा है उसकी सिद्धिकी दिशामें हम कितना रास्ता तय कर चुके हैं और अपने लक्ष्यके कितने समीप पहुँचे हैं। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि सब भाई बहन पूर्ण सम्मतिसे इस समझौतेको स्वीकार करेंगे।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल कागजात, सौजन्य : प्यारेलाल।

९४. बातचीत

[१४ जनवरी, १९३५से पूर्व][1]

आपका यह आन्दोलन[2] मिशनरियोंकी लोकप्रियताको कम कर रहा है।

[गांधीजी :] सो तो मैं समझता हूँ, मगर यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि इससे मेरे मिशनरी मित्रोंको घबराहट क्यों होती है। हम लोग कोई व्यापारी तो हैं नहीं जो एक दूसरेकी मंडीपर कब्जा करने जा रहे हों। अगर यह 'स्वसेवा' या स्वार्थ-साधनकी बात हो, तब तो मैं उनकी स्थितिको समझ सकता हूँ। लेकिन जब यह पूर्णतया 'पर सेवा' का प्रश्न है, तब मुझे या उन्हें, जो दूसरोंकी सेवा कर रहे हैं, परेशान होना ही नहीं चाहिए।

लेकिन मान लीजिए कि किसी जगह पर मिशनरियोंका एक अस्पताल है, उसी जगह पर एक और अस्पताल खोलनेके लिए आप अपने आदमियोंको भेज दें, तो ऐसी स्थितिमें मिशनके अस्पतालवालोंका परेशान होना शायद उचित ही है।

पर यह बात तो उन्हें समझ लेनी चाहिए कि हमारा एक भिन्न प्रकारका मिशन है। हम उन्हें सिर्फ दवा दारू देने या मामूली अक्षरज्ञान कराने तो उनके पास जायेंगे नहीं, हम तो उनके पास अपनी प्रायश्चित्त-भावनाका यत्किंचित् प्रमाण लेकर जायेंगे और उन्हें यह विश्वास दिलानेका प्रयत्न करेंगे कि अब हम तुम्हारा और अधिक शोषण नहीं करेंगे। जहां पहले से कोई अस्पताल है, वहां एक नया अस्पताल खोलनेकी सलाह तो मैं नहीं दूंगा, पर अगर वहां मिशन स्कूल है, तो मैं वहांपर हरिजन बच्चोंके लिए एक दूसरा स्कूल खुलवा देनेमें कोई हानि नहीं समझूंगा। हम बेतकल्लुफीसे स्थितिको ठीक ठीक समझ लें। अगर हमारा उद्देश्य शुद्ध मानव सेवा है, जहांपर शिक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं वहां शिक्षा-प्रसार है, तो हमारे मिशनरी

१. इसे महादेव देसाई लिखित "साप्ताहिक टिप्पणियाँ", १४-१-१९३५, से लिया गया है।

२. अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन।

मित्रोको तो आभार मानना चाहिए कि जो लोग अपने घरमे अचेत पडे हुए थे, वे जाग तो गये, उन्हे अपने कर्तव्यका बोध तो हो गया। पर मुझे दुख यह होता है कि हमारे मिशनरी मित्र शुद्ध मानव सेवाकी भावनासे काम नही कर रहे है। उनका उद्देश्य तो अधिकसे अधिक लोगोको ईसाई बनाना है, और यही उनकी परेशानीका कारण है। जो शिकायत मै बरसोसे करता आरहा हूँ वह आपके इस कथनसे और भी पुष्ट हो जाती है। उस दिन एक विद्वान पण्डितके ईसाई धर्म स्वीकार कर लेने पर एक मिशनके कुछ सज्जन मारे खुशीके फूले नही समाते थे। वे मेरे प्रिय मित्र थे, इससे मैने उनसे कहा कि अगर एक मनुष्य अपने धर्मका परित्याग कर रहा है तो इसमे आप लोगोका आनन्दविभोर होना उचित नही। आज तो यह एक विद्वान हिन्दूकी बात है, कल किसी ऐसे अज्ञानी ग्रामवासीका आप ईसाई बना सकते है जिसे शायद अपने धर्मके सिद्धान्तोका कुछ भी पता न हो। अगर मै कही कोई ऐसी पाठशाला खोलू जिसे हमारे हरिजन भाई मिशन पाठशालाकी अपेक्षा अधिक पसन्द करते हो, तो, आप ही बतलाइए, इसमे मिशनरियोको शिकायत क्यो होनी चाहिए? क्या यह स्वाभाविक नही है?

पर अगर कोई ईसाई आपके हिन्दू धर्मको स्वीकार कर ले, तो क्या उसके सम्बन्धमें भी आप यही बात कहेगे?

जरूर कहूँगा। मीराबहनको ही ले लीजिए। ईसाई-धर्मसे वे जो भी आध्यात्मिक शान्ति प्राप्त करना चाहे, मै उन्हे खुशीसे प्राप्त करने दूगा। मै उन्हे हिन्दू-धर्ममे, अगर वह चाहे तब भी, दीक्षित करनेकी स्वप्नमे भी कल्पना नही करूँगा। आज तो मीराबहन-जसी एक प्रौढ महिलाकी बात है, पर कल यही बात किसी ऐसे यूरोपियन बच्चेके बारेमे हो सकती है जिसे मेरा कोई प्रिय मित्र धरोहरके रूपमे मुझे सौप जाये। खान साहबकी लडकीका लीजिए। उसके पिताने उसे मेरे हवाले कर दिया है। मै बडी सावधानीके साथ उसे उसके इस्लाम-धर्मके ही अनुसार शिक्षा-दीक्षा दूगा ओर इसका भरसक प्रयत्न करूँगा कि वह अपने धर्म पथसे कभी बहकने न पाये। दूसरे धर्मोके बच्चो ओर वयस्क लोगोको अपनी निगरानीमे रखनेका मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मै ईश्वरका आभार मानता हूँ कि वे लोग मेरे साथ रहकर कुछ बेहतर ही ढगके ईसाई, मुसलमान, पारसी या यहूदी बने।

लेकिन अगर अन्त करणकी शुद्ध बात हो, तब?

मै किसीके अन्त करणकी खबर रखनेवाला तो हूँ नही। किन्तु यह मै जरूर महसूस करता हूँ कि जो मनुष्य यह कहता है कि जिस धर्ममे उसने जन्म लिया है उस धर्ममे उसे शान्ति नही मिल रही है, उस मनुष्यके अन्दर ही कोई कमजोरी है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-१-१९३५

९५ प्रस्तावना 'टू सर्वेण्ट्स ऑफ गॉड' की

दिल्ली
१४ जनवरी, १९३५

हालाकि मेरी हमेशासे यह तीव्र अभिलाषा रही है कि मै खान अब्दुल गफ्फार खाके साथ कुछ समय रहूँ, लेकिन मुझे यह सौभाग्य केवल पिछले वषके अन्तिम महीनोमे ही प्राप्त हो सका। फिर भी खुशकिस्मतीसे मै न केवल छोटे भाई अपितु बडे भाई, डाक्टर खान साहबके साथ भी कुछ समय रह सका। यह तबकी बात है जब वे दोनो हजारीबाग जेलसे रिहा ही हुए थे। यह सयोगकी ही बात थी कि उन्हे गत २८ दिसम्बरसे पहले सीमा प्रातमे घुसनेकी अनुमति नही थी, और स्वारोपित अनुशासनके अतगत वे सविनय प्रतिरोध भी नही कर सकते थे। सो वे वर्धामे सेठ जमनालाल बजाजके अतिथि बनकर रहे। इस तरह मुझे इन भाइयोके निकट सम्पकमे आनेका सोभाग्य प्राप्त हुआ। मै जसे जैसे उनके सम्पकमे आता गया वैसे-वैसे उनकी ओर आकर्षित होता गया। मै उनकी शुद्धहृदयतासे, स्पष्टवादितासे और अत्यधिक सादगीसे अत्यत प्रभावित हुआ। मैने यह भी देखा कि वे एक नीतिके रूपमे नही, बल्कि एक सिद्धातके रूपमे सत्य और अहिसामे विश्वास करते है। छोटे भाईको मैने गहरे धार्मिक उत्साहसे ओतप्रोत पाया। लेकिन उनका धम सकीण नही है। वे विश्ववादी है। यदि उनकी कोई राजनीति है तो वह उनके धमपर अवलम्बित है। डाक्टरकी कोई राजनीति नही हे। उनके सम्पकमे आनेके बाद मै इस निष्कषपर पहुँचा कि उनके बारेमे लोगोके दिलोमे मिथ्या धारणा हे। इसलिए मैने महादेव देसाईको कहा कि उनके जीवनके बारेमे वे जितनी जानकारी प्राप्त कर सकते हो, प्राप्त करके जनताके लिए उन दोनो भाइयोका एक शब्द चित्र तैयार करे जिससे जनताके सम्मुख उनका मानवीय रूप उभरकर सामने आये। लेकिन साथ ही मैने यह भी कहा कि वह अपने शब्द चित्रमे राजनीतिकी चचा न करे और सरकारकी आलोचनासे भी दूर रहे। उसी प्रयत्नका परिणाम यह चरित्र-चित्र है। अब पाठकगण यह मानकर कि इस पुस्तकमे महादेव देसाईने, दोनो भाइयोने जैसा उन्हे बताया वैसा ही उनके जीवनका ठीक ठीक ओर सच्चा विवरण दिया है, स्वय ही इस बातका निणय करे कि आज खान बन्धु यदि जनताकी निगाहमे 'खुदाई खिदमतगार' के रूपमे जाने जाते ह तो उनका यह दावा किस हदतक सही है।

मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
टु सर्वेण्टस आफ गॉड

९६ पत्र निर्मल कुमार बोसको

१४ जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र

आपके निबन्धपर सिफ मुझे अपनी टिप्पणी देनी ही बाकी रह गई है। इसलिए आपका पोस्टकाड समयपर ही पहुँचा। मुझे खुशी है कि आपने अपने दष्टिकोणपर पुनर्विचार किया है। आप भेटवार्त्ता सम्बन्धी अपनी टिप्पणियोको प्रकाशित कर सकते है, बशर्ते कि आप उन्हे पहले मेरे पास सशोधनके लिए भेज दे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

[पुनश्च]

इस महीनेकी २३ तारीखतक दिल्लीमे ही हूँ।

श्री निमल कु० बोस
६/१ ए० ब्रि० इडियन स्ट्रीट
कलकत्ता

अग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० १०५१८ और १०५२१) से।

९७ पत्र जमनालाल बजाजको

१४ जनवरी, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम नही आ सकते, यह बात मै समझ गया। जबतक डाक्टर अनुमति नही देता, तबतक वहा रहना ही ठीक है। अपने सिर ज्यादा झझट मत लेना।

चूकि रामदासको ऐसा लगता है कि उसे मणिभवन[1] मे रखनेकी मणिलाल[2] की कोई खास इच्छा नही है, इसलिए उचित यही है कि वह वहा से निकल आये। अब वह एक अलग कमरा लेकर रहना चाहता है। उसने उसका किराया, जो कि २५ रुपये तक होगा, मागा है। मुझे लगता हे कि उसे २५ रुपये दिये जाने चाहिए।

१ रेवाशकर झवेरीका बम्बई स्थित भवन।

२ रेवाशकर झवेरीके पुत्र।

यह सब अनुचित तो है ही। लेकिन रामदासका रोग ही ऐसा है कि उसके मामलेमे अनुचित उचित मालूम पडता हे। इसमे पित मोह मुझे किस हदतक गुमराह कर रहा है, सो नही कह सकता। यदि रामदासकी यह माग तुम्हे दोषपूण जान पडे तो उससे ऐसा कह देनेका अधिकार तुम वर्षो पहले प्राप्त कर चुके हो।

स्वरूपरानीके बारेमे तुमने जो लिखा, सो मै समझा।

मुझे यहा २५ तारीखतक तो रहना ही पडेगा। २८ तारीख यहासे रवाना होनेकी अन्तिम तारीख है।

राजाजी कल लक्ष्मीको लेकर यहा आ रहे है।

क्या तुम जयप्रकाशसे मिलते हो?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९५१) से।

९८ पत्र लीलावती आसरको

१४ जनवरी, १९३५

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तू खूब मितव्ययितासे काम ले रही है। अब तुझे बीमार तो कतई नही पडना चाहिए। खाने पीने और अध्ययन आदिके सम्ब धमे नारणदास जो कहे उसे ही सच मान। यहासे मै तेरा ठीक तरहसे मागदशन नही कर सकता। धीरजका फल मीठा होता है, यह हमेशा याद रखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ९३३०) से। सी०डब्ल्यू० ६६०५ से भी, सौजन्य लीलावती आसर।

९९ पत्र नारणदास गांधीको

१४ जनवरी, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारे तीन पत्र मिले हैं। पहलेका उत्तर तो महादेवसे देनेको कह दिया था। फइबा[1]के बारेमें समझ गया हूँ। यदि उसे शान्ति मिले तो काफी है। पावमें नश्तर लगवा दिया यह ठीक किया। इस उपचारपर जो खर्च हुआ, सो मुझे लिख भेजना। आश्रमकी जो रकम तुम्हारे पास हो, उसमें से चुका देना। उसका मासिक खर्च तो बेहचरलाल भेज देता है न? मुझे ऐसा ही कुछ खयाल है। पता लगाकर लिखना। फइबा शान्त तो रहती है न? क्या मनु उसकी टहल करती है? फूली[2] क्या वहीं है? क्या वह अपने धर्मका पालन करती है? यदि हम रोगका ठीक अर्थ निकालें तो वह रोगी और उसके पड़ोसियों तथा आत्मीयोंकी एक परीक्षा ही है। अगर ईश्वरने सबकी स्थिति एक जैसी बना दी होती तो कौन किसकी परीक्षा लेता? डा० जादवराय कौन हैं?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मेरे पावमें कहने लायक कष्ट नहीं था। ठण्डमें लापरवाही करनेके कारण बिवाई फट गई थी। घूमना बन्द करने और थोड़ी-सी देख-रेखसे अच्छा हो गया है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४२७ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी।

१ रलियातबहन।

२ रलियातबहनकी पुत्री।

१०० पत्र हीरालाल शर्माको

१४ जनवरी, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारे खतकी इंतेजारी हम दोनो कर रहे थे। ठीक आया। नया घर भले लिया। खर्चका हिसाब देखा। डाकका खर्च बिलकुल अच्छा है। किसीको उत्तर देनेकी आवश्यकता नही है। 'हरिजन'की नोटीस[1] बहुत अखबारोमे आई है। कोई मेरे साथ इस बारेमे पत्र भी लिखते।

मेरा यहासे जानेका कब होगा, कहा नही जा सकता। लेकिन २० के बाद तीन दिनका दौरा देहातका है। बादमे भाग जाना वर्धा।

नये मकानका किराया क्या होगा? कुछ लीसमे लिया है? तुमारे यहा आनेसे ज्यादा समझुगा। द्रोपदी और बच्चे आवेगे ना?

रामदास मुबईमे है।

रु० २०० गिरोमे लिया इसका अर्थ मै समज नही सका हू। किसने किसका घर क्यो गिरो दीया?

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामे मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १८२ और १८३ के बीचकी प्रतिकृतिसे।

१०१ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

१५ जनवरी, १९३५

चि० अम्बुजम,[2]

मुझे खुशी है कि सब कुछ इतनी अच्छी तरह हो गया। आशा है कि के०[3] का जख्म अब पूरी तरह भर गया होगा। मेरे पास अच्छे शहद और बादामकी तीन बोतले है। अभी मै उन्हे नही खा रहा हूँ। अब मुझे जरूर आजमाना चाहिए। तुम जब भी आ सको आओ। जब अगली बार कोई आये तो तुम मेरे लिए एक वैसा कुकर भेजना जैसाकि जानम्मालके पास था। तुम्हे चाहिए कि तुम मुझे उसकी

१ १४ दिसम्बर १९३४ का।

२ यह हिंदीमें है।

३ अम्बुजम्मालका पुत्र, कृष्णस्वामी।

कीमत चुकाने दो क्योकि वह मुझे खुर्शीद बहनके लिए चाहिए। विवाहके बाद पिताका एक मधुर पत्र मुझे मिला था। आशा है कि वे कोडाई वापस चले गये होगे। तुम्हे चाहिए कि उनको ऐसा करनेको प्रोत्साहित करो। तुम खुद उनके साथ जाओ और के०को अपने साथ ले जाओ।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजीसे अम्बुजम्माल कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

१०२ पत्र गगाबहन वैद्यको

१५ जनवरी, १९३५

चि० गगाबहन,

यह हाथका बना कागज है, इसलिए ज्यादा महँगा है। अत म इसका उपयोग सोच समझकर करता हूँ। जबसे मैंने इसका उपयोग करना शुरू किया है तबसे कागजकी खपत आधी रह गई है, ठीक उसी तरह जिस तरह कि खादीकी खपत दशमाश अथवा उससे भी कम हो गई है। देसी माल हमेशा सस्ता पडता है। मै देसी कलमसे लिख रहा हूँ।

तुम्हारी दष्टि सूक्ष्म है। आसपासकी सब चीजोकी सूक्ष्मतासे जाच करना। जहातक सम्भव हो खाने पहननेकी सब चीजे देसी होनी चाहिए।

पत्तोको बिना पकाये खानेकी आदत डालना। दूधको उबाले बिना आटेको छाने बिना और चावल बिना पालिश किया हुआ खाना सीखना। यदि तुम इतना भर सीख लो और गाववालोको सिखा दो तो करोडो रुपये बच जाये।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ६ जी० एस० गगाबहेनने, पष्ठ ८४। सी० डब्ल्यू० ८८१७ से भी, सौजन्य गगाबहन वैद्य।

१०३ पत्र वसुमती पण्डितको

दिल्ली
१६ जनवरी, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र कल मिला और उसका जवाब आज सवेरे सबसे पहले, अर्थात सवा तीन बजे लिखने बैठा हूँ।

यदि तेरी इच्छा चन्दूभाईको मदद देनेकी हो तो खुशीसे दे। किसीको परोपकार वत्तिसे रोकनेका मुझे कोई अधिकार नही। जो भी पैसा तू दे, वापस मिलनेकी उम्मीद से मत देना। वापस न मिलनेमे किसीका दोष नही होगा। व्यापार चीज ही ऐसी है। जब पासा सीधा पडने लगे तब सीधा ही पडता जाता है, और जब उल्टा पडने लगे तब उल्टा पडता जाता है। लेकिन किसे सीधा कहे और किसे उल्टा, सो हम क्या जानते है? इसलिए जैसा तेरी अन्तरात्मा कहे वैसा अवश्य करना। देनेकी वत्तिका सदैव विकास करना चाहिए। जिसे हम अपना मानकर बैठे है, वह अपना कब होता है?

मेरे पावके बारेमे तुझे जो बात सुनाई दे अथवा समाचारपत्रोकी बातको सच मत समझना। महात्माओकी फुसिया भी बडे फोडेका रूप धारण कर लेती है। इसलिए महात्माओके फोडो आदिका विचारतक भी नही करना चाहिए। मै वर्धामे जैसा था वैसा ही यहा हूँ। हा, यहा एक सडा गला दात छोड जाऊँगा। या वह भी साथ आयेगा। मै यहासे शायद २५ तारीखको रवाना होऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९३९२) से। सी० डब्ल्यू० ६३७ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित।

१०४. पत्र मार्गरेट स्पीगलको

१६ जनवरी, १९३५

चि० अमला,

तुम्हारा पत्र मिला। सर्दीसे हाथ पाव फटनेका एक ही इलाज है और वह यह कि उन्हे गर्म रखा जाये, यहातक कि खुली हवामे व्यायाम भी न किया जाय। समाचारपत्र तो अत्यन्त दिलचस्प होते है। तुम्हे उनमे लिखी बातोका कतई विश्वास नही करना चाहिए, विशषकर महात्माओसे सम्बन्धित घटनाओका। उनकी फुसियोको भी बढा चढाकर कारबकल फोडेके रूपमे चित्रित किया जाता है और एक साधारण सिरदर्द भी आसन्न मत्युका सूचक बन जाता है।[1] -

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हे शान्तिनिकेतन और उसम रहनेवाले लोग इतने पसन्द आये। मुझे यह जानकर भी खुशी हुई कि तुम बॅगला भाषा भी सीख रही हो। तुम्हे इन्दिरासे कहना चाहिए कि वह मुझे पत्र लिखे। उससे अल्मोडामे उसकी माका पता मालूम करो और उसकी माको लिखो कि तुम इन्दिराको फ्रासीसी भाषा सिखा रही हो। तुम कितनी लडकियोकी शुश्रूषा कर रही हो? वे किस रोगसे पीडित है? तुम्हारी समय तालिका क्या है? क्या तुम अपना खाना स्वय बनाती हो अथवा डबलरोटी, कच्ची सब्जियो और दूधपर गुजारा करती हो? और यदि तुम कच्ची सब्जिया ले रही हो तो वे कौन-कौनसी है?

स्नेह।

बापू

[अग्रेजीसे]

स्पीगल कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय।

१ पत्रके यहाँ फटे होनेसे इसके बादका एक वाक्य पढा नही जाता।

१०५ पत्र मदालसा बजाजको

१६ जनवरी, १९३५

चि० मदालसा,

तेरा पत्र मिला। वजन नही बढता, यह आश्चय है। परन्तु कोई हज नही। और सब बाते ठीक है इसलिए वजन कम बना रहे तो हज नही। तून गाय दुहना शुरू किया है, यह तो बहुत अच्छा काम है। दुहनेके साथ ही पी जाती है न?

बतन खूब साफ रहते है न? थन पहले लाल पानीसे[1] और फिर साफ पानीसे धो लेती है क्या? अपना हाथ बिलकुल साफ रखती है क्या?

गायके शरीरपर साफ बोरेके टुकडेसे खरेरा करती है? उसे अपने हाथसे खिलाती है? तेरा यह आरम्भ बहुत सुदर है। मुझे फिर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, प० ३१६

१०६ पत्र हरिभाऊ फाटकको

दिल्ली
[१७ जनवरी, १९३५][2]

प्रिय हरिभाऊ,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम जिस पत्रका जिक्र कर रहे हो उसकी मुझे याद नही है। मैं बहुत कायव्यस्तताके बीच पत्र व्यवहार कर रहा हूँ और, सम्भव है, इस कारण तुम्हारा वह पत्र ध्यानसे उतर गया है और मेरे सामने इकट्ठे पत्रोके ढेरमे कही दबा पडा है।

मैंने यह नही कहा है कि प्रचार काय होना ही नही चाहिए। प्रचार तो होना चाहिए। मेरा तो यह कहना है कि प्रचारपर पैसा नही खच होना चाहिए, और यदि पैसा खच होता ही है इस कायके लिए अलगसे धन इकट्ठा किया जाना चाहिए। इस प्रकारके प्रचार कायका सगठन करना सवण हिदुओका काम है। इसलिए

१ कीटाणुनाशक पोटाशियम परमैगनेट मिला पानी।

२ साधन सूत्रमें '१७ १ १९३४' है जो स्पष्ट ही भूल है। जनवरी १९३४ में गाधीजी दक्षिण भारतका दौरा कर रहे थे।

अगर धन जरूरी ही हो तो इसी कायपर व्यय करनेके हेतु एक अलगसे कोष इकट्ठा किया जाना चाहिए। मेरा अपना विचार हे कि पैसेकी मददसे किया जानेवाला प्रचार प्रभावकारी नही होता। हम हरिजनोके प्रति अपने कत्तव्यको पूरा करनेकी गरजसे स्कूल और छात्रावास चलाते है। पुराने ढर्रेके अतगत खोले गये स्कूलोके मुकाबले हमारे स्कूल खोलनेका ध्येय दूसरा है। हमारा खोला हुआ प्रत्येक स्कूल अस्पृश्यताके ताबूतमे एक और कील ठोकनेके समान है। मैने अस्पश्यता निवारणके सिलसिलेमे सारे भारतका भ्रमण किया है, अत मै आशा करता हू कि तुम इसके परिणामोका निणय मेरे ऊपर छोड दोगे। यही कारण है कि मैने कहा हे कि स्कूल और छात्रावास खोलना अस्पश्यताके विरुद्ध अभियानके प्रचारका सबसे अच्छा तरीका है। हमारे पास काफी धन है। लेकिन स्कूल-मास्टर कहा से आयेगे ? सवण स्कूल मास्टर सडक चलते तो मिलेगे नही। अब जरा इस प्रक्रियाको उल्टा करके देखो। हम जितने स्कूल और छात्रावास खोल पाते है, उनकी सख्याके अनुसार हम अपनी सफलताको माप सकते है। लेकिन यदि तुम इकट्ठा किये गये कोषमे से ९० प्रतिशत प्रचार कायपर खच करोगे और १० प्रतिशत स्कूलोके खोलने पर, तो तुम सवण हिदुओके हृदय-परिवतनकी दिशामे प्राप्त अपनी सफलताको किस प्रकार माप सकोगे ? प्रतिदिन मुझे हरिजनोके पत्र मिलते है कि हम स्कूल, छात्रावास आदि खोलनेके बजाय अय चीजोमे पैसा खच करते है। मुझे कही से इस शिकायतका पत्र नही मिला है कि हम प्रचार-काय पर पर्याप्त धन नही खच कर रहे है। तुम्हारा पत्र पहला है जो मुझे मिला है। महाराष्ट्रमे इकट्ठा किया धन यदि सारा तुम्हारे प्रचार काय पर खच किया जाये तो तुम प्रचारके लिए क्या करोगे सो मै नही जानता। मुझे कोई कायक्रम भेजो तो मै उसको उसके गुणावगुणके आधारपर जाचूगा। मेरे मनमे कोई पूवग्रह नही है। किसी भी तरह हो, मेरी एकमात्र चिता यह है कि किसी प्रकार अस्पश्यता समाप्त हो। पता नही मै अपनी बात बिलकुल स्पष्ट कर सका हू कि नही। यदि नही, तो तुम अपने विचारोको विस्तारसे लिखना।

महाराष्ट्र प्रातीय बोडके सदस्योके बारेमे तुमने जो शिकायत की है, वह निश्चय ही तुम्हारी विशेषता है। उसका प्रचार-कायसे कोई सम्बन्ध नही है। तुम्हे तो देवधरको कमसे कम समय देनेको राजी करना है या उससे कहना है कि जो व्यक्ति समय दे सकता है उसके पक्षमे वह हट जाये। अथवा चाहो तो उसे शोभाके लिए अध्यक्ष बनाये रहो, लेकिन एक ऐसा उपाध्यक्ष रखो जो कायवाहीका सचालन करे और महीने महीनेका, बल्कि दिन-प्रति दिनका काय सचालित करे। यदि तुम किसी ऐसे उपाध्यक्षका नाम सुझाओ तो मै अवसर मिलते ही सबसे पहले ठक्कर बापासे उसके बारेमे ही चर्चा करूँगा।

अब मिलके चावल और हाथ कुटे चावलकी बात ले। जब तुम कहते हो कि मिलमे कुटा और पालिश किया चावल हाथ कुटे चावलसे महँगा नही है, तो मै जानता हूँ कि तुम्हारे तकमे एक दोष है। हाथ कुटा चावल भी उतना ही पालिश किया होता है जितना मिलका कुटा और पालिश किया चावल। इसे

तुम खुद आजमा सकते हो। अगर तुम हाथ कुटा और बिना पालिश किया चावल लो तो वह कही भी और कभी भी मिलके पालिश किये चावलके मुकाबले सस्ता पडेगा। हाथ कुटे और मिलके कुटे बगैर पालिश किये चावलकी तुलना करके यह देखा जा सकता है। लेकिन तुम मिलोसे बिना पालिश किया चावल ज्यादा मात्रामे कभी नही पा सकते। स्वास्थ्यकी दष्टिसे देखे तो मेरे पास देश-विदेशके डाक्टरोका प्रमाण है कि हाथ कुटे और बिना पालिश किये चावलके मुकाबले, मिलके कुटे बिना पालिश किये चावलमे विटामिन नही होते। बाहरी छिलका उतारना अत्यत सरल तरीका है। यह तो चावलको पालिश करनेकी प्रक्रिया है जिसके कारण श्रमका मूल्य बढ जाता है जिसे मै अपनी गणनामे नही लेता, क्योकि मै बाहरी छिलका उतारनेसे आगे नही बढना चाहता। तुम खुद जाच कर लो, और उसके बाद मुझे मूल्य बताओ। अगर तुमने गलती की है तो तुम कोई अकेले आदमी नही हो जिसने यह गलती की है। यह स्वाभाविक ही है, क्योकि हमने इन प्रक्रियाओकी कभी जाच पडताल नही की है और न हमने पालिश किये और बगैर पालिश किये चावलमे फर्क करनेकी ही कोशिश की है। बिना पालिश किया चावल अत्यन्त खूबसूरत दाना होता है। यह या तो पीला लाल या मटमला होता है, पालिश किये चावल जसा सफेद कभी नही होता। लाल रगका चावल सर्वोत्तम और स्वादमे मीठा होता है और सबसे सस्ता भी होता है। मने धानका एक दाना खोलकर आसपासके लोगोको दिखाया कि बिना पालिश किया पूरा दाना किस प्रकारका होता है। मैंने स्वय भी उसे इससे पहले नही देखा था। लेकिन आज पालिश किये हुए चावलोके ढेरमे मैंने धानका एक पूरा दाना देखा। मैंने फौरन उस धानके दानेके छिलकेको उँगलीके नाखनोसे हटा दिया। इस तरह एक अत्यन्त सुन्दर दाना निकल आया। मै चुनौती देता हूँ कि कोई सिद्ध करे कि बिना पालिश किया चावल मिलके पालिश किये चावलके मुकाबले महँगा है। अपने सतोषके लिए स्वय परीक्षा कर लो और फिर मुझे बताओ कि क्या अब भी यह दावा करते हो कि पालिश किया चावल बिना पालिश किये हाथ-कुटे चावलकी अपेक्षा सस्ता है।

तुम्हारा,
बापू

श्री हरिभाऊ फाटक
६२, सदाशिव पेठ
पूना सिटी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३७४) से।

१०७ पत्र अमृत कौरको

१७ जनवरी, १९३५

प्रिय बहन,

यदि आज मुझे आपको पत्र लिखना ही है तो बोलकर लिखाना होगा। आपको जरूरतसे ज्यादा काम नही करना चाहिए। आपको अपने शरीरको पूरा आराम देना चाहिए और जहातक हो सके शरीर स्वस्थ बनाना चाहिए। रहन-सहनके प्राकृतिक ढगमे कट्टर विश्वास रखनेवाले व्यक्तिकी हैसियतसे मेरा खयाल है कि प्राकृतिक नियमोको अपनाकर हम अपने जजर शरीरोको फिरसे स्वस्थ बना सकते ह। मैने अकसर ऐसे लोगोको स्वस्थ होते देखा हे जिनके मामलेमे डाक्टरी सहायता विफल रही है। यह किसी डाक्टर भाईपर आक्षेप नही है।

मुझे उम्मीद है कि आपको अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके सविधानकी प्रतिया मिल गई है और आपने अपना फाम कुमारप्पाको भेज दिया है।

मै चाहूँगा कि रायजादा अपने तर्कोसे मुझे कायल करे कि शारदा अधिनियमको भग करनेके अपराधमे बेचारे हरिजनोपर मुकदमा चलाना हमारे लिए सवथा उचित है। इस बीच, मुझे पूरा यकीन हे कि हमे ये मुकदमे नही चलाने चाहिए। पहले हमे शिक्षाप्रद प्रचार करके उ हे शारदा अविनियमके बारेमे बताना चाहिए, और अगर वे तब भी न माने तो उनपर मुकदमा चलाना चाहिए।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५१९) से, सौज-य अमृत कौर। जी० एन० ६३२८ से भी।

१०८ पत्र एस्थर मेननको

१७ जनवरी, १९३५

प्यारी बिटिया,

मुझे तुम्हारा पत्र और बच्चोके पत्र मिले। तगाई[1] एक समझदार लडकी है, और इसीलिए उसने सामने आनेवाले दु खोको तटस्थ भावसे झेलना सीख लिया है।[2] जब हम लोग जान बूझकर की गई अपनी गलतियोके कारण दु खोका शिकार बनते है, तब उदासीनताकी यह भावना हानिकारक है। लेकिन जब दु ख उन कारणोवश आते है जिनके बारेमे हमे कुछ भी मालूम नही और न हमें मालूम ही हो सकता है, तब तटस्थताका यह भाव रखना ही उचित है। दूसरे शब्दोमे, मनुष्यको निर तर प्रयत्न करते रहना चाहिए और ईश्वरकी इच्छाके आगे पूण समपणका भाव रखना चाहिए।

तुमने पोर्तो नोवोकी अपनी यात्राका और मारिया किस प्रकार काममे डूब गई है, इसका जो विवरण लिख भेजा है वह बहुत अच्छा है।

मै अपने पावकी वजहसे चलनेसे लाचार हूँ, क्योकि जैसे ही कोशिश करता हूँ बिवाई फट जाती है।

सी० एफ० ए ड्रूचूजके पास बिलकुल समय नही था, इसी कारण वे तुम्हे पत्र नही लिख सके। उन्होने जो स्टीमर पकडा, वह समझ लो कि बस छूटने ही वाला था।

अखिल भारतीय चरखा सघ और अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ, ये दोनो ही बिलकुल गैर-राजनीतिक सस्थाएँ है।

तुम्हे कभी वर्धा आना चाहिए। दिल्ली तो तुम्हारे लिए बहुत दूर है। अस्पतालमे काम करनेके लिए मेननको कितना वेतन मिलता है? हम हदसे हद २८ तारीखको यहा से रवाना हो जायेगे। यहा हम बहुत कडी ठडके दौरसे गुजर रहे है।

स्नेह।

बापू

श्रीमती एस्थर मेनन
द विज़न'
तजौर (द० भारत)

अग्रेजीकी एक फोटो नकलसे, सौज य राष्ट्रीय अभिलेखागार। **माई डियर चाइल्ड**, प० ११० से भी।

१ एस्थर मेननकी पुत्री।
२ देखिए अगला शीषक।

१०९ पत्र तगई मेननको

१७ जनवरी, १९३५

प्रिय तागाई,

तुम एक बहुत बहादुर लडकी हो जो समय-समयपर आनेवाली अपनी बीमारीको हसकर झेल रही हो। तुम्हे अपने पिताजीसे यह प्रश्न पूछना चाहिए "जब आप स्वय डाक्टर है तब मुझे समय-समय पर ये फोडे फुसी क्यो हो जाते ह? आपको मेरी सहायता करनेका कोई तरीका ढूढ निकालना चाहिए?" उम्मीद है कि तुम अब पहलेसे बहुत बेहतर हो।

प्यार और चुम्बन।

बापू

[अग्रेजीसे]
माई डियर चाइल्ड पृ० १२१।

११० पत्र नान मेननको

१७ जनवरी, १९३५

प्रिय नान,

तुमने सुदर और साफ लिखावटमें मुझे बहुत अच्छा पत्र लिखा है। अपने पत्रमें मुझे नये वषकी शुभकामनाएँ भेजकर ठीक ही किया, क्योकि तुमने अपना पत्र २७ दिसम्बरको लिखा था। लेकिन अब मेरा तुम्हे नये वषकी शुभकामनाएँ भेजना व्यथ है, क्योकि नया वष आरम्भ हो चुका है।

जब तुमने नये चरखेपर कातना शुरू किया, तब कसा महसूस किया, सो लिखना। क्या तुम्हे तकली पर कातना आता है?

प्यार और चुम्बन।

बापू

[अग्रेजीसे]
माई डियर चाइल्ड, पृष्ठ १२१।

१११ पत्र म्यूरियल लेस्टरको

१८ जनवरी, १९३५

प्रिय म्यूरियल,

तुम इतनी तेजीके साथ एक जगहसे दूसरी जगह आती जाती रही हो कि मुझे पता ही नही था कि म तुम्हे पत्र किस पतेपर लिखू। इसीलिए मैने तुम्हे कोई पत्र नही लिखा।

मेरा खयाल है कि तुमने मुझे जितने पत्र लिखे थे वे सारेके सारे मुझे मिल गये है। पत्र चारसे अधिक नही थे और तीनसे कम भी नही। तीन पत्रोकी तो मुझे अच्छी तरहसे याद हे।

मैने तुम्हारा चेक हरिजन कोषके लिए ठक्कर बापाको दे दिया है।

मै यह पत्र दिल्लीमे बोलकर लिखवा रहा हूँ जहा कि मै हरिजन निवासमे च द दिन बितानेके लिए आया हूँ। इसके लिए श्री घनश्यामदास बिडलाने ३०,००० रुपयेकी कीमतकी २० एकड जमीन दानमे दी है। मै उसी टुकडेपर रह रहा हूँ। मै अधिकसे-अधिक २८ तारीख तक वर्धा लौटनेकी आशा रखता हूँ।

तुम देख ही रही हो कि मै अभी तक जेल नही गया हूँ और यकीन मानो कि मै जेल जानेमे जल्दी नही करूँगा। सीमा प्रा तमे जानेकी मेरी अर्जी सरकारने नामजूर कर दी है। बेशक यह अ तिम निणय नही है।

यदि तुम्हे मेरी ओरसे पत्र न मिले तो भी तुम्हे मुझे पत्र लिखते रहना होगा।

हम सबकी ओरसे स्नेह।

बापू

कुमारी म्यूरियल लेस्टर, ल दन

अग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ६५६२) से।

११२ पत्र दुनीचन्दको

दिल्ली

१८ जनवरी १९३५

प्रिय लाला दुनीच द,

आपका पत्र और उसके साथ सलग्न कागज मिला। मै उसे पढ गया हूँ। मेरे विचारसे इसे प्रकाशित करना फिजूल था। डाक्टर सत्यपालको आपके बचावकी जरूरत नही, और यदि वे ऐसी अपेक्षा रखते है तो मेरा खयाल हे कि आपके पत्रने उनका मामला बिगाड दिया है। सावजनिक कायकर्ताओकी चमडी तो गैडे जैसी

होनी चाहिए। उन्हें संवेदनशील और पतली चमड़ीका नहीं होना चाहिए। लेकिन मुझे आपसे यह स्वीकार करना होगा कि हालाँकि मैंने इस सम्बन्धमें दो अथवा तीनसे ज्यादा व्यक्तियोंसे बात नहीं की है और वह भी तब जब ऐसा करना उचित जान पड़ा, लेकिन मैंने पंजाबकी हारके लिए डाक्टर सत्यपालको ही दोषी ठहराया। इस बातसे कोई इनकार नहीं कर सकता कि उनमें अपार शक्ति है, साहस है और उन्होंने अनेक कष्ट सहे हैं। लेकिन उनमें लोगोंको अपने विरुद्ध कर लेनेकी भी अजीब खूबी है। मैं इस बारेमें उनसे बातचीत करना चाहता था, लेकिन मेरे ऐसा करनेसे पहले ही वे जेल चले गये। मेरा विचार है कि यदि डा० सत्यपालने समझदारी और विवेकसे काम लिया होता, तो पंजाबकी एक भी सीटसे हाथ नहीं धोना पड़ता।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

लाला दुनीचन्द, बी० ए०
कृपा निवास, अम्बाला सिटी

अंग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ५५९२) से।

११३ पुर्जा सैयद रजा अलीको[1]

[१८ जनवरी, १९३५]

आजके समारोहके लिए आपने मुझे निमन्त्रण पत्र भेजा, तदर्थ मेरा धन्यवाद लीजिए। उसमें उपस्थित हो सकनेमें मेरी असमर्थताके लिए आप और श्रीमती नकवी कृपया मुझे क्षमा करें और वाइसराय तथा लेडी विलिंगडनसे भी मेरी ओरसे क्षमा याचना करें।

[गुजरातीसे]
गुजरात समाचार, २०-१-१९३५

१ मूल अंग्रेजी पत्र अनुपलब्ध है।

११४ पत्र जगदीश शास्त्रीको

१९ जनवरी, १९३५

भाई जगदीश शास्त्री

गोसेवा निबधके प्रकरणोकी सूची इसके साथ है। उसमे वृद्धि कर सकते हो। रचनामे परिवतन भी कर सकते हो।

१ गोरक्षाकी उत्पत्ति

२ वदिक कालमे स्थिति

३ स्मृति कालमे स्थिति

४ पौराणिक कालमे स्थिति

५ अ‍य धर्मोकी मा‍यता

६ मुसलमानोसे झगडेकी उत्पत्ति

७ गोरक्षा हि‍दू-धमका आवश्यक अग है? यदि है, तो इसका अथ? क्या यह प्रथा प्राचीन कालसे है? आयसमाजी और सनातनी म‍तव्यमे भेद और उसकी समालोचना।

८ आधुनिक स्थिति — गोशालाओकी गणना, जैन पिजरापोल और मारवाडी गोशालाका भेद, उनके माफत गोरक्षा कहातक सम्भव है।

एक प्रतिसे प्यारेलाल-कागजात, सौज‍य प्यारेलाल।

११५ भाषण साँसियोकी बस्ती, दिल्लीमें

१९ जनवरी १९३५

ठक्कर बापाको मैने यह वचन दे दिया था कि इस हरिजन-बस्तीमे अवश्य किसी दिन मै आध घटेके लिए आऊँगा। आज मुझे यहाँ आनेका मौका मिला है। यह दु खकी बात है कि एक तरफ तो हि‍दू समाज अपने पापसे इन सासी भाइयोको अस्पृश्य मानता है, और दूसरी तरफ सरकारने इ‍हे जरायमपेशा करार दे दिया है। हम हि‍दुओके लिए यह शमकी बात है कि हमारी ही लापरवाहीके कारण इ‍हे जब काम-धधा न मिला तो पेट तो भरना ही था, इसलिए इनमे से कुछ लोगोने अपराध करना ही अपना धधा बना लिया। पर सभी तो अपराधी है नही और न हो सकते है। लेकिन यह जाति ही जरायमपेशा कही जाने लगी। मै साँसी भाइयोसे यह कहूँगा कि उनमे हमारी बेदरकारीके कारण जो बुराइयाँ आ गई है उ‍हे वे छोड

दे। शराब और मुर्दार मास, अगर कोई खाते हो तो, और जुएका परित्याग कर दे। चोरी इत्यादि न करे, ताकि पुलिसमे उनकी हाजिरी न होनेके लिए सरकारसे सिफारिश की जा सके। ईश्वर आपको ऐसी सदबुद्धि दे कि मैंने जो कहा है उस पर आप चल सके।

हरिजन सेवक, २५ १-१९३५

११६ बातचीत एक दानीसे

हरिजन निवास, दिल्ली
१९ जनवरी, १९३५[1]

उस दिन एक वद्ध पुरुष जिसके तनपर मोटी खादी थी, गाधीजी के दशन करने आया था। गाधीजी से पूछकर वह ग्रामवासी रावतीमे पहुँचा दिया गया। उस स्वच्छ खद्दरधारी वद्ध पुरुषने गाधीजी के आगे सो-सौके दस नोट रख दिये और कहा "जो सबसे गरीब और सुपात्र हो उन्हींके अथ यह तुच्छ भेंट है। ऐसे दरिद्रनारायणोका पता आपसे अधिक और किसे हो सकता है?"

[गाधीजी] यह आपने बडा अच्छा काम किया है। पर यह तो बताओ, यह रकम कितने वर्षोंमे बचा-बचाकर जमा की थी?

[वृद्ध] बहुत वर्षोंमे। लेकिन मने सौ रुपये तो पिछले साल भूकम्प-पीडितोके लिए भेज दिये थे और सौ रुपये आसामके बाढ़-पीडितोके लिए, और चार साल हुए पॉच सौ रुपये मने इलाहाबादमें किसानोकी सहायताके लिए दिये थे।

"अच्छा! तब यह तो बतलाओ भाई, आपकी तनख्वाह क्या थी और पेशन क्या मिल रही है? आप क्या काम करते थे?"

मै एक स्कूलमे अध्यापक था। जब बहुत वर्षोंके बाद मने अवकाश ग्रहण किया तब मुझे ५२ रुपये मासिक वेतन मिलता था। मुझे पेंशन कुछ नहीं मिलती, पर २७०० रुपये मुझे ग्रेच्युटीके मिले थे।

अवकाश ग्रहण किये कितने वष हुए?

पॉच वष।

गुजर कितने रुपयेमे हो जाती है?

गुजर? शायद ही कभी ज्यादा खच होता हो।

फिर भी कुछ-न कुछ खच होता ही होगा। बताओ कि कितनेमे काम चल जाता है?

१ बातचीतका यह अंश महादेव देसाई लिखित साप्ताहिक चिट्ठी' से लिया गया है। उसके अनुसार यह बातचीत उस दिन हुई थी जिस दिन गाधीजीने जामिया मिलियामें भाषण दिया था, देखिए अगला शीर्षक।

थोडी सी दाल रोटीमे खच ही कितना होता है। १० रु० में म अपनी गुजर कर सकता हूँ। अब अकेला राम ही तो हूँ — न किसीकी चिन्ता है, न फिकर। पहले अपने दो भतीजोकी परवरिश करनी पडती थी। उन्हे पालकर पढा-लिखा दिया है और अब म निश्चिन्त हो गया हूँ। एक सस्कृत पाठशाला खोल रखी है और अधिकतर उसीमे अब अपना समय लगाता हूँ। वह नि शुल्क पाठशाला है।

अच्छा, इस तरह आपने अपनी छोटी सी तनख्वाहमे से कुछ रुपया बचाया है और आज उसे गरीबोके सेवा कायमे लगा रहे ह। यह तो बडी भारी बात हे। क्या ही अच्छा हो कि हरेक मनुष्य आपसे यह परमाथकी कला सीख ले।

महात्माजी, मने अपने ऊपर बहुत ही कम खच किया है, और इसीसे म कभी कभी गरीबोकी थोडी बहुत सेवा सहायता कर सका हूँ।

उनके रूईदार वस्त्रोको देखकर, जिनके साथ कम्बल या शाल की जरूरत नहीं थी, उनकी प्रशसा करते हुए गाधीजी ने कहा

और यह सुन्दर खादी कहा मिली?

घरकी ही बनी खादी है यह।

काश म भी आपकी तरह ऐसी ही मोटी खादी ओढता।

"मेरे पास अब भी कुछ रुपये जमा ह, महात्माजी," दानके हर्षातिरेकसे प्रफुल्लित उस वद्ध पुरुषने कहा। "म किसी दिन वह सब लाकर आपके चरणोमें रख दूगा। म नही जानता कि यह रुपया दू तो किसे दू। म तो बस एक आपको जानता हूँ और आप अनाथ असहाय गरीबोको पहचानते ह। म हृदयसे आपका आभारी हूँ।"

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १-२ १९३५

११७ भाषण जामिया मिलिया, दिल्लीमें[1]

१९ जनवरी, १९३५[2]

मै नही जानता कि आप लोग जब बेगम साहिबाकी जबानी तुर्कीकी कहानी सुन रहे थे, तब मेरी ही तरह आप भी तुर्की और हिन्दुस्तानकी तवारीखोकी तुलना कर रहे थे या नही। इन दोनो मुल्कोकी कहानियोमे मुझे कई बाते बिलकुल एक सरीखी दिखलाई दी। बिना पीर सहे कुछ हासिल नही होता, और तुर्कीकी यह कहानी सुनकर मुझे मालम होता है कि अभी न जाने क्या क्या तब्दीलिया होनेको है। इस अनित्य जगतमे सभी कुछ नाशवान या परिवतनशील है। कौन कह सकता है कि जिस दुनियाके नक्शेपर तुर्की और हिन्दुस्तान तुच्छ धब्बोकी तरह दिखाई

१ महादेव देसाईकी "साप्ताहिक चिट्ठी से उद्धृत। गाधीजीकी अध्यक्षतामें हालिदा अदीब हानुमने १८ और १९ जनवरी, १९३५ को जामिया मिलियामें व्याख्यान दिये थे।

२ गाधीजीकी दिनवारीसे।

देते है, उसका अन्त क्या और किस तरह होगा। मगर हमारे लिए यह जान लेना सबसे अच्छा होगा कि हिन्दुस्तानकी और प्रत्येक व्यक्तिकी चाहे जो गति हो, वह उसकी अपनी ही कर्मगति है। हमे यह मानना ही होगा कि सच्चा इतिहास सम्राटो और राजवशोका इतिहास नही है, बल्कि उसके निर्माता तो आम तौरपर साधारण पुरुष और स्त्रिया है। चन्द ऐसे लोग जिनकी दुनियाने उनके आखिरी वक्तमे खबर भी नही ली ओर विपदा झेलते झेलते ही जो चल दिये वे ही सच्चे बहादुर थे, न कि बडे बडे शहशाह — उन्होने ससारमे चाहे कितने ही महान साम्राज्योको स्थापित क्यो न किया हो, और दुनियामे तबाही और बरबादी लानेमे उनका कितना ही हाथ क्यो न रहा हो।[1] दुनियामे व्यक्तियोका इतिहास तो अभी बन ही रहा है। काल-भगवानके अनन्त चक्रमे आपके ये हजार या लाख बरस किस लेखेमे आते है? तुर्कीकी कहानी सुनकर मै तो इस आशापर पहुँचा हूँ कि अगर सत्यको और केवल सत्यको ही अपने जीवनका लक्ष्य बनाकर हमने काम किया तो हम सब लोगोका भविष्य उज्ज्वल ही होगा।

हिन्दुस्तान और तुर्की एक अटूट डोरीसे इसलिए नही बँधे हुए है कि इन दोनो मुल्कोने एक समान विपदाएँ झेली है, बल्कि इसलिए कि हमारे सगे बधु-बाधव हिन्दुस्तानी मुसलमानोकी ही तरह तुर्कीमे भी मुसलमानोकी आबादी लाखोकी है। ईश्वर करे कि हमारे देशमे बेगम साहिबाके आनेका यह परिणाम हो कि यहा के हिन्दू ओर मुसलमान सदाके लिए मुहब्बतकी अटूट डोरीसे बँध जाये।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १-२ १९३५

११८ पत्र आनन्द स्वरूप गुप्तको

दिल्ली

२० जनवरी, १९३५

भाई आनद स्वरुप,[2]

आप आईये। सोमवार छोडकर। आपको तकलीकी नई चाल बताई जायेगी। सभव है तो चद मिनिट दूगा। जो तकली सब लाते है उनको आध घटेमे नई चाल बताई जाती है बादमे महाविरा चाहीये। ता० २७ तक आइये।

मो० क० गाधी

श्री आनन्द स्वरूप
वैश्य स्कूल
मेरठ, यू० पी०

पत्रकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ९७४४) से, सौजन्य आनन्द स्वरूप गुप्त।

१ इसी बातको **हिन्दुस्तान टाइम्स**, २०१ १९३५ में कुछ दूसरे शब्दोंमें कहा गया था।
२ पुराण विभाग रामनगर, बाराणसीके सहायक निदेशक।

११९ बातचीत एडिथ होवे-मार्टिनके साथ

[२१ जनवरी, १९३५ से पूव][1]

एडिथ होवे-मार्टिनने ब्रिटेनकी गन्दी बस्तियोके अपने अनुभवके बारेमें बताया, और "बेचारी औरत" की ओरसे, जिसको कि शक्तिवान पुरुषके सामने झुकना पडता है, जोरदार शब्दोमें परवी की।

[गाधीजी] कोई औरत 'बेचारी' नही है। बेचारी औरत पुरुषसे भी ज्यादा शक्तिवान है, और यदि आप भारतके गावोमे आये तो मै यह चीज आपको प्रत्यक्ष दिखानेके लिए बिलकुल तैयार हूँ। वहा कोई भी औरत आपको बता देगी कि यदि वह न चाहे तो ऐसा कोई मद पैदा नही हुआ है जो उसकी इच्छाके विरुद्ध उसे मजबूर कर सके। यह बात मै अपनी पत्नीके बारेमे अपने स्वानुभवसे कह सकता हूँ, और मेरा कोई अकेला दष्टा त नही है। यदि औरतमे झुकनेके बजाय मर जानेकी इच्छा शक्ति है, तो कोई राक्षस औरतको झुकने पर मजबूर नही कर सकता। नही यह पारस्परिक मर्जीकी चीज है। पुरुष और नारी, इन दोनोमे ही पशु और देवत्व का मिश्रण है, और यदि हम पशुको परास्त कर सके तो इसमे कल्याण ही होगा।

लेकिन यदि कोई ज्यादा बच्चोकी कामना न करनेके कारण किसी अ य स्त्रीके पास जाये तो औरत क्या कर सकती है?

तो अब आप बात बदल रही है। यदि आप अपनी भूमिका ही भ्रा त धारणा पर आधारित करेगी तो निश्चित है कि आप गलत निष्कषपर पहुँचेगी। कोई बात मानकर मत चलिए और स्त्रीको स्त्रीत्वसे और पुरुषको पुरुषत्वसे वचित मत कीजिए। मुझे आप अपने सन्देशके आधारको समझने दीजिए। मैंने जब कहा था कि आपका सतति निरोध प्रचार ही मेरे लिए आपका पर्याप्त परिचय था, तब इस परिहासके पीछे कुछ गम्भीरता थी, कारण, मै जानता हूँ कि कुछ ऐसे स्त्री-पुरुष है जो मानते हैं कि सतति-निरोधमे ही हमारी मुक्ति निहित है। इसलिए मै आपके जरिये ही इस धारणाका आधार समझना चाहूँगा।

मै सतति-निरोधमें विश्वकी मुक्ति नहीं मानती, लेकिन मेरा कहना यह है कि बिना किसी प्रकारके सतति निरोधके मुक्तिकी गुजाइश नहीं है। आप यह चीज एक ढगसे करना चाहेगे, म दूसरे ढगसे करना चाहूँगी। म आपके तरीकेका भी समथन करती हूँ, लेकिन सभी मामलोमें नहीं। आप एक सुन्दर कायको आपत्तिजनक चीज मानते

१ यह शीर्षक महादेव देसाईकी २१ १ १९३५ की 'साप्ताहिक चिट्ठी' से लिया गया है। भेंटकर्त्री इग्लैड वासिनी थी और वे सतति निग्रहकी समथक थी।

ह। जब दो प्राणी एक नये जीवनकी सष्टि करने जा रहे हों, उस समय वे दिव्यताके अधिकसे-अधिक निकट होते ह। इस कायमें अपने ढगका एक अनोखा सौन्दर्य है।

इस बातमे भी आप भ्रममे है। मै मानता हूँ कि नये जीवनका सजन दिव्यताकी निकटतम वस्तु है। मै केवल यह चाहता हूँ कि इस कायको उसी दिव्य भावनासे देखा और किया जाये। कहनेका तात्पय यह कि पुरुष और स्त्री केवल नव-जीवनकी सष्टिकी इच्छासे ससग करे, अय किसी इच्छासे नही। यदि वे एक दूसरेका केवल वासनावश आलिगन करनेके लिए एक-दूसरेके निकट आते है तो वे शैतानके ज्यादासे ज्यादा करीब होते है। दुर्भाग्यवश पुरुष भूल जाता है कि वह दिव्यताके सबसे निकट है, वह अपनी सहज पाशविक प्रकृतिके पीछे ही भटकता है और पशुसे भी बदतर बन जाता है।

लेकिन आप पशुपर लाछन क्यो लगाते ह?

मै नही लगाता। पशु अपने स्वभावगत नियमका पालन करता है। अपनी गरिमासे मडित सिह एक शानदार प्राणी है और उसे पूरा अधिकार है कि वह मुझे खा जाये। लेकिन मुझे इस बातका अधिकार नही है कि मै भी नाखूनदार पजे विकसित कर लू और आपपर झपट पडूँ। वैसा करनेसे मै अपनेको पतित करूँगा और पशुसे भी बदतर बन जाऊँगा।

मुझे दु ख है। मने अपनी बात बहुत खराब ढगसे रखी है। मै स्वीकार करती हूँ कि अधिकाश मामलोमें [मेरा तरीका] लोगोकी मुक्तिका साधन नहीं सिद्ध होगा, लेकिन यह एक ऐसा तत्व है जो जीवनको उच्चतर बनानेमें सहायक होगा। हालाँकि मुझे भय है कि म अपनी बात काफी स्पष्ट नहीं कर सकी हूँ, लेकिन मेरा तात्पय आप समझ गये होगे।

ओह, नही। मै आपसे कोई नाजायज फायदा नही लेना चाहता। लेकिन मै चाहता हूँ कि आप मेरा दष्टिकोण समझ ले। किसी प्रकारकी गलत धारणा न बना बैठिए। पुरुषको नीचे ले जानेवाले और ऊपर ले जानेवाले, इन दो रास्तोमेसे एक रास्ता चुनना होगा। लेकिन चूकि उसके अन्दर पशु विद्यमान है, इसलिए वह नीचे ले जानेवाला रास्ता ही चुनेगा, खास तौरसे तब जबकि नीचे ले जानेवाला रास्ता उसके सामने एक खूबसूरत आवरणसे ढँककर प्रस्तुत किया जाता है। जब पापको पुण्यके आवरणमे पुरुषके सामने प्रस्तुत किया जाता है तो वह आसानीसे हथियार डाल देता है। और मैरी स्टोप्स[1] तथा अय लोग ठीक यही चीज कर रहे ह। अगर मै अतिभोगवादी धमका प्रचार करने लगू तो लोग डूबतेके सहारेकी तरह इस तिनकेको पकड लेगे। मै जानता हूँ कि यदि आप जैसे लोग नि स्वाथ उत्साहसे अपने सिद्धान्तका बखान करते रहे तो आपको शायद प्रकटत विजय भी प्राप्त हो जायेगी। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि आप जो कुछ कर रही हैं, उससे होनेवाले नुकसानका

१ सतति निरोधकी समर्थक एक अग्रेज महिला, **कट्रासेप्शन इट्स थ्योरी, हिस्ट्री ऐंड प्रेक्टिस** नामक पुस्तककी लेखिका। उसने यौन विज्ञान और विवाहपर भी बहुत सी पुस्तकें लिखी थी।

आपको मरते दमतक ज्ञान नही हो पायेगा। पतनोन्मुखी प्रवृत्तिके लिए किसी समर्थन, किसी तर्ककी आवश्यकता नही होती। यह तो पुरुषमे अन्तर्निहित है, और अगर आप इस प्रकृतिको सयमित और नियन्त्रित नही करती तो इस बातका खतरा है कि यह एक बीमारी और महामारीका रूप ग्रहण कर लेगी।

श्रीमती होवे मार्टिनने, जो अभीतक देवतातुल्य और शैतानतुल्यके बीच फर्क स्वीकार करती प्रतीत होती थी, यह मान्यता प्रकट की कि इन दोनोके बीच कोई फर्क नही है, और लोग जितना समझते है, उसकी अपेक्षा ये दोनो चीजें कहीं ज्यादा एक समान है।

तो आप ऐसा मानती है कि शैतान और देवता-स्वरूप एक ही चीज है? क्या आपको सूर्यमे विश्वास है? और यदि है तो क्या आपको ऐसा नही लगता कि आपको छायामे भी विश्वास करना चाहिए?

आप 'छाया' को शैतान क्यो कहते है?

अगर आप चाहे तो उसे अनीश्वर कह सकती है।

मै ऐसा नहीं समझती कि छायामे अनीश्वर है। प्रत्येक वस्तुमें जीवन है।

एक ऐसी भी चीज है जिसे जीवनका अभाव कहते है। क्या आप जानती है कि हिन्दू लोग अपने प्रियसे प्रिय जनके शरीरको प्राणहीन होनेपर जलाकर राख कर देते है? सभी प्रकारके जीवनमे एक बुनियादी एकता है, लेकिन जीवनमे विविधता भी है। और इस एकताको देखनेके लिए मनुष्यको विविधताको भेदना होगा। लेकिन इसे बुद्धि द्वारा नही भेदा जा सकता, जैसेकि हम इस समय कोशिश कर रहे है। जहाँ सत्य है, वहा असत्यका होना निश्चित है। जहा प्रकाश है, वहा छाया अवश्य होगी। जबतक मनुष्य बुद्धि और विवेक तथा शरीरको पूर्णत अपने अधीन नही कर लेता, तबतक व्यापकतर चेतनाका जागृत होना सम्भव नही है।

श्रीमती होवे मार्टिन चकित प्रतीत हो रही थी और समय तेजीसे खत्म होता जा रहा था। लेकिन गाधीजीने कहा

नही, मै आपको और समय देनेको तैयार हूँ। लेकिन इसके लिए आपको वर्धा आना होगा और मेरे साथ ठहरना होगा। इस विषयमे मै भी उतना ही बडा आग्रही व्यक्ति हूँ जितनी कि आप है, और आप भारत तबतक न छोडे जबतक मै आपको अपने मतसे सहमत न कर लू अथवा आप मुझे अपने मतसे सहमत न कर ले।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १-२-१९३५

१२० पत्र अमृत कौरको

हरिजन-निवास, दिल्ली
२१ जनवरी, १९३५

प्रिय बहन,

मैंने तुम्हारी अर्जी कुमारप्पाको भेज दी है। जहातक नियम ९ और १०[१]को लागू करनेका सवाल है, अपनी हदतक उसकी जिम्मेदार तुम स्वय होगी। मै यह नही चाहता कि तुम अपने जिलेके प्रत्येक गावमे जाओ, लेकिन म यह चाहता हूँ कि तुम गाववालोकी जरूरतोकी सही जानकारी प्राप्त करो और उन जरूरतोको पूरा करनेका प्रयत्न करो। इस कायके लिए खराब सेहत होनेके बावजूद तुम सवथा उपयुक्त हो। और जहातक तुम्हारी खराब सेहतका सवाल है, जब हम मिलेगे तब उसपर बातचीत करेगे।

मै २८ तारीखको दिल्लीसे रवाना हो रहा हूँ जो मौन दिवस है। यदि तुम २६ और २७ तारीखको आसानीसे मेरे पास आ सको तो आना।

शीत-लहरसे लाखो भूखे लोगोको एक करोड रुपयेका नुकसान हुआ है।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२०) से, सौजन्य अमत कौर।

१२१ पत्र राजेन्द्र प्रसादको

२१ जनवरी, १९३५

मुझे जानेमे कोई हज नही दिखाई देता। मेरा खयाल है आपको हर विषय पर बातचीत करनी चाहिए, लेकिन आपको यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि आपके पास कोई आदेशपत्र नही है।[२] आप समिति[३]को केवल बातचीतका साराश और उसके

१ अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके उप नियम १०के अन्तगत निर्मित, देखिए पृ० १०१३।

२ काग्रेस अध्यक्षकी हैसियतसे डॉ० राजेन्द्र प्रसाद अखिल भारतीय मुस्लिम लीगके अध्यक्ष मुहम्मद अली जिन्नासे बातचीत करनेके लिए जा रहे थे ताकि ‘विभिन्न जातियोंमें ऐसा समझौता हो सके जो तथाकथित साम्प्रदायिक फैसलेका स्थान ले सके।’ बातचीत २३ जनवरीको आरम्भ हुई थी और थोड़ेसे अन्तरालके साथ १ माच तक चली। लेकिन इस बातचीतका कोई परिणाम नही निकला।

३ काग्रेस कार्य समिति।

निर्णयसे अवगत करा सकते हैं। यह बात स्पष्ट रूपसे समझ ली जानी चाहिए कि यद्यपि आप लोग प्रतिनिधियोंकी हैसियतसे मिलेंगे, तथापि आप लोगोंमें होनेवाली बातचीतको तबतक अनौपचारिक माना जायेगा जबतक कि वह किसी ठोस सुझावका रूप धारण नहीं कर लेती जिस पर दोनों समितियाँ विचार विमर्श कर सकें। अन्तमें दोनोंकी सहमतिसे बातचीतका जो सार हो उसे लिखित रूप दे दिया जाना चाहिए और बातचीतकी कोई रिपोर्ट अखबारोंको नहीं दी जानी चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

१२२ पत्र शुएब कुरेशीको

२१ जनवरी, १९३५

नवाब साहबको मेरा सलाम कहना और उनसे कहना कि मैं अभीतक अपने इस कथनका दण्ड भोग रहा हूँ कि जब मैं आपको आपके परिवेशमें देखता हूँ तब मुझे महान उमरकी याद हो जाती है[1]

साम्प्रदायिक शान्तिकी बात तो की जाती है, लेकिन मुझे भय है कि उसके लिए अभी उपयुक्त समय नहीं आया है। यह तो केवल दिली एकतासे ही आ सकती है और उसके लिए हमें प्रतीक्षा करनी होगी। पैबन्द लगाई हुई शान्ति कभी टिक नहीं सकती।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

१२३ पत्र खालिकको

२१ जनवरी, १९३५

राजेनबाबू और जिन्नामें होनेवाली आगामी बातचीत[2] में कोई सार नहीं दिखता। हममें परस्पर सच्ची एकता होनी चाहिए, भले ही उसके लिए हमें प्रतीक्षा करनी पड़े। विधान-सभामें बहुत-कुछ तो हर अवसरपर कांग्रेसियोंके सही व्यवहार पर निर्भर करेगा।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

१ यहाँ यह स्पष्ट नहीं होता कि पत्रका क्या कोई अंश छूट गया है।

२ देखिए "पत्र राजेन्द्र प्रसादको" पृ० १०९ १०।

१२४ एक पत्र

वर्धाके पतेपर
२१ जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

श्री रगनायकी अम्मालको लिखे पत्रमें मैंने जो कुछ कहा है उसे दोहरानेकी जरूरत नही है।

आशा है कि तुम पूरी तरह फिर स्वस्थ हो गये होगे।

दिल्लीकी सर्दीकी मुझे चिन्ता नही होती। केवल बिवाई फट जानेके कारण मै रोजमर्राकी सैर नही कर पा रहा हूँ जो मुझे अखरता है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गाधी

मूल अग्रेजीसे। अम्बुजम्माल कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

१२५ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

२१ जनवरी, १९३५

चि० अम्बुजम,[1]

तुम्हारा पत्र मिला।

मै समझता हूँ कि माता-पिताका प्रेम सदैव था। केवल तुम उसे चाहने या प्राप्त करनेको तैयार नही थी। खैर, अब चूंकि तुम उस प्रेमकी आँच महसूस करती हो, तुम्हे चाहिए कि उसे कभी ठडी न पडने दो। सबसे अच्छा तरीका यह है कि उनका प्रतिरोध न करो। यदि आज्ञा-पालन स्वेच्छासे और प्रसन्नतापूवक सही ढगसे किया जाये तो कभी विरोध करना भी कत्तव्य बन सकता है। माता पिता दोनोको चूंकि मै जानता हूँ, मै किसी ऐसे अवसरकी कल्पना नही कर सकता जबकि तुम्हे उनके विरुद्ध जाना पडे। उनका एक ही प्रयोजन है कि वे तुम्हे खुश देखे और तुम्हे खुश होनेमे मदद दे।

मैंने बा को समझानेकी कोशिश की। वह अभी मुझे थोडे दिनोके लिए भी छोडनेकी बात पसन्द नही करती। लेकिन मै उसे फिर फुसलाऊँगा, हालाँकि मुझे उसमे सफल होनेकी आशा नही है। तुम उसे लिख सकती हो।

१ यह हिन्दीमें है।

जब तुम बिलकुल तैयार हो, वसुमती आ सकती है।

आश्रमका नाम सेवाश्रम या सेविका आश्रम हो सकता है। दोनोंका अन्तर तुम जानती हो।

मैं समझता हूँ कि तुम्हें अपने पतिके बारेमें चिंता नहीं करनी चाहिए। उन्हें केवल एक मित्र समझो। पिता और माता जो उचित समझें वह उन्हें करने दो। जब तुम जानती हो कि तुम कोई मदद नहीं कर सकती, तो फिर चिन्ता करनेसे क्या लाभ? यदि तुम उन्हें समझदार बननेमें कुछ मदद कर सकती तो तुम्हारा यह प्रथम कर्त्तव्य होता कि तुम उनकी देखभाल करो और बाकी सब काम एक तरफ कर दो। लेकिन मैं समझ गया हूँ कि यह सम्भव नहीं है। इसलिए मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि उन्हें बिलकुल भूल जाओ और अपनी पूरी शक्ति ऐसे सेवा कार्यमें लगाओ जो तुम कर सकती हो। तुम्हें सेवामें आनन्द पाना सीख लेना चाहिए। विश्वकी निष्काम सेवा व्यक्तिको विशिष्ट सेवासे बरी कर देती है क्योंकि बड़ी सेवामें छोटी सेवा आ जाती है। निस्सन्देह व्यक्तिको सावधानीसे यह देखना है कि विश्वकी सेवाके पीछे कोई स्वार्थ तो नहीं है। वह स्वतः प्रमाणित होनी चाहिए। मेरे ऐसे विचार हैं। लेकिन मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि इस विषयपर माता पितासे खुलकर बातचीत करो और उनके कहे अनुसार चलो।

तुम्हें कब्जकी शिकायत दूर करनी चाहिए। आम तौरपर इसका मतलब यह होता है कि जरूरतसे ज्यादा प्रोटीन लिया जाता है। इसलिए दाल न लो और फिर यदि जरूरी हो तो दूध या दहीकी मात्रा कम कर दो। तुम कौन-सी भाजी ले रही हो। पालक या लूनी बहुत अच्छी है। मुलायम बदगोभीके पत्तोंसे भी काम चल सकता है।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च]

अब तुम अपने पत्र वर्धा भेजना जहाँ आशा है कि मैं २९को पहुँच जाऊँगा।

[पुनश्च]

तुम्हें काका साहबसे मिलना चाहिए। वे तुम्हें आश्रमके सम्बन्धमें काफी मदद दे सकते हैं।

मूल अंग्रेजीसे। अम्बुजम्माल कागजात, सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

१२६ पत्र श्रीमती श्रीनिवास आयगारको

वर्धाके पतेपर
२१ जनवरी, १९३५

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र पाकर और यह जानकर खुशी हुई कि अम्बुजमसे तुम दोनो सन्तुष्ट हो और तुम उसके सेवाके उद्देश्यमे दिलचस्पी ले रही हो। यदि वह सेवा-कार्यमे लग गई तो मुझे पूरा विश्वास है कि उसका विषाद मिट जायेगा और उसे उदात्त करनेवाला एक काम मिल जायेगा।

कृपया अपने दिमागसे यह बात निकाल दो कि अम्बुजम कभी मेरे दिमागपर बोझ बन सकती है। मेरे लिए यह अत्यन्त हर्षका विषय है कि मुझे तुम्हारा विश्वास और उसका स्नेह प्राप्त है। मै ऐसी व्यक्तिगत सेवा और जन सेवामे कोई अन्तर नही मानता।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गाधी

अग्रेजीसे अम्बुजम्माल-कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय।

१२७ पत्र ग० वा० मावलकरको

२१ जनवरी, १९३५

भाई मावलकर,

तुम्हारा पत्र और विद्यापीठके पुस्तक-भण्डारसे सम्बन्धित कागजात मिले। तुम्हारा मन्तव्य मेरे गले नही उतरा। लेकिन मै अपने मतकी कोई कीमत नही मानता।

सरदारको दोनो सघोमे शामिल होनेके लिए अवश्य कहो। और यदि मै भूल नही गया तो कल मै भी बात करूँगा। पैसोका तो तुम्हे जैसा उचित जान पडे वैसा करना। मैने तो तुम्हारे पत्रके बाद अपने सिरसे चिन्ताको उतार फेका है। पाला

पडनेसे हुए नुकसानके लिए गुजरात-सभाके कोषमे से अवश्य दो। इसके बाद भी यदि सम्मतिकी जरूरत जान पडे तो मुझे मसविदा भेजना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीयुत गणेश वासुदेव मावलकर
एडवोकेट
भद्र, अहमदाबाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२४२)से।

१२८ पत्र पद्माको

२१ जनवरी, १९३५

चि० पद्मा,[1]

तेरा पत्र बहुत दिनो बाद मिला। और मेरे पत्रकी पहुँच तो तू कभी लिखती नही। खाज तो लापरवाही और गन्दगीके कारण होती है। यह तुझे कैसे हो गई? और इस मौसममे कसे बढ गई?

पिताजीका एक भी लेख मेरे पढनेमे नही आया। उन्होने बहुत महीने पहले एक लेख मुझे भेजा था। उसके बाद तो काफी कूडा कचरा इकट्ठा हो गया है।

तूने अपनी प्रवत्तियोका वणन नही किया है। लेख लिखनेके अतिरिक्त क्या पिताजी कुछ करते है?

हम २८ तारीखको दिल्लीसे रवाना होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१५०) से। सी० डब्ल्यू० ३५०६ से भी, सौजन्य प्रभुदास गाधी।

१२९ पत्र वसुमती पण्डितको

२१ जनवरी, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। तू अवश्य ही गगाबहनके साथ रह। तू यदि वहा स्थायी रूपसे रहे तो मुझे यह अच्छा लगेगा। तुझे अभी मद्रास तो जाना ही है। अम्बुजमका आश्रम तैयार हो गया है। वह तेरी आस लगाये हुए है। वहा से जब तू वापस आये, तब बोचासण जाना। यदि तू मद्रास वर्धासे होकर जाये तो कदाचित यह तुझे अच्छा लगेगा। मुझे उम्मीद है मै २१ तारीखको वर्धा पहुँच जाऊँगा।

१ उत्तर प्रदेशके एक आश्रमवासी तथा अखिल भारतीय चरखा सघके कर्मठ कार्यकर्ता सीतला सहायकी पुत्री।

गगाबहनकी उँगली क्यो पक गई ?

रमणीकलालकी[1] खोई हुई ताकत फिर वापस आ गई होगी। जब उसके मनमे लिखनेकी इच्छा हो जाये, तब मुझे पत्र लिखे। तारा[2] कैसी है ?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

स्याहीका पासल मिलनेकी खबर मुझे अभी-अभी मिली है। इसकी जाच करनेके बाद तुझे इसके बारेमे लिखूगा।

श्रीमती वसुमतीबहन
हरिजन-आश्रम
साबरमती

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९३९१) से। सी० डब्ल्यू० ६३६ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित।

१३० पत्र जेठालाल जी० सम्पतको

२१ जनवरी, १९३५

चि० जेठालाल,

तुम्हारे पत्रको मैंने तुरत ही निपटा दिया। ऐसे अनुभव तो मिलते ही रहेग। जब तुम ठीक हो जाओ तब समय समयपर घटनाओके बारेमे मुझे लिखते रहना। अभी तो हम मामलेको अखबारोमे नही ले जायेगे। मैंने जमनालालजीको उसे एक घरेलू मामलेकी तरह निपटानेका सुझाव दिया है। बादमे जो हुआ हो उसके बारेमे मुझे लिखना। जमनालालजीको भी बताते रहना। पुलिस हमे भले ही नम्बर न दे लेकिन वह जितनी बार पूछे उतनी बार हमे जवाब देना होगा। पहले वषमे जब मै दिल्लीसे मद्रास जा रहा था तब पुलिस ट्रेनमे सात-आठ बार आकर मुझसे पूछ गई। चूकि मै फकीर-जैसा दिखता था, इसलिए वह नाम तो क्या पूछती, लेकिन टिकटका नम्बर पूछ जाती थी। मद्रास पहुँचनेपर मै जहाँ जाता था मेरी गाडीके पीछे पुलिसकी गाडी भी रहती थी। अय लोग इसपर खीझ उठते थे, लेकिन मुझे तो हँसी आती थी। कानून कहता है कि पुलिस जनतासे जितनी बार नाम व पता पूछे जनता उतनी बार बतानेके लिए बाध्य है। हा, जब हम लडाई लड रहे हो तब हम लडाईके कायदे-कानूनके अनुसार जैसा करना चाहे वैसा कर सकते ह।

१ रमणीकलाल मोदी, एक आश्रमवासी।
२ रमणीकलाल मोदीकी पत्नी।

तुम्हारा काम दूसरी तरहसे कैसे चल रहा है? ग्रामोद्योगोंके बारेमें क्या तुमने कुछ किया है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मैं यह पत्र दिल्लीसे लिख रहा हूँ। जबाब वर्धाके पतेपर देना।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८४८) से, सौजन्य नारायण जेठालाल सम्पत।

१३१ भेंट यूनाइटेड प्रेसके प्रतिनिधिको[1]

२१ जनवरी, १९३५

प्रश्न आपके विचारसे ग्रामोद्योग संघका कार्य आप वास्तवमें कबसे आरम्भ कर सकेंगे?

गांधीजी "आरम्भ" का क्या अर्थ है, यह कहना कठिन है। परन्तु यदि इसका अर्थ गांवोंमें विभिन्न माध्यमों द्वारा वास्तविक कार्यसे है तो मैं निश्चित तिथि निर्धारित करनेमें असमर्थ हूँ, क्योंकि हम लोग बहुत ही सँभलकर चल रहे हैं। सँभलकर चलनेका अर्थ यह है कि जहाँतक हो सके हम कोई गलती नहीं करना चाहते, क्योंकि जो कार्य करना है वह विविध प्रकारका है। यह कार्य अज्ञात समुद्रमें यात्रा करनेके समान है।

केन्द्रीय मण्डलकी बैठक अगले महीनेकी पहली तारीखको वर्धामें होने जा रही है। उस समय सम्भवतः कोई निश्चित कदम उठाया जायेगा। इस बीच एक क्षण भी बेकार नहीं गँवाया गया है। हम बहुमूल्य सूचना एकत्र करते रहे हैं और हमें बहुत जगहोंसे समर्थनके वादे भी मिल रहे हैं।

प्रश्न क्या आप एकसाथ सभी प्रान्तोंमें संघकी शाखाएँ आरम्भ करनेका इरादा रखते हैं, या आरम्भमें केवल कुछ चुने हुए स्थानोंमें शाखाएँ खोलनेका विचार है? संघका मुख्य कार्यालय कहाँ होगा और क्या आपके यहाँ से रवाना होनेके पहले यहाँ भी एक शाखा स्थापित की जायेगी?

गांधीजी हमारा उद्देश्य शाखाएँ खोलना नहीं, वरन् सारे भारतमें एजेंसियाँ स्थापित करना है। आदर्श तो यह होगा कि हर गांवमें एक एजेंट हो, ताकि कामका पूर्णरूपसे बँटवारा किया जा सके। इस कार्यकी सफलता विकेन्द्रीकरण द्वारा ही सम्भव है। मैं यह नहीं जानता कि मेरे यहाँसे रवाना होनेके पहले यहाँ (दिल्लीमें) औपचारिक रूपसे कोई एजेंसी स्थापित की जायेगी अथवा नहीं। लेकिन मैं सभी उपलब्ध जानकारी एकत्र कर रहा हूँ। अन्तिम नियुक्ति केन्द्रीय मण्डल करेगा। मुख्य

१ भेंटकी इस रिपोर्टको गांधीजी ने संशोधित किया था।

कार्यालय वर्धामे है जिसके लिए सेठ जमनालालजीने एक बहुमूल्य बगीचा दिया है जिसमे एक बडा सा बँगला है, और यदि बादमे आवश्यकता पडी तो उन्होने और भूमि देनेका वायदा भी किया है।

प्रश्न क्या सघ उन उद्योगोके बारेमें जो समाप्त हो चुके ह अथवा समाप्त-प्राय ह और जिन्हे आप पुनरुज्जीवित करना चाहते ह, समस्त आकडे आदि एकत्र करनेके लिए केवल अपनी शक्तिपर निभर करेगा अथवा वह भारतमे इस समय कार्य कर रहे सभी सरकारी तथा गर सरकारी सगठनोसे सहयोग मागेगा?

गाधीजी काय इतना विशाल है कि सघ बिना किसीकी सहायताके कुछ नही करेगा। अत वह सरकारी तथा गैर-सरकारी सभी सस्थाओसे सहयोग मागेगा तथा लेगा।

प्रश्न क्या सघ केवल ऐसे उद्योगोको पुनरुज्जीवित करना चाहेगा जिनसे विश्व की उन विभिन्न आर्थिक तथा व्यापारिक शक्तियोको जो आज भारत पर क्रियात्मक अथवा प्रतिक्रियात्मक प्रभाव डाल रही ह, क्षति पहुँचनेकी सम्भावना न होगी, अथवा सघ इस प्रकारके विचारो पर ध्यान दिये बिना मत उद्योगोको पुनरुज्जीवित करेगा और केवल इसलिए करेगा कि वे उद्योग प्राचीन कालमे अपनी उन्नत स्थितिमें लाखो ग्रामीणोको भोजन प्रदान करते थे?

गाधीजी सघ निश्चय ही उन सब उद्योगोको पुनरुज्जीवित और प्रोत्साहित करनेका प्रयास करेगा जो ग्रामीण जीवनके नैतिक और भौतिक विकासके लिए आवश्यक हैं। वह ससारकी तथाकथित परस्पर-विरोधी शक्तियोसे विचलित नही होगा।

प्रश्न यह बात आम तौरपर मानी जाती है कि भारतकी सूती मिलोको खादी उद्योगसे कोई प्रसन्नता नही हुई है। क्या आपको इस बातकी आशका नहीं है कि यदि सघ उन उद्योगोको पुनरुज्जीवित करनेका प्रयास करता है जो समाप्त हो चुके ह या समाप्तप्राय ह या असगठित ह और जिनसे अपेक्षाकृत अधिक सगठित देशी उद्योगोको धक्का पहुँचनेकी सम्भावना है, तो उसे विरोधका सामना करना पडेगा?

गाधीजी यह सभव हे कि सघको चीनी मिलो, चावल मिलो तथा आटा मिलो जसे यान्त्रिक उद्योगो द्वारा विरोधका सामना करना पडे। पर इस कठिनाईको दूर करनेके लिए हमे उपाय निकालने होगे और मुझे पूरी आशा है कि हम इन समस्याओका हल निकाल लेगे।

प्रश्न उदाहरणके लिए चीनी बनाम गुडका प्रश्न ही लीजिए। चीनी उद्योग एक सरक्षित उद्योग है और अब वह काफी सगठित है। कुछ समय पहले समाचार पत्रोमें यह बात कही गई थी कि सघ गुडका उपभोग बढानेका प्रयास करेगा। यदि यह सत्य है तो क्या आप सोचते ह कि चीनी उद्योग सघका विरोध नहीं करेगा?

गाधीजी ऐसा हो सकता है। पर यदि गुडका उपभोग बढे और चीनीका उपभोग कम हो तो यह भारतके लिए वरदान होगा क्योकि चिकित्सा-विज्ञान द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि चीनीके मुकाबले गुड अधिक पौष्टिक है और यह सघ

तथा जनता दोनोंका कर्त्तव्य है कि वे यह देखें कि कोई भी यान्त्रिक उद्योग जनताके स्वास्थ्यको नुकसान न पहुँचाने पाये।

प्रश्न क्या मैं इस बारेमें आपके विचार जान सकता हूँ कि क्या संघको मौजूदा बड़े उद्योगोंका विरोध करनेके बजाय उनका पूरक नहीं बनना चाहिये?

गांधीजी इस प्रश्नका उत्तर पहले ही दिया जा चुका है।

प्रश्न क्या मेरा यह सोचना गलत है कि ग्रामोद्योगोंको पुनरुज्जीवित करनेके बाद, जैसा कि आपका विचार है, भारतका मानवीय, तर्कसंगत तथा सुबोध आधार पर उद्योगीकरण करना (जो लालचयुक्त पूंजीवादके विपरीत है) एक स्वाभाविक कदम है?

गांधीजी मैं नहीं कह सकता कि भारत जैसा विशाल देश, जहाँ करोड़ों व्यक्तियोंको वर्षमें चार महीने बेकार रहना पड़ता है, बड़े उद्योगोंको बढ़ावा देकर कैसे खुशहाल हो सकता है। उन बड़े उद्योगोंको छोड़कर जो सम्भवतः गाँवोंमें नहीं चलाये जा सकते, अन्य समस्त बड़े तथा केन्द्रीकृत उद्योगोंका अर्थ यह होगा कि लाखों व्यक्ति बेरोजगार हो जायेंगे और अगर उनके लिए कोई सम्मानजनक रोजगारकी व्यवस्था नहीं की गई तो वे भूखों मरेंगे।

प्रश्न ग्रामोद्योग संघकी गतिविधियोंको रोकनेके लिए जो सरकारी परिपत्र[1] जारी किया गया है उसके बारेमें समाचारपत्रोंमें जो कुछ कहा गया है, यदि वह सत्य है तो क्या आप सोचते हैं कि सरकारके साथ संघके संघर्षकी सम्भावना है?

गांधीजी सरकारके साथ संघके संघर्षकी सम्भावना नहीं है, क्योंकि स्वच्छता और सफाई-सम्बन्धी मामलोंको छोड़कर मुझे संघके आदर्श, यदि मैंने उन्हें ठीक समझा है तो, सरकारके उद्देश्योंसे भिन्न लगते हैं। हमें निश्चय ही उन गाँवोंमें सफाई-सम्बन्धी कार्य नहीं करना चाहिए जहाँ यह कार्य सरकारी संस्थाओं द्वारा हो रहा है।

इस प्रकारका कोई विचार नहीं है कि संघको सरकारी संस्थाका पूरक बनाया जाये। हाँ, कामका पूरक बनाया जा सकता है।

प्रश्न मेरा खयाल है कि आपने सरकारी परिपत्र पढ़ा है।

गांधीजी हाँ।

प्रश्न आपने देखा होगा कि सरकारको इस बातकी आशंका है कि इस संघके जरिये आपको गाँवोंसे और अधिक निकट सम्बन्ध स्थापित करनेका और भी ज्यादा अवसर मिलेगा, और आप इसका इस्तेमाल अबसे बहुत बड़े पैमाने पर सविनय अवज्ञा [आन्दोलन] संगठित करनेके लिए करेंगे।

गांधीजी यह बात तो मेरे दिमागमें आई ही नहीं। मैंने कभी इस तरह परोक्ष रूपसे कार्य किया ही नहीं है। इससे तो वह मूल उद्देश्य ही समाप्त हो जायेगा जो मेरे दिमागमें है। मैं तो केवल गाँवोंकी भौतिक और नैतिक उन्नति

१ देखिए "भेंट: समाचारपत्रोंको", पृ० ७९-८१।

चाहता हूँ और यदि यह काय सम्पन्न हो जाता है तो मेरी महत्वाकाक्षा पूरी हो जायेगी।

इसी तरह, यदि मुझे कभी सविनय अवज्ञा [आन्दोलन] सगठित करना पडा तो मै उसे अन्य काय कलापोसे अलग रखकर स्वतन्त्र रूपसे सगठित करूँगा। यदि 'सविनय' शब्दको पूरी तरहसे साथक बनाया जाये तो इस तरहकी सारी शकाएँ समाप्त हो जायेगी। पर मुझमे काफी धैय है और मुझे विश्वास है कि मैने जो कुछ कहा है यदि वह सत्य है तो मेरे और किसी प्रयासके बिना ही सारी शकाएँ समाप्त हो जायेगी।

प्रश्न म एक प्रश्न और पूछूगा। आपने कहा कि यदि आपकी ग्रामोद्योग योजनाकी भावनाको सरकार समझे और आपको सहायता प्रदान करे तो आप चमत्कार करके दिखा सकते ह। सहायतासे आपका क्या अथ है? क्या इसका अथ वित्तीय सहायतासे है?

गाधीजी मै केवल यह कहता हूँ कि यदि सरकार मेरे तरीकोके रहस्यको समझे और जो काय मै कर रहा हू उसमे मुझे पूरा सहयोग दे तो मै चमत्कार कर दिखानेका वायदा करता हूँ। मै वित्तीय सहायता नही चाहता। मै सरकारका नतिक और उत्साहपूण समथन चाहता हूँ।

[अग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, २२ १ १९३५ और **हरिजन,** ८ २ १९३५

१३२ पत्र रा० को[१]

२२ जनवरी, १९३५

चि० रा०,

मुझे पण्डितजी[२]का पत्र मिला है जिसमे उन्होने लिखा है कि तू सीमाका उल्लघन कर गया है। अच्छी कमाई होनेके बावजूद कज लेता है, चोरी भी करता है। अपनी इच्छानुसार आचरण करता है। यह सब यदि सच है तो खेदकी बात है। मैने बम्बईमे तुझसे जो पूछा था सो तुझे याद होगा। तूने मुझे धोखा न देनेका वचन दिया था यह याद है न?

पण्डितजी एक-दो दिनमे वहा पहुँच जायेगे। तू इस मूर्छासे जागना और पण्डितजीकी तथा आश्रमकी लाज रखना। दिये हुए वचनको याद रखना। पण्डितजीको सन्तुष्ट करना।

१ नाम नही दिया गया है।
२ प्रेषितीके पिता।

मुझे विस्तारपूर्वक पत्र लिखना। बुरा काम करना पाप है लेकिन उसे छिपाना और भी बड़ा पाप है। पाप तो हम सब करते हैं लेकिन जो उसे प्रकटकर उसका निवारण करता है, उसका ही कल्याण होता है। यदि कोई मनुष्य किये हुए को धो डालता है तो उसके लिए इतना ही यथेष्ट है।

[गुजरातीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

१३३ प्रश्नोत्तरी[1]

[२३ जनवरी, १९३५ के आसपास][2]

सर स० राधाकृष्णनने मुझे निम्न तीन प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिए कहा है

(१) आप किस धर्मको मानते हैं?

(२) आप इसमें किस तरह प्रवृत्त हुए हैं?

(३) सामाजिक जीवनपर इसका क्या प्रभाव है?

मेरा धर्म हिन्दू-धर्म है। यह मेरे लिए मानवताका धर्म है, और मैं जितने धर्मोंको जानता हूँ इसमें उन सबकी अच्छाइयाँ हैं।

मैं समझता हूँ कि दूसरे प्रश्नमें भूतकालकी जगह वर्तमानकालका प्रयोग जान-बूझकर किया गया है। मैं अपने धर्ममें सत्य और अहिंसा, अर्थात् व्यापक अर्थमें प्रेमके माध्यमसे प्रवृत्त हो रहा हूँ। प्रायः मैं अपने धर्मको सत्यका धर्म कहता हूँ। अपने धर्मको और अच्छी तरहसे परिभाषित करनेके लिए मैं पिछले कुछ समयसे ईश्वर सत्य है कहनेके बजाय, सत्य ही ईश्वर है कहने लगा हूँ। एक समय था जब मुझे ईश्वरके सहस्र नाम, जो हिन्दू-धर्मकी एक पुस्तिकामें पद्य रूपमें दिये गये हैं और जिसका पाठ शायद लाखों लोग नित्य प्रातः करते हैं, जबानी याद थे। परन्तु इस समय सत्य मेरे ईश्वरकी व्याख्या जितनी पूर्णतासे करता है उतना और कोई चीज नहीं करती। ईश्वरको अस्वीकार किया गया है, हम यह जानते हैं। सत्यको अस्वीकार किया गया हो, ऐसा हम नहीं जानते।[3] महा अज्ञानी लोगोंमें भी सत्यका कुछ अंश होता है। हम सभी सत्यकी चिनगारियाँ हैं। इन सभी चिनगारियोंका कुल योग ही सत्य है जो अवर्णनीय और अभीतक अज्ञात है, और वही ईश्वर है। लगातार प्रार्थनाके द्वारा मैं दिनोंदिन उसके नजदीक पहुँच रहा हूँ।

१ इसी प्रश्नोत्तरीको एफ० मेरी बार द्वारा लिखित पुस्तक **बापू**, इंटरनेशनल बुक हाउस बम्बई १९४९ में किंचित परिवर्तनके साथ प्रकाशित किया गया है।

२ मेरी बारके अनुसार गांधीजीको राधाकृष्णनन के ये प्रश्न तब मिले जब वे दिल्लीसे, जहाँ वे रह रहे थे, गाँवके दौरेके लिए रवाना होनेवाले थे। गांधीजी यात्रा पर २३ जनवरी १९३५ को निकले थे।

३ मेरी बारकी पुस्तकमें यह तथा इससे पिछला वाक्य दोनों नहीं हैं।

इस धमका सामाजिक जीवनपर क्या प्रभाव है अथवा क्या होना चाहिए, यह हमारे दैनिक सामाजिक सम्पकसे ही जाना जा सकता है। ऐसे धमके प्रति सच्चा होनेके लिए हमे प्राणि-मात्रकी अनवरत सेवामे तन्मय होना पडेगा। इस असीम जीवन सागरमे अपना पूण विलयन और इसके साथ अपना एकात्मीकरण किये बिना हम सत्यको नही प्राप्त कर सकते। इसलिए सामाजिक सेवा तो मुझे करनी ही है, मेरे लिए पथ्वी पर इसके परे या इससे अलग कोई सुख नही है। सामाजिक सेवाके अन्तगत जीवनका हर क्षेत्र आ जाता है। इस योजनामे कुछ भी नीच या उच्च नही है। क्योकि अनेक जान पडते हुए भी हम सब एक ह।

[अंग्रेजीसे]

कन्टेम्परेरी इन्डियन फिलासफी, प० २१

१३४ पत्र कान्ति गाधीको

२३ जनवरी १९३५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र कल शामको मिला। उससे पहले देवदासने मुझसे बात की ही नही थी। कल मेरे पूछने पर उसने बताया कि उसने मुझे [परेशानीसे] बचानेकी खातिर ही मुझसे बात नही की। महादेवके साथ उसने कल सवेरे बात की। तेरा पत्र मैने देवदासको दे दिया है ताकि वह तेरे अन्य पत्रोके साथ इसे रखकर पढनेके बाद मेरा माग दशन करे। चूकि मुझसे पहले महादेवको इस बारेमे सब कुछ मालूम हो गया, इस लिए वह यह पत्र पढेगा। तेरा कलका पत्र उसने नही पढा है। अपने पत्रोके बारेमे तू निश्चिन्त रहना। मेरी अनुमतिके बिना कोई चुपचाप तेरा पत्र पढ ले ऐसा नही हो सकता। ऐसा कोई व्यक्ति मेरे आसपास नही है। लेकिन मै यह जरूर चाहूँगा कि तू अपने इस सकोचको जल्द ही छोड दे। यह सकोच तेरी प्रगतिमे बाधक है। लेकिन मै आग्रह नही करता।

तू जिस सम्बन्धके बारेमे विचार कर रहा है, उससे मुझे बहुत आघात नही पहुँचा है। यदि तू अपना साथी केरलसे चुनता है तो इससे मुझे कोई आघात नही पहुँचेगा। देखना यह है कि तेरे इस चुनावके पीछे क्या भावना है। रामचन्द्रनके घरमे रहकर तुझसे कुछ हो सकता है अथवा नही यह विचारणीय है। यह उचित नही है कि इस प्रश्नका और भविष्यका निणय मै तेरे पत्रसे करूँ। हालाकि इसमे थोडा खच तो होगा, लेकिन मै चाहूँगा कि तू वर्धा चला आ। मै वहा २९ तारीखकी शामको पहुँचूगा। तू उस दिन सवेरे पहुँच जाये तो यही काफी है। यह पत्र तुझे जल्द-से-जल्द शनिवारकी सुबह मिलेगा। इसलिए ज्यादा समय नही है। तुझे दु खी होनेकी कोई जरूरत नही। मै तेरा त्याग नही करूँगा। मुझे तुझ पर विश्वास है। तूने मगनभाई काका आदिके सत्सगका सेवन किया है। देवदासके प्रति तेरे मनमे

आदरभाव है। तू मेरे आशीर्वादका भूखा भी है। तेरा कल्याण ही है। मैं यह सब प्रार्थनासे पहले लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद[१]

गुजरातीकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९२) से, सौजन्य कान्तिलाल गांधी

१३५ पत्र विट्ठल ल० फड़केको

२३ जनवरी, १९३५

भाई मामा,

तुम बदनसीब हो, यही कहना होगा न? तुम्हारे पत्र मुझे बराबर मिल गये थे। मैंने जवाब भी दिया था। पहलेका जवाब कांग्रेस है, दूसरेका जवाब मैंने महादेवसे देनेके लिए कहा था। समयका अभाव है, इस कारण, और जवाब तुम्हें जल्दी मिल जाये इस विचारसे मैं तीसरेका उत्तर लिखा रहा हूँ। तुम्हारे इलाजके लिए जल चिकित्सा, अर्थात् हिपबाथ और स्टीमबाथ लेकिन खुराकमें दूध, कच्ची सब्जियां और गेहूँ सुझाता हूँ। तुम्हें नंगे बदन आराम लेना और सूर्य स्नान करना चाहिए। शरीर अच्छा होना ही चाहिए। साहबका क्या हाल है? मेरे पैर लापरवाहीके कारण और ठण्डसे फट गये थे, इसलिए घूमना फिरना बन्द हो गया। अब ठीक है। सर्दी भी कम हो गई है।

[२] अभी तो मद्रासमें रहेंगे।

बापूके आशीर्वाद

श्रीयुत मामा साहब
[मार्फत] श्रीयुत देशपाण्डेसाहब
बरिस्टरके यहां, शंकर टेकडी, बडौदा

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८२८) से।

१ इसके बाद यह निर्देश दिया हुआ है महादेवके अतिरिक्त कोई न पढ़े, काका पढ़ सकते हैं।

२ साधन-सूत्रमें शब्द अस्पष्ट है, परन्तु शायद यह शब्द 'काका' था, देखिए 'पत्र नरहरि द्वा० परीखको' २६ १ १९३५।

१३६ आरम्भ कैसे करें?

बहुत-से सज्जन तो पत्र लिख लिख कर और अनेक मित्र खुद मुझसे मिलकर यह प्रश्न पूछ रहे है कि हम ग्रामोद्योग कायका आरम्भ किस प्रकार करे और सबसे पहले किस चीजको हाथमे ले।

इसका स्पष्ट उत्तर तो यही है कि इस कायका श्रीगणेश आप खुद ही करे, और सबसे पहले उसी कामको हाथमे ले जो आपको सबसे आसान जान पडे।

पर इस उत्तरसे पूछताछ करनेवालोको सतोष थोडे ही होता है। इसलिए इसे मै जरा और स्पष्ट कर दू।

हममेसे हरएक आदमी खाने पीने, पहनने ओढने और अपने नित्यके उपयोगकी चीजोको जाच परख सकता है और विलायती अथवा शहरकी बनी चीजोकी जगह ग्रामवासियोकी बनाई हुई उन चीजोको काममे ला सकता है जिन्हे कि वे अपनी मडैयामे या खेत खलिहानमे बहुत सस्ते और मामूली औजारोसे सहज ही तैयार कर सकते है। इन औजारोको वे लोग आसानीसे चला सकते है और वे बिगड जाये तो उन्हे सुधार भी सकते है। विदेशी या शहरकी बनी चीजोकी जगह गावोकी बनी चीजोको आप काममे लाने लगे तो ग्रामोद्योग-कायका यह बडा अच्छा आरम्भ होगा और आपके लिए यह खुद ही एक बडे महत्वकी चीज होगी। इसके बाद फिर क्या करना होगा, यह तो आप ही मालूम हो जायेगा। मान लीजिए कि आजतक कोई आदमी बम्बईके किसी कल-कारखानेमे बने टूथब्रशसे दात साफ करता आ रहा है और अब उसकी जगह वह गावका बना टूथब्रश चाहता है, तो आप उसे बबूल या नीमकी दातौनसे दात साफ करनेकी सलाह दे। अगर उसके दात कमजोर है या दात है ही नही, तो वह दातौनका एक सिरा तो लोढी या हथौडीसे कुचल ले और दूसरे सिरेको चीरकर उसकी फॉकोसे जीभीका काम ले। दातौनका यह ब्रश सस्ता भी काफी पडेगा और कारखानेके बने हुए अस्वच्छ ब्रशोसे ज्यादा स्वच्छ भी होगा। शहरोके बने दतमजनोको वह छुएगा ही नही। वह तो लकडीके कोयलेको खूब महीन पीसकर और उसमे थोडा सा साफ नमक मिलाकर अपने घरमे ही बढिया मजन तैयार कर लेगा। मिलके बने कपडेके बजाय वह गावकी बुनी खादी पहनेगा। मिलके कुटे चावलकी जगह हाथके कुटे चावलका और सफेद शक्करके स्थान पर गॉवके बने गुडका उपयोग करेगा। इन चीजोको मैने यहा बतौर नमूनेके ही दिया है और इनकी चर्चा यद्यपि मै इन पृष्ठोमे पहले कर चुका हूँ, तो भी इस विषयपर मेरे साथ जिन लोगोकी लिखा पढी या बातचीत चल रही है, उनकी बताई हुई कठिनाइयोको दृष्टिमे रखकर मैने पुन खादी, चावल और गुडका यहाँ उल्लेख किया है। उदाहरणके लिए, कुछ लोग कहते है कि "हाथका कुटा चावल मिलके कुटे चावलसे महँगा पडता

है।" कुछ लोग कहते है "हाथसे चावल कूटने साफ करनेकी कलाको लोग भूल गये है और चावल कूटनेवाले मिलते ही नही।' कुछ अन्य लोग कहते है, "हम मिलका कुटा चावल लेते ही नही। हम लोग प्रति रुपया १९ सेरके भावपर हाथ-कुटा चावल दे सकते है?" ये सभी लोग ठीक है, और गलत भी। जिस हदतक अपने अपने जिलोमे इनके निजी अनुभवकी बात है, उस हदतक ये ठीक है। और ये सभी लोग गलत इसलिए है कि इन्हे वास्तविक सत्यका पता ही नही है। मुझे तो रोज विस्मयकारी अनुभव प्राप्त हो रहे है। यह सब खुद शुरूआत कर देने पर होता है। मने आजतक जो कुछ देखा समझा है, उसका परिणाम निम्न-लिखित है।

बाजारमे बिना पालिश किया चावल नही प्राप्त होता। यह चावल देखनेमे सुन्दर और मीठा तथा सुस्वादु होता है। मिले बिना पालिश किये चावलका मुका-बला कर ही नही सकती। इसका छिलका निकालनेका ढग बहुत सरल है। अधिकाश किस्मके धानको हल्की चक्कीमे दल कर उसकी भूसी निकाली जा सकती है। धानकी कुछ किस्मे ऐसी है जिन्हे दलनेसे भूसी अलग नही होती। इस किस्मके धानको साफ करनेका सबसे अच्छा तरीका यह है कि पहले उसे उबाल ले और फिर भूसीको दानेसे अलग कर ले। ऐसा कहा जाता है कि यह चावल सबसे पौष्टिक और स्वभावत सबसे सस्ता होता है। गाववाले अगर अपने धानकी भूसी खुद निकालने लगे तो वह उनको मिलके साफ किये चावलसे, चाहे पालिश किया चावल हो या बिना पालिश किया, हमेशा ज्यादा सस्ता पडेगा। बाजारोमे अधिकाशत जो चावल मिलता है वह, चाहे हाथसे साफ किया हुआ हो या मिलोका साफ किया हुआ हो, कमोबेश पालिश किया चावल ही होता है। बिलकुल बिना पालिश किया हुआ चावल हाथसे दला कुटा होता है और वह उसी किस्मके मिलके साफ किये हुए चावलके मुकाबले हमेशा सस्ता पडता है।

शोध काय तो अभी और हो ही रहा है, लेकिन अभीतकके परिणामोसे यही पता चलता है कि हमारी अपराध जैसी उपेक्षाके कारण ही करोडो लोग घटिया चावल खाते है और कीमत भी ज्यादा देते है। गावमे काम करनेवाला कायकर्त्ता इन बातोकी सत्यताकी खुद जाच कर सकता है। यह कोई खराब शुरूआत नही होगी।

अगले सप्ताह मै गुड और अन्य खाद्य वस्तुओ तथा ग्राम कायके एक अन्य अगके बारेमे लिखूगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २५ १ १९३५

१३७ उनका अर्थशास्त्रीय विश्वास

कृषि सस्थान, इलाहाबादके निदेशक और अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघकी सलाहकार समितिके सदस्य प्रोफेसर सैम हिगेनबाटम अपने पत्रमे लिखते ह [1]

भारतके लिए किये गये मेरे आर्थिक और आध्यात्मिक प्रयत्नोके मूलमे जो अथशास्त्रीय विश्वास है उसे म यहा प्रतिपादित कर रहा हू।

उत्पादनके दो मुख्य तत्व भूमि और श्रम ह। ये दोनो परस्पर एक ह अथवा विवाह-सूत्रमे बँधे हुए ह। और वे समस्त भौतिक उपादान जो मनुष्यके भौतिक कल्याणके लिए आवश्यक और अभीष्ट ह, इनकी सन्तान ह। उन्हे हम 'पूजी' कहते ह।

पूजी भूमि और श्रमकी सन्तान है। भारतमें भूमि और श्रम प्रचुर मात्रामें है। भूमि और श्रमसे भारतका अधिकसे अधिक हित हो सके, इसके लिए भूमि का बुद्धिमत्तापूवक उपयोग और श्रमिकोका सही मार्गदशन करनेकी जरूरत है। अबतक इनकी बहुत ज्यादा कमी रही है। इसलिए म ऐसे ग्राम सेवकोके प्रशिक्षणपर जोर देता हूँ जो इन उन चीजोके अभावकी शिकायत करने मे अपना सारा समय बरबाद नही करेगे और इस तरह आरम्भमें ही हतोत्साहित और परास्त नहीं हो जायेगे, बल्कि वे गावको उसमें उपलब्ध सभी साधनोसहित अथवा साधनोकी कमीके साथ स्वीकार करेगे और उपलब्ध साधनो व सम्भावित साधनोका, जो आर्थिक दृष्टिसे गाववालोकी पहुँचके बाहर नहीं है, ज्यादा बेहतर उपयोग करके इस भूमि और अपने श्रमसे गाँवमें ही ऐसी पूजी पदा करेगे जो गाववालोकी आवश्यकताके अनुरूप होगी। यह एक लम्बी धीमी और शिक्षाप्रद प्रक्रिया है जिसका अथ है – कठोर परिश्रम, लेकिन निश्चित सफलता ।

कायक्रमके अन्तगत गाँवके सारे कूडे करकटके उचित उपयोग द्वारा खाद तयार की जायेगी, भूमिके कटावको रोका जायेगा, फसल चक्रकी सही प्रणाली बताई जायेगी, अच्छे बीजो, साधनो और उपकरणोके चयन करनेका ढग बताया जायेगा, विशिष्ट नस्ल और अच्छे चारे द्वारा पशुधनमें वद्धि की जायेगी, गाँव के उत्पादनोकी बिक्री और खरीदमें सहयोगकी भावनाका विकास करना सिखाया जायेगा, सडकोको बेहतर बनानेकी दिशामे काम किया जायेगा, वतमान ग्रामोद्योगोका जिनके द्वारा गावका माल तयार होता है, विकास किया जायेगा और

१ यहाँ कुछ अंश ही दिये गये है।

जहा आवश्यक होगा वहा ग्राम्य जीवनको सुव्यवस्थित बनानेके लिए नये ग्रामोद्योगोकी स्थापना की जायेगी।

प्रोफेसर हिगेनबाटमने ऊपर जो कहा है उसमे बहुत सार है तथा ग्राम्य जीवनको उचित स्तरपर लानेके लिए आदोलन चलानेवाला हर व्यक्ति उनसे सहमत होगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २५ १ १९३५

१३८ टिप्पणियाँ

एक अन्य हरिजन सेवककी मृत्यु

आचाय गिडवानी पक्के हरिजन सेवक थे। हरिजन-कायमे उन्हे बहुत ज्यादा दिलचस्पी थी। वे एक हरिजन बालाका अपने परिवारके एक सदस्यके रूपमे भरण-पोषण कर रहे थे। उनके समक्ष न कोई ऊँच था, न कोई नीच। हरिजन सेवाके प्रति प्रेमभाव उनके स्वभावका अभिन्न अग था। जब वे पहले पहल मुझसे मिलने आये तब मैने उन्हे हरिजनोके लिए लडते हुए देखा। जब भी सेवा कायके लिए उनका आह्वान किया गया उन्होने कभी आनाकानी नही की। मानवताके ऐसे सेवकोकी कभी मत्यु नही होती। वे अपने कायसे जीवित रहते है। आचाय गिडवानी अपने पीछे बहादुर विधवा पत्नी और एक बडा परिवार छोड गये है। मै उनके प्रति अपनी हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूँ।

उधार बनाम नकद

अखिल भारतीय चरखा सघके विभिन्न खादी भडारोके प्रबन्धके बारेमे बार बार यह प्रश्न उठता है कि क्या खादी उधारमे बेची जानी चाहिए। पिछले अनेक वर्षोंसे मेरा यह विचार रहा है कि विशुद्ध परोपकार वत्तिसे चलाये जानेवाले व्यापारमे उधार बिक्री एक गलत सिद्धान्त है। ऐसे कारोबारके प्रबन्धकोको जनताको यह सिखा सकना चाहिए कि उधार बिक्रीसे नकद बिक्रीवाली चीजोका मूल्य बढ जाता है। केवल नकद बिक्री होनेसे ही हमे यह पता चल सकता है कि परोपकार वत्तिसे चलाये जानेवाले कारोबारको जनताका कितना सरक्षण प्राप्त है। नकद बिक्रीसे आरम्भमे लोगोको भले ही थोडा बहुत बुरा लगे, लेकिन अन्तत उसमे निश्चित रूपसे लाभ ही होता है। परमाथकी दृष्टिसे किये जानेवाले कायमे तुरन्त परिणामका विचार नही रखना चाहिए। वह तो सरल और अडिग विश्वासके बलपर ही आगे बढ सकता है। इसलिए मै अखिल भारतीय चरखा सघके अन्तगत चलनेवाली खादीकी दुकानोके प्रबन्धको और सहायक सगठनोको तथा अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघको, जो कि जल्दी ही शुरू होनेवाला है, यह सलाह देना चाहूँगा कि वे नकद बिक्रीके सिद्धान्तका पालन करे और उधार बिक्रीका पूणतया त्याग कर दे।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २५-१-१९३५

१३९ पत्र हालिदा अदीब हानुमको

दिल्ली
२५ जनवरी, १९३५

प्रिय बहन,

आपपर जो दु:खका पहाड टूट पडा है, उसके बारेमे प्रोफेसर मलकानीने अभी-अभी मुझे बताया है। मैं जानता हूँ कि आप मौतसे नही डरती। आप उसे पक्के मित्रके रूपमे मानती है, इसलिए मैं आपको कोई शोक सदेश नही भेज रहा हूँ। लेकिन यदि इस समय आपको किसी साथीकी जरूरत हो तो आप यह जानती ही है कि आप मुझे अपने उन अनेक मित्रोमे से मान सकती है जो आपके दु:खमे, वियोगमे, क्षति आदिमे — इसे जो भी कहा जाये — आपके साथ हैं। शिष्टाचार निभानेकी खातिर मैं आपके पास नही आ रहा हूँ। प्रोफेसर मलकानी इस टिप्पणीको ला रहे हैं, और एक सम्मानित कार्यकर्ता होनेके कारण मेरा प्रतिनिधित्व करते ह।

स्नेह।

मो० क० गाधी

बेगम साहब हालिदा अदीब
दरियागज

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९११) से।

१४० पत्र जे० सी० कुमारप्पाको

२६ जनवरी, १९३५

प्रिय कुमारप्पा,

तुम जानते हो कि मै अपने साथ एक बडा दल ला रहा हूँ। बा, मीरा बहन, महादेव, मनु, देवराज, बलवतसिह (नया), राजकिशोरी (नई), सम्भवत एक दो और। हमे देखना होगा कि व्यवस्था कैसे की जायेगी। मेरे हिसाबको ग्रामोद्योग सघके साथ नही मिलाना होगा। जहाँतक खर्चेका सवाल है, यह एक अलग खाता होगा।

स्नेह।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१०७) से।

१४१ पत्र जमनालाल बजाजको

२६ जनवरी, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। खान साहब आज यही है। मैन तुम्हारा तार उन्हे पढाया। उसे पढनेके बाद उन्होने आशीर्वादका जो लम्बा तार भेजा, वह तुम्हे मिल ही गया होगा। तुम विवाहकी जोडिया मिलानेमे विशेष योग्यता हासिल कर रहे प्रतीत होते हो। यह विवाह तो इतिहासमे लिखा जायेगा। बेचारी सोफियाने तो कभी स्वप्नमे भी न सोचा होगा कि उसे पठानसे विवाह करना होगा और न सादुल्लाने कभी सोचा होगा कि उसका विवाह एक खोजा लडकीसे होगा। तुम्हारी पसन्द मुझे तो बहुत अच्छी लगी। दोनो सुखी होगे और सोफिया जितनी चाहे उतनी सेवा कर सकेगी। हम सब मगलवारको वर्धा पहुचेगे। साथमे कोई नया आदमी नही होगा। हा, चन्द त्यागीके बलवीरके साथ जिसकी सगाई हुई वह हमारे साथ है। बडी भली लडकी है। मेरी द्वय तो बैतूल उतर जायेगी।

लगता है, सरदार, राजाजी, राजेनबाबूको आठ फरवरी तक रुकना पडेगा। तबतक बिलपर वाद विवाद पूरा हो जायेगा।

कमलनयन सीलोन जानेके लिए अधीर हो रहा है, लेकिन उसे तनिक प्रतीक्षा करनी होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९५२) से।

१४२ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

२६ जनवरी, १९३५

चि० नरहरि,

मै तुम्हारे पत्रका उत्तर नही दे पाया। गोशालाकी बाबत अम्बालालभाईसे जो पैसा लेना है, वह पैसा यदि शकरलाल उनसे माग ले तो हमारा काम चल जायेगा। कितनी रकम निकलती है, इसकी तुम ठीकसे जाच करना और आकडा मुझे भी भेजना।

यदि तुम चमशोधनालय चलाना चाहते हो तो चलाना। क्या तुम एक कुशल चमारको रखना चाहोगे? म देखूगा कि क्या मै सुरेन्द्रको शिक्षा लेनेके लिए राजी कर सकता हू? ट्रस्टियोसे गोशालाके दोहरे घाटेकी अनुमति लेना।

ट्रस्टका दस्तावेज बन जाये तो अच्छा हो।

मै २९ तारीखको वर्धा पहुँचनेकी आशा रखता हूँ। फिलहाल तो रहूँगा वही।

काका[1] अभी मद्रासमे है और अगर ज्यादा नही तो दो महीनोतक तो वही रहेगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०६८) से।

१४३. पत्र : वालजी गो० देसाईको

२६ जनवरी, १९३५

चि० वालजी,

तुम्हारा पत्र मिला। अपने त्याग-पत्र पर तुम्हे दुःखी क्यो होना चाहिए।[2] कोई काम हमसे हो नही सकता इसलिए यदि धर्मकी प्रेरणासे उसका त्याग करना पडे तो इसमे दुःख अथवा सुख कैसा?

इसे स्वेच्छासे छोड देनेका विचार भी तो तुम्हारे ही मनमे उठा था न? लेकिन यदि तुम जैसे तैसे मन्त्री-पदपर बने रहना चाहते हो तो भले रहो। छोडना कर्त्तव्य जान पडे तो छोड दो। जबतक तुम्हारी ओरसे इसका कोई निश्चित उत्तर नही आ जाता, तबतक मैं कोई कदम नही उठाऊँगा।

चित्रे अभी मेरे साथ ही है। उसे अपने साथ वर्धा ले जानेका विचार कर रहा हूँ। उसकी खासी काफी ठीक है। बुखार था, सो उतर गया है। तुम्हारा लेख मिल गया है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

जगदीश शास्त्रीके बारेमे तुम जो लिखते हो, वैसा नही हुआ था। मने तुम्हारी रायका आदर किया था।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४६९) से, सौजन्य : वालजी गो० देसाई।

१. द० बा० कालेलकर।

२. देखिए "पत्र : नारणदास गांधीको", पृ० १३१-३२।

१४४ आचार्य गिडवानी-स्मारक

आचाय गिडवानीके निधनसे एक अच्छे हरिजन सेवकका स्थान रिक्त हो गया है। उसकी पूर्ति आसानीसे नही हो सकती। आचाय गिडवानीके मनमे ऊँच नीचका कोई भेद न था। हरिजन और इतर जन, ऐसे दो भिन्न वग उनकी कल्पनामे थे ही नही। वे स्वभावसिद्ध हरिजनसेवक थे। कुछ वष हुए उन्होने एक हरिजन लडकीको अपने घरमे रखा था और वे उसे अपनी लडकी जैसा मानते थे।

आचाय गिडवानीकी अन्य सेवाओका वणन करनेका यह अवसर नही है। उनमे त्याग-शक्तिकी मात्रा बहुत अधिक प्रमाणमे थी। वे गुजरात विद्यापीठके प्रथम आचाय थे और उनमे अपने शिष्योका मन हरनेकी अच्छी शक्ति थी। उनकी पुण्यस्मतिको बनाये रखनेके लिए श्री परीक्षितलाल मजमूदारकी अध्यक्षतामे गिडवानी स्मारक कोषकी स्थापना की गई है। उसमे श्रीमती इदुमती चिमनलाल श्री वाडीलाल लल्लूभाई मेहता तथा श्री जेठालाल जीवनलाल गाधी मन्त्री है। मुझे उम्मीद है कि इस कोषको सबकी सहायता प्राप्त होगी और उसमे अच्छी रकम इकटठी होगी। जब उन्होने गुजरात छोडा उस समय जो चन्दा इकट्ठा हुआ था, उसका उपयोग हरिजन-सेवा-कायमे किया गया था। वैसा ही इस बार भी होगा, ऐसी मुझे उम्मीद है। मेरी मान्यता है कि स्मारक कोषका अन्य कोई उपयोग उनकी आत्माको इतना सन्तोष नही प्रदान करेगा।

चन्दा हरिजन-आश्रम, साबरमती अथवा काग्रेस भवन, भद्र, अहमदाबाद अथवा नवजीवन कार्यालय, गाधी रोड, अहमदाबादके पतेपर भेजा जाये।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, २७-१-१९३५

१४५ पत्र जमनालाल बजाजको

२७ जनवरी, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे कानमे ऐसा क्यो होता रहता है? डॉक्टर क्या कारण बताते है? क्या तुम्हे खुश्क आबोहवामे जानेकी जरूरत है? क्या तुम खाने पीनेमे, कसरत करनेमे और आराम करनेमे नियमका पालन करते हो? मुझे वर्धा [के पते पर] ब्यौरेवार लिखना। अभी यदि तुम वर्धा न आ सका तो कोई हज नही। चिट्ठी पत्रीसे काम चलायेगे।

वल्लभभाई, राजा आदिको अभी वहीं रहना पड़ेगा, इसलिए तुम्हारी सभाओंको मुल्तवी करना होगा। चरखा संघके लिए शंकरलालको बुलाकर जरूरी काम निपटा देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९५३) से।

१४६. पत्र : वसुमती पण्डितको

२७ जनवरी, १९३५

चि० वसुमती,

तू अपना कार्यक्रम तो बताती नहीं और फिर जिम्मेदारी मुझ पर डालेगी। मैंने तो तेरे पत्रका उत्तर बोचासण भेजा था। तुझे अभी तो मद्रास जाना है। उसके बाद खुशीसे गंगाबहनके साथ रहना। मद्रास तू वर्धा होकर जाना।

चन्दूभाईको मैं स्याहीके बारेमें पत्र लिख रहा हूँ।

तू मुझे अपने अनुभव विस्तारसे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मंगलवारको वर्धा पहुँचेंगे।

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९३९३) से। सी० डब्ल्यू० ६३८ से भी; सौजन्य : वसुमती पण्डित।

१४७. पत्र : नारणदास गांधीको

दिल्ली
२७ जनवरी, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। साथका पत्र पढ़कर केशुको दे देना। मेरा खयाल है कि तुम सब इस विवाहको पसन्द करते हो तो यह उचित ही है। जो कुछ निर्णय किया जाये, मुझे उसकी खबर तत्काल वर्धामें मिले।

गोशालाके नये बजटमें तुमने जो परिवर्तन देखे हों, वे मुझे सूचित करना।

वालजीने गोशालाके मन्त्रीपदसे अपना इस्तीफा भेज दिया है, क्योंकि उसे दुग्धालय और चर्मालयका ज्ञान नहीं है और सीखनेके लिए तैयार भी नहीं है।

कनु बडे सुखसे हे। पण्डितजी अभी यही है। वह उनसे थोडा सगीत भी सीखता हे और मरीबहनसे अग्रेजी। उसकी जरूरते नाममात्र की ओर बहुत ही सादी है, इसलिए उसका काम आरामसे चलता ह।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४२८ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी।

१४८ भाषण विधान-सभाके सदस्योकी दिल्लीकी बैठकमे[1]

२७ जनवरी, १९३५

महात्मा गाधीने उन दो विधेयकोकी चर्चाकी जिन्हे पिछली विधान सभामे पास करानेकी कोशिश की गई थी, और कहा

जहातक मन्दिर प्रवेश विधेयककी बात हे उसके बारेमे इस समय कुछ करने की कोई जरूरत नही क्योकि यह स्पष्ट हे कि उसके पक्षमे पहले लोकमतको अच्छी तरह तैयार करना आवश्यक हे। हरिजन कार्यकर्त्ता यही कर रहे है। हिदू जनता निष्क्रिय है लेकिन वह मनसे इसके पक्षमे हे, और सनातनी हिदुआका प्रबुद्ध वग, विशेष रूपसे पडित लोग, अभी भी इसके विरुद्ध है।

ऐसे किसी मामलेमे हम केवल बहुमतके जोरसे ही सुधारकी गति तेज नहीं कर सकते। इस बीच जो लोग इस विषयमे दिलचस्पी रखते ह, उन्हे उसका विशेष अध्ययन करना चाहिए।

अस्पश्यता निवारण विधेयकके बारेमे महात्मा गाधीने सदस्योको सलाह दी कि इसे पास करानेकी पूरी कोशिश की जानी चाहिए। इसका सम्बन्ध हरिजनोके नागरिक अधिकारोसे है और इसलिए इसका समथन सभी सदस्य कर सकते ह, चाहे वे हिन्दू हो, मुसलमान हो या अन्य धर्मावलम्बी हो। यदि सारा हिन्दू-समाज भी अस्पश्यता-निवारणके विरुद्ध हो तो भी म विधान सभा जसी धम-निरपेक्ष सस्थाको यही सलाह दूगा कि वह हिन्दुओके इस रवयेको बर्दाश्त न करे। कारण, इस मामलेमे कानून किसीके धार्मिक अधिकार अथवा किसी धार्मिक प्रथामें हस्तक्षेप नही कर रहा होगा। वह तो सिफ इस देशके कानूनसे अस्पश्यताको समाप्त कर रहा होगा। उदाहरणके लिए हम सावजनिक कुओके इस्तेमालकी बात ले। हरिजनोके लिए यह सवाल सबसे ज्यादा तकलीफदेह है। इन तालाबो और कुओपर मवेशी जा सकते ह, लेकिन

1. यह बैठक दिल्लीमें किग्जवे कैम्पकी हरिजन बस्तीमें हुई थी। श्री घनश्यामदास बिड़लाके निमन्त्रण पर इस बैठकमें ३५ सदस्योंने भाग लिया था।

हरिजन नहीं। राजपूतानामें कुएँ खोदनेपर हजारो रुपये खच करने पडते ह, लेकिन यह अमानुषिकताकी हद हे कि हरिजनोको उनका इस्तेमाल नहीं करने दिया जाता। यही हाल स्कूलोका है। म इस सवालपर अध्याय और श्लोक उदधृत कर सकता हूँ। श्री एम० आर० जयकरने एक विधेयक[1] प्रस्तुत किया था, और एक दूसरे विधेयकका मसविदा हालमें श्री च० राजगोपालाचारीने तयार किया है। आवश्यकता हो तो ऐसे किसी विधेयकको और सुस्पष्ट और सशोधित किया जा सकता है, लेकिन इसे यथासम्भव जल्दीसे जल्दी पास कराया जाना चाहिए। मालवीयजीकी अध्यक्षता में बम्बईमे हुए सम्मेलन द्वारा पास किये गये प्रस्ताव[2] के प्रकाशमे, हि‍दुओका यह परम कत्तव्य हो जाता है कि वे इस प्रकारके विधेयकका समथन करे और विधान-सभाके हि‍दू सदस्योका कत्तव्य हे कि वे इसे पास करानेकी कोशिश करे।

इस कायमे सदस्योको हरिजन सेवक सघकी सेवाएँ उपलब्ध रहेगी।

और भी बहुत से तरीके ह जिनसे विधान सभा हरिजनोके कल्याणमे योग दे सकती है। यह सही है कि प्रा‍तीय सरकारे पूरी तरह जागरूक हे और हरिजनोके लिए बहुत सी चीजे करनेकी कोशिश कर रही ह। शायद हरिजन सभाओने सरकारको प्रयत्न करनेके लिए प्रेरित किया हे। यह सब हरिजनोके लिए लाभकर है। चाहे जिस सूत्रसे सहायता मिले, हरिजनोको उसे लेना चाहिए, बशर्ते कि उससे उनके बुनियादी हितो पर प्रभाव न पडता हो। लेकिन सरकार जो भी मदद दे सकती है वह नियमोके अ‍तगत ही दे सकती है, उससे ज्यादा नही। हरिजन सेवक-सघ ऐसे किसी प्रतिब धसे बँधा हुआ नही है।

विधान सभा सरकारपर यह उचित दबाव डालनेके लिए कि वह हरिजन उत्थानके लिए धनकी व्यवस्था करे एक योग्य सस्था है। यह काम शायद एक प्रस्ताव पेश करके किया जा सकता हे। आप लोग श्री एम० सी० राजासे भी परामश कर सकते ह, और श्री राजाको जो मदद चाहिए आप लोग वह मदद उनको दीजिए।

अ‍तमें, महात्मा गाधीने देशके कुछ भागोमे हालमें हरिजनोके साथ हुए क्रूर व्यवहारकी चर्चा की। उन्होने मेरठमें बेगारके सवालपर हाल ही में जमींदारो द्वारा हरिजनोके मारे पीटे जानेकी एक घटनाका उल्लेख किया जिसमें एक हरिजनकी मृत्यु हो गई थी। इसी प्रकारकी एक दु खद घटनाका समाचार कानपुरसे भी मिला था, जिसके बारेमें गाधीजी ने कहा कि पूरे तथ्य अभीतक मालूम नहीं ह। इसी प्रकार चेट्टिनाडमे नट्टरो और हरिजनोके बीच पुराना झगडा चला आ रहा था। वहाँ हरिजनोको अपनी पसन्दका कपडा नही पहनने दिया जाता था। गाधीजीने कहा कि नट्टरोमें से कुछ लोग तो बहुत ही जिद्दी ह और अपने स्वयंको प्रथाके आधारपर उचित

१ **हरिजन**के १८ २ १९३३ के अकमें प्रकाशित, देखिए खण्ड ५३, पृष्ठ ३५७ भी।

२ २५ सितम्बर १९३२ को, देखिए खण्ड ५१, पृ० १४८-४९।

ठहराते है। क्रूरताके इन और अन्य दृष्टान्तोंके बारेमें सदस्य लोग विधान सभामें सवाल पूछ सकते हैं और कुछ करनेकी कोशिश कर सकते हैं।[1]

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २८-१-१९३५

१४९. सलाह विद्यार्थियोंको[2]

दिल्ली

[२८ जनवरी, १९३५से पूर्व]

हम वहाँ चिकित्सा कार्य करना चाहते हैं। महात्माजी, हम अपना कार्य कैसे करें? क्या आप हमें कुछ बतायेंगे?

गांधीजी: दक्षिण आफ्रिकामें अपने प्रवासके आरम्भिक कालसे ही मुझे इस कार्यका अनुभव है। मुझे अपनी बात एक चेतावनीके साथ आरम्भ करने दो। थोड़ी-सी चिकित्सा-सहायता देकर तुम उनकी वास्तवमें कोई सहायता नहीं करोगे। तुम्हें उन्हें सफाई और स्वच्छताकी शिक्षा देनी होगी। केवल उसीसे मलेरियाको रोका जा सकता है। कुनैनसे मलेरियामें कमी तो होती है, लेकिन उससे मलेरिया समाप्त नहीं होता। आवश्यक यह है कि निरोधक चिकित्सा की जाये और रोगीके ठीक होनेके बाद उसकी देखभाल की जाये। वे यह नहीं जानते कि आहारमें लापरवाही बरतनेसे शरीरमें मलेरियाके कीटाणुओंको पनपनेका मौका मिलता है। वे कोई भी और प्रत्येक चीज खाते हैं। लेकिन मलेरियाके रोगीको स्टार्च और ज्यादा प्रोटीन नहीं लेना चाहिए और बीमारीके बाद स्वास्थ्य-लाभके दौरान उसे मुख्यतः दूध पीना चाहिए। यही तुम्हें उनको बताना है। उन्हें यह बताओ कि रोगसे कैसे बचा जा सकता है। मैं तुम्हें इस बातपर बधाई नहीं दूँगा कि तुमने कुनैनकी एक हजार गोलियाँ बाँटी हैं। यदि हो सके तो उन्हें सफाईकी व्यावहारिक शिक्षा दो। वहाँ फावड़े और बेलचे लेकर जाओ और थमे हुए पानीवाले तालाबोंको पाट दो, नालियोंकी व्यवस्था पर ध्यान दो, उनके कुओंको ठीक तरहसे साफ कराओ और देखो कि उनके ताल गन्दे न रहें। स्वर्गीय प्रिंसिपल रुद्र, जिनके घरमें रहनेका मुझे सुखद सौभाग्य प्राप्त हुआ था, मुझे बताया करते थे कि किस प्रकार दिल्लीके आसपासके उन दलदलों और तालोंका पाट दिया गया था जहाँ मच्छर पला करते थे। हमें अब जनताको वह काम करनेकी शिक्षा देनी है जो नगरपालिकाएँ या स्थानीय निगम धनाभाव अथवा अन्य किन्हीं कारणोंवश नहीं कर पा रहे हैं।

१. गांधीजीके बोल चुकनेके बाद थोड़ी देर बहस हुई, जिसमें आसफ अली, च० राजगोपालाचारी, एस० सत्यमूर्ति, के० नागेश्वर राव तथा अन्य लोगोंने भाग लिया।

२. महादेव देसाई लिखित २८-१-१९३५ की 'साप्ताहिक चिट्ठी' से उद्धृत। सेंट स्टीफेन कॉलेजके प्रोफेसर विसर कुछ छात्रोंके साथ एक शामको गांधीजीसे मिलने आये थे।

ओर सबसे बढकर उन्हे बताओ कि वे अपने गावको गन्दगी और धूलसे बचाये। अगर तुम स्वेच्छासे भगीका काम करनेको तैयार नही हो तो यह काम तुम्हारे लिए सबसे कठिन काम सिद्ध होगा। तुम्हे चाहिए कि लगातार कई दिना तक सडकोको साफ करो और उन्हे यह बताओ कि किस प्रकार वे एक ओर तो अपन स्वास्थ्यकी रक्षा कर और दूसरी ओर अपनी अच्छी खादको सुरक्षित करे। इस विषय पर पूरेकी 'रूरल हाइजीन' (ग्रामीण सफाई) एक बहुमूल्य पुस्तिका हे। तुम्हे उनको यह समझाना होगा कि वह अपने मलको ना इच गहरे गढेमे मिट्टीसे दबा दे। इसके पीछे सिद्धान्त यह है कि मिट्टीमे जान है और उतनी गहराईतक सूर्यकी किरणे पहुँचती है। थोडे समयमे ही वह सारा मल अच्छी खाद बन जायेगा और उस भूमिपर उत्तम सब्जिया उगाई जा सकती है।

अच्छा होगा कि मै तुम्हे अन्दरूनी सफाईकी बात भी बता दू। तुम्हे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे आहारकी समस्याको भी समझना चाहिए। यह भी जानना चाहिए कि कौन से खाद्य पदार्थ विटामिनयुक्त है। उन्हे यह बताओ कि हाथका कुटा हुआ चावल खाये बिना चाकर निकाला हुआ आटा खाड और अपने खेतमे उगाई हुई हरी सब्जिया खाये ओर कोल्हूसे निकाला हुआ ताजा तेल प्रयोग करे। आजकल प्रत्येक डाक्टर इस बातपर जोर देता हे कि हरी सब्जी कच्ची खाई जाये। प्रत्येक किसान बिना किसी कठिनाइके हर प्रकारकी भाजी उगा सकता है और अपने नियमित भोजनके अगके तौर पर उसे कच्ची खा सकता है। युद्धके दिनोमे यह पता चला कि सुखाई हुई ओर डिब्बाबन्द सब्जी हानिकारक होती है और नीबू रस नही, वरन ताजे नीबूसे निचोडा हुआ रस स्कर्वी रोगको रोकता है।

हम लोग आपके अत्यन्त आभारी ह। क्या आप हमे यह भी बतायेगे कि हम जो छोटा सा हरिजन स्कूल चला रहे ह, उसमे क्या पढाये?

वही सब जो मैने बताया है। मै तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि स्वास्थ्य और सफाईके बारेमे अच्छे ज्ञानकी तुलनामे लिखने पढनेका ज्ञान कुछ नही है। दरियागजके स्कूलमे मैने बहुत सी हरिजन कन्याओको पढते हुए देखा है। मैने ज्यो ही उन्हे देखा, मेरी आखे तुरन्त ही उनके गन्दे नाखूनो उनकी गन्दी नाको, उनकी बालियो और नथुनियो पर जमे हुए मैलपर गइ। शायद यह बात कभी उस भली महिलाके ध्यानमे आई ही नही थी जो उनकी प्रभारी है। उन्हे सबसे पहले सफाईका पाठ पढाओ। साहित्यिक प्रशिक्षण स्वय कोई बहुत महत्वकी बात नही है। उन आवश्यक बातो पर ध्यान रखो जो मैने तुम्हे बताई है। यह याद रखो कि बिना पढे-लिखे व्यक्तियोने बडे-बडे राज्योपर बिना कठिनाईके राज्य किया है। प्रेसिडेन्ट क्रूगर अपने हस्ताक्षर मुश्किलसे कर पाते थे। उन्हे लिखना-पढना अवश्य सिखाओ, परन्तु उसकी जडपूजा मत करो।

एक और प्रश्न है। ठडे मौसमके लिए हमारे पास कुछ धन है। उससे लाभ पानेवाले सबसे योग्य कौन हो सकते ह?

ठीक है, वह धन हमारे हवाले कर दो या फिर हरिजन सेवक सघको दे दो।

नही, हम स्वय उसका प्रबन्ध करेगे।

ठीक है, तो नगरकी ग दी बस्तीमे जाओ। वहा जो सबसे गरीब दिखे उ हे दे दो।

ग दी बस्ती में?

बेशक। वाइसरायके क्वाटरोमे निश्चय ही नही, क्योकि तुम देखोगे कि वहाके अस्तबल भी हमारे घरोसे अधिक साफ और आरामदेह होगे। बहुत दूर जानेकी आवश्यकता भी नही है। तुम्हे अपने आसपास ही ऐसे व्यक्ति मिल जायेगे। उ हे उसकी बहुत आवश्यकता है जो तुम लोग देना चाहते हो। उदाहरणके लिए, मीराबहनने देखा कि यहा चौकीदार सर्दीमे ठिठुर रहा है। उन्होने उसे अपना कम्बल दे दिया, उसी प्रकार जिस प्रकार कि डा० अ सारीने उ हे (मीराबहनको) अपना शाल इग्लैंडमे दिया था।

लेकिन, महोदय, कभी-कभी वे लोग गरीब होनेका बहाना करते ह हालॉकि वास्तवमें वे गरीब नहीं होते। हम यह कसे पता चलाये कि वास्तवमें वे गरीब ह या नहीं?

तो तुम ईश्वर बनना चाहते हो। भगवानके लिए यह मत समझो कि ईमानदारीके ठेकेदार केवल तुम्ही हो।

केवल एक गाव — वजीराबाद[1] — पर ही पूरा ध्यान दो, इसे एक आदश गाँव बनाओ और फिर मुझे अपने कायका निरीक्षण करनेके लिए बुलाओ। मेरा आशीर्वाद लो और बादमे मेरे पास प्रमाण पत्र प्राप्त करनेके लिए आओ।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ८-२-१९३५

१५० बातचीत एक सराफसे[2]

[२८ जनवरी, १९३५से पूव]

"मेरी मनोकामना पूरी हो गई", वह हषसे चिल्लाया और उसने सौ रुपयेका नोट और सूत गाधीजी को दिया। गाधीजी ने उससे पूछा

तुम क्या करते हो? मुझे याद पडता है कि मैंने तुम्हे कही देखा है। तुम कहा से आये हो?

[स] म मद्राससे आया हूँ और म कुछ नही करता। म तो आपके नाम की माला जपता हूँ और इसीमें खुश हूँ।

[गा] लेकिन यदि तुम कुछ नही करते तो तुम्हे यह एक सौ रुपये कहा से मिले।

१ एक वष पहले बाढ़ आनेपर प्रोफेसर विसर और इन छात्रोने वजीराबादमें सहायता काय किया था।

२ महादेव देसाईकी २८ १ १९३५ की 'साप्ताहिक चिट्ठी' से उद्धृत।

ओह, महात्माजी, मेरे पास कुछ और भी है।

तब, वह भी क्यो नही दे देते ?

उसने सौका एक और नोट निकाला और मुझे दे दिया।

लेकिन मुझे यह तो बताओ कि तुम करते क्या हो ?

म एक सराफ हूँ। लेकिन अब म यह धधा नहीं करता। मने अपनी सारी सम्पत्ति तीन पुत्रोमे बाट दी है और अब म आजाद हूँ, और आपकी सेवा कर सकता हूँ। आप मुझे अपना भगी बना ले, मुझे और कुछ नही चाहिए।

तो तुमने अपनी सारी सम्पत्ति अपने बेटोमे बाट दी हे ओर मेरे लिए कुछ नही रखा ?

अरे, नही, सब कुछ आपका है। मने तो एक हजार रुपया लानेकी बात सोची थी और मेरे पुत्रने एक हजार रुपया दिया भी था, लेकिन बेमनसे। उसे इस साल कुछ नुकसान उठाना पडा था, इससे वह इतनी बडी रकम खुशीसे नही देना चाहता था। मने उससे कहा "आधा रुपया तुम रख लो और जब कभी म मॉगू तब मुझे दे देना।"

इतना कहनेके बाद सराफने बाकीके सारे रुपये निकालकर मुझे दे दिये। गाधीजी खिलखिलाकर हँस पडे और कहा

तुम वापस कैसे जाओगे ? भाडेके लिए कुछ रुपया तो अपने पास रख लो।

नही। म पसेके लिए तार दे सकता हूँ। मुझे किसी चीजकी जरूरत नही हे। आप सारा पैसा ले ले, महात्माजी, यह सब पसा आपका है।

अब तुम्हारा क्या करनेका विचार है ?

कुछ नही। आप मुझे अपना विनम्र सेवक जान अपने पास रख ले। यदि नही तो आप कुछ दिनोके लिए मुझे यहा रहने दे, फिर म अपने घर राजपूतानामें चला जाऊँगा।

गाधीजी ने उसके ठहरनेके लिए कुछ निर्देश दिये और नरमीसे कहा

महादेव, इसे सारे रुपये वापस कर दो। हम सारा रुपया कैसे ले सकते है ? या फिर एक सौका नोट रखकर बाकी वापस कर दो।

"बेकारकी बात", गर्वीले दानीने कहा "मने जो रुपया आपको दिया है उसे अब मै नही छूऊँगा। महात्माजी, विश्वास कीजिए, यह सब आपका है। म तो एक हजार रुपया लाना चाहता था, लेकिन वसा नही कर सका।"

यदि तुम मुझे मै जो मॉगू सो दोगे, तो मुझे एक करोड रुपया दे दो।

मै दूगा। लेकिन मुझे हुण्डी ईश्वरको भेजनी होगी और यदि म सन्त नरसिह मेहता होता तो कदाचित भगवान उसे भुना देते।

अच्छा, अच्छा, यदि सब मारवाडी तुम्हारी तरह होते तो कितना अच्छा होता। तुम तो मुझे तुम्हारे पास जो है वह सब दे रहे हो जबकि लखपति तो मुझे केवल कुछ सौ अथवा हजार रुपये ही देते है।

गाधीजी अपनेको रोक नही सके और उन्होने बच्चोकी तरह खिलखिलाते हुए कहा

लेकिन तुम अपने पुत्रोसे भी मुझे कुछ देनेके लिए क्यो नही कहते ? वे अकेले ही अपने धनका उपभोग क्यो करे ?

आप यकीन मानें, वे अवश्य देंगे। मेरे पास अभी भी थोडी चादी है, वह आपकी है। मेरा तो कुछ भी नही। और आज जबकि मने आपके दशन कर लिये ह और आपके पाव छुए ह, मेरी तो सारी मनोकामनाएँ पूण हो गई ह।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ८ २ १९३५

१५१ पत्र रमणीकलाल मोदीको

२८ जनवरी, १९३५

चि० रमणीकलाल,

तुम्हारा पत्र मिला है। यदि तुम महीनेमे एकबार तीन पैसे[1] खच करोगे तो मुझे सन्तोष होगा। नाथजीके साथ जितना समय बिताना उचित जान पडे उतना बिताना। यह व्यथ नही जायेगा। गावामे जानेकी बात नई है, इससे घबराना नही। जैसे कि ग्यारह व्रत[2] नये हो अथवा पुराने, हमे उनसे घबराना नही है उसी तरह इसमे भी घबरानेका कोई कारण नही है। जबतक हमारा मन ग्रामीण नही हो जाता शरीर ग्रामीण नही हो जाता और जबतक अपनी आवश्यकताओके लिए हमे गावोमे जो मिल जाये उसीसे हम सन्तोष मानना नही सीख लेते, तबतक हमे किनारा नही मिलने वाला है।

गगाबहनसे कहना कि दवा देनेका काय हमारा अन्तिम लक्ष्य नही है। हमारा लक्ष्य उससे भी आगे है। उससे कहना कि जब वह तैयार हो जाये तब मुझे पत्र लिखे।

बापूके आशीर्वाद

श्रीयुत रमणीकलाल मोदी
सत्याग्रह कैम्प
बोचासण, बरास्ता आणद
बी० बी० एड० सी० आई० रेलवे,

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१८२) से

१ गांधीजीको पोस्ट-कार्ड लिखनेके लिए।

२ आश्रममें पालन किये जानेवाले—अहिसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शारीरिक श्रम स्वाद पर नियत्रण, निभयता, धार्मिक सहिष्णुता, स्वदेशी, अस्पृश्यता निवारणके व्रत, देखिए खण्ड ३६, पृ० ४१९ २४।

१५२ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

२८ जनवरी, १९३५

चि० नरहरि

तुम्हारा पत्र मिला। गाय-भैंसके दूधके बारेमे लोगोकी राय जानूगा। पालेसे हुए नुकसानके बारेमे जगह जगहसे बुरे समाचार मिले है। क्या पपीतेके पेड नष्ट हो गये है अथवा केवल मोसमके फलोको ही नुकसान पहुँचा है? हममे से किसीको ऐसी फसलकी जानकारी है जो पालेसे नही मरती हो? वहाके कृषि विभागसे यदि यह जानकारी सहज ही मिल सकती हो तो उसे प्राप्त करना।

गायका दूध बढ जानेका तुम क्या कारण समझते हो?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९०६९) से।

१५३ पत्र वसुमती पण्डितको

२८ जनवरी, १९३५

चि० वसुमती,

मेरे पत्र तेरे पीछे घूमते जान पडते है। स्याहीके बारेमे चदूभाईको सीधे पत्र लिख रहा हूँ।

१० फरवरीतक मद्रास जानेके लिए तुझे तैयार हो ही जाना चाहिए। तू बोचासणमे पाच वष लगाये, यह उचित है। मेरी तो यह इच्छा हे कि तू जहा चाहे वहा स्थायी रूपसे बस जा।

हम आज वर्धा जा रहे है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती वसुमतीबहन
माफत रसिकलाल भोगीलाल
विसनगर, बरास्ता मेहसाणा

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९३९४) से। सी० डब्ल्यू० ६३९ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित।

१५४ पत्र : वालजी गो० देसाईको

२८ जनवरी, १९३५

चि० वालजी,

मुझे ऐसा याद पडता है कि मै तिल्लीके [बढ जानेके] बाबत लिख चुका हूँ। लेकिन यह भी हो सकता है कि मैंने केवल लिखनेका इरादा ही किया हो और लिखना रह गया हो। जिस व्यक्तिकी तिल्ली बढ जाये उसे कमसे कम दूध और फलोका रस पीनेसे लाभ हो सकता है। डाक्टर लोग इसके लिए खास दवा देते तो जरूर है, लेकिन उसका कितना असर होता है सो मै नही जनता। खुराकका उपयुक्त प्रयोग तो प्रसिद्ध है। इससे बच्चोकी यह बीमारी जाते देर नही लगती।

मै जगदीश शास्त्रीके निकट सम्पकमे आया हूँ। उसके पास उसके निबन्धकी जो रूपरेखा है सो मै पढ गया हूँ और मने उससे आनन्दशकरभाई और वैद्यके मतके बारेमे भी बातचीत की है। यह नोजवान काफी मेहनती है। मैंने उसे मेरी जो राय है उसके अनुसार नये ढगसे पुन लिखनेका सुझाव[1] दिया है। मैंने नये प्रकरणोकी योजना कर दी है। आशा है कि वह नये शीषकोके अनुसार उसे पुन लिखनेका प्रयत्न करेगा। सम्बन्धित साहित्य कहा कहासे मिल सकता है, यह भी मैंने उसे बताया है। अब देखे गोमाताकी ओर हमारी कसी किस्मत हे।

तुम्हारे लेख मिले है। कागावा[2] के मित्रसे सम्बधित अश मैंने कुछ सक्षिप्त कर दिया है। और चूकि हमारे पत्रका मिशनरियोके साथ कोई सम्बन्ध नही है, इसलिए मने उस अशको भी सक्षिप्त कर दिया है।

गोरक्षावाला निबन्ध मै कूच[3] मे साथ नही ले गया था?

तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है? आखका क्या हाल है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

आज शाम हम वर्धाकी ट्रेन पकडनेवाले है। चित्रे कल हरद्वार गया।

गुजरातीकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ७४७०) से, सौजन्य वालजी गो० देसाई।

१ देखिए 'पत्र जगदीश शास्त्रीको", पृ० १०२।

२ जोसेफ कागावा एक जापानी ईसाई मिशनरी।

३ मार्च अप्रैल, १९३० का दाँडी कूच, देखिए खण्ड ४३।

१५५ पत्र विद्या आ० हिंगोरानीको

२८ जनवरी, १९३५

चि० विद्या,

तुमारा खत मिला। तुमारी सेहतका कुछ खबर नही दिया हे। पिताजीके साथ बहूत महोबतसे दोनोको रहना हे। आनद बिलकुल अच्छा हो गया? वर्धा लिखो। गगाबहनको लिखता रहूगा।

बापुके आशीर्वाद

माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनद तो० हिंगोरानी।

१५६ सलाह काग्रेसियोको[1]

नागपुर
२९ जनवरी, १९३५

मै इस बातपर जोर देता हूँ कि लडकियोको औद्योगिक शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे वे आत्मनिभर बनेगी। यदि वे विवाहित नही है तो उन्हे दूसरोपर निभर नही करना होगा। ओर यदि वे विवाहित है तो घरमे (पतिका) हाथ बँटा-येगी। यदि विधवा है तो अपनी आजीविका कमा सकेगी।

[अग्रेजीसे]

हिन्दू ३०-१ १९३५

१ वर्धा जाते हुए गाधीजी जब नागपुरसे गुजरे तब स्टेशनपर बड़ी सख्यामें काग्रेसजन गाधीजीसे मिले थे।

१५७ पत्र दिनशा मेहताको

[२९][1] जनवरी, १९३५

प्रिय दिनशा,

तुमने महादेवको जो पत्र लिखा उसे मै पहले नही देख सका। मुझे नही मालूम कि मै तुम्हारी अपीलको किस प्रकार फलप्रद बनाऊँ। सस्थाके आर्थिक प्रब धके लिए इसके यासके अलावा मै केवल एक ही योजना बता सकता हू और वह तुम्हारी लगभग शत प्रतिशत सफलता है। लेकिन वह केवल काय कुशलतापर ही निभर नही है। भगवानकी भी सहायता मिलनी चाहिए। यदि वह तुम्हे सफलता दे तो यह एक पूण योजना होगी। यदि वह ऐसा नही करता तो तुम स्वय जो कुछ भी करोगे, बेकार ही होगा। मै जानता हूँ कि इससे तुम्हे कोई सतोष नही मिलेगा। लेकिन जिसे तुम मेरा परिपक्व विवेक कहते हो वह मुझे यही नि सकोच कहनेको कहता है[2]।

खम्भाताके बारेमे जानकर दु ख हुआ। मुझे आशा है, वे तेजीसे सँभलते जा रहे होगे। आमूल परिवतनका तुम्हारा सुझाव निश्चय ही एक ठोस सुझाव हे। उ हे अवश्य ही इसे अपनाना चाहिए। मै तुमसे पूरी तरह सहमत हूँ कि किसी भी कीमत पर उ हे बम्बई छोड देनी चाहिए। यह पत्र तुम उ हे दिखा सकते हो।

कृपया मुझे वर्धाके पतेपर लिखो। यह पत्र मै गाडीमे लिखा रहा हूँ जो हमे वर्धा ले जा रही है।

श्री डी० के० मेहता
दि नेचर क्योर क्लिनिक
६, तोडीबाला रोड, पूना

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ साधन सूत्रमें ३० जनवरी है। पर तु गाधीजी २९ तारीखको रेलगाडीमें थे।

२ बहरामजी खम्भाता, देखिए पत्र बहरामजी खम्भाताको ', ३० १ १९३५।

१५८ पत्र हरिभाऊ फाटकको

वर्धा
२९ जनवरी, १९३५

प्रिय हरिभाऊ,

आपका पोस्टकाड मिला। स्पष्ट है कि आप 'हरिजन' नही पढ रहे ह। उसमे मैने डा० अन्सारी और अन्य डाक्टरोके कथन उद्धत किये है।[1] स्वास्थ्यकी दष्टिसे बिना पालिश किये चावलकी उपयोगिता सवत्र स्वीकार की गई हे। सम्बलपुर ओर बगालके कई हिस्सोमे अभी भी यह खाया जाता है। पकवान का प्रमाण तो उसके खानेमे ही मिलता है। आपको स्वय इसे आजमाना चाहिए। आपका यह कहना बिलकुल ठीक है कि बिना पालिश किया चावल देरसे पक्ता है, परन्तु यदि यह ठीक तरह से पका लिया जाये तो इसे पचाना कठिन नही होता। इसके देरसे पकनेका सीधा-सादा कारण यह हे कि बिना पालिश किये चावलमे काबनयुक्त लवण ओर प्रोटीन होते है। पालिश किया हुआ चावल स्टाच ही होता हे। स्टाच हमेशा जल्दी पकता है। बिना पालिश किया चावल बिना छिलका उतारी दाल या सब्जीके समान होता है। यदि दाल और सब्जीके छिलके उतार दिये जाये तो वे जल्दी पक जाती ह, परन्तु वे कम पौष्टिक भी होती है। पौष्टिक पदाथ देरसे पचते है। वैसा होना भी चाहिए, लेकिन इसीलिए उन्हे अपाच्य नही समझा जाता है। यदि आप यह कहे कि बिना पालिश किया हुआ चावल आप उस मात्रामे नही खा सकते जिस मात्रामे पालिश किया हुआ खा सकते है, तो आपका कहना बिलकुल सही होगा। परन्तु हमारा उद्देश्य पेटमे जितना ठूसा जा सके उतना ठूसना नही है, बल्कि सन्तुलित आहारको उचित औसतमे लेना है। पालिश किया हुआ चावल खाना देशके स्वास्थ्य और सम्पत्तिको बरबाद करना है।

आपको याद होगा कि आपने मेरे पास डॉक्टरी सम्मति भेजी थी जिसके अनुसार भैसके दूधसे गायके दूधको बेहतर समझा गया था। मै आपको बता दू कि विशेषज्ञकी जो सम्मति आपने दी थी वह निर्णायक नही थी। कथित विशेषज्ञने केवल यही बताया था कि बच्चोके लिए गायका दूध भैसके दूधसे बेहतर है। वयस्कोके लिए भी भैसके दूधसे गायका दूध अधिक उपयोगी है — यदि ऐसी कोई निर्णायक सम्मति ईमानदारीसे प्रमाणित की जा सके, तो मै वह चाहता हूँ।

आपका
बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३७३) से।

१ देखिए 'गाँववालोके हाथ' २८ १२ १९३४।

१५९ परिचय-पत्र

२९ जनवरी, १९३५

अपने अमरीकी मित्रोको,

श्रीयुत कोदण्ड राव कुछ समय अमरीकामे रह चुके है। ये सर्वेटस आफ इडिया सोसायटीके सदस्य है। इस सोसायटीकी स्थापना स्वर्गीय गो० कृ० गोखलेने की थी जिन्हे मै अपना राजनीतिक गुरु मानता हूँ और यह बात मैने कई बार कही है। जब राइट ऑनरेबल श्रीनिवास शास्त्रीको दक्षिण आफ्रिकामे भारत सरकारका एजेट-जनरल नियुक्त किया गया था तो श्रीयुत कोदण्ड राव उनके निजी सचिव थे। अमरीका जानेसे पूर्वतक ये 'सर्वेटस आफ इडिया' के सम्पादक थे। ये राजनीतिमे नरमपथी है और अनेक सामाजिक समस्याओपर प्रगतिशील विचार रखनेवाले एक उत्साही समाज सुधारक है। जिन दिनो मुझे यरवदा जेलसे अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन चलानेकी छूट मिली थी, उन दिनो इन्होने मेरी बहुत अधिक सहायता की थी। मुझे इसमे तनिक भी सन्देह नही है कि ये जहा भी जायेगे लोग इनकी बातोको शान्ति और शिष्टताके साथ सुनेगे। इन्हे जो भी मदद दी जायेगी, मै उसके लिए अत्यन्त आभारी रहूँगा।

मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो नकल (जी० ए० ६२९९)से।

१६० पत्र जी० सीताराम शास्त्रीको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय सीताराम शास्त्री,

मेरे पास आपके तीन पत्र है, उनमे से दोके उत्तर देनेकी कोई आवश्यकता नही है।

क्या आपने अपना फॉम अच्छी तरहसे भरकर कुमारप्पाके पास भेज दिया है? मूगफलीके तेलसे दिया जलानेका प्रयोग यदि सफल हुआ, तो इसके दूरगामी परिणाम होगे। आशा है कि जो भी यह प्रयोग कर रहा है वह असफलताओके बावजूद अपना प्रयास जारी रखेगा। मुझे दुःख है, आप पर्याप्त चन्दा इकट्ठा नही

कर सके। फिर भी आपको इससे चिन्तित नही होना चाहिए। आप सिर्फ जितनी चादर हो उतने ही पैर फैलाइये।

आपका
बापू

श्री जी० सीताराम शास्त्री
विनय आश्रम
चन्डोल डाकखाना, जिला गुटूर

अग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७३८) से।

१६१ पत्र अब्दुल गफ्फार खाँको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय खान साहब,

अधिकारियोके सौजन्यसे मुझे आपका अविलम्ब उत्तर मिल गया। मै अब वर्धा आ गया हूँ। यहा मै कमसे कम कुछ दिन तो हूँ ही।

मेहरताजको मुझे दिल्लीमे डा० खान साहबके यहा छोडना पडा। विधान-सभाकी बैठक तकके लिए उन्होने वहा एक मकान ले लिया है। बेगम खान साहेब आ गई है। वे तथा उनकी पुत्री दोनो बहुत अच्छी तरह है। आपका पत्र मेहरताजको समझा दिया गया था, लेकिन वह वर्धा नही आयेगी। उसकी दिक्कत यह है वह इतनी सुसभ्य है और इतना औचित्य बरतना चाहती है कि उसे जो सुविधा दी जाती है वह उसका लाभ नही उठाती। वह वर्धामे उसी तरह रहना चाहती है जैसे अन्य लोग रह रहे है। शारीरिक और मानसिक रूपसे वह ऐसा करनेमे असमर्थ है। और यह जानते हुए भी कि उसे अपनी इच्छानुसार रहनेकी पूरी स्वतन्त्रता है, वह जैसे रहना चाहती है वैसे रह नही सकेगी। मरियमके रूपमे उसे अपनी उम्र और प्रकृतिकी सहेली मिल गई है, इसलिए वह उसे छोडना नही चाहती। वह जोहरा[1] की पक्की सहेली बन गई है, जिसने मेहरताज पर अपना सारा प्यार उडेल दिया है। डॉ० अन्सारीके घर उसे वे सारी छोटी-मोटी चीजे मिल गईं जिनकी कि वह अभ्यस्त थी और उन्हे लेनेमे उसे कोई हिचकिचाहट नही होती थी, क्योकि सारा परिवार ऐसा ही करता था जैसा कि वह करती थी। इसलिए मेहरताजके लिए यह असम्भव था कि जो वातावरण उसे पसन्द था उससे नाता तोडकर वह ऐसे वातावरणमे आए जो उसे पसन्द नही था।[2] इसीलिए हम सभीने सोचा कि फिलहाल मेहरताजको

१ डॉ० मु० अ० अन्सारीकी पुत्री।
२ देखिए "पत्र जमनालाल बजाजको" पृ० ६६-६७ भी।

डा० खान साहबके साथ रहने देना ही सबसे अच्छा है। उसे उर्दू पढानेका प्रबन्ध किया जायेगा। उसने वायदा किया है कि वह मुझे नियमित रूपसे पत्र लिखेगी। मुझे विश्वास है कि मैंने जो-कुछ किया है उससे आप सन्तुष्ट हो जायेंगे तथा उसके बारेमें चिन्ता नहीं करेंगे। आखिर ईश्वर जिस प्रकार वयस्कोंके माध्यमसे अपना कार्य करता है, उसी प्रकार बच्चोंके माध्यमसे भी करता है। और हम मेहरताज जैसी बढती बच्चियोंको नरमीसे रास्ता ही दिखा सकते हैं।

आपको गनीके बारेमें भी फिक्र करनेकी जरूरत नहीं है। इन परिस्थितियोंमें जो कुछ भी किया जा सकता है, हम कर रहे हैं। आपको यह जानकर खुशी होगी कि जमनालालजीके प्रयत्नोंसे सादुल्ला खाकी सगाई सोफिया सोमजीके साथ हो गई है।[1] इसी २६ तारीखको सगाईकी घोषणा की गई है। हम सभीने तारसे अपना आशीर्वाद भेजा है।[2] सादुल्ला अभी बम्बईमें ही है। जमनालालजीका कान अभी बिलकुल ठीक नहीं हुआ है। अभी भी दाने निकलते रहते हैं। उन्हें अभी एक और महीने बम्बईमें रहना होगा। मेहरताज और गनीके बारेमें आप जो-कुछ हिदायतें देना चाहते हों कृपया मुझे बतायें। लाली भी डा० खान साहबके साथ दिल्लीमें है। लालीके बारेमें क्या तय किया गया है, यह मैं आपको बादमें बताऊँगा।

खान साहब अब्दुल गफ्फार खां
'बी' श्रेणी कैदी
सेन्ट्रल जेल, साबरमती

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१६२ पत्र आर० एम० मैक्सवेलको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय श्री मैक्सवेल,

आपकी कृपासे मुझे खान साहब अब्दुल गफ्फार खांसे अपने उस पत्रका उत्तर मिल गया है जो आपने कृपा करके उनके पास भेज दिया था। खान साहबके उत्तरसे एक और पत्र आवश्यक हो गया है, और शायद पत्रोंका आदान-प्रदान तबतक जारी रखना पडेगा जबतक उनके बच्चोंके सम्बन्धमें कुछ निश्चित नहीं हो जाता। इसके साथ मैं खान साहबके पत्रका उत्तर[3] भेज रहा हूँ जिसे, मुझे आशा है, आप उन तक पहुँचा देंगे।

१ देखिए 'पत्र जमनालाल बजाजको', पृ० १२८ भी।
२ तार उपलब्ध नहीं है।
३ देखिए पिछला शीर्षक।

खान साहबका जो पत्र मिला है उसमे निम्न अनुच्छेद है

यहाँकी हालत मेरे अनुकूल नही है। यदि सम्भव हो तो मै चाहूँगा कि मुझे सीमा प्रान्त या पजाबकी किसी जेलमें स्थानान्तरित कर दिया जाये। हो सकता है कि स्थान परिवतनसे मेरा स्वास्थ्य सुधर जाये।

मुझसे मुलाकात करनेके लिए डा० खान साहबकी बेगमने एक पत्र जेल अधीक्षकको लिखा था। मुझे आश्चर्य है कि वे लोग बादमें यहाँ आये क्यो नहीं? यदि डा० खान साहब मुझसे मिलने आयें तो म उन्हे मेहरताजके बारेमे सारी बाते बता दूगा।

क्या खान साहब अब्दुल गफ्फार खाको सीमा प्रान्त या पजाबकी किसी जेलमे स्थानान्तरित किया जा सकता है? क्या डा० खान साहब या उनका कोई रिश्तेदार खान साहब अब्दुल गफ्फार खासे जेलमे मिल सकते है?

हृदयसे आपका,

सलग्न १

आर० एम० मैक्सवेल महोदय
सरकारके सचिव
बम्बई

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१६३ पत्र अब्दुल गनीको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय गनी,

तुम्हारा पत्र मिला। फिलहाल तुम्हे जितने पैसेकी जरूरत हो, तुम रामेश्वरसे ले लो।

पिताजीका जो पत्र मुझे मिला है, उसका स्वतन्त्र अनुवाद इसके साथ है। अपनी सन्तानके सम्बन्धमे पिताजीका जो सपना है वह अभी एकदम पूरा नही हो सकता। पिताजीको मैने जो पत्र लिखा है उसकी प्रति[1] से तुम्हे मालूम हो जायेगा कि मेहरताजको उस तरहसे शिक्षित नही किया जा सकता जिस तरह पिताजी चाहते है। डा० खान साहब ज्यादासे ज्यादा जो सम्भव है करेगे। उसका स्वाभाविक झुकाव डॉ० खान साहबके साथ रहनेकी ही ओर है। इसीलिए मने उसे तथा लालीको डॉ० के यहा दिल्लीमे रख छोडा है। लाली शायद देहरादून जाये। अब तुम्ही एक हो जो, यदि चाहो तो, खान साहबकी इच्छा पूरी कर सकते हो। लेकिन तुमपर या

1 देखिए पृ० १४५ ४६।

और किसीपर कोई जोर जबरदस्ती नहीं है। आशा है कि तुम खान साहबकी आशाके अनुरूप बननेका भरसक प्रयास करोगे।

तुम्हे मुझे लगातार पत्र लिखते रहना चाहिए, ताकि मैं जब पिताजीको कामकी बात लिखूं तो तुम्हारे पत्रांशोको उनमे जोड सकूं।

अब्दुल गनी
हिंदुस्तान शुगर मिल्स
गोला गोकरणनाथ

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१६४ पत्र एम० फरजंद अली खांको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

अपने मौनके दौरान मैंने आपकी बाते सुनी और मुझे खुशी हुई। जहाँतक कांग्रेसके संविधानका सम्बन्ध है, इस मामलेमे मैं कुछ नही कर सकता। लेकिन मेरा यह विचार है कि कांग्रेसकी कार्य-समिति संविधानमे ढिलाई करनेकी किसी योजनाका समर्थन नही करेगी। निस्सन्देह शर्ते न्यूनतम है।

अहरारोने[1] अहमदिया बिरादरीपर जो आक्षेप किया है उसके बारेमे मुझे कोई जानकारी नही है। यदि उन्होने उसी भाषाका प्रयोग किया है जो आपने मुझे बताई तो यह अत्यन्त ही दुर्भाग्यपूर्ण है। मेरा उन लोगोपर कोई प्रभाव नही है। क्या यह बेहतर न होगा कि आप इस बातको मौलाना अबुल कलाम आजाद या डॉ० अंसारीके सामने रखे?

हृदयसे आपका,

एम० फरजंद अली खां
हिज होलीनेस हजरत खलीफा-तुल मसीहके
गृह सचिव
कादियान (पंजाब)

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ मजलिस-ए अहरार, एक राष्ट्रवादी मुस्लिम पार्टीसे सम्बद्ध लोग।

१६५ पत्र जे० एस० नायकको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

काश, आप यह महसूस कर सकते कि आपने पत्र गुस्सेमे लिखा था! आपका हर तरह लिहाज किया गया था। जरा कल्पना कीजिए कि अगर हर किसीको जब वह चाहे मेरे पास बैठने दिया जाये, तो मेरी हालत क्या होगी। आज इतने अधिक जिज्ञासु लोग है कि चौबीसो घटे उनके सामने बैठे रहनेपर भी मै उनकी इच्छा पूरी नही कर सकता।

हृदयसे आपका,

श्री जे० एस० नायक, बी० ए, बी० एल०
रहमान मजिल, निकल्सन रोड
कश्मीरी गेट, दिल्ली

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१६६ पत्र मोतीलाल रायको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय मोतीबाबू,

आपका लम्बा पत्र मिला। निश्चय ही मैने यह नही चाहा था कि आप मेरे पत्रपर इतना अधिक समय लगाये। निस्सन्देह मै आपको समझता हूँ। मेरे पत्रमे शिकायत-जैसी कोई चीज नही थी, और आप यकीन माने कि प्रवतक-सघके बारेमे किसीने मुझसे शिकायत नही की है। यदि ऐसी किसी शिकायतके आधारपर मैने आपको पत्र लिखा होता, तो मैने निश्चय ही शिकायत करनेवालेका नाम आपको बताया होता या कमसे-कम यह तो बताया ही होता कि मेरे पास ऐसी कोई शिकायत आई है। मैने जो बात लिखी वह पूणतया आपके पत्रसे ही उठी थी। कजके सम्बन्धमे मेरा विचार बदला नही है। मेरी राय है कि हम लोगोको, जो मानव जातिकी सेवामे तल्लीन हैं, पैसेके मामलेमे साधारण व्यापारियोसे अधिक सावधानी

बरतनी चाहिए। लेकिन इस बातको मुझे और लम्बा नही करना चाहिए । मै जानता हूँ कि जो आपके अ त करणको अच्छा लगेगा आप वही करेगे।

हृदयसे आपका,

श्री मोतीलाल राय
प्रवतक भवन
६१, बऊबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१६७ पत्र आर० वी० शास्त्रीको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय शास्त्री,

गणेशनके सम्ब धमे तुम्हारी लम्बी रिपोट मैने पढी नही है। परन्तु महादेवने उसके विषयमे मुझे बताया है। मै स्वय उसे आद्योपा त पढनेकी सोच रहा हूँ। ठक्कर बापाने उसे पढा है। गणेशनको मैने जो पत्र लिखा[1] है उसकी प्रति इसके साथ है। मै चाहता हूँ कि तुम दढ सकल्पसे काम लो। हमे गणेशनकी खुद उसके विरुद्ध मदद करनी है। मुझे उससे बहुत लगाव है। लेकिन रुपये पैसेके लेन देनमे उसे सुधारा नही जा सकता। उसका समथन नही किया जाना चाहिए।

'हरिजन'के सम्ब धमे तुम्हारे पत्रका मै बेसब्रीसे इन्तजार कर रहा हूँ। मुझे अब पता चला है कि इसे पुन पूनामे ले आनेसे हर साल २,४०० रुपयेकी बचत की जा सकती है। यह कोई छोटी बात नही है। यदि यह अनुमान सही है तो इसे महज मद्राससे छापते रहनेके लिए ही हर साल २,४०० रुपयेका अतिरिक्त खच उठाना पाप ही होगा। यदि तुम्हे लगे कि इस उद्देश्यके लिए वर्धा आना उचित है तो तुम आ सकते हो। इस विषयपर मै तुम्हे नि सकोच होकर और सक्षेपमे ही लिख रहा हूँ, क्योकि मुझे भरोसा है कि तुम उन विषयोपर भी जिनसे तुम स्वय सम्बन्धित हो, दाशनिक दृष्टिसे तथा तटस्थ रहकर विचार कर सकते हो।

बकाया सामग्रीका उपयोग कर डालो, चाहे इसके लिए तुम्हे एक दोहरा अक ही क्यो न निकालना पडे। हम अधिक बकाया नही रख सकते। चूकि 'हरिजन'का क्षेत्र अब बढ रहा है, इसलिए स्थानकी माग पहलेसे अधिक ही होगी।

सलग्न १

श्री आर० वी० शास्त्री
मद्रास

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ उपलब्ध नही है।

१६८ पत्र आर० एस० विद्यार्थीको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

सिनेमा-उद्योगमे मेरी रुचि नही है। अपनी जिन्दगीमे मैने कभी सिनेमा नही देखा। मुझे मालूम है कि इससे क्या नुकसान पहुँचा हे। मेरे बहुत से मित्र कहते है कि इसका एक शैक्षिक महत्व है। मै इस दावेको सत्य या असत्य प्रमाणित नही कर सकता।

हृदयसे आपका,

श्री आर० एस० विद्यार्थी
आनन्द मठ
लखनऊ

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१६९ पत्र के० कृष्ण मेननको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

अपने पडोसकी पाचमा रात्रि-पाठशालाके सम्बन्धमे आपका पत्र मिला। आपको केरल हरिजन सेवक-सघके मत्रीका इस आशयका प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना चाहिए कि पाठशाला कुशलतासे काम कर रही है और शाखा पाठशालाकी मदद देनेमे असमथ है। और तब केन्द्रीय बोडके पास सहायताके लिए आवदन पत्र भेजना चाहिए। यदि वह सहायता देनेके लायक हुई तो मुझे इसमे सन्देह नही कि बोड आवेदन-पत्र पर पूरा पूरा विचार करेगा।

हृदयसे आपका,

श्री के० कृष्ण मेनन, बी० ए०
कूटीपुरम डाकखाना
दक्षिण मलाबार

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागज़ात, सौजन्य प्यारेलाल।

१७० पत्र रायुडु रगैयाको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपकी शिकायतका मम मै नही समझ सका हूँ। आपने आम बाते कही है। मै आपको सलाह दूगा कि जो भी बात है आप उसके सम्ब‑धमे स्थानीय सघके म‑त्री श्रीयुत बापिनीडुके साथ विचार-विमश करे।

हृदयसे आपका,

श्री रायुडु रगैया गारु
अध्यक्ष
पश्चिम गोदावरी जिला
आदि-आ‑ध्र सघ, एलोर (प० गोदावरी जिला)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१७१ पत्र न्यू इन्डस्ट्रियल एण्ड कर्माशियल एजूकेशन सोसाइटीके मन्त्रीको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपकी योजना मुझे नही जँची।

हृदयसे आपका,

म‑त्री
दि न्यू इण्डस्ट्रियल एण्ड कर्माशियल
एजूकेशन सोसाइटी
९९, लक्ष्मी रोड, पूना

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१७२ पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको

२९ जनवरी, १९३५

प्रिय ठक्कर बापा,

कल मै कोदण्ड रावसे सम्बन्धित पत्र तक पहुँच ही नही सका। इसलिए इसे आज गाडीमे ही लिखवाया है तथा गाडीसे ही डाकमे छुडवाया है। अपने मौनके दौरान भी दशकोके आते रहनेसे मै बहुत व्यस्त था, इसलिए लिखनेका सारा काम १० बजे बन्द कर देना पडा था। फिर भी मुझे इस बातकी तसल्ली है कि यह पत्र[1] इस सप्ताहकी समुद्री डाकमे निकलनेके लिए आपके पास समय रहते पहुँच जायेगा।

गणेशन और शास्त्रीको मै पहले ही लिख चुका हूँ।[2] मेरे पत्रोकी प्रतियाँ इसके साथ सलग्न है।

सलग्न ३

श्रीयुत अ० वि० ठक्कर
दिल्ली

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१७३ पत्र जे० अवस्थीको

वर्धा
३० जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

मै आपकी स्पष्टवादिता पसन्द करता हूँ। निश्चय ही यदि यह वह प्लेट नही है जिसे मैने नीलाम किया था तो आप बिलकुल निरपराध ह। मै इस प्लेटको अब आपको लौटा देनेके लिए कह रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

श्री जे० अवस्थी
बृज निवास
नया गणेशगज, लखनऊ

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागज़ात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए "परिचय पत्र" पृ० १४४।
२ देखिए 'पत्र आर० वी० शास्त्रीको', पृ० १५०।

१७४ पत्र 'निस्पृह' के सम्पादकको

३० जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपकी छपी हुई अपील मिली। मेरा सदेश यह है।

"अभयकरकी मृत्युको मै व्यक्तिगत क्षति मानता हूँ। इसका सीधा-सादा कारण यह है कि मै उनसे अपने सम्बन्धको अधिकाधिक मूल्यवान मानने लगा था और मुझे बडी उम्मीद थी कि वे देशकी कोई असाधारण सेवा करेगे। परतु भगवानको कुछ और ही मजूर था।"

हृदयसे आपका,

सम्पादक
'निस्पह'
नागपुर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१७५ पत्र सुरेन्द्रनाथ माहेको

३० जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। जातिया आज जिस रूपमे है मै उनके उन्मूलनका समर्थक हूँ। मै ऊँच नीचके हर भेदको मिटानेके पक्षमे हूँ। लेकिन मै वर्णाश्रम धर्मके उन्मूलनके पक्षमे नही हूँ, क्योकि वह मुझे जाति प्रथाके विरुद्ध लगता है। मै मानता हूँ कि हिन्दू विवाह कानूनमे सशोधनकी आवश्यकता है। यदि आप विधायकोको इस मामलेमे रुचि लेनेके लिए राजी कर सके, तो अच्छा होगा। मै यह नही कर सकता, क्योकि मेरा ऐसा विश्वास है कि मै जिन कार्योपर ध्यान दे रहा हूँ, वे फिलहाल कानून द्वारा विवाह-प्रथामे सुधार से कही अधिक महत्वपूर्ण है।

हृदयसे आपका,

श्री सुरेन्द्रनाथ माहे
१०, टेम्पल रोड,
लाहौर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१७६ पत्र एम० के० पाण्डुरगको

३० जनवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपके सुविस्तत पत्रके लिए धन्यवाद। आपकी पुस्तक मैंने एक मित्रको दे दी है जो आहार-सुधारमे रुचि रखते है। जैसे ही वह मेरे पास वापस आयेगी, उसमे जिन अध्यायोका आपने जिक्र किया है मै उन्हे पढूगा। आपको तथा आपकी पत्नीको जिन हालातसे गुजरना पडा है, उन्हे मै समझता हूँ।

हृदयसे आपका,

श्री एम० के० पाण्डुरग
ब्लिस कल्ट कालोनी, अम्बाट्टूर रेलवे स्टेशन
विल्लिवक्कम डाकखाना, मद्रास

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१७७ पत्र अच्युत पटवर्धनको

३० जनवरी, १९३५

प्रिय पटवधन,

बुनकरके मामलेको मेरे ध्यानमे लाकर आपने अच्छा ही किया। जब मै उडीसामे पद यात्रा कर रहा था तो मेरे सामने एक ऐसा ही मामला आया था। वह १०,००० बुनकरोसे सम्बन्धित था। मिलके कते सूतसे कपडा बुननेवाले बुनकरोके लिए कुछ भी न करनेका मैंने दृढ निश्चय कर लिया है, क्योकि मिलके कते सूतसे बुनाई करके वे स्वय अपना गला काटते है, और वे यह जानते भी है। लेकिन वे कहते है कि हम लाचार है। पर यह बात गलत है। जसा कि मने उडीसाके बुनकरोसे कहा था, यदि किसी बुनकर परिवारमे एक आदमी बुनाई करता है तो परिवारके अन्य सदस्य सूतके करघेपर आनेसे पहलेकी विभिन्न प्रक्रियाओमे उसका हाथ बँटाते है। तो मेरा सुझाव यह है कि प्रत्येक बुनकर परिवार अपना सूत आप काते, अर्थात वह ओटाई, धुनाई तथा कताई करे। ऐसा परिवार अपनी बुनी हुई खादी पहने और जो खादी इसके बाद बचे उसे बेचे। ऐसा करनेसे उच्च कोटिकी कताई

हो सकेगी, क्योकि तब परिवारके सभी सदस्य यथासम्भव मजबूत और इकसार सूत कातना चाहेगे। निस्सन्देह बुनकर जिस अनुपातमे अच्छा सूत तैयार करेगे, उनकी आमदनी उसी अनुपातमे बढेगी। मै यह दिखा सकता हूँ कि यदि प्रबन्ध ठीक ठाक हो तो कताई करनेसे हर परिवार लाभमे ही रहेगा। लाभ तीन तरहसे होगा। वह दलालोसे, जो सूत बेचते है, तथा सूतके बाजारके उतार-चढावसे बचेगा तथा परिवारके लिए कपडा खरीदनेपर जो रुपया खच होता है उसका कुछ अश वह बचा लेगा। क्योकि जबतक सूतकी कीमत बहुत कम नही हो जाती, तबतक परिवारके लिए आवश्यक रूईकी कीमत बाजारसे खरीदे जानेवाले कपडेसे कम ही रहेगी। साथ ही अनुभवसे यह देखा गया है कि व्यक्तिको मिलके कपडेकी अपेक्षा खादी कम ही चाहिए और यदि खादी हाथकी बुनी हुई हो और सूत हाथका कता हुआ हो तब तो खादी और भी कम चाहिए। और ऐसा करनेवाले बुनकरोका सवत्र यह प्रत्यक्ष अनुभव है कि अपने ही सूतसे बनाई गई खादी मिलके कपडेसे तिगुनी चलती है।

ये बाते यदि आपको अच्छी लगे तो आप ऐसी व्यवस्था कर सकते है। अ० भा० च० स० ऐसे परिवारोकी मदद उनकी अतिरिक्त खादी खरीदकर कर सकता है।

जिस बुनकर मित्रका पत्र आपने अपने पत्रके साथ भेजा है, मै उसे लिख रहा हूँ कि आप मेरी योजना उसे समझायेगे।

यदि यह योजना आपको पसन्द हो और यदि कोई बुनकर इसे उन शर्तोंके साथ जिनकी मैने चर्चा की है अपनाना चाहे, तो आप, समय बचानेके लिए, गगाधर रावसे सम्पक स्थापित करे। मुझे यह तो याद नही कि अधिकृत रूपसे या अनिधिकृत रूपसे, पर वे अ० भा० च० स०की कर्नाटक शाखाके प्रतिनिधि है।

हृदयसे आपका,

श्री अच्युत पटवधन
कोट रोड,
अहमदनगर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१७८ पत्र एम० मादैयाको

३० जनवरी, १९३५

प्रिय मादैया,

आपका पत्र मिला। मेरे विचारसे आपको धैर्य रखना चाहिए। हमने काफी प्रगति की है और यदि आत्मसयम रहा तो हम और अधिक कर सकेगे। मेरा पैम्फलेटो द्वारा प्रचार या खर्चीली इमारतोमे विश्वास नही है। भजन मन्दिरमे ठीक है। परन्तु आपको आडम्बररहित साधारण इमारतसे ही सन्तोष करना चाहिए।

हृदयसे आपका,

श्री एम० मादैया
आदि-कर्नाटक स्ट्रीट न० १
मालविल्ली शहर, मैसूर जिला

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१७९ पत्र रामचन्द्रनको

३० जनवरी, १९३५

प्रिय रामचन्द्रन,

भोलेके बारेमे आपका पत्र मिला। मुझे मालूम हुआ है कि भोलेको छुट्टी दे दी गई है। क्या उसे ठीक हो जानेके कारण छुट्टी दी गई है या उसके खिलाफ कोई शिकायत थी? भोलेका जो पत्र मुझे अभी-अभी मिला है, उससे तो शक होता है कि दूसरी ही बात ठीक होगी।

मादैयाका पत्र और उसको मेरे जवाब[1] की एक प्रति यहाँ सलग्न है। यदि आपको इस विषयमे कुछ कहना हो तो कहे।

श्री रामचन्द्रन्
दीन सेवा सघ
मल्लेश्वरम डाकखाना बगलोर सिटी

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागज़ात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए पिछला शीर्षक।

१८० पत्र पूर्णचन्द्र शर्माको

३० जनवरी, १९३५

प्रिय शर्मा,

आपका पत्र मिला। आपको सब कुछ अन्नदा बाबूसे ही तय करना पडेगा और उन्हे ही कहना पडेगा कि यदि उनके पास कोई कामचलाऊ योजना हो तो वे अ० भा० च० स०से सम्पक स्थापित करे।

हृदयसे आपका,

श्री पूणचन्द्र शर्मा
अध्यक्ष
जिला काग्रेस कमेटी, नौगाग (आसाम)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१८१ पत्र टी० टी० शर्मनको

३० जनवरी, १९३५

प्रिय शमन,

मैंने आपका पत्र काकासाहब कालेलकरके पास भेज दिया है। वे ही इस विषय पर सोचेगे। अभी वे मुख्यतया हिन्दी प्रचारके कायमे मदद देनेके लिए दक्षिण गये है। आप उनसे सम्पक स्थापित करे। उनका पता है काकासाहब कालेलकर, माफत हिन्दी प्रचार सभा, १०७ आर्मेनियन स्ट्रीट, जी० टी०, मद्रास।

हृदयसे आपका,

श्री टी० टी० शमन
सम्पादक
"विश्वकर्नाटक डेली"
बगलौर सिटी

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सोजन्य प्यारेलाल।

१८२. पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको

३० जनवरी, १९३५

प्रिय ठक्कर बापा,

आपने इस महीनेकी २१ तारीखके पत्रमे जो प्रश्न उठाया है, उसके सम्बन्धमे मै यही सुझाव दे सकता हूँ कि स्थानीय सुधारकोको चाहिए कि वे पीडित हरिजनोकी उन्हे अपने सगे-भाई बहन मानकर उत्साहपूर्वक मदद करे। यदि हम उन्हे इतना भी आश्वासन न दे सके और वे आत्म-रक्षाके खयालसे किसी दूसरे धर्मको अपना ले जहा उनके खयालसे उन्हे कुछ हदतक सुरक्षा मिल सकती है, तो हमे आश्चर्य नही होना चाहिए।

प्रताप दियालदास[1] का पत्र इसके साथ है। मलकानीसे कहिए कि मैने उन्हे पत्र लिखा है। यदि चन्देका उपयोग अभीतक थार-पाकर जिलेमे हरिजन-कार्यके लिए नही किया गया हो, तो कृपया अब वैसा करे।

सलग्न १

श्री अ० वि० ठक्कर
महामन्त्री
हरिजन-सेवक सघ, बिडला मिल्स, दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१८३ पत्र जमनालाल बजाजको

३० जनवरी, १९३५

चि० जमनालाल,

यहा पहुँचने पर मुझे तुम्हारे पत्र मिले। तुम्हारा कान तो बहुत परेशान कर रहा है। यहा सब चिन्तित हैं। घनश्यामदासको भी उसकी काफी चिन्ता है। उसे अपने कलकत्ताके यहूदी डॉक्टरपर बहुत विश्वास है। उसका आपरेशन सफल हुआ जान पडता है। इस कारणसे भी वह आग्रह कर रहा है कि यदि तुम्हारा कान तुरन्त ही ठीक नही हो जाता तो तुम्हे उस डॉक्टरकी सलाह लेनी चाहिए। मैंने तो डॉक्टर जीवराजसे साफ-साफ पूछा है। तुम भी विचार कर लेना। [ऑपरेशनका] बार-बार स्थगित करना मुझे पसन्द नही। क्या तुम स्वय चाहते हो कि जानकी

१ एक सिन्धी दानी।

देवी वहा आ जाये ? उसने कल रात तुम्हारे पास आनेकी थोडी बहुत इच्छा व्यक्त की। उसे भी ऐसा लगा कि कदाचित तुम उसे आसपास देखना चाहोगे। यदि ऐसा है तो वह अवश्य आना चाहेगी। मैने उसे इस पत्रके उत्तरकी राह देखने को कहा है। इसके उत्तरमे यदि तुम तार देना चाहो तो देना। रोगका पूरा वृत्तान्त देना।

अभी फिलहाल तो मै यही हूँ। तुम अभी यहाँ आनेका विचार मुल्तवी कर देना। जब डाक्टर निश्चित रूपसे अनुमति दे, तब आना।

खानेके बारेमे यदि तुम मेरी मानो तो अच्छा हो। दूध, फल और चोकर-युक्त आटेकी रोटी खाओ, चावल और आलू आदिका त्याग करो और हरी सब्जियोका सेवन करो। जब चाहे तब ऊटपटाग चीजे मत खाओ। निश्चित समयके सिवा और कभी न खानेका आग्रह रखो। एक समयमे पेटपर जितना कम बोझ पडे उतना अच्छा है। खानेके मामलेमे डाक्टरोकी सलाहपर बहुत ज्यादा भरोसा नही किया जा सकता। इन मामलोमे उनका अनुभव भी बहुत कम होता है।

दुर्गाप्रसादका पैसा अभी मै ही भेज रहा हूँ। मैने तो भेजनेके लिए कह ही दिया था। मुझे इस बातकी कतई खबर न थी कि उसके पास बम्बई जाने तकके लिए पसे नही है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मेहरताज आखिरकार नही आई। लाली कदाचित देहरादून जायेगी।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९५४)से।

१८४ पत्र जमनालाल बजाजको

३० जनवरी, १९३५

चि० जमनालाल,

आज सवेरे तुम्हे पत्र लिखनेके बाद मै जानकी देवीसे मिला। उसके प्राण निश्चय ही तुम्हारे पास आनेके लिए अकुला रहे है। इसलिए कल 'हा' अथवा 'न'का तार अवश्य देना।

डॉ० खान साहबको जो ९०० रुपये मिला करते थे वे बन्द हो गये है। खान साहबके भी बन्द हो गये समझो, इसलिए दोनो भाई तगी मे है। डाक्टरके बच्चेका खच अभी तुम उठाते हो, ऐसा वे कहते थे। मुझे लगता है कि गनीके लिए भी पैसा अभी कही से नही आ सकता। इसलिए यदि कुछ दिया जा रहा है तो उसके वापस मिलनेकी उम्मीद हमे नही रखनी चाहिए। इस बारेमे यदि तुम कोई सुझाव देना चाहो तो देना।

डा० खान साहबका जेलसे पत्र आया है। उनके पत्रके अनुवादकी प्रति तो इसके साथ जायेगी ही।

बापूके आशीर्वाद[1]

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० २९५५)से।

१८५ पत्र बहरामजी खम्भाताको

३० जनवरी, १९३५

भाई खम्भाता,

अब तुम अच्छे हो रहे होगे। तुम्हे बम्बईका लोभ छोडना ही चाहिए। ईश्वर ने जो दिया है उससे सन्तोष मानो। क्या तुम्हे पूना मे रहनेमे कोई कठिनाई होगी? मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ६६०७)से। सी० डब्ल्यू० ४३९७ से भी, सोजन्य तहमीना खम्भाता।

१८६ पत्र वल्लभभाई पटेलको

३० जनवरी, १९३५

भाई वल्लभभाई,

तुम्हे यह बताना तो भूल ही गया कि शाह[2] मेरे पास आये थे। उनकी इच्छा बोर्डके लिए काम करनेकी है। परन्तु वे ऊपर ऊपरसे नही, बल्कि सच्चे दिलसे काम करना चाहते है। मेरे खयालसे हमे उनकी सेवाओका उपयोग करना चाहिए। क्या उन्हे अवैतनिक आर्थिक सलाहकार या परामर्शदाता नही बनाया जा सकता? उन्हे वेतनका लोभ नही है।

मैने तुम्हारे साथ सफर करनेकी आशा रखी थी। दिल्लीमे तो कुछ बात ही न हो सकी। फिर भी तुम वहा रह गये, यह अच्छा ही हुआ। आने पर एन्ड्रयूजका दूसरा पत्र मिला। उसमे कोई विशेष बात नही है। उनके हवाई किले है।

१ इसके बाद यह निर्देश दिया हुआ है डॉक्टर खान साहबके पत्रका अनुवाद इसके साथ जाये।

२ प्रोफेसर के० टी० शाह एक अर्थशास्त्री।

कहा तो वहा की ठड ओर कहा यहाकी गरमी!

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
नई दिल्ली

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५१ ५२

१८७ सन्देश अहमदाबादके मिल-मजदूरोको

[३१ जनवरी १९३५ या उससे पूर्व][1]

मजदूरोसे कह कि गैर कानूनी ढगसे हडताल करके वे अपने और आम मजदूरोके पक्षको कमजोर बना रहे है। उन्होने जो नाम कमाया है उसपर धब्बा न लगाये। मुझे उम्मीद है कि वे अपना खोया हुआ सतुलन फिर से प्राप्त कर लेगे तथा काम शुरू कर देगे।

[अग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, १-२ १९३५

१८८ पत्र भुजगीलाल छायाको

२१ जनवरी, १९३५

चि० भुजगीलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे तुम पर अविश्वास नही। मैने तुम्हे जो-कुछ लिखा वह तुम्हारे स्वभावको जिस रूपमे जाना उसके अनुसार ही लिखा था। तुम्हारा इरादा तो अच्छा है, लेकिन उसपर अमल करनेमे विघ्न आते रहते है। तुम अपनी पढाई पूरी करना, बादमे जो सेवा बन सके सो करना। कही अपने ऊपर बलात्कार न करना। मनुष्यको अच्छे बुरेका विचार करनेके बाद, जो हो सके सो यथाशक्ति करना चाहिए। तुम्हारी अपनी स्थिति क्या है, इसपर अच्छी तरहसे विचार कर लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २५९३) से।

१ यह रिपोर्ट अहमदाबाद जनवरी ३१ ' की तिथि पक्तिके अतर्गत प्रकाशित हुई थी।

१८९ पत्र मूलचन्द अग्रवालको

३१ जनवरी, १९३५

भाई मूलचद,

तुमारा खत मिला। मेरी उमीद हे कि एक तरफसे कोई सनातनीयो पर क्राध नही करेगे ओर दूसरी तरफसे कोइ उनके बहिष्कारकी फिकर नही करेगे। अगर बहिष्कार चले तो जो कष्ट पडे उसकी बरदास्त करे।

मुझे बताया करो क्या होता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ७६७)से।

१९० पत्र वियोगी हरिको

३१ जनवरी, १९३५

भाई वियोगी हरि,

साथमे छोटी-सी चीज ह० से० के लिये हे। इस बारेमे वहा से कुछ और पता मिले तो निकालना चाहीये। यह बहिष्कार कुछ समजमे नही आता हे।

प्रभावतीके हिदी पाठके बारेमे क्या किया?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० १०९८)से।

१९१ पत्र ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

३१ जनवरी, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण

तुमको क्षमा हे। ऐसे दोषोसे बचना आसान हे। हमारेमे क्रोधादि सूक्ष्म दोष पैदा होते है। उससे बचना मुश्कील है। लेकिन तुम सावधान रहते हो इसलिए क्षेम ही होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० २४८१)से।

१९२ प्रत्यक्षसे पलायन

हरिजनो और सवर्णोकी एक परिषदमे भाषण देते हुए एकबार मुझे प्रसगवश दु खके साथ यह बात कहनी पडी थी कि आज हमारे मुल्कमे रेलवे स्टेशनो पर 'मुसलमान-दूध, हिन्दू दूध, मुसलमान पानी, हिन्दू-पानी' की आवाज सुनाई पडती है। 'हिन्दू रोटी और मुसलमान रोटी' की बात तो मै बर्दाश्त कर सकता हूँ हालाकि मै ऐसी किसी चीजको मान्य नही करता। मगर 'मुसलमान दूध और हिन्दू दूध' की बात, जिसके बनानेमे मनुष्यका कोई वास्ता ही नही है, न तो मै समझ सकता हूँ और न उसे बर्दाश्त ही कर सकता हूँ। मैने वहा यह भी कहा था कि अस्पृश्यता निवारणमे जिनका सोलह आने विश्वास है, उन्हे मुसलमान दूध या पानी और हिन्दू-दूध या पानी-जैसी अन्धविश्वास भरी बातोसे अपनेको मुक्त करना ही होगा।

मै 'हरिजन-सेवक' मे यह तो अनेक बार लिख चुका हूँ कि जो लोग हरिजनो का छुआ हुआ पानी या दूध वगैरा ग्रहण करनेसे इनकार करते है, वे यह दावा नही कर सकते कि उन्होने अपनेको अस्पश्यताके कलकसे मुक्त कर लिया। और अगर हमने इस भेदभावको अपने दिलसे दूर कर दिया है कि यह हरिजन पानी या हरिजन दूध है, यह सवर्ण पानी या सवर्ण दूध है तब फिर इस भेदभाव-भरे रिवाजको उचित ठहरानेका कोई अर्थ ही नही रह जाता कि यह मुसलमान-पानी या दूध है, और यह हिन्दू पानी या दूध है। अगर अस्पश्यता निवारणका यह महान आन्दोलन महज अपने मनको समझा लेनेकी बात होकर रह गया और उसके पीछे सत्य न हुआ तो इसका सारा सौन्दर्य नष्ट हो जायेगा। इस अस्पश्यता रूपी राक्षसीकी पहुँच सर्वत्र है, इसका रूप सर्वव्यापी है। जो इसकी इस सर्वव्यापकतामे विश्वास करते है, वे तबतक अपनेको उससे मुक्त हुआ नही कह सकते जबतक वे एक भी मनुष्यको, उसके अमुक जातिमे जन्म लेनेके कारण या उसके सम्प्रदाय या धर्मके कारण, अस्पश्य अथवा सामाजिक दरजेमे किसी-न किसी तरह अपनेसे नीचा समझते है।

मेरे पास हालमे एक ऐसा पत्र आया है जिसमे इस बातको स्पष्ट कर देने पर काफी जोर दिया गया है कि अस्पश्यता निवारणके आन्दोलनका यथार्थ आशय क्या है। उसमे लिखा है कि बरार प्रान्तके एक हाईस्कूलकी रजत जयन्तीके उपलक्षमे वहा एक सार्वजनिक भोजका आयोजन किया गया था। हरिजन विद्यार्थियोको भी न्यौता दिया गया था। पत्रसे मुझे यह मालूम हुआ कि हरिजन विद्यार्थियोको तो वहा अलग बिठाया गया था और दूसरी तमाम जातियो व सम्प्रदायोके आमन्त्रित सब लोग एक पक्तिमे बिठाये गये थे। सस्कृतिवान हरिजन विद्यार्थियो को इस तरह वाहियात ढगसे अपमानित करनेकी आखिर क्या जरूरत आ पडी थी? और सब लोगोकी पातमे अगर उन्हे बिठा दिया जाता तो उन्हे देखकर कौन कह सकता था

कि वे हरिजन ह ? एक हाईस्कूलके उत्सवके समय ऐसे अपमानजनक कृत्यसे यही प्रगट होता हे कि यद्यपि अस्पृश्यताका बहुत कुछ मैदान हम सर कर चुके है, तो भी यह पुराना अन्धविश्वास आज भी उसी तरह जमा हुआ हे, और वह भी उन स्थानोमे जहा कि ऐसी बातोकी आशा हमे करनी ही नही चाहिए। यह ध्यान रहे कि वहा न तो सहभोजका प्रश्न था, न सहपाका, वहा तो सिफ एक पक्तिमे बैठकर जीमनेकी बात थी। अगर रेलगाडीके एक डिब्बेमे एक ही बैचपर सबके साथ बैठना और वही बैठकर भोजन करना सहभोज नही समझा जाता, तो वह भी निश्चय ही सहभोज नही था। मगर अस्पश्यताके कोशमे तो सहभोजका कुछ दूसरा ही अथ हे — उसमे तो एक पक्तिमे बैठकर भोजन करनेका भी निषेध है।

हरिजन, १-२-१९३५

१९३ मधुमक्खी-पालन[१]

यगमेन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन, रामनाथपुरम, कोयम्बतूरके ग्राम-सेवा विभाग के सचालक श्री जयकरणको मैने जो पत्र लिखा था, उसके जवाबमे उन्होने निम्न-लिखित उपयोगी सूचना भेजी है

> **छोटे पमानेपर मधुमक्खिया पालनेका काम करनेवाले कृष्णस्वामी नायडू नामक एक सज्जनने अपने पडोसियोको यह दिखला दिया है कि धनियेकी खेतीसे साधारणतया जितनी फसल मिलती है, मधुमक्खी-पालनकी बदौलत पुष्पोके नर केसर तथा स्त्री-केसरका अच्छी तरह सयोग होनेसे उससे अधिक फसल तो मिली ही, उत्तम जातिका २१ सेर सुनहरा शहद भी मिला। इस बढिया शहदसे ही ८ हे ६३ रुपयेकी अतिरिक्त आमदनी हो गई।**
>
> **उनके पास शहदके केवल दस ही छत्ते ह। उन्होने कहीसे प्राकृतिक छत्ते प्राप्त करके मधुमक्खियोको सस्ते देवदारके बक्सोमें रख छोडा था।**

मुझे लगता है कि मधुमक्खिया पालनेके उद्योगका हमारे देशमे बेहद विकास हो सकता है। गावोकी दृष्टिसे तो इस उद्योगका महत्व है ही, पर धनाढ्य युवतिया और युवक इस कामको शौकिया भी कर सकते है। इस कामको करनेसे देशकी सम्पत्ति बढेगी, और स्वय अपने लिए भी उन्हे स्वास्थ्यप्रद सर्वोत्तम शकरा खानेको मिलती रहेगी। अगर उनमे परमाथ वृत्ति है तो वे इस शहदको बतौर एक पौष्टिक आहारके कमजोर हरिजन बालकोमे बाट सकते है। शहद श्रीमानोके शौककी चीज या वैद्य-हकीमोके हाथमे बतौर एक कीमती अनुपानके ही क्यो रहे ? इसमे शक नही कि मेरी इस आशाका आधार मेरी यत्किचित जानकारी है। गावो और शहरोमे

१ यह 'टिप्पणियाँ' शीषकके अन्तगत प्रकाशित हुआ था।

युवक युवतियां जो प्रयोग करें उनसे यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि शहद हमारे आहारकी सामान्य वस्तु बन सकती है, या वह आजकी ही भांति असाधारण और दुर्लभ वस्तु बनी रहेगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १ २ १९३५

१९४ आरम्भ कैसे करे ? – २[1]

पिछले हफ्ते मैंने चावलके सम्बन्धमें लिखा था। अब गेहूँके बारेमें लिख रहा हूँ। गेहूँ आहारमें सबमें महत्वकी नही तो दूसरे नम्बरकी वस्तु तो जरूर है। पोषण की दृष्टिसे देखें तो गेहूँ अन्नोंका राजा है। विशुद्ध गेहूँ और विशुद्ध चावलकी तुलना की जाये तो चावलसे गेहूँ ऊँचा ही उतरेगा। यह तो सभी डॉक्टरोंकी राय है कि बिना चोकरका आटा उतना ही हानिकर है जितना कि पालिश किया हुआ चावल। बाजारमें जो महीन आटा या मैदा बिकता है, उसके मुकाबलेमें घरकी चक्कीका पिसा हुआ बिना छना गेहूँका आटा अच्छा भी होता है और सस्ता भी। सस्ता इसलिए होता है कि पिसाईका पैसा बच जाता है। फिर घरके पिसे हुए आटेका वजन कम नही होता। महीन आटे या मैदेमें तोल कम हो जाती है। गेहूँका सबसे पौष्टिक अंश उसके चोकरमें होता है। गेहूँकी यह भूसी छानकर निकाल देनेसे उसके पौष्टिक तत्वकी बहुत बडी हानि होती है। ग्रामवासी या दूसरे लोग जो घरकी चक्कीका पिसा हुआ बिना छना आटा खाते है, वे पैसेके साथ साथ अपने स्वास्थ्यकी भी रक्षा कर लेते है। आज आटेकी मिलें जो लाखों रुपये कमा रही है उसका काफी बडा हिस्सा गांवोंमें हाथकी चक्कियां फिरसे चलने लगनेसे गांवोंमें ही रहेगा और वह सुपात्र गरीबोंके बीच बँटता रहेगा।

पर इसके विरुद्ध यह आपत्ति उठाई जाती है कि घरकी चक्कीमें पीसना एक झंझट है, उसमें आटा कभी तो मोटा पिसता है कभी महीन। और गांवके लोग खुद अपने हाथसे आटा पीसे, यह बात उन्हें आर्थिक दृष्टिसे रास नही आती। अगर पहले गांववालोंको अपने हाथ से पीसना रास आता था तो आटेकी मिलें खुल जानेसे इसमें कोई फर्क तो नही पडना चाहिए। वे यह तो कह ही नही सकते कि हमारे पास इस कामके लिए समय नही है। परिश्रमके साथ बुद्धिका संयोग होगा तो हाथकी चक्कियोंमें सुधारकी पूरी आशा की जा सकती है। यह दलील कि हाथ चक्कीमें कभी आटा मोटा पिसता है, कभी बारीक, निरर्थक है। अगर चक्कीमें अच्छा बढिया आटा न पिसता होता तो अनादि कालसे वह अपनी हस्ती कैसे कायम रख सकती थी? पर जब ऐसा लगे कि आटा एक-सा नही पिसा है तो मैं यह

१ इसकी पहली किस्तके लिए देखिए पृ० १२३ २४।

राय दगा कि उस आटे को छलनीसे छान लो ओर छाननेपर जो मोटा रवा निकले उसका दलिया बना लो, ओर उमे भोजनके साथ या बादमे खा लो। अगर ऐसा किया जाये तो पीसना अत्यन्त सरल और सुगम हो जाये ओर बहुत सारा समय और श्रम बचे।

इस सारे परिवतनके लिए ग्राममेवकोको पहले स्वय सीखकर तथा ग्रामवासियाको सिखाकर कुछ तयारी तो करनी ही पडेगी। यह आशा नही करनी चाहिए कि इस कामके लिए कोई हमारा आभार मानेगा, पर अगर हमारी यह इच्छा हो कि हमारे ग्रामवासी स्वस्थ और कुछ सुखी रहे तो यह काम हमे करना ही चाहिए।

इसके बाद मै आपका ध्यान गुड पर आकर्षित करूँगा। 'हरिजन सेवक' मे मैने डाक्टरोके जो प्रमाण दिये है[1], उनसे यह प्रकट होता हे कि चीनीकी अपेक्षा गुड अधिक पोष्टिक है, और अगर गाववालोने गुड बनाना बिलकुल ही छोड दिया तो उनके बाल बच्चाके आहारमे एक जरूरी चीज कम हो जायेगी। वे खुद शायद बिना गुडके अपना काम चला लेगे, पर उनके बच्चोके शरीरको बिना गुडके जरूर ही हानि पहुँचेगी। बाजारू मिठाई और शक्करकी अपेक्षा गुड अधिक अच्छी चीज है। अगर गुड बनाना जारी रहा और लोगोने उसका उपयोग करना न छोडा तो ग्रामवासियोका करोडो रुपया उनकी गाठमे ही रहेगा।

मगर कुछ ग्रामसेवक यह कहते हे कि गुडकी कीमतसे तो उसकी पैदावारका खच भी नही निकलता। किसानको तो पैसेके लिए ईखकी खडी फसल बेचनी पडती है, इसलिए वे ईखका गुड बनाये और तब उसे बेचे, ऐसा करना उनके लिए कठिन होता है। इससे उलटे प्रमाण भी मेरे पास है। फिर भी यह दलील उपेक्षणीय नही हे। इसके लिए मेरे पास कोई तात्कालिक जवाब नही हे। जिस जगहपर कोई कच्चा माल पैदा होता हो उसी जगहपर उस चीजका तैयार माल बेचनेपर अगर मजूरीका भी पसा न निकले, तो वहा उस आर्थिक व्यवस्था की जडमे ही कोई त्रुटि होनी चाहिए। इस विषयमे हर जगह स्थानीय जाच पडताल होनी चाहिए। गावोके लोग जो जवाब दे उसे हीन मानकर ग्रामसेवकोको हताश हुए बिना उपाय खोजने चाहिए। गुडके विषयमे जो अटपटे सवाल सामने आ रहे है उन्हे हल कर पाने से ही राष्टकी उन्नति सध सकती है, और शहरोका गावोके साथ ऐक्य भी सिद्ध हो सकता हे। हमे अपने मनमे इतना निश्चय कर लेना चाहिए कि शहरके लोगोको पसा अधिक भी देना पड तो भी गावोसे गुडके उद्योगको नष्ट नही होने देना चाहिए।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १ २-१९३५

१ देखिए गाँववालोंके हाथ, पृ० ८४ ३५।

१९५ पत्र एफ० मेरी बारको

दुबारा नहीं पढा

वर्धा
१ फरवरी, १९३५

चि० मेरी

आज मुझे तुम्हारा पत्र मिलनेकी आशा थी। मेरी (छोटी)ने एनीमा लेकर ठीक किया। इससे उसे काफी आराम मिला होगा। तुम कहा ठहरी हो? क्या तुम वहा आरामसे हो? क्या अपनी जरूरतकी सारी चीजे तुम्हे मिल जाती है? ऐसी किसी भी जरूरी चीजके बारेमे जो भी मदद मुझसे हो सकती हे, उसके लिए मुझे लिखने मे सकोच मत करना। मेरीको मजबूत और तन्दुरुस्त तो बनना ही हे।

तुमने अपने दिल्ली निवासके परिणामोको बहुत अच्छी तरह पश किया है।[1] वे भाग्यशाली है जो कि किसी भी चीजकी इच्छा नही करते, किन्तु वे और भी भाग्यशाली है जिन्हे इस बातका इतमीनान है कि उन्हे अपनी जरूरतकी चीज मिल गई हे।

तुमने जिस प्राथनाके साथ अपना पत्र समाप्त किया है, वह भी मुझे बहुत अच्छी लगी। क्या तुम्हे उसका ध्यान है? तुमने लिखा है "हमारी ग्रामोन्मुखताका विकास हो।" जब यह प्रवत्ति हमारे मनोमे घर कर जायेगी, तब हमे गावोमे रहना सुख देने लगेगा और तब ससारके सुन्दरसे सुन्दर नगरकी तुलनामे गाव कई गुना ज्यादा आरामदेह वन जायेगे।

मैंने लडकियासे पूछकर यह जाननेकी कोशिश शुरू कर दी हे कि उनमे से कौन कौन दो या तीन महीनोके लिए तुम्हारे साथ जाकर रहनेके लिए तैयार है।

कल यहा पानी शानदार बरसा। आजका दिन बडा सुहावना है। लेकिन जिसे ठण्ड कह सके, ऐसा कुछ नही है।

तुम दोनोको
बापू[2]के आशीर्वाद

कुमारी मेरी बार
माफत सेठ दीपचन्दजी
बैतूल

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०३७) से। सी० डब्ल्यू० ३३६७ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार।

१ मेरी बार जनवरीमें अपनी दिल्ली यात्राके समय गाधीजी के पास ठहरी थी।
२ हस्ताक्षर हिन्दीमें है।

१९६. पत्र बी० माधव बालिगाको

१ फरवरी १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मुझे नही मालूम कि शास्त्री द्वारा भेजे गये श्लोकका मैने क्या किया। बहुत अधिक सम्भावना तो यही है कि वह अभी भी 'हरिजन' की फाइलमे पडा होगा। बहुत सारी सामग्री पडी हुई है, जिसपर विचार करना बाकी है। यदि आपके पास उसकी नकल हो तो मुझे भेज सकते है। सम्भव हे कि मैने श्लोकपर विचार किया हो और उसे 'हरिजन' के स्तम्भोके लिए उपयोगी न पाकर नष्ट कर दिया हो।

आपके प्रश्नके उत्तरके लिए मै आपको गुजरातीमे प्रकाशित 'अनासक्तियोग'[1] की अपनी भूमिकाको देखनेके लिए कहूँगा। 'यग इडिया' के पाठकोके लिए भूमिकाका मैने अग्रेजीमे अनुवाद किया था। यदि आप 'यग इडिया' की पुरानी प्रतिया प्राप्त कर सके तो आपको वहा उक्त अनुवाद मिल जायेगा। सक्षेपमे उत्तर यो है

'गीता' की रचना अहिसाको सिद्ध करनेके लिए नही हुई थी बल्कि अधेरेसे राह टटोल्ते ससारको हर सम्भव परिस्थितिमे सच्चाईसे काय करनेका माग दिखानेके लिए हुई थी। फिर भी आप यह देखेगे कि 'गीता' आपको अचूक रूपसे अहिसापर ले जाती है। स्मरण रखे कि अर्जुन अहिसाका पालन करनेके लिए प्रयत्न नही कर रहा था, बल्कि अपने सामने प्रस्तुत उत्तरदायित्वसे बचनेका प्रयत्न कर रहा था। और वह इसलिए कि आत्मजनोके लिए उसके मनमे अकस्मात ही पक्षपातकी भावना उभर आई थी। उसके सम्मुख मारूँ या न मारूँका प्रश्न नही था, बल्कि यह था कि आत्मजनोको मारूँ या न मारूँ।

और आपने जो श्लोक उद्धत किया है उसमे 'निग्रह' का अथ अपनी मूल प्रकृति के विरुद्ध निष्फल लडाई हे। अपनी कमजोरियोके विरुद्ध लडनेकी बात 'गीता' मे बार बार कही गई है। परतु जब कोई कमजोरी किसी व्यक्तिकी प्रकृति बन जाती है तब उससे लडना बेकार है। अजुनकी प्रकृति एक योद्धाकी प्रकृति थी और वह इसलिए नही कि वह लडनेके ही लिए पैदा हुआ था, बल्कि इसलिए कि उसे अपनी प्रकृतिसे ही लडना प्रिय था। हम जिसे कमजोरी समझते है जब वह किसीके व्यक्तित्वका एक अग बन जाती है, तो वह उसके लिए कमजोरी नही रह जाती। और यदि ऐसा कोई व्यक्ति किसी दूसरेके आदेशपर अपनी प्रकृतिके विरुद्ध लडता है तो उसे

१ देखिए खण्ड ४१ पृ० ९२ १०२।

असफल ही होना होता है अथवा वह पाखंडी बन जाता है। ऐसे किसी व्यक्तिसे अपनी प्रकृतिके विरुद्ध आचरण करनेके लिए कहना, कुत्तेकी टेढी पूंछके सीधी हो जानेकी आशा करनेके समान है।

हृदयसे आपका,

श्री बी० माधव बालिगा
वाणी विलास मुहल्ला
बोटिकोप्पल डाकखाना, मसूर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१९७ पत्र फिरोज़ गांधीको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय फिरोज,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। आशा है कि अब कमला पहलेसे अच्छी होगी तथा सुईका प्रभाव समाप्त हो गया होगा। मैं चाहता हूँ कि तुम पूनमचन्द रांकाको पत्र लिखो। उसकी शिकायत है कि उसने जितने पार्सल भेजे हैं, उनमें से एककी भी प्राप्ति स्वीकृति उसे नहीं मिली है। उसने मुझे यह भी बताया है कि अभी नागपुर में सबसे अच्छे संतरे नहीं मिल रहे हैं। फिर भी जैसे मिलेंगे वह भेजता रहेगा। मैं यह भी आशा करता हूँ कि तुम्हें दिल्लीसे अच्छी तरह पैक करके भेजी गई सब्जियां मिल रही होंगी। यदि न मिल रही हो तो निःसंकोच मुझे बताओ।

श्री फिरोज गांधी
भुवाली

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१९८ पत्र रामचन्द्रनको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय रामचद्रन,

कुप्पाचारीकी शिकायतसे सम्बधित निगम आयुक्तके कार्यालयका पत्र इसके साथ है। कृपया स्वागत समितिके अध्यक्षसे मिल ले। जिसको भी मुख्य रूपसे उत्तरदायी समझा जाये उससे उस गरीबको कुछ हर्जाना तो मिलना ही चाहिए।

सलग्न १

श्री रामचद्रन
बगलोर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१९९ पत्र एस० सुन्दरेश अय्यरको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

तुम्हारा पत्र और उसके साथ दो पुस्तके मिली जिनके लिए धन्यवाद। सतति निग्रहके लिए जो दलील दी जाती है, उससे मै परिचित हूँ। यदि दिये गये वक्तव्य अविवाद्य अनुभवपर आधारित है तो पुस्तिकामे निग्रहके लिए जो उपाय बताया गया है वह कृत्रिम उपायसे बहुत कम बुरा है। जहातक दूसरी पुस्तकका सम्बन्ध है, मुझे अभी उसे पढनेका समय नही मिला है। उस विषयमे मेरी रुचि नही है। यदि लोग अपना रग बदल सके और पूरा ससार एक रगका हो जाये तो मै समझता हू कि वह एक घटिया ससार होगा। मानव जातिको यदि कुछ जीतना है तो वह है द्वेष, फिर वह चाहे जातिके विरुद्ध हो या रगके।

हृदयसे आपका,

श्री एम० सुदरेश अय्यर, एम० ए०, बी० एल०
एडवोकेट
मयलापुर (मद्रास)

अग्रेजीकी नकल से। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२०० पत्र मोहनलालको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय मोहनलाल,

आय नगर कालोनीके मेघ लोगोकी शिकायतोके सम्बन्धमे आपकी विस्तत रिपोट मुझे बहुत जॅची। क्या अब इसके बाद आप सभा[१] के सदस्योसे मिलकर यह पता लगा सकते है कि समझोता वार्त्ता किस प्रकार चल रही हे, और इन गरीब मेघ लोगोके लिए जो कुछ मम्भव हो वह कर सकते है? मै समझता हूॅ कि ऐसी ही दूसरी कालोनी—सैलवेशन आर्मी कालोनी—तो फल-फूल रही है, उसका प्रबन्ध ठीक है ओर ईसाई लोग, चाहे वे अधिवासी हो या किरायेदार, काफी खुश है।

हृदयसे आपका,

श्री मोहनलाल
हरिजन-सेवक सघ
लाजपत राय भवन, लाहौर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात सौजन्य प्यारेलाल।

२०१ पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय ठक्कर बापा,

पजाबकी आय नगर कालोनीके मेघ लोगोकी ओरसे लम्बी चौडी शिकायत आई थी। मैने शिकायत मोहनलालके पास भेज दी। उनकी विचारपूण ओर विस्तत रिपोट इसके साथ हे। मोहनलाल[२] को मैने जो जवाब दिया है उसकी भी एक प्रति इसके साथ हे। आप अपने यहा से जो-कुछ कर सक्ते हो, करे। क्या घनश्यामदासका परिचय

१ दलित प्रतिनिधि सभा।

१ देखिए पिछला शीषक।

दलित प्रतिनिधि सभाके प्रमुख लोगोसे है? इस सम्बन्धमे म डा० गोपीचदसे बात-चीत कर रहा हूँ। वे यहा ग्रामोद्योग सघके सिलसिलेमे आये हुए है।

सलग्न २

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२०२ पत्र मुरारीलालको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय डा० मुरारीलाल,

आपका पत्र बिलकुल व्यावहारिक है और बहुमल्य भी। यह बहुत सहायक होगा। मै इसे श्रीयुत कुमारप्पाके पास भेज रहा हूँ जो आपको इसके सम्बन्धमे विस्तृत रूपसे लिखेगे। जो लोग मासिक सहायता चाहते है, उनकी सहायता नियुक्त किये जानेवाले एक या अनेक एजेन्ट कर सकते है। आशय यह है कि केन्द्रीय बोर्ड[1] पर वेतनिक कार्यकर्त्ताओका कोई खर्चा न पडे। एजेन्ट लोग स्थानीय दाताओसे अपनी आवश्यकता-नुसार धन एकत्र करेगे और अपनी एजेन्सीका प्रबन्ध करेगे। यही एकमात्र ऐसा उपाय है जिससे हम इस सघको अच्छी तरहसे चला सकते है।

हृदयसे आपका,

डा० मुरारीलाल, एम० बी०
उद्योग भवन, कानपुर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ अ० भा० ग्रा० सघका

२०३ पत्र सी० सुब्रह्मण्यमको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय सुब्रह्मण्यम,

शिक्षक यदि वास्तवमे पश्चात्ताप कर रहे ह तो मै समझता हूँ उहे रहने देना चाहिए। जबतक मै उन लोगोको न जान और यह न जान कि सस्था किस तरहसे चलाई जा रही है, तबतक मरे लिए आपका अचूक मागदशन करना कठिन हे। शिक्षकोमे जितनी भी पवित्रता हो कम हे। ऐसी सस्थाओके लिए, जहा लडके या लडकिया प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हो, ठीक तरहके शिक्षक और प्रबधक प्राप्त करना अधिकाधिक कठिन होता जा रहा है।

हृदयसे आपका,

श्री सी० सुब्रह्मण्यम
माफत श्री एल० के० मुथुस्वामी
१६१ विक्टोरिया होस्टल, ट्रिप्लिकेन (मद्रास)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२०४ पत्र अविनाशीलिगम चेट्टियारको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय अविनाशीलिगम,

सुब्रह्मण्यमका एक पत्र तथा उसका जो जवाब[1] दिया उसकी एक प्रति इसके साथ सलग्न हे। पत्रमे जिन तथ्योका उल्लेख है यदि वे सही है तो मै आशा करता हूँ कि आप बुराईको समाप्त करनेके लिए शक्तिशाली कदम उठायेगे।

श्री अविनाशीलिगम चेट्टियार सदस्य, विधान सभा
नई दिल्ली

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सोजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए पिछला शीर्षक।

२०५ पत्र पतित-पावन सभा, भिवानीके मन्त्रीको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मैं नगरपालिकाके अथवा अन्य चुनावोंमें हस्तक्षेप नहीं करता।

हृदयसे आपका,

मन्त्री
पतित-पावन सभा
भिवानी

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात सौजन्य प्यारेलाल।

२०६ पत्र के० राममूर्तिको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपने जिस घड़ियाका जिक्र किया है, यदि वह ऐसा कुटीर-उद्योग है अथवा बन सके जिसे ग्रामवासी यन्त्रचालित मशीनों अथवा पेचीदा हस्तचालित मशीनोंके बिना चला सकें, तो जब राजामुन्द्रीके लिए संघका एजेंट नियुक्त हो जायेगा, वह आपके सुझावों पर विचार कर सकेगा।

हृदयसे आपका,

श्री के० राममूर्ति
अवैतनिक मन्त्री
दि इंडियन इण्डस्ट्रियल सिंडीकेट, राजामुन्द्री

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२०७ पत्र टी० एल० कान्तारावको

१ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

पिछले महीनेकी २६ तारीखका आपका पत्र मिला। मै चाहूँगा कि आप विनय आश्रम, चडोलके श्री जी० सीताराम शास्त्रीसे, जो गुण्टूर जिलेके लिए अधिकृत एजेट होगे, सम्पक स्थापित करे। मुझे इसमे कोई सदेह नही कि डाक्टर लोग जो भी मदद देगे, उसे वे स्वीकार करेगे। सफाई ओर स्वास्थ्य-विज्ञान तो ग्राम-सुधार कायक्रमके अभिन्न अग है।

हृदयसे आपका,

श्री टी० एल० काताराव
मत्री
गुण्टूर जिला एल० आई० एम० एसोसिएशन, गुण्टूर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२०८ पत्र कान्ति गाधीको

१ फरवरी, १९३५

चि० कान्ति,

काकासाहबकी माफत भेजा हुआ मेरा पत्र तुझे मिल जाना चाहिए था। न तो उसका उत्तर मिला है न उसपर अमल किया गया है। तुझे न मिला हो यह तो मुमकिन नही है। देवदासको लिखा हुआ तेरा आखिरी पत्र उसने मेरे पास भेज दिया है। मै तो तेरी राह इस तरह देख रहा हूँ जैसे प्यासा पानीकी देखता है। मै कहता हूँ कि इस पत्रके जवाबमे तू ही चला आ। मै तुझे भला बुरा नही कहना चाहता। तेरे मनकी बात जानना चाहता हूँ। फिर मगनभाई भी आजकल यही है। इसलिए हर तरह तुझे यहा ठीक लगना चाहिए। यह भी समझ ले कि मै तेरी स्वतन्त्रतापर कोई भी बन्धन नही लगाना चाहता।

तत्काल आ जा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९३) से, सौजन्य कान्ति गाधी।

२०९ पत्र जैनेन्द्र कुमारको

१ फरवरी, १९३५

भाई जैनेन्द्र,

तूमारे पत्रका यह उत्तर सक्षेपमे हो शकता हे। वह तूमने ही दिया ह। पुनजन्म माननेके लिये "मै' हू, इसे मानना आवश्यक होता है। यदि म नहि और ईश्वर ही है तो पुनजन्म कैसे और किसका? ईसीमे पूनजन्म आता है ना? जब तक "मै" है तब तक ही पुनजन्म है। जब सचमुच तुम 'ईश्वर ही है' ऐसा मानोगे (कहने मात्रसे काफी नही होगा) तब तुमारे लिये पुनजन्म नही हे। जो मनुस्य ईश्वरमय बन जाता हे वह मुक्त हो जाता है। ईतनी बात तुमारी बुद्धि तो कबुल करेगी ही। लेकिन यह अनुभव मे नही आयेगी। अनुभवके लिए हजारो वपकी भी आवश्यकता हो सकती हे। अनुभव हृदयकी वस्तु है। बुद्धि तक हे। लेकिन तककी किमत कितनी हो सकती है? अनुभव सेवासे ही हो सकता है।

एक प्रतिसे प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२१० पत्र अमृत कौरको

दुबारा नहीं पढा

वर्धा
२ फरवरी, १९३५

प्रिय अमृत,

बाल-विवाहकी बुराइयोसे दुखी हरिजन भाइयोके लिए अपना सन्देश भेज रहा हूँ

"आत्म शुद्धिकी इस अवधिमे हरिजनोको यह बात जान लेनी चाहिए कि उन्हे सवर्णोकी सभी कुरीतिया छोड देनी है। इसलिए उन्हे बाल विवाहकी कुरीतिसे बचना चाहिए। लेकिन समाज सुधारकोको इस मामलेमे जल्दबाजी नही करनी है। मेरे विचारसे शारदा कानून इस दिशामे एक विवेकपूण कदम है। लेकिन जब सवर्णो पर इसे लागू करनेमे उदारता बरती जा रही है, तब जरूरी है कि हरिजनोपर भी इसे सख्तीसे लागू न किया जाये। हरिजनोमे स्वय हरिजनोके द्वारा ही शारदा-कानून अपनाने तथा बाल विवाहकी कुरीतियोके सम्बन्धमे एक प्रभावकारी तथा सजग चेतना उत्पन्न करनेका प्रयास किया जाना आवश्यक है। और, निश्चित रूपसे

यह पता चल जानेपर कि लोग जान बूझकर इस कानूनकी अवहेलना कर रहे हैं, सावधानीके तौरपर कुछ बातोंपर अमल किया जा सकता है। परन्तु यह काम भी पूरी तरह हरिजनोंके द्वारा ही किया जाये। इसके लिए सवर्णोंसे आर्थिक सहायता न मांगी जाये और आनेपर भी न ली जाये। किसी भी हालतमें कमसे-कम एक वर्ष तो गहरे प्रचारके लिए दिया ही जाना चाहिए।"

अगर इस सन्देशसे तुम्हें सन्तोष न हो तो इसे प्रकाशनार्थ मत देना और मुझे लिखना कि तुम्हें किस आशयका सन्देश चाहिए।[1]

यहां ठण्ड बिलकुल नहीं है। उसकी जगह बरसात हो रही है।

आशा है कि तुम पहलेसे ठीक हो।

स्नेह।

बापू

श्री राजकुमारी अमृत कौर
जलन्धर सिटी।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२१) से, सौजन्य अमृत कौर। जी० एन० ६३३० से भी।

२११ पत्र विधानचन्द्र रायको

२ फरवरी, १९३५

प्रिय डा० विधान,

रानी विद्यावती हरदोई जिलेके एक गरीब और बरबाद जमींदारकी पत्नी हैं। मैं उन्हें सालोंसे एक कट्टर कांग्रेस कार्यकर्त्ताके रूपमें जानता हूँ। वे जेल भी जा चुकी हैं। फिलहाल वे किसी रोगसे पीड़ित हैं। स्थानीय डाक्टरोंका विचार है कि उन्हें विशेष चिकित्साकी आवश्यकता है, शायद शल्य-चिकित्सा भी करनी पड़े। उन्होंने उन्हें चित्तरंजन सेवा सदनकी शरण लेनेका सुझाव दिया है। स्वभावतः कुछ महीने पहले, मेरे पास इस आशयकी प्रार्थना आई थी कि मैं आपसे पत्र लिखकर पूछूं कि क्या आप उन्हें एक निर्धन रोगीकी हैसियतसे सेवा सदनमें भर्ती कर सकते हैं। परन्तु बादमें उनके स्वास्थ्यमें कुछ सुधार आता सा लगा और उन्होंने कलकत्ता जाना स्थगित कर दिया। अब यह स्पष्ट लगता है कि उन्हें विशेष चिकित्साकी आवश्यकता है। यदि आप समझें कि उन्हें सेवा सदनमें भर्ती किया जा सकता है तो कृपया मुझे लिखें तथा उन्हें बरुआ हाउस, वजीर हसन रोड, लखनऊके पतेपर तार दे दें।

१ परिवर्तित सन्देशके लिए देखिए "पत्र : अमृत कौरको", १८-२-१९३५।

यदि आप उन्हे भर्ती नही भी कर सकते हो, तब भी यह अच्छा रहेगा कि आप उन्हे सीधे एक तार दे दे।

हृदयसे आपका,

डा० विधान चन्द्र राय
३६, विलिग्डन स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य : प्यारेलाल।

२१२ पत्र : जमनालाल बजाजको

२ फरवरी, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र और तार दोनो मिले। जानकीदेवी आज रवाना हो रही है। यह पत्र उनके साथ जायेगा।

खानेके बारेमे उनको भी समझाया है। उनकी मदद तो मिलेगी ही, इस विषयमे मुझे जरा भी शंका नही है।

ओमकी चिन्ता रखनेकी जरूरत नही। मै खुद रखूंगा।

जानकीदेवीका हृदय कमजोर है। उसकी जांच करा लेना। दवा तो वे नही लेगी, पर क्या है यह समझमे आ जायेगा। डाक्टर इलाजमे क्या करना चाहता है, यह भी मालूम हो जायेगा।

रणछोडभाईवाले रुपयोकी रसीद उद्योग मन्दिरकी ओरसे नारणदासके नामसे अथवा जो ट्रस्टी हो उसके नामसे, तयार करना। ट्रस्टीका नाम मै भूल गया हूँ।

मुझे तो अभी यही रहना है। मच्छरोकी मुझे कोई परेशानी नही है। छत पर तो जरा भी नही है। कल रात बरसात होनेसे नीचे सोया था। वहाँ भी कोई दिक्कत नही हुई।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९५६) से।

२१३ पत्र कान्ति गाधीको

२ फरवरी, १९३५

चि० काति,

तेरा पत्र अभी अभी मिला। आश्चय हुआ और दु ख हुआ। यह चिटठी तेरा अलग ही रूप दिखा रही है। लेकिन तू जसा है वैसा ही दिखे, यही उत्तम बात है। मुझे लिखे गये अपने पिछले पत्रमे खुद तूने आनेकी इच्छा जाहिर की थी। जब मने तुझे बुलाया तब तुझे खून पानी हो जानेका भय हो रहा है। जो पुत्र पिताके पास जाते हुए भयभीत होता हो उसका क्या हाल हो सकता है ? उसके पिताको या पितामहको कितना भयानक व्यक्ति होना चाहिए ? मैंने तो तुम्हे प्रेमके वश होकर बुलाया था। मै तेरे मनकी बात जानकर मागदशन करना चाहता था। कि तु देखता हूँ कि मै तुझे आश्वासन नही दे पा रहा हूँ। ठीक है, यहा मत आ। कि तु वहा आत्म-निरीक्षण कर, अपने चित्तको शा त बना और भला बन। स्वत त्र रह और अपना विकास कर। यह मेरी आशा है और मेरा आशीर्वाद भी।

मेरा पत्र अबतक तुझे मिल गया होगा। काका साहबके माफत भेजा गया पत्र भी तुझे मिल चुका होगा। मैंने तेरा पत्र फाड दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ७२९४) से, सौज य का तिलाल गाधी।

२१४ पत्र शिवाभाई जी० पटेलको

२ फरवरी, १९३५

चि० शिवाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। लगता है कि काम थोडा-बहुत शुरू हो गया है। मेरे विचारसे हमारे ग्रामोद्योगमे भैस तथा भैसके घीको कोई स्थान नही है। जो काम रूढ है और चल रहे है उनमे हमारे हाथ डालनेका क्या लाभ ? हमे कोई व्यापार तो करना नही है। तुम्हे भैसका प्रचार कदापि नही करना है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९५१५) से।

२१५ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

वर्धा
३ फरवरी, १९३५

चि० अम्बुजम,[1]

तुम्हारी अच्छी तरहसे परीक्षा ली जा रही है। यदि तुम इस परीक्षाको अच्छी भावनासे स्वीकार करोगी तो तुम्हारे लिए अच्छा होगा। तुम्हे कदापि हारना नही चाहिए। कृष्णस्वामी पर स्नेहकी बौछार करो। उसकी उदासीपर चिन्ता न करो यदि वह अध्ययन न करे तो कतई परवाह मत करो। उसे कुछ काम दो। उसे कातने दो बुनने दो या लकडीका काम सीखने दो। उसके साथ सैर करो। उसके साथ खेलो। अपना चेहरा खिला रखो। इससे उसपर असर होगा। कुछ समयके लिए उसे रामचन्द्रनके साथ रखो। उसे खेलने दो। उसे हिन्दी सीखने दो। दूसरे शब्दोमे, उसका दिमाग और शरीर प्रसन्नतापूवक काममे लगा रहना चाहिए और फिर सब ठीक हो जायेगा।

दोनो मलयाली लडकिया और शीलावती वर्धा नही छोडेगी। मैने उन्हे लालच दिया लेकिन अभी वे यहा इतनी खुश है कि यहासे नही हटेगी। उनपर जोर डालनेसे कोई फायदा नही।

यदि तुम तैयार हो तो वसुमती इस महीनेके बीचतक तैयार हो जायेगी। तुम एक औपचारिक सावजनिक उदघाटन समारोह नही करना चाहती हो, कि चाहती हो? उसका उदघाटन शान्तिपूवक प्राथनाके साथ होना चाहिए। उसे स्वाभाविक ढगसे पनपने दो। ढिढोरा पीटनेकी कोई जरूरत नही है।

अभी बा की बाहर जानेकी इच्छा नही है। मै उसपर दबाव नही डालना चाहता। और चूकि उदघाटन पूरी तरह निजी ढगका होना है, बा की उपस्थिति सवथा अनावश्यक है।

मेरा दाहिना हाथ थक चुका है, इसलिए मैने यह पत्र बाये हाथसे लिखा है। मुझे आशा है कि तुम्हे लिखावट समझनेमे कोई कठिनाई नही होगी।

स्नेह।

बापू[2]

मूल अग्रेजीसे। अम्बुजम्माल-कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

१ और २ हिन्दीमें है।

२१६ पत्र प्रेमाबहन कटकको

८ फरवरी, १९३५

चि० प्रेमा,

तेरे पत्रका उत्तर इस बार बहुत देरसे दे रहा हूँ। समय नहीं मिलता। आज लिख लिखकर ही हाथ थक गया है। इसलिए बायाँ काममें ले रहा हूँ।

मेरा शरीर दुर्बल तो हुआ होगा, परन्तु मुझे ऐसा अनुभव नहीं होता। उपवास[1]का असर कमजोरी बढानेवाला सिद्ध नहीं हुआ। यदि उपवास छोडनेके बाद सावधानीसे काम लिया जाये तो होना भी नहीं चाहिए।

मैं मानता हूँ कि मेरे भोजनका असर मेरे शरीरपर अच्छा ही हुआ है। मैं इसका विश्लेषण नहीं कर सकता।

माता पिता इत्यादि तुझसे मिलकर गये यह बहुत अच्छा हुआ।

मुहासाका इलाज है तो जरूर। थोडे दिनोतक केवल फलो और कच्चा भाजी पर रहना चाहिए। भाप लेनेसे वे तुरन्त मुरझा जायेंगे। भाप लेनेके बाद ठण्डे पानीसे नहाना चाहिए। तीन चार दिनमें चमडी साफ हो जानेकी सम्भावना है। उसके बाद दूध अथवा बिलकुल फीका दही और फल तथा कच्ची भाजी लेनी चाहिए। भाजीमें मेथी, पालक, लोनी, सलाद उत्तम है। मैं तो सरसोंकी पत्ती और उसकी मुलायम डालिया भी लेता हूँ।

ईश्वरसे याचना करनेका अर्थ है, तीव्र इच्छा करना। ईश्वर हमसे भिन्न भी है और अभिन्न भी। भिन्न है, क्योंकि वह सम्पूर्ण है, अभिन्न है क्योंकि हम उसके अंश हैं। समुद्रसे अलग पड जानेवाली बूंद यदि समुद्रसे विनती न करे तो किससे करे? परन्तु उससे क्या यह समुद्रके लिए कुछ करने या न करनेकी बात हो जाती है? प्रार्थना वियोगीका विलाप है, उसके बिना देहधारी जी ही नहीं सकता।

राष्ट्रकी प्रगतिकी कुंजी हमारे हाथमें है भी और नहीं भी है। प्रगति, जब हम शून्यवत हो जायें, तभी होगी। शून्यवत होना हमारे हाथमें है। परन्तु प्रगति हमारे हाथमें नहीं है, क्योंकि शून्य बने तत्वकी प्रगति एकमात्र परमात्माके हाथमें रहती है।

'ऊधो करमनकी गति न्यारी' यह शुद्ध सत्य है। कर्मका नियम है इतना हम जान सकते हैं, परन्तु हम यह नहीं जानते कि वह नियम किस ढँगसे काम करता है। यह प्रभुकी कृपा है। सामान्य राजाके नियम भी जब हम नहीं जानते, तो फिर नियमकी मूर्तिके समान परमात्माके [सारे] नियमोंको हम कैसे जान सकते हैं?

१ ७ अगस्तसे १३ अगस्त १९३४ तक। गांधीजीके हरिजन कार्यका विरोध करने पर लोगोंने लालनाथको मारा पीटा था, इसलिए गांधीजी ने उपवास रखा था, देखिए खण्ड ५८।

इस लडाईके शुरूमे जो जीत दिखाई देती थी, वह एक कल्पना ही थी। पराभव भी केवल दिखावा ही था। सत्यकी सदा विजय ही होती है, ऐसी जिसकी अटल श्रद्धा है, उसके शब्दकोशमे हार जैसा कोई शब्द ही नही होता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटा नकल (जी० एन० १०३६६) से।

२१७ पत्र शिवाभाई जी० पटेल

वर्धा
२ फरवरी, १९३५

चि० शिवाभाई,

तुम्हारी इच्छा किसी शालामे दाखिल हानेकी है तो मुझे इसमे कोई हज दिखाई नही देता। यह तो तुम्ही कह सकते हो कि तुम इस कामकी जिम्मेदारी ठीक रूपमे अपने ऊपर ले सकते हो या नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फाटो नकल (एम० एन० ९५१४) से।

२१८ पत्र बहरामजी खम्भाताको

वर्धा
४ फरवरी १९३५

भाई खम्भाता

आपका पत्र पढकर मुझे बहुत आनद हुआ, आश्चय भी उतना ही हुआ। कहा जा सकता है कि आप मरण शय्यासे उठे। उपवास भी बडे सरत हुए। क्या कुष्ठ भी जाता रहेगा? दिनशाको धन्यवाद। जो कष्ट बच गये है, वे भी निकल जाये तो फल उत्तम कहा जायेगा।

तहमीना सीताकी भाति सेवा करती है, इसमे मुझे कोई नवीनता नही लगती। न करे, तो अनोखी बात हो और दु ख भी लगे। अवकाश मिलनेपर पूरे उपचारकी तफसील लिखना।

बापूके आशीर्वाद

श्री बहरामजी खम्भाता
नेचर क्योर क्लीनिक
६ टोडीवाला रोड पूना

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६०८) से। सी० डब्ल्यू० ४३९८ से भी, सौजन्य तहमीना खम्भाता।

२१९ पत्र घनश्यामदास बिडलाको

८ फरवरी, १९३५

भाइ घनश्यामदास

तुमारा खत मिला। दोना इटरव्यु[1] का वणन अच्छा है। मुझे पूरा पूरा ख्याल आ गया है। अब तो कुछ करनेका नही रहता है। हा, मै कुछ विचार कर रहा हू कि सर हेनरी क्रेकको लिखु। यदि लिखुगा तो तुमको ही खत भेजुगा। अच्छा न लगे तो नही भेजना। भुलाभाई[2] विसिटस बुक्मे नाम नही लिख सकते है। इन बातामे हम सुवण मागका छोड कर कोई लाभ हासिल नही कर सकते ह। भुलाभाईका विनयी वतन काफी समजना चाहीये। समय अपना काम करेगा।

होम मेबरका विनय और उनकी शुभेच्छा व्यक्तिगत है। जे० पी० सी०के रिपोट[3] की पोलिसी तत्रकी है। तत्रकी नीतिमे कुछ विनय नही है। लेकिन इरादतन अविनय है। मै इसमे से शुभकी कुछ आशा नही रखता हू। यो तो जब तत्रीओकी नीति बदलेगी तब कोई भी कान्स्टीटयूशनसे एक मुद्दत तक निर्वाह कर सकते है। आज तो नयी चीज लादनेकी बात है और वह भी बलात्कार से। कोई इसे अच्छी चीज नही मानते है। तुमारी नीति जसी है ऐसी भले बनी रहे। मै इतना लबा चौडा खत लिखता हू इतना ही बतानेके लिये कि म वायुमण्डलमे से आशाके किरण नही पाता हू। स्वतत्र आशा मेरे मे नित्य है ही वह तो सामने अधेरा होते हुए भी है। उसका आधार हमारी सच्चाईके सिवा और कुछ नही है।

भुलाभाईको कैसी नीति ग्रहण करना चाहिये उसका निणय वल्लभभाईसे करवा ले।

इसी खत [को] लिखते हुए होम मेबरको खत लिखनेका दिल कम हो रहा है। कोई कारण नही पाता हू।

खजूर मिल गया होगा।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ७९७० से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला।

१ तत्कालीन वाइसराय लॉर्ड विलिंग्डन और गृहमन्त्री सर हेनरी क्रेकके साथ।

२ भुलाभाई देसाई अग्रगण्य वकील तथा विधान सभामें कांग्रेस दलके नेता।

३ २३ नवम्बर १९३४ को प्रकाशित इस रिपोर्टमें भारतीय संविधानमें सुधारके सुझाव दिये गये थे, जिनके आधारपर बादमें ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा भारत अधिनियम पास होना था।

२२० पत्र हीरालाल शर्माको

४ फरवरी, १९३५

चि० शर्मा,

थकानके कारण बायें हाथसे लिख रहा हूं। खजूर तुमको भेजा गया है सो मिला होगा। अमतुल लिखती है, तुम दोनों दुःखी हो। यदि यह सही है तो दुःखकी बात है। डा० अनसारीने उर्दू किताबोंकी और थोड़े हिंदीकी फेहरिस्त भेजी थी। मैंने नामंजुर की। अब अंग्रेजी भेजनेकी प्रतिज्ञा तो की है। मुझे तो चिंता नहीं है। लेकिन तुमारे लिये है। यदि समयका सदुपयोग कर रहे हो तब तो अच्छा है। मुझे टाइम टेबल भेजो।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृष्ठ १४८ के सामनेकी प्रतिकृतिसे।

२२१ पत्र अमतुस्सलामको

८ फरवरी १९३५

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम,

तुम्हारा खत मिला है। पढ़कर दुःख हुआ। क्यों खुर्जा गई क्यों चली आई? जिस किसी तरह शान्त हो जाये तो मैं राजी हूँगा। शर्माके बारेमें भी दुःख ही होता है। जो-कुछ त्याग किया है वह वही जानता है। अच्छी बात नहीं है। तुम्हारी सेहत अच्छी होगी। यह खत बायें हाथसे लिखा है क्योंकि दाहने हाथमें लिखनेसे दर्द होता है।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१३) से।

२२२ पत्र एम० जे० कानिटकरको

वर्धा
५ फरवरी, १९३५

प्रिय कानिटकर,

छपे काड या पत्रकी बात मुझे केवल तुम्हारे याद दिलानेपर ही ध्यानमे आ रही है। मुझे विश्वास है कि मै कभी भी इतना अशिष्ट नही रहा हूँ कि छपी अपीलपर अपनी नाराजगी मैने तुच्छ सदेश सम्पादकोके मत्थे मार कर प्रकट की हो। गाडीमे मेरे पास जो समय था उसमे अपनी समझसे जो मुझे सर्वश्रेष्ठ लगा वह मैने तुम्हे लिख दिया।[1] तुम्हारे अखबारको अपने सदेशमे यदि मैने अपनी बात दोहराई है तो वह इसीलिए कि जो कुछ मैने शुरूमे लिखा था वही सर्वश्रेष्ठ था। मुझे दुःख है कि मै तुम्हे इससे अधिक या बेहतर ओर कुछ नही दे सकता। बेहतर तो मै कभी दे ही नही सकता। ओर अधिक मै उसी हालतमे दे सकता हूँ जब फुर्सतकी घडीमे मै अपने तथा प्रिय अभयकरके बीचमे बीती बातोको याद करूँ और उन्हे एक पठनीय कहानीका रूप दूँ। उसके लिए मुझे फुर्सत नही है। यद्यपि मै लगभग तीस वर्षतक तथाकथित पत्रकार रहा हूँ, फिर भी जब इच्छा हो तभी लम्बी चौडी बाते लिखनेकी दक्षता मुझे हासिल नही हो सकी है। बात गढनेमे मै उतना पटु नही हूँ। इस पत्रके लिए मैने अपना इतना समय दिया, इसके लिए तुम्हे मुझे धन्यवाद देना चाहिए। क्योकि यकीन मानिये एक-एक क्षण मेरे लिए बहुत कीमती है। लेकिन मैने यह समय अपने एक पुराने सहकर्मीकी स्मृतिके लिए और तुम्हारी खातिर दिया है, क्योकि तुमने वह पुस्तक भेजकर मुझे उनका परिचय भेजा है। काश! मै अभी भी यह कह सकता कि तुम्हारी पुस्तक मैने पढ ली है। कोई छः बार मैने वह पढनेके लिए उठाई, परतु हर बार कोई न कोई अधिक महत्वपूर्ण काम आ जानेसे उसे बद करना पडा।

हृदयसे तुम्हारा,

श्री एम० जे० कानिटकर, बी० ए०
सम्पादक, 'निस्पृह'
१०५६, सीताबर्डी, नागपुर

अंग्रेजीकी नकलसे प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए 'पत्र **निस्पृह**के सम्पादकको' पृ० १५४।

२२३ पत्र डॉ० विधानचन्द्र रायको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय डा० विधान,

इसके साथ मैं टूबसे सम्बन्धित एक प्रश्नावली[1] भेज रहा हूँ। जितनी जल्दी फुसत मिले कृपया इसके उत्तर भेज दे।

मैं अब इस स्थितिमे हूँ कि अ० भा० ग्रामोद्योग सघके लिए आपसे ठोस सहायता लूं। चार दिनसे लगातार बोर्डकी बैठक हो रही है और हमने अपने सदस्योको हिदायत दी है कि बिना पालिश किये चावलको हाथसे कूटने, तेल एव गन्नेकी स्वय पेराई करने तथा अपना अनाज खुद पीसनेके काम जहा छोड दिये गये हो वहाँ ग्रामवासियोको इन चारो कामोके लिए प्रेरित करनेका कार्यक्रम अमलमे लाये तथा गावकी सफाई एव स्वास्थ्यपर ध्यान दे। अब आप डाक्टरो, डाक्टरी शिक्षाके विद्यार्थियो तथा अन्य विद्यार्थियोका सहयोग लेकर इन सब कामोमे अत्यधिक सहायता प्रदान कर सकते है। आप वैतनिक या अवैतनिक कार्यकर्ताओके दलके साथ पूरे बगालकी देखरेख कर सकते है। और यदि कार्यकर्त्ता अच्छे हो तो जो-कुछ उन्हे मिलेगा उसका दस गुना वे दे सकेंगे क्योकि ग्रामवासियोकी आर्थिक स्थिति और उनके स्वास्थ्यमे इससे तुरत और स्पष्ट सुधार होगा। आप एक ग्राम-साहित्य भी तैयार कर सकते है जो पूरे भारतके लिए आदर्श हो सकता है। मै यह जान-बूझकर कह रहा हूँ, क्योकि बगाल रसायनशास्त्रमे जितना निपुण है उतना कोई और प्रान्त नही है। और क्या इस कार्यक्रमको अमलमे लानेके लिए यही मुख्य रूपसे आवश्यक नही है?

मैंने प्रफुल्ल बाबूसे कहा है कि वे इस सिलसिलेमे आपसे मिले। मै जानता हूँ कि आप उनकी मदद करेंगे।

हृदयसे आपका,

सलग्न १

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागज़ात, सौजन्य प्यारेलाल।

1. देखिए अगला शीर्षक।

२२४ प्रश्नावली

५ फरवरी, १९३५

आयुर्वेदिक चिकित्सकोका कहना है कि स्वास्थ्यकी दृष्टिसे दूधोमे गायका दूध सर्वोत्तम है। वे भैसके दूधको निचला दर्जा देते है। क्या आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान इस विचारमे सहमत हे? अगर हे, तो किस तरह ?

प्राय ऐसा सुननेमे आता है कि सभी प्रकारकी वसाएँ पाचन सस्थान पर एक सा काय नही करती। क्या गायके दूधसे निकाले गये मक्खन और भैसके दूधसे निकाले गये मक्खनमे काई भिन्नता है? यदि है तो वह क्या है? भैसके एक पौंड दूधसे गायके एक पौड दूधकी अपेक्षा कही अधिक वसा या मक्खन निकलता है, यह बात यहा अप्रासगिक है।

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात मौजन्य प्यारेलाल।

२२५ पत्र सी० मुकर्जीको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय बहन,

आपका पत्र मिला। आप सघकी सबसे अच्छी सहायता सदस्योके बीच यह प्रचार करके कर सकती हैं कि वे गावमे उत्पन्न व बनी चीजोका ही, जहा वे उपलब्ध हो, प्रयोग करे। दूसरे, आप महिला कायकर्त्ताओको उनके निवास-स्थानके आसपासके गावोमे भेज सकती है, ताकि वे वहा सफाईका काम करे तथा ग्रामवासियोको चावलकी हाथसे कुटाई जैसे कामोके लिए प्रेरित करे। यदि आप 'हरिजन' पढ या ले नही रही हैं, जिसमे हर हफ्ते अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके क्रिया-कलापोकी जानकारी दी जाती है, तो मै आपको सलाह दगा कि आप उसे खरीदे और पढे। मै आपसे यह भी कहूँगा कि आप श्रीमती गोसीबहन कैप्टेनसे, जो अ० भा० ग्रा० स० के बोडकी सदस्या है, सम्पक बनाये। अभी वे बोडकी बैठकमे भाग लेनेके लिए यहा आई हुई है, इसलिए मै उन्हे कह रहा हूँ कि वे आपको लिखे।

हृदयसे आपका,

श्री सी० मुकर्जी
अवैतनिक सगठन मत्री
९ लोअर राडन स्ट्रीट, कलकत्ता

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२२६ पत्र डॉ० मु० अ० अन्सारीको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय डा० असारी

इसके साथ एक और प्रश्नावली ह जिसके उत्तर आप जितनी जल्दी फुसत मिले भेज दे। आपके खयालमे शमाको जा अग्रेजी पुस्तक पढनी चाहिए, कृपया उनकी एक सूची मुझे भेज दे। आप कोई लम्बी चाडी सूची तयार करनेके चक्करमे न पडे। यही काफी ह कि आप मुझे उन पुस्तकाकी एक प्रारम्भिक सूची[2] भेज द जिन्हे पढना उसके लिए इस अत्यन्त जटिल मानव शरीर यत्र पर प्रयोग कर सकनेके लिए आवश्यक हो। आशा है कि आप कामक बोझसे अपनेका इतना थका नही रहे होगे कि महज उपचारके लिए आपको पुन यूराप जाना पडे।

डा० मु० अ० असारी
१, दरियागज, दिल्ली

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२२७ पत्र जी० जी० जाधवको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय जाधव

वहा लोग धमके नामपर बकरोका वध कर रहे है, ऐसा मै कभी सोच भी नही सक्ता था। भोजनके लिए पशुका वध निश्चय ही बुरा है। परतु धम के नामपर उसका वध तो मेरे विचारमे ईश्वर-निन्दा ही है। जब हम यह सोचते है कि हम अपने पापोके लिए मूक पशुओकी बलि देकर ईश्वरका खुश कर सकते है ता हम उसे नीचे गिराकर अपने धरातलपर ले आते है। मेरी समझसे हम केवल अपना बलिदान करके ही उसे खुश कर सकते ह।

हृदयसे आपका,

श्री जी० जी० जाधव
सम्पादक, 'सेवक'
कोल्हापुर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ सदर्भ शायद प्रश्नावली ' पृ० १८८ का है।
२ देखिए 'पत्र हीरालाल शर्माको', पृ० १८५।

२२८ पत्र डॉ० एस० सुब्बारावको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय सुब्बाराव,

इसके साथ एक और प्रश्नावली[1] है। जब भी आपको समय मिले, इसके उत्तर दें।

हृदयसे आपका,

डा० एस० सुब्बाराव
बंगलोर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२२९ पत्र एन० आर० धरको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय प्रो० धर,

पिछले महीनेकी १२ तारीखको आपने जो पत्र डा० मेहताको लिखा था, उसे उन्होंने मेरे पास भेजनेकी कृपा की है।

बिना पालिश किये चावल तथा अन्य खाद्य पदार्थोंके सम्बन्धमें आपकी सही राय मेरे लिए बहुत ही सहायक सिद्ध हुई है।

क्या आप संलग्न प्रश्नावलीपर प्रकाश डाल सकते हैं?

हृदयसे आपका,

संलग्न १

प्रो० एन० आर० धर
प्रयाग विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए पृ० १८८।

२३० पत्र मेसर्स जाफ़री ब्रदर्सको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

मलिक गुलाम सरवर खा द्वारा लिखित 'लाइफ आफ दि प्राफेट'की प्रति के लिए मै आपको धयवाद देता हूँ। साहित्य पढनेके लिए मुझे एक मिनटकी भी फुसत नही है। परन्तु मै मलिक साहबकी पुस्तक पढना चाहूँगा, और जब भी पढ लूगा मै इसके सम्बन्धमे अपनी राय खुशी-खुशी आपको दूगा।

हृदयसे आपका,

मेसस जाफ़ी ब्रदस
अनवर अहमदी प्रेस
२८७, शाहगज, इलाहाबाद

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२३१ पत्र एस० तिरुवेगदसामीको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय तिरुवेगदसामी,

आपके विद्यालयके कायकी रिपाट मुझे मिली है। मै आशा करता हूँ कि विद्यालय औद्योगिक शिक्षाके लिए अधिकाधिक प्रबन्ध करेगा।

हृदयसे आपका

श्री एस० तिरुवेगदसामी
शिक्षक, एच० एस० एस० स्कूल
बाजार स्टीट, मन्नारगडी (जिला तजोर)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२३२ पत्र पी० जी० मैथ्यूको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय मथ्यू

तुम्हे थानाम कुछ नही करना चाहिए, ऐसा मने तुमसे पहले ही कह दिया था। तुम्हारा जन्म शारीरिक काय करनेके लिए नही हुआ है। मेरी तो यही इच्छा हे कि तुम कोई नौकरी प्राप्त करके, वह चाहे कितनी ही छोटी क्यो न हो परिवारके साथ रहो और उसकी सेवा करो।

श्री पी० जी० मैथ्यू
चेप्पड
हरिपद (त्रावणकोर)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागज़ात, सौजन्य प्यारेलाल।

२३३ पत्र एम० सुकोसको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपको हर महीने ३० रुपये भेजना मेरे लिए सम्भव नही है। मेरे पास ऐसा कोई कोष नही है जिसका मैं सहारा ले सकू। आपको वही जो प्रयास किया जा सके, करना चाहिए अथवा अपनी पूरी योग्यताएँ बताते हुए केंद्रीय कार्यालयको लिखना चाहिए।

हृदयसे आपका,

एम० सुकोस, महोदय
समदानपुरम
पालमकोट्टा डाकखाना, जिला तिन्नेवेल्ली

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२३४ पत्र राजेन्द्रनाथ बरुआको

५ फरवरी, १९३५

प्रिय बरुआ,

आपका पत्र मिला। कुनेके 'साइंस ऑफ हीलिंग'मे दिये गये आदेशोका यदि आप सावधानीसे पालन करेंगे तो मुझे जरा भी संदेह नही कि इससे आप दोनोका भला होगा।

अन्नदा बाबू आसाममे कताइका प्रबन्ध करने वाले है। इसलिए मै आपसे कहूँगा कि आप उनसे सम्पर्क स्थापित करे।

हृदयसे आपका

श्री राजेन्द्रनाथ बरुआ, बी० एल०
वकील
गोलाघाट (आसाम)

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२३५ पत्र क० मा० मुंशीको

५ फरवरी, १९३५

भाई मुंशी

आपका पत्र मिला। स्वदेशी प्रदर्शनियोमे हमे किस हदतक भाग लेना चाहिए, यह वास्तवमे विचारणीय है। यदि बैलगाडीको हवाई जहाजाके प्रदर्शनमे स्थान दिया जाये तो यह दयादृष्टि कही जा सकती है, किन्तु इसका उपयोग क्या है? यदि कोई विराट पुरुष अपनी कनिष्ठाके नखपर अगणित वामनोको ऊँचा उठाकर दिखाये तो इसमे उसका क्या अभिप्राय हो सकता है? इस प्रश्नको अच्छी तरह सोचकर जिसमे ग्रामोका हित-साधन दिखे वही करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५६७) से, सौजन्य क० मा० मुंशी।

२३६ पत्र एम० जे० कानिटकरको

[५ फरवरी, १९३५के पश्चात][१]

प्रिय कानिटकर,

मैने अभी-अभी जनसख्याका हौआवाला अध्याय पढकर समाप्त किया हे। मुझे कहना चाहिए कि यह कतई विश्वासोत्पादक नही हे। आपने यह कहकर अपना पक्ष ही खो दिया ह कि महामारिया ओर अन्य आपदाये जनसख्याकी वद्धिमे रोक लगाती रहेगी। उनका कहना है कि आधुनिक विज्ञान मत्यु दरमे कमी लाता हे। जीवन सरक्षणके लिए नित नई खोजे हो रही है। इसलिए वद्धि असह्य हो जायेगी। गम्भीरतासे दी गई इस दलीलका उत्तर गम्भीरतासे ही देना होगा। तुमने तो अपने विषयका अध्ययन तक नही किया है। सुयोग्य लेखकोने माल्थसके सिद्धान्त और उसके बादके विकासका खण्डन किया हे। अगर अन्य अध्याय भी इतने ही बेकार ह तो म आपसे केवल यही कह सकता हूँ कि आप अपने विषयका पहले अध्ययन करे ओर तब पुस्तक दुबारा लिखे। मैने पुस्तक अब प्रो० मलकानीको दे दी है, ताकि वे पढकर अपनी राय मुझे दे। उन्हे इसके बारेमे कोई जानकारी नही हे।

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२३७ पत्र जमनालाल बजाजको

वर्धा
६ फरवरी, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। डा० जीवराजके पत्रसे मुझे सन्तोष हे। वे तुम्हार भोजनमे कुछ परिवतन करना सुझाते है। मक्खन ज्यादा लेनेको कहते है। उनके साथ बात करके बढाना जरूरी समझो तो बढा देना। मुझे डर है कि तुम बातचीत बहुत करते होगे और कसरत कम। यदि ऐसा हो तो दोनो बातोमे सुधार करनेकी जरूरत है। मुझे विस्तारसे लिखना।

कमलनयनके साथ बाते की है। मेरी निश्चित राय है कि यदि वह राजी हो जाये तो विवाह करके ही उसका विलायत जाना उचित है। परन्तु अपनी पत्नी को वह साथ न ले जाये। पत्नीको ले जाकर पढ सकना लगभग असम्भव है।

१ देखिए 'पत्र एम० जे० कानिटकरको', ५-२-१९३५।

विलायतमे घर-गृहस्थी जोडना भी अनुचित है। हा, दोनो सैर-सपाटेके लिए जाये तो बात दूसरी है। पर यहा तो सैर-सपाटेका सवाल है ही नही। मेरी राय इस प्रकार है अभी सगाई कर ले, वहा मलेरिया न रहे तब कोलम्बो जाये और एक परीक्षा तो पास कर ही ले। फिर विलायत जाये। जानेसे पहले विवाह कर ले। थोडा समय गार्हस्थ्य सुख भोगना चाहे तो भोगे, परन्तु विलायत तो अकेला ही जाये। चाहे तो विलायतसे आता-जाता रहे। कोलम्बोका अनुभव कमलनयनको काफी काम आयेगा। उसका जीवन अभी अध्ययनशील नही बना है। यह हो जानेपर फिर कोई कठिनाई नही रहेगी।

उद्योग सघमे छ स्थायी ट्रस्टी नियुक्त किये है, उनमे तुम्हारा नाम लिखा है। यह आवश्यक था। अत तुमको साधारण सदस्य बनानेकी जरूरत है। इसका फार्म पत्रके साथ भेज रहा हू, उसे भरकर लौटती डाकसे भेज देना। इसमे सकोचका कोई कारण नही है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

कृष्णदास सगाईके लायक हो गया है। कोई लडकी तुम्हारी निगाहमे है? यदि हा तो लिखना।

बापू

[पुनश्च]

सदस्यताका फार्म सलग्न है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०३५) से।

२३८ पत्र ना०[1] को

६ फरवरी, १९३५

चि० पण्डितजी,

रा० बडा दुख दे रहा है। किन्तु इसकी चिन्ता मत करो। उसका कर्ज चुकाने के लिए पैसा बिलकुल नही भरना है। वह नौकरी करके उसे मजेसे चुका सकता है। जहासे वेतन मिलता है वहीसे लेनदारोको कमसे-कम २५ रुपये सीधे दे दिये जाये। यह ठीक ही होगा। यदि वह अपनी यह बुरी आदत छोड दे तो बहुत जल्दी सुधर जायेगा। सयाने बच्चोके बारेमे माता पिताकी जिम्मेदारी केवल सलाहकार होनेकी ही हो सकती है। इसलिए ग० और बाबूके प्रति आपकी किसी प्रकारकी

१ नाम नहीं दिये जा रहे हैं।

आर्थिक जिम्मेदारी नहीं है। ग० ने अपने वचनका पालन नहीं किया। उसकी पढाई कैसी चल रही है।

मदुबहनको रा० के विषयमें बताना। मैं उसे थोडेमें लिख रहा हूँ, किन्तु तुम्हारा कहना शोभा देगा। मुझे लिखते रहना।

मने ल० से बात नहीं की है, थोडी बहुत अवश्य कर लूँगा। तुम्हारा उसे कुछ लिखना जरूरी नहीं है। वह कुछ कर नहीं सकती, केवल दुःखी होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० २४९) से, सौजन्य लक्ष्मीबहन एन० खरे।

२३९ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

६ फरवरी, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। बिना कुटे चावलको अगर तीन घंटे तक ठण्डे पानीमें भिगोकर दालकी तरह पकाया जाये, तो वह आसानीसे पक जाता है। हम चावलको कूट कर व्यर्थ पैसा खर्च करते हैं और उसे कमजोर भी बना देते हैं। पूर्ण चावलको पकाकर एकदिल कर डालना चाहिए। जबतक चावल अलग-अलग रहेंगे, तबतक समझना चाहिए कि वे ठीक नहीं पके हैं।

नस्यका उपयोग तो करके देखना ही चाहिए। तुम्हें तो उसका उपयोग दवाकी तरह करना है, इसलिए चुटकीमें बिलकुल थोडी सी लेना। इस काममें लाई जानेवाली नस्य बिलकुल शुद्ध होनी चाहिए। तुम यह तो जानते ही होगे कि बाजारकी नस्य में बडी मिलावट होती है।

सुरेन्द्रके साथ उडीसाके दो लोगोंमें से किसी एकको भेजनेमें कोई हर्ज नहीं है। महादेव कलकत्ता गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७०) से।

२४० पत्र गगाबहन झवेरीको

६ फरवरी, १९३५

चि० गगाबहन (झवेरी)

मै तुम्हारा पत्र मिलनेकी राह देख ही रहा था। विद्यार्थीकी तरह रहती हो, यह तो बहुत अच्छी बात हे। तुम्हारे श्रमसे नवीन और महेशको बडा लाभ पहुँचेगा।

समयके साथ दोनो भाई खूब अच्छे बन जायेगे। तुम कुछ बरसोतक वहासे मत हिलना। जी भरकर पढना लिखना। शरीर सुधारना। जीवनमे सादगी कभी मत छोडना। कताई यज्ञ तो चलता ही होगा। जहातक हो सके, गावोमे बनी चीजे ही काममे लाना। आहार विहारके नियमोका दढतासे पालन करके शरीर सुधारना। बीच बीचमे पत्र लिखती रहना। महेशसे कहना पत्र लिखे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फाटो नकल (जी० एन० ३१२०) से।

२४१ पत्र अमतुस्सलामको

६ फरवरी, १९३५

प्यारी बेटी अमतुल सलाम,[1]

तुमारा खत मिला। बाये हाथसे लिखनेमे बहुत देर लगती है इसलिये इसे लिखवा रहा हू। तुमको मै क्या सलाह दू? जिससे तुम्हारा चित्तको शाति मिले वही करो, और वही मुझे पसद होगा। शर्माका खत आया है, वह इसके साथ रखता हू। वह तुम्हारे साथ रहे तो मुझे कोई एतराज नही है। मै हुकम नही करूगा। न ऐसी आवश्यकता महसूस करता हू। हरिजन महल्लोमे रहो, सो तो मुझे अच्छा लगेगा ही। पतियालामे भाईके साथ रहकर कुत्स्याकी सेवा करेगी तो भी अच्छा है। अम्बालेमे स्वामीके[2] साथ रहकर तदुरस्त हो जाये और शरीरकी रक्षा करती हुई जो मिले वह सेवा भी करे तो वहुत अच्छा हो सकता है। और साथ-साथ जो चाचाजाद भाई रहता है उसकी भी कुछ सेवा करेगी, इतना याद रखो कि जिसको सेवा ही करना है उसके लिये सारा जगत क्षेत्र है। जहा जो सेवा मिल गई, उसे खुदाकी नियामत समझकर करे। अब तुम्हारे एक निश्चयपर आ जाना चाहिये,

१ सम्बोधन और हस्ताक्षर उर्दूमें है।

२ अमतुस्सलामके भाईके मित्र स्वामी उमाप्रसाद।

और किसी स्थान पर बैठ जाना चाहिये। तारावतीके हरफ अच्छे हैं। उसके शादीके वरतपर मेरा आशीर्वाद जरूर भेज देना। इसके पहले मैंने पतियालेके सिरनामे कार्ड भेजा है, वह मिला होगा।

बापूकी दुआ

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ३१४)से।

२४२ तार जमनालाल बजाजको

वर्धा
७ फरवरी, १९३५

श्री जमनालालजी,
बम्बई।

अगर तुम पूरी तरह आश्वस्त हो, तो बैंकका प्रस्ताव स्वीकार कर सकते हो।

बापू

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० १५२

२४३ पत्र सी० एफ० एन्ड्र्यूजको

७ फरवरी, १९३५

प्रिय चार्ली,

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। तुम्हें मैं अधिक नहीं लिखूँगा। मैं तुम्हारे पश्चिमी आफ्रिकाके कार्यक्रमका पूरा समर्थन करता हूँ।

तुमने मुझसे किसी प्रकारका निश्चित वचन नहीं मांगा है। फिर भी तुम मुझसे यह उम्मीद तो रख ही सकते हो कि जबतक लाचार नहीं हो जाता, मैं जेल जानेकी कोशिश न करूँगा। वैसे 'जेल जानेकी कोशिश' इन शब्दोंसे मेरा आशय व्यक्त नहीं हो पाता। जेल तो जबदस्ती मुझपर थोपी जायेगी। जिस बातकी मैं कोशिश कर रहा हूँ, और जिसकी कोशिश मैं जारी रखूँगा, वह है जेल न जाना। मैं इस आशंकाको तबतक दूर नहीं कर सकता जबतक मैं किसी तरहकी जल्दबाजी न करूँ अथवा बिलकुल ही चुप न बैठ जाऊँ। मैंने यह जाननेकी कोई कोशिश नहीं की कि सरकार कौन-सा विकल्प चुनने जा रही है। मैं धीरजसे काम

ले रहा हूँ। इस बीच तो मै अपने और सरकारके बीच किसी भी प्रकारके सघषको टालनेके लिए विशेष सावधानी बरत रहा हूँ। इसलिए इस सम्बन्धमे मनपर कोई भी बोझ लिये बिना तुम निश्चित होकर प० आफ्रिका जा सकते हो।

मुझे खुशी हुई कि रेडियोपर प्रसारित तुम्हारे विचारो[1] का इतना स्वागत हुआ है। और सब खबर तुम्हे यहा से महादेव तथा दूसरे व्यक्तियो द्वारा लिखे नियमित पत्रोसे मिलती ही रहेगी।

स्नेह।

मोहन

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२९७) से।

२४४ पत्र एस० गणेशनको

७ फरवरी, १९३५

प्रिय गणेशन,

तुम तो एकदम व्यवहार-कुशल नही हो। जो बात तुम चार पक्तियोमे लिख सकते थे, उसके लिए तुमने मुझे एक लम्बा पत्र भेजा है। और उसपर भी मैने अपने पत्रमे जो एक बहुत ही प्रासगिक प्रश्न उठाया था उसका तुमने उत्तर ही नही दिया। यह कार खरीदनेकी बात क्या है? क्या तुम अब उसका उत्तर दोगे?

अपनी इच्छाके विरुद्ध तुम अपने अखबारका प्रकाशन बद करो, इस बातका दोषी मै नही बनूगा। मै तो महज यही कह सकता हूँ कि कोदम्बक्कम ही काफी है। और किसीके लिए जगह नही है। लेकिन यदि तुम्हारा विचार इसके विपरीत है तो तुम अपनी इच्छानुसार काम कर सकते हो, और उसका परिणाम भुगत सकते हो। म तुमसे तुम्हारी पहलकदमी छीनना नही चाहता और न तुमपर कोई ऐसा सहकर्मी ही थोपना चाहता हूँ जो तुम्हे पसन्द न हो। लेकिन मुझे विश्वास है कि तुम यह नही चाहोगे कि दूसरे लोग वह काम करे जो तुम स्वय उनके कहनेपर नही करोगे। क्या पारस्परिकतामे तुम्हारा विश्वास नही है?

श्री एस० गणेशन
मद्रास

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

1. जनवरी मासमें बी० बी० सी० के अपने प्रसारणमें सी० एफ० एन्ड्रयूजने सयुक्त ससदीय समितिकी रिपोर्टकी कड़ी आलोचना की थी।

२४५ पत्र एडिथ होवे-मार्टिनको

७ फरवरी, १९३५

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र मुझे अभी अभी मिला है। मै कल (८ तारीखको) तुम्हारे साथ शाम ६ से ७ बजे तक टहल सकता हूँ। ९ तारीखको मै व्यस्त रहूँगा। १० तारीख को मुझे पुन उसी समय टहलनेके लिए फुसत रहेगी। ९ तारीखको तुम मेरे साथ ६ १५ तक टहल सकती हो। ६ ३० से ७-३० बजे तक मुझे एक निजी मन्दिरके वार्षिकोत्सवमे भाग लेना है। वह मन्दिर हरिजनोके लिए खुला है। ७ ३० बजेके बाद हम फिर टहल सकते हैं। ११ तारीखको तुम्हे मद्रास पहुँचना है। इसका अथ शायद यह है कि हम केवल कल और परसो ही टहल सकते ह। परन्तु मैंने तुम्हे तीन दिनका कायक्रम बता दिया है। जो भी दिन तुम्हे पसन्द हो, चुन सकती हो।

श्रीमती एडिथ होवे-मार्टिन
माफत डा० मार्टिन
म्योर अस्पताल
नागपुर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२४६ पत्र एस० जे० दुरैसामीको

७ फरवरी १९३५

प्रिय मित्र,

मेरा सदेश यह है

ईसाई, मुसलमान, हिन्दू, पारसी और यहूदी विद्यार्थियोकी भिन्नताकी बात सुनते-सुनते मै अब ऊब गया हूँ। मै इन जातियोकी भिन्नताको कभी समझ नही सका। अच्छे विद्यार्थी, होशियार विद्यार्थी, खराब विद्यार्थी, मद विद्यार्थी आदि से तो मै परिचित हूँ। उनके वगकी छाप उनके तौर-तरीको और उनकी बोलीमे रहती है, परन्तु मुसलमान विद्यार्थी ओर ईसाई विद्यार्थीकी पहचान करनेमे मै प्राय असफल रहा हूँ। आपके पाठकोको यह दुलभ अवसर मिला है कि वे अखिल भारतीय ग्रामोद्योग

सघकी गतिविधियोमे भाग लेकर भारतके गावामे बसनेवाली भारतीय जनता के साथ तादात्म्य स्थापित कर सकते हैं।

हृदयसे आपका,

श्री एस० जे० दुरसामी
वाई० एम० सी० ए० मद्रास

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२४७ पत्र डॉ० एन० बी० खरेको

७ फरवरी, १९३५

प्रिय डॉ० खरे,

आपका पत्र मिला। मुझे मालूम था कि आप दिल्ली आ रहे हैं और मुझे लगा था कि हम एक दूसरसे बिना मिले ही पाससे गुजर जायेंगे।

मैंने कानिटकरको[1] एक सदेश भेजा था। उसकी शिकायत है कि वह बहुत ही सक्षिप्त है। उसे मालूम नही कि रोजके नियमित कार्योके अलावा और कोई काम करनेके लिए मेरे पास कितना कम समय है। यदि मै नागपुर गया तो निश्चय ही प्रस्तावित स्मारककी चर्चा करूँगा।

हृदयसे आपका,

डॉ० एन० बी० खरे, सदस्य, विधान सभा
३, इलैक्ट्रिक लेन
नइ दिल्ली

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए 'पत्र निस्पृह के सम्पादकको', पृ० १५४।

२४८ पत्र गणनाथ सेनको

७ फरवरी, १९३५

प्रिय कविराज,

क्या आप साथमे भेजी जा रही प्रश्नावलीके उत्तर आयुर्वेदके अनुसार दे सकते है और उनकी आधुनिक चिकित्सा प्रणालीके अनुसार व्याख्या कर सकते है ?

हृदयसे आपका,

सलग्न १

कविराज गणनाथ सेन
आयुर्वैदिक अस्पताल
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२४९ पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको

७ फरवरी, १९३५

प्रिय ठक्कर बापा,

थारपाकरके पास काफी धन नही है मेरा मतलब यह नही था।[1] बल्कि प्रताप दियालदासकी इस इच्छाको पूरा करना था कि यह पैसा थारपाकर पर ही खर्च किया जाये। इसलिए आपको खातोमे केवल यह परिवर्तन करना है कि उनकी यह थोडी-सी राशि थार-पाकरके नाम चढानी है तथा उसके बराबर धन आम कोषमे डाल देना है।

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए 'पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको', पृ० १५९।

२५० एक पत्र

७ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

पिछले २७ दिसम्बरकी तुम्हारी लम्बी टिप्पणी मैंने अब पढ़ी। क्या आप अभी भी ऐसी भेडे पाल रहे है जिनसे उतना ऊन प्राप्त हो जाता है जितना कि आपने बतलाया था? यदि ऐसा हो तो मै चाहूँगा कि आप सेठ घनश्यामदास बिडला, अल्बुकक रोड नई दिल्लीसे पत्र व्यवहार करिये, क्योकि वे इसी विषयमे प्रयोग कर रहे है।

आप मेरे साथ विचार विमर्श करना चाहते है, तो इस महीनेके अन्दर सोमवारके अलावा किसी दिन भी वर्धा आ सकते है। यदि आप वर्धा आये तो जिस दिन आप आ रहे हो मुझे पहलेसे उसकी सूचना दे द।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२५१ पत्र खुर्शीदबहनको

७ फरवरी, १९३५

मुझे तुम्हारे दो पत्र मिले। मै दाहिने हाथको आराम दे रहा हूँ। मै बाये हाथसे लिख सकता हूँ, किन्तु काम धीरे होता है। इसलिए, आजकी डाकमे भेजनेके लिए यह पत्र बोलकर लिखा रहा हूँ।

अपने दोनो पत्रोमे तुमने जो भी विचार प्रगट किये है उनसे मै सर्वथा सहमत हूँ। मै पूरी तरहसे स्वीकार करता हूँ कि आदर्श अवस्थामे विचार और कार्यमे पूर्ण अनुरूपता होनी चाहिए। केवल तभी यह सम्भव है। कि सत्यके साक्षात दर्शन किये जा सके।

अमतुल सलाम पटियालामे है। वह अपने मनके कारण ही दुखी है।

मै चाहता हूँ कि अण्डोके प्रति अपनी आपत्ति तुम छोड दो। मेरा खयाल है कि मैंने तुमसे कहा था कि अब निर्बीज अण्डे प्राप्त किये जा सकते है।

ये सागली, सालवेशन डिपो बम्बई, पूनामे किसी स्थानसे और अहमदाबादमे सालवेशन डिपोसे प्राप्त हो सकते हैं। ये अण्डे मुर्गियोसे सीधे मिल जाते है, उन्हे सहवासकी क्रियासे नही गुजरना पडता। आध्यात्मिक दृष्टिसे दैनिक खाद्यकी वस्तुके

रूपमें इन्हें ग्रहण करना शायद आपत्तिजनक होगा। किन्तु चिकित्साके साधनके रूपमें निर्बीज अण्डेपर आपत्ति नहीं की जानी चाहिए।

शायद तुम्हें मालूम होगा कि कमलाकी तबीयत फिरसे बिगड़ गई और पिछले सप्ताह उसका वजन २ पौंड कम हो गया।

श्री खुर्शीदबहन
७८, नेपियन सी रोड
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२५२ पत्र जी० एस० नरसिंहाचारीको

७ फरवरी, १९३५

प्रिय नरसिंहाचारी

पिछले मासकी ३० तारीखका आपका पत्र मिला। इस विषयमें मैं आपकी बहुत कम सहायता कर सकता हूँ। आप सदस्य महोदयको स्वयं ही लिखें। इस मामलेमें प्रोफेसर रंगा मुझसे मिले थे। उन्होंने मेरी कठिनाई समझी थी।

हृदयसे आपका,

श्री जी० एस० नरसिंहाचारी
मार्फत उपकुलपति
आंध्र विश्वविद्यालय, वॉल्टेयर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२५३ पत्र डी० एन० शर्माको

७ फरवरी, १९३५

प्रिय शर्मा,

मुझे आपका पत्र मिला, और उसके साथ सलग्न मोडिनोके उपचारके बारेमे लोगो की राये भी। मै इन रायोका उपयुक्त उपयोग करूँगा।

हृदयसे आपका,

श्री डी० एन० शर्मा
मत्री
हरिजन सेवक सघ, जारहाट (आसाम)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजय प्यारेलाल।

२५४ पत्र फिरोज गाधीको

७ फरवरी, १९३५

प्रिय फिरोज,

इस मासकी २ तारीखका तुम्हारा पोस्टकाड कुछ अशात करनेवाला है। कमला का वजन इतना नही है कि अब और कम हो सके। फिर भी म सोचता हूँ कि स्वास्थ्य लाभकी अवस्थामे ये उतार-चढाव चलते रहेगे।

क्या तुम्हे जैसे फल और सब्जिया चाहिए, वैसे मिल जाते ह?

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२५५ पत्र एस० अम्बुजम्मालको

वर्धा

७ फरवरी, १९३५

चि० अम्बुजम,[1]

मुझे तुम्हारा हिंदी पत्र मिला जो काफी अच्छा लिखा है। आशा है, कृष्णस्वामी के बारेमें मेरा पत्र जिसे अनुप्रेषित किया गया था, तुम्हें मिल गया होगा। तुम्हें उसके साथ खूब खुश रहना चाहिए और अपनी खुशीसे उसे खुश बना देना चाहिए। उसे किसी ऐसे काममें लगाओ जो वह पसन्द करे।

वसुमती आज यहाँ आ जायेगी। जब तुम उसका स्वागत करनेको तयार हो जाओ, मुझे बता देना। मैंने तुम्हें बताया है कि जो तीन लड़कियाँ यहाँ हैं, वे मद्रास नहीं जायेंगी। इधर हालमें उन्होंने हिंदीमें अच्छी प्रगति की है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीसे। अम्बुजम्माल कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

२५६ पत्र नारणदास गांधीको

७ फरवरी, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। साथमें हरिलालके लिए पत्र है, उसे पढ़ लेना। यदि तुम्हें यह स्वीकार हो कि वह मेरे पास आये तो यह पत्र उसे दे देना। और यदि वह राजी हो तो उसे रवाना कर देना। सम्भव है कि वह अब मेरे पास रहकर ज्यादा सुधरे।

आशा है, गोकीबहन ठीक होंगी।

प्रेमाकी ओरसे आया हुआ पत्र इसके साथ है। लीलावती कैसी है? कुसुमका स्वास्थ्य कैसा रहता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४२९ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी।

१ यह हिन्दीमें है।

२५७ पत्र राजेन्द्र प्रसादको

७ फरवरी, १९३५

भाई राजे द्र बाबू,

तुम्हारा पत्र मिला। यदि तुमने लिखा ह इसी प्रकारका समझौता हा सके तो मुझे प्रिय लगे। होनेका सभव मुझे कम लगता है। लेकिन प्रयत्न ता करे। छपरेमे जो काम करना था वह हा गया?

महादेव कलकत्ता गया हे। ९ तकम वापीस आ जायगा।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ९७४५ से, सौज य राजे द्रप्रसाद।

२५८ टिप्पणी[1]

[७ फवररी, १९३५ या उसके पश्चात]

राजका चप्पल भेजनेकी कोई जरूरत नही है यहा से मिल जायगा। तुमारे ज्योतिप्रसादके मातेहत कोई देहातमे रहना अच्छा होगा।

बापु

जी० एन० ६६३१ की फाटो नकल से। सी० डब्ल्यू० ४२७९ से भी, सौजन्य चन्द त्यागी।

२५९ घोर अज्ञान[2]

एक हरिजन सवक लिखते है

२५ १२ ३४ को जयपुर-राज्य सम्मेलनके साथ एक मकानकी पहली मजिलपर प्रदशनीकी दुकान लगाई गई थी, उसपर एक हरिजन लडका कपडा बेचनेको बराडेंमे बठा था। बराडेके नीचे चौकमें सभा की गई थी, जिसमें कि गावके सवण लोग भी थे। उसे देखकर यहाके सवण हिन्दू इसलिए

१ चन्द त्यागीकी विधवा पुत्रवधू राजकिशोरीके भाईको लिखी गई यह टिप्पणी उस पत्रपर थी जो राजकिशोरीने अपने भाईको ७ फरवरी १९३५ को लिखा था।

२ यह टिप्पणियाँ शीर्षकके अ तगत प्रकाशित हुआ था।

बिगड गये कि एक हरिजन लडकेको ऊपर क्यो बठने दिया, और सवण लोगोने मन्दिरमें पचायत की और यह निश्चय किया कि

(१) खादी-प्रदशनी और सम्मेलनमें गावका कोई भी मनुष्य न जाये। अगर जायेगा तो वह जाति-बाहर कर दिया जायेगा।

(२) कया पाठशालामें लडकिया पढने न जायें, क्योकि पाठशालाका सम्बन्ध सम्मेलनवाले लोगोसे है।

(३) हरिजन पाठशालाके अध्यापकोको कोई अपने मकानमें न आने दे।

पचायतकी इतनी सख्ती होनेपर भी गावके कोई २८ युवकोने सम्मेलनके कायमें भाग लिया, और जब पचायतने उनपर एक एक रुपया जुर्माना किया, तो उन्होने जुर्माना देनेसे इनकार कर दिया।

सम्मेलनकी रसोईमें करीब तीन-चार सौ मनुष्य एक साथ जीमते थे। जबसे लोगोने यह बात सुनी है, तबसे शोर मचा है कि 'धम डुबा दिया, धम डुबा दिया।'

कट्टर लागाके इस बर्तावमे सिवा हमारे घोर अज्ञानके और तो कुछ दिखाई नही देता। यदि सनुष्य मनुष्यके बीच यह ऊँच नीचका भाव दूर न हुआ तो धमका नाश ही समझिये। सवर्णोके बहिष्कारसे लोग नही डरे यह एक शुभ चिह्न मालूम होता है। जिन्होने बहिष्कार किया है उनके ऊपर किसी भी प्रकारका क्रोध न किया जाये। साथ ही इस बहिष्कारसे डरकर कोई अपना कत्तव्य न छोडे। सुधारकोको धैयपूवक मौन दढ सकल्पके साथ और क्रोध एव भयरहित होकर अपने काममे लगे रहना चाहिए।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ८ २-१९३५

२६० आरम्भ कैसे करें? – ३

आहारकी कुछ खास-खास चीजाका जिक्र मै कर चुका हूँ और यह बतला चुका हूँ कि गाँववालाके स्वास्थ्य एव सम्पत्तिमे उनका कितना महत्वपूण हाथ है। लेकिन, इसके साथ ही, सफाई और स्वास्थ्य-रक्षाके प्रश्न भी उतना ही महत्व रखते हैं। अगर इनपर समुचित ध्यान दिया जाये तो, प्रत्यक्ष और परोक्ष रूपसे, स्वास्थ्य, शक्ति और सम्पत्तिकी वृद्धि होती है।

कुछ विदेशी लेखकाने जाच-पडताल करके बतलाया हे कि व्यक्तिगत सफाईके पालनमे भूमण्डलके सब देशोमे हिदुस्तानका नम्बर शायद सबसे पहला है। मगर यही बात हमारी सामूहिक या, दूसरे शब्दामे गाँवोकी स्वच्छताके बारेमे नही कही जा सकती। दूसरे शब्दामे कहा जाये तो मै कहूँगा कि इस दिशामे हम पारिवारिक हितसे ज्यादा आगे नही बढे हैं। परिवारके लिए तो हम बडीसे-बडी

चीजका भी बलिदान कर देंगे, लेकिन गावके लिए, यानी एक अधम राष्ट्रके लिए वैसा ही करनेके लिए तत्परता नही दिखायेंगे।

लोग अपने खुदके घरको तो साफ सुथरा रखेंगे, लेकिन पडोसीके घरकी सफाईमें कोई दिलचस्पी नही लेंगे। वे अपने घरके आगनको कूडा-ककट, कीडे मकोडों और जीव-जन्तुओंसे बचायेंगे, किन्तु इन सबको पडोसीके आगनमें फेंक देनेमें उन्हें सकोच नही होगा। सामूहिक जिम्मेदारीके इस अभावका नतीजा यह हुआ है कि हमारे गाव कूडेके ढेर बन गये हैं। हालाकि हमारे देशमें मुख्यत नगे पाव चलनेका रिवाज है फिर भी हमारे बाजार और हमारी सडकें इतनी गन्दी रहती है कि किसी भी समझदार व्यक्तिको उनपर नगे पाव चलते हुए दु ख हुए बिना नही रहेगा। गावके कुओं, तालाबों और नदियोंसे साफ और पीने लायक पानी मिलना भी कठिन है। आपको किसी भी साधारण गावमें प्रवेश करते हुए मार्ग कचरे तथा गोबरसे भरे मिलेंगे।

गाँवोकी सफाईका काय हो शायद अ० भा० ग्रामोद्योग सघके सामने सबसे कठिन काय है। आम जनताका हार्दिक सहयोग प्राप्त किये बिना कोई भी सरकार जनताकी आदतोको नही सुधार सकती। लेकिन अगर जनताका सहयोग प्राप्त हो जाता है, तो फिर सरकारके करनेके लिए बहुत थोडा काय बच रहता है।

अगर पढे लिखे लोग – वैद्य, डाक्टर और विद्यार्थी – लगनके साथ, बुद्धि तथा सतकतापूवक और नियमित रूपमें गावोमें काय करने लग जाये तो वे इस समस्याको सफलतापूवक हल कर सकते हैं। शिक्षाकी शुरुआत हो व्यक्तिगत और सामूहिक स्वास्थ्य-रक्षाका खयाल रखना है।

गावोमें जहा-जहा कूडा-ककट तथा गोबरके ढेर हो, वहा-वहासे उनको हटाया जाये और कुओं और तालाबोकी सफाई की जाये। अगर कायकर्त्ता वेतन पानेवाले भगियोकी भाति खुद रोजमर्रा सफाईका काय करना शुरू कर दे और साथ ही गाववालोको यह भी बतलाते रहे कि उनसे सफाईके कायमें शरीक होनेकी आशा रखी जाती है, ताकि आगे चलकर अतमें सारा काम गाववाले स्वय करने लग जाये, तो यह निश्चय है कि आगे-पीछे गाववाले सहयोग अवश्य देने लगेंगे। दक्षिण आफ्रिका, चम्पारन और यहातक कि उडीसाके पिछले वषके जल्दीमें किये गये पदल भ्रमणमें मुझको तो कमसे-कम ऐसा ही अनुभव हुआ है।

बाजार तथा गलियोका, सब प्रकारका कूडा-ककट हटाकर, स्वच्छ कर डालना चाहिए। उसमें से कुछ कचरेको गाडकर खाद बनाया जा सकता है। जो इस दृष्टिसे अनुपयोगी हो, उसे जमीनमें बस गाड देना-भर होगा और कचरेका कुछ हिस्सा ऐसा होगा जो सीधा सम्पत्तिके रूपमें परिणत किया जा सकेगा। वहा मिली हुई प्रत्येक हड्डी एक बहुमूल्य कच्चा माल होगी जिससे बहुत-सी उपयोगी चीजे बनाई जा सकेंगी या जिसे पीसकर कीमती खाद बनाया जा सकेगा। कपडेके फटे-पुराने चिथडो तथा रद्दी कागजोंसे कागज बनाये जा सकते हैं और इकट्ठा किया हुआ मल-मूत्र गावके खेतोके लिए स्वणमय खादका काम देगा। मल-मूत्रका उपयोगी

बनानेके लिए यह करना चाहिए कि उसके साथ– चाहे वह सूखा हो चाहे तरल– मिट्टी मिलाकर उसे ज्यादासे-ज्यादा एक फुट गहरा गडढा खोदकर जमीनमे गाड दिया जाये। गाँवोकी स्वास्थ्य-रक्षा पर लिखी हुई अपनी पुस्तकमे डॉ० पूरे कहते हैं कि जमीनमे मल-मूत्रको नौ या बारह इचसे अधिक गहरा नही गाडना चाहिए (मैं यह बात केवल स्मृतिके आधारपर लिख रहा हूँ)। उनकी मान्यता है कि जमीनकी ऊपरी सतह सूक्ष्म जीवोमे परिपूण होती है और हवा एव रोशनीकी सहायतासे —जोकि आसानीसे वहातक पहुँच जाती है—ये जीव मल मूत्रको एक हफ्तेके अन्दर-अन्दर एक अच्छी, मुलायम और सुगन्धित मिट्टीमे बदल देते हैं। कोई भी ग्रामवासी स्वय इस बातकी सच्चाईका पता लगा सकता है। यह काय दो प्रकारसे किया जा सकता है। या तो पाखाने बनाकर उनमे शौच जानेके लिए मिट्टी तथा लोहेकी बाल्टिया रख दी जाये और फिर प्रतिदिन उन बाल्टियोको पहलेसे तयार की हुई जमीनमे खाली करके ऊपरसे मिटटी डाल दी जाये, या फिर जमीनमे चौरस गडढा खोदकर सीधा उसीमे मल मूत्रका त्याग करके ऊपरसे मिट्टी डाल दी जाये। यह मल मूत्र देहातके सामूहिक या व्यक्तिगत खेतोमे गाडा जा सकता है, लेकिन यह सम्भव तभी है जब गाँववाले सहयोग दे। कोई भी उद्योगी ग्रामवासी कमसे-कम इतना काम तो खुद भी कर सकता है कि मल-मत्रको एकत्र करके उससे अपने लिए कीमती खाद बना ले। आजकल तो लाखो रुपयोकी कीमतका यह सारा खाद व्यथ जाता है, और हवाको गन्दा करता तथा बीमारिया फैलाता रहता है।

गाँवोके तालाबोका उपयोग सारे स्त्री पुरुष स्नान करने कपडे धोने, पानी पीने तथा भोजन बनानेके कामोमें करते हैं। बहुतसे गावोके तालाबोका उपयोग पशुओके नहलाने-धुलानेके काममे भी किया जाता है। बहुधा उनमे भैसे बठी हुई पाई जाती है। आश्चय तो यह है कि तालाबोका इतना जबदस्त दुरुपयोग होते रहनेपर भी महामारियोसे गाँवोका नाश अबतक क्या नही हुआ? यह सभी डाक्टर मानते है कि गाँववालोकी बहुत-सी बीमारियोका कारण पानीकी सफाईक सम्बन्धमे उनकी उपेक्षा-वृत्ति ही है।

इस प्रकारका सेवा-काय शिक्षाप्रद होनेके साथ-साथ बहुत सुखकर भी है, और इसमे भारतवषके पीडित जन समाजका ऐसा कल्याण निहित है जिसे कहकर नही बताया जा सकता। मुझे आशा ह कि इस समस्याका सुलझानेके तरीकेका मैंने ऊपर जो वणन किया है उससे इतना तो साफ हा गया होगा कि अगर ऐसे उत्साही कायकर्त्ता मिल जाये जो झाडू और फावडे का भी उसी तरह आराम और गवके साथ हाथमे ले ले जिस तरह कि कलम और पेसिलको लेते हैं तो इस कायमे खचका कोई सवाल ही नही उठेगा। अगर किसी खचकी जरूरत पडेगी भी तो वह केवल झाडू, फावडा, टोकरी, कुदाल और शायद कुछ कीटाणुनाशक दवाइया खरीदने तक ही सीमित रहेगी। सूखी राख सम्भवत उतनी ही अच्छी कीटाणुनाशक दवा है जैसी कि कोई रसायनशास्त्री सुझा सकता है। लेकिन उदार रसायनशास्त्री हमको

यह बतलानेकी कृपा करे कि गावके लिए सबसे सस्ती और कारगर कीटाणुनाशक ऐसी कौन सी चीज है जिसे गॉववाले स्वय अपने गावोमे बना सकते है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ८ २ १९३५

२६१ पत्र न्यू इण्डस्ट्रियल एण्ड कमर्शल एजूकेशन सोसाइटीके मत्रीको

वर्धा

८ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। उसके लिए आपको धन्यवाद। मै चाहूँगा कि हरिजनो और ग्रामोद्योग-सम्बधी गतिविधियाके बारेमे आप पूनाके श्री हरिभाऊ जी० फाटकसे बातचीत करे जो इस विषयमे अच्छी जानकारी रखते है। उनका पता है हरिभाऊ जी० फाटक, पॉयनियर डाइग हाउस, ६२५, सदाशिव पेठ, पूना – २।

हृदयसे आपका,

मत्री,

दि न्यू इण्डस्ट्रियल एण्ड कमशल एजूकेशन सोसाइटी,

९९, लक्ष्मी रोड पूना

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल

२६२ पत्र हरिभाऊ जी० फाटकको

८ फरवरी, १९३५

प्रिय हरिभाऊ,

न्यू इण्डस्ट्रियल एण्ड कमशल एजूकेशन सोसाइटी और मेरे बीच जो पत्र-व्यवहार[1] हुआ, वह इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। यदि इसके मत्री आपको लिखे तो आप जो भी आवश्यक हो, कीजिएगा।

मुझे आपका वह पत्र मिला जिसके साथ डॉक्टर सहस्रबुद्धेका पत्र और गायके दूध और भैसके दूधके तुलनात्मक अध्ययनपर डा० आप्टेकी विस्तृत राय सलग्न है। मै इन दोनोका उपयोग करूँगा।[2] मैं डॉक्टर आप्टेको लिख रहा हूँ।[3]

१ गाधीजीके पत्रके लिए देखिए पिछला शीर्षक तथा "पत्र न्यू इण्डस्ट्रियल एण्ड कमशल एजूकेशन सोसाइटीके मन्त्रीको" पृ० १५२ भी।

२ देखिए "गायका बनाम भैसका दूध" २२ २ १९३५।

३ देखिए अगला शीर्षक।

मुझे आशा है कि आपको मेरा वह पत्र मिल चुका होगा जिसमें मैंने चावलके सम्बन्धमें आपको पूरा स्पष्टीकरण दिया था। शंकरलाल बैंकरने, जो बिना पालिशके चावलका प्रयोग आरम्भ कर चुके हैं, अपने प्रयोगोंका बहुत उपयोगी विवरण भेजा है। उससे मेरी उस बातका समर्थन होता है जो मैंने आपसे कही है और जिसे आप 'हरिजन'[1] में उचित समयपर देखेंगे।

श्री हरिभाऊ जी० फाटक
पूना

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२६३ पत्र डॉ० एन० जी० आप्टेको

८ फरवरी, १९३५

प्रिय डा० आप्टे,

हरिभाऊ फाटकने मुझे गाय और भैंसके दूधके बारेमें आपके तुलनात्मक अध्ययन की एक प्रति भेजी है जो मेरे लिए बहुत उपयोगी होगी। मैं सोचता हूँ कि आपने जो प्रयोग सुझाये हैं उन्हें मैं अपने ऐसे दोस्तों पर करूँ जिन्हें गाय या भैंसका दूध लेनेमें कोई हिचकिचाहट नहीं है और उनके अनुभव दर्ज करूँ।

हरिभाऊ कह रहे हैं कि आपने मुझे इस विषयकी दो पुस्तकें भेजी हैं। इसके लिए भी आपको धन्यवाद। यहाँ पहुँचने पर मैं इन पुस्तकोंका सदुपयोग करूँगा।

हृदयसे आपका,

डा० आप्टे
उपाध्यक्ष
गोपालक संघ, शोलापुर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ यह "चावलके बारेमें" शीर्षकके अन्तर्गत १५-२-१९३५ के हरिजनमें प्रकाशित हुआ था।

२६४ पत्र डॉ० जवाहरलालको

८ फरवरी, १९३५

प्रिय डा० जवाहरलाल,

आपका पत्र व उसके साथ अगनू चमारके बारेमें हुए पत्र व्यवहारकी प्रतियाँ मिली। मैं इस दिशामें आगे प्रगतिकी सूचनाकी प्रतीक्षा करूँगा।

हृदयसे आपका,

डॉ० जवाहरलाल
सिविल लाइंस
कानपुर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२६५ पत्र एडॉल्फ मायर्जको

वर्धा
९ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपकी पत्रिकाकी प्रति मैं अपने पास रखूँगा। पर समयाभावके कारण मेरे लिए आपको और कुछ लिखना असम्भव है।

हृदयसे आपका,

एडाल्फ मायर्ज, महोदय
सम्पादक, 'स्वोर्ड्स एण्ड प्लोशेअर्स'
मार्फत टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२६६ पत्र सतीशचन्द्र दासगुप्तको

९ फरवरी, १९३५

प्रिय सतीशबाबू,

बहुत दिनोमे आपका कोई पत्र नही मिला। यह पत्र मै आपको यह बतलानेके लिए लिख रहा हूँ कि कामका बहुत बोझ होनेपर भी आपकी पुस्तककी दो फाइलोको रोज-रोज देखते रहना और फिर भी उन्हे न पढना आखिर मेरे लिए सम्भव न रहा। इसीलिए मैने पहला भाग लिया है और जबतक यह समाप्त नही हो जाता पूरी निष्ठासे अपना कुछ समय इसमे लगाता रहूँगा। दुबारा न पढा जानेके कारण इसमे अनेक गलतिया रह गई है। समयाभावके कारण मै उन सभीको तो ठीक नही करूँगा, क्योकि उसके लिए बहुत समय चाहिए, परन्तु जो कम समयमे ठीक की जा सकती है उन्हे ठीक कर दूगा। मै 'हरिजन' मे एक प्रश्न-स्तम्भ शुरू करना चाहता हूँ, बशर्ते कि आप या आपका सहायक नियमित रूपसे उन प्रश्नोका उत्तर देते रहे। आप प्रश्न खुद भी बना सकते है, जैसे कि कच्चे सोडे व कच्चे तेलसे साबुन कैसे बनाया जा सकता है। गावमे उपलब्ध तेलको आप किस प्रकार पैराफिनके विकल्पके रूपमे इस्तेमाल कर सकते है? गावोमे उपलब्ध सामग्रीसे किस प्रकार अच्छी टिकाऊ स्याही बनाई जा सकती है? जैसे-जैसे कार्य आगे बढेगा ऐसे अनेको प्रश्न उठेगे।

स्नेह।

बापू

श्री सतीशचन्द्र दासगुप्त
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२६७ पत्र सेर्मा जी० शाप्लेको

९ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

इसी महीनेकी ६ तारीखका आपका पत्र मिला। जब भी आप आ सकें, मुझे आपसे मिलकर प्रसन्नता होगी।

हृदयसे आपका,

श्रीमती सेर्मा जी० शाप्ले
मार्फत अमेरिकन एक्सप्रेस क०
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२६८ पत्र प्रकाशचन्द्र मेहताको

९ फरवरी, १९३५

प्रिय प्रकाश[1] चन्द्र,

मुझे पहले आपका तार और फिर पत्र मिला। तो आपने अन्तिम निर्णय ले लिया है। आप जितनी जल्दी आ सकें आ सकते हैं। जितनी जल्दी हो उतना ही अच्छा। इसलिए यदि काली बाबू आपको शीघ्र कार्यमुक्त कर दें तो आप तुरन्त आ जाइये जिससे कि मैं अभी, जबकि हम कामकी ठीक व्यवस्था कर रहे हैं आपको आपका काम सौंप सकूँ। लेकिन यदि आपको शीघ्र कार्यमुक्त करना 'ट्रिब्यून' कार्यालयके लिए असुविधाजनक हो, तो मैं आपके अभी यहाँ आनेकी बात नहीं सोचूँगा।

हृदयसे आपका,

श्री प्रकाश[2] चन्द्र मेहता
मार्फत 'ट्रिब्यून', लाहौर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ और २ साधन-सूत्रमें 'अप्रकाश' दिया है, जो गलत मालूम पड़ता है।

२६९ पत्र अब्दुल अलीमको

९ फरवरी, १९३५

प्रिय अब्दुल अलीम

गत १२ दिसम्बरका आपका पत्र मुझे उन पत्रोंकी फाइलमें दबा मिला जो सतीशबाबू मेरे पढ़नेके लिए छोड़ गये थे। फाइल खोलनेपर आपका पत्र मिला। आशा करता हूँ कि अबतक अकालका प्रकोप कम हो गया होगा।

यद्यपि आप कहते हैं कि आम तौरपर अस्वस्थ शरीरमें स्वस्थ मनका निवास नहीं होता, पर प्रायः देखा जाता है कि शरीरपर मनकी जीत होती है और शरीरके अस्वस्थ होनेपर भी मन स्वस्थ रहता है। इसलिए आपको पूरी तरह प्रयत्न करके अपने रुग्ण शरीरपर विजय प्राप्त करनी है और तब हो सकता है कि आपका शरीर भी मनकी ही भाँति स्वस्थ हो जाये। किन्तु चाहे ऐसा हो या न हो, पर आपका मन तो स्वतन्त्र हो जायेगा।

मुझे खुशी है कि सतीशबाबू आपको एक अच्छा साप्ताहिक पत्र नियमित रूपसे भेज रहे हैं।

हृदयसे आपका,

श्री अब्दुल अलीम
हाजी विला कमौरा
तालशहर तिप्परा

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात; सौजन्य: प्यारेलाल।

२७० पत्र जुगतराम दवेको

९ फरवरी, १९३५

भाई जुगतराम

जहाँ सरदार अध्यक्षता कर रहे हों वहाँ मेरे सन्देश[1] भेजनेकी क्या आवश्यकता? आप तो उनके वहाँ रहते हुए भी सन्देश माँग रहे हैं और पानेकी आशा करते हैं! तो रानीपरज लोगोंको बता दीजिए कि उनका निर्वाह शहरोंसे नहीं होता, बल्कि शहरोंका निर्वाह उनके बलपर होता है। यदि रानीपरज लोगोंको अपने आत्मगौरवकी रक्षा करनी हो तो उन्हें अपनी सारी आवश्यकताएँ स्वयं पूरी करनी

१ १९ फरवरी, १९३५ को होनेवाले आठवें रानीपरज सम्मेलनके लिए।

चाहिए और स्वावलम्बी बनना चाहिए। जो हम अपने गावमे नही बना पाते, उसकी आवश्यकता भी कदाचित ही पडती है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, ३-३ १९३५

२७१ पत्र तारावहन ना० मशरूवालाको

९ फरवरी, १९३५

चि० तारा

मुझे तुम्हारा पत्र मिला। मै जिम्मेवारी लेनेकी तुम्हारी झिझकको समझता हूँ। फिर भी वही झिझक तुम्हे भार सहनेकी शक्ति भी प्रदान करेगी और उससे तुम्हारा सम्मान बढेगा। जो जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर आ पडी है उसको खोजनके लिए तुम खुद कही नही गई थी। इसके विपरीत, वह तुमपर थोपा गई है। तुमने नम्र-भावसे इसे अपना फर्ज समझकर स्वीकार कर लिया है और इसे निभा ले जानेमे ही तुम्हारा कल्याण है। इसके अलावा जिस कामकी तुमने जिम्मेदारी ली है, वह तुम्हारे सामने बिलकुल साफ रखा गया है, इसलिए उसे करनेमे तुम्हे कोई दिक्कत महसूस नही होगी। जो कुछ मै 'हरिजन' मे लिखता हूँ उसे ध्यानसे पढो और जो कुछ तुमने उससे ग्रहण किया है, उसे अमलमे लानेकी कोशिश करो। अगर कोई दिक्कत हो तो बिना किसी झिझकके मुझसे पूछो।

मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे माता पिता बिलकुल ठीक है और नरहरिको श्वासका रोग परेशान नही कर रहा है। सुरेन्द्र[1] कहा है? अगर वह वही है तो उससे कहना कि मुझे पत्र लिखना बन्द न करे। जब-जब किशोरलाल यहा आते है मै उनसे जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ, किन्तु व्यस्ततामे भूल जाता हूँ। यही कारण है कि मैने तुमसे सुरेन्द्रके बारेमे पूछा है।

बापूके आशीर्वाद

श्री तारावहन नानाभाई मशरूवाला
अकोला
बरार

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६९६) से। सी० डब्ल्यू० ४३४१ से भी, सौजन्य कनुभाई मशरूवाला।

1. तारावहनके भाई।

२७२ पत्र माधवजी वि० ठक्करको

९ फरवरी, १९३५

चि० माधवजी,

तुम्हारी या महालक्ष्मीकी ओरसे कोई पत्र न आनेके कारण मुझे चिन्ता हो रही थी। पर अब तुम्हारा पत्र मिल गया है। मुझे उम्मीद है कि तुम दोनो यह बात ध्यानमे रखते ही होगे कि तुम्हारी साधनाका उद्देश्य सेवा करनेके लिए और अधिक योग्यता प्राप्त करना है। साधनाको सेवा कभी नही कहा जा सकता।

बच्चे कैसे है ?

बापूके आशीर्वाद

श्री माधवजी
१५, तगार, एटली
कलकत्ता

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ६८२७) से।

२७३ पत्र कार्ल हीथको

१० फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

मुझे आपका कृपा-पत्र मिल गया है। आपके सुझावके बारेमे मेरी राय है कि यदि आप अब भी जन-हितमे इसका प्रकाशन ठीक समझते है तो इस सवालको सर सैमुअल हार तथा लार्ड हैलीफक्सके सामने रखे। अगर ये दोनो महानुभाव इसका प्रकाशन चाहते हैं, जो महज इसके लिए इजाजत देनेसे भिन्न है, तो आप इस बातका हवाला देते हुए इसे प्रकाशित कर सकते हैं। मेरी ओरसे तो, मेरा मन ऐसा कहता है कि राजनीतिज्ञोके दायरेमे, जिनकी राय इस बारेमे काफी वजन रखती है, इसका वितरण भर काफी होगा। इस समय सच्ची शान्ति तथा हार्दिक भाईचारेके प्रेमियोके सामने बडा कठिन काम आ पडा है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

कार्ल हीथ, महोदय
लन्दन

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०२९) से।

२७४ पत्र अगाथा हैरिसनको

हवाई-डाकसे

१० फरवरी, १९३५

प्रिय अगाथा,

अभी अभी तुम्हारा पिछले माहकी २९ तारीखका पत्र मिला, मैंने उसे पढा। इस पत्रके साथका पत्र[1] श्री हीथके पास पहुँचा देना। मै कुछ पैसाकी बचतके ख्यालसे ही उसे इसी लिफाफेमे रखकर भेज रहा हूँ। यह पत्र तुम्हे हवाई-डाकसे भेजा जायेगा।

तुम्हारे पत्रके एक हिस्सेका जवाब इसीलिए मैंने श्री हीथके नाम लिखे पत्रमे दिया है।

अब रहा श्री रजा अली द्वारा दी गई चाय-पार्टीमे गैरहाजिर रहनेका सवाल। जब कभी इस प्रकारका आयोजन होता है मुझे उसकी खबर पहलेसे ही दे दी जाती है। लेकिन, यह तो एक बहुत ही औपचारिक-सा निमन्त्रण था। इस निमन्त्रणकी प्राप्तिके दो दिन पहले ही रजा अली खुद मुझे मिले थे और उन्होने दक्षिण आफ्रिकाके अपने मिशनके बारेमे मुझसे दिल खोलकर बाते की थी। मेरे पास आनेसे पहले ही उन्होने पार्टी देनेकी योजना बना ली थी। लेकिन उन्होने मुझसे यह पूछनेकी जरूरत भी महसूस नही की कि मै उसमे आ सकूगा या नही। जब वे आये थे, उस समय तक पार्टीका निमन्त्रण यदि मेरे पास आ गया होता, तो मै खुद ही उसका जिक्र छेड देता। लेकिन उस समय पार्टीके बारेमे मुझे कुछ पता न था, इसीलिए निमन्त्रणके बारेमे भी पता न था। बुलावेका कार्ड आया था वह बिना किसी प्रकारकी जानकारीके कागजोके ढेरमे दबा पडा रहा। हम समय पर उसकी पहुँच भी सूचित नही कर पाये। आयोजनके एक दिन पहले शामको एकाएक मुझे लगा कि कमसे-कम प्राप्तिकी सूचना तो भेज ही देनी चाहिए। और इसीलिए सुबह होते ही (कडी ठण्ड पड रही थी) मैंने उन्हे सूचना भेज दी, जिसकी नकल तुम्हारे पास है। इसे खुद प्यारेलालने रजा अलीको ले जाकर दिया। इसे इतनी जल्दी और इस प्रकारसे इसीलिए भेजा था कि अगर इस बुलावेका कोई खास मकसद है, तो वह मालूम हो जाये। प्यारेलालने खुद रजा अलीसे मुलाकात की। उन्होने किसी प्रकारकी निराशा प्रकट नही की और यह नही पूछा कि मै उस पार्टीमे क्यो नही पहुँच रहा हू। मैंने इस सबसे यही समझा कि इस बुलावेका कोई खास मकसद नही है, और मेरे पास ऐसे अवसरोपर, जिनके लिए खुद मेरे मनमे ही कोई रुचि न हो, बर्बाद करनेके

१ देखिए पिछला शीर्षक।

तुम दोनोंको प्यार।

सलग्न १

श्री आर० वी० शास्त्री
८ सी, पाइक्राफ्ट्स रोड
ट्रिप्लीकेन, मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२७६ पत्र पी० नारायण रेड्डीको

१० फरवरी, १९३५

प्रिय नारायण रेड्डी,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे खेद है कि तुम्हारा सुझाव 'हरिजन' मे प्रकाशनार्थ नही भेज सकता। तुम्हारा यह सोचना बिलकुल गलत है कि मैंने ग्रामोद्योगका काम इसलिए शुरू किया है क्योंकि मैंने यह मान लिया है कि हरिजनोद्धारका काय समाप्त हो चुका है, या इसलिए कि मैंने अपना अनुराग कही और लगा दिया है। ग्रामोद्योग हरिजनोद्धारके लिए भारी प्रचारका ही सहज परिणाम है और एक प्रकार से उसका पूरक है। तुम देखोगे कि जिन-जिन कामोको मैंने लिया है, उनसे सबसे पहले और मुख्य रूपसे हरिजन ही प्रभावित होते हैं। वही तो आटा या चावल और नमकपर जिन्दा रहते हैं। यदि उन्हे पौष्टिक आटा और चावल मिलता है तो निस्सन्देह अच्छी बात है। लेकिन यदि मैंने इस बातके लिए आन्दोलन छेडा होता कि केवल हरिजनोको ही बिना पालिश किया चावल और चोकर-सहित आटा खाना चाहिए तो उन्हे मेरा उद्देश्य समझ ही नही आता और प्रस्ताव कभी स्वीकृत नही होता। धान कूटनेवालोमे अधिकाश सख्या हरिजनोकी ही हुआ करती थी और उन्हीकी जगह बडी-बडी मिलोने ले ली है। तुम्हे यह समझना चाहिए कि यदि गावोमे सफाईकी बेहतर व्यवस्थाका आन्दोलन सफल हो जाता है तो जहातक हरिजन भगियो का सम्बन्ध है, उनकी समस्या हल हो जायेगी, और किसी सूरतसे उसे हल नही किया जा सकता। जिन चार कामोको लेकर तुम अपना मिशन आरम्भ करोगे उन पर गत दो वर्षोंसे कुछ अधिक समयसे ध्यान दिया ही जा रहा है। यह माननेको मेरा दिल नही करता कि हरिजन आन्दोलनको तुम अबतक कतई नही समझ पाये हो। पर तुम्हारी योजनासे तो यही लगता है कि तुम्हारे चारो तरफ क्या हो रहा है, इसकी तुम्हे कोई जानकारी नही है।

हृदयसे तुम्हारा,

श्री पी० नारायण रेड्डी, बी० ए०, बी० एल०
पेद्दातिप्पासमुद्रम। (चित्तूर जिला)

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२७७ पत्र दामोदर एम० दामलेको

१० फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

तुम्हारा पत्र मिला। मै अच्छी तरह जानता हूँ कि भारतके लाखो-करोडो लोगोकी खुशहालीके लिए कृषि-सुधार परमावश्यक है। लेकिन राज्यसे सक्रिय सहायता न मिलनेकी स्थितिमे हमारे रास्तेमे बहुत सी अडचने दिखाई पडती है। अलबत्ता आप अपना पहला बुलेटिन भेज दे। पढनेके बाद यदि 'हरिजन' के पष्ठोमे छापनेके उपयुक्त मालूम पडेगा तो सहष प्रकाशित करवा दूगा। वह प्रामाणिक होना चाहिए, यानी उसमे कही गई हर बात प्रमाण देकर कहा जाये।

हृदयसे आपका,

श्री दामोदर एम० दामले, बी० ए०, एल० एल० बी०,
वुन (बरार)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२७८ पत्र सी० विजयराघवाचारियरको

१० फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

लौटती डाकसे पत्रोत्तर देनेकी जल्दीमे मै एक बातकी चर्चा करना तो भूल ही गया जिसका आपने अपने पहले पत्रमे उल्लेख किया था। यानी कि आप अपनी जीवन-सध्याका यदि सारा शेष काल नही तो कमसे कम कुछ समय तो मेरे साथ बिताना चाहते है। चाहे आप कुछ दिनोके लिए आये या स्थायी रूपसे रहनेके लिए, आपका स्वागत ही होगा। शायद आप जानते हो कि आजकल मै अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके कमचारियोके साथ उस स्थानपर रह रहा हूँ जिसे जमनालालजीने सघके लिए दान दिया है। हमारा भोजन सामूहिक रसोईघरमे पकता है। जितना अधिकसे अधिक सम्भव है, हम ग्रामीण जीवनका अपनेमे उतारनेकी कोशिश करते है और

जो कुछ गांवोंमें पैदा होता है, उसीसे सन्तोष कर लेते हैं। हम अपने आदर्शसे तो अभी दूर हैं, पर वह हमारे सम्मुख तो है ही।

हृदयसे आपका,

सी० विजयराघवाचारियर
अराम
सेलम (द० भा०)

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२७९ पत्र फिरोज़ गांधीको

१० फरवरी, १९३५

प्रिय फिरोज,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं जानता हूँ कि कमलाकी मुझसे मिलनेकी इच्छा है। मिलनेकी कोशिश करूँगा। पता नहीं कबतक ऐसा कर पाऊँगा। तुम मुझे याद दिलाते रहना, ताकि भूल न जाऊँ।

श्री फिरोज गांधी
१६ स्टेनली रोड
इलाहाबाद

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२८० पत्र रावजीभाई ना० पटेलको

१० फरवरी, १९३५

चि० रावजीभाई

तुम्हारा कार्ड मुझे मिला है। धान अब आगे मिलेगा ही। देखता हूँ, धानको पहले दलना होता है। दलनेकी चक्की कैसी होती है, लिखना। दलनेके बाद की और क्रियाओंसे तो हमें कोई सरोकार नहीं है। तुम धानके प्रदेशमें ही हो अतः तुम अच्छेसे-अच्छे प्रयोग कर सकोगे। धान खेतसे कटकर आनेके बाद कितने दिनमें इतना सूख जाता है कि दला जा सके? या आते ही दला जा सकता है? दलनेसे छिलका कितना निकल जाता है? कूटनेसे वजन कितना कम होता है? एक घंटेमें कितना धान दला जाता है? उसपर खर्च कितना आता है? इसके सिवाय और भी जा

जानकारी दे सको देना। ललिताबहनके बारेमे नाथाभाईका पत्र आया था, वह तुमने पढा ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री रावजीभाई नाथाभाई
लिम्बासी
(मातर तालुका)

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ९००४) से।

२८१ पत्र अमतुस्सलामको

१० फरवरी, १९३५

प्यारी बेटी अमतुल सलाम,

तुम्हारे दोनो खत पढ गया हूँ। दु:ख हुआ। मैंने तुम्हारे लिये कुछ नही किया है। कर भी क्या सकता था? जगलमे जाना मुनासिब न था। मेरी बात मानो तो कृपया मेरे पास आ जाओ। तुम्हारा सब दु:ख भाग जायेगा। मैंने देवदासको लिखा है तुमको यहा भेज देवे। इतना मेरा मानेगी तो मै तेरी बडी मेहरबानी मानूगा। हरिजन वासमे सब लोग जावे उसके बाद जा सकती है। इस वक्त वहा रहकर क्या करेगी? हाँ मुझे फिकरमे जरूर डालती हे। मेरी बात माननेके लिये तयार नही है तो देवदासके साथ रहो। यह भी नही करना है तो हरिजन-वास ज़रूर छोड दो। इसपर भी मै कहता हूँ कि शर्माको मै मजबूर नही कर सकता। कृपा करके यहा आ जाओ—यहा आ जाओ—यहा आ जाओ। यह न कर सके तो मुझे छोड दे खुदाके लिए।

खजूर खतम हो गया।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१५) से।

२८२ पत्र वामनराव डी० बुरहानपुरकरको

वर्धा
११ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला, साथ ही आपकी रिपोट तथा पाण्डुलिपि भी प्राप्त हुई। समय मिलनेपर ही पाण्डुलिपिको हाथमे लूगा। मै ग्राम औषधालयोके आदशका समथन नही करता। मेरा उद्देश्य ग्रामवासियोको प्राथमिक स्वास्थ्य-रक्षा और स्वच्छताकी ठोस शिक्षा देना है। बीमारियोकी रोकथामके तरीकोको सिखलाना काफी आसान है। इसके साथ साथ ग्रामवासियोको घरेलू दवाइयो और उनके कारगर उपयोगकी जानकारी भी दी जा सकती हे। जहातक घरेलू दवाइयोके उपयोगका सवाल है, ग्राम-जीवनकी जितनी अधिक जानकारी मुझे होती जाती है, उतना ही अधिक समझमे आता जाता है कि ग्रामवासियोको देसी दवाइयोके गुणोकी कितनी अधिक जानकारी हे। सरकारी नियत्रणके बिना भारतके सात लाख गावोमे औषधालय खोलना प्राय असम्भव है। औषधियॉ चाहे वैद्यककी हो या एलोपैथीकी और वे चाहे सस्ती ही क्यो न बेची जाये, फिर भी मँहगी पडती है—मेरा मतलब है घरेलू दवाइयोकी तुलनामे महँगी पडती है।

क्या आप अधिकारी विद्वानोके प्रमाण देकर यह बता सकते है कि वैद्यगण गायके दही-दूधको भैसके दही दूधसे अधिक गुणकारी क्यो मानते है ?

हृदयसे आपका,

वैद्य वामनराव डी० बुरहानपुरकर
४५ कैथेड्रल स्ट्रीट
बम्बई–२

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल

२८३ पत्र जानम्मालको

११ फरवरी, १९३५

तुम्हारे हिन्दी अक्षर तो काफी अच्छे हैं। अपने आपको शुद्ध रूपसे व्यक्त करने मे तुम्हे कोई कठिनाई नही है। मै तुम्हारी अग्रेजी पर हँसूगा, ऐसी आशका क्यो रखती हो? हम लोगोने इस बातकी गन्दी आदत डाल ली है कि अग्रेजीको हम पूरी तरह शुद्ध व्याकरणसम्मत लिखना चाहते है, सिर्फ यही नही बल्कि जो ऐसा नही कर पाते उनकी आलोचना भी करते है, जब कि यूरोपके विद्वान अग्रेजी लिखनेमे होनेवाली गलतियोपर ध्यान नही देते। उनका सारा ध्यान सिर्फ सही सही तात्पर्य जतानेपर होता है।

मुझे खुशी है कि तुम आश्रममे धानकी हाथ कुटाईके उपकरणका इन्तजाम कर रही हो। लेकिन जाहिर है कि तुम अभी भी गलतफहमीका शिकार बनी हुई हो। चावलोकी पालिशके लिए आवश्यक ओखली मूसलकी तुम्हे जरूरत नही है। धानका छिलका बहुत ही हल्की चक्कीमे पीसकर निकाला जाता है। अब मैने यह खोज की है कि पीसनेकी चक्किया लकडी या गारे मिट्टीकी बनानेका सीधा सादा कारण यह है कि हम धानके अन्दरके दानेको, जो अधिक जोर नही बर्दाश्त कर सकता, बिना नुकसान पहुँचाये धानके बाहरी छिलकेको अलग करना चाहते है। अत यह काम एक बच्चा भी बिना बहुत जोर लगाये कर सकता है। चावलको पकाने योग्य बनानेके लिए इससे अधिक और कुछ करनेकी जरूरत नही है।

मेरी खुराकमे टमाटर, दूध, बादामकी लुगदी और पालक, मेथी या लूनी जैसी कुछ भाजिया रहती है। खर्च कम करनेके लिए फल खाना छोड दिया है। यह सिर्फ एक प्रयोग है। मेरा वजन १०९ पौड बना हुआ है। हम लोग उसी बगीचेमे रह रहे है जहा तुम एकबार आई थी। प्रभावती रोज शामको आ जाती है और रातको यही रहती है। रामदास बम्बईमे है तथा अपना स्वास्थ्य और आत्मविश्वास दोबारा पानेका प्रयास कर रहा है। उसके हाल चाल बुरे नही है।

अम्बुजमने तुम्हे बताया होगा कि जो तीन लडकिया मद्रास आनेवाली थी, वे नही आना चाहती, और मै उन्हे मजबूर करना नही चाहता। इसलिए तुम यदि आश्रम खोल रही हो तो यह काम बिना किसी शोर-शराबे या धूम-धामके होना चाहिए। जैसा कि मैने अम्बुजमको बातचीतके दौरान कहा था, उस हालतमे एक लडकीसे भी शुरूआत की जा सकती है। यदि वसुमतीकी अभी भी जरूरत हो तो वह खुशीसे आ जायेगी। वह यहाँ मद्रास जानेके उद्देश्यसे ही रह रही है। महज दो लडकियोके लिए उसे वहा ले जाना अनुचित होगा। अम्बुजम जैसी खुद जानती है,

वैसी ओटाई और धुनाई वे कर ही सकती हैं। लेकिन यदि तुम दोनोंको वसुमतीकी जरूरत हो तो वसुमती अपना वचन पूरा करेगी।

मुझे अभी अभी अम्बुजमका पत्र मिला है। उसे अपने पुत्रपर अपेक्षासे अधिक ध्यान देना पड सकता है। ऐसी हालतमें तुम्हें आश्रमका भार ग्रहण करनेके लिए तैयार रहना चाहिए। क्या तुम ऐसा कर सकती हो? आशा है, तुम कर सकोगी।

श्री जानम्माल
"नमदा"
मोब्रेज़ रोड, कैथेड्रल डाकखाना, मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात सौजन्य प्यारेलाल।

२८४ पत्र गिरिजाभूषण दत्तको

११ फरवरी, १९३५

प्रिय गिरिजाबाबू,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने हरिजनोंको मुर्गी-अण्डा या ऐसी कोई दूसरी चीज छोड़ देनेके लिए कभी नहीं कहा। मैंने तो उन्हें सिर्फ मुर्दार मांस, गोमांस तथा नशीले पदार्थ छोड़नेको कहा है। हरिजन लोग मुर्गी अण्डा, भेड़-बकरी वगैरह, जो भी वे चाहें तथा जो कुछ अन्य हिन्दू खा सकते हैं, खानेके लिए पूरी तरह निश्चय ही स्वतन्त्र हैं।

यदि आप हरिजन जुलाहोंको इस बातके लिए तैयार करनेमें सफल हो जाते हैं कि आवश्यक सूत वे अपने परिवारके लोगोंसे ही कतवा लें, तो निश्चय ही यह एक बड़ी बात होगी। ऐसा हर परिवार जो कताई-बुनाई साथ साथ करनेका तरीका अपनायेगा, मुसीबतको अपने दरवाजेसे सदा दूर रख सकेगा। मैंने साखीगोपालके निकट अपने अभियानमें करीब १०,००० जुलाहोंको इस बातका सुझाव दिया था।

हृदयसे आपका,

श्री गिरिजा भूषण दत्त
अगुल हरिजन सेवक संघ
अगुल (उड़ीसा)

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२८५ पत्र एच० जे० खाडेकरको

११ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पोस्टकाड मिला। इस बातके लिए अत्यधिक उत्सुक होते हुए भी कि हर सावजनिक स्थान बिना किसी रोकटोकके हरिजनोके लिए खोल दिया जाये, आप जिम प्रदशनका विचार कर रहे हैं, उसके लिए धन जुटानेमें असमथ हूँ। उसके लिए बहुत सोच विचारकी जरूरत है और यह काय कडे अनुशासनके अतगत ही किया जा सकता हे।

हृदयसे आपका,

श्री एच० जे० खाडेकर
महामत्री
सी० पी० महार यूथ लीग, इतवारी, नागपुर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२८६ पत्र मोतीलाल रायको

११ फरवरी, १९३५

प्रिय मोती बाबू,

आपका पत्र मिला। आपकी बात मै समझ गया। खादीके बारेमे आखिरकार क्या हुआ, इसकी जानकारी कृपया मुझे देना।

हृदयसे आपका,

श्री मोतीलाल राय
प्रवतक भवन
६१, बऊबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२८७ पत्र मोटासिह पटाराको

११ फरवरी १९३५

प्रिय मित्र,

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ बोडके नाम आपका तार मेरे पास भेज दिया गया है। मुझे खेद है कि आपके सम्मेलनमे शामिल न हो सकूगा।

हृदयसे आपका,

श्री मोटासिह पटारा
जालधर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२८८ श्री रामकृष्ण भारद्वाजको

११ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

मुझे इस बातकी खुशी है कि आपकी सस्था सनातनधम शिक्षा समितिके सरक्षणमे रहेगी और कि अन्य लडकियोके साथ साथ हरिजन लडकियोको भी रखनेका फैसला किया गया है।

हृदयसे आपका,

श्री रामकृष्ण भारद्वाज
महामत्री
सनातनधम सभा
किला गुज्जर सिह, लाहौर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२८९ पत्र वी० एम० नवलेको

११ फरवरी, १९३५

प्रिय नवले,

तो तुम विश्व भ्रमण करके लौट आये हो। जापानके बारेमे तुम्हारा कहना बिलकुल सच हे।

हॉ, स्वामी योगानन्द द्वारा लिखित "व्हिस्पस फ्रॉम इटरनिटी" मुझे डाकसे भेज दो।

हृदयसे तुम्हारा,

डा० वी० एम० नवले
सपादक, 'दीनबन्धु' और 'हिन्दी विजय'
रास्ता पेठ, पूना

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२९० पत्र पी० एस० एस० राम अय्यरको

११ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपकी शकाओको दूर करनेका प्रयास मेरे लिए कठिन है। उनका समाधान तो प्रार्थना करते हुए प्रतीक्षा करनेसे ही होगा।

हृदयसे आपका,

श्री पी० एस० एस० राम अय्यर
साकेश्वरम ग्राम
चित्तूर (कोचीन)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२९१ पत्र वी० भाष्यम आयगारको

११ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

ठक्कर बापाने आपका पत्र मुझे भेज दिया है। आपने इतने महत्वपूर्ण सवाल उठाये हैं कि मैंने सोचा इनपर सार्वजनिक रूपसे विचार होना चाहिए। मैं आपको 'हरिजन' में प्रकाशित होनेवाले एक लेख[1] की अग्रिम नकल भेज रहा हूँ। आपके सवालोंका जवाब देनेके लिए मैंने जो तरीका अपनाया है, आशा है आप उसका समर्थन करेंगे। फिर भी यदि कोई शक बाकी रहे तो मुझे लिखनेमें संकोच न करें।

'हरिजन' का प्रकाशन पुनः पूनासे होना चाहिए ऐसा एक सुझाव दिया गया है। इससे सालाना दो हजार रुपयेकी बचत होगी। शास्त्रीने इस बारेमें निःस्वार्थ रूपसे जाँच पड़ताल की है और उनके खयालसे मद्राससे 'हरिजन' का प्रकाशन होनेसे ध्येयको निश्चित रूपसे लाभ है। क्या आप और वेंकटसुब्बैया इस समस्यापर विचार करके मुझे अपनी राय देंगे? आप शास्त्री और गणेशनके साथ विचार विमर्श कर सकते हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री दीवान-बहादुर वी० भाष्यम आयंगार
'वर्धिनी'
किल्पाक, मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए "दरजे का अर्थ", पृ० २५४-५७।

२९२ पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको

११ फरवरी, १९३५

भाई ठक्कर बापा,

इस पत्रके साथ दीवान बहादुर भाष्यम तथा उन जैसे ओरोके लिए जवाब सलग्न हे। उसे पढकर 'हरिजन सेवक' के लिए वियोगी हरिको दे देना। मै दीवान-बहादुरको भी पत्र[1] लिख रहा हूँ और उहे नकल भी भेज रहा हूँ। सविधानकी एक भी नकल अभी मुझे मिली नही है। कुछ प्रतिया भेजना।

गणेशनकी समस्याको धीरजसे सुलझा लेना।

'हरिजन' के सम्बन्धमे शास्त्रीसे पत्र व्यवहार हो रहा है।[2]

बापू

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ११५१) से।

२९३ पत्र अमतुस्सलामको

११ फरवरी, १९३५

प्यारी बेटी अमतुल सलाम,[3]

तुमारा खत मिला तुमको क्या लिखु? मैने मनाइ की थी तो भी दुरस्त होनेके पहले पतीयाला गई। अब भागी क्योकि मैने मनाई की थी? ये कहाकी बात? अपने-आप खामखा दुखी होती है मुझे करती है।

अमीनाका पता धधुका बरास्ता अहमदाबाद।[4] दरझीका नाम ठाम बापाके पास है। हाल तो उसको भूलो। अच्छी हो जाओ बादमे देखा जायगा।

आधेसरके लिये हालमे ही एक इलाज किसीने बताया है। बाय नाकसे साफ ठडा पानी लेना और गलेसे थूक देना। एक कटोरेमे पानी रखकर, दाहने नाकको दबाकर बाय नाक पानीमे डुबो देना गरदन नीची करना, मु बध रखना। पानी अपने-आप उपर जायगा? कुछ पेटमे जावे तो हरज नही। लेकिन जहातक

१ देखिए पिछला शीर्षक।

२ देखिए "पत्र आर० वी० शास्त्रीको", पृ० २२१ २२।

३ सम्बोधन और हस्ताक्षर उर्दूमें हैं।

४ मूलमें ये शब्द अंग्रेजीमें हैं।

हो सके उसे थूक डालना, रातमे बाय बाजूपर सोना, मु बध रखना, सास दाइने नाकसे लेना।

शर्मा फिर भी लिखता है तुमारी बातका यकीन नही करना उसके बारेमे। अब तो अच्छी हो जायगी तो तेरी महेरबानी, कृपा, जो कुछ कहो, मानुगा। अबालेके नजदीक रहते है उस भाईका क्या?

मुझे सब तरहसे आराम हे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ३१७) से।

२९४ भाषण लक्ष्मीनारायण देवस्थानमें[1]

११ फरवरी, १९३५

यद्यपि श्री लक्ष्मीनारायणका मन्दिर सन १९०७ से पहले बन चुका था, लेकिन गाधीजी के अनुसार उसकी वास्तविक 'प्राण प्रतिष्ठा' उस दिन हुई जिस दिन मन्दिरके व्यवस्थापकोने मन्दिरके दरवाजे हरिजनोके लिए भी खोल दिये। गाधीजी ने कहा कि आजके दिनसे श्री लक्ष्मीनारायणको 'दरिद्रनारायण' कहा जा सकता है, जिसका मतलब है कि वे सर्वाधिक असहाय व्यक्तिके भी ईश्वर ह। और, अछूतोकी स्थिति इस समय लगभग सबसे अधिक असहाय व्यक्तियो जसी है।

उन्होने कहा कि 'दरिद्रनारायण' शब्दका इस्तेमाल करते ही मेरी आँखोके सामने गाँवके लोगोकी तसवीर आ जाती है जो इस समय सबसे ज्यादा उपेक्षित और पीडित व्यक्ति हे। उन्होने कहा कि गावके लोगोकी सेवा ही ईश्वरकी सेवा है।

अ० भा० ग्रामोद्योग सघका उद्देश्य इन्हींकी सेवा करना है। महात्माजी ने अपने श्रोताओका उद्बोधन करते हुए कहा कि सघका वतमान कायक्रम वे पूरे मनसे अपनायें। वर्धाके व्यक्तियोको खास तौरसे सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा कि वे इस कायमें अपना सहयोग देकर जो-कुछ कर सकते ह, करे।

उन्होने अ० भा० ग्रामोद्योग सघके पचसूत्री कायक्रमका जिक्र किया और जनतासे कहा कि वह हाथ चक्कीका पिसा आटा, गावमें कुटा बिना पालिश किया हुआ चावल, गुड तथा घानीसे निकले तेलका प्रयोग करे।

उन्होने लोगोको हाथ चक्कीके पिसे आटे आदिके फायदोको बताया और श्रोताओको यकीन दिलाया कि इसके उपयोगसे अनाज पैदा करनेवालो तथा उपभोक्ताओ, दोनोको फायदा होगा।

१ यह मन्दिरकी स्थापनाका २८वाँ वार्षिकोत्सव था।

उन्होने गावकी सफाईका भी जिक्र किया और समझाया कि वह गाँववालोके स्वास्थ्यके साथ किस तरह जुडी हुई है। उन्होने जनताका इस तथ्यकी ओर ध्यान खींचा कि वर्धाके पास सिन्धी गावके लोग सडकोके किनारे ही मल-त्याग करने बैठ जाते है। उन्होने कहा कि गाववालोको यह बुरी आदत छोड देनी चाहिए।

अपने भाषणका समापन करते हुए उन्होने यह आशा व्यक्त की कि अ० भा० ग्रामोद्योग सघने गावोमे जिस कामको करनेकी जिम्मेदारी उठाई है, वर्धाकी जनता उसे पूर्ण करनेमे अवश्य मददगार बनेगी।

[अग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, १२ २ १९३५

२९५ पत्र ना० र० मलकानीको

वर्धा

१२ फरवरी, १९३५

प्रिय मलकानी,

तुमने सोचा होगा कि मै उप नियम बनानेकी बात बिलकुल भूल चुका हूँ, यह भी सम्भव है कि आसाम चले जानेके कारण तुम खुद इस बातको भूल चुके हो। अगर तुम इसे भूल चुके हो तो ठीक ही हुआ, क्योकि मै तुम्हे इस जिम्मेदारी से मुक्त कर चुका था। लेकिन मै तो इसे नही भूला हूँ। मै इसपर विचार करता रहा, पर कुछ कर नही पाया। दीवान बहादुर भाष्यम आयगारने तीन उलझन पूर्ण प्रश्न[1] किये थे, उनका उत्तर देनेके विचारसे मुझे सारा सविधान फिरसे पढना पडा। और तब मुझे ऐसा लगा कि वे बाते मुझसे क्यो छूट गई थी। यो जो-कुछ तुम कर चुके हो, उसके अलावा नया और कुछ करनेको है भी नही। सविधान अपने आपमे इतना पूर्ण है कि तुमने हिसाब वगैरहके लिए जो निर्देश दिये है, उनके अलावा और किसी व्यवस्थाकी जरूरत ही नही है। उप नियमोका काम तो कुछ खास मामलोको रोजमर्राकी दृष्टिसे व्यवस्थित कर देना ही होता है, मुख्य नियम पूरे तौरसे यह व्यवस्था निर्धारित नही कर पाते। इसलिए समय समय पर, जब-जसी जरूरत महसूस होती है, उप-नियम बनाये जाते है। लेकिन वे प्रशासनिक आदेशो अथवा समय-समय पर पारित किये प्रस्तावोकी जगह नही ले सकते।

आज सुबह मै सविधानके सम्बन्धमे तुम्हारे निर्देशोको देख रहा था। तुम्हे शायद याद होगा कि दिल्ली छोडनेसे दो या तीन दिन पहले तुमने उनकी एक नकल मुझे दी थी। मै आज ही उसे पढ पाया हूँ। पहले पढनेका मौका ही नही मिला। पढनेके बाद मुझे यह पक्का भरोसा हो गया है कि मुझे या तुम्हे इस बारेमे फिलहाल कुछ भी नही करना है। तुम्हारे निर्देश ठीक है और ऐन व्यावहारिक है,

१ देखिए 'पत्र वी० भाष्यम आयगारको" पृ० २३२ और ' 'दरजे' का अर्थ ' पृ० २५४ ५७।

यहातक कि उप नियम कहकर तुमने जिन बातोका खाका तैयार किया है, वह भी उतना अच्छा नही है। फिर भी अगर तुम उप नियम कहे जा सकने योग्य कोई चीज तैयार करना ही चाहो, तो जो कुछ तुमने तैयार किया हे, वह पर्याप्त माना जा सकता है। मेरा खयाल है कि उस खाकेकी प्रतिया तुम्हारे पास होगी। अगर न हो तो मै भेज सकता हूँ। इसे अभी फाडा नही गया है।

क्या मैने तुम्हे यह लिख दिया था कि मै दियालदासको लिख चुका हूँ और ठक्कर बापासे भी मैने कह दिया है कि दानकी जो रकम वे देना चाहते है, उसे उसी खातेमे जमा करवा दे जिसमे कि वे उसका उपयोग कराना चाहते हो।[1]

मै चाहता हूँ कि तुम्हारे आसामके अनुभवोका विवरण एक टिप्पणीके रूपमे 'हरिजन' मे छपे। तुम अपना कार्यालय हरिजन होममे कब ले जा रहे हो? तुम्हारा आखिरी फसला क्या है? हरिजन कालोनी, हरिजन होम या और-कुछ?

स्नेह।

बापू

श्री ना० र० मलकानी
बिडला मिल्स, दिल्ली

प्रतिलिपि बापाको

अंग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ९१२) से।

२९६ जयरामदास जयवर्धनको

१२ फरवरी, १९३५

प्रिय जयरामदास,

इतने वर्षोंके बाद तुमने कुछ भेजा तो, चाहे वह तार ही क्यो न था, बडी अच्छी बात हुई। तुम निश्चय ही बहुत अव्यावहारिक हो। इधर कुछ महीनोसे श्री लकामे मलेरियाका प्रकोप हो रहा है। अबतक तुमने एक शब्द भी क्यो नही लिखा? तिसपर एक तार भेजा है? तुम्हे जानना चाहिए कि मै उस बारेम खोज बीन कर चुका हूँ। और मुझे बताया गया था कि यहासे कोई चीज भेजनेकी जरूरत नही है, सरकार सभी राहत काय सँभाल रही हे और इसके लिए डाक्टर भी काफी है। बेशक, यह सारी बात बिलकुल गलत भी हो सकती है। लेकिन मै क्या कर सक्ता हूँ? जिन्होने भी मुझे अपीले भेजी है, वे सिवाय अखबारकी कतरनोके और कुछ नही भेज पाये है। इसका अथ है कि वे रोगग्रस्त क्षेत्रोके बारेमे खुद कुछ नही जानते। यदि तुम्हे कुछ मालूम हो तो पूरा पूरा विवरण लिखो, जिसे मै प्रका-

१ देखिए "पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको", पृ० १५९।

शित कर सकू। लेकिन वह तुम्हारे प्रत्यक्ष अनुभवकी बात होनी चाहिए, किसीसे सुनी सुनाई नही। तुम्हे यह भी बताना चाहिए कि गावके कौन लोग है जो प्रकोप ग्रस्त है। ऐसा नही हे कि वे लोग कोन है, इस बातका बडा महत्व है। लेकिन जनताको यह अवश्य ही जानना चाहिए कि कौन लोग पीडित है और क्यो पीडित है, उनके पडोसियो पर असर क्यो नही हुआ, या क्या यह रोग श्रीलकामे व्यापक रूपसे फैल चुका हे? ये सभी सुसगत सवाल है। आखिर मेरे पास अपना पसा तो हे नही। मै तो दानी लोगोसे अपील ही कर सकता हूँ। और यह भी मै तबतक नही कर सकता जबतक कि मै प्राप्त समाचारोकी सच्चाई का प्रमाण न दे सकू। यदि मेरे लिए यह काय कर सको तो अच्छा रहेगा।

तुम्हारा,

श्री जयरामदास जयवधन
परोपकार मडालय
९२ साडस प्लेस, कोलम्बो (श्रीलका)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२९७ पत्र अम्बुजम्मालको

१२ फरवरी, १९३५

तुम्हारा पत्र मिला। मै जानम्मालको पहले ही लिख चुका हूँ।[1] यदि अपना शेष समय तुम अपने पुत्रकी देखभालमे लगाओ तो यह देशकी बडी भारी सेवा होगी। राज्यके एक सदस्यकी हैसियतसे उसकी देशके बडेसे-बडे नागरिक जितनी ही देखभाल होनी चाहिए और इसलिए राज्यको इस ओर ध्यान देना चाहिए। यह काय उसकी अपनी मा से अधिक अच्छी तरह और कौन कर सकता है? उसकी मा यदि स्वार्थी होती तो यह सारी बहस अनिष्टकर और मात्र छलना ही रहती। तुम्हारे लालन-पालनसे यदि तुम्हारा पुत्र एक अच्छा देशसेवक बन जाये, तो निश्चय ही वह कोई छोटी उपलब्धि नही होगी। अत तुम यदि इस समय अपने पुत्रके कल्याणको अपना मुख्य उद्देश्य बनाती हो, तो मुझे यह बुरा नही लगेगा। इससे तुम्हारी अन्य सेवाओमे कोई बाधा नही पडेगी। तुम फिर भी अपना कुछ ध्यान हिन्दी-प्रचारपर, कुछ हरिजन सेवापर, कुछ खादीपर तथा कुछ ग्रामोद्योगोपर दे सकोगी। तुम्हारा व्यक्तिगत जीवन पूणतया सदा इन सेवा-कार्योमे निहित सिद्धान्तोसे ही शासित होगा। यदि तुम्हारा पुत्र प्रस्तावित आश्रममे तुम्हारे साथ रह सके तो उसे साथ ही रखना चाहिए, क्योकि फिलहाल तुम्हारे लिए आश्रमका विज्ञापन करना बिलकुल अनावश्यक है।

१ देखिए पत्र जानम्मालको", पृ० २२७-२८।

चुपचाप थोडी सी लडकियोको लेकर तुम उनकी देखभाल कर सकती हो। लेकिन यदि स्थायी जीवन सम्भव न हो और पुत्रके साथ तुम्हे इधर-उधरकी यात्रा करनी पडे तो जबतक जानम्माल जिम्मेदारी लेनेको तैयार न हो, तुम्हे लडकिया लेनेका विचार छोड देना चाहिए। हर हालतमे तुम्हे प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। अपना उत्तरदायित्व निभानेमे ईश्वर तुम्हारी सहायता करे।

स्नेह।

बापू

श्री अम्बुजम्माल
मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२९८ पत्र जी० सीताराम शास्त्रीको

१२ फरवरी, १९३५

प्रिय सीताराम शास्त्री

तुम्हारा पत्र मिला, जिसमे मुझे अपने सभी मुद्दोका पूरा पूरा जवाब मिल गया है। पत्रके साथ ही खद्दर संस्थानमके सम्बन्धमे आपकी रिपोर्ट भी सलग्न थी।

चावल तैयार करनेके लिए धानसे भूसी उतारनेसे लेकर आखिरी पालिश करने तकका जो विवरण मुझे प्राप्त हुआ है, उससे मेरा अन्दाज है कि तुम्हारे चावल पर भी एक पालिश तो होती ही है। सन्देह निवारणके लिए कृपया मुझे बताये कि भूसी निकालनेकी पहली प्रक्रिया कैसे की जाती है।

श्री जी० सीताराम शास्त्री
विनय आश्रम
चन्डोल डाकघर, गुन्टूर जिला

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

२९९ पत्र तियो द ला तूशको

१२ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आप मुझे अब उस कागजकी याद दिला रहे है जिसे आपने २ दिसम्बर, १९३२ को भेजा था। जैसा कि आप जानते है, तबसे तो मै कितने ही उतार चढाव देख चुका हूँ। मेरे बहुत से कागज इधर उधर हो गये है, कुछ जहा तहा पडे हुए है। आपके कागजके बारेमे मुझे कुछ याद नही है। यदि मै उसे खोज भी लू या आप मुझे उसकी एक और प्रति भेज भी दे, तो भी म उसे निकट भविष्यमे तो पढ नही पाऊँगा। इसलिए वह आपके लिए उपयोगी नही होगा। आपको निराश करते हुए मुझे दु ख हो रहा है, लेकिन म लाचार हूँ।

हृदयसे आपका,

मोन० तियो द ला तूश
सिकन्दराबाद (दक्कन)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३०० पत्र सी० नारायण रावको

१२ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मुझे इसमे तनिक भी सन्देह नही कि अस्पृश्यताके बारेमे हमे कोई कानून बनाना होगा, और वक्त आनेपर ऐसा कानून जरूर बनेगा।

तुम्हे नौकरी छूट जानेकी परवाह नही करनी चाहिए। तुम्हारी तरह बहुतोने कष्ट उठाया है। तुम्हे ईमानदारीसे जीविका कमानेकी अपनी योग्यतापर भरोसा रखना चाहिए।

हृदयसे तुम्हारा,

श्री सी० नारायण राव
भूतपूर्व हेड-क्लर्क, आबकारी विभाग
पेद्दा वाल्टेयर, अपलैंडस वाल्टेयर डाकखाना

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३०१ पत्र मेहरताजको

१२ फरवरी, १९३५

प्रिय मेहरताज,

तुम्हे तो बहुत पहले ही मुझे लिखना चाहिए था। फिर भी तुम्हारा पत्र पाकर मुझे खुशी हुई। मने पिताजीको जो पिछला पत्र[1] भेजा था, उसके उत्तरकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। वह किसी दिन भी आ सकता हे।

बाबाके भाषणपर मैने एक सरसरी नजर डाली है। मुझे लगा कि उसका अच्छा स्वागत हुआ और वह प्रासगिक था। जो शाल तुम चाहती थी और जिसे मैने देनेका वचन दिया था, क्या वह तुम्हे जोहरा या डॉ० अन्सारीने भेज दी है? उसे जोहराने चुना था। यदि वह तुम्हे मिल गई है, तो क्या वह तुम्हे पसन्द है? जोहराने ही उसकी कीमत अदा की थी। इसी तरह तो मै अपना वचन पूरा करता हूँ, क्योकि मेरे पास अपना तो कोई धन नही है। मै तो केवल माग ही सकता हूँ। और अब तो पिताजीके पास भी अपना धन बहुत थोडा ही रह गया है।

जब तुम स्कूल जाना शुरू करो, तो उसके बारेमे मुझे सब कुछ बताना।

मुझे बराबर लिखती रहा करो। क्या तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक चल रहा है? यहा आजकल काफी गर्मी है। हम आश्रममे नही रह रहे है। हम उस बगीचेमे रह रहे है जहा तुम सरके लिए एक बार आई थी। हम प्राय तुम्हारे बारेमे सोचते है और चाहते है कि तुम भी हमारे साथ होती।

स्नेह।

श्री मेहरताज
१३, विडसर प्लेस
नई दिल्ली

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए पृ० १४५-४६।

३०२ पत्र मरियमको

१२ फरवरी, १९३५

प्रिय मरियम,

अपने पिताजीके पत्रके आखिरमे तुमने मुझे कुछ शब्द लिख भेजे है, जिन्हे देखकर खुशी हुई। आशा है, तुम्हारा काम ठीक चल रहा होगा। मुझे बराबर पत्र लिखती रहा करो और अपने कामकाजके बारेमे सब-कुछ बताती रहा करो। क्या सादुल्लाह और सोफिया तुम्हे पत्र लिखते है?

श्री मरियम
१३, विंडसर प्लेस
नई दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३०३ पत्र हीरालाल शर्माको

वर्धा
१२/१३ फरवरी, १९३५

चि० शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। मुझे बहुत ही अच्छा लगा है। अविश्वास आया था क्योकि अमतुलने बहुत सख्त लिखा था। मुझको साथ देना कोई मामूली चीज नही है। सब चीजको, मोहमात्रको छोड देना और छोडनेमे खुशी मानना सबसे नही हो सकता। तुमने बाह्य चीज तो बहुत छोड दी है लेकिन भीतरी ज्ञान नही होगा तो भीतरी आनन्द कैसे? और जिसको भीतरी आनन्द नही मिलता है, वह गुस्से भी होता है और बीमार भी होता है और सब कुछ कर बैठता है।

अब मैं तुम जितना लिखोगे वह सब दिलमे ऐसा ही है ऐसा मानकर म चलगा। इसमे कठिनाई है यह भी समझो और कठिनाईका कारण तुम्हारेमे जल्दीपन है, क्रोध भी है और क्रोधके मारे जल्दीमे कुछ लिख दिया उसे ऐसा ही मानकर मैं बैठ जाऊ सो तो उचित नही होगा। लेकिन तुम्हारे साथ चलनेमे और कोई चारा पाता नही हू। गाय रखी, सो तो मुझे अच्छा लगता है। इतना याद रखो कर्जा बिलकुल न करना। हरिजनका सम्पर्क होता है, वह भी बहुत अच्छा है।

तुम्हारी डाक्टरी पढाईके बारेमे नित्य ख्याल आता है। डा० अन्सारीको लिखा है, लेकिन उत्तरका ठिकाना नही।[1] उसकी शिकायत भी क्या करे? शक्तिसे ज्यादा काम ले लेता है।

मै नही जानता, किस चीजमे बेहतरी है। मद्रासका क्या कोस है मुझे पता नही है, लेकिन मै पता निकाल सकता हूँ। कोई सज्जनके वहा रहना नही हो सकेगा। अगर मद्रास जाना हुआ तो अकेले जाओगे? द्रौपदीका खुर्जेमे अकेले रहना मेरे लिए असह्य हो जायगा। मेरे साथ रहे, मेरा काम करे, बा के स्वभावकी बर्दास्त करे तो मुझे सबसे अच्छा लगेगा। और जब वह इस तरह रहनेके लिए तैयार हो जायगी तब तुम्हारा काम और मेरा भी सरल हो जायगा। तुम्हारे बारेमे मैने बहुत आशाये बाध रखी है। तुम्हारे सब दोष निकल जानेसे तुम्हारे पाससे बहुत ही काम मै ले सकता हू, ऐसा प्रतीत होता है। आखर अगर तुम्हारा विलायत जानेका होगा तो भी साथमे द्रौपदी और बच्चोंके ले जानेमे मै कभी तैयार नही हूगा, क्योकि उसको मै अनावश्यक मानता हूँ। तुमको भेजनेके लिए कुछ तैयारी है, वह पश्चिमके बारेमे तुम्हारा मोह उतारनेके लिए है। सच्ची नैसर्गिक चिकित्सा देहातमे ही है। पश्चिमका जो ज्ञान है उसमे से जो लेना है वह उनकी किताबोसे ले ले। बाकी सब देहातोमे से ही मिलनेवाला है। और अन्तमे हम जो सेवा करना चाहते है वह भी देहातियोकी ही है न? यह सब सोचो और बादमे लिखो तुम्हारी दृष्टिसे क्या किया जाय? द्रौपदी मेरे साथ रह सकती है?

तुम्हारा टाइम-टेबिल अच्छा है। कौन-सी किताब पढते है, बालकोको क्या पढाते हो?

आटा घरपर पीसा जाता है? चावल वगैर पालिशके है? वगैर पालिशके चावल बाजारमे आते ही नही यह पता मुझे अब लगा। वगैर पालिशके चावल निकालना बहुत आसान है, ऐसा सुना है। मैने पेडी पैदा कर ली है और उसको पीसकर छिलका निकालनेकी कोशिश यही करूँगा।

पडित कौन है जो सिखाता है? मै नही जानता ऊपरके हरफ पढ सकते हो या नही।[2] मै दाहिने हाथसे सिफ सोमवारको लिखता हू, उसे थोडा आराम चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१५४) से।

१ देखिए "पत्र मु० अ० अन्सारीको", पृ० १८९।

२ पत्र बोलकर लिखवाया गया था।

३०४ पत्र मणिलाल तथा सुशीला गाधीको

वर्धा
१३ फरवरी, १९३५

चि० मणिलाल तथा सुशीला,

तुम दोनोके पत्र मिले। दोनो अलग-अलग आये थे। दूलके पत्रका जवाब म दे दूगा। तुम दोनो नये एजेटसे परिचय कर लेना। उनसे तुम्हारे बारेमे मामूली बातचीत हुई थी, यह बात मै बहुत करके लिख चुका हूँ। मानना पडेगा कि हरिलालने रोडेशियामे अच्छा काम किया है। सुशीलाने वहाके प्रवासियोका बडा ठीक विवरण दिया है। तुम दोनोका खच कितना आता है? साल या छ महीनेमे हिसाब तो करते ही होगे, तो पिछले हिसाबकी नकल मुझे भेज देना।

सुशीलाने गन्नेके रसके बारेमे प्रश्न किया है। जो गुण गुडमे है, वही रसमे विशेष परिमाणमे होता है। मनुष्य काफी समयतक यह रस पीकर ही रह सकता है और अपनी शक्ति बनाये रख सकता है। गरम करके पीनेसे यह दस्तावर होता है। इस रसके पीनेवालेको शक्कर या गुडकी जरूरत बिलकुल नही होती। गरम अथवा ठडे रसमे नीबू निचोडा जा सकता है। इसके सिवाय उसमे और क्या गुण है, मुझे नही मालूम।

सीताके शिक्षणके बारेमे मै विस्तत पत्र लिख चुका हूँ, वह पत्र[1] मिला होगा। रामदासने वहाँ आनेका इरादा बिलकुल छोड दिया है। मेरे जेल जानेकी अभी तो कोई बात नही है। मई महीने तक नही है, ऐसा कहा जा सकता है।

वे जमन जो वहा आकर मिल गये, उनका नाम ब्यूटो[2] है। लेकिन एक अग्रेज भी मेरे साथ रह कर गये थे। उनका नाम रीस जोस है। वे स्थायी रूपसे डबनमे रहते है। मैने उनसे कहा था कि फीनिक्स आ जाये। आये तो उनसे अवश्य परिचय कर लेना। बडे भले आदमी है।

किशोरलाल और गोमती यही है। रोज मिलते है। मजेमे है। तारा भी आकर मिल गई। उसने अपना कायक्षेत्र [अखिल भारतीय ग्राम-] उद्योग सघके अन्तगत चुना है।

रामदासकी तबीयत ठीक है। देवदास मजेमे है। राजाजी कल ही आये थे। आज वापिस जायेगे। कान्ति अभी यही है। मेरे पास ही रहता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ४८३२) से।

१ पत्र उपलब्ध नही है।
२ साधन-सूत्रमें नाम स्पष्ट नहीं है।

३०५ पत्र भगवानजी पु० पण्ड्याको

१३ फरवरी, १९३५

चि० भगवानजी

मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया है। उससे पहलेका पत्र भी मिल गया था। शायद वह अभीतक कार्यालयमे ही रखा हुआ है। मै रोजकी चिटठी पत्रीका जवाब रोज नही दे पा रहा हूँ, इसीलिए तुम्हारा जो पत्र सबसे आखिरमे मिला है, उसका जवाब तुरत लिखवा रहा हूँ।

तुमने दूधकी मात्रा घटाकर ठीक ही किया है। अगर तुम कच्ची सब्जिया और फल लगातार लेते रहे तो तुम्हारे शरीरमे काफी ताकत आ जायेगी। कच्ची सब्जियोमे से तुम लूनी, करमकल्ला, मूली, गाजर, शलजम, मेथीके पत्ते तथा सरसो के पत्तोका इस्तेमाल कर सकते हो। तुम मूली, शलजम तथा गाजरकी मुलायम पत्तिया भी ले सकते हो। कच्ची सब्जियोकी मात्रा एक औससे शुरू करके उसे रोज बढाते रहो, लेकिन ८ औससे ज्यादा मत लेना। इसके साथ-साथ पपीता, नीबू, केला, मुनक्का आदि भी ले सकते हो। पीनेके लिए दूध भी ४ पौडसे अधिक मत लेना।

शरीरमे दर्दके लिए मालिश करो और शरीरके जिस हिस्सेमे दर्द हो, उसे सूर्यकी तरफ करके उसकी धूपका सेक लो, इससे तुम्हे पूरा आराम हो जायेगा।

अपने कार्यक्रमके बारेमे एक बार फिर मुझे सूचित करना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

रामजीको कहिये कि गायका दूध मुहैया करनेके लिए पूरी कोशिश करे। यहा दूध प्राप्त करनेमे मुझे सफलता नही मिली।

श्री भगवानजीभाई
हरिजन-आश्रम
साबरमती (गुजरात), बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३७४) से, सौजन्य भगवानजी पु० पण्ड्या।

३०६ पत्र राजेन्द्रप्रसादको

१३ फरवरी, १९३५

भाई राजेन्द्रबाबु

तुमारे खतका तारसे उत्तर दिया है, लेकिन राजाजी कल यही आ गये। बात यह है मैंने जब सुना ऐसी है जिसने तार भेजा था उनको तार दिया और लिखा। उनकी उत्तर आया

हमारे पास अधिक खबर नही है। जो-कुछ है वह अखबारोमें आ गया है उसे देख ले। सरकारके तरफसे पसे इकटठे किये जाते ह।

मैंने राजाजीको तार दिया था वे किसीको सिलोन भेज देवे। उन्होंने अपने मित्रको लिखा या तार दिया। मित्रने लिखा बाहरसे मददकी आवश्यकता नही है। उसके बादसे म खामोश रहा हूँ। मेरा तो खयाल है कि कोई भी अपील करे उससे पहले एक आदमी को भेजना चाहिये, वह हमको ही है। कोई प्रतिष्ठित आदमी जाना चाहिये। मेरी आत्मा सतुष्ट है। परसो एक तार आ गया है। तार भेजनेवाला आश्रममे रहा है। उसने भी कुछ हकीकत नही भेजा है। मैंने उसे पूछ लिया है क्या हुआ है।[1] उनका उत्तर आने पर मै तुमको और लिखुगा। राजाजीसे मैंने बात कर ली है। उनकी वही राय है जो उन्होने पहेले दी थी। अब जैसा उचित लगे ऐसा किजीये।

शरीर तो अच्छा होगा। माचमे तो मिलेगे न?

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ९७४६ से, सौजन्य राजेन्द्रप्रसाद।

१ देखिए जयरामदास जयबर्धनेको पृ० २३६।

३०७ पत्र जी० रामचन्द्रनको

वर्धा
१४ फरवरी, १९३५

प्रिय रामचन्द्रन,

देवदासने मुझे उस विषयमे सब कुछ बता दिया है। उसके बाद मैंने सारा पत्र-व्यवहार पढा और इस समय कान्ति यहीं है। वह मेरे साथ ही रहेगा। जहा तक मै सोचता हूँ, यह केवल मानसिक और इकतरफा चीज है। उस बेचारी बच्चीको शायद इसकी कोई खबरतक नही है। फिर भी तुम्हारी बहन सब कुछ जानती है और जब वह लडकी खुद निणय करनेके सवथा योग्य है, तो तुम्हारी बहन यह चाहेगी कि वह कान्तिको चुन ले। मेरे विचारसे कान्ति अपने उस आदशसे तो नीचे गिर ही गया है जिसपर कायम रहनेकी उससे मुझे पूरी उम्मीद थी। लेकिन मेरी कितनी इच्छाएँ चूर-चूर नही हुई है! उस ढेरमे इस एक और इच्छाके जा पडनेसे क्या फक पडता है? मै उसे कोई दोष नही देता। अपनी मूल प्रकृतिसे भिन्न होना बहुत कठिन है। मुझे नही मालूम कि तुम्हे उसके इस आचरणसे कितना सदमा पहुँचा है। किन्तु मैं यह जानता हूँ कि तुमने उसे माफ कर दिया है। अगर प्रकट हो जानेपर लडकीके प्रति उसकी प्रेम भावना दृढ हो जाये, और वह लडकी किसी औरको चुन ले और तब भी कान्ति यदि अन्य लडकीसे प्रेम न करे, तो इस भावनासे उसका कल्याण ही होगा। कान्ति उस लडकीको अपने दिलमे जगह दिये रहे तो इसमे मुझे कोई हानि नही दिखती। वह पत्रो द्वारा निरन्तर तुम्हारी बहनके साथ सम्पक बनाये हुए है। तुम बिना हिचकिचाहटके मुझे लिखो कि मुझे अथवा कान्तिको अब क्या करना चाहिए।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७३९) से, सौजन्य कान्तिलाल गाधी।

३०८ पत्र जमनालाल बजाजको

१४ फग्वरी, १९३५

चि० जमनालाल,

राजाजी आकर चले गये। मैंने तुम्हे केशूके बारेमे लिखा था। लगता है, उसका जवाब देना तुम भूल गये हो। मेरा पत्र व्यवहार तो चल ही रहा है।

कृष्णदासके बारेमे मै निश्चिन्त हूँ। रमाबाईको लिखा पत्र[1] भी इस पत्रके साथ है, ठीक समझो तो उसे दे देना। २० तारीखके आसपास आ जाओ तो यह मेरे मनकी बात हो। लेकिन डॉक्टरकी अनुमति मिल जाये, तभी आना।

कान तो अबतक बिलकुल ठीक हो गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

गनीके खचके विषयमे लिखना मै भूल गया हूँ। उसने ६० रुपये माँगे थे। खान साहबकी इच्छा थी कि ३० रुपयेमे चलाये। रामेश्वरकी उसके विषयमे क्या राय है? क्या वह उसे कुछ काम देता है? उसके साथ पटती है न?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९५७) से।

३०९ पत्र मदालसा बजाजको

१४ फरवरी, १९३५

चि० मदालसा,

तू ठीक पत्र लिख रही है। वहा रह गई है, यह तो मुझे अच्छा लगता ही है। मुझे तो तेरा शरीर सुवणमय देखना है। शरीर और मनके बीच ऐसा निकट सम्बन्ध है कि एकको शुद्धताके साथ दूसरेका सम्बन्ध ज्यादातर जुडा होता है। अग्रेजीमे इसके समथनमे एक कहावत भी है। एक उपनिषदमे खुराकके सम्बन्धमे यही बात कही गई है। मनुष्य जो खाता है वैसा ही बनता है। अन्नसे [पच] भूत बनते है, 'गीता' का यह वाक्य भी यही सूचित करता है। इसलिए तू बिलकुल नीरोगी हो सकती है। इसे भी अपनी पढाईका एक क्रम समझ।

१ उपलब्ध नही है।

ओम सोती है मेरे पास और दिन कन्याश्रममें बिताती है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३१६

३१०. पत्र : हरिलाल गांधीको

१४ फरवरी, १९३५

चि० हरिलाल,

तेरा पत्र मिला। जो तू खुशीसे मेरे पास आ सकता हो, तो आ जा, मुझे ऐसी तीव्र इच्छा हो आई है। तेरी याद मुझे बराबर आती रहती है। इतना ही विश्वास यदि मेरे जीवनकी सत्यताके सम्बन्धमें तेरे मनमें उत्पन्न हुआ हो, तो तेरा स्थान मेरे पास है। जो वस्तु तू अमरेलीमें पानेकी आशा करता है, वह सब तो यहां और आसपास है। और काम कर सके तो मेरे पास तो इस समय बहुत काम है। फिर तेरे लिए अच्छे साथी बेहिसाब हैं। और सबसे ज्यादा वजनदार दलील तो यह है कि मेरा खुदका कुछ भी निश्चित नहीं है। मुझे मन्दिर[1] जानेका निमन्त्रण कब आ जाये, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसलिए तू अब मेरे ही पास रहे, तो मुझे अच्छा लगे। इसके बाद जो तुझे ठीक लगे सो करना। तेरे पत्रके दूसरे भागके सम्बन्धमें कान्ति तुझे लिखेगा। हो सकता है, हम जल्दी ही मिलें।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५३७) से, सौजन्य : मनुबहन मशरूवाला।

३११. पत्र : नारणदास गांधीको

१४ फरवरी, १९३५

चि० नारणदास,

इसके साथ हरिलालके नाम लिखा हुआ पत्र[2] है। इसमें तुम्हें तटस्थ नहीं रहना है, बल्कि मुझे रास्ता बताना है और इसी प्रकार हरिलालको भी। तुम उसके पास हो और मैं दूर हूँ।

कान्ति अभी यहीं है और रहेगा।

१. जेल।
२. देखिए पिछला शीर्षक।

वहा किसीके पास गटुलालजीकी समश्लोकी 'गीता' हो तो देखना। मुझे उसकी जरूरत है। लेकिन यहा वह कही भी मिलती नही है।

काळेका यन्त्र[1] अभी मेरे पास है और मै उसकी परीक्षा कर रहा हूँ, यह तो तुम जानते हो न? धानके दलनेका काम यहा शुरू कर दिया गया है। मैंने तो सामान्य चक्कीको कुछ और हलका करके उसे उसमे दलना शुरू किया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४३० से भी, सौजन्य नारणदास गाधी।

३१२ पत्र वल्लभभाई पटेलको

१४ फरवरी, १९३५

भाई वल्लभभाई,

दाया हाथ थक गया है, इसलिए आराम कर रहा हूँ। आपका पत्र मिला था। बादमे मुलाकातका[2] विवरण भी मिला। मिल लिये, यह ठीक हुआ। अब पत्र व्यवहार जारी रखे।

नाक कष्ट नही देती होगी।

यहा कब आयेगे? तारीख निश्चित करे।

प्यारेलालसे बाते कर लीजिये।

मै तो भोजनालय लेकर बैठा हूँ। मेरा काम बदल गया है। सोचा था उससे ज्यादा बढ गया है। लेकिन इसकी क्या शिकायत? महादेव कल आयेगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
८९, वाडन रोड
बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५२–५३

१ पुरस्कार प्रतियोगिताके लिए तैयार किये गये चरखेका एक नमूना।

२ वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषदके गृह-सदस्य, सर हेनरी क्रेकसे। घनश्यामदास बिड़लाने मुलाकात करानेका प्रबन्ध किया था।

३१३ पत्र जेठालाल जी० सम्पतको

१४ फरवरी, १९३५

चि० जेठालाल

दुर्गादासने मुझे बिल भेजा, तो मैंने ३० रु० १० आने चुका दिये। मुझे वह बिल देखकर आश्चर्य तो हुआ ही था। पसे यदि वहाके खातेमे से देने थे, तो वे अब मुझे भेज देना। उनके झूठे ढोलके खिलाफ हमे अपना सच्चा ढोल पीटनेकी जरूरत नही हे। उसका नतीजा कुछ नही निकला। इसीसे लोग सब कुछ पूरी तरह समझ गये होगे।

विनोबाके अनुभव तो मै उन्हीसे मालूम करूँगा, यही ठीक होगा। तुम्हारे विभागमे लोग गेहूँ खाते ह या चावल? वहाकी मुख्य उपज क्या है? मै यहा धान दलवाने तथा बिना कुटे चावल लोगोको खिलानेका प्रयोग कर रहा हूँ। परिणाम 'हरिजनबन्धु' तथा 'हरिजन-सेवक' मे पढना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८४९) से, सौजन्य नारायण जे० सम्पत।

३१४ पत्र रा को[1]

१४ फरवरी, १९३५

चि०

यह [2]का खत पढकर उसे दे दो। यदि दोष हुआ है तो हम तुम कौन निंदा करनेवाले अथवा सजा देनेवाले? हम सब दयाके भिक्षुक है और सब करनेवाला ईश्वर है। यदि गभ है तो जतनसे रक्षाकी जाये। दोनो यहा आ जाओ। थोडी बाते कर लेगे। हर हालतमे तुमारे तो विकार मात्र क्षीण हो जाने चाहिये।

तुमारा शरीर तो अच्छा ही होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० २०७)से।

१ और २ नाम छोड दिये गये है।

३१५ हरी पत्तियाँ

आप खुराक या विटामिनोके बारेमे लिखी हुई किसी भी आधुनिक पुस्तकको उठाकर देखिये, तो आपको पता चलेगा कि उसमे हर भोजनके साथ थोडी मात्रामे बिना पकाई हुई हरी पत्तिया या भाजियाँ खानेकी जोरदार सिफारिश की गई है। बेशक, उनपर जमी हुई धूलको पूरी तरह साफ करनेके लिए उन्हे ५-६ बार पानीसे अच्छी तरह धो लेना चाहिए। सिर्फ तोडनेकी थोडी-सी तकलीफ उठाई जाये तो ये पत्तिया हर गावमे मिल सकती है। किन्तु गाववाले इन्हे सिर्फ शहरोमे खाई जाने-वाली चीज समझते है। हिन्दुस्तानके बहुत-से हिस्सोमे गाववाले दाल, चावल या रोटी और बहुत-सी मिर्च, जो शरीरको नुकसान करती है, पर गुजर करते है। चूकि हमने गावोका आर्थिक पुनर्गठन खुराकके सुधारसे शुरू किया है, इसलिए सादीसे-सादी और सस्तीसे-सस्ती ऐसी खुराकका पता लगाना चाहिए, जो गाववालोको उनकी खोई हुई तन्दुरुस्ती फिरसे पानेमे मदद कर सके। अगर गाँववाले हर बार भोजनमे हरी पत्तिया लेने लगे, तो उन्हे ऐसी बहुत सी बीमारियोसे जिनके वे आज शिकार बने हुए है, छुटकारा मिल जाये। गाववालोके भोजनमे विटामिनोकी कमी है, बहुत-से विटामिन हरी पत्तियोसे प्राप्त हो सकते है। एक प्रसिद्ध अग्रेज डॉक्टरने दिल्लीमे मुझसे कहा था कि हरी पत्ती-भाजियोका ठीक ठीक उपयोग खुराक सम्बन्धी रूढ विचारोमे क्रान्ति पैदा कर देगा और आज दूधसे जो पोषण मिलता है, उसका बहुत-सा हिस्सा हरी पत्ती भाजियोसे मिल सकेगा। बेशक, इसका मतलब यह है कि हिन्दुस्तानके जगली घास-चारेमे छिपी हुई जो बेशुमार हरी पत्तिया मिलती है, उनके पोषक तत्वोकी तफसीलवार जॉच की जाये और उनकी शोध कडी मेहनतसे की जाये।

लगभग पाच माहसे मै पूरी तरह ऐसे आहारपर रह रहा हूँ जिसे आगपर नही पकाया जाता। पहले मै प्रतिदिन बहुत ज्यादा मात्रामे साग भाजिया लेता था। किन्तु पिछले पाच माहसे मै पकाई गई पत्ती भाजियो या अन्य साग-सब्जियोकी जगह हरी अनपकी पत्ती-भाजिया ही ले रहा हूँ। यह प्रयोग आरम्भ करनेपर मुझे लगा कि जो थोडी-सी हरी भाजी मै लेता हूँ, उसके लिए वर्धाके बाजारपर निर्भर रहना तो बडी भयकर बात है। तब एक दिन सुबह वर्धा आश्रमके श्री छोटेलालजी मेरे पास एक ऐसी भाजीके कुछ पत्ते लाये जो यहाँ आश्रममे अपने-आप बहुत ज्यादा उगती है। उस भाजीको 'लूनी' कहते है। मैने उसका प्रयोग किया और पाया कि वह मुझे माफिक आती है। दूसरे दिन वे चकवातके पत्ते लाये, वह भी माफिक आई। लेकिन लोगोसे ये जगली भाजिया खानेके लिए कहनेसे पहले मैने सोचा कि इनके विषयमे वनस्पति-शास्त्र क्या कहता है, इसका पता लगाऊँ। परिणाम यहा प्रस्तुत

है। इसमे मुझे प्रो० जे० पी० त्रिवेदीकी सहायता मिली है। उद्धरण वाटसकृत 'इकोनोमिक प्रोडक्टस ऑफ इण्डिया' नामक बृहत ग्रथ मालासे लिये गये है।[1]

मैंने सरसो, सूआ, शलजम, गाजर, मूली और मटरकी हरी पत्तियाँ खाइ है। यह कहना शायद ही जरूरी हो कि मूली, शलजम और गाजर कच्ची हालतमे भी खाई जा सकती है। गाजर, मूली और शलजमको या उनकी पत्तियोको पकाना, पसे और उनके स्वादको बरबाद करना है। इन भाजियोमे जो विटामिन होते है, वे पकानेसे पूरे या थोडे-बहुत नष्ट हो जाते है। मैंने इनके पकानेको 'स्वाद' की बर-बादी कहा हे, क्योकि बिना पकायी हुई हरी भाजियोका अपना खास एक कुदरती जायका होता है, जो पकानेसे खत्म हो जाता है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५-२ १९३५

३१६ आवश्यकता है[2]

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके लिए लोग दानमे रुपये पैसे तो भेजते रहते है लेकिन इसके अलावा और भी कई तरहकी चीजोकी सघको आवश्यकता है। जैसे, ग्रामोद्योग सम्बन्धी और गावोके खेतोमे उगाने लायक जडी-बूटियोके बारेमे साहित्य तथा गावोमे पैदा होनेवाली चीजोके नमूने। सघ अपना एक सग्रहालय बना रहा है, उसके लिए इन सब चीजोकी जरूरत है। इसके अलावा तेल और गन्ना पेरनेके ग्रामीण कोल्हू भी हिदुस्तानके भिन्न-भिन्न भागोमे इस्तेमाल किये जाते है। इन दोनो कामोके ही कोल्हू अलग अलग किस्मके होते है और हरेक प्रान्तमे उनमे थोडा-बहुत फक मिलता है। ग्रामीण उद्योगोमे जिनकी रुचि है, वे अगर उत्पादन के विभिन्न उपकरणोका पता लगाकर उन्हे उद्योग-सघके प्रधान कार्यालयमे भेजनेका कष्ट उठाये तो कार्यालय उनका श्रेणी विभाग करके उनकी आजमाइश करेगा, और विशेषज्ञ उनमे से जिन्हे सर्वोत्तम समझेगे, उनके बरतनेकी सिफारिश की जायेगी। अगर किसीके पास वाट्सकृत 'इकोनोमिक प्रोडक्टस आफ इण्डिया' ले० क० कीर्तिकरकृत 'इडियन मेडिसिनल प्लाटस' या नादकर्णी कृत 'इडियन हर्ब्स' नामक पुस्तके हो आर वे काममे न आ रही हो, न उपयोगकी कोई खास सम्भावना ही हो, तो उन्हे चाहिए कि वे उन्हे सघको भेट कर दे। ऐसा करनेसे निश्चय ही उनका अच्छा उपयोग होगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५ २-१९३५

१ इन उद्धरणोको जिनमें लूनी और चकवातके विभिन्न स्थानीय नाम गुण और उपयोग दिये गये हैं यहाँ नही दिया जा रहा हैं।

२ यह टिप्पणियाँ" शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

३१७ चावलके बारेमे

चावलकी समस्याके विषयमे लोग अधिकाधिक रुचि ले रहे है। श्री शकरलाल बैंकरने तो बिना पालिशके चावलके प्रयोग शुरू भी कर दिये है। वे लिखते है [१]

इस पत्रपर मै सिफ यही टिप्पणी करूँगा कि मेरे खयालमे इस बारेमे और डाक्टरी सम्मतिकी जरूरत नही है। जो सम्मतिया इकट्ठी करके मै 'हरिजन' मे दे चुका हूँ, वे बिना पालिशके चावलकी जोरदार समथक है। लेकिन जहातक मुझे पता है, डाक्टरी साहित्यमे ऐसे प्रयोगोका, जिनकी शुरूआत हममे से बहुतोकी तरह श्री बैंकरने की है कोई वणन नही है। इसका सबूत तो खाकर ही मिल सकता है, हरएकको खुद ही आजमाइश कर लेनी चाहिए।

लेकिन अभ्यस्त रसोइयेकी हैसियतसे इस सम्ब धमे मै एक चेतावनी दूगा। अपनी पत्नीके साथ मेरे जो अनेक घरेलू झगडे होते रहते थे, उनमे एक चावल राधनेपर भी था। वह एक एक दाना खिला रखती थी, लेकिन मै तो आहार-सम्ब धी सुधारका पक्षपाती था और इस बातको जानता था कि ऐसा चावल गुणमे उससे आधा भी अच्छा नही होता, जैसा कि अच्छी तरह पका हुआ चावल होता है। मै चावलका माड एक तोला भी फेकता नही था। उस वक्त बिना पालिश किये हुए चावलका फक तो मुझे मालूम नही था। मै तो आम तौरपर बाजारमे प्राप्त चावल ले जाता और उसको अच्छी तरह पकाता था। पाठकोको यह जानकर खुशी होगी कि हमारे झगडेका अ त सुधारकी विजयमे हुआ, और मेरी पत्नी अच्छी तरह राधे हुए चावलके पक्षमे हो गई। अस्तु, यह ध्यान रहे कि बिना पालिशके चावलके बारेमे और भी ज्यादा सावधानीकी जरूरत है कि जिसमे, उसके सबसे अधिक पोषक तत्व होते है। इसलिए बिना पालिशके चावलको पहले कमसे-कम तीन घटे तक ठडे पानीमे भिगोकर तब पकाया जाये तो उसके हजम होनेमे तो कोई दिक्कत होगी ही नही, उलटे निश्चित रूपसे वह अधिक सुस्वादु हो जायेगा। मगनवाडीमे तो जहा कि व र्गमे सघ है यह बात साबित हो चुकी है। यहापर हमे जो चावल मिल रहा है वह अधकुटा कहला सकता है, बिलकुल वैसा नही जैसेका जिक्र ऊपरके पत्रमे किया गया है। पर उसको राधा अच्छी तरह जाता है और उसके हजम न होनेकी शिकायत किसीने नही की है। लेकिन चकि पालिश किये हुए चावलसे वह अधिक पौष्टिक होता है और उसमे 'स्टाच' लगभग असली रूपमे रहता है, इसलिए स्वभावत बिना पालिशका चावल उतने परिमाणमे नही खाया जा सकता

१ उद्धरण यहाँ नहीं दिया जा रहा है। शकरलाल बैंकरने स्वानुभवके आधारपर तफसील देकर कहा था कि हाथ-कुटा चावल मिलमें साफ किये चावलकी अपेक्षा पचनेकी दृष्टिसे भारी नहीं होता और सुझाया था कि गांधीजी इस विषयमें लोगोंके निश्चित अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

और न खाना ही चाहिए जितना कि पालिशदार चावल खाया जाता है। चावलकी ही बात नही पुराने तरीकेपर पकाई जानेवाली सभी चीजोके बारेमे यही बात लागू होती है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १५-२ १९३५

३१८ 'दरजे' का अर्थ

हरिजन सेवक सघका हालमे जो नया सविधान[१] बना है, उसके बारेमे एक अत्यत प्रतिष्ठित हरिजन-सेवक लिखते हैं

> **प्रतिज्ञा अ और ब मे 'दरजा' शब्द आता है। अगर उसका अथ यह है कि जैसे कानूनमें कोई ऊँचा नीचा नहीं है, वसे ही ईश्वरकी दष्टिमे भी कोई ऊँचा नीचा नही है तो हमारे यहाके सदस्य उसको माननेके लिए तयार ह। अर्थात, धम या दशन शास्त्रके सिद्धातके बतौर, आध्यात्मिक रूपमें, वे इस बातको मानते ह। लेकिन अगर इसका अथ दुनियावी व्यवहारमें मालिक-नौकर, गुरु शिष्य, पति-पत्नी, न्यायाधीश और कदी आदिके बीचके दरजे जसा लगाया जाये और कहे कि वैसा अन्तर भी नहीं होना चाहिए, तो हमारे लिए इस प्रतिज्ञापत्र पर दस्तखत करना मुश्किल है। इसलिए आप यह बतलानेकी कृपा करे कि यहापर 'दरजे' का जो उल्लेख हुआ है वह सासारिकके बजाय आध्यात्मिक रूपमें ही है या नहीं?**

प्रतिज्ञाके जिस अशका ऊपर उल्लेख किया गया है, वह निम्न प्रकार है

> **म किसी मनुष्यको दरजेमें अपनेसे नीचा नहीं समझता और मैं अपने इस विश्वासपर चलनेका भरसक प्रयत्न करूँगा।**

मै समझता हूँ कि ऊपरकी बातका जवाब तो प्रतिज्ञामे ही दिया हुआ है। लेकिन पत्र लेखक समानताका अथ भिन्नताओकी समाप्ति समझकर भ्रमममे पड गये मालूम पडते हैं। अगर यह भिन्नता या विविधता बिलकुल ही न होती तो यह दश्य-जगत ही कहा होता, और समानता या ऊँच नीचके भावका प्रश्न ही न उठता। लेकिन जब ईश्वर अनेक रूप धारण करता है, तब उन विविध रूपोमे भिन्नता भी देखनी ही पडती है। ईश्वरके कोई अग दूसरे अगोकी अपेक्षा ऊँचे या श्रेष्ठ होनेका दावा करे, तो उसे सृष्टिकर्त्ताके विरुद्ध विद्रोह ही कहा जायेगा। क्योकि उन सबके बीच कद, रग, रूप, गुण आदिकी भिन्नता चाहे जितनी हो, फिर भी दरजेमे तो वे सब बराबर ही माने जायेगे। पति पत्नी, गुरू शिष्य, नौकर मालिक, न्यायाधीश और अपराधी, जेलर और कैदीके बीच अतर तो है ही, लेकिन यदि पति अपनी पत्नीसे, मालिक नौकरसे या न्यायाधीश सजा पानेवाले अपराधीसे अपनेको ऊचा माने, तो वह

१ हरिजन-सेवक सघका यह सविधान २ जनवरी १९३५ को स्वीकार किया गया था।

अधर्माचरण होगा। दुनियाका सारा दु ख असमानताकी इस भावनासे पदा हुआ है। हिदू जिस अस्पृश्यताका पालन करते है, वह इसका चरम रूप हे। इसलिए इससे बढकर और क्या बात हो सकती है कि हरिजन-सेवक इस पुराने पापको धोते समय अन्तर्मुख होकर विचार करे और असमानताके विषको अपने हृदयसे बिलकुल निकाल डाले? लेकिन यह किस प्रकार मालूम होगा कि अमुक मालिक तो अपने नौकरको अपनेसे नीचा मानता है और अमुक उसे अपने समान समझता है? इसका पता इसीसे चल सकता है कि पहले प्रकारके मालिकको अपने नौकरके सुख-दु खका कोई खयाल ही नही होगा, क्योकि उसे तो नौकरको तनख्वाह देकर उसके बदले काम लेनेके सिवा उससे और कोई मतलब नही हे जबकि दूसरा अपने कुटुम्बीकी तरह उसका खयाल रखगा। सस्कारवान कुटुम्बोमे मालिकके बाल बच्चे पुराने नौकरोको मा-बापकी तरह मानते ह। नौकराके सुख-दु खमे मालिक भी शरीक होते है। नौकरोको ऐसा महसूस नही होता कि वे मालिकसे नीचे दरजेके ह। मालिक उलटे रास्ते जाये तो वे उन्हे टोकते भी ह। घमण्डी और विनम्र मालिकके बीच वैसा ही अन्तर है, जसा कि खडिया और मलाईके बीच। उनमे कम-ज्यादाका कोई भेद नही है, उनकी तो किस्म ही अलग-अलग है। समानताकी यह स्थिति प्रकृतिजन्य है और बुद्धि एव हृदय रखनेवाले मनुष्यकी हेसियतसे यही शोभनीय है। मगर फिर भी हम सब अभी इस स्थितिसे बहुत दूर है। लेकिन बजाय इसके कि मरनेके बाद इसके अनुसार व्यवहार करनेकी आशा करे, हमे अपने रोजमर्राके जीवनमे ही इसे कार्यान्वित करनेका प्रयत्न करना चाहिए। अगर सच्चे दिलसे हम ऐसा करनेका प्रयत्न न करे, तो फिर कानूनकी दष्टिवाली समानताका अथ ही क्या हो सकता है?

उक्त मित्र शुद्ध निष्ठासे अवैतनिक काम करनेवाले प्रतिष्ठित हरिजन-सेवक है। सविधानकी १० वी धारामे कहा गया है कि प्रान्तीय सघोके सदस्योमे एक-तिहाई सख्या ऐसोकी होनी चाहिए जो सघके काममे अपना पूरा समय देते हो। इसमे 'पूरा समय देनेवाले सेवक' शब्द आये है, उनका अथ समझनेमे भी इन मित्रको कठिनाई हुई है। यह कठिनाई ठीक है, क्योकि नियमोमे ऐसा कही नही बताया गया है कि ऐसे सेवक सवैतनिक हो या होने चाहिए। इस सविधानके क्रमश बनते जानेकी अवधिमे म वहा उपस्थित था। इसलिए जो बात जान-बूझकर उसमे नही रखी गई थी, मै उसकी पूर्ति आसानीसे कर सकता हूँ। अपना पूरा समय देनेवाले वेतन पानेवाले सेवकोको रखनेके बारेमे विचार हो रहा है। इसकी योजना भी बन रही है। पूरा समय देनेवाले जिन अवैतनिक सेवकोके पास इतनी सम्पत्ति हो कि कमाईकी फिक्र किये बिना वे अपना पूरा समय इसमे लगा सके, उन्हे इस योजनासे अलग नही रखा जायेगा। सवेतन शब्द किसीको बुरा लगेगा, यह भी सविधान बनाते समय विचार उठा था। इसीलिए इसे उसमे नही रखा गया था। लेकिन यह विचार तो स्पष्ट ही है कि जहा-जहा मिल सके वहा एक-तिहाई सेवक पूरा समय देनेवाले सवेतन सेवकोमे से ही लेने चाहिए। अलबत्ता, यह जरूर है कि जिम्मेदारोके लिए जिन और बातोकी आवश्यकता हो वे भी उनमे मौजद हो।

इन मित्रकी एक तीसरी कठिनाई भी है, जिसके बारेमें ये लिखते हैं

> **हमारे संघके सदस्यों, खासकर हरिजनोंकी इच्छा है कि २४वें नियममें सुधार होना चाहिए। 'अधिकसे-अधिक जितने सदस्य मिल सकें' के बदले कमसे-कम एक-तिहाईका अनुपात निश्चित कर देना चाहिए। मद्रास जैसी जगहोंमें १५ हरिजन सदस्य तो आसानीसे मिल सकते हैं, और जैसा कि इस समय विधान है, उसके अनुसार और किसीको उसमें लिया ही नहीं जा सकता। इससे तो संघका जो यह उद्देश्य है कि सवर्ण लोग हरिजनोंकी सेवा करें, वही नष्ट हो जाता है।**

यह कठिनाई सम्भवत संविधानकी इस बातपर ध्यान न देनेसे हुई है कि "सदस्योंकी जो अधिकसे अधिक संख्या रखी गई हो उसका ध्यान रखते हुए।" इस नियमका पूरा वाक्य इस प्रकार है—"हरेक संघ या समितिमें सदस्योंकी जो अधिकसे-अधिक संख्या रखी गई हो उसका ध्यान रखते हुए अधिकसे-अधिक जितने हरिजन मिल सकें उतने रखे जायें।' इन मित्रने जैसा अर्थ लगाया है वैसा अर्थ न लगाया जाये, इसीलिए जान-बूझकर इस नियममें उसका स्पष्टीकरण किया गया है। इन मित्रने जो परिवर्तन सुझाया है केन्द्रीय बोर्डने दिल्लीमें उसपर विचार किया था। लेकिन अनेक सदस्योंको महसूस हुआ कि उपयुक्त हरिजनोंका एक तिहाई अनुपातमें मिलना मुश्किल है। इसलिए यह नियम रखा गया, इससे दोनों कठिनाइयोंका हल हो जाता है।

इतने पर भी यहां एकबार फिर मुझे अपना विचार प्रकट कर देना चाहिए। हरिजन-सेवक संघोंमें हरिजनोंको लेनेके मैं विरुद्ध था, और अभीतक विरुद्ध हूँ। क्योंकि हरिजन-सेवक संघ अगर प्रायश्चित्त करनेवाले ऋणी लोगोंकी संस्था हो, जैसा कि इसे माना जाता है, तो इसमें जिनका ऋण है उनको कोई स्थान ही नहीं हो सकता। लेनदार तो लेनेके लिए सामने खड़े ही हैं। एक न-एक दिन वे अपनी बात मनवायेंगे ही। आज तो उनमें से अधिकांश असहाय हैं। कितने ही यह भी समझते हैं कि ईश्वरकी सृष्टिमें वे हीनसे-हीन और बहिष्कृत रहनेके लिए ही बनाये गये हैं इससे अन्य स्थिति प्राप्त करनेका विचार करना भी वे घोर पाप समझते हैं। प्रायश्चित्त करनेवाले सवर्ण हिन्दुओंका काम है कि पूरी नम्रताके साथ उनकी सेवा करें। उनकी वह सेवा स्वीकार हो या न हो, भले ही प्रायश्चित्तका समय निकल भी गया हो और भले ही यह लगता हो कि अब तो बहुत देर हो गई है, फिर भी उन्हें प्रायश्चित्त तो करना ही चाहिए। यह प्रायश्चित्त वे अपनी जगह हरिजनोंसे नहीं करा सकते। यह भी संभव है कि इस नियमका यह अर्थ जाननेके बाद हरिजन मित्र यह बोझ उठानेसे डरने लगें। लेकिन यह प्रायश्चित्त क्या उनके करनेका है, या जो सवर्ण हिन्दू संघमें होंगे ही नहीं उनसे वे उसे जबरदस्ती करवायेंगे?

लेकिन विभिन्न प्रान्तोंके जिन सदस्योंने कुछ हरिजनोंको अपने संघोंमें रखना चाहा था, उनकी प्रत्यक्ष कठिनाईके आगे मेरा विरोध दब गया है। उनके ठोस अनुभवके सामने मेरे आदर्शको पीछे हटना पड़ा है। इसलिए इस नियमका सीधा-सादा अर्थ यही है कि हरिजन-सेवक संघोंमें जितने हरिजन मिल सकें उन्हें शामिल करना

चाहिए, मगर भारी बहुमत सवर्ण हिन्दुओका ही रहना चाहिए। और समस्त सघमे दो-तिहाईसे कम उनकी तादाद नही होनी चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि अगर पर्याप्त योग्यतावाले हरिजन न मिले तो वे एक तिहाई सख्या हरिजनोकी रखनेके लिए बाध्य नही है। हरिजनो सम्बन्धी प्रतिज्ञा जान-बूझकर बहुत मामूली और सीधी सादी रखी गई है। इसलिए एक तिहाई हरिजन सदस्य प्राप्त करनेमे कोई कठिनाई नही होनी चाहिए। जब यह नियम ही निश्चित कर लिया गया है, तो ईमानदारीके साथ इसपर अमल होना चाहिए।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १५-२-१९३५

३१९ पत्र कृष्ण कृपलानीको

वर्धा
१५ फरवरी, १९३५

प्रिय कृपलानी,

तुम बडे लालची हो। आगामी त्रैमासिकके लिए मेरा लेख मागनेका क्या मतलब ? मेरे पास इसके लिए बिलकुल वक्त नही है। शान्तिनिकेतनके मेरे सभी मित्र इस बातको जानते है और उन्होने मुझे इस कार्यसे मुक्त कर दिया है। फिर तुम्हे अव्वल दर्जेके लेखक मिलनेमे कोई मुश्किल भी नही होगी।

हृदयसे तुम्हारा,

श्रीयुत कृष्ण कृपलानी
शान्तिनिकेतन

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३२० पत्र सुशीलकुमार सेनको

१५ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

मुझे आपके पूजनीय पिताजीका पत्र मिला था। उनकी बीमारीका हाल जानकर मुझे बहुत दुख हुआ। आशा है, वे जल्दी ठीक हो जायेगे। तब आप मेरी प्रश्नावलीके बारेमे अपना सुविचारित मत भेजे।[1] मै चाहूँगा कि आप अपने कथनके

१ देखिए 'प्रश्नावली," पृ० १८८ और "पत्र गणनाथ सेनको' पृ० २०२।

समर्थनमें आयुर्वेदके ग्रन्थोंका भी हवाला दें। विभिन्न दूधोंके तुलनात्मक गुणोंके बारेमें आधुनिक वैज्ञानिकोंकी रायकी मुझे जानकारी है।

कविराज सुशीलकुमार सेन[1]
कल्पतरु पैलेस
चित्तरंजन एवेन्यू नार्थ, कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३२१ पत्र जी० के० वी० देवरको

१५ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

मेरे बारेमें कही गई सभी बातोंपर तुम्हें विश्वास नहीं करना चाहिए। पर मैं इतना तो कह ही सकता हूँ कि हमारे गाँवोंकी स्त्रियाँ गुलाम नहीं हैं। वे अपनी-अपनी गृहस्थीकी मालकिन हैं और मैं यह भी जोर देकर कह सकता हूँ कि वे बच्चे पैदा करनेमें अपने पतियोंसे विवश नहीं हैं।

श्रीयुत जी० के० वी० देवर, बी० ए०, बी० एल०
गुन्टूर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३२२ एक पत्र

वर्धा
१६ फरवरी, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मेरा सुझाव है कि आप लाला हरध्यान सिंहसे, जिन्हें दिल्लीका एजेंट[2] नियुक्त किया गया है, परामर्श करें। वे आपसे जितनी भी मदद ली जा सकती है, अवश्य लेंगे।

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ गणनाथसेनका पुत्र।
२ अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघका।

३२३. पत्र : डॉ० मु० अ० अन्सारीको

१६ फरवरी, १९३५

प्रिय डा० अन्सारी,

मुझे डर है कि आपने यूरोपमें जो स्वास्थ्य लाभ किया था, उसे आप तेजीसे खोते जा रहे हैं। अगर आपका यही हाल रहा तो जल्दी ही भारतकी बदनामी हो जायेगी और हर व्यक्ति जो स्वास्थ्य लाभ करना या स्वस्थ रहना चाहता है, यूरोप भागेगा। इसलिए भारतकी नेकनामीकी खातिर आप ऐसी राह हमें दिखायें कि हम भारतमें ही स्वास्थ्य लाभ कर सकें और स्वस्थ रह सकें। और आपको ऐसा करनेका अधिकार तभी होगा जब आप "पहले कर दिखाओ तब कहो" की नीतिका पालन करेंगे। आशा है, आप बोर्ड या समितिसे हटेंगे नहीं। आपको कोई भारी थका देनेवाला कार्य करनेकी जरूरत नहीं है। लेकिन आपकी सलाहके बिना काम नहीं चल सकता। यह मेरी राय है।

हृदयसे आपका,

डॉ० अन्सारी
दरियागंज
दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य : प्यारेलाल।

३२४. पत्र : डॉ० गोपीचन्द भार्गवको

१६ फरवरी, १९३५

प्रिय डा० भार्गव,

संलग्न पत्र[1] के लेखक अर्जुन देव करीब एक महीनेसे मेरे साथ पत्र-व्यवहार कर रहे हैं। वे यहाँ आना चाहते थे। मैंने उन्हें लिखा कि यह न सम्भव है और न वांछनीय ही है। उन्हें अपने निवास-स्थानके नजदीककी जगहोंसे ही मदद लेनी चाहिए। इसलिए लाहौर आये जान पड़ते हैं। मैंने उन्हें आपके पास जानेका सुझाव दिया है। आप उनसे पूछताछ तथा परिचय करके उनकी साख का पता

१. यह उपलब्ध नहीं है।

लगाये और फिर जो आवश्यक लगे वह करे। आशा है, ग्राम कार्य सुचारु रूपसे चल रहा होगा।

हृदयसे आपका,

डा० गोपीचन्द
लाहौर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३२५. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

१६ फरवरी, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा खत मिला।

तुमारे जो प्रयत्न करना है सो यहांसे नही हो सकता है क्या? लेकिन जैसा तुमको अच्छा लगे वही किया जाय।

हरध्यान सिंहजीका देखुंगा। क्षेत्रकी मर्यादा तो उनको ही बनानी है। दिल्लीमें भी मैंने वही कहा था।

तुमारे पास कौनसी हिन्दी किताब है? उसके नाम इ० भेजो।

बापुके आशीर्वाद

श्री ब्रजकृष्ण
कटरा खुशालराय
दिल्ली

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४४०) से।

३२६ पत्र रमेशचन्द्रको

१६ फरवरी, १९३५

भाई रमेशचद्रजी,

आपका पत्र उचित है। निणय करनेका माग हिंदु, मुसलमानादि भेद नही है। ऐसे बहुत मुसलमानको जानता हू जो स्वच्छताका पालन भली भाति करते है। चद निरामीषी भी हाते है। इमलिए जिस जगहपर स्वच्छताके नियमोका पालन होता है वही खाना, पीनाकी मर्यादा रखे तो सब-कुछ हो जाता है। मुझे तो अेनोक्युलेशन मात्र अप्रिय है। लेकिन खुन इत्यादिके सवथा त्याज्य है। वनस्पति अथवा खनिज पदाथके इस तरह त्याज्य नही है।

मो० क० गाधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०९३) से।

३२७ पत्र सुरेश सिंहको

१६ फरवरी, १९३५

भाई सुरेश सिंह,

तुमारा खत मिला है। जितना हो सके इतना किया जाये। कोट आफ वाड्स तरफसे नियामक कौन है? जितनी सादगी ग्रहण कर सकते हैं इतनी सादगी रखकर जीवन व्यतीत किया जाय। मुझे लिखा करो। देहातीओकी जो-कुछ सेवा हो सकती है वह की जाये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६८९) से।

३२८ पत्र अमृत कौरको

दुबारा नही पढा

वर्धा

१८ फरवरी, १९३५

प्रिय अमत,

तुम्हारा इसी ५ तारीखका पत्र अभीतक सामने रखा हुआ है।

अभी एक दिन लिफाफोका एक पासल तुम्हारे पास भेजा गया था।

लिखते रहनेके कारण हाथमे उत्पन्न दद अभी ठीक नही हुआ है। आज मैने 'हरिजन' के लिए लिखा है और कुछ दूसरे सक्षिप्त पत्र लिखे ह। मै दिन-भरमे दाये हाथसे इतना ही कर सका।

मेरा खयाल है कि ग्राम आदोलनमे तुम्हारा और तुम्हारी जैसी महिलाओका प्रवेश आन्दोलनको सुरुचिपूण और आकषक बना सकेगा।

मेरा विश्वास है कि शम्मीका[१] नाम परामशदाता सघमे आ जायेगा। गावोके बारेमे उनके कुछ जानने-न जाननेकी चिता मत करना। बुद्धिमान व्यक्ति ही अपने अज्ञानको स्वीकार करता है। और क्या डाक्टरोको गावोमे सेवा करनेका मौका आने पर कई चीजे भूलनी नही पडेगी? सघके रजिस्टरमे अकित करनेके लिए उनका पूरा नाम और उपाधिया लिख भेजना? उसे मेरा प्यार और धयवाद।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुमने गावोमे जाना शुरू कर दिया है। मै चाहता हूँ कि सभव हो तो तुम लिखने पढनेके कामोको कम करके गावोमे ठोस कामके लिए अधिक समय दो। लेकिन देखता हूँ कि तुम लिखने पढनेके काममे निपुण हो और लिखने-पढनेका जितना काम तुम करती हो शायद बिना उतने कामके सस्था नही चल सकती। लेकिन गावोका काम हाथमे ले लेनेके कारण इस बातका ध्यान जरूर रखना कि हदसे ज्यादा बोझ अपने ऊपर न उठा लो।

मैने कुमारप्पा तक तुम्हारा सदेश पहुँचा दिया है। तुमने सदस्यो द्वारा ली जानेवाली शपथके लिए अतिरिक्त उत्साह न दिखाकर ठीक ही किया है।

हरिजनोके लिए मेरा सदेश इस प्रकार है

"मेहरबानी करके हरिजन बधुओसे कहे कि आत्म शुद्धिके इस आदोलनके दौरान उनसे यह उम्मीद की जाती है कि वे सवण हिदू कहे जानेवाले लोगोके दोषोका अनुकरण न करे। मुझे यह जानकर दुख हुआ है कि बालविवाह-जैसी बुराई, जो कि सवण हिन्दू जातिमे प्रचलित है, उनमे भी वतमान है। यह एक बुरी प्रथा

१ अमृत कौरके भाई ले० कनल कुँवर शमशेरसिह जो कि एक सेवा निवृत्त सर्जन थे।

है, इसमें कोई भी गुण नही है। उन्हे इस बातका भी ज्ञान होना चाहिये कि एक विशेष कानूनके मातहत इसे गैर-कानूनी करार दिया गया है। इसलिए मुझे आशा है कि हरिजन-बधु इस कुप्रथासे छुटकारा प्राप्त करनेकी कोशिश करेगे।"[१]

मुझे उम्मीद है कि इससे तुम्हारा काम चल जायेगा।

मीरा एक मोटर दुघटनाकी चपेटमे आ गई थी। उसके सभी साथियोको दुघटनामे चोट आई थी। उसके एक साथीको तो बहुत अधिक चोट आई। उसे सबसे कम चोट आई थी। गाडी तो चूर-चूर हो गई। वे सब लोग हवामे उछल गये थे। बच जाना एक चमत्कार ही रहा। जिस व्यक्तिको बहुत अधिक चोट लगी है वह स्थानीय अस्पतालमे पडा हुआ है। यो उसकी हालत खतरेसे बाहर है। ईश्वरकी इच्छाके बिना मौत किसीका कुछ नही बिगाड सकती।

स्नेह।

बापू

श्री राजकुमारी अमृत कौर
जालधर शहर

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२२) से, सौजन्य अमृत कौर। जी० एन० ६३३१ से भी।

३२९ पत्र हीरालाल शर्माको

१८ फरवरी, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। आज भी हाथ लिखनेके लिये तैयार नही हूआ है। लेकिन 'हरिजन' के लिये तो लिखा ही है तो यह क्यो नही?

द्रौपदी और बच्चोको मेरे पास छोडकर पश्चिम जानेके लिये तैयार हो? द्रौपदी वहा जा कर क्या करेगी? बच्चोको कही छोडकर मा चली जाये, मुझे तो अच्छा नही लगेगा। तुमको ही विलायत भेजनेके लिये मै तैयार हो गया हू। नही कि उसमे मै कोई लाभ अब देखता हू लेकिन तुमारा भला उसीमे देख रहा हू। वहासे कुछ-न-कुछ तो पाओगे।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मुझे जवाब देनेमे शनी या शुक्रतक राह देखनेकी आवश्यकता नही है।

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ३१५२) से। **बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष** से भी।

१ देखिए पत्र अमृत कौरको, पृ० १७७-७८।

३३० पत्र बुधाभाई और जूठाभाईको

वर्धा
१९ फरवरी, १९३५

भाई बुधाभाई तथा जूठाभाई,

आपने मुझे अच्छा समाचार दिया है। जो क्षार आपको हाथ लगा है उसका नमूना सतीशबाबूका १५ कालेज स्क्वेअर, कलकत्ताके पतेसे भेज दीजिए। मेरा हवाला दीजिए और जिस क्रियासे आप क्षार बनाते हैं उसका विवरण भी उन्हें लिख भेजिए। अपने बनाये साबुनका नमूना भी उन्हें ओर मुझे, दोनोंको भेज दीजिए। सतीशबाबूकी रिपोर्ट आनेके बाद आगे बढ़ेंगे।

आपकी-जैसी खोज की हुई बहुत सी बातें हम लोगोंकी मूर्खताके कारण व्यर्थ हो जाती हैं। मैं जानता हूँ कि इस देशमें ईश्वरने जो धन बिखेर दिया है, उसका हम सदुपयोग कर सकें तो किसीको भूखा न रहना पड़े। आपसे जो बने, बराबर करते रहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ८५८९) से।

३३१ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

१९ फरवरी, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारे प्रति अपराधी हूँ। तुम्हें लिखनेकी इच्छा रोज होती थी और रोज तुम्हारा पत्र एक ओर रख दिया जाता था। आज दूसरे पत्र अलग करके तुम्हारा पत्र हाथमें लिया है। मेरा दाहिना हाथ ठीक नहीं है, यह भी एक बाधा है। जीवन थोड़े दिनका है, और नखरे बहुत हैं, तब किया क्या जाये? और अब फिरसे रसोइया भी बन बैठा हूँ।

१ यह मानो कि ग्रामसेवा समिति नियुक्त करनेका अधिकार मुझे है, और जुगतरामको मैं काकासाहबकी जगह समितिका सदस्य और फंडका ट्रस्टी नियुक्त करता हूँ।

२ यदि सरदारकी भी यही इच्छा हो, तो ग्रामसेवा समिति तथा जैन-साहित्य प्रचार-समिति, विद्यापीठके विभाग माने जा सकते हैं। इसमें काकासाहबको कोई आपत्ति नहीं होगी, यह मैं मान लेता हूँ। मैं बीती बातें भूल जाता हूँ, इससे यह लिखा है।

३ रास आदि स्थानोके बालक जहा तहा बिखरे हुए है। उन्हे एक जगह लाकर उनके लिए शाला चलाई जा सके तो यह मुझे पसन्द होगा। यदि सरदार और तुम सब ऐसा करो, तो इसमे मेरी सहमति है।

४ कन्याओकी शिक्षाकी बात विचारणीय है। हरिजन आश्रममे सवर्ण हिन्दुओका साम्राज्य कदापि नही जमना चाहिए। इसकी इमारतोका हमारे हाथो कभी ऐसा उपयोग न हो जिससे हमे नीचा देखना पडे। और यह काम करेगा कौन? तुम स्वय और किसी काममे मत फँसना। गोधरा आश्रममे जानेवाले एक व्यक्तिको वहाका काम नीरस लगा। याद रहे यह काम अभी भी सबसे अधिक हेय माना जा रहा है। इसीलिए कन्याओके लिए कोई अलग सस्था खोलनेके बारेमे मै शकित हूँ। रावजीभाईने कोई सस्था खोली है, उसका क्या हाल है? तुम मुझे इसमे उदासीन मान सकते हो।

इतनेमे तुम्हारे चारो प्रश्न आ जाते है।

प्यारेलाल आज अचानक आ धमके है। मै जनसख्या बढा रहा हू और जगहकी कमी है। ईश्वर निभायेगे।

परीक्षितलालसे कहना कि मेरी नजरमे अभी तो गोधराके लिए कोई नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७१) से।

३३२ पत्र परमानन्द के० कापडियाको

१९ फरवरी, १९३५

भाई परमानन्द,

तुमने मुझे लिखा सो ठीक किया। तुम्हे जो लिखा है और मुझे जो लिखा है, उन दोनोमे कोई अन्तर नही है। काकासाहब मेरी पूरी सहमतिसे यह अनुभव प्राप्त करेगे। जहा इतने ज्यादा गुजराती और अन्य भारतीय जाकर शान्ति प्राप्त करते जान पडते है, उसके बारेमे हमे प्रामाणिक जानकारी होनी चाहिए। काकासाहबके बारेमे मुझे और तुम्हे कोई भय नही होना चाहिए। यह अनुभव प्राप्त करना उनके लिए अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

श्री परमानन्द कुँवरजी
१६४ मुम्बादेवी
बम्बई

मूल गुजराती (जी० एन० ११५८८) से।

३३३ पत्र: हीरालाल शर्माको

१९ फरवरी, १९३५

चि० शर्मा

दा० अनसारीने किताबोका लिस्ट भेज दिया है। आजकल यहा नये डाक्तर आये है। परोपकारी है। उनसे तुम्हारे बारेमे बातो हुई। वह तुमको नित्य पाठ देनेके लिये तैयार है। क्या द्रौपदीके साथ यहा आनेके लिये तयार हो? यदि नही हो और कहो तो किताब इ० लेकर भेज द। मेरे अगले खत[1] के उत्तर की प्रतीक्षा तो कर ही रहा हू। अब तुमारे सामने तीन प्रश्न हैं। दोमें द्रौपदीको वर्धामे रहनेकी शत है। एकमें तो दोनो वही रहकर जो हो सकता है सो करनेकी बात है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

वहा उत्तम घीका भाव क्या है? यहा आनेमे रेल-खच कितना?

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, पृ० १४९ और १५० के मध्यकी प्रतिकृतिसे।

३३४ पत्र बगाल सरकारके राजनीति-विभागके सचिवको

वर्धा

२० फरवरी, १९३५

सचिव, बगाल सरकार,
गजनीति विभाग।

प्रिय महोदय,

श्रीयुत धीरेन्द्र चन्द्र मुकर्जी देवली शिविरमे एक राजनीतिक बन्दी है। स्वर्गीय देशबन्धु चि० र० दासकी विधवा बहन श्रीमती उर्मिला देवी, ३३५ जीतेनदास रोड, कलकत्ता उन्हे पुत्र जैसा मानती है। मै उन्हे अच्छी तरहसे जानता हूँ। मेरे साथी श्रीयुत महादेव देसाईके लिए भी उनके मनमे माकी सी ममता है। श्री देसाई अभी हाल ही मे गोसाबा गये थे इसलिए एक दिनके लिए वे श्रीमती उर्मिलादेवीके यहाँ भी रुके। श्रीमती उर्मिला देवी श्रीयुत धीरेन्द्र चन्द्र मुकर्जी से मिलनेको बहुत उत्सुक है। तीन वर्षोसे उन्होने न तो उन्हे देखा ही है और न पिछले जूनसे उनका कोई

१ देखिए पृ० २६३।

समाचार ही उन्हे प्राप्त हुआ है। वे स्वय तो उनसे मिलनेमे असमथ है, लेकिन जिसे वे पुत्रवत स्नेह करती है, उस व्यक्तिसे मिलनेकी अगर श्री महादेव देसाईको आज्ञा मिल जाये तो उन्हे हार्दिक प्रसन्नता होगी। मै यह आपको बता दूँ कि श्रीयुत महादेव देसाई तथा मै, दोनो ही श्रीयुत धीरेन्द्र चन्द्र मुकर्जीको जानते है। वे कुछ समयके लिए साबरमती आश्रममे मेरे साथ थे और अगर उन्हे कैद न किया गया होता तो वे शायद उसके कार्योंमे भाग लेने लगते।

अगर आप बता सके कि क्या श्रीयुत महादेव देसाईको श्रीयुत धीरेन्द्र चन्द्र मुकर्जी से मिलनेकी इजाजत मिल सकती हे और जिन शर्तोंपर मिलना सम्भव है, उनकी जानकारी भी दे दे, तो मै आपका कृतज्ञ होऊँगा।[1]

आपका विश्वासपात्र

[अंग्रेजीसे]

गह-विभाग, राजनीतिक, फाईल न० ४३/१५/३५, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार।

३३५ पत्र जाकिर हुसैनको

२० फरवरी, १९३५

प्रिय जाकिर,

यह एक बहुत श्रेष्ठ विचार है कि जामिया[2]की बुनियाद उसके सबसे छोटे बच्चेके द्वारा रखी जाये। इस कल्पनाकी मौलिकतापर मेरी बधाई। मै जानता हूँ कि जामियाका भविष्य उज्ज्वल है। मै आशा करता हूँ कि इसके द्वारा हिन्दू मुस्लिम एकताका बीज एक शानदार वक्षके रूपमे उगेगा। इसलिए मै इस साहसिक प्रयासकी हर सफलताके लिए कामना करता हूँ। मुझे विश्वास है कि डॉ० अन्सारी-साहब द्वारा कोषके लिए की गई अपीलको समुचित सफलता मिलेगी।

तुम्हे मुझसे यह आशा रखनेका पूरा अधिकार है कि मै इस कायमे तुम्हारी भरसक मदद करूँ। जमनालालजी आज आ रहे है। मै उनको तुम्हारा पत्र पढाऊँगा।

तुम्हारा,

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ बगाल-सरकार इस प्राथनाको स्वीकार करनेके पक्षमें नहीं थी क्योकि श्री महादेव देसाई और श्रीमती उर्मिला देवी मुकर्जीके सम्बन्धी नही थे। प्रान्तीय सरकार उक्त राजनीतिक बन्दीको 'एक भयकर आतकवादी व्यक्ति मानती थी और उसे डर था कि इस मुलाकातको कहीं राजनीतिक उद्देश्योंके लिए हथियारके रूपमें इस्तेमाल न किया जाये। बादमें भारत-सरकारकी सलाहपर इस मुलाकातकी इजाजत दे दी गई थी।

२ जामिया मिलिया इस्लामिया।

३३६ पत्र नारणदास गांधीको

वर्धा

२१ फरवरी, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। हरिलाल आ गया है। मावजीका पत्र इसके साथ रख रहा हूँ। पण्डितजी यहा है।

विवाह विधिके लिए क्या व्यवस्था की गई होगी? दूसरा उपयुक्त व्यक्ति तो अपने पास जुगतराम ही है। क्या वहा कोई नही मिल सकता? कुरैशीका पत्र मेरे पास भी नही आया। रामदासने लिखा था कि वह बम्बईमे है। अमीना शायद धधूकामे होगी। लीलावतीका पत्र इसके साथ भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४३१ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी।

३३७ पत्र अमतुस्सलामको

२१ फरवरी, १९३५

प्यारी बेटी अमतुल सलाम,

तुमारा खत मिला।[1] इसमे उर्दू हरफ बाये हाथसे ठीक नही चलते है। मेरे तार परसे तू नही आई। खत मिलनेसे पता चलेगा क्या हुआ। हालत बदल जानेसे तुमारे खतका उत्तर देनेका नही रहता। वहा अब देवदास कहे सो करो। सेवा ही जो करना चाहे वह हमेशा कर लेते है। तु खामखा मानती है कि तेरे मेरे पास आनेसे दूसरे नाराज होंगे। यहा तो मेरे पास ऐसे कोई है भी नही। मै तो बगीचे[2] मे रहता हूँ। लेकिन जैसा अच्छा लगे, वही करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ३१६) से।

१ यह वाक्य और सम्बोधन उर्दूमें हैं।

२ गांधीजी इन दिनों मगनवाड़ीमें रहते थे और यह बगीचा जमनालाल बजाजकी जमींदारीमें था।

३३८ पत्र राजेन्द्रप्रसादको

२१ फरवरी, १९३५

भाई राजेंद्र प्रसाद,

जयप्रकाश मुझे मिलने आये थे। मैं अनुभव करता हूं कि कांग्रेसको अधिवेशनमें बंगालकी समस्याओंपर विचारके लिए एक दिन होना चाहिए। मैंने एक प्रस्ताव का मसौदा[१] भी तैयार किया है और जयप्रकाशको दे दिया है। वे अगर इसे ठीक समझेंगे तो आगे भेज देंगे।

यह पत्र सरदारको भी दिखा दें, मेरे पास उन्हें अलगसे पत्र लिखनेका समय नहीं है। मैं अभी नागपुर रवाना हो रहा हूं और वहांसे कल वापिस लौट आऊंगा।

बापूके आशीर्वाद

अ० भा० कां० कमेटी फाइल १९३५, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

३३९ पत्र नारणदास गांधीको

[२१ फरवरी, १९३५ के पश्चात][२]

चि० नारणदास,

काले खुद ही वह मशीन ले आया है। वह मेरे सामने चलाई जा रही है। कामकी तो लगती है।

इनामके योग्य तो नहीं है, लेकिन यह उपयोगी ठहर सकती है। आज इसका मालिक भी आनेवाला है। उससे बातें करना चाहूँगा। इससे जो सूत निकाला गया है, उसका एक थान भी बुना जा चुका है। दूसरा भी तैयार ही होनेवाला है। इसपर आठ घंटेमें १६००० गज सूत काता जा सकता है। सूत २० अंकका निकलता है।

यदि धानको साधारण चक्कीमें दलें तो छिलका अलग हो जाता है। इस तरह आसानीसे बहुत-सा चावल निकाला जा सकता है। कहा जा सकता है कि

१ यह उपलब्ध नहीं है।

२ पत्रमें हरिलालके वर्धामें होनेके उल्लेखके आधारपर, देखिए "पत्र नारणदास गांधीको" पृ० २६८।

यह मेरी खोज है। चक्कीकी खूटीपर वाशर लगाकर चक्की मनके माफिक हलकी बनाई जा सकती है। इससे समय बहुत बच जाता है और काम आसानीसे हो रहा है। इस तरह निकला हुआ चावल मिलकी अपेक्षा सस्ता ही पडता है। स्वाद बहुत मधुर होता है और थोडा खाकर अधिक सतोष मिल जाता है। धानको सग्रह करके रखना बहुत आसान है। इस तरह आदमी रोज थोडा धान साफ करके ताजा चावल खा सकता है।

कनु कहता है कि पूज्य खुशालभाईके सग्रहमे गीताजीके दूसरे अनुवाद भी है। यदि यह ठीक हो तो उनकी एक सूची बनाकर भेजना। समश्लोकी अनुवादका उपयोग किशोरलालके समश्लोकी अनुवादको देखनेके विचारसे करना चाहता था। इसमे अर्थकी अथवा दूसरी कोई विशेषता नही है।

हरिलाल अच्छी तरह घुल मिल गया है। धीरूका पत्र इसके साथ है। केशुके बारेमे विचार किया जा रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४४७ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी।

३४० अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघकी सदस्यता

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ (प्रधान कार्यालय — वर्धा, सी० पी०) की गत बैठककी कार्यवाहीका सार अन्यत्र दिया गया है।[1] उससे जाना जा सकता है कि सघका सदस्य या सहायक कैसे बना जा सकता है। आशा है कि सदस्य या सहायक बननेकी योग्यता रखनेवाले सज्जन तत्सम्बन्धी फार्मकी खानापूरी करके सघके पास वर्धा भेज देगे। इसके लिए निमन्त्रण या किसीके आग्रहकी प्रतीक्षा करना ठीक नही है। निमन्त्रणकी आवश्यकता तो तभी होती है, जब सत्ता या प्रतिष्ठा प्राप्त करनेकी बात हो। सेवा-कार्यके लिए उसकी कोई जरूरत नही। यह भी ध्यान रखनेकी बात है कि ३१ मार्चतक सदस्य बन जानेवालोके लिए ट्रस्टी नियुक्त होनेकी भी सम्भावना है, इसके बाद यह उतनी नही रहेगी। क्योकि सघकी स्थापनाके पाच वर्षसे पहले अगर किसी ट्रस्टीकी जगह खाली हुई तो बाकी ट्रस्टियोको उसकी जगह नया ट्रस्टी चुनना पडेगा। इस चुनावके लिए उनका दायरा जितना बडा हो उतना ही अच्छा होगा, लेकिन यह तभी हो सकता है जब कि ३१ मार्चसे पहले-पहले बहुत-से सदस्य बन जाये। चुनावके लिए सदस्योकी सख्या अधिक न हुई, तो आन्दोलनके अपने आदर्शकी ओर बढनेमे बाधा पडेगी। क्योकि ट्रस्टी लोग रुपये-पैसेके ही सरक्षक नही है बल्कि जिस आदर्शके लिए सघ कायम हुआ है, उसकी सरक्षाका उत्तरदायित्व भी उन्हीपर है।

१ देखिए परिशिष्ट १।

लेकिन उस आदशका प्रतिनिधित्व करनेके लिए वे कितने ही योग्य क्यो न हो, फिर भी जबतक उन्हे यह ज्ञान न हो कि ऐसे बहुसख्यक स्त्री पुरषोकी सहानुभूति हमारे साथ है जिनसे हमे शक्ति और स्फूर्ति मिल सकती है और हम आवश्यकता पडने पर उनमे से उत्तराधिकारी चुन सकते है, तबतक नीव कमजोर ही रहेगी।

सघके ट्रस्टीका पद बहुत जिम्मेदारीका बन गया है, क्योकि भविष्यमे, जैसा कि बिलकुल असम्भव नही है सघ लोकतन्त्रीय बन जायेगा, और तब भी इसके आदशकी रक्षा करनेका दायित्व ट्रस्टियोपर ही रहेगा। और आन्दोलनकी प्रगतिके लिए इसका लोकतन्त्रीकरण भी उतना ही जरूरी हे जितना कि आदशका स्थायित्व। आदर्शके स्थायित्वकी कभी उपेक्षा नही होनी चाहिए। आदशको अमली रूप देनेके लिए ही बोडकी व्यवस्था की गई है, जो यह सारा कारबार करेगा और सात वष बाद ऐसे मतदाताओ द्वारा नये सिरेसे चुना जायेगा जो सघके ध्येयको मानते होगे। यह ठीक है कि सदस्यताके लिए दिये हुए प्राथना-पत्रको बोड अस्वीकार कर सकता है लेकिन यह सावधानी सिफ इसीलिए रखी गई है कि कोई ऐसा व्यक्ति जिसका इसमे विश्वास न हो, सिफ आदशको मटियामेट करनेके लिए ही सदस्य न बन जाये। यह मताधिकार तो वयस्क मताधिकारसे भी अधिक विस्तत है। क्योकि कोई भी ऐसा ग्रामवासी सघमे शामिल हो सकता है जो ग्राम्य जीवनके महत्वको समझता हो और यह मानता हो कि उसके द्वारा मनुष्य जाति बहुत सुखी हो सकती है। इसलिए जो लोग सघके आदश एव उसकी नीतिमे विश्वास रखते हो उन्हे चाहिए कि वे सघके सदस्य बन जाये और अपने राजनीतिक, धार्मिक, जातिगत या साम्प्रदायिक मतभेदोका खयाल न करते हुए भारतीय ग्रामवासियोके आर्थिक, नैतिक एव शारीरिक हित-साधनके लिए प्रयत्नशील हो। यह ध्यान रहे कि सघ जाति, धम, राजनीति या सम्प्रदायके भेदभावको नही मानता है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २२-२-१९३५

३४१ गायका बनाम भैंसका दूध

ग्राम-सुधारके बारेमे विचार करते हुए इस बातकी जाच करनेका सवाल भी सामने आया कि क्या गायका दूध भैंसके दूधसे अच्छा होता है? इस बारेमे मैंने मित्रोको लिखा। इसपर श्री हरिभाऊ फाटकने, उनके पास आया हुआ, प्रो० रावबहादुर सहस्रबुद्धेका निम्न पत्र भेजा है[1]

गाय और भैंसके दूधकी भिन्नताके बारेमें आपने जो पूछा है, उसपर मेरा कहना यह है कि भैंसके दूधकी बनिस्बत गायके दूधकी चिकनाई और 'कैसीन' (दूधकी सफेदी) अधिक सुपाच्य होती है।

१ केवल अंश दिये जा रहे हैं।

'विटामिन' भी भसके दूधकी बनिस्बत गायके दूधमें अधिक परिमाणमें होते ह। बच्चे और बडे दोनोपर इन गुणोका एक-सा असर होता है। लेकिन जहा बडा आदमी भसके दूधको पचा सकता है, वहा बच्चा उसे हजम नहीं कर सकता। म समझता हू, यही बात आप जानना चाहते है।

गोपालक सघ, शोलापुरके उपाध्यक्ष, डा० एस० के० आप्टेकी सम्मति भी उन्हे प्राप्त हुई है, जो उनके प्रश्नोके जवाब देनेवालाके नामो ओर कुछ प्रश्नोको छोडकर नीचे दी जाती है [1]

गायका दूध भसके दूधसे अच्छा है या नही, इस सम्बन्धमे पिछले तीन सालोसे चर्चा चल रही है, जिसके फलस्वरूप गायके दूधकी उपयोगिताकी ओर लोगोका काफी ध्यान गया है। गायका दूध भसके दूधसे अच्छा है—जो लोग ऐसा दावेसे कहते ह, उन्हींपर इस बातको सिद्ध करनेकी जिम्मेदारी है। वज्ञानिक रूपमे कई प्रकारसे हम इस बातको सिद्ध कर सकते ह। ऐसे कुछ उपाय निम्न प्रकारके ह

(१) दोनो तरहके दूधोके जो सघटक पदाथ ह, उनके गुण दोषोकी तुलना की जाये। रासायनिक तौरपर हम दोनोके सघटक पदार्थोंका पौष्टिक महत्व जान सकते ह। पूना कृषि कालेजके प्रो० रावबहादुर डी० एल० सहस्र-बुद्धेने ऐसा प्रयोग किया है, जिसका वणन ११-९-१९३४ के 'ध्यानप्रकाश' में प्रकाशित हुआ है। इसमे उन्होंने न केवल यही बताया है कि छोटे बच्चोकी परवरिशके लिए गायका दूध बहुत फायदेमन्द है, बल्कि यह भी स्पष्ट कर दिया है कि भसका दूध वस्तुत उनके लिए हानिकारक है ।

(२) लडको या आदमियोके दो बराबर-बराबर समूह बनाये जायें। उनमें से एक को सेर-भरके करीब गायका दूध दिया जाये और दूसरेको उतना ही भसका दूध। एक निश्चित अवधितक यह क्रम रखकर दोनो समूहोके हरेक व्यक्तिकी शारीरिक, मानसिक एव बौद्धिक प्रगतिको दज करते रहो। शोलापुरके गोपालक-सघने 'होडस डेयरीमन' से यह दर्याफ्त किया है कि हिन्दुस्तानके अलावा और कौन देश ऐसे ह जहाँ भसका दूध घी खाया जाता है। उससे मालूम पडता है कि भसके दूधका उपयोग हिन्दुस्तानके अलावा सिफ फिलिपाइन द्वीप-समूह और चीनके दक्षिणी हिस्सेमें होता है। इसलिए हिन्दुस्तानके अलावा, और कहीं इस तरहका प्रयोग होना सम्भव नहीं है। यह प्रयोग किसी छात्रावासमें रहनेवाले विद्यार्थियोपर करना होगा।

(३) मनुष्योपर तो ऐसा तुलनात्मक प्रयोग करना बडे भारी खर्चेकी बात है। लेकिन पशुओपर, खासकर प्रयोगशालाओमे रखे जानेवाले चूहो व

१ केवल अश दिये जा रहे है।

सुअरोपर ऐसी आजमाइश की जा सकती है। चूकि गोपालक सघके पास ऐसे प्रयोगका कोई सामान नही है, इसलिए उसने कून्रके गवनमेंट पासच्यूर इस्टीटयूटको ऐसा प्रयोग करनेके लिए लिखा था, लेकिन वहाके अधिकारियोका जवाब अभीतक प्राप्त नहीं हुआ है।

(४) गोपालक सघने इसके लिए एक चौथे और सबसे आसान मागका सहारा लिया। गाय और भैसके दूधके बारेमें, कोई छ महीने पहले, उसने एक प्रश्नावली तयार की और भारत तथा विदेशोके सरकारी चिकित्सा एव स्वास्थ्य विभागके अधिकारियो, समाचार तथा मासिक पत्रो, शोध-विशेषज्ञो, शरीरशास्त्रियो तथा विविध डाक्टरोके पास उसे जवाबके लिए भेजा। मराठी व अग्रेजीमें इस प्रश्नावलीकी कोई सात सौ प्रतिया इधर उधर भेजी गई।

कुल ५० के करीब जवाब अभीतक प्राप्त हुए ह।

उन जवाबोके आधारपर जो परिणाम निकलते हैं वे निम्न प्रकार है

१ भैसका दूध बच्चोकी वद्धिके लिए हानिकर है, मा के दूधके अभावमें सिफ गायका दूध ही उनके लिए उपयोगी हो सकता है।

२ गायका दूध आसानीसे पच जानेवाला होनेके कारण, भसके दूधकी बनिस्बत, बीमारके लिए ज्यादा फायदेमन्द है।

३ बडोके लिए भैसका दूध किस प्रकार हानिकर है, इस बातका कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता। पर बम्बई सरकारके पशु विशेषज्ञ श्री ब्रूनका कहना है कि किसी भी उम्रवालेके लिए भैसका दूध पचनेमें भारी होता है, क्योकि भसके दूधमें जो अधिक चिकनाई होती है वह झाग बनकर आँतोमें प्रवेश करती है। उस समय, आँतोमें साधारणत जो लवण होता है उसके सहारे, आँतोको उसको हजम करना मुश्किल होता है। तब, उसे पचानेके लिए जितने लवणकी कमी होती है, उसकी पूर्ति हड्डियोके खनिज लवणसे की जाती है जिससे हड्डियाँ कमजोर पड जाती ह। गायके दूधके पचनेमें ऐसा नहीं होता।

४ बच्चोके बौद्धिक विकासके लिए गायका दूध खास तौरपर उपयोगी है। बडोके बौद्धिक विकासपर उसका असर ज्यादा अच्छा होता है या नहीं, इस बारेमें निश्चित रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता।

५ शहरमें भस रखनेके बजाय, अगर गायें रखी जायें तो खच कम पडेगा और स्वास्थ्यकी दृष्टिसे उस शहर पर उसका अच्छा असर होगा।

डॉ० आप्टेने जो प्रयोग सुझाया है वह करनेके काबिल है। गाय और भैंसके दूधमे तुलनात्मक दृष्टिसे कौन अच्छा है, यह प्रश्न अनेक दष्टिकोणोसे राष्ट्रीय महत्व रखता है। क्योकि भारतके राष्ट्रीय जीवनमे इन पशुओकी जैसी महत्वपूण भूमिका है, वैसी ससारके और किसी देशमे नही है।

लेकिन और प्रयोग न भी किये जाये तो भी, डा० आप्टेने प्रमुख डॉक्टरो और पशु-विशेषज्ञोकी जो सम्मतिया एकत्र की है, वे इस बातको पर्याप्त रूपसे सिद्ध करती है कि गायका दूध भैंसके दूधसे अच्छा होता है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २२-२-१९३५

३४२ कार्यवाही अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघकी

१ से ४ फरवरी तक वर्धामे प्रबन्ध-मण्डलकी जो बैठक हुई, उसकी कार्यवाही का साराश[1] निम्नलिखित है। इसमे सविधान-सम्बन्धी महत्वपूर्ण सशोधन भी शामिल है। अनुच्छेदके आगे दर्शाये अक सविधानके भागोको सूचित करते है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २२-२-१९३५

३४३ पत्र भगवानजी पु० पण्ड्याको

२२ फरवरी, १९३५

चि० भगवानजी,

अपने भोजनमे पत्तीदार सब्जियोकी मात्रा बढा दो और देखो कि उनका क्या असर होता है। मेथी, पालक, श्वेत बथुआ या कुल्फेका शाक इस्तेमाल करो। मूलीके साथ उसके पत्ते भी खाये जा सकते है, गाजरके भी। मूलीसे कब्ज हो सकता है। मगर उसकी पत्तिया रेचनके लिए अच्छी मानी जाती है।

बडजमे लोगोसे मेल जोल बढाकर जो-कुछ भी किया जा सकता है, करो। इसके लिए बडा धीरज चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

श्री भगवानजी
हरिजन-आश्रम
साबरमती, बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३७५) से, सौजन्य भगवानजी पु० पण्ड्या।

१ साराशके लिए देखिए परिशिष्ट–१।

३४४ भाषण रसोई-सभा, वर्धामे[१]

[२२ फरवरी, १९३५][२]

मैने जीवनमे रसोइयेका काम सदा किया है। मैने भोजनके बारेमे प्रयोग ता लन्दनके अपने छात्र जीवनसे ही शुरू कर दिये थे। दक्षिण आफ्रिकामे जितने दिन रहा, रसोई बनाता रहा और आप कुछ लोगोको मालूम ही है कि साबरमतीमे मुझ रसोईका कितना काम करना पडता था। अब हमने एक ऐसी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है जैसी पहले कभी नही ली थी। हमे आदश ग्रामवासी बनना है, ऐसा ग्राम वासी नही जिसके अजीब विचार हो, सफाईके बारेमे जिसे कोई जानकारी न हो और जो क्या खाना चाहिए, कैसे खाना चाहिये इस बारेमे कुछ भी सोच विचार नही करता हो। हमे अधिकाश ग्रामवासियोकी तरह चाहे जैसे पका-खाकर काम नही चलाना चाहिए। हमे चाहिए कि हम उन्हे आदश खुराकके बारेमे बताये। हमे क्या पसन्द है और क्या नापसन्द सिफ यही नही देखना चाहिए, बल्कि उस पसन्दगी या नापसन्दगीकी जड मे क्या चीज है, यह भी समझ लेना चाहिए। मुझे यह खुराक माफिक नही आती, यह कहकर ही सन्तोष मत कर लो, बल्कि यह समझनकी कोशिश करो कि खुराक माफिक क्यो नही आई। कोई चीज़ पसन्द आती है या नही, यह इस बातपर निभर करेगा कि आदश ग्रामीण जीवनका किस तरहका रूप हमने अपने सामने रखा है। हम जानते है कि ग्रामवासियोमे से अधिकतर भोजनमे गेहूँ, ज्वार, बाजरा अथवा चावल-दाल लेते है, लेकिन वे लोग हरे शाक या अन्य सब्जियोंका इस्तेमाल नही करते। हमे उन्हे बताना होगा कि वे हरी शाक-सब्जियाँ बिना खचके खुद ही पैदा कर सकते है और उनका इस्तेमाल करके अपना स्वास्थ्य सुधार सकते है। हमे उन्हे यह भी बताना होगा कि उबालनेसे हरे पत्तोके अधिकतर विटामिन नष्ट हो जाते है। इस बातको मेरी सनक न समझे। मै तो सिफ उसी बातको जोर देकर दोहरा रहा हूँ जिसे सब डॉक्टर लोग कहते आ रहे है। मै आप सबसे वही करनेको कह रहा हूँ जिसपर अमल करके दूसरे सैकडो लोगोने फायदा उठाया है। इसलिए अगर आप मेरी इस रायसे सहमत है कि गावके लोगोको

१ महादेव देसाईके वीकली नोट्स (साप्ताहिक टिप्पणियाँ) से उद्धृत। यह सभा आश्रमके भोजनमें किये गये परिवर्तनोपर विचार करनेक लिए आयोजित की गइ थी। इसमें मसालोंपर पूरी रोक लगानेके साथ पकाई गई सब्जियोंके स्थानपर दिनमें कमसे कम एक बार पत्तियोंवाले सागका सलाद परोसा जाना निश्चित हुआ था, इसके अलावा और भी कई सुझावोंपर विचार किया गया था।

२ महादेव देसाईके अनुसार, यह सभा गांधीजी क नागपुर प्रस्थानस पूव शामक समय हुई थी। वे २३ फरवरीको नागपुरमें थे।

हरी सब्जियोंका इस्तेमाल बिना उबाले उनके कच्चे रूपमें ही करना चाहिए और धानका छिलका भर हटाकर, चावलको बिना कूटे और बिना पालिश किये खाना चाहिए, तो आप खुद वैसा करके लोगोंके सामने मिसाल रखें। इसके साथ साथ हम यह भी याद रखें कि हमें उन्हें यह भी दिखाना है कि खानेकी चीजोंपर कमसे-कम खर्च करके तन्दुरुस्तीके खयालसे अधिकसे अधिक फायदा किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है। हमें उनको यह सीख देनी होगी कि बचतके साथ साथ वे स्वस्थ कैसे रह सकते हैं। हमें उनको यह भी सीख देनी होगी कि वे किस प्रकार समय, सेहत और सम्पदाको व्यवस्थित रखें। आप सब मेरे साथ सहमत हो जायें तो खानेकी यह सूची और भी सादी बनाई जा सकती है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप सोच-समझकर मेरी बात मानें, मैं यह भी चाहता हूँ कि आप लोग यह महसूस करें कि हम जो-कुछ कर रहे हैं, वह हमारा कर्त्तव्य है। हमें ग्रामोद्योग संघका काम करनेवाले योग्य कार्यकर्त्ताओंकी जरूरत है। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने आसपासके इलाकेके लिए खुद एजेंट बनें। लियोनेल कर्टिसने हमारे गाँवोंको गोबरका ढेर कहा है। हमें चाहिए कि हम उन गाँवोंको आदर्श गाँव बना दें। हमारे गाँवोंके लोगोंको ताजी हवा नहीं मिलती, हालांकि वे ताजी हवासे घिरे हुए हैं, उन्हें ताजा भोजन नहीं मिलता जबकि उनके चारों ओर ताजे खाद्य पदार्थ मौजूद हैं। भोजनके सम्बन्धमें मैं किसी कट्टर धर्म प्रचारककी तरह बातें कर रहा हूँ, क्योंकि मेरा उद्देश्य गाँवोंको देखने लायक बना देना है। हम जो-कुछ भी करते हैं, एक मकसद बनाकर करें। मजाकमें भी एक खास मकसद छुपा रहता है। जमनालालजीने मीरा बहनको मोटर-गाडीमें बैठ गाँवोंमें घूमते देखकर हँसकर कहा था कि आप शायद गाँवोंका मुआयना कर रही हैं। अवश्य ही, इसमें हमारे जीवनकी विचित्र असंगतियोंकी ओर इशारा छुपा हुआ था। लोग अपनी खुदकी जिन्दगीमें तो असंगतियोंको दरगुजर कर सकते हैं, लेकिन याद रखो कि वे हमारे जीवनकी असंगतियोंको कभी दरगुजर नहीं करेंगे, क्योंकि हम अपनेको उनका सेवक कहते हैं।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १-३-१९३५

३४५ भाषण इतवारी खादी-भण्डार, नागपुरमें

२३ फरवरी, १९३५

नागपुरमें तीसरे खादी भण्डारका उदघाटन करते हुए महात्माजीने यह आशा व्यक्त की कि जनताने जिस प्रकार पहले खोले गये दो भण्डारोका स्वागत किया है, उसी प्रकार वह इस नये भडारको भी अपनाकर उसकी उन्नतिमें अपना सहयोग देगी। उन्होने कहा

यह मत समझिये कि इस भण्डारके खुल जानेसे ही मैं गद्गद् हो जाऊँगा, या इसीसे मेरी उम्मीदें पूरी हो गई है। मेरी मनोकामना तो तभी पूरी होगी जब नागपुरमे रहनेवाले प्रत्येक व्यक्तिके तनपर खादी होगी और जब नागपुरके हर घरमे खादीके सिवा और किसी भी प्रकारके कपडेका टुकडा नही मिलेगा।

गाधीजी ने आगे बोलते हुए कहा कि खादी ग्रामीण जनताकी सहायताका प्रमुख आधार है और प्रत्येक व्यक्तिका यह फर्ज है कि वह उसकी सहायता करे। ग्रामीण जनताकी सहायता करनेका एक ही रास्ता है और वह यह कि इतने लोग खादी पहनें कि नागपुरमें जगह-जगह खादी भण्डार खुल जायें। उन्होने उम्मीद जाहिर की कि वह दिन दूर नहीं जब नागपुरके हर हिस्सेमें खादी-भण्डार खुल जायेंगे। अपन भाषणको समाप्त करते हुए उन्होने श्रोताओमे आग्रह किया कि उनके चले जानेपर भी वे रुके रहे और नये खोले गये खादी-भण्डारसे खादी खरीदें।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, २४-२-१९३५

३४६ भाषण सीताबल्डी खादी-भण्डार, नागपुरके उद्घाटनपर

२३ फरवरी, १९३५

महात्मा गाधीने भण्डारके नव-निर्मित भवनके उदघाटनके समय कहा कि श्री अभयकरके दिवगत होनेके बाद मै पहली बार नागपुर आया हूँ, इसलिए उनके सम्बन्ध में दो शब्द कहना मेरा फर्ज है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है कि उनकी मृत्युसे मने अपना एक सम्बन्धी खो दिया है। नागपुर काग्रेस-कमेटी द्वारा उनकी यादगारमें एक स्मारक बनानेका फसला करना उचित ही है। मुझे पूरी उम्मीद है कि स्मारकके लिए इकट्ठा किये जा रहे कोषमें प्रत्येक आदमी दान देगा।

उन्होंने स्मारक-निर्माण समितिसे भी कहा कि जिस कामको करनेकी जिम्मेदारी उठाई गई है, वह उसे जितनी जल्दी हो सके पूरा करे। उन्होंने नागपुर-नगरपालिका को नाम मात्रके किरायेपर भूमि देनेके लिए धन्यवाद दिया और यह इच्छा प्रकट की कि केवल उसके सदस्य ही नहीं, बल्कि कर्मचारी भी खादी पहनने लगें। उन्होंने श्रोताओंको याद दिलाया कि सीताबल्डीके खादी-भण्डारमें महाराष्ट्र द्वारा तैयार की गई खादी बेची जाती है जो कि अपनी कीमत, टिकाऊपन तथा श्रेष्ठताके कारण उच्च स्तरकी मानी जाती है।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, २४-२-१९३५

३४७. भाषण: ग्राम-सेवक सभा, नागपुरमें[1]

[२३ फरवरी, १९३५]

मैं ईसाकी इस शिक्षाकी आपको पुनः याद दिलाना चाहता हूँ कि आप स्वराजकी माँग केवल अपने लिए ही नहीं, बल्कि अपने पड़ोसियोंके लिए भी करते हैं। यह सिद्धान्त अध्यात्म अथवा दर्शनकी तरह कठिन नहीं है कि आसानीसे समझमें न आये। अगर आप अपने पड़ोसीको आत्मीय भावसे चाहेंगे तो वह भी आपको उसी तरह प्यार करेगा।

गाँवमें कार्य करनेवाले कार्यकर्त्ताके सामने दिक्कतें आती हैं, यह तो ठीक है,[2] पर हमें उन दिक्कतोंको दूर करनेकी कोशिश करनी होगी। हमें गाँवोंकी कमियों और खराबियोंकी फिक्र न करते हुए सच्चा ग्रामवासी बनना चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि सच्चा ग्रामवासी बन जानेपर ईमानदार मजदूरकी तरह हमें अपनी रोजी कमानेमें कोई दिक्कत नहीं होगी। लेकिन कोई भी व्यक्ति मेरे पास आकर यह न कहे कि "मेरी माँ है, तीन विधवा बहनें हैं, एक भाई है जिसे कानूनकी पढ़ाईके लिए इंग्लैंड भेजना है, दूसरा भाई म्योर कॉलेजमें पढ़ रहा है और तीसरेको 'इंडियन सैण्डहर्स्ट' भेजना है।" अवश्य ही, गाँवमें काम करनेवाला इस तरहका 'जीवन निर्वाह' नहीं कर सकता! उसके घरमें अगर सभी लोग किसी किसान-परिवारकी तरह काम करें तो वे गुजारेके योग्य पर्याप्त पैसा कमा लेंगे।

पूँजी और श्रमके बीच अपने अपने लाभके लिए संघर्ष चल रहा है लेकिन हमें तो इस समस्याको अपना कर्त्तव्य-पालन करते हुए हल करना है। जिस तरह शुद्ध रक्त विषैले रोगाणुओंसे हमारी रक्षा करनेमें समर्थ होता है, उसी तरह अगर

१. महादेव देसाईके 'वीकली नोट्स' (साप्ताहिक टिप्पणियाँ) से उद्धृत। यह सभा गणपतराव टिकेकरके निवास स्थानपर हुई थी।

२. एक कार्यकर्त्ताने कहा था कि उसे गाँवमें एक ग्रामीणकी तरह जीवन व्यतीत करनेमें बहुत दिक्कत पेश आती है और वहाँ उसका गुजारा भी मुश्किलसे ही हो पाता है।

श्रम सच्चा है, तो वह हमे शोषित बननेसे बचाता है। श्रमिकको सिर्फ इतना ही महसूस करना है कि श्रम भी पूजी ही है। श्रमिकोके समझदार और सगठित होते ही और उन्हे अपनी ताकतका अनुमान होते ही, पूजी, चाहे कितनी ताकतवर क्यो न हो, उसे दबा नही सकेगी। सगठित और सजग श्रमिक तब अपनी शर्ते मनवानेमे कामयाब हो जायेगा। हम कमजोर है, इसलिए हमे हिसासे ग्रस्त होकर किसी पक्षको धमकिया देनेसे कोई फायदा नही होगा। हमे खुदको मजबूत बनाना चाहिए। मजबूत दिल, खुले दिमाग और पक्के इरादेवाले आदमीके हाथोम अपनी सब कठिनाइयो और रुकावटोको परे धकेल देनेकी ताकत होती है। फिर "अपने पडोसीको अपने ही समान प्रेम करो"——परिपूर्ण सत्परामर्श नही होगा, क्योकि पूजीपति भी श्रमिकका उसी प्रकार पडोसी है जिस प्रकार श्रमिक पूजीपतिका। इन्हे एक-दूसरेका सहयोग अवश्य प्राप्त करना चाहिए। इस सिद्धान्तका यह भी मतलब नही है कि हम अपना शोषण होते रहने दे। हमारी आन्तरिक शक्ति हमारे हर तरहके शोषणको रोकेगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १-३-१९३५

३४८ भाषण सार्वजनिक सभा, नागपुरमे[1]

२३ फरवरी, १९३५

गाधीजी ने स्व० श्री अभयकरको भावभरी श्रद्धाजलि देते हुए कहा कि कार्यकर्त्ताओको जल्दीसे जल्दी दिवगत नेताके स्मारकके योग्य कोष इकट्ठा कर दिखाना चाहिए। उन्होने कहा कि अभीतक यह निश्चय नहीं हो पाया है कि स्मारकका क्या रूप होगा, तथापि उन्होने बताया

आजके युगमे नाममात्रके स्मारकसे काम नही चल सकता। स्मारक ऐसा होना चाहिए जो उसपर खर्च किये गये पैसेसे दस गुनी रकम पैदा करके दे सके। उससे केवल भावनाकी ही नही, नगर और देशकी आवश्यकताकी पूर्ति भी हो सकनी चाहिए।

हरिजन-यात्राके दौरान उडीसामें घूमते हुए मेरे सामने यह बात साफ हुई कि यदि खादीको सब जगह फैलाना है तो ग्रामोद्योगोका पुनरुत्थान किया ही जाना चाहिए।

रेलगाडी या मोटरगाडीसे यात्रा करनेपर मुझे इसकी प्रतीति नही हो सकती थी। जैसा कि स्व० मधुसूदन दासने कहा कि हमारे ग्रामवासी उन पशुओ-जैसे ही बनते चले जा रहे हैं जिनके साथ वे रहते है और काम करते हैं। उन्हे अपने समयका

१ महादेव देसाईके 'वीकली नोट्स' (साप्ताहिक टिप्पणियाँ) से उद्धृत। यह सार्वजनिक सभा श्रीमती कालेकी अध्यक्षतामें चिटनिस पार्कमें हुई थी।

बहुत सा भाग विवश होकर बेकार बैठकर काटना पडता है। इसीके परिणामस्वरूप वे जड बनते चले जा रहे है। यदि यही हालत बनी रही तो भारतकी स्थितिमे स्वतन्त्रतासे भी कोई सुधार सम्भव नही होगा। इसलिए मैने सकल्प किया कि मुझे अब, अपने जीवनकी सध्यामे ही क्यो न हो, इस जडताको दूर करनेमे जुट जाना चाहिए। यह बात शेखी बघारने सरीखी लग सकती है, किन्तु मेरा दृढ विश्वास है कि जो आदमी पूरी श्रद्धाके साथ भगवानका नाम लेकर कोई काम हाथमे लेता है तो चाहे वह उसके अन्तिम दिनोमे ही क्यो न हो, उसका प्रयास व्यर्थ नही जाता। मुझे विश्वास है कि मैने जो काम उठाया है, वह मेरा नही है भगवानका है।

अर्थशास्त्रके सिद्धान्त गणितकी तरह देश-काल निरपेक्ष नही होते। ये प्रत्येक देशकी अपनी परिस्थितिका अनुसरण करते है। फ्रास, जर्मनी इग्लैड और अमेरिकाके अर्थशास्त्रके सिद्धान्त एक जैसे नही है। इनमे से कोई भी एक देश दूसरे देशके अर्थ-शास्त्रको नही अपनायेगा। अपनाना उसकी भूल होगी। जो देश अन्न उपजानेके बजाय खनिज-भर निकालता है, उसका अर्थशास्त्र उस देशके अर्थशास्त्रसे भिन्न होगा जो अन्न उपजाता है और खनिज नही निकालता। इसलिए भारत, फ्रास, इग्लड अमेरिका अथवा जर्मनीमे प्रचलित आर्थिक पद्धतिका अनुसरण नही कर सकता। भारत कभी स्वर्णभूमि थी, इसका यह अर्थ नही है कि हमारे यहा सोने चादीकी बहुत सी खाने थी। हमारे पास भरपूर कला थी। हम श्रेष्ठ कपडा बनाते थे और ऐसे बहुमूल्य मसाले पैदा करते थे जिन्हे दुनिया सोना दे-देकर खरीदती थी। हम आज अपना वह गौरवास्पद स्थान खो चुके है और दूसरोके मोहताज होकर उनकी मजदूरी करके जी रहे है। किन्तु यदि हम चाहे तो आज भी हमारे वे पुराने दिन लौट सकते है, क्योकि हमारे पास जबरदस्त प्राकृतिक साधन है, और चीनके सिवा दुनियाके किसी भी देशमे हमारी तरह जीवित यन्त्रोका बाहुल्य नही है। सोचना चाहिए कि जिस देशमे करोडो जीवित मशीने हो वह किसी ऐसी मशीनका उपयोग कैसे कर सकता है जो इन करोडो जीवित यन्त्रोको बेकार कर दे। वह तो इनकी बेकारी और नाशका साधन बन जायेगी। आज हमारे देशमे जो करोडो मानव यन्त्र निठल्ले पडे है, हमे उन्हे सोच-समझकर काम करनेवाली मशीने बनाना चाहिए। और यह तभी हो सकता है जब हमारे नगर यह निश्चित कर ले कि हम जीवनकी तमाम आवश्यकताओके लिए गाँवो पर ही निर्भर करेगे — यह अन्य किसी प्रकारसे नही हो सकता। हमने गाँवके प्रति बडा अन्याय किया है और इसके प्रायश्चित्तका केवल यही उपाय है कि उनके जो उद्योग-धन्धे और हस्त कौशल नष्ट हो गये है उनके लिए बाजार प्रस्तुत करके हम उनमे जीवनका सचार करे और प्रोत्साहन दे। भगवानसे अधिक धैर्यशाली और क्षमाशील कोई नही है, किन्तु उसके धैर्य और क्षमाशीलताकी भी सीमा होती है। यदि हम गावोके प्रति अपने कर्त्तव्यकी अवहेलना करते रहे तो हम अपने नाशको आमन्त्रित करेगे। यह कोई बडा कठिन कर्त्तव्य नही है। यह तो बडी ही सरल बात है। हमे अपने मनको ग्रामाभिमुख बनाना चाहिए और अपने तथा अपने परिवारकी आवश्यकताओके बारेमे गावोकी बात मनमे रखकर ही विचार करना चाहिए। इसके

लिए किसी बडे खचकी जरूरत भी नही है। इतना ही करना है कि स्वयसेवक पासके गावोमे जाये और उनसे कहे कि वे जो-कुछ बनायेगे उसे हम शहर और नगरके निवासी खुशी खुशी खरीदेगे। यह एक ऐसा काम है जिसे सभी दलो और धर्मोके स्त्री-पुरुष हाथमे ले सकते है। यह हमारे देशके सच्चे अथशास्त्रके अनुरूप भी है। अभी इस बातकी बारीकीमे जानेका समय नही है — यदि आप लोग इस विषयका भली-भाति ज्ञान कर लेना चाहते है तो आप लोग हर हफ्ते 'हरिजन' अथवा 'हरिजन सेवक' पढे।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १ ३ १९३५

३४९ कुटा बनाम अनकुटा चावल

जिस चावलके सिफ छिलके ही निकाले गये हो उसे अनकुटा और जिसके दाने परका कुछ थोडा भाग भी निकाल डाला गया हो उसे कुटा कहते है। साधारणतया गुजरातमे कुटा चावल ज्यादा खाया जाता है। लेकिन डाक्टरोकी राय है कि अनकुटा चावल ही खाना चाहिए क्योकि कुटा सत्त्वहीन होता है। एक डॉक्टरका तो मत है कि आजकल कब्जकी जो आम शिकायत है उसका एक कारण हमारे यहा कुटा चावल खाया जाना है। वह अपने मरीजोका कब्ज सदा अनकुटा चावल खिलाकर ही दूर करते है। लेकिन चावल खानेवाले केवल डाक्टरोकी सम्मतिपर कुटा चावल खानेकी अपनी खराब आदतको छोडनेवाले नही है। उन्हे तो इसके लिए अपने तथा दूसरोके अनुभवोकी जरूरत पडेगी। होना भी यही चाहिए। जिसका अपना अनुभव किसी सलाहके विपरीत हो, उसके लिए कोई सलाह निरथक ही है। इसीलिए जो लोग इससे सम्बन्धित प्रयोग कर रहे है, उनके अनुभवोको मै इकटठा कर रहा हूँ। इसमे जो सबसे अच्छा प्रयोग मेरे देखनेमे आया, वह श्री शकरलाल बैंकरका है। उसका गत अकमे उल्लेख[1] किया जा चुका है।

श्री बैंकरने लिखा है कि अगर जरूरत हो तो यह सिद्ध करनवाले डॉक्टरी मत प्राप्त किये जाये कि अनकुटा चावल हाजमेको नुकसान पहुँचानेवाला है। लेकिन यह अनावश्यक है। डाक्टर मात्र एक स्वरसे कहते ह कि अनकुटा चावल ही खाना चाहिए, लेकिन यह उनकी अनुभूत बात नही है। अनुभव या तो अपना खुदका हो, या अपने मरीजोका। लेकिन ऐसे अनुभव उनके पाससे कम ही मिले ह। इसलिए अनुभव तो चावल खानेवालोके ही मिले तो अच्छा होगा।

प्रयोग करनेवालेको इतना याद रखना चाहिए कि अनकुटे चावलमे सब पौष्टिक तत्व मौजूद रहनेके कारण उसे अच्छी तरह राधना चाहिए। दाना-दाना खिला रखनकी आदत छोडनी चाहिए। ऐसा चावल देखनेमे भले ही अच्छा लगे, पर उसमे मिठास

१ देखिए 'चावलके बारेमें' पृ० २५३ ५४।

नही होती। वर्धामे ग्रामोद्योग सघके दफ्तरमे अनकुटा चावल राधा जाता है। सब स्वादके साथ उसे खाते है, लेकिन वह बिलकुल सफेद दिखनवाले कुटे चावल जितना नही खाया जा सकता। थोडा खानेमे ही स्वाद और सतोष मिल जाता है। अथ-लाभ तो प्रत्यक्ष ही दोगुना है। दलना सहज है, इसलिए उसकी मजदूरी बहुत कम होती है। कूटने फटकनेमे मेहनत व होशियारी ज्यादा होनी चाहिए, इसलिए उसकी मजदूरी भी ज्यादा पडती है। लेकिन ज्यादासे ज्यादा लाभ तो थोडे परिमाणमे अनकुटा चावल खानेमे और इस तरह अधिक शक्ति और सतोष प्राप्त करनेमे ही है। मिलमे कुटा चावल इस लाभकी बराबरी कभी नही कर सकता। और खाली दलनेके लिए कोई मिल रख भी नही सकता। इससे पूरा ही नही पडेगा। प्रयोग करनेवाले नीचे लिखे नियमोका पालन करे, तभी उनके प्रयोग शुद्ध माने जायेगे और वे सफल हुए बिना भी नही रहेगे

१ धानमे से सिफ छिलकेको ही निकाला जाये। उसे कूटा बिलकुल न जाये।

२ इस अनकुटे चावलको साफ करके और कूडा-कचरा अलग करके कई बार साफ ठण्डे पानीमे धोया जाये। धोनेमे उन्हे बहुत रगडा या मला न जाये, क्योकि ऐसा करनेसे उनके ऊपरका कुछ न कुछ सत्व जरूर निकल जायेगा।

३ धोये हुए चावलको तीन घटे तक ठण्डे पानीमे भिगोया जाये। पानी थोडा ही लेना चाहिए।

धोये हुए चावलको धोवनके साथ खौलते हुए अदहनमे डालकर मन्दी आगपर राधा जाये, और जब वह पककर एकरस हो जाये, तब उतार लिया जाये। अगर पानी ज्यादा भी पड जाये तो उसे निकाला न जाये, बल्कि जज्ब होने दिया जाये। अगली बार अन्दाजसे पानी रखे।

प्रयोग करनेवालोसे प्राथना है कि अपने अनुभवोको मेरे पास भजे।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २४-२-१९३५

३५० पत्र गोसीबहन कैप्टेनको

वर्धा
२४ फरवरी, १९३५

प्रिय बहन,[१]

तुम्हारा पत्र मिला। जब भी तुम चाहो और आ सको आ जाओ। यदि यहाँ आनेतक तुम प्रतीक्षा कर सको, तो मैं सविधानके सम्बन्धमे अपना विचार अभी स्थगित रखना चाहूँगा। इसमे कुछ सशोधनोकी आवश्यकता पडेगी। शूरजीभाईका पत्र लौटा रहा हूँ। मैं इसका अर्थ वह नही लगाता जो तुम लगा रही हो। पढने पर यह नुकसान पहुँचानेवाला बिलकुल नही लगता। किसी भी रूपमे यह तुम्हारी पहलकदमी या जिम्मेदारीमे हस्तक्षेप नही करता। उनकी सेवाएँ स्वीकार करनेपर भी गलती करनेके तुम्हारे सहज अधिकारमे कोई फर्क नही पडता। मेरे विचारमे उनका यह कहना बिलकुल ठीक है कि उनके अशदान देनेका कोई प्रश्न ही नही था। तुम कच्छ कैमलमे एक या कुछ कमरे चाहती थी। उन्होने दूसरी जगह कमरे ढूढनेकी बात कही और साथ ही तुम्हे ऐसी चीजे देनेको कहा जो तुम लेना चाहो। तुम्हारी गतिविधियोको किसी भी तरह नियन्त्रित करनेका कोई प्रश्न ही नही था। तुम उनकी चीजोकी थोक-खरीदार हो सकती हो, या उनकी ओरसे चीजोको कमीशनपर बेच सकती हो, या उनसे पूरी तरह स्वतन्त्र रहकर अपनी ही दूकान चला सकती हो। दूकान चलानेका और कोई तीसरा तरीका नही है। तुम उनका प्रस्ताव स्वीकार करना और उनकी सेवाएँ लेना न चाहो, यह बिलकुल दूसरी ही बात है। लेकिन यह बात उनके पत्रसे नही उठती। उन्होने अपने पत्रमे जो दष्टिकोण अपनाया है उसका औचित्य तुम्हे एक ही क्षेत्रमें काम करनेवाले सहकर्मीके नाते तथा प्रबन्ध-समितिके सह-सदस्यके नाते मानना चाहिए। भोजनके रूपमे सोयाबीनकी उपयोगिता क्या है, इस जानकारीकी मैं बडी आशासे प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

गोसीबहन
बम्बई

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ सम्बोधन गुजराती लिपिमें है।

३५१ पत्र जयरामदास जयवर्धनेको

२४ फरवरी, १९३५

प्रिय जयरामदास,

अभी अभी आपके दो पत्र मिले। मैं तुरन्त ही जवाब देने बैठ गया हूँ। यद्यपि आपके पत्र लम्बे है, फिर भी मुझे जिस सूचनाकी आवश्यकता थी वह उनमे नही है। कितने व्यक्ति प्रभावित हुए है? वे कौन लोग है? जो प्राइवेट सस्था वहाँ काम कर रही है वह कौन सी है? उसने कितना चदा इकटठा किया है? आप कैसी मदद चाहते है — व्यक्तियोकी, धनकी, या दोनो प्रकारकी? यदि प्राइवेट सस्थाएँ वहा है तो उनकी समितियोके नाम बताये तथा यह भी बताये कि उन्होने कितना चन्दा इकटठा किया है। क्या बीमारी अभी भी महामारीके रूपमे जारी है? मृत्यु-दर क्या है? आपको जब बाहरी मददकी जरूरत महसूस हुई तभी आपने मुझे क्यो नही लिखा?

श्रीयुत जयरामदास
परोपकार मण्डालय
९२ साडस प्लेस, पेल्टा (कोलम्बो)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३५२ पत्र अम्बुजम्मालको

२४ फरवरी, १९३५

चि० अम्बुजम,[१]

तुम्हारे दो पत्र मिले। बादाम भी मिले। बादामके बारेमे बादमे लिखूगा। मुझे खुशी है कि तुम बगलौर वापस जा रही हो। मैंने वसुमतीको बता दिया है कि अभी कमसे-कम कुछ समयके लिए मद्रासमे उसकी जरूरत नही है।

स्नेह।

बापू

१ यह हिंदीमें है।

[पुनश्च]

मीरा तथा अय सब लोग बिलकुल ठीक हैं। वे लोग आश्चयजनक ढगसे बच गये।

[अंग्रेजीसे]

अम्बुजम्माल-कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

३५३ पुर्जा रामेश्वरदास पोद्दारको

२४ फरवरी, १९३५

हमको किसीको पापी माननेका अधिकार नही है, क्योकि हम सब दोषसे भरे हुए है। जिसको हम अपनेसे ज्यादा पापी मानते है वह सचमुच ऐसा ही है, एसा माननेका हमारे पास न कारण है न साधन है। एक पैसा चोरनेवाला एक व्यभिचारीसे अधिक पापी हो सकता है। सभव है कि पैसे चोरनेवालेने जान बूझकर चोरी की है और व्यभिचारीने अपनेको रोकनेका बडा प्रयत्न किया तो भी वह अपनेको रोक न सका। इसके शुभ प्रयत्नका किसको ज्ञान हो सकता है? मनुष्यका हृदयको तो सिफ भगवान हि जानता है। इसलिये हम किसीके पापकी तुलना न करे, लेकिन क्षमावत्ति बढाते रहे। यह अहिसा धमका एक लक्ष्य है।

मो० क० गाधी

[पुनश्च]

यह तो कुछ लिख दिया है इसलिये है सबके लिये यह बात सच है।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९१) से।

३५४. पत्र अमतुस्सलामको

वर्धा
२५ फरवरी, १९३५

प्यारी बेटी अमतुलसलाम,

तुमारा खत आया था। तार देने जैसा कुछ नही था और मेरे तारका वजन कहा रहा है? मेरी बात सुनना चाहती है तो

(१) मेरे पास आ जाओ या
(२) बम्बई जाओ या
(३) इदोर जाओ या
(४) पतीयाला

और किसी जगह जाना या रहना गुनाह समजा जाय। फिर तो जैसा दिल चाहे ऐसा करो। मैं तुमको क्या कह या कर सकता हू?

खुदा ही तेरी देखभाल करेगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१८) से।

३५५ पत्र ना० र० मलकानीको

२५ फरवरी, १९३५

प्रिय मलकानी,

मैंने दियालदासको पत्र[1] लिख दिया है। यह पत्र मैंने दिल्ली रवाना होते समय गाडीमें लिखा था।

'हैड क्वाटर'से आज्ञा मिल चुकनेके बाद इस तरह की कार्यवाहियां क्यों हो रही हैं?

अगर भवन-निर्माणके कार्यको समाप्त होनेमें एक माहसे अधिक लगे तो तुम ब्रजकिशनको वहां अधिक मत रोकना। आज जो परिस्थिति है उसमें उसका तुरंत जाना सम्भव नहीं है।

मान लो कि एक आदमी बिस्तरपर पडा हुआ है, उसके दूसरे सारे सम्बन्धी रूढिवादी है, वह हरिजन-कोषमें पैसा देनेमें समर्थ है और पैसे देता भी है, मगर इसे हम उसका व्यक्तिगत सेवा कार्य नहीं कह सकते। मैं इस बातसे जरूर सहमत हूँ कि वहां यह भी जोड देना चाहिए कि — 'यथासम्भव, हरिजनोंको रखा जाये।' उसने सिर्फ आर्थिक सहायता करनेका उल्लेख करके जो चूक की है, वह उसकी ईमानदारीके अतिरेकको ही सूचित करती है।

मुझे अफसोस है कि तुम्हें अमतुलसलामको अपने साथ रखना पड रहा है। उसके पक्षमें मैं एक ही बात कहूँगा कि वह हरिजनोंकी एक अच्छी और सहृदय सेविका है।

देवदास और अमतुलके लिए दो पत्र रख रहा हूँ।

तुम्हारा लेख मैंने मद्रास भेज दिया है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ९१३) से।

१ यह पत्र उपलब्ध नहीं है।

३५६ पत्र एस्थर मेननको

२५ फरवरी, १९३५

प्यारी बिटिया,

तुम्हारा पत्र मिला। लम्बे पत्रके लिए क्षमा-याचना क्यो की? तुम मुझे कोई जल्दी तो लिखती नही हो।

श्रीमती एस०[1] एक दिनके लिए यहा रुकी थी। व एक अच्छी सदाशय महिला है। उन्होने मुझे बताया कि वे तुम्हारे साथ रही है।

हा, बच्चोको स्वास्थ्यके विचारसे कोडाईमे ही रहना चाहिए। मुझे यह सोचकर दु ख होता है कि मेननको अब भी डेनमाकसे पैसा मँगाना पडता है, किन्तु इस सम्बन्धमे मिलनेपर बाते करेगे।

तो मारिया घर नही जा सकती! भारतसे हार्दिक प्रेम हो जाना बहुत ही सहज है।

जब तुम नेली बालको पत्र लिखो तो उसे मेरा प्यार कहना।

सी० एफ० एण्ड्रयूज प० आ०[2] मे है। उनका विचार है कि वे अप्रलमे भारत आयेगे।

मीरा एक मोटर-कार दुघटनामे बाल-बाल बची। वह अब बिलकुल ठीक है।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकलसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार। **माई डियर चाइल्ड,** पष्ठ १११ से भी।

३५७ पत्र शकरलाल बैंकरको

२५ फरवरी, १९३५

प्रिय शकरलाल,

आज यहाँ मेरे पास श्रीयुत किर्लोस्कर तथा उनके मुख्य अधिकारी ह। वे इसके लिए बहुत इच्छुक है कि उनकी मशीनके बारेमे कोई न-कोई निणय हो जाये। मैने उन्हे बता दिया है कि निणय मुझे नही देना है। वह तो निर्णायको द्वारा ही दिया जा सकता है। मैने उन्हे यह भी बता दिया है कि जो भी निणय होगा वह कार्यान्वित किया जायेगा। यदि निणय उनके पक्षमे हुआ, तो एकस्व अधिकारको

१ पूरा नाम साफ लिखा हुआ नहीं है।

२ पश्चिमी आफ्रिका।

कानूनी तौरपर हस्तान्तरित करने तथा अन्य आवश्यक औपचारिकताओंके बदलेमें उन्हें पुरस्कार राशि तुरन्त दे दी जायेगी।

वे चाहते हैं कि निर्णय यथासम्भव शीघ्र ही हो जाये, इसलिए कृपया मामलेको जितना शीघ्र हो सके, निपटा डालें। यदि निर्णायक श्रीयुत किर्लोस्करके प्रतिनिधिका बयान लेना चाहते हों तो ऐसी सूचना मिलते ही वे अपने प्रतिनिधिको खुशी-खुशी भेज देंगे।

मुझे यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि इस सम्बन्धमें मैंने जो-कुछ भी कहा है, उससे निर्णायकोंको प्रभावित नहीं होना है।

श्री शंकरलाल बैंकर
अहमदाबाद

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात; सौजन्य प्यारेलाल।

३५८. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

२५ फरवरी, १९३५

भाई ठक्कर बापा,

सूरजबहन सम्बन्धी आपका पत्र मुझे अच्छा नहीं लगा। आप और करसनदास दोनों हाथ खींच लें, तो मैं कहां जाऊँगा? यदि आपको लगता हो कि मेरी ओरसे इस बहनके प्रति थोड़ा भी अन्याय हुआ है, तो मुझे कुछ नहीं कहना। मेरी सत्ता केवल मेरी सत्यनिष्ठा तथा न्यायबुद्धिपर अवलम्बित है। इस मामलेको खत्म करनेके लिए आप वचनबद्ध हैं, यह याद रखिए। गणेशनने जो कर्ज लिया है, वह यदि कोडमाकमके सम्बन्धमें ही हो, तो सारा पैसा चुकाकर नये प्रबन्धकको स्वच्छतासे काम शुरू करनेका अवसर दीजिए।

'हरिजन'को पूना ले जानेके सम्बन्धमें मेरा मार्गदर्शन कीजिए। मुझे मार्ग स्पष्टतः दिखाई नहीं देता। मुझे लगता है, शास्त्रीकी सेवाओंको 'हरिजन'में ही बनाये रखना हमारा स्पष्ट कर्त्तव्य है, किन्तु मैं यह नहीं समझ पाता कि उसे 'हरिजन'का ही काम सौंपा जाये या कोई दूसरा काम। दी० ब०[1] का सुझाव मुझे अच्छा नहीं लगा। तमिल, तेलगु ['हरिजन']की झंझटमें हम न पड़ें।

नटटार-हरिजन समस्याका कुछ कीजिएगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११५२) से।

१. दीवान बहादुर भाष्यम आयंगार।

३५९ पत्र स० दा० सातवलेकरको

२५ फरवरी, १९३५

भाई सातवलेकर

आपका पत्र मिला। दिल्लीसे देवदासका पत्र है उससे पता चलता है कि केलकर दिल्लीमे है और अच्छे है।

करूदवाडके यज्ञकी कथा दुखद है।

उद्योग सघका[1] सब हाल 'हरिजन' और 'हरिजन सेवक' मे आता है। यदि नहि मिलता है तो मै भेजवा दु। सघके सदस्य और एजट बनोगे?

रेशमके धदेका सघके कायक्रममे त्याग नही है। इसे चर्खा सघके माफत किया जाता है।

आपका,
मो० क० गाधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७७६) से, सौजन्य स० दा० सातवलेकर।

३६० पत्र एस्थर मेननको

[२५ फरवरी, १९३५के पश्चात][2]

रानी बिटिया,

तुम्हारा बहुमूल्य पत्र अभी पढकर पूरा किया है। मेरा मन उसे पढते हुए रो रहा था। क्या तुम यह तमिल कहावत नही जानती – "दिक्कट्रवनक्कु दवमे तुणै"? इसका अथ यह है, 'निबलके बल राम'। वह तुम्हे शक्ति और सात्वना देगा।" उसकी करुणा और घाव भरनेकी शक्तिमे विश्वास मत खोना।

तुम्हे इसके बहुत पहले ही मुझे लिख देना था। बिलकुल न लिखनेसे तो यह अच्छा ही रहा।

बच्चोको जैसा जो कुछ लगता है, वह तुम मेननको बता दो। जो होना था सो तो हो चुका। इस विवाहसे ईश्वरका कोई अभिप्राय था। न तुम चुकी हो, न झुकी हो।

१ ग्रामोद्योग सघ।

२ **माई डियर चाइल्ड**में इसे "पत्र एस्थर मेननको' २५२१९३५के बाद रखा गया है।

तुम्हारा मार्ग स्पष्ट है। अगर खर्चका आसानीसे प्रबन्ध किया जा सकता हो तो तुम्हे बच्चोको लेकर डेनमार्क या इंग्लैंड चले जाना चाहिए। और अगर वहाकी आबोहवा तुम्हे बर्दाश्त न हो तो बच्चोकी जो देखरेख कर सके उसके पास उन्हे छोडकर भारत लौट आना चाहिए।

यदि यह सम्भव न हो तो किसी ऐसी पहाडी जगहमे जाकर रहो जहाँ साल-भर रहना मुमकिन हो सके और जहा रहकर बच्चोका भारतीय वातावरणमे भार-तीयोकी तरह लालन-पालन किया जा सके। मेरी समझमे वे इसका विरोध करने-वाले बच्चे नही है। भारतमे रखकर किसी यूरोपीय पद्धतिकी शालामे उनकी शिक्षा दीक्षा उनके नैतिक विकासके लिए घातक ठहरेगी।

तुम और बच्चे मेरे पास रह सके तब तो निश्चय ही मुझे बहुत अच्छा लगेगा। लेकिन यह आबोहवा और शायद परिवेश भी उन्हे माफिक नही आयेगा। तुम जब भी चाहो, मुझे लिखनेमे संकोच मत करना। तुम्हारे पत्रोका उत्तर देने लायक अच्छा तो मै हूँ ही।

मैने मेननकी कुछ ठीक मदद करनेकी कोशिश की थी, मगर सफलता नही मिली, अर्थात् उसकी जरूरतके लायक वेतनवाला काम मै उसे नही दिला सका। लेकिन अगर बच्चोकी और यहातक कि तुम्हारी चिन्तासे उसे मुक्ति दिलाई जा सके तो फिर वह कम वेतनका कोई ऐसा काम भी स्वीकार कर सकता है जिसमे उसे पर्याप्त अनुभव प्राप्त करनेकी गुजाइश हो।

अन्तमे तय कुछ भी हो, तुम किसी बातकी कोई चिन्ता मत करना। याद रखो कि अगर हम अवसर दे तो भगवान स्वय अपने विशाल कन्धोपर हमारी सारी चिन्ताओका बोझ ले लेते है। मै तुम्हे इस समय लिख रहा हूँ — यह जितना सच है, उतनी ही सच यह बात भी है। अलबत्ता उसका तरीका हमारा तरीका नही है और उसके कन्धे हमारे कन्धे नही है। फिर भी उसकी मरजीके अनुसार चलनेमे ही सारा सौन्दर्य समाहित है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकलसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार।

३६१ पत्र मणिलाल गाधीको

वर्धा
२८ फरवरी, १९३५

चि० मणिलाल,

तेरा पत्र मिला। सस्कृतमे एक सुभाषित है 'सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम।" इसका अर्थ है मनुष्यको सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, अप्रिय सत्य नही बोलना चाहिए। भावार्थ यह है कि सत्यको सदा अहिसामय होना चाहिए। आलोचना करनेकी अहिसक भाषा सीखनी चाहिए। तूने अथवा जिसने यह लिखा हो, वह यही बात मधुर भाषामे कह सकता था। मधुर भाषा क्रोधमुक्त हुए बिना नही आती। तेरे लेखमे और पत्रमे मै क्रोधका प्रभाव देखता हू। उपालम्भके रूपमे नही, तुझे सावधान करनेके लिए ही यह लिखा है। वैसे इतनी दूर से मेरा तेरी आलोचना करना कोई मतलब नही रखता। फिर भी, तेरी भाषाका जो प्रभाव मुझपर पडा, वह बता देना ही उचित मालूम पडता है।

रामदासको तू यही बस गया मान। वह छापेखानेमे भागीदार होगा। उसका स्वास्थ्य ठीक है।

हरिलाल और काति मेरे साथ है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

मेरे काम अधूरे रह जाते है। सुशीलाका पत्र भी अनपढा रह गया था। चतुर गोमतीने उसे खोज निकाला। कपडेका प्रबन्ध कर रहा हूँ।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३३)से।

३६२ पत्र राजेन्द्रप्रसादको

२८ फरवरी, १९३५

भाई राजेन्द्र बाबु,

म तो सब कुछ करनेमे राजी हू तो जाइट इलेक्टोरेट होनेसे क्यो राजी न हू। इतना भी मुसलमान करे और सीख व हिन्दु राजी हो जाय तो बहुत ही अच्छा होगा। उसमे मुझे सदेह नही है। मालवियाजी महाराजको राजी करना मुश्केल जचता है, लेकिन सीख राजी होगे तो व विरोध नही करेगे। मेरा उनको लिखनेका मौका अब नही है, यु कहोगे तो लिखुगा। घनश्यामदास काफी है।[१] दूसरे राजी हो जाय तो जमनालाल भी पडितजीके पास जा सकेंगे।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ९७४७ से, सौजन्य राजेन्द्रप्रसाद।

३६३ प्रश्नोत्तर[२]

[१ मार्च, १९३५ से पूर्व][३]

प्रश्न – लोगोको फुरसतका समय मिलना चाहिए या नहीं, इसका तो आप खयाल ही नहीं करते। गरीब लोग बहुत ज्यादा मेहनत करते रहेगे तो उन्हे मानसिक विचार द्वारा बुद्धिको बढ़ाने और मनोरजन द्वारा आनन्द प्राप्त करनेके लिए समय ही नहीं मिलेगा। पर आप तो उन्हे और ज्यादा काम करनेकी ही शिक्षा दे रहे है।

उत्तर – सचमुच? मैं जिन लोगोके बारेमे सोच रहा हूँ, उनके पास तो इतनी फुरसत है कि उन बेचारोकी समझमे ही नही आता कि उसका क्या उपयोग करे। इस फुरसतके ही कारण उनमे ऐसी सुस्ती आ गई है जिसने उन्हे निर्जीव पत्थरके समान जड बना दिया है। उनमे इतनी जडता आ गई है कि कितने ही लोग तो जरा-सा हिलना-डुलना भी नही चाहते।

१ इस समय घनश्यामदास बिड़ला गाधीजी और मालवीयजीके बीच मध्यस्थका काम कर रहे थे।

२ महादेव देसाईके "वीकली नोट्स" (साप्ताहिक टिप्पणियाँ) से उद्धृत। देसाईने प्रश्नकर्ताका नाम नहीं दिया है।

३ महादेव देसाई १ मार्च १९३५को वर्धासे बम्बईके लिए रवाना हो गये थे। देखिए "पत्र नरहरि द्वा० परीखको", पृ० २९८।

प्रश्न जहाँ जरूरत हो वहाँ आप लोगोको कामपर जरूर लगाइये। पर आप तो उनसे अपने हाथो अपने चावल और अनाजकी कुटाई-पिसाई करनेके लिए भी कहते ह। क्या यह उनसे सूखा, नीरस काम करानेकी बात नहीं है?

उत्तर—उन्हे आलस्यमे अपना समय बिताना जितना नीरस मालूम होता है, यह काम उससे ज्यादा नीरस नही है। और जब वे यह समझ जायेगे कि इससे हमे न सिर्फ कुछ पैसोकी कमाई ही हो जाती है, बल्कि इससे हमारी और हमारे देशवासियोकी तन्दुरुस्ती भी ठीक रहती है, तो उन्हे यह काम नीरस नही लगेगा। आधुनिक कल-कारखानोमे काम करनेसे ज्यादा नीरस तो निश्चय ही यह काम नही है। कोई काम कितना ही नीरस क्यो न हो, अगर मनुष्यको उसमे यह समझनेका आनन्द मिल सकता हो कि मैने कुछ निर्माण किया है, तो उसे वह नीरस नही लगेगा। आप किसी जूतोके कारखानेमे जाइए। वहा कुछ आदमी जूतोके तले बना रहे होगे, कुछ ऊपरी हिस्से और कुछ अन्य काम कर रहे होगे। वह काम नीरस मालूम देगा, क्योकि वे लोग बुद्धि लगाकर काम नही करते। लेकिन जो मोची या चमार स्वय पूरा जूता बनाता है, उसे अपना काम जरा भी नीरस नही मालूम पडेगा। क्योकि उसके कामपर उसकी कुशलताकी छाप होगी और उसे इस बातका आनन्द होगा कि अपने हाथो मैने कोई चीज बनाई है। कौन काम किस भावनासे किया जाता है, इसका बहुत असर पडता है। अपने ही उपयोगके लिए पानी भरने और लकडी चीरनेमे मुझे कोई आपत्ति नही होगी, बशर्ते कि किसीकी जोर जबरदस्तीसे नही, बल्कि अपनी बुद्धिसे सोच-समझकर मै ऐसा करूँ। कोई भी श्रम क्यो न हो अगर वह बुद्धिपूर्वक और किसी ऊँचे उद्देश्यको सामने रखकर किया जाये तो वह उत्पादक बन जाता है और उससे आनन्द भी प्राप्त होता है।

प्रश्न—लेकिन जब आप सारे दिन शारीरिक श्रम करते रहने पर ही जोर देते ह, तब क्या आप उनकी बुद्धिको जड बनानेका जोखिम अपने ऊपर नहीं ले रहे ह? आप दिन भरमें कितने घटेका शारीरिक श्रम आवश्यक समझते ह?

उत्तर—मुझे खुद आठ घटे काम करनेमे कोई आपत्ति नही होगी।

प्रश्न—म आपकी बात नहीं करता। आप तो आठ घटे चरखा कातकर भी आनन्द प्राप्त कर सकते ह, यह मै जानता हूँ। पर आपकी बात तो अपवादस्वरूप है, क्योकि आपमें तो इतनी बुद्धि और सजन-शक्ति है कि बाकीके समयमें भी उसका बहुत कुछ उपयोग कर सकते ह।

उत्तर—नही, मै तो चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति आठ घटे मेहनत करके आनन्द प्राप्त करे। सब-कुछ काम करनेकी भावनापर निर्भर है। आठ घटे लगनके साथ शुद्ध शारीरिक श्रम करनेके बाद भी बौद्धिक कामोके लिए काफी समय बच रहता है। मेरा उद्देश्य तो जडता और आलस्यको दूर करना है। जब मै ससारसे यह कह

सकूगा कि भारतका हरएक ग्रामवासी अपने पसीनेसे २० रुपया महीना कमा रहा है, तब मुझे परम सन्तोष प्राप्त होगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ८-३-१९३५

३६४ टिप्पणियाँ

सच्चा और झूठा अर्थशास्त्र

एक मित्रने मेरे पास कनसास स्टेट कालेजके अध्यक्ष डॉ० एफ० डी० फेरलका निम्न उद्धरण भेजा है

> **आर्थिक हितोंके लिए सामाजिक हितोंका बलिदान नहीं दिया जाना चाहिए। सामाजिक रूपसे अवनति होते रहनेके बावजूद आर्थिक उन्नति करते जाना बड़ी निरर्थक बात है। हम सबको यह जान लेना चाहिए कि हम श्रम और संघर्षके ही लिए नहीं जीते, बल्कि इसलिए परिश्रम और संघर्ष करते हैं कि अपेक्षाकृत अच्छा जीवन व्यतीत करें। अगर हम अच्छी तरह नहीं रह सकते, तो हमारे पास कितना ही रुपया क्यों न हो फिर भी हम गरीब हैं।**
>
> **खेती-किसानीका काम करनेवाले बहुसंख्यक लोग विपत्तिमें पड़कर इस बातको समझ रहे हैं। इस प्रकार इसके द्वारा एक ऐसे ग्रामीण तत्त्वज्ञानको स्वीकार करनेकी नींव पड़ रही है जो सम्भवतः स्थायी होगा। इस सिद्धान्तके अनुसार खेतीका मुख्य उद्देश्य रुपये पैसे जोड़ना नहीं, बल्कि देहाती लोगोंमें सुख समृद्धिका प्रसार करना है, और खेतीको मुख्यतः घर ही समझना चाहिए, न कि व्यवसाय की चीज। उन्हें व्यवसायकी चीज तो कभी संयोगवश ही मानना चाहिए।**
>
> **अब हम अनेक लोग विपत्तिमें पड़कर यह सीख रहे हैं कि रुपये पैसेके अलावा जो प्राकृतिक सम्पत्ति हमारे चारों तरफ मौजूद है, उसका हमें उपयोग करना चाहिए। इस सम्पत्तिमें सुनहरे सूर्यास्तसे लेकर बच्चोंसे हिलना-मिलना तक तरह-तरहकी बेशुमार चीजें हैं, जिनसे सुख और सन्तोष प्राप्त किया जा सकता है। अगर हम सादा जीवन व्यतीत करें और रुपये पैसेके अलावा, जो प्राकृतिक सम्पत्ति है उसीपर अपना अधिक आधार रखें, तो हमें न केवल स्वास्थ्य और सुख ही प्राप्त होगा, बल्कि बहुत कुछ आर्थिक संरक्षण भी मिलेगा।**

निस्सन्देह, जो अर्थशास्त्र स्वास्थ्यका नाश करता है वह झूठा अर्थशास्त्र है, क्योंकि स्वास्थ्य ही ठीक न हो तो रुपया-पैसा किस कामका? सच्चा अर्थशास्त्र तो वही है जिससे स्वास्थ्य बना रह सके। इसीलिए ग्राम-सुधारका जो प्रारम्भिक कार्यक्रम बनाया गया है, उस सबका उद्देश्य सच्ची अर्थनीति ही रखा गया है, क्योंकि ग्राम-वासियोंके स्वास्थ्य एवं शक्तिकी वृद्धि ही उसका उद्देश्य है।

शर्मनाक

अभी कलकी बात है, लगभग २५ वषका एक हटटा-कटटा नौजवान मेरे पास आया। उसने मुझसे पूछा कि क्या मै दो-तीन दिन आपके पास ठहर सकता हूँ? बहराइचका रहनेवाला था। घरपर उसके यहा कुछ एकड जमीन भी है। बम्बई-काग्रेसमे गया था, तभीसे बराबर भ्रमण कर रहा है और अपरिचित लोगोके सहारे उसका निर्वाह होता है। वह रामानुजियोमे उठता-बैठता है। जसा उसने मुझे बताया, वे उसे खाना और थोडा-बहुत रेल-भाडा देते है। जब मैने उससे कहा कि इस तरह दूसरोके दानपर रहना ठीक नही है, तो उसने जवाब दिया—'मुझे तो अपने खाने-खचके लिए भीख मागनेमे कोई बुराई नही मालूम पडती, क्योकि मै लोगोकी सेवा करनेकी आशा रखता हूँ। मतलब यह कि गुजारा तो पहले ही माग ले, फिर किसी समय उसके बदलेमे ब्याज सहित सेवा कर दे। इसमे उसे अनौचित्य कुछ भी नही मालूम पडा। चूकि वह खानेके वक्त आया था, इसलिए सबके साथ उसे भी भोजन दिया गया। लेकिन इसके बाद मैने उससे कह दिया कि वह हमारे साथ तभी रह सकता है जबकि सारे दिन जो काम उसे दिया जाये उसे करनेको वह तैयार हो। तबसे अभीतक हममे मे किसीको भी वह दिखाई नही दिया है।[1]

मै चाहता हूँ कि ऐसा मामला फिर मेरे सामने न आये तो अच्छा। नौजवान स्त्री पुरुषोको अपने लिए भीख मागनेमे शम आनी चाहिए। शारीरिक श्रमके लिए शमका जो झूठा भाव हममे आ गया है अगर उससे हम मुक्त हो जाये तो जिनमे थोडी-बहुत भी बुद्धि है, ऐसे नौजवान स्त्री पुरुषोके लिए कामकी कोइ कमी नही है। काफी काम उनके लिए पडा हुआ है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १-३ १९३५

१ इस युवकका नाम अवधेश था। इस सम्ब धमें और अधिक जाननेके लिए देखिए टिप्पणियाँ , १३ ४ १९३५, उपशीषक, ' पूण प्रायश्चित्त "।

३६५ खादके गड्ढे

पजाबके ग्राम सुधार-सम्बन्धी सरकारी महकमेके कमिश्नर श्री ब्रेनने, मेरी प्राथना पर, अपना सब साहित्य मेरे पास भेजा है। इसमे कई ऐसी पत्रिकाएँ भी है जो ग्रामवासियोकी साधारण जानकारीके लिए उपयोगी है। समय समय पर इनम से चुनी हुई कुछ बाते मै पाठकोके सामने रखना चाहता हूँ। सबसे पहले खादके गड्ढोवाली पत्रिका को लेता हूँ [१]

इसमे जो कुछ लिखा है सभी उसका समथन करेगे। यह मै जानता हूँ कि श्री ब्रेनने जैसे गड्ढोके लिए लिखा है, आम तौरपर वैसे ही गड्ढे तैयार करनेकी सिफारिश की जाती है। मगर मेरी रायमे पूरेने जो कम गहरे सतही गड्ढेकी सिफारिश की है, वह अधिक वैज्ञानिक एव लाभप्रद है। उसमे खुदाईकी मजदूरी कम होती है, और खाद निकालनेकी मजदूरी तो या तो बिलकुल ही नही होती या बहुत थोडी होती है। फिर उस मलेकी खाद भी लगभग एक सप्ताहमे ही बन जाती है, क्योकि जमीनकी सतहसे ६ से ९ इच तककी गहराईमे रहनेवाले बैक्टीरिया, हवा और सूयकी किरणोका उसपर असर होता है, जिससे गहरे गड्ढेमे दबाये जानेवाले मैलेकी बनिस्बत कही अच्छी खाद तैयार हो जाती है।

लेकिन मैला ठिकाने लगानेके तरीके कितने ही तरहके क्यो न हो, याद रखनेकी मुख्य बात यह है कि सारे मलेको गडढोमें दबाया जरूर जाये। इससे दुहरा लाभ होता है—एक तो ग्रामवासियोकी तन्दुरुस्ती ठीक रहती है, दूसरे गडढोमे दबकर बनी हुई खाद खेतोमे डालनेसे फसलकी वद्धि होकर उनकी आर्थिक स्थिति सुधरती है। यह याद रखना चाहिए कि मैलेके अलावा, जानवरोके शरीरके अवयव आदि चीजे अलग गाडी जानी चाहिए। यह निस्सन्दिग्ध है कि ग्राम सुधारके काममे सफाई सबसे पहला कदम है।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १-३-१९३५

१ यहाँ नहीं दिया जा रहा है। इसमें गाँवके पास गड्ढोमें कचरा और गोबर डालकर उससे खाद बनानेपर जोर दिया गया था।

३६६ पत्र एफ० मेरी बारको

वर्धा
१ मार्च, १९३५

चि० मेरी

यह पत्र तुम्हारे पास सुमित्राबहन लेकर आ रही है। मेरा खयाल है कि छोटेलाल[1] ने ठीक चुनाव किया है। सुमित्रा भली और परिश्रमी महिला है। लेकिन तुम खुद ही इस बातका इत्मीनान कर लेना। अगर वह, जैसी बहन तुम्हें चाहिए वैसी न हो तो तुम उसे वापस भेज देना।

अंग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ६०३९)से। सी० डब्ल्यू० ३३६९ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार।

३६७ पत्र मेरी चेज़लेको[2]

[१ मार्च, १९३५][3]

प्रिय मेरी सी०,

मुझे तुम्हारा बहुत ही बढ़िया खत मिला। तुम्हें अपने मनसे यह आशंका तो दूर कर ही देनी चाहिए कि खब मेहनत करके जीवन निर्वाहके लायक पैसे जुटानेमें तुम शायद समर्थ न हो सको। मैं इस समय किसी भी बातकी आलोचना नहीं करूँगा। तुम मुझे अपने प्रयत्नोंके सम्बन्धमें विस्तारसे बराबर सूचित करती रहना और जब कभी मैं समझूँगा कि तुमसे गलती हो रही है, मैं तुम्हें बतला दूँगा। तुम दोनों और तुम सब स्वस्थ रहो।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०३९) से। सी० डब्ल्यू० ३३६९ से भी सौजन्य एफ० मेरी बार।

१ वर्धा आश्रमके प्रबन्धक।

२ कनाडियन क्वेकर संगठनकी एक सदस्या। वे उत्तर भारतके अपने मित्रोंसे मिलने तथा ग्राम सेवाका कोई काम करनेके विचारसे आई थीं। वे एफ० मेरी बारके साथ खेड़ीमें जाकर रहीं।

३ यह पत्र और इससे पहलेका पत्र दोनों एक ही कागजपर लिखे गये थे।

३६८ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

दुबारा नही पढा

मगनवाडी
२ मार्च, १९३५

चि० नरहरि,

महादेव पिछली रात बम्बई चला गया। तुम्हारा पत्र वहा भेज रहा हूँ।

हीरासिहके सगे-सम्बन्धियोको जानते हो? उन्हे खबर कर दी होगी। उनका अग्निदाह तो किया ही होगा। शव यात्रामे कौन गया था? हीरासिह कहा सो रहे थे? क्या वह जगह निरापद थी? खटियापर सो रहे थे या धरतीपर?

मैं तो मानता हूँ कि सब अपने समयसे ही मरते है। किन्तु समयकी खबर नही होती और मरना अप्रिय लगता है, इसलिए इलाज करना ही पडता है। किस जन्तुने काटा होगा जब यह मालूम ही न पडे, तब सापने काटा होगा, ऐसा मान कर ही उपाय करना होता है। डाक्टरके यहा ले जाना एक उपाय है, किन्तु यदि डॉक्टर न मिले तो नस बाधकर जहा काटे जानेका शक हो वहा घाव बनाकर खून निकालने, उसमे परमेगनेट भरने, मिटटीका लेप रखने और मरीजको जगाये रखनेका इलाज तो है ही। उलटी भी कराई जा सकती है। मुँहमे उँगली डालनेसे अथवा गरम पानी और नमक पिलानेसे——नमक अच्छे परिमाणमे डाला गया हो– उलटी तुरन्त हो जाती है। सम्भव हो तो और भी उपाय डॉक्टरसे मालूम कर लेने चाहिए।

भगवानजीसे कहना कि उसका पत्र मिला है। उसके प्रश्न तो मुझे याद नही है। फिरसे लिखे।

बापूके आशीर्वाद

श्री नरहरि द्वा० परीख
हरिजन-आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०८३) से।

३६९ पत्र अमृत कौरको

३ मार्च, १९३५

प्रिय अमृत,

मुझे तुम्हारे दो खत मिले। हा, खान-ब धु वास्तवमे ईश्वरके सच्चे सेवक है। मुझे खुशी हुई कि तुमने एक ही बैठकमे पुस्तक पढ ली है। अगर तुम चाहो तो पुस्तककी कुछ प्रतिया देवदाससे नि शुल्क प्राप्त करके उ हे अपने अग्रेज मित्रोको भेज देना।

जुगलकिशोरजीने तुम्हे जो कागज भेजा है, उसमे तुम्हारे द्वारा बताई गई खामी है। मै छानबीन करके देख रहा हूँ कि उसमे और सुधार किया जा सकता है या नही। लिफाफोकी हदतक कोई दिक्कत नही होनी चाहिए। वे भली-भाति हाथसे बनाये जा सकते है। उन्हे बनाना, अपने आपमे एक धधा बन सकता है। मैने जो लिफाफे तुम्हारे पास भेजे है क्या उनमे सफाईकी कमी लगी?

तुम्हे मिलकी बनी साडिया फट जानेतक खद्दर न पहननेके लिए इ तजार नही करना चाहिए। हाथसे बुनी चीजमे सुन्दरताका पार नही होता। बेशक हाथ बुना रेशम खादी है।

कृपया महाराजसिह तथा उनकी धमपत्नीको मेरा प्यार कह देना। तुम्हे शायद मालूम नही है कि मेरा दूसरा पुत्र दक्षिण आफ्रिकामे 'इडियन ओपीनियन' नामके पत्रका सम्पादक है। वह बहुत अच्छा लडका है। उसे महाराजसिहकी नीति अच्छी नही लगी, और उसने अपने पत्रमे कुछ उग्र होकर आलोचना कर दी। एड्रचूज और मैने उससे उसके आलोचना करनेके ढॅगपर बहस करनेकी कोशिश की, लेकिन हम दोनो उसे उसके तरीकेकी खामी समझानेमे कामयाब नही हुए। वह जरा हठी स्वभावका लडका है। मैने उससे कहा कि किसी नीतिसे सहमत न हो सकनेमे मै बुराई नही मानता। लेकिन मैने राय व्यक्त करनेके ढगके बारेमे उसे समझाया। मै अभीतक उसे समझानेकी कोशिश कर रहा हूँ।

श्रीमती बी० नेहरूकी बातका मै अभीतक कायल नही हूँ। मेरा कहना यह है कि समाज-सुधारकके नाते हम किसी पर नालिश आदि न करे। सनातनी लोग जुर्माने भर देगे और हरिजनोको हमारे विरुद्ध कर देगे। मेरे दिमागमे यह बात बिलकुल साफ है कि हमें अपने कामकी शुरूआत ऊँचे कहे जानेवाले वर्णोसे ही करनी होगी, सचमुच गुनहगार वे ही है। हरिजनोको मालूम है कि वे शारदा-कानूनका पालन नही कर रहे है, लेकिन इससे मेरी बहसके मुद्देपर जरा भी असर नही पडता। वे अब भी अपनी गल्तीसे नावाकिफ है। कानूनके खिलाफ बगावत

करना अब अपने आपमें कोई गलत चीज नहीं रही। मेरा यह तर्क स्त्रियोंके संगठन पर भी लागू होता है। तुम मेरा यह सब लिखा श्रीमती बी० एन० को भी दिखा देना। अगर मेरे तर्कसे तुम्हें सन्तोष न होता हो तो तुम इसका ज्यादा खयाल मत करना।

लिननके बारेमें तुम क्या सोचती हो लिखना। यथासम्भव तुम आ जाओ। जितनी जल्दी उतना अच्छा।

स्नेह।

[पुनश्च]

यह कागज बहुत खराब है। मुझे उम्मीद है कि तुम लिखावट पढ लोगी।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२३) से, सौजन्य अमृत कौर। जी० एन० ६३३२ से भी।

३७० पत्र अमतुस्सलामको

वर्धा
४ मार्च, १९३५

चि० अमतुलसलाम,

तेरा बहुत लम्बा खत मिला। तू मेरे लिखनेका उलटा ही अर्थ लगाये तो मैं क्या करूँ? अब तुझे जो ठीक लगे सो कर। किसी भी तरह तू शान्त हो जा, शरीर अच्छा कर ले। इसीमें मुझे परम सुख है ऐसा समझ। तूने क्या मँगाया है? चरखा और वह सूर्ययन्त्र? किसीके साथ भेजूँ तो चलेगा न?

देवदास और लक्ष्मी तेरी फिक्र रखते हैं और तुझसे मुहब्बत करते हैं, इसमें मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। इससे उलटा होता तो मुझे आश्चर्य और दुःख दोनों होता।

बापूकी दुआ[1]

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१९) से।

१ यह उर्दू लिपिमें है।

३७१ पत्र परीक्षितलाल एल० मजमूदारको

४ मार्च, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

आदर्शका ही विचार करें तो कहा जायेगा कि जिन हरिजन सेवकोंने सन्तराम उत्सवमें भाग लिया, उन्होंने नियम भंग किया। किन्तु वहाँकी परिस्थितिपर विचार करते हुए यह कहा जा सकता है कि शायद उनका भाग लेना ठीक था। सार्वजनिक रूपसे चर्चा करने जैसा विषय यह बिलकुल नहीं है। परिस्थितिको देखकर साथियोंने जो किया, सो करनेका उन्हें अधिकार था। हम दुनियाके काज़ी नहीं बन सकते।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४००२) से।

३७२ पत्र मथुरादास त्रिकमजीको

४ मार्च, १९३५

रजत-जयन्तीके अन्तर्गत जो-कुछ होगा, उसमें तुम्हारे भाग लेनेकी जरूरत नहीं है। किन्तु यदि ऐसा स्पष्ट लगे कि तुम्हारे न जानेसे नगरपालिकाको नुकसान पहुँचेगा, तो तुम्हें जाना चाहिए। यही नियम सामाजिक समारोहोंपर भी लागू होता है। यह याद रखना चाहिए कि हम इस समय असहयोगकी नीतिपर अमल नहीं कर रहे हैं। उस प्रकारकी लड़ाई अभी बन्द है। इसलिए नगरपालिकाके सदस्यको अपनी स्वतन्त्रता, आत्मसम्मान और लोकप्रियताको ध्यानमें रखते हुए जो सेवा बन पड़े करनी चाहिए। इतना बता देनेके बाद उदाहरण प्रस्तुत करनेकी आवश्यकता नहीं रह जाती। फिर भी यदि तुम चाहोगे तो उदाहरण खोज निकालूँगा। जब तुम्हें लगे कि वहाँ तुम कोई सेवा नहीं कर सकते, उलटे अपमानित होनेकी आशंका है, तो कारण बताकर सदस्यता छोड़ देना कर्त्तव्य होगा।

हरिजन-सेवा, मद्य-निषेध, खादी, ग्राम-उद्योग आदिके सम्बन्धमें जो-कुछ हो सके करना। बहुत कुछ करनेकी गुंजाइश सरकारने रहने नहीं दी है। उसमें हमारा दोष भी काफी है। देखो न, हिन्दू मुस्लिम एकताके लिए ही हम क्या कर रहे हैं। किन्तु यह निराश होनेका कारण नहीं है, और अधिक प्रयत्न करनेका है।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १५७

३७३ पत्र ग० वा० मावलकरको

५ मार्च, १९३५

भाई मावलकर

आपका पत्र मिला। ठक्कर बापाकी शर्तें भी ऐसी ही थी। आपके ऊपर कितना बोझ है, इसकी कल्पना मैं यही बैठे-बैठे कर सकता हूँ। काम करनेवाले कम हैं, इसलिए उनपर बोझ तो रहेगा ही।

बने सो कीजिएगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२४३) से।

३७४ पत्र रावजीभाई एन० पटेलको

वर्धा

६ [मार्च][1], १९३५

चि० रावजीभाई,

तुम्हारा और ललिताका पत्र मिला। ललिता जब चाहे तब आ जाये। जल्दी न हो तो १८ के बाद आये। तबतक सभाएँ चलेगी।

यहा सभी करड[2] खाते है। बडे स्वादसे खाते है। पकती अच्छी है। बारह घटे भिगोकर रखते है। भीगी हुई करड उबलते पानीमें डाल देते है। चावलोको कूटनेका जो परिणाम होता है, वही उन्हे दो-तीन बार पानीमे रगडकर धोनेसे मिल जाता है। इस तरह धोना मानो पालिश करना ही है। पालिश किये चावल नुकसानदेह है। जो पालिश किये हुए चावल खाते है, उनके लिए मैंने सहज रास्ता बता दिया।

बापूके आशीर्वाद

श्रीयुत रावजीभाई पटेल
लिम्बासी
मातर तालुका, बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९००३) से।

१ साधन-सूत्रमें जनवरी है यह भूलसे लिखा गया जान पड़ता है। वर्धाकी पोस्ट ऑफिसकी मोहर ६ ३ १९३५ दिखाती है।

२ धानको दलकर निकाला हुआ चावल।

३७५ पत्र जेठालाल जी० सम्पतको

६ मार्च, १९३५

निश्चय हुआ है कि

१ सन्ध्याकी सामुदायिक प्रार्थना करना
२ कार्यकर्त्ताओंकी स्त्रियोंमें प्रचार-कार्यका रस उत्पन्न करना,
३ कार्यकर्त्ताओंकी स्त्रियोंमें पारस्परिक प्रेम बढ़े, ऐसी कोशिश करना,
४ गृहकार्यमें मजदूरोंका कमसे-कम उपयोग करना,
५ अपने घरमें चाय शक्कर बंद करना,
६ कार्यकर्त्ताओंकी कताई इत्यादिकी प्रगतिमें मदद करना,
७ शौचादिकी आरोग्यानुकूल व्यवस्था करना,
८ साथियोंको फुरसतके दिनोंमें व्यवस्थित तालीम देना,
९ प्रचार क्षेत्र कम करना,
१० कपाससे कार्य शुरू करना।
११ कताईका औसत नम्बर कमसे-कम १५ लाना,
१२ तकलीका उचित व्यक्तियोंमें प्रचार करना,
१३ अन्य उद्योगोंके बारेमें भी सोचना।

६ मार्च, १९३५

चि० जेठालाल,

इतनी बातें तुरन्त शुरू करनेका तुम सबने निश्चय किया है, ऐसा विनोबा कहते थे। प्रयोग शुरू कर दिया हो, तो उसका जो-कुछ नतीजा निकला हो, उसकी रिपोर्ट या तो लेते आना या भेज देना।

विनोबाने वहांका सारा अनुभव सुनाया है। लगता है, उन्होंने बड़ी बारीकीसे निरीक्षण किया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८५०) से, सौजन्य नारायण जे० सम्पत।

३७६ सन्देश 'लीडर' के लिए

वर्धा
७ मार्च, १९३५

प्रिय मित्र,

मेरे पास तो रजत जयन्ती समारोहके लिए सिर्फ सफलताकी कामना करनेका ही समय है। और इसके बारेमें आप इस बातसे आश्वस्त हो सकते हैं कि पण्डितजी[1] वहाँ केवल उत्सवका गौरव बढ़ानेके लिए ही नहीं, बल्कि समारोहका नेतृत्व करनेके लिए भी उपस्थित हुए हैं। आप जानते हैं कि यद्यपि मैं 'लीडर' में प्रतिपादित राजनीतिक विचारोंसे सदा सहमत नहीं रहा हूँ, फिर भी इस पत्रके लिए मेरे मनमें सदा बड़ा आदर रहा है। मैं इसे कुछ बहुत ही सुसम्पादित भारतीय दैनिकोंकी श्रेणीमें गिनता हूँ।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
लीडर, १२-३-१९३५

३७७ पत्र अगाथा हैरीसनको

बृहस्पतिवार, ७ मार्च, १९३५

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा पिछले महीनेकी २४ तारीखका पत्र मुझे मिल गया है। तुम्हारे पत्रमें लिखी बातोंकी तहतक पहुँचनेमें मुझे कोई दिक्कत महसूस नहीं हुई। मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे जल्दबाजीमें कोई कदम न उठानेके लिए कह रही हो। हो सकता है कि कभी-कभी दूसरोंको ऐसा लगता हो लेकिन भली भाँति सोचे बिना सहसा कोई कार्य करना मेरे स्वभावके खिलाफ है। और, इस समय तो मैं और भी सावधान हूँ, क्योंकि इस समय मेरी अपनी अहिंसाकी परीक्षा हो रही है। मेरे लिए अपनेको निर्दोष मानना या कहना ही काफी नहीं है। अगर मुझमें अहिंसाका तत्त्व है, तो वह सूर्यकी तरह स्वयं प्रकाशित होना चाहिए। मैं जानता हूँ कि यद्यपि अन्धे व्यक्ति सूर्यको नहीं देख पाते, किन्तु उन्हें सूर्योदय होनेका पता चल जाता है। और दोपहरकी ऊष्माका अनुभव तो उन्हें होता ही है। प्रेमसे ओत-प्रोत मनको दोपहरके सूर्यके जैसा होना चाहिए। हो सकता है कि मैं अपने

१ मदनमोहन मालवीय।

जीवनमे ऐसी अहिंसा प्रकट करनेमे सफल न हो सकू। मैंने जो आदश अपने सामने रखा है, उसे तनिक भी कम करनेके बजाय मै मुक्त कठसे अपनी असफलताकी घोषणा करना कही अधिक पसन्द करूँगा। इसीलिए इस समय तो मै यही कह सकता हूँ कि सविनय-अवज्ञाके लिए जल्दीमे कदम उठानेकी कोई भी सम्भावना नही है। लेकिन अगर सविनय-अवज्ञा आदोलन शुरू किया ही गया तो, निस्सदेह, मुझे उम्मीद है कि तुम उसे अनिवाय मानोगी।

स्नेह।

बापू

कु० अगाथा हैरिसन,
२, क्रेनबोन कोट
अल्बट ब्रिज रोड, एस० डब्ल्यू० ११

अग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० १४८५) से।

३७८ पत्र सत्यदेवको

७ मार्च, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। इससे ऐसा नही लगता कि आपको अपने आसपासकी घटनाओकी जानकारी है। आपके पत्रसे मै नही समझता कि आप लेखापालके रूपमे सघ[1]की कोई सेवा कर सकेंगे। लेकिन आप अपने ही जिलेमे एक अच्छे ग्राम-सेवक बन सकते हैं। यदि आप ऐसा चाहे तो मै आपसे दरभगाके बाबू ब्रजकिशोर प्रसादसे पत्र-व्यवहार करनेको कहूँगा।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत सत्यदेव
माफत बी० हरिभाऊ सहाय
सेगौली शुगर वर्क्स लि०
सेगौली (चम्पारण)

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ।

३७९ पत्र डॉ० गिरधारीलाल बत्राको

७ मार्च, १९३५

प्रिय मित्र,

यहाँ ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसे पंजाबमें आपके गाँवमें भेजा जा सके। कार्यकर्त्ताओंको प्रशिक्षित करना कुछ महीने बाद ही सम्भव होगा। लेकिन मैं चाहूँगा कि आप डा० गोपीचन्द[1] से, जो कि सारे पंजाबके लिए अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके एजेंट हैं, पत्र व्यवहार करें। वे मुझसे अधिक अच्छी तरह आपका मार्ग निर्देशन कर सकेंगे।

हृदयसे आपका,

डा० गिरधारीलाल बत्रा
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३८० पत्र डॉ० गोपीचन्द भार्गवको

७ मार्च, १९३५

प्रिय डा० गोपीचन्द,

डॉ० बत्राका पत्र और उसके उत्तरमें लिखे अपने पत्रकी नकल[2] आपकी जानकारीके लिए भेज रहा हूँ।

हृदयसे आपका,

डा० गोपीचन्द
लाहौर

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ डॉ० गोपीचन्द भार्गव, देखिए अगला शीर्षक।

२ देखिए पिछला शीर्षक।

३८१ पत्र एन० जी० आप्टेको

७ माच, १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। श्रीयुत मराठेके हाथ आपने जो रम भेजे थे उनकी एक दु खद कहानी है। मै किसी अन्य व्यक्तिको उन रसोका स्वाद लेनेके लिए नही ललचा सका, क्योकि यहा पर्याप्त फल थे। और मै केवल इस कारण उन्हे नही ले सका कि मै एक दिनमे पाचसे अधिक वस्तुओका उपयोग नही करता और वहाँ इन दो रसोमे से किसीके लिए कोई गुजाइश नही है।

मेरा खयाल था कि मैने उक्त कागज श्री मराठेको लौटा दिये है, किन्तु जब आप मुझे उनकी याद दिला रहे है तो मै उनकी तलाश करूँगा।

आप किस नमूनेका उल्लेख कर रहे है?

हृदयसे आपका,

श्रीयुत एन० जी० आप्टे
७५४ शुक्रवार
पूना २

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३८२ पत्र डॉ० मार्टिनको

७ मार्च, १९३५

प्रिय डॉक्टर मार्टिन,

पेड्रा रोड सेनिटोरियमके विषयमे पूरी जानकारी देते हुए आपने जो पत्र लिखा है, उसके लिए मै हृदयसे आपका आभारी हूँ। आप शायद यह जान चुके होगे कि मै अभी हालमे नागपुरमे था। मुझे खेद है कि आपके अस्पतालमें जानेका मुझे थोडा भी समय न मिल सका।

हृदयसे आपका,

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३८३ पत्र प्रेमाबहन कटकको

७ मार्च, १९३५

चि० प्रमा,

पत्रोंके जवाब निबटानेके लिए मौन ग्रहण किया है, इसलिए इतना तो मुझे लिखना ही चाहिए। वसे तेरा पत्र मेरे पास रखा ही है। बाया हाथ काममें लेने लगू तब अथवा पूरा समय मिले तब उसका उत्तर दे सकूगा।

तेरे पास जो सूत है उसका छोटा-सा भी कोई कपडा बुनवा सके तो बुनवाकर सीध मणिलालको फिनिक्स भिजवा देना। कपडा अरुणके पास वषगाठपर तभी पहुँच सकेगा। सुशीला इसीके लिए तो माग रही है।

म किसी कारणवश पत्र न लिख सकू तो भी तुझे नियमानुसार अपने कामका विवरण भेजना नही छोड देना है। वजन तू काफी बढा रही है। यही सुदर है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० १०३६७)से। सी० डब्ल्यू० ६८०६ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक।

३८४ पत्र घनश्यामदास बिडलाको

७ मार्च, १९३५

भाई घनश्यामदास

इसे देखीये। इस भाईमे कुछ है क्या?

महादेवने खत लिखा उसका मतलब सिफ इतना था। इतने तक प्रयत्न किया। अब समय आने पर विलायत जाकर जो कुछ हो सके किया जाये। सफलता उसका नाम कि कुछ योग्य समझौता हो। आज सम्भव कम है। जब सच्चा हिंदु मुस्लिम समझौता नही होगा, दूसरा असम्भवित सा प्रतीत होता है। हम तो प्रयत्नके ही अधिकारी हैं।

राचीके आश्रमका क्या हुआ?

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८००५ से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला।

३८५ पत्र घनश्यामदास बिडलाको

७ माच, १९३५

भाई घनश्यामदास,

चद समयके लिये मौन लिया है। इसलिये तुमारे पत्रका उत्तर में ही देता हू।

मेरा ऐसा अभिप्राय है, उसे लिखा जाये। चद महीनेमे तुमारा विलायत जाना होगा ही। उस वखत बारलो इ० के साथ बाते करना उचित होगा। इससे होदाका सम्भव ही नही हो सकता है।[1] साथ साथ यह भी कह देना आवश्यक है कि अत मे तो जो-कुछ समझौता अमल करनेके लायक हो सकता है सो तो पोलटीकल आगवाओके साथ ही हो सकेगा। कोई समझौता जिमका सम्बध राज्य प्रकरणके साथ नही हो, वह आजकी आबोहवामे असम्भव है।

इतना लिखनेसे किसी प्रकारकी गलतफहमी पैदा हो नही सकती है।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८००६ से, सौजय घनश्यामदास बिडला।

३८६ अच्छी शुरूआत

एक बहन[2] ने, जिन्होने एक अय बहन[3] के साथ मध्यप्रातके एक छोटे-से गावमे हालमे ही काम शुरू किया है, एक बहुत रोचक और उत्साहपूण पत्र भेजा है। उसमे वह लिखती है[4]

इस पत्रमे और भी बहुत-सी उपयोगी बाते है, पर और अधिक उद्धरण देने का लोभ मै नही करूँगा। इस पत्रमे जिस बातपर जोर दिया गया है उसकी मैं उपेक्षा नही करना चाहता और गावोमे काम करनेवालोको बताना चाहता हूँ – जैसा उक्त उद्धरणमें स्पष्ट रूपसे बताया गया है – कि उन्हे गाववालोकी ही तरह परिश्रम करनेकी आवश्यकता है। ईश्वरने यदि इन दोनो बहनोके स्वास्थ्यको बनाये रखा और आजीवन न सही पर कुछ लम्बे समयतक ये अपने काममे लगी रही, तो

१ मूलमें यहाँ स्पष्ट नहीं है।

२ मेरी चेजले, देखिए 'पत्र मेरी चेज़लेको', पृ० २९७।

३ मेरी बार।

४ यहाँ नहीं दिया जा रहा है। मेरी चेज़लेने घरका बरामदा बनानेमें अपने शारीरिक श्रमके सुखका वर्णन करते हुए लिखा था कि उसके बाद वे बगीचा भी स्वय तैयार करने जा रही हैं।

निश्चय ही अपने गावको एक आदर्श बना देगी। और यह सिर्फ इसलिए नही कि इन्होने शारीरिक मेहनतसे कार्यारम्भ किया है, बल्कि इसलिए भी कि ये ग्रामीणोके प्रति नि स्वार्थ प्रेमसे प्रेरित है और इन्होने काम की जो योजना बनाई है, वह सब उपयुक्त है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ८-३ १९३५

३८७ विकट प्रश्न

एक ऑनर्स ग्रेजुएट लिखते है

> **म रायलसीमा[1] का रहनेवाला हूँ, जो इस समय दुर्भिक्षका शिकार हो रहा है। उसकी इस दयनीय दुर्दशाके कारण निम्न प्रकार ह, जिन्हे जानकर सब भारतवासियोके दिल हिल उठने चाहिए**
>
> **१ इस वर्षा विहीन और नदियोसे रहित सूखे प्रदेशमें आदमियो और खेतीके पानीके लिए आवश्यक लघु सिंचाईके साधनो आदिकी भयानक उपेक्षा।**
>
> **२ आपकी प्रेरणासे देशके अन्य भागोमें हाथकी कताई-बुनाई आदिके जिन गृह-उद्योगोको पुनरुज्जीवन मिला है, उनकी यहाँ भयानक उपेक्षा।**
>
> **३ लोगोका घोर अज्ञान और नई पुरानी सब तरहकी शिक्षाका अभाव तथा सदा आपसी लडाई झगडो और दीवानी-फौजदारी मुकदमोमें उलझे रहना। इसलिए यहाके लोगोकी जिन्दगी सुधारनी हो तो दुर्भिक्ष निवारणके बजाय दुर्भिक्षको रोकनेका ही काम ज्यादा जरूरी है।**

इनमे से तीसरी बात शायद कारण नही, बल्कि पहले दो कारणोका परिणाम है। और अगर पहला कारण ठीक हो और उसे दूर न किया जा सकता हो या न किया जाता हो, तो इस प्रदेशके अभागे निवासियोके लिए दोमे से एक ही रास्ता रह जाता है कि या तो वे भूखो मर जाये, या इस सूखे प्रदेशको छोड दे। लेकिन हो सकता है कि पत्र-लेखकने वहाकी स्थितिका जैसा वर्णन किया है, वह बिलकुल वैसी ही खराब न हो। जो हो, मै तो यह समझता हूँ कि जलकष्ट निवारणकी व्यवस्था करना सार्वजनिक कार्यकर्ताओके बूतेकी बात नही है। लेकिन अगर वहा किसी भी तरह जीवन-निर्वाह हो सकता हो, तो निश्चय ही लोगोकी रोजीके लिए ईमानदारीके साथ बहुत कुछ सच्चा प्रयत्न किया जा सकता है। हमारे देशमे इतनी साधन-सामग्री और इतनी अधिक श्रम शक्ति बिना किसी उपयोगके पडी है कि अगर उन दोनोका उपयोग किया जा सके तो एक आदमीको भी भूखो न मरना पडे। इसमे कोई शक नही कि यदि संकट-निवारणके साथ साथ संकटकी रुकावटके उपाय भी न किये जाये

१ आन्ध्र प्रदेश।

तो उस सकट-निवारणसे कोई लाभ न होगा। उससे तो लोग ईमानदारीके साथ परिश्रम करनेके बजाय उलटे भिखारी बनते है। सकट निवारणका काम भी इस तरह किया जाना चाहिए जिससे अपने-आप भविष्यमे सकट न आये। इसलिए बजाय इसके कि लोगोको मुफ्त खाना दिया जाये, सकट-निवारणका काम करनेवालोको चाहिए कि वे स्थानीय उद्योग-धन्धोकी शुरूआत करके सकटग्रस्त लोगोसे उनमे काम करनेके लिए कहे। जो मनुष्य अपग न हो, जबतक वह अपने हिस्सेका काम न कर ले, उसे खाना नही देना चाहिए। मेरी रायमे वहा पर, जहा कि लाखो आदमी भूखो मर रहे है, बच्चो बडोको फिलहाल बुद्धि-सगत शारीरिक श्रमकी ही शिक्षा दी जानी चाहिए। अक्षर-ज्ञान तो हस्त कौशलकी शिक्षाके बादकी बात है, क्योकि मनुष्य और पशुके बीचका जाहिरा फर्क हाथमे काम करनेसे ही मालूम पडता है। यह एक मिथ्या धारणा है कि लिखना पढना जाने बिना मनुष्यका पूर्ण विकास नही हो सकता है। इसमे कोई शक नही कि अक्षर-ज्ञानसे मनुष्य जीवनका सौन्दय बढ जाता है, लेकिन ऐसी बात नही है कि इसके बिना उसका नैतिक, शारीरिक और आर्थिक विकास ही नही हो सकता। इसलिए मै चाहता हूँ कि यह पत्र लिखनेवाले ग्रेजुएट और वे सब कायकर्त्ता जिन्हे हम जुटा सके, सकट-ग्रस्त लोगोके बीच जाकर रहे और उन्हे आजीविका देने लायक रचनात्मक कायमे लग जाये। सकट-ग्रस्त लोगोको ऐसा काम दिया जा सके, तभी उनके अन्दर ईमानदारीके साथ खरे पसीनेकी कमाईपर गुजर करनेवाले आदमियो-जैसा आत्मगौरव पैदा होगा।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ८-३ १९३५

३८८ पत्र डॉ० मु० अ० अन्सारीको

८ माच, १९३५

प्रिय डॉ० अन्सारी,

आपके पत्रको मै समझ गया हूँ। मै आपके साथ झगडा नही करूँगा, लेकिन राजेन्द्रबाबूसे आपको मुक्त करनेका निवेदन करूँगा। मुझे साफ दिखाई दे रहा है कि यदि हमे बहुत साल आपकी सेवा लेनी है तो आप पर नियमित जिम्मेदारी नही डालनी चाहिए। मै यह भी समझता हूँ कि आपको बीच-बीचमे यूरोप भी जाना चाहिए।

आप सबको मेरा प्यार।

आपका,

[अंग्रेजीसे]

अन्सारी-कागजात, सौजन्य जामिया मिलिया इस्लामिया पुस्तकालय।

३८९ पत्र ओ० वी० आर० शेषनको

वर्धा
८ मार्च, १९३५

प्रिय शेषन,

बिलकुल न होनेसे देरसे होना बेहतर है। पिछले महीनेकी ११ तारीखका आपका पत्र मेरे पास इतने ज्यादा दिनोतक पडा रहा है। यह सच है कि नाटक खेलकर कोष इकट्ठा करनेके विचारको मै पसद नही करता। जो भी नाटक खेलते हैं उन्हे ऐसा मानकर नाटक खेलना चाहिए कि वह अपने आपम एक अच्छी चीज है।

श्रीयुत ओ० वी० आर० शेषन
२४ बगला
टाटापुरम (कोचीन)

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागज़ात, सौजन्य प्यारेलाल।

३९० पत्र फीरोज़ गाधीको

८ मार्च, १९३५

प्रिय फीरोज़,

इस बार मुझे पत्र लिखनेमे तुमने सुस्ती की। कितना अच्छा होता कि मै तुम्हे तारीख दे सकता। मैने तुमसे केवल यह कहा है कि वहा जा सकनेकी बात मै सोच रहा हूँ। मुझे इस बातकी खुशी है कि कमला सेनिटोरियममे रहने चली गई है। मेरा विश्वास है कि यही ठीक है।

स्नेह।

श्रीयुत फीरोज़ गाधी
मार्फत कमला नेहरू
चन्द्र भुवन, भुवाली

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३९१ पत्र : जयरामदास जयवर्धनेको

८ माच, १९३५

प्रिय जयरामदास,

इस मासकी ३ तारीखका आपका पत्र मिला। अब आपने मुझे ऐसी जानकारी दी है जिसे मैं बहुत सक्षिप्त और सुनिश्चित कह सकता हूँ। मैंने एक चिकित्सकसे सम्पक स्थापित किया है। देखूगा कि क्या कुछ किया जा सकता है। इस बीच मुझे पूण विवरण भेजिए। आपके मण्डलमें कितने स्वयसेवक काम कर रहे ह?

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३९२ पत्र पुरुषोत्तम बावीशीको

८ माच, १९३५

भाईश्री पुरुषोत्तम,

आपका पत्र मिला। कणबी लोगोमे मौत आदिके अवसरपर जो बेहिसाब चीनी काममे लाई जाती है यह जरूर खराब बात है। पर मेरे लिखनेका असर किसपर होगा? स्थानीय लोगोको यह काम करना चाहिए। शक्करके बदले गुड काममे लाना उचित है किन्तु गुडका भी ऐसा निरथक उपयोग किस लिए? अपने ग्राम उद्योगके कामका विवरण भेजिए। खेतीके विभागमे आप वहाँ क्या काम करते हैं? आपने किस विषयका विशेष ज्ञान प्राप्त किया है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२५) से। सी० डब्ल्यू० ४७४४ से भी।

३९३ पत्र चन्द त्यागीको

८ माच, १९३५

भाई चन्द त्यागी,

मुझे तो तुमारा कामका बयान चाहिये। राजकिशोरीको मैने रख लिया क्योकि दोनो अपने विवाहके बारेमे तटस्थ थे। किसीको दूसरोके साथ रहनेकी लालसा ही न थी। भाईको कुछ परवाह न थी। मैंने कडी शत रखी। उसका सबने खुशीसे स्वीकार कर लिया। तुमारे सरपे उसका बोझ रखना और तुमसे काम भी लेना गेरमुनासब जचा। यह सबब था राजकिशोरीको रख लेनेका। उसका काम अच्छी तरहसे चल रहा है। कुछ जानती नही है लेकिन सरल लडकी है। शरीर अच्छा रहता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ३२६२)से।

३९४ पत्र मार्गरेट स्पीगलको

वर्धा
९ माच, १९३५

चि० अमला,

तुम्हारे दोनो पत्र मिल गये है। मगर २० रुपयेकी रसीद नही मिल रही है। फिर भी पोस्ट मास्टरसे पता लगानेकी कोशिश कर रहा हूँ कि वे पैसे किस तरीकेसे मिल सकेगे। अगर तुम दिक्कतमे हो तो तुम्हे २० रुपये नही भेजने चाहिए थे। क्या मैं रुपये वापस भेज दू?

मुझे उम्मीद है कि बीमार गौरेया[1] बिलकुल स्वस्थ हो गई होगी। ददसे भी तुम्हे पूरी तौरसे छुटकारा मिल गया होगा। तुम यह क्यो कहती हो कि तुम्हे भोजन बनाना नही आता। सूचित करना कि वह रूसी बहन कब आ रही है।

बापूके आशीर्वाद

[अंग्रेजीसे]

स्पीगल-कागज़ात, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

१ गाधीजी विनोदमें मागरेट स्पीगलको 'गौरैया' (स्पैरो) कहते थे।

३९५ पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको

९ मार्च, १९३५

प्रिय ठक्करबापा,

मैंने शायद आपको आपके १२ फरवरीके उस पत्रकी पहुँच अभीतक नहीं भेजी है जिसमें 'मीरी' जातिके लोगोंका उल्लेख था। उनके बीच काय करनेके लिए १५,००० रु० की राशि देनेमें मुझे किसी प्रकारकी कोई आपत्ति नहीं है। मुझे आशा है कि इस कामके लिए आप ठीक आदमी ढूँढ लेंगे।

श्रीयुत ठक्करबापा
मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३९६ एक पत्र

९ मार्च १९३५

प्रिय मित्र,

मैं इससे पहलेके आपके पत्रकी पहुँच नहीं भेज सका, इसके लिए कृपया आप मुझे क्षमा करें। जैसा कि आपको मालूम ही होगा मेरे पास कोई संचित निधि नहीं है। मैं जिन आन्दोलनोंकी जिम्मेदारी उठाता हूँ उन सबके लिए आवश्यक धन मैं हर बार माँगकर ही जुटाता हूँ। आप इसके लिए सहायताकी रकम मध्यप्रान्त सरकारसे या कुष्ठ निधिसे — जो मेरा खयाल है, भारत सरकारके अधीन है — क्यों नहीं मांगते?

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३९७ पत्र हातिम अल्वीको

९ माच १९३५

प्रिय हातिम,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम जिस पर्चेका जिक्र कर रहे हो वह मुझे अभीतक नही मिला है। जब भी वह मुझे मिलेगा, यदि उसमे अधिक समय न लगता होगा तो मै उसे तुम्हारी खातिर जरूर पढँगा। किन्तु मुझे यह तो बताओ कि एक परिवारकी नितान्त घरेलू लडाईमे, जहा मै बिलकुल बाहरका आदमी समझा जाऊँगा, मेरी रायका क्या उपयोग हो सकता है?

हृदयसे तुम्हारा,

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३९८ पत्र अब्दुल गनीको

९ माच, १९३५

प्रिय गनी,

आशा है कि तुम स्वस्थ हो और तुम्हे फिर टासिलकी कोई तकलीफ नही हुई होगी। सरदार वल्लभभाई पटेल और सादुल्ला तुम्हारे पिताजीसे अभी हाल ही मे मिले थे। उनकी तन्दुरुस्ती काफी गिर गई है, हालाकि वे खुश दिखाई देते है। हो सकता है कि उन्हे उत्तरमे किसी जगह भेज दिया जाये। मुझे अभी कोई पक्की बात मालूम नही है।

तुम्हारी यह बात सही है कि दूर दराजके इन इक्के दुक्के कारखानोमे लोगोमे एक-दूसरेसे लाभ उठानेकी प्रवत्ति आ जाती है और इसलिए छोटी-छोटी ईर्ष्या द्वेषकी बाते और भ्रष्टताका वातावरण बन जाता है। मै आशा करता हूँ कि तुम इन सबसे ऊपर उठोगे और अपने आस पासके लोगोके सामने एक शानदार मिसाल रखोगे।

क्या तुम कुछ पढाई कर रहे हो? तुम्हे उर्दू पढनेके लिए एक घटा देना चाहिए और हिन्दी लिपि भी सीख लेनी चाहिए।

सादुल्ला कुछ दिन यहाँ रहे।

स्नेह।

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

३९९ पत्र हेमचन्द्रको

९ मार्च, १९३५

प्रिय हेमचन्द्र,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हे प्रामाणिक पथ प्रदर्शन केवल कार्य-समितिसे ही मिल सकता है। किन्तु मेरी अपनी राय यह है कि जब सरकार कोई अपमानजनक नोटिस तामील करे तो सम्बन्धित व्यक्ति या तो अपना वह जिला छोड दे जहा वह नोटिस लागू होता हो या फिर उसके अनुसार चलना स्वीकार कर ले। निश्चय ही ऐसे अवसर होते है जब कि घुटने टेकना गलत होता है और जिला छोड देना असम्भव। उस दशामे व्यक्तिको अपनी ही जिम्मेदारीपर सविनय अवज्ञा करनी चाहिए। इस व्यक्तिगत मामलेमे न तो काग्रेससे और न किसी अन्य व्यक्तिसे ही कोई मार्ग प्रदर्शन मिल सकता है।

हृदयसे तुम्हारा,

श्रीयुत हेमचन्द्र
गायघर
फरीदपुर (जिला)

[पुनश्च]

काग्रेसका एक सक्रिय पदाधिकारी अ० भा० ग्रा० सघका सक्रिय कार्यकर्त्ता केवल इस कारण नही बन सकता कि उसे इनमे से एककी उपेक्षा करनी पडेगी।

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४०० पत्र जे० सी० अकर्तेको

९ मार्च, १९३५

प्रिय अकर्ते,

इस मामलेमे आपका पथ-प्रदर्शन करना बहुत कठिन है। इसमे तो सिर्फ आप ही को निर्णय लेना चाहिए। आपने जिस घटनाका उल्लेख किया है यदि वह सिद्ध की जा सकती है, तो आप निश्चय ही रिपोर्ट लिखवा कर अधिकारियोसे मुकदमा चलानेको कह सकते है। मुझे इसमे कुछ गलत दिखाई नही देता कि जिस कथनको आप सिद्ध कर सकते है, उसे पत्रमे प्रकाशित कर दे।

यदि बुवा कोई शोर किये बिना और यह कहे बिना आते है कि उन्हे निमन्त्रित किया गया है, तो मै निश्चय ही उनसे मिलूगा। किन्तु मेरी उनसे मिलनेकी कोई इच्छा नही है और न मै कोई निमन्त्रण ही भेजूगा। यदि वे आते है तो उन्हे अकेले ही आना चाहिए।

आपका,
बापू

श्रीयुत अकर्ते
मोरशी
अमरावती (जिला)

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४०१ एक पत्र

९ मार्च १९३५

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। मेरा खयाल है कि अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके मन्त्रीका पत्र बिलकुल ठीक है। हम जो करना चाहते है, वह नशाबन्दीका अभियान चलाना नही है। वह तो केवल राज्यके माध्यमसे ही हो सकता है और इस लायक है कि कोई सस्था उसे स्वतन्त्र रूपसे उठाये। किन्तु अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ जो करना चाहता है, वह शराबीको सयमीमे बदलना है। आप भी तो यह स्वीकार करते है कि आपका धरना स्थायी प्रभाव नही पैदा कर पाया। धरना एक सीमा तक और एक समयतक ही उपयोगी है। वह एक स्थायी काय नही हो सकता और फिर श्रम विभाजन सिद्धान्तके अनुसार यह काय केवल एक और उसी सगठनके द्वारा नही किया जा सकता। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ एक विशुद्ध रचनात्मक सस्था है, इसलिए उसे अपनेको जनताको सयमकी शिक्षा देनेके कायतक ही सीमित रखना चाहिए। वह धरना देने और राज्यको नशाबन्दीकी घोषणा करनेके लिए प्रेरित करनेका काय हाथमे नही ले सकता। इसके लिए कोई अन्य सस्था बनानी होगी। इसलिए आपको इनमे से कोई एक चीज चुननी है -- या तो बाहरसे काय करो या अन्दरसे। दोनो ही आवश्यक है, और किसी व्यक्तिको क्या करना चाहिए इसके लिए कोई भी नियम निश्चित नही किया जा सकता। हरएकको अपना काय खुद चुनना होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४०२ पत्र अच्युत पटवर्धनको

९ मार्च, १९३५

प्रिय पटवर्धन

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे खेद है कि शास्त्री या गणेशनने एक छोटी रकमको अदा करनेमें इतने महीने लगा दिये।[1] निस्सन्देह मैं जानता हूँ कि तुम मेरी खातिर 'हरिजन'का मुद्रण फिरसे प्रसन्नतापूर्वक ले लोगे। मैं इस बारेमें शास्त्री और गणेशनसे पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्रीयुत अ० पटवर्धन
आर्यभूषण प्रेस
पूना ४

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४०३ पत्र हीरालाल शर्माको

९ मार्च, १९३५

चि० शर्मा,

यह हाल तुमारे तारका हुआ।[2] तुमने कहा था शर्मा काफी है, इसलिये मैंने एक आना बचानेकी चेष्टा की। तारमें था 'आ जाओ कोई गलतफहमी नहीं है।

मैंने जो निर्णय किया सो गलतफहमी से नहीं था। तुमारी स्थिति पहचानते हूए यही अच्छा लगा। लेकिन आ जाना है तो अवश्य आओ। डा० भासकरको किताबोंके बारेमें लिखा है। एक-दो दिनमें आ जानी चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १३० और १३१ के मध्यकी प्रतिकृतिसे।

१ देखिए "पत्र एस० गणेशनको" पृ० ३२२-२३।

२ गांधीजीने यह तार शर्मा खुर्जा के पतेपर भेजा था किन्तु इस बीच हीरालाल शर्माके पासके गाँवमें बस जानेके कारण उक्त तार वापस लौटा दिया गया था।

४०४ पत्र मेसर्स किर्लोस्कर ब्रदर्सको[1]

१० मार्च, १९३५

सज्जनो,

सेठ अम्बालालका, जो निर्णायकोंमें से एक हैं, यह कहना है कि वे आपके चरखेके बारेमें किसी नतीजेपर पहुँचनेसे पहले मेरे विचार जानना चाहते हैं। वे अगली २३ अप्रैलके आसपास समुद्री मार्गसे इंग्लैंडके लिए रवाना होना चाहते हैं। यदि उनकी यात्रासे पहले ही किसी निश्चयपर पहुँचना है तो मामलेमें शीघ्रता करनी होगी। मैंने आपको वचन दिया है कि मैं निर्णायकोंको अपनी राय नहीं बताऊँगा। मैं उस वचनका तबतक दृढ़तासे पालन करूँगा जबतक कि आप ऐसा चाहेंगे। किन्तु यदि सेठ अम्बालाल अन्य निर्णायकोंकी रायका प्रतिनिधित्व करते हैं, तो इस बातका डर है कि वे अपना निर्णय देनेसे या तो इनकार कर दें अथवा साक्ष्यकी अपर्याप्तताके आधारपर आपके विरुद्ध निर्णय दे दें। इसलिए मुझे ऐसा लगा कि जो भी हो रहा है उससे आपको अवगत करा दूँ। कृपया बतायें कि आप मुझसे क्या कराना चाहते हैं। मैं अपनी ओरसे आपको इनमें से कुछ भी करनेको नहीं कह सकता। इसका सीधा-सा कारण यह है कि मैं यह नहीं जानता कि आपके हकमें सबसे अच्छा क्या है। केवल आप ही स्वयं यह निर्णय ले सकते हैं कि आपकी भलाई किसमें है।

हृदयसे आपका,

मेसर्स किर्लोस्कर ब्रदर्स
किर्लोस्कर वाडी

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए खण्ड ५९, पृ० ४२३ और ४६०-६१ भी।

४०५ पत्र · डॉ० बी० जयरामको

१० माच १९३५

प्रिय डाक्टर जयराम,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप भोले को रोगमुक्त समझते है। यह बडी बात है कि उसका वजन भी बढ गया है। म उसे लौट आने और आपकी यह सलाह माननेके लिए कह रहा हूँ[1] कि वह या तो कुछ काम करना शुरू कर दे या अपनी पढाई चालू कर दे।

हृदयसे आपका,

डा० बी० जयराम
मेडिकल आफिसर
प्रिसेज कृष्णजाम्मन्नी
क्षयरोग सेनेटोरियम, मैसूर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४०६ पत्र भोलेको

१० माच, १९३५

प्रिय भोले,

डॉक्टर जयरामसे जो पत्र अभी-अभी मिला है, उसकी नकल भेज रहा हूँ। मुझे तुम्हारे पत्र बराबर मिले, किन्तु तुम्हे लिखनेसे पहले मै डा० जयरामके पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा था। अब यह बात काफी साफ हो गई है कि तुम्हे वापस लौटना चाहिए और पूनाके लिए रवाना हो जाना चाहिए या कुछ समयके लिए बगलौरमे श्री रामचन्द्रनके पास रहना चाहिए।

श्रीयुत भोले
प्रिसेज कृष्णजाम्मन्नी
क्षयरोग सेनेटोरियम, मैसूर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए अगला शीषक।

४०७ पत्र रामचन्द्रनको

१० माच, १९३५

प्रिय रामचद्रन,

अब मुझे डॉक्टर जयरामका पत्र मिल गया। वे इस नतीजेपर पहुँचे है कि भोलेको कभी भी क्षयरोग नही हुआ। किन्तु क्षयरोग हुआ हो या नही, अब वह निश्चय ही उससे बिलकुल मुक्त है। अब उसे सेनेटोरियम छोड देना चाहिए और या तो उसे कोई सामाजिक काम करना चाहिए या पढाई जारी रखनी चाहिए जिससे कि वह चिन्तामुक्त हो जाये। इसलिए मैंने भोलेको सलाह दी है[1] कि वह वहासे लौट आये और यदि चाहे तो कुछ समयके लिए आपके पास रहे या तुरन्त पूना चला जाये।

श्रीयुत रामचद्रन
हरिजन सेवक सघ
बगलौर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४०८ पत्र एस० गणेशनको

१० माच १९३५

प्रिय गणेशन,

इस पत्रके साथ ठक्करबापा द्वारा की गई टीका भेज रहा हूँ। पत्र तुम्हारी साखके लिए अत्यन्त हानिकारक है। इसने मुझे भी प्रभावित किया है। हर जाँचके बाद तुम्हारी ऋणकी राशिया बढती ही क्यो जाती है? और तुम्हारे इस वचनका क्या अर्थ है कि तुम सस्थामे ही सोया करोगे जब कि जाहिर है कि तुम अपना जिम्मा पूरा नही कर सकोगे।

मैंने यह सलाह दी है कि यदि ऋण उचित रूपसे सस्थाकी ओरसे लिये गये है और यदि अनियमितताओके होते हुए भी तुमपर बेईमानी का आरोप नही लगाया जा सकता और यदि सस्था उद्देश्यके लिए आवश्यक है, तो समस्त ऋण चुका दिये जाने चाहिए। मैंने यह भी कहा है कि यदि तुम्हारी ईमानदारीमे सन्देह

१ देखिए पिछला शीषक।

है अथवा तुम्हारे वायदे सवथा अविश्वसनीय सिद्ध हुए है, किन्तु सस्था उपयोगी है, तो सस्थाकी आरसे उचित रूपसे लिये गये ऋणोकी अदायगी की जानी चाहिए और तुम्हे सस्थाके साथ हर तरहके सम्ब धसे मुक्त कर देना चाहिए। यदि सस्था उपयोगी नही है तो हरिजन-सेवक सघको चाहिए कि वह इसके सम्बन्धमे अपना मभी समथन वापस ले ले।

श्रीयुत एस० गणेशन
मद्रास

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४०९ पत्र एस० बनर्जीको

११ माच, १९३५

प्रिय मित्र,

मुझे तुम्हारा पत्र मिला। मेरा मत इस सम्बन्धमे बिलकुल स्पष्ट है कि हरिजन सघको किसी भी चुनाव अभियानके साथ सम्बद्ध नही होना चाहिए। अपने उद्देश्यके लिए की गई इसकी सेवाओका मूल्याकन ही इसकी प्रतिष्ठाका आधार होना चाहिए। इसका यह मतलब नही है कि जनता योग्य हरिजन प्रत्याशियोको सहयोग न दे, या वे दल जिनकी इसमे आस्था है नगरपालिकाओ तथा स्थानीय निकायोमे योग्य हरिजन प्रत्याशियोके चुनावमे सहयोग न करे। मेरा मतलब तो सिफ यही है कि हरिजन सघके पास ध्यान देनेके लिए इससे भी अधिक अच्छा काम पडा हुआ है।

हृदयसे आपका
मो० क० गाधी

डॉ० एस० बनर्जी
न्यू ड्रगिस्ट्स हाल
जुम्मा मस्जिद, दिल्ली

अग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० २२०३) से।

४१० पत्र निर्मलकुमार बोसको[1]

वर्धा
११ मार्च, १९३५

प्रिय निर्मलबाबू,

आपका पुर्जा मिला और 'काग्रेस सोशलिस्ट' के दो अक भी, जिनमे कि आपके लेख है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि मैने उन्हे पढ लिया है। मसानीने मेरा ध्यान उनकी ओर दिलाया था और दो प्रतियाँ मुझे दी थी।

मै यह तो नही कह सकता कि उनमे से किसी भी लेखमे वर्णाश्रम या अहिंसाकी व्याख्या है, पर इतना कह सकता हूँ कि इन विषयोपर आपने जो कुछ लिखा है उससे इन दो सिद्धान्तोकी, जैसा कि मै उन्हे जानता हूँ, ठीक अभिव्यक्ति होती है। बाकी लेखोमे जहा आपने मेरे साथ न्याय करनेका प्रयास किया है, वहा उनमे ऐसी कई बाते है जिनको मै पूर्णतया सही नही मानता। मै नही समझता कि वे परिस्थितिका सही चित्रण करती है। फिर भी यह बात कोई महत्त्वपूर्ण नही है। इतना ही काफी है कि आपने निष्पक्ष भावसे मेरी स्थितिको जाचनेका भरसक प्रयत्न किया है।

आपको यह जानकर खुशी होगी कि मैने आपके प्रश्नोत्तरोको भुलाया नही है। आशा है, मै उनका सशोधन कर लूगा। यह काम मै अतिरिक्त समयमे ही करता हूँ। ज्योही मै सशोधन पूरा कर लूगा, उन्हे आपके पास भेज दूगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत निर्मल कु० बोस
६/१ ए ब्रिटिश इडिया स्ट्रीट,
कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५१९) से।

१ **माई डेज विद गांधी** (पृ० १४) में इस पत्रका एक अंश उद्धृत करते हुए वे कहते है '१९३५ में मैंने **कांग्रेस सोशलिस्टमें** दो लेख लिखे थे जिनका शीर्षक था क्या गांधी राष्ट्रवादी है? उनमें ऐसा विचार व्यक्त किया गया था कि वे इतने अधिक अन्तर्राष्ट्रवादी है और गरीबोंके साथ इतने अधिक सम्बद्ध है कि वे सामान्य अर्थमें राष्ट्रवादी' नही रह गये है। परन्तु भारतकी स्वतन्त्रताकी खातिर आमूल सुधारवादी गांधी और राष्ट्रवादी तत्वोंके बीच एक सम्बन्ध स्थापित हो गया है और ऐसी भविष्यवाणी की गई है कि गांधी अपनी कार्यविधिमें जैसे जैसे अति उग्रवादी होते जायेंगे, राष्ट्रवादी तत्व उनका साथ छोड़ते जायेंगे।

इन दो लेखोंकी प्रतियाँ गांधीजीके पास भेजी गई थी और उन्होंने वर्धासे ११ मार्च, १९३५ को यह पत्र लिखा था।

४११ पत्र कृष्णा हठीसिहको

११ मार्च, १९३५

चि० कृष्णा,

प्रभावतीने तुम्हारा खत मुझे बताया, बहुत दुःख हुआ। तुमारेमे गुस्सा है इतना तो मै जानता था। लेकिन मुझे कभी ख्याल न था कि इतना गुस्सा बेमौका भी निकाल सकती है। और तुमारे गुस्सेका कारण तो मै ही हो सकता हू न? क्योकि प्रभावतीने जैसा शिक्षण मेरे पाससे पाया ऐसा उसने दिया। तुमारे समझना चाहिए कि जो मनुष्य एक प्रतिज्ञा लेता है उसे उसका पालन भी करना चाहिये। और आश्रम प्रति इतनी घृणा क्या? जो आश्रम प्रति घृणा करे वह मेरे प्रति किसी प्रकारका आदर रख सकते है क्या? आश्रमसे प्यार नही तो मुझसे प्यार क्यो? लेकिन गुस्सेके साथ दलील क्यो? गुस्सा एक प्रकारका दिवानापन है। दिवानापन निकल जानेसे अपने प्रति हसेगी। आखर तो गुस्सा हम रीस्तेदारीसे ही तो कर सकते है? और मै रीस्तेवालेमे से नही तो हू भी क्या? अब गुस्सा उतर गया होगा। ममीके हाल मुझे बताना है। इतना हुकूम तो मानेगी न? आयाका काम आया करेगी। प्रभाका काम प्रभा जैसी लडकी कर शकती है। प्रभाको पहचाननेके बाद उसे अपना सकी, ऐसे ही दूसरी लडकी भी बन सकती है। माना कि प्रभाके बदलेमें खुरसेद ही आ गई, बा ही यहामे आ गई तो! लेकिन जब मिलेगे तब तुमारे कान पकडकर हिसाब करेगे। अब ममीके हाल दिली लिखो।

बापुके आशीर्वाद

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

४१२ पत्र खुशालचन्द गाधीको

१२ मार्च, १९३५

आदरणीय भाईकी सेवामे,

नारणदासने आपकी बीमारीकी बात लिखी है। यदि कोई उपचार करानेकी इच्छा हो, तो मैने अत्यन्त सरल उपाय सुझाया है।

आपसे पत्र पानेकी प्रत्याशा नही करता।

मोहनदासके दडवत् प्रणाम

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

४१३ पत्र नारणदास गाधीको

१२ माच, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। राधाके विषयमे तुमसे ही जाना। मैने उसे पत्र लिख दिया है।

पिताश्रीका स्वास्थ्य तो अब ऐसा ही रहेगा।

अभी एक नई पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमे कहा गया है कि नाकके बाये छेदसे स्वच्छ पानी ऊपर चढाकर उसे गले द्वारा निकालना चाहिए और इस तरह नाकको साफ करना चाहिए, इसके बाद नाकके दोनो छेदोसे पानी पीना चाहिये। ऐसा करनेसे नाकका रास्ता साफ रहता है। इसमे कोई ज्यादा परिश्रम नही लगता। यदि ठण्डा पानी सहन न हो तो नाकको इतने गम पानीसे भी धोया जा सकता है जितना उसमे हाथ डुबानेपर सहन होता हो। यदि पिताश्रीकी इच्छा यह इलाज आजमानेकी हो और वे इसके लिए आवश्यक परिश्रम करनेके लिए तैयार हो तो वे यह क्रिया करे। बाकी, सच्ची शुद्धिका उपाय तो रामनाम ही है

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्य० ८४३२ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी।

४१४ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

१२ माच, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। केसरको बचानेका काम मुझे मुश्किल लगता है। उसके बापकी इच्छाके विरुद्ध उसे रोक रखना तुम्हारे अथवा मेरे लिए सम्भव नही दिखता। जहा उत्तमचन्द रहते हो, वही केसरको रहना चाहिए। जो व्यक्ति उससे शादी करना चाहता है, उसके साथ पत्र-व्यवहार करना चाहिए। तब शायद वह केसरसे शादी करनेका इरादा ही छोड दे।

मै यहा कन्याश्रममे केसरको रखना ठीक नही समझता। मै तो अब यहाँ एक अलग ही मकानमे रहता हूँ। एक दूसरा ही काम कर रहा हूँ, यह भी कहा जा

सकता है। तेरह बरसकी लडकीको किसी दफ्तर-जैसी जगहमे, जहाँ पढाई की कोई भी व्यवस्था न हो, कैसे बसाया जा सकता है? उत्तमचन्द उसकी रक्षा पूरी तरह कर सकते है, लेकिन केसर थोडी दढ रहे तो। केसर यदि स्वय ही डिग जाये तो उसकी रक्षा कोई नही कर सकता।

लगता है, भगवानजी कुछ थक गया है। उसकी इच्छा कुछ समय मेरे पास बितानेकी है। यदि तुम उसे कुछ समयके लिए, जिसकी अवधि तुम ही निश्चित करोगे, छुट्टी दे सको, तो उसे आने देना। यह निणय केवल तुम्हारी जिम्मेदारी पर होना चाहिए। इस विषयमे मेरी कोई इच्छा नही हो सकती।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७२) से।

४१५ पत्र हीरालाल शर्माको

१२ माच, १९३५

चि० शर्मा,

अहमदाबाद म्युनिसीपेलिटी की जो पुस्तक तुमारे पास है उनकी फेहरिस्त तुमने शायद मुझे दी थी। लेकिन मुझे उनका कुछ ख्याल नही है। उसमे दो पुस्तक होनी चाहिये। एकका नाम है "दि अथ" बाई पूअर[1] दूसरीका "कोलोनियल एण्ड फाम सैनिटेशन' बाई पूअर[2]। यह पुस्तक यदि है तो मुझे भेज दो और आते हो तो साथ लाओ।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, पृ० १५२ से।

४१६ सलाह ग्रामवासियोको[3]

[१४ माच, १९३५ से पूव][4]

गडढा सिफ छ इच चौडा और एक फुट गहरा हो, खोदी हुई मिट्टीको गडढ के अगल-बगल डालकर दोनो किनारोको बैठनेके लिये ऊँचा कर दे। इतना काफी

१ और २ मूलमें ये अग्रेजीमें है।

३ महादेव देसाईके 'वीकली नोट्स' (साप्ताहिक टिप्पणियाँ) से उद्धत। वर्धाके आसपास सफाई अभियानके समय जब गाधीजी सदल रामनगर और सिधी गाँवमें गये तो देखा कि गलियाँ मल-मूत्रसे भरी पड़ी थीं। गाधीजीने अपने दलको फावड़े और टोकरियाँ थमा दीं और गंदगी हटाने लगे। गाँववाले भी सम्मिलित हुए। इसके बाद गाधीजीने ग्रामवासियोंके सम्मुख भाषण दिया।

४ देखिए 'पत्र प्रेमाबहन कटकको', पृ० ३२९-३०।

है। यह एक बहुत ही सरल तरीका है। आजतक आप लोग बिना किसी प्रकारकी लज्जा माने शौचालयोंके बिना अपना काम चलाते आये हैं और आप चाहें तो वैसा ही करते चले जा सकते हैं। लेकिन अगर आप चाहें तो बड़ी आसानीसे गाँवमें प्राप्त वस्तुओंसे ही हम उन्हें तैयार कर लेनेमें आपकी मदद कर सकते हैं। अगर महज आप मैलेको खोदी हुई पासकी मिट्टीसे ढँक दें तो आठ दिनोंके बाद ही वह बेश कीमती खाद बन जायेगा और आप साल-भर समय समय पर विभिन्न चारे अथवा सब्जियाँ पैदा करनेमें उसका उपयोग कर सकेंगे। मैं ये सारी बातें अपने अनुभवोंके आधारपर ही कह रहा हूँ। आपकी खेती बिना किसी अतिरिक्त खर्च या परिश्रमके फलेगी फूलेगी और स्वास्थ्य अधिक अच्छा हो जायेगा, क्योंकि मक्खियाँ कीटाणु नहीं फैलायेंगी और गाँव साफ-सुथरा हो उठेगा। तो मेरे साथ आओ। आप अपनी अपनी कुदाली और फावड़े लेकर यह काम करनेमें मेरा साथ दोगे या नहीं?

'हम आपके साथ हैं, आपका साथ देंगे', ग्रामवासियोंने कहा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १५-३-१९३५

४१७. सलाह: एक मित्रको[1]

[१४ मार्च, १९३५से पूर्व][2]

एक मिनटमें मैं आपको यह समझाये देता हूँ। देखिए, एक घानी बनानेमें शायद ५०)से कम खर्चा नहीं बैठता। अब देश-भरकी कुल घानियोंका हिसाब लगाइये। अगर सात गाँवोंके पीछे एक घानी शुमार कर लें, जोकि निश्चय ही बहुत कम अन्दाजा है, तो देश भरमें एक लाखसे ज्यादा घानियाँ होती हैं। अब अगर इनसे तेल पेरना बन्द कर दिया जाये तो ये सब बेकार हो जायेंगी न?

जरा सोचिए तो कि इसका क्या मतलब हुआ। फी घानी ३०) ही शुमार करें तो भी इसका अर्थ यह है कि हमारी तीस लाख रुपयेकी पूंजी बेकार पड़ी हुई है? क्या यह दुःखकी बात नहीं है? भला इसे हम बरबाद कैसे होने दे सकते हैं? और अगर ये सब चालू हो जायें तो एक घानी पीछे अगर एक आदमीका ही शुमार करें, तब भी सोचिए कि कितने आदमियोंको इनसे काम मिल जायेगा। फिर उससे अधपेट भूखी रहनेवाली गाय-बैलोंके लिए कितनी खली तैयार होगी। यही बात ईख पेरनेके कोल्हूकी भी है।

१. महादेव देसाईके "वीकली नोट्स" (साप्ताहिक टिप्पणियाँ) से उद्धृत। गांधीजीने एक बेकार पड़ी ग्रामीण तेलघानी खरीदकर लगानेका सुझाव दिया था। परन्तु जिस मित्रको यह घानी खरीदनेके लिए कहा गया उसे इस कार्यमें निहित बुद्धिमत्ता समझमें नहीं आई थी।

२. देखिए अगला शीर्षक।

लेकिन लोग क्या इस बातपर ध्यान देंगे?

लोगोके ध्यानमे लानेके लिए ही तो हमने अपने यहाँ यह घानी लगाई है, अपना चावल खुद तैयार कर रहे है और खुद ही अपना आटा पीसते है। लेकिन इतने पर भी अगर वे ध्यान न दे तो हम क्या करे? कल्पना कीजिये कि लोग सत्य और अहिंसाके सन्देशपर ध्यान नही देते, तो क्या हम उनसे असत्य और अहिसा ग्रहण करनेके लिए कहेगे? हमे तो चाहिए कि राष्ट्रके लिए तथा जिन गरीब लोगोसे राष्ट्र बना है उनके लिए जो बात अच्छी हो उसे करते रहे। और लोग ऐसा करेगे या नही, इस बातकी हमे परवाह नही करनी चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १५ ३-१९३५

४१८ पत्र प्रेमाबहन कटकको

दुबारा नहीं पढा

१४ मार्च, १९३५

चि० प्रेमा

अब तो तेरा दूसरा पत्र आ जानेके कारण हाथसे लिखनेका लोभ छोडकर यह पत्र बोलकर लिखवा रहा हूँ।

तेरे पास रखे हुए सूतका थान नही बन सकता तो इसमे माफी माँगनेकी क्या बात है? मैने जो सूत भेजा वह पूरा न हो, तो इसमे तू क्या कर सकती है?

अरुणकी वर्षगाठ अप्रैलमे किसी दिन है। मुझे याद नही। सुशीलाके पत्रमे तारीख थी।

तेरे हाथोकी तुलना शायद मीराके हाथोसे की जा सकती है। जिन हाथोमे घट्ठे न पडे हो, जिनमे कभी छाले न पडे हो, वे हाथ किस कामके?

यहाँ जमनालालजीके पास नई मोटर नही, बल्कि घोडागाडी और बैलगाडी ही है।

कच्चे दूध भाजीकी पत्तियो और इमली पर रहकर देखना। मुँहासे शायद सब मिट जायेगे।

यहा तेलकी घानी लगाई है। अलसीका तेल निकालते है। सारा अनाज बा वगैरा सब बहने साफ करती है। नौकर कोई नही है। सब काम हाथसे ही होता है। मै हमेशा पगतमे ही खानेको बैठता हूँ।

यहाँसे एक मीलपर सिन्दी नामक एक गाव है। महादेव, मीरा, कनू, जमना लालजीकी मदालसा और रामकृष्ण रोज उसे साफ करने जाते है। मै भी एक बार हो आया था। फिर जानेका विचार है। गावकी सफाईका सवाल, हम स्वय भगी बने तभी हल होगा।

गावका जो चित्र तूने दिया है, वह जितना सजीव है उतना ही करुणाजनक भी है। हमें ऐसे गावोंसे निबटना है। यह काम न तो बुद्धि-बलसे होगा, न शरीरसे। केवल हृदय-बलसे ही यह हो सकता है।

आज तो इतनेसे ही जितना सतोष मान सके, मान लेना। तेरी प्रगतिका विवरण तो मुझे चाहिए ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० १०३६८) से। सी० डब्ल्यू० ६८०७ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक।

४१९ पत्र ब्रजकृष्ण चॉदीवालाको

१४/१५ मार्च, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारी दीर्घ आयु हो। तुमारे सब शुभ मनोरथ सफल हो।

तुमारा यहा रहना व्यर्थ समझता हूँ। तुमारी बीमारी मुझसे सही नहीं जायगी। जिस जगह शरीर अच्छा रहे वहीं जाओ और रहो। आज ही जाना उचित मानता हू। पूछना है तो डाकसे पूछो।

मै तुमारे लिये मा का स्थान अवश्य लेना चाहता हू, लेकिन मेरेमें इतनी योग्यता पाता नहि हूँ। मा सेवा करती है, कभी लेती नहीं। मैंने तो तुमसे सेवा ही ली है, सेवा करनेका स्मरण तक नहीं है। मा आज्ञा नहीं करती है, मैंने तो आज्ञा ही की है। अब मैं तुमको क्या आश्वासन दू? मा के साथ अवश्य दक्षिणकी मुसाफरी करो। पाडिचेरी जानेमें कोई हानि नहीं मानता। बनारस अच्छा नहीं लगता। वहा राजयोग कहा? यदि पाडिचेरी नहीं तो देहरादून, अल्मोडा इत्यादि जगह जाओ। हाल तो दिल्ली ही ठीक है।

दिल्लीमें जो सेवा अच्छी लगे वह करो। बिना मेंबर हुए मनुष्य अवश्य ग्राम-उद्योगका काम कर सकता है। पुस्तकके बारेमें मैं कह चुका हू। [१]

[२] किसीके दो सहायक नहीं होते। एक ही है परमेश्वर, बाकी सब मके समझो। [३]

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० १०२३३ से, सौजन्य ब्रजकृष्ण चादीवाला।

१, २ और ३ साधन-सूत्रमें छोड़ दिया गया है।

४२० हम सब भगी

अस्पश्यतासे जितने विषैले फल पैदा हुए उन सबका तो हमे पता भी नही। अब चूकि गावोकी सफाई की ओर ध्यान दिया जा रहा है, इसलिए यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि गावो और शहरोकी गदगीका खास कारण हमारा यह अस्पश्यता-विषयक विश्वास है। हम अपना ही मैला छूने और उसे साफ करनेमे डरते है, और हमारा जो स्पष्ट धर्म था उसका पालन हमने अपने ही किन्ही भाई-बहनो को सौप दिया है। हमने उन्हे इसलिए अपने समाजसे बहिष्कृत कर रखा है, उन्हे अस्पश्य मान लिया है और हम उनके सुख-दुखकी तरफ देखते तक नही, क्योकि वे हमारी सबसे अधिक महत्त्वकी सेवा करते है।

इस सामाजिक बुराई और पापको दूर करनेका एकमात्र उपाय यही है कि हम सब अपने अपने भगी बन जाय, तभी हम स्वच्छताकी कला शीघ्र सीखेगे गदगीसे पैदा होनेवाले अनेक महारोगोके चगुलसे छुटकारा पायेगे और इसके साथ ही हमे अर्थलाभ भी होगा। जी० आई० फाउलर नामक एक लेखकने 'सम्पत्ति तथा दुर्व्यय' नामकी एक अग्रेजी पुस्तकमे लिखा है कि मनुष्यका मैला अच्छी तरह ठिकाने लगाया जाये तो प्रति मनुष्यके मैलेसे हर साल २) की आमदनी हो सकती है। अनेक जगहोमे तो आज सोने-जैसा खाद यो ही पडा-पडा नष्ट हो जाता है, और उलटे उससे बीमारिया फलती है। उक्त लेखकने प्रो० बुलटिनीकी 'कूडे कचरेका उपयोग' नामक पुस्तकसे जो उद्धरण दिया है, उसमे कहा है कि "दिल्लीमे रहनेवाले २,८२,००० मनुष्योके मैलेमे से जो नाइट्रोजन पैदा होता है उससे कमसे कम १० हजार और अधिकसे-अधिक ९५ हजार एकड जमीनको पर्याप्त खाद मिल सकती है।" मगर चूकि हमने अपने भगियोके साथ अच्छी तरह बर्ताव करना नही सीखा है इसलिए प्राचीन कीर्तिवाली दिल्ली नगरीमे भी आज ऐसे-ऐसे नरककुड देखनेमे आते है कि हमे अपना सिर शर्मसे नीचा कर लेना पडता है। अगर हम सब भगी बन जाये तो यह तो हमे मालूम हो ही जायेगा कि हमें खुद अपने प्रति कैसा बर्ताव करना चाहिए। हमे यह भी ज्ञान हो जायेगा कि आज जो चीज जहरका काम कर रही है उसे पेड पौधोके लिए हम किस प्रकार उत्तम खादमे परिणत कर सकते है। अगर हम मनुष्यके मलका सदुपयोग करे तो, डॉ० फाउलरके हिसाबके अनुसार, भारतकी ३० करोडकी आबादीसे सालमे ६० करोड रुपयेका लाभ हो सकता है।

यह सोचकर घबरा नही जाना है कि यह प्रश्न तो बहुत विशाल है। जिसके गले यह बात उतर गई हो वह खुद ही इसे शुरू कर दे, और हृदयमे यह पूरी श्रद्धा रखे कि अगर उसका उत्साह अत तक ऐसा ही बना रहा तो अवश्य ही सब लोग उसके दृष्टान्तका अनुकरण करेगे। 'श्रद्धा' शब्द शायद यहाँ उपयुक्त न

होगा। क्योंकि मनुष्यका मल पशुके गोबरकी ही तरह मूल्यवान है, यह श्रद्धाका नहीं किन्तु नित्यके अनुभवका विषय है। आवश्यकता तो केवल युग-युगान्तरोंसे जमी हुई जड़ता दूर करनेकी ही है। जिस चीजको आज थोड़े-से आदमी बुद्धि और एकाग्रताके साथ करेंगे, उसे कल सभी मनुष्य करने लगेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १५-३-१९३५

४२१. पत्र: हरिभाऊ फाटकको

१५ मार्च, १९३५

प्रिय हरिभाऊ,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमसे विवरण मिलने पर मैं 'हरिजन' के लिए पैसा मण्डल पर कुछ लिखनेकी कोशिश करूँगा। मैं उम्मीद करता हूँ कि तुमने यह स्पष्ट कर दिया होगा कि दाता तुम हो, यद्यपि हो सकता है कि यश मुझे मिले। अनकुटे समूचे चावलको खानेसे तुम्हें पेचिश जरा भी नहीं होनी चाहिए थी। यदि चावल कम पका रह गया था तो वह तुम्हें खाना ही नहीं चाहिये था। यह चावल सजाके रूपमें नहीं, बल्कि स्वास्थ्य रक्षाके एक सहायक साधनके रूपमें खाना चाहिए। प्रत्येक कार्यकर्ताको, यदि वह ईमानदारीसे ऐसा कर सकता है तो इसका पूरी तरह प्रयोग करनेके पश्चात् यह अवश्य प्रमाणित करना चाहिए कि समूचा चावल ज्यादा स्वादिष्ट है और समान तृप्तिके लिए इसे पालिश किये गये चावलकी अपेक्षा कम मात्रामें खानेकी जरूरत है और यह किसी भी प्रकार शरीरके लिए क्षतिकारक नहीं हो सकता। मुझे इसमें सन्देह नहीं है कि गुड़के साथ दूध पीनेसे तुम्हें लाभ होगा। मैं आशा करता हूँ कि तुम इस प्रचलित अन्धविश्वाससे मुक्त हो कि दूध गुड़के साथ नहीं पीना चाहिए। देशके तुम्हारे वाले हिस्सेमें हरिजनोंकी हालत बड़ी सावधानी और चतुराईसे सुधारी जानी चाहिए। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जबतक हम यह सामान्य सिद्धान्त नहीं अपनाते कि गाँवोंसे ही अपने कार्यकर्त्ता चुनें, तबतक हम कोई प्रगति नहीं कर सकते, और मेरे मतमें वास्तविक स्वराज्य युगों-पुरानी इस समस्याको सफलतापूर्वक हल करनेमें ही निहित है। जिस कागजपर तुमने लिखा है, वह कहाँसे प्राप्त किया है और किस कीमतका है?

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४२२ पत्र · अमृतलाल वि० ठक्करको

१५ माच, १९३५

भाई ठक्कर बापा,

आपका पत्र मिला। आपके समयकी मियाद बढा देनेमे मुझे कोई एतराज नही है। हा, आप सो जाये तो मुझे एतराज होगा। कितनी मियाद चाहते है? सीमा निर्धारित नही करेगे तो काम पूरा नही होगा। सूरजबहन यहा आई थी तब उसने ज्यादासे-ज्यादा छ महीन मागे थे। कहा था कि हो सका ता एक ही महीनेमे खाली कर दूगी। यह बात, जहाँतक मुझे याद है, नवम्बरमे हुई थी। तो क्या म इसे चौथा महीना गिनू और मई की ३१को आखिरी तारीख मानू? इस बहनका उसके चीखने चिल्लानेसे हारकर रहने देना मैं अनुचित समझता हूँ।

'हरिजन'के शास्त्रीकी जिम्मेदारी आपकी है। 'हरिजन'का पूना ले जाऊँगा और इस सम्बन्धमे एक भी पैसेका बोझ सघपर नही पडने दूगा। किन्तु शास्त्रीकी रोजी छुडवा देनेके बाद उसे निबाहना, क्या हमारा कर्त्तव्य नही हो जाता? यदि वह बिलकुल ही निकम्मा न हो तो उसे निबाहना ही चाहिए। मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि वह निकम्मा नही है। इस सम्बन्धमे मेरा मार्गदर्शन कीजिये। मेरी आख भी, कान भी आप ही हैं।

मैंने गणेशनके बारेमे जो लिखा था, उस पर दृढ हूँ।

नट्टार और हरिजनका झगडा खत्म कर सके, तो बडा काम हो।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११५३) से।

४२३ पत्र वसुमती पण्डितको

वर्धा
१५/१६ माच, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। पिछला भी मिला था, किन्तु मैं दूसरे पत्रकी राह देख रहा था।

देखना कब्ज मत होने देना। पत्तेदार सब्जियाँ चाहे जहाँ पैदा की जा सकती हैं, यह तो तू जानती ही होगी। बीज बोनेके बाद सात दिनमे ही कुछ पत्ते निकल आते हैं। बोचासणके पास जो खेत हैं, उनमे किसी भी किसानको लेकर जायें

तो वह खाने योग्य कितनी ही भाजियां दिखा देगा। कई भाजियाँ घासके समान उगती है, घास ही होती है। दस बीस पत्ते भी मिल जाये तो काम बन जाता है। मेथी, राई, धनिया किस घरमे नही होती?

मेहमान कौन आते है? रसोईमे क्या बनाती है? चावल बिना कुटे बनाती है न? उन्हे पकनेमे कितना समय लगता है? कुटे चावलकी अपेक्षा अधिक समय लगता है क्या? घडीसे समयका अन्दाज कर लेना चाहिए।

सवेरे उठनेका क्या नियम है? प्रार्थना होती है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९३९५) से। सी० डब्ल्यू० ६४० से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित।

४२४ पत्र गंगाबहन वैद्यको

१५/१६ मार्च, १९३५

चि० गंगाबहन,

तुम मेरे पत्रके लिए क्यो चिन्ता करती हो? तुम्हे मेरे पत्रकी इतनी जरूरत नही है, मैं ऐसा सोचकर समय बचानेके विचारसे तुम्हे पत्र नही लिखता। कुछ विशेष लिखनेको हो तो लिखूं भी। फिर किशोरलाल यहा है, इसलिए उससे बहुत-कुछ मालूम कर लेता हू और उसकी मार्फत तुम्हे बता देता हूँ।

तुम्हारा शरीर स्वस्थ है न? अगर वैद्योके साथ बहुत समय बिताती हो तो समझना बडी भूल करती हो। हिन्दुस्तानके अथवा संसारके लोगोकी आवश्यकता वैद्यक नही है। प्रकृति सर्वश्रेष्ठ वैद्य है। तुम जानती होगी कि जहा वैद्य अधिक होते है, वहा आरोग्यमें वृद्धि होती है अथवा लोग व्याधिरहित हो जाते है, ऐसा अनुभव कही किसीका नही है। इसके विपरीत, जहा लोग प्रकृतिके, अर्थात स्वच्छताके नियमोका पालन करते है, वहा अवश्य आरोग्यमे वृद्धि होती है। तुर्कीकी एक बहन यहा कुछ दिन रह गई। वह कहा करती थी कि तुर्कीके ग्रामवासियोसे छः चीजोसे बचनेके लिए कहा जाता है, जिनमे से एक है वैद्य। इसका अर्थ यह नही है कि इस अर्जित ज्ञानका उपयोग ही नही करना चाहिए। इसका अर्थ यही है कि इस ज्ञानका उपयोग कमसे-कम करना चाहिए, और जब करे तब भी लोगोको रोगोकी रोकथाम सिखानी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९३९५) से। सी० डब्ल्यू० ६४० से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित।

४२५ पत्र एडमण्ड और युवान प्रिवाको

१६ माच, १९३५

प्रिय आनन्द और भक्ति,

आप लोगोका लम्बा प्यार-भरा खत मुझे मिला था, किन्तु मैं उसका अत्यन्त सक्षिप्त उत्तर बोलकर लिखवा रहा हूँ। उम्मीद है आप इसे ठीक मान लेगे, क्योकि एक तो मेरे पास वक्त भी कम है, और फिर इस समय तो मैं सिफ बाये हाथसे ही लिख पाता हूँ। इसे 'राइटस कैम्प' कहा जा सकता है। आप शायद यह जानकर आश्चय करे कि मुझे 'यूटोपिया' पढनेका कभी मौका ही नही मिला, हालाकि इसकी मैंने तारीफ बहुत सुनी है।

हमारा ग्राम-काय ठीक चल रहा है। हमें जमनालालजी द्वारा वर्धामे १३ एकड जमीन मिली है, जहा हम एक आदश गाँव बसानेकी कोशिश कर रहे हैं। हमारे निवाससे वह जगह कुछ दूरी पर है। लेकिन अब हम वहा रहने लगे है। आप फिर जल्दी ही भारत आ जाइये। आप शायद जानते हो कि तीसरे दर्जेमे यात्रा करनेमे कोई ज्यादा दिक्कत नही होती और वह सस्ती भी है।

मुझे उम्मीद है कि 'हरिजन' आपके पास नियमित रूपसे पहुँच रहा होगा। देवदासका काम बिलकुल ठीक चल रहा है। वह तथा उसकी पत्नी अपने बच्चेको बहुत ही प्यार करते है।

आप दोनोके लिए प्यार।

बापू

डा० एडमण्ड प्रिवा
बेलाविस्ता
लोकार्नो, स्विट्जरलैड

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २३३९) से। **महात्मा**, खण्ड ४, पृ० ३२ के सामनेकी प्रतिकृतिसे भी।

४२६ पत्र एन० जी० आप्टेको

१६ मार्च, १९३५

प्रिय मित्र,

जो फाइल आपने मुझे भेजी थी मैंने उसे अब ढूंढ निकाला है। मैं इसे आपको रजिस्टर्ड बुक पोस्टसे लौटा रहा हूँ। आपने कृपापूर्वक मुझे जो दो नमूने भेजे थे, उनके नष्ट हो जानेपर मैं अपना खेद प्रकट कर चुका हूँ। यदि आप उन्हें फिरसे भेजेंगे तो मैं उनका प्रयोग करके आपको रिपोर्ट भेजूंगा। फिर भी मैं यह कहूँगा कि इन रसोंका निर्माण किसी भी ग्राम उद्योग का भाग कदापि नहीं हो सकेगा। ये स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी किसी बड़े महत्त्वके नहीं हैं। अन्तिम शोधोंने यह दिखा दिया है कि ये रस उन फलोंके विटामिनोंको सुरक्षित नहीं रख पाते। आपने जो रस तैयार किये हैं वे यदि इन विटामिनोंको बनाये रखते हैं, तो निस्सन्देह ही एक सफलता है।[1]

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४२७ पत्र एफ० मेरी बारको

१७ मार्च, १९३५

चि० मेरी,

पता नहीं मैंने तुम्हारे पिछले पत्रका उत्तर दिया या नहीं। अब मुझे तुम्हारा दूसरा पत्र मिला है। तुम लोगोंको हमेशा ही दवाइयोंके दाम देनेको मजबूर नहीं कर सकती। हमेशा उनसे यही कहो कि जो-कुछ भी वे दे सकते हैं, उन्हें जरूर देना चाहिए — बतौर फीसके नहीं, बल्कि जो लोग कुछ भी नहीं दे सकते उनकी सहायताके लिए। जहाँ भी तुम देखो कि लोग बेजा फायदा उठा रहे हैं, तुम्हें उनको बिना पैसेके दवाई देनेसे इनकार कर देना चाहिए। लोगोंको अपने पास दवाइयाँ लेने आनेके लिए बढ़ावा मत दो, उनको प्राकृतिक जीवनकी ओर ले जाओ और प्राकृतिक चिकित्साके घरेलू उपचारके तरीके बताओ।

यह जरूरी है कि अपंग व्यक्तियोंसे किसी कामकी अपेक्षा रखे बिना उनके भोजन और वस्त्रका प्रबन्ध किया जाये। इसका प्रबन्ध करना, हर सुव्यवस्थित समाजका प्रथम कर्त्तव्य है।

[1] देखिए "पत्र एन० जी० आप्टेको" पृ० ३०७ भी।

तुमने कुलियोकी समस्याके बारेमे जो कुछ कहा है, उसे मै समझता हूँ। निश्चय ही पडोसीपर अपनी निभरता महसूस किये बिना तुमको उससे सहायता मागनेका अधिकार था। इसमे किसी भी सिद्धातके हननका प्रश्न नही था। अपना काफी समय गवा देनेका खतरा उठाकर भी प्रत्येक कामको अपने ही हाथोसे करनेका मेरी सी०[1]का तरीका हँसीमे उडा देनेकी चीज नही है। किसी एक कामको करनेके एकाधिक तरीके यदि सुलभ हो, तो हमे स्थानीय परिस्थितियोके अनुकूल उनमे से एकको चुन लेना चाहिए।

अगर पेचिशका जरा भी माद्दा हो, तो निहायत जरूरी है कि तुम किसी भी तरह अपनेको बिलकुल मत थकने दो, सिर्फ हलका काम ही करो।

मै शारीरिक श्रम नही कर रहा हूँ। मै बस रसोईकी देख-भाल करता हूँ, जिससे उसे गाँवके वातावरणके अनुरूप बना सकू। सभी नौकरोको छुट्टी दे दी है। केवल एकको ही अपने पास रखा है, क्योकि उसने अपने-आपको इतना ढाल लिया है कि हमारे साथ बिलकुल घुलमिल चुका है। वह परिवारका एक सदस्य बन गया है। वह प्रत्येकके साथ कधेसे कधा मिलाकर काम करता है। और जहाँ पहले उसे महीनेमे ७ या ८ रुपये मिलते थे, अब वहा ८ रुपये और खाना मिलता है जिसका मतलब होता है कमसे-कम १४ रुपये महीना।

मेरी सी०की यह धारणा बिलकुल गलत है कि भारतीय उद्योगपतियोके मुकाबले विदेशी उद्योगपति अधिक अच्छे होते है। मै मानता हूँ कि दोनोके बीच चुननेकी ज्यादा कोई गुन्जाइश नही, लेकिन जितनी भी है, उतनी भारतीयोके ही पक्षमे है। उसका सीधा सा कारण यह है कि वे भारतीय सम्पदाको देशके बाहर नही ले जा सकते और विदेशी उद्योगपतियोकी अपेक्षा उनके साथ पेश आना ज्यादा आसान है, क्योकि विदेशी उद्योगपति अपनी स्थिति सुदृढ बनानेके लिए शस्त्र-बलका प्रयोग करनेमे भी सकोच नही करते और कारगर ढगसे उसका प्रयोग करनेमे वे समर्थ है। भारतीय उद्योगपति नि शस्त्र है और यह भी समझते है कि वे अपने मातहत काम करनेवालोके साथ छल कपट नही कर सकते।

अगर फसले काटनेके मौसममे तुम देखो कि पडोसियोको तुम्हारी सहायता चाहिए, तो निश्चय ही तुम्हारा कर्त्तव्य हो जाता है कि बदलेमे उनसे अपना बरामदा तैयार करवानेमे मदद की अपेक्षा रखे बिना, तुम उनकी सहायता करो।

इस समय तुम्हारा ९ मार्चका पत्र मेरे सामने है। डकनके दो अध्यायोके सम्बन्धमे हुई हमारी चर्चा मुझे अच्छी तरह याद है। अध्यायोमे ग्राम-कार्यकर्त्ताओका उल्लेख था। चर्चाके दौरान तुमने कहा था कि यद्यपि उनके विचारोसे तुम सामान्यत सहमत हो, तथापि उनमे कुछ ऐसे भी अश है, जिनके बारेमे तुम्हारा खयाल है कि उनसे लेखकका आवश्यकतासे अधिक उत्साह तथा भावुकपन टपकता है। हमारी चर्चा महज चर्चाके लिए ही नही थी। तुमने गाव-गाव घूमनेवाले अध्यापकोके

1. मेरी चेजले।

उनके सुझावपर खास जोर दिया था। मैं सोचता हूँ कि अगर मुझे तुम्हारा ९ तारीखका पत्र न मिलता, तो यही एक मुद्दा था जो अनदेखा रह जाता।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०३५) से। सी० डब्ल्यू० ३३६५ से भी, सौजन्य एफ० मेरी बार।

४२८ पत्र आर० एस० पण्डितको

१७ मार्च, १९३५

प्रिय रणजीत,

आशा है कि अलमोड़ामें शैल आश्रमको खरीदनेके सम्बन्धमें मेरा तार तुम्हें मिल गया होगा। संघकी समितिने यही तय किया कि उन्हें कीमत १५,००० रु० से कम नहीं करनी चाहिए। तुम उसका कब्जा तुरन्त ले सकते हो। वहाँ अभी एक सार्वजनिक कार्यकर्त्ता रहते हैं। जबतक कि तुम अपने उपयोगके लिए पूरी इमारत नहीं चाहते, तबतक उसके एक भागमें इनके रहनेपर शायद तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। किन्तु जैसे ही तुम कब्जा लेनेको तैयार होगे, उन्हें तुरन्त ही हटाया जा सकता है।

अब तुम भुगतान और कानूनी हस्तान्तरणके लिए जमनालालजी अथवा श्री किशोरलाल मशरूवाला, अध्यक्ष, गांधी सेवा संघसे पत्र-व्यवहार करना।

स्वराज्य भवनके सम्बन्धमें तुमने जो कहा, उसे मैं समझता हूँ।

[पुनश्च]

इस पत्रकी एक प्रतिलिपि जमनालालजीको भी भेजी गई है।

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४२९ पत्र जयप्रकाश नारायणको

१७ मार्च, १९३५

चि० जयप्रकाश,

तुमारा तार मिला था। कल तार भेजनेकी कोशीश की, लेकिन कल डाक ओफिस बध थी। ज्यादा पैसा देनेसे ही खुल सकती थी। इसलिए पत्रसे ही उत्तर देनेका निश्चय कर लिया। उत्तरकी ऐसी जल्दी तो कुछ नही थी।

राजेन्द्रबाबु कलकत्ते जा रहे हैं। वहा मश्विरा करनेके बाद अपनी राय बनायेंगे।

रा० बाबुकी शिकायत थी तुमने जाइन्ट-कायका लिखा था। लेकिन जॉइन्ट कैसे हो सके? या तो काग्रेस दिन नियत करे अथवा न करे। नान काग्रेसमेन और काग्रेस मेनकी जाइन्ट सभा सभव है। काग्रेस नाममे सोशीयलिस्ट इ० सब काग्रेसमेन आ ही जाते हैं, सोशीयलिस्ट काग्रेसके अतगत है न?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ३४४९) से।

४३० प्रमाण-पत्र तुलसी मेहरको

१७ मार्च, १९३५

नेपालके चर्खा प्रचारक श्री तुलसी मेहरजी नेपाल सरकारके तरफसे चर्खाके सम्बन्धमे निरीक्षण करनेके लिये भारतवर्षमे भ्रमण कर रहे हैं। मेरी उमेद है कि सब चर्खाप्रेमी उनके निरीक्षणमे उनको यथासभव माहिती देंगे और आवश्यक सहायता देंगे।

मो० क० गाधी

प्रमाण-पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६५४८) से।

४३१ भाषण अ० भा० ग्रा० सघके बोर्डकी बैठकमें[1]

[१८ माच, १९३५ या उससे पूव][2]

इस प्रतिज्ञापर स्पष्ट ही एक आध्यात्मिक छाप है। हम बार-बार इसकी चर्चा करते है —यह तथ्य ही प्रकट करता है कि बोड हर मामलेमे सघके उद्देश्योके अनुरूप ही पूरी तौरपर अपने कर्त्तव्योका निर्वाह करना चाहता है। इस प्रतिज्ञाको पूरे सोच विचारके बाद ही अपनाया गया था और हमे इस बातकी कतई चिन्ता नही करनी है कि हमारी सदस्य सख्या पर इसका कोई प्रतिकूल प्रभाव तो नही पडेगा। बोड आधे दजन सदस्योसे भी अपना काम बखूबी चला सकता है। हम बस इतना करना है कि हम इस प्रतिज्ञाका अथ लोगोको पूरी तरह समझा दे और यह देखनेकी जिम्मेदारी प्रतिज्ञा ग्रहण करनेवाले व्यक्ति-विशेषपर ही छोड दे कि वह सभी शर्तों का निर्वाह कर सकता है या नही। कदम-कदम पर सदस्यगण जरूर ही खुदसे यह सवाल करेगे कि क्या वे अपनी शक्ति का श्रेष्ठ अश तथा अपनी सम्पूण प्रतिभा सघके उद्देश्योमे लगा रहे है, मतलब यह कि क्या भोजन करते समय तथा यात्रामे भी उनको इसका ध्यान रहता है। अगर आप सोचते है कि इस प्रतिज्ञामे कुछ अस्पष्टता है, तो आप इसे और भी स्पष्ट बना सकते है, लेकिन मै नही समझता कि इसमे कोई अस्पष्टता है। यह तो भले आदमियोकी प्रतिज्ञा है और इस प्रतिज्ञाकी क्या अपेक्षाएँ है, यह निश्चित करनेका काम प्रत्येक सदस्यकी भलमनसाहत पर छोड दिया गया है। हमे आदमीकी जिन्दगीकी बखिया उधेडनेकी जरूरत नही, अपने कामोकी अच्छाई-बुराईका फैसला हर व्यक्तिको स्वय ही करने दो। मै आपको बताता हूँ कि वकालत करनेवाला एक वकील भी अपनी सारी प्रतिभा और शक्ति सघके उद्देश्योकी पूर्तिमे लगा सकता है। इसके लिए वह अपने दफ्तरकी शकल ही बदल देगा। हाथके बने कागजके रीमो और गावमे तयार की गई स्याहीपर अपने पैसे खच करेगा और ध्यान रखेगा कि उसके दफ्तरसे जितने भी दस्तावेज निकले, सबके सब उसी कागजपर उसी स्याहीसे लिखे हो। उसके दफ्तरमे काफी लोग काम करते है। वह जब भी समय निकाल सकेगा, अपने कमचारियोमे सघके प्रति रुचि पैदा करनेकी कोशिश करेगा और उन लोगोसे आग्रह करेगा कि, जहातक

१ अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके बोर्डकी बैठकमें सदस्यताके सम्बन्धमें एक लम्बी बहस हुई थी और सदस्योंने गाधीजीकी सलाह माँगी थी।

२ अ० भा० ग्रा० सघकी बैठक वर्धामें १६ से १८ माच, १९३५ तक हुई थी।

मुमकिन हो, वे गाँवमे बनी चीजे ही इस्तेमाल करे। और इसी प्रकार अन्य लोग भी ऐसा कर सकते हैं।

[अग्रेजीसे]

हरिजन २२-३-१९३५

४३२ बातचीत : अ० भा० ग्रामोद्योग सघके सदस्योके साथ[1]

[१८ मार्च १९३५ या उससे पूर्व][2]

बगालसे आए वैज्ञानिक सदस्यो और गाधीजी के बीच अनकुटे चावलको लेकर वाक-युद्ध आरम्भ हो गया। गाधीजी द्वारा परिभाषित अनकुटे चावल कुछ सदस्योने यहाँ पहली बार खाये थे और कुछ सदस्य समझते थे कि ये चावल आशिक रूपसे कुटे हुए है और हाथसे वैसे ही कुटे हुए हैं जैसे आज भी हमारे गावोमें मिलते हैं। गाधीजी ने स्वास्थ्य सम्बन्धी रायोके आधारपर अपना पक्ष रखा था, वे अपने विचारसे तिल-भर भी हटनेको राजी नहीं हुए। उन्होने कहा कि छिलके और दानेके बीचकी भूसी तथा भूसी और दानेके बीचकी सफेदी और अकुर बननेकी शक्ति रखनेवाले हिस्सेमें जो विटामिन होते हैं, वे मिल द्वारा कुटे हुए चावलमें नष्ट हो जाते हैं और उन विटामिनोको भूसीयुक्त चावलके सिवा और किसी भी तरीकेसे सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। एक बार कुटे या दो बार कुटे चावलमें उन्हे सुरक्षित रखा जा सकता है, इसे रासायनिको और वैज्ञानिकोको सिद्ध करना होगा।

[एक सदस्य] लेकिन गाँवमें ढेंकीसे कूटा गया चावल करीब-करीब अनकुटा ही है।

[गाधीजी] यह किसी वैज्ञानिक-जैसी बात नही हुई। क्या हम समकोणके बदले करीब-करीब समकोण कह कर काम चला सकते हैं? एक समकोण ९० डिग्रीका होता है, न कम, न अधिक।

लेकिन जनता थोडी मात्रामें कुटे हुए चावलोको खानेकी इतनी अभ्यस्त हो गई है कि उससे बिलकुल अनकुटे चावल खानेके लिए कहना कठिन है।

एक सुधारकको इस प्रकारका तर्क प्रस्तुत नही करना चाहिए।

यह आसानीसे नहीं पकता और पकनेपर लौंदा बन जाता है और लोगोको इसे देखकर खानेकी रुचि नहीं होगी।

१ महादेव देसाईके "वीकली नोट्स" (साप्ताहिक टिप्पणियाँ) से उद्धृत।

२ देखिए पिछला शीर्षक।

इसे पकानेमे ज्यादा वक्त लगता है, यह बात सही है। पर यह चावल ज्यादा स्वादिष्ट होता है, कुटे हुए चावलसे भी ज्यादा स्वादिष्ट। यह निस्सन्देह प्रमाणित किया जा चुका है। फिर जो चीज देखनेमे अच्छी है, वह अच्छी ही हो यह आवश्यक नही है। अच्छी चीज वह है जिसका स्वाद अच्छा हो।

[गोसी बहन] बापू, क्या आप अपने तर्कके आवेशमें सदियो पुराने मुहावरोको बिगाड नही रहे?

[गा०] ठीक है, जब मै सदियो पुरानी रूढियो और अन्धविश्वासोको समाप्त करने चला हूँ, तब और क्या कर सकता हूँ?

वैज्ञानिक सदस्योने भी उनके इस तर्कको स्वीकार नहीं किया। उन्होने इस बातको स्वीकार किया कि चावलको एक बार कूटनेसे भी या कुछ अंशोमें उसे कूटनेसे भूसी उतर जाती है, लेकिन क्या भूसी स्वास्थ्यके लिये आवश्यक पदार्थ है?

अगर आप लोग यह सिद्ध कर सके कि यह स्वास्थ्यके लिए जरूरी नही है तो मै खुशीसे अपनी हार मान लूंगा।

लेकिन खाद्य पदार्थकी अच्छाई उसमें विटामिनो और प्रोटीनोके होने या न होनेमें ही निहित नहीं है। उसके सम्बन्धमें प्राणी-शास्त्रीय प्रयोग भी होने चाहिए, और उन्हीं प्रयोगोको आधार बनाकर समस्या सुलझाई जानी चाहिए।

वैसे प्राणी-शास्त्रीय प्रयोग करना आपका ही काम है। पहलेसे ही यह न कहे कि बंगालियोको रोज आधा पौंड चावल चाहिए और फिर वह भी इस रूपमे कि वह आसानीसे उन्हे आधा पौंड चावल हजम हो सके। आप उनके लिए वैज्ञानिक विश्लेषण करके एक आदर्श भोजन निश्चित करे। जबतक साधारण देहातीके भोजनमे थोडा दूध और उससे निकलनेवाले स्निग्ध पदार्थ और हरी शाक सब्जीका समावेश नही हो जाता, मुझे चैन नही है। दुर्भाग्यसे हमारे चिकित्सकोने गरीब आदमीकी आवश्यकताओको ध्यानमें रखकर इस प्रश्नको मानवतावादी दृष्टिकोणसे हल करनेकी कोशिश ही नही की है।

बातचीतके परिणामस्वरूप, चावलोके जिन प्रकारोको अनकुटे चावलके प्रमाण-पत्र दे दिये गये थे, वे रद्द कर दिये गये और निश्चित हुआ कि नये प्रमाण-पत्र देना स्थगित कर दिया जाये। सदस्योसे यह भी कहा गया कि इस विषयकी किसी भी शंकाको निर्मूल करनेके लिए वे इस सम्बन्धमें और छानबीन करे तथा अनुसंधान करें।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २२-३-१९३५

४३३ पत्र मणिलाल और सुशीला गांधीको

दुबारा नहीं पढा

१८ मार्च, १९३५

चि० मणिलाल तथा सुशीला,

तुमने एजेंटका वर्णन ठीक किया है। मुझे उनका खयाल आ रहा है। "सैयद" नही लिखा जाता, "सैयद साहेब" लिखना चाहिए। बहुत आलोचना करके मैं तुझे नाराज नही करना चाहता। मैं मानता हूँ कि तू जानबूझकर द्वेषभावसे कुछ नही करता। किंतु यह भी सच है कि तुझे बहकाया जा सकता है, उकसाया जा सकता है, और तब तू अटशट कुछ भी बक सकता है। फिर तू अपुष्ट तथ्योपर भी राय कायम कर सकता है। लेकिन यह सब तू एकदम बदल सके, यह मुश्किल है। हाँ, जो तू रोज आश्रमकी प्रार्थना करता हो, विवाहके समय तुम दोनोको जो बारहवाँ अध्याय रटाया गया था उसका पाठ करता हो और इन सबका मनन करता हो, तो उससे तेरा हृदय कोमल हो जाये और तेरे शब्दोसे नम्रता, प्रेम, सत्य झरा करे। तब तू, दूसरे क्या करते है यह न जाचने बैठे। तू क्या करता है यही रोज जाचे। दूसरोके काम जाचनेके पूरे साधन ही ईश्वरने हमें नहीं दिये। मनुष्यके हृदयकी गुफामें कौन प्रवेश कर पाया है? और वहाका ज्ञान न हो, तबतक सब अधूरा ही है न? इसीलिए बुद्धिमान लोग कह गये है कि दुनियाका काजी नही बनना चाहिए, अपने ही बन सके तो सब हो गया। आप भला तो जग भला, यह उपरोक्त बातका ही पर्याय है।

बाकी लिखनेकी फुर्सत नही है। अरुणके लिए अपने सूतकी खादी बनाकर भेजूगा तो, पर वह तुझे समयपर नही मिलेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ४८३४) से।

४३४ पत्र वल्लभभाई पटेलको

१८ मार्च, १९३५

भाई वल्लभभाई,

सलाह देना कठिन है। बल्लूभाई, कुछ बँध गये दीखते हैं। अगर प्रार्थना कराये तो मिठाई क्यों न बँटवाये? क्या मुफ्त सहायता और अनुदान की शर्तें एक ही होती हैं? सरकारकी माग इन दोनोंमें कोई भेद नहीं करती।

कुछ भी हो। बल्लूभाई मित्रोंमें मिले। सब मजबूत हों तो कहें सरकार और लोगोंके बीच लडाई बन्द नहीं हुई है। महोत्सव खानगी व्यक्तिकी जन्मगाठ न होकर राजाके राज्यका महोत्सव है। हम जिस राज्यकी नीतिकी निन्दा करते हैं, उसका उत्सव मनानेमें भाग लेना दम्भकी कीमत वसूलने जैसी बात होगी। हमारी सविनय अवज्ञाकी लडाई स्थगित है, इसलिए सरकार आज्ञाएँ देकर जो चाहे सो करा सकती है। पर स्वेच्छासे खुश होकर तो लोग कुछ नहीं करेंगे। सरकार ऐसे उत्सव जबरदस्ती तो शायद ही मनवाये। जहातक सम्भव हो, हमें किसीका जी नहीं दुखाना है, इसलिए सरकार हमें विवश न करे। हम जोर-जबदस्ती नहीं करेंगे। जिसकी इच्छा हो वह उत्सवमें जाये। सरकार नगरपालिकाको कुछ न लिखे, नगर पालिका सरकारको कुछ न लिखेगी, और न कोई प्रस्ताव ही पास करेगी।

ऐसे अवसरपर नगरपालिकाको कुछ सुविधाएँ दी जाये, तो भी मैं मानता हूँ कि वह उत्सवमें भाग नहीं ले सकती। बडा प्रश्न तो बल्लूभाई छेड ही नहीं सकते।

यह तो मेरी साधारण राय हुई। अहमदाबादकी परिस्थितिके अनुसार कुछ और ही व्यवहार करना आवश्यक हो, तो वह मैं कैसे समझ सकता हूँ?

अब आपको जैसा ठीक लगे वैसा बल्लूभाईको रास्ता बताइए।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५३ ५४

४३५ पत्र जोहरीलाल मित्तलको

[१८ माच, १९३५ या उसके पश्चात][1]

भाई जोहरीलालजी

आपका तार व पत्र मिला है। डेप्युटेशन भी आ गया है। मुझे चाहिये दो लाख, लेकिन परिस्थिति भी समझता हू। जमनालालजी भी आग्रह कर रहे है। मै इतने प्रेमका विरोध कैसे करू? ईश्वरकृपा होगी तो मै २० तारीखको पहुँच जाऊँगा। आप पैसे जमा करनेकी पूरी कोशिश करे।

आडम्बर सब छोडे। वह काय धार्मिक समझकर करे। मुझे सब कानून इत्यादि भेजे। सम्मेलनकी नियमावली, अगले व्याख्यान, सम्मेलनका इतिहास इत्यादि भेजे।

आपका,
मोहनदास गाधी

मध्यप्रदेश और गाधीजी, पृ० ४८

४३६ पत्र शकरलाल बैकरको

वर्धा
१९ माच, १९३५

प्रिय शकरलाल,

मेसस किर्लोस्कर ब्रदसका इस मासकी १४ तारीखका पत्र जो उन्होने मुझे लिखा था मै आपको दे ही चुका हूँ।

उनके इस पत्रको मै इस सिफारिशके साथ भेजता हूँ कि परीक्षक उसपर अच्छी तरहसे विचार करे।

चूकि मेसस किर्लोस्कर ब्रदसने मुझे अपनी राय प्रकट करनेकी अनुमति दे दी है, इसलिए परीक्षकोके माग-प्रदशनके लिए अपनी राय भेजता हूँ। निम्नलिखित अनुच्छेदो के पहले दी गई सख्या उनके पत्रके अनुच्छेदोकी सख्या बताती है।

(२) वर्धामे हो रहा परीक्षण अब भी पूरा नही हुआ है। जहाँतक यह परीक्षण हो चुका है, मै यह कह सकता हूँ कि एक योग्य कारीगरको ४ घटेमें

१ डेप्युटेशनकी और गाधीजीके अप्रैल १९३५ में इन्दौरमें होनेवाले हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी अध्यक्षता स्वीकार करनेकी बात जमनालाल बजाजकी डायरीमें इसी तिथिके अन्तगत दर्ज है।

८००० गजसे ऊपर कातनेमें एक या दो बार सफलता मिली है। वर्धामें आठ घंटेमें १६००० गजकी कताई अभीतक कभी नहीं हुई है। यहां किसी भी स्त्रीने इसपर लगातार आठ घंटे काम नहीं किया है। इसपर मेरा परीक्षण अब भी चल रहा है। इसकी औसत सामर्थ्यपर अपनी राय जाहिर करनेसे पहले मैं इसका छः मास तक परीक्षण करना चाहूँगा। किंतु यदि परीक्षकोंको इस बातसे संतोष हो जाता है, तो मेरी अंतिम राय के अभावमें परीक्षकोंके निर्णयमें किसी भी प्रकारका विलम्ब नहीं होना चाहिए और न उनपर अन्यथा कोई प्रभाव पड़ना चाहिए।

(५) मैं इस रायका समर्थन नहीं कर सकता कि मशीन "प्रतियोगिताकी सभी महत्वपूर्ण और मुख्य शर्तोंको पूरा कर चुकी है।" मैंने अबतक केवल प्रथम और चतुर्थ, दो शर्तोंपर कार्य किया है।

उपयोगमें लानेकी सुविधाके गुणसे सम्बद्ध प्रथम शर्तको मैं छोटी चीज नहीं मानता। निश्चय ही यह मेरे मनमें एक अपरिवर्तनीय शर्त है। इस शर्तके बिना निश्चय ही ऐसी मशीनको तैयार करनेमें कोई कठिनाई नहीं होगी जो ८ घंटेमें १६००० गजसे अधिकका उत्पादन दे सके। इसके उपयोगमें लानेकी सुविधाके गुणको भारतके सात लाख गांवोंमें बिखरी करोड़ों झोपड़ियोंके प्रसंगमें सिद्ध करना होगा। 'सुविधा' शब्दके वेबस्टरके कोशमें दिये गये अर्थको मानते हुए मशीनपर दृष्टिमात्र डालनेसे कोई भी व्यक्ति जिसे भारतीय झोपड़ियों और परिस्थितियोंका ज्ञान है, इस बातको समझ लेगा कि यह मशीन किसी भी रूपमें उपयोगमें लानेकी सुविधाके गुणसे युक्त नहीं समझी जा सकती। भारतीय झोपड़ीके लिए यह निश्चय ही एक भारी और बेडौल मशीन है।

जहांतक शर्त ५ या ६ की बात है, मैं अपनी राय देनेमें पूर्णतः अक्षम हूँ।

जहांतक शर्त २ की बात है, इस विषयमें कोई राय देना अभी सम्भव नहीं है, उसमें अभी काफी समय लगेगा।

श्री काले और फर्मके अन्य सदस्योंसे जो मुझसे भेंट करने आये थे, मैंने यह बात समझ ली है कि मशीनका आकार जैसा आज है, उसमें कोई कमी नहीं लाई जा सकती। इस विषयमें मेरा बिलकुल समाधान हो गया है कि औसत आकारकी भारतीय झोपड़ीमें यह मशीन नहीं लगाई जा सकती। फर्मका यह सुझाव कि मशीनको लगानेके लिए झोपड़ियोंको विशेष रूपसे बनाया जाये, इतना अव्यावहारिक है कि खण्डनकी आवश्यकता नहीं है। इसलिए मेरी रायमें मशीन उस शर्तको पूरा नहीं करती जो पुरस्कारकी महत्वपूर्ण शर्तोंमें से एक है। किंतु इसे निर्णायकोंके सामने एक गवाहके साक्ष्यसे अधिक महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिए।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत शंकरलाल बैंकर
अहमदाबाद

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४३७ पत्र एल० के० किर्लोस्करको

१९ मार्च, १९३५

प्रिय मित्र

इस मासकी दस तारीखके मेरे पत्रके उत्तरमें आपके विस्तृत पत्रके लिए धन्यवाद। जब वह आया, श्री बैंकर यहीं थे। मैंने आपके पत्रकी एक नकल उन्हें दे दी। अब मैंने उन्हें अपनी राय[1] भेज दी है, जिसकी नकल मैं इसके साथ भेज रहा हूँ।

अपनी सम्मतिमें मैं मशीनके सीमित उपयोगके सम्बन्धमें एक अनुच्छेद लिखना चाहता था। मैंने आपके साथ बातचीतके दौरान उसके इस उपयोगकी बात कही थी। किन्तु इस विषयमें आपकी आपत्तिको याद करके मैंने उसका उल्लेख नहीं किया। किन्तु यदि आप चाहते हों कि उसके इस सीमित उपयोगके विषयमें मैं अपनी राय निर्णायकोंको दे दूँ तो मैं उन्हें प्रसन्नतापूर्वक भेज दूँगा।

हृदयसे आपका,

संलग्न १ बैंकरका पत्र

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल कागजात; सौजन्य प्यारेलाल।

४३८ पत्र अम्बुजम्मालको

वर्धा
१९ मार्च, १९३५

चि० अम्बुजम[2],

तुम्हारा विचार सही है। मैं इतना ज्यादा व्यस्त था कि पत्र नहीं लिख सका, हालाँकि तुम्हारे बारेमें बराबर सोचता रहा।

मुझे स्वादिष्ट चीजोंका एक बड़ा भारी पार्सल मिला है। केवल शहद और फल भेजे जायें। तुम्हारे पापड़, मुरब्बा वगैरह भेजनेका क्या लाभ? और जैसा कि तुम जानती हो इस जगहपर मुझे काफी फल मिल जाते हैं। इसलिए एक-एक पैसा बचाना सीखो। उसे अलग रख दो और बचतका पैसा मेरे पास गरीबोंके लिए भेज दो। यदि मुझे किसी चीजकी जरूरत होगी तो मैं निश्चय ही माँगूँगा।

१ देखिए पिछला शीर्षक।
२ यह हिन्दीमें है।

फिलहाल मैं कच्चा दूध, कच्ची पत्तियाँ, शहद और ताजी इमली तथा संतरे ले रहा हूँ। पिछले सप्ताह मेरा वजन १०८ पौंड था।

अमतुल दिल्लीमें देवदासके साथ है। गोमतीबहन यहाँ है। मीरा और उसके साथी पूरी तरह चंगे हो गये हैं।

आशा है कि कृष्णस्वामी ठीक चल रहा होगा।

तुम्हारा सूत काफी अच्छा था।

यदि के० को घरबारकी जरूरत है तो तुम्हें यह व्यवस्था करनी होगी, माको नहीं।

तुम वहाँ भी उतनी अच्छी सेवा कर सकती हो जितनी कहीं और। तुम्हारे पास हिन्दी, खादी और अन्य ग्रामोद्योग हैं।

मैं केंघेरी आश्रम जानता हूँ। क्या तुम ऐसी चीजोंमें के० की दिलचस्पी कराती हो?

अ० भा० ग्रा० संघकी बैठकके लिए हमारे यहाँ कई बहनें थीं। अब राजकुमारी अमतकौर यहाँ है।

मैंने २० अप्रैलको होनेवाले हिन्दी-सम्मेलनकी अध्यक्षता करनेका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है। उसी समय एक महिला सम्मेलन होगा। यदि आ सको तो तुम्हें आना चाहिए। तुम के० को यदि वह आये तो अपने साथ ला सकती हो। मैं ऐसा मान रहा हूँ कि जानम्माल तुम्हारे साथ आयेगी।

स्नेह।

बापू[1]

अंग्रेजीसे। अम्बुजम्माल कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

४३९ पत्र नारायण मो० खरेको[2]

१९ मार्च १९३५

चि० पण्डितजी,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं उसकी राह देख रहा था। रामभाऊके साथ खूब खटो। क्रोध मत करो। मृदुलाबहनको संतुष्ट कर लो। उनका एक बहुत उम्दा पत्र आया था। अलग रसोई बनाना शुरू किया है। यह मुझे तो अच्छा ही लगा। रामभाऊको रसोई बनाना भी अच्छी तरह सिखाओ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७३) से।

१ यह हिन्दीमें है।

२ यह तथा अगला शीर्षक एक ही पोस्टकार्ड पर लिखे गये थे।

४४० पत्र नरहरि द्वा० परीखको

१९ मार्च, १९३५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। नीलमणिके बारेमें मैं थोडा सुन चुका था। भगवानजीसे और भी जान लूंगा। मुझे डर है कि यह सब तो होता ही रहेगा और हमें यथाशक्ति इससे पेश पाना पडेगा। सभी युवकोंको वहासे खिसका दें तो ठीक ही होगा। केवल लडकिया और जिम्मेदार आदमी ही वहा रहे, इसीमें हमारी रक्षा है।

भगवानजीके ३५ दिन वहा पूरे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७३) से।

४४१ पत्र सचिव, राजनीति विभाग, बगाल सरकारको

सचिव, बगाल सरकार

[१९ मार्च, १९३५ या उसके पश्चात]

प्रिय महोदय,

इस मासकी १९ तारीखके आपके पत्र (स० ८०४३ एक्स) के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हू। उक्त पत्र मेरे उस पत्र[1] के सम्बधमें है जिसमें मैंने श्री महादेव देसाईके लिए बन्दी श्री धीरेन्द्रचन्द्र मुखर्जीसे, जो इस समय देवली जेलमें बन्द ह, मुलाकातकी इजाजत मागी थी।

आपका सच्चा

अंग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

१ देखिए 'पत्र सचिव, राजनीति विभाग, बंगाल सरकारको' २०-२-१९३५।

४४२ पत्र डॉ० एन० एन० गोडबोलेको

वर्धा
२० माच, १९३५

प्रिय डॉक्टर गोडबोले,

मै आपके उस पत्रके लिए धन्यवाद देता हूँ जिसके साथ आपने गायके मक्खनकी वसा और भैसके मक्खनकी वसाके तुलनात्मक गुणोपर अपनी महत्वपूण टिप्पणी भेजी है। आप इस प्रश्नका परीक्षण जिस सतकताके साथ कर रहे है, उससे मुझे कुछ और प्रश्न करनेका लोभ हो आया है। मै भोजनके एक भागके रूपमे इमलीका प्रयोग, नपी-तुली मात्रामे, उन व्यक्तियोके लिए करता हूँ जो कब्जसे पीडित है और जिन्हे अनपकी हरी-पत्तिया जैसे मेथी, चकवत आदि दी जा रही है। इस प्रदेशमे यह एक प्रचलित विश्वास है कि इमलीसे फोडे होते है और इससे गठिया हो जाता है। क्या इन विश्वासोका कोई प्रामाणिक आधार है? क्या आप यह बता सकते है कि कौन सी पत्तिया अनपकी हालतमे खाई जा सकती है? आजकल मै उन भाजियोका, जो बाजारमे मिलती है बिना पकाये उपयोग कर रहा हूँ। इनमे बन्दगोभी और फूलगोभी भी है।

एक बात और, यदि आप 'हरिजन' पढते हो तो मने अनकुटे चावलके विषयमे अपनी जो राय जाहिर की है, उसे भी आपने देखा ही होगा[1]। ऐसा मालूम होता है कि बाजारमे बिलकुल अनकुटे चावल-जैसी तो कोई चीज मिलती नही। मुझे बिलकुल अनकुटा चावल प्राप्त करनेमे बडी कठिनाई हुई। इसलिए मै अपना धान खुद कूटता हूँ और अब बिलकुल अनकुटा चावल प्राप्त कर लेता हूँ। किन्तु रासायनिकोका कहना है कि यह सिद्ध करनेके लिए कोई प्रमाण नही है कि जिन लोगोने अनकुटे चावलके पक्षमे राय दी है, उनका अभिप्राय बिलकुल अनकुटे चावलसे है। किन्तु मैने इसके खिलाफ यह कहा है कि इस महत्वके मामलेमे जिन चिकित्साशास्त्रियोने मुझे अपनी सुविचारित सम्मति दी है, मै नही मानता कि उन्होने 'अनकुटा चावल' शब्दका प्रयोग शिथिलतापूवक किया होगा। कुटे चावलकी कोटियाँ हो सकती है, किन्तु अनकुटे चावलकी निश्चय ही नही। दूसरी ओर, उनका यह तक है कि यह बहुत सम्भव है कि चावलकी ऊपरी परत, जो जरा सा भी कूटनेसे हटाई जा सकती है, पाचन प्रणालीके लिए चाहे क्षतिकारक न भी हो, तो भी अनावश्यक है। निस्सन्देह वे स्वीकार करते है कि अपने कथनके लिए उनके

१ देखिए "आरम्भ कैसे करें?", पृ० १२३ २४।

पास कोई प्रमाण नही है। वे केवल यह कहते है कि अनकुटे चावलके पक्षमे जो सम्मतिया दी गई है, उनका आशय अशत कुटे हुए, हाथ-कुटे उस चावलसे ही है जो बाजारमे अनकुटेके रूपमे प्रचलित है। क्या आप इस विवादपर कोई प्रकाश डाल सकते है? क्या चावलकी यह ऊपरी परत अपचनीय है। क्या यह पाचन-प्रणालीके लिए हानिकारक है? क्या यह सम्भव है कि अबतक इस विषयमे कोई अनुसधान हुआ ही न हो?

हृदयसे आपका,

डॉ० एन० एन० गोडबोले
हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४४३ पत्र कृष्णदासको

२० मार्च, १९३५

प्रिय कृष्णदास,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे खयालसे यदि हम साप्ताहिक पत्रके भेजनेमे खर्च करनेके लिए तैयार है तो फिर हवाई डाकपर होनेवाला व्यय करनेमे कोई हानि नही है। मेरे विचारसे साप्ताहिक पत्र भेजना अच्छी बात है। एडिथ हण्टर उत्तम कार्यकर्त्री है। वह सस्थाकी प्राण है। वे लोग एक साप्ताहिक पत्रक भी निकाल रहे है। क्या वह आपको नही मिलता?

तुमने सतीशबाबूके जीवनका एक पूर्ण और कारुणिक चित्र प्रस्तुत किया है। इसमे मुझे कोई सन्देह नही है कि इस विषयमे कुछ भी नही करना है। बनारसमे ऐसे काफी लोग है जो उनकी सप्रेम देखभाल कर सकते है। किन्तु उन्हे अपना जीवन उस रूपमे व्यतीत करने देना चाहिए जिसे वे सर्वोत्तम समझे। आखिर तो भगवान छोटेसे छोटे जीवकी भी चिन्ता करता है। जो भगवानकी शक्ति और उसकी उदारतामे विश्वास करते है, उनकी तो वह और ज्यादा चिन्ता करता है। इसलिए मेरे विचारमे तुम्हे उनकी कतई चिन्ता नही करनी चाहिए।

स्नेह।

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४४४ पत्र डॉ० गोपीचन्द भार्गवको

२० माच, १९३५

प्रिय डा० गोपीचद,

डॉक्टर क्यो बीमार पडे? यदि आपका शरीर कमजोर हो जायेगा तो जो भारी जिम्मा आपने उठाया है उसे आप किस तरह पूरा कर पायेगे। मै आशा करता हूँ कि अब आप पूरी तरहसे स्वस्थ होगे।

जो हरिजन शारदा ऐक्टका उल्लघन करके विवाह करते है, उनके विरुद्ध मुकदमा चलानेमे हम कोई योग नही दे सकते। यह एक सुधार है जिसे हरिजनोको खुद ही करना चाहिए। हमे तबतक उनपर मुकदमा चलानेका हक नही है जबतक कि सवण हिदू इस विषयमे दोष मुक्त नही हो जाते और सवर्णों और अवर्णोमे कोई भेद नही रह जाता।

आपके सरक्षण और निरीक्षणमे और अखिल भारतीय चरखा सघसे निकाले गये एक व्यक्ति द्वारा एक रेशमी वस्त्र-भडार अलगसे चलाये जानेकी शिकायत मिली है। यह क्या मामला है? स्यालकोटके तीन लेखकोने एक लम्बी शिकायत की है।

हृदयसे आपका,

डॉ० गोपीचन्द
लाहौर

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४४५ पत्र हरिवदनको

२० माच, १९३५

भाई हरिवदन,

न तुम मुझे किसी दिन कष्ट देते हो, न मै तुम्हे देता हूँ। पर तुम कहाँ रहते हो और क्या करते हो, यह मुझसे छिपा नही है। आज परतु मेरे लिए तुम्हे कष्ट देनेका समय आ गया है। मालूम होता है, मामाका लाडला और चारित्र्यमे जिसे मामा पहला नम्बर देते है, ऐसा तुम्हारा अद्धसहनाम–हरिभाई नामक कोई हरिजन तुम्हारी इच्छासे तुम्हारे पडोसमे रहता है और तुम्हारी प्रेरणासे मकान बना रहा है। अब यह सब मेरी समझमे नही आया। हरिजनको तो छोडो, हरिजनेतर लोगोमे भी काम करनेवाले चरित्रवान व्यक्ति हमारे पास कितने है? तब, सेवकोका

ऐसा अभाव होते हुए भी हरिभाई जैसे प्रथम पक्तिके सेवकको घर बनवाकर उसमे दफन कर देना तुम्हे कैसे ठीक लगा? माना इसमे मेरी सहायता चाहते है। मेरी समस्या ऐसी सुलझाओ, जिससे मुझे सन्तोष हो। उसके बाद ही सहायताका विचार उचित हो सकेगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री हरिवदन
हरिजनवास
नवसारी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४००६) से।

४४६ पत्र रामचन्द्र बी० आठवलेको[1]

[२१ माच, १९३५][2]

प्रभाशकरने मुझसे कहा कि मैने नानालाल कविको नाराज़ होनेका काफी मौका दिया है। मुझे तो इसकी याद नही है। कि तु अहिसाका उपासक होकर मैने किसीको नाराज़ होनेका मौका दिया हो, तो मै तो उससे हज़ार बार माफी माग लूं। अत यदि आप इसका कोई कारण खुलासा कर पाये हो, तो मुझे बताइयेगा।

[गुजरातीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

४४७ पत्र हीरालाल शर्माको

२१ माच, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा पत्र मिला। तारके बारेमे समझा। मेरी मा यता यदि तुमारे अनुभवसे विपरीत है तो उसका अमल न किया जाय। मैने कोई आज्ञा नही भेजी है। मैने तुमको छुट्टी दे रक्खी है। तुमारे अभ्यासके कारण अथवा द्रौपदीके कारण अथवा लडकोके कारण यहा आनेमे बहतरी है ऐसी अगर तुमारी मा यता है तब ही आ जाना अच्छा है, अर्थात तुमारे रहनेके बारेमें मै तटस्थ हू।

१ पहले गुजरात विद्यापीठ और फिर एस० एल० डी० आर्ट्स कालेज, अहमदाबादमें संस्कृतके प्राध्यापक।

२ साधन-सूत्रमें पत्रकी जगह परसे अनुमानित।

पूअरकी[१] दोनो पुस्तक मिल गई है। जीवन चरित्र किसके चाहिये? अग्रेजीमे या हिंदीमे?

इंडियन ड्रग्सकी[२] किताब मेरे पास तो काफी थी लेकिन सब किताब म्युनिसिपैलिटीको चली गइ। अब तो नही है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामे मेरे जीवनके सोलह वष, प० १५२-५३ से।

४४८ भेंट एक मिशनरीको[३]

[२२ माच, १९३५ से पूव][४]

एक मिशनरी मित्रने जो हमारे पास मिलने आये थे, गाधीजी से पूछा कि ईसामसीहके उपदेशके प्रचारका सबसे ज्यादा प्रभावकारी तरीका क्या है, क्योकि यही उनका उद्देश्य था।

[गाधीजी] उनके उपदेशके अनुसार जीवन जीना ही सबसे प्रभावकारी तरीका है–प्रारम्भमे प्रभावकारी है, बीचमे भी और अतमे भी है। उपदेश देना मुझे खटकता है और उसका मेरे दिलपर कोई असर नही होता और मै उन मिशनरियोको जो उपदेश देते है, सदेहकी नजरसे देखने लगता हूँ। लेकिन मै उन्हे प्यार करता हूँ जो कभी उपदेश नही देते लेकिन अपने अपने सिद्धातके अनुसार जीवन जीते है। उनके जीवन मौन है, पर सबसे ज्यादा प्रभावकारी साक्ष्य है। इसलिए मै यह नही कह सकता कि क्या उपदेश दिया जाये, लेकिन यह कह सकता हूँ कि सेवामय जीवन और ज्यादासे ज्यादा सादगी सबसे बडा उपदेश है। इसलिए यदि आप लोगोकी सेवा करते जाये और उन्हे भी सेवा करनेको कहे तो वे समझेगे। लेकिन आप उसके बजाय जॉन ३, १६ का उद्धरण देते है और उनसे विश्वास करनेको कहते है। मेरे दिलपर उसका कुछ असर नही होता, और मेरा विश्वास है कि लोग इसे नही समझेगे। जहा उपदेश द्वारा ईसाई मत स्वीकार किया गया है, मेरी शिकायत है कि वहाँ कुछ दूसरा उद्देश्य रहा है।

[प्र०] **लेकिन हम भी उसे समझते है और उससे बचनेका भरसक प्रयत्न करते हैं।**

[उ०] लेकिन आप उससे बच नही सकते। एक सकीण उद्देश्य पूरे उपदेशको बेकार कर देता है। यह जहरकी एक बूदकी तरह है जो पूरे भोजनको विषाक्त

१ मूलमे इसके आगे यह शब्द कोष्ठकमें अग्रेजी लिपिमें भी लिखा हुआ है।

२ मूलमें यह अग्रेजी लिपिमें लिखा हुआ है।

३ **हरिजन**में 'द मोस्ट एफेक्टिव वे' शीषकसे प्रकाशित महादेव देसाईकी रिपोर्टसे उद्धृत।

४ गांधीजीने अपना चार सप्ताहका मौन व्रत २२ माचको शुरू किया था। इसलिए यह भेंट उसके पहले ही की होगी।

कर देती है। इसलिए मै बिना किसी उपदेशके काम करना चाहूँगा। गुलाबको उपदेश देनेकी जरूरत नही है। वह तो महज अपनी सुगन्ध बिखेरता है। वह सुगन्ध ही उसका उपदेश है। यदि उसमे मानवीय समझ-बूझ होती और यदि वह काफी सख्यामे उपदेशक काममे लगा सकता तो भी वे उपदेशक उतने गुलाब नही बेच सकते थे जितने कि स्वय सुगध बेच सकती है। धार्मिक और आध्यात्मिक जीवनकी सुगध गुलाबकी सुगधसे उत्कृष्ट तथा सूक्ष्म है।[1]

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-३-१९३५

४४९ भेंट मिशनरी महिलाओको[2]

[२२ माच, १९३५ से पूव][3]

प्रश्न जब आप गावोके स्वास्थ्य और कल्याणके विषयमें सोचते है, क्या आप उन्हे किसी हदतक डाक्टरी मदद देनेकी भी व्यवस्था कर रहे है?

गाधीजी हम डाक्टरी मददका नही, बल्कि रोगोसे बचावका प्रबन्ध कर रहे है। इसलिए हम सफाई और स्वास्थ्य-सम्बधी बातोपर ध्यान देते है। मेरी तो यह राय है कि काफी मात्रामे डाक्टरी मदद लोगोको केवल इसलिए दी जाती है ताकि लोग अधिक लाचार हो जाये। अधिकाश मामलोमे, एक तरहसे, डॉक्टरी मदद उनपर थोपी जाती है और इसलिए वह व्यथ जाती है। मेरे कुछ सहयोगी पासके एक गावमे जा रहे है जहा सडके गदगीसे भरी है। यदि वहाँके बच्चोकी आखे खराब है और सभी तरहकी बीमारिया है तो कोई आश्चयकी बात नही है। फिलहाल हमारे कायकर्त्ताओके प्रयत्नोका गावके निवासियोपर कोई असर पडता नही प्रतीत होता है। लेकिन जब वे देखेगे कि चूकि उनका गाव पहलेसे ज्यादा साफ हो गया है और गदगी नही रही इसलिए वे भी अपेक्षाकृत बीमारियोसे बचे हुए है, तब वे इस अन्तरकी कद्र करेगे। यदि वहाँपर एक मुफ्त दवाखाना होता और जो कोई आता उसे दवाइयोकी खुराके दी जाती तो कोई प्रगति नही होती। वास्तवमे ठोस काय तो गावोकी सफाई करनेका है। हमारे दरवाजेपर ही अनिष्ट है जिससे पूरी तरह बचा जा सकता है, और फिर भी हमने सदियोसे अपने

१ महादेव देसाई कहते हैं ‘ लेकिन लगता है कि इस सबका कोई असर नहीं हुआ और आदरणीय सज्जन यह कोसते हुए वापस गये कि श्री गाधी शीघ्र ही वह समय आयेगा जब आपका मूल्यांकन आपके धार्मिक विचारोंसे नहीं बल्कि ईसामसीहके धार्मिक विचारोसे किया जायेगा’। ’

२ **हरिजन**में ‘ द मोस्ट एफेक्टिव वे ’ शीर्षकसे प्रकाशित महादेव देसाईकी रिपोटसे उद्धृत। मिशनरी महिलाएँ नागपुरसे आई थीं।

३ देखिए पिछला शीर्षक।

गाववालोको उसे झेलने दिया है। यह एक दुरूह काय है, जब कि मुफ्त दवाइया बाटना कही ज्यादा आसान है। लेकिन मै अपने सहयोगियोको आसान काम और सस्ती वाहवाहीसे बचनेको कह रहा हूँ। पहले हमें रोगोसे बचावपर ध्यान देना चाहिए और बादमे हम रोगसे निबट सकते है।

प्र० तो आप डॉक्टर नहीं रखेंगे?

उ० नही, यदि आप मुझे गलत न समझे तो। मैने खुद डॉक्टरी मदद देनेका काम किया है। अभी पिछले महीने ही काठियावाडमे हरिजनोको डॉक्टरो द्वारा मुफ्त मदद दी गई जिन्होने मोतियाबिन्द तथा आँखोकी अन्य बीमारियोके ऑपरेशन किये। लेकिन मै फिलहाल सर्व-साधारणके स्वास्थ्यकी रक्षाके उपायोकी बात कर रहा हूँ और जब मेरे कार्यकर्त्ता गावोकी सफाईका प्राथमिक कार्य पूरा कर चुकेगे तब भी मै उन्हे केवल चार चीजे ही देना चाहूँगा — कुनैन, कैस्टर आयल, सोडा बाइ-कार्बोनेट और आयोडीन। किसी पाचवी चीजकी जरूरत नही है।

प्र० लगता है कि आप अपने कार्यक्रममें स्कूलोको सबसे बादमें स्थान देते है?

उ० नही। हम हरिजनोके लिए अनेक स्कूल चला रहे है और हरिजन बालकोको अनेको वजीफे दे रहे है। उद्योग सघके कार्यमे मेरा स्कूलका कार्यक्रम जोड देनेका क्या लाभ? उसका उद्देश्य तो हरिजन सघ और चरखा सघके कामको पूरा करना है। चरखा सघके पास काम चलानेके लिए २० लाख रुपये है और हरिजन सघके पास भी काफी कोष है। मैने अपने-आपसे कहा कि अब मुझे एक ऐसा कार्यक्रम चलाना चाहिए जिसके लिए बहुत कम कोषकी जरूरत हो और जिससे गरीबोकी आमदनी बढे। तो यदि मै गावके लोगोसे केवल इतना ही कह सकू कि वे मनुष्यकी खाद बर्बाद न करे, बल्कि उससे अच्छा काम ले तो मै बिना किसी पूँजीके लगाये उन्हे प्रतिवर्ष ५० करोडकी बचत करनेमे मदद दे सकता हूँ। मनुष्यके पाखानेको गडढोमे गाडकर और मिटटीकी पतली परतसे ढँककर अच्छी खाद तयार करनेकी यह विधि मैने डॉ० पूअरसे सीखी थी और यह सबसे सरल और सबसे ज्यादा कारगर तरीका है, जबकि उसका गाढा चिकना कीच बनानेवाली और सेप्टिक टैकोवाली विधिया अपेक्षाकृत खर्चीली है।

प्र० क्या आपका हरिजन सघ लोगोके आध्यात्मिक कल्याणके लिए कुछ करता है?

उ० मेरे लिए नैतिकतामे ही अध्यात्म शामिल है और इसलिए आपके प्रश्नका जवाब होगा "सब-कुछ करता है" और "कुछ नही करता"। कुछ नही, क्योकि उनके आध्यात्मिक कल्याणकी देखभालके लिए हमारे पास कोई विभाग नही है। सब कुछ इसलिए कि हम यह आशा करते है कि कार्यकर्त्ता जिन लोगोके बीच काम करते है, उनके साथ अपने व्यक्तिगत सम्पर्कसे वे उन्हे बदल देगे। वैसे भी हम मिथ्याचारकी कुण्डलीमे फँसे है, लेकिन जब आप इस कामके लिए अलग एक विभाग कर देते है तो कामको दोगुना कठिन बना देते है। एक सुधारककी हैसियतसे अपने

जीवनमें मैंने हर चीजको नैतिक दृष्टिसे देखा है। चाहे मैं एक राजनीतिक या सामाजिक या आर्थिक प्रश्नको सुलझानेमें लगा होऊँ, उसका नैतिक पक्ष हमेशा सामने आ जाता है और उसपर मेरा सारा ध्यान लगा रहता है। लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि हरिजनोके आध्यात्मिक कल्याणके लिए मेरे यहा कोई विशेष विभाग नही है।

प्र० लेकिन हम ईसाई लोगोको लगता है कि हमें, जिनके पास कुछ बाँटनेको है, उसे दूसरोके साथ मिल बाँटकर चलना चाहिए। यदि हमें सान्त्वना चाहिए तो हम उसे 'बाइबिल' से पाते ह। अब रही हरिजनोकी बात, जि हे हिन्दू-धमसे कोई शान्ति नहीं मिलती, उनकी आध्यात्मिक जरूरतको हम कसे पूरा करें?

उ० गुलाबकी तरह हूबहू व्यवहार करके। क्या गुलाब अपनी घोषणा करता है, या वह स्वय प्रचार करता है? क्या उसके पास मिशनरियोकी सेना है जो उसके सौदयकी घोषणा करती है?

प्र० लेकिन मान लीजिए कि कोई हमसे पूछे, 'तुम्हे यह सुगध कहासे मिली'?

उ० गुलाबके पास यदि समझने और बोलनेकी शक्ति होती तो वह कहता, 'मूख, क्या तुम्हे यह नही दिखाई देता कि यह सुगन्ध मुझे अपने निर्मातासे मिली है?'

प्र० लेकिन यदि आपसे कोई पूछता है, 'तो क्या कोई पुस्तक नहीं है'?

उ० आप तब कहेगे, 'हाँ, मेरे लिए 'बाइबिल' है।' यदि वे मुझसे पूछें तो मैं कुछको 'कुरान,' कुछको 'गीता' और कुछ को 'बाइबिल' और कुछको तुलसीदासकी 'रामायण' पेश करूँगा। मैं एक बुद्धिमान डाक्टरकी तरह हर मरीजको उसके लिए जरूरी नुस्खा लिखूगा।

प्र० लेकिन मुझे 'गीता' से ज्यादा कुछ पा सकनेमें कठिनाई होती है।

उ० आपको हो सकती है, लेकिन मुझे 'बाइबिल' या 'कुरान' से बहुत कुछ पानमे कोई कठिनाई नही होती।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २९-३-१९३५

४५० पत्र मेडेलीन रोलाँको

[२२ माच, १९३५ से पूव][1]

प्रिय मेडेलीन,

मैंने अभी-अभी प्यारेलालको लिखा तुम्हारा पत्र पढा है। ईश्वरकी कृपासे मै शीघ्र ही पूण मौन व्रत करने जा रहा हूँ, इस प्रकार मै तुम्हारे पत्रका उत्तर तुरन्त देनेमे समथ हो सकगा। हा, मुझे सत[2] के लम्बे पत्रका पूरा पूरा उत्तर देना चाहिए। किन्तु, इस "पूरा पूरा" विशेषणसे मुझे भय लग रहा है। मेरे पास इतना वक्त नही है कि मै उस पत्रके साथ पूण न्याय कर सकू। लेकिन मौनके इन दिनोमे उत्तर लिखनेकी कोशिश तो मै करूँगा ही। तुम्हारा प्रश्न बडा सीधा है। समाजवादकी उसके अधिकृत कायक्रममे की गई व्यारयासे मेरा विरोध है। समाजवादके सिद्धान्तो अथवा दशनसे मेरा कोई विरोध नही है। वहा इसके अन्तगत जो कायक्रम निश्चित किया गया है, वह हिंसाके बिना सफल नही हो सकता। यहा समाजवादी हिंसाको हर हालतमे त्याज्य नही मानते। अगर उन्हे लगे कि हथियारोकी मददसे शक्ति हथियाई जा सकती है, तो वे खुले आम हथियारोका इस्तेमाल करने लगेगे। उनके कायक्रममे कुछ और भी बाते है, जिनका जिक्र करनेकी मै जरूरत नही समझता। पता नही इस जवाबसे तुम्हारा काम चल सकता है या नही। फिर भी, तुम अपनी कठिनाइयोको साफ-साफ लिख भेजना।

तुम दोनोको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७३७) से, सौजन्य आर० के० प्रभु।

१ साधन सूत्रमें '२८ मार्च' है। लेकिन पत्रकी विषय वस्तुसे यह स्पष्ट है कि गाधीजी ने यह पत्र मौन व्रत शुरु करनेसे पहले लिखा था। उन्होने मौन व्रत २२ माचसे शुरू किया था।

२ रोमाँ रोलाँ।

४५१ टिप्पणियाँ

'धम परिवतन' का दु ख

देवकोटाके एक हरिजन सेवकने अपनी तरफके हरिजनोके ईसाई हो जानेके विषयमे मुझे एक दु खजनक पत्र लिखा है। लोगोसे यह छिपा नही है कि उधरके हरिजनोको नट्टार लोग किस तरह बराबर सताते आ रहे है। दिन रातकी साससे तग आकर और सवण हिदुओसे मामूली मदद पानेकी भी आशा छूट जानेपर अगर गरीब हरिजन ईसाई धमकी शरणमे चले जाये, तो हमे इसमे आश्चय नही करना चाहिए। और अगर हम अपने दु खको प्रबल कायशक्तिमे परिणत नही कर सकते तो वह बिलकुल व्यथ है। शारीरिक कष्टके दबावमे किया हुआ धम परिवतन कोई आध्यात्मिक धम परिवतन तो है नही। लेकिन अगर हरिजन अपनी भौतिक स्थिति सुधारने और सवर्णोकी यन्त्रणाओसे बचनेके लिए अपना धम बदल रहे है तो इसपर हम क्यो कुढे?

दु ख तो हमे उनके धम परिवतनके कारणपर होना चाहिए। हमे यह देखना और कबूल करना चाहिए कि इस धम-परिवतनका कारण सवण हिन्दू है। अगर देवकोटाके सवण हिदुओको यह खबर होती कि वहाके हरिजनोके प्रति उनका क्या कत्तव्य है, तो नट्टार लोगोकी जो खुद सवण हिदू है, इस तरह हरिजनोको सतानेकी कभी हिम्मत ना पडती वे जरूर समझते कि हरिजन भी उसी मानव कुटम्बके है जिसके कि वे है। पत्र लेखकने मेरे सामने यह तजवीज रखी है कि बाहरके कुछ सज्जन देवकोटा जाये और वहा नट्टारो और हरिजनोके बीच काम करे। यह होता तो अच्छा ही था। मगर इस तरह कभी-कभी बाहरके भूले भटके लोगोके एकाध चक्कर लगा आनेसे कोई सच्चा फल हासिल होगा, इसमे मुझे सन्देह ही है। ऐसा कोई भी प्रयत्न उन डॉक्टरोके प्रयत्नकी तरह निश्चय ही निष्फल जायेगा जो रोगियोके पास जाते और उनका इलाज करनेका जतन तो करते है, पर रोगी खुद उनकी बताई हुई दवाइयोका सेवन नही करते। रोगसे तो सवण हिन्दुओके दोनो ही पक्ष ग्रस्त है — वे सवण हिन्दू जो अलग खडे-खडे यह सब देख रहे है, और नट्टार सवण हिन्दू। नट्टार तो हरिजनोको पीडित करनेमे लगे है, और दूसरे सवण हिन्दू अपराधपूण उदासीनतासे ग्रस्त है। बाहरके आदमी तो अधिकसे-अधिक यही कर सकते है कि वे वहाँ जाये, लक्षण देखकर रोगको पहचाने और नुस्खा बता दे। दवाका लेना मरीजका काम है। सो देवकोटाके सवण नवयुवक रोगका कारण और उसकी दवा भी जानते ही है। क्या वे उसे काममे लायेगे? ठक्कर बापा या तो वहा पहुँच गये होगे या पहुँचनेवाले होगे। क्या वे लोग उनकी सलाहपर ध्यान देगे? यह धम-परिवतन तो उस रोगका एक छोटा-सा परिणाम है। धम-परिवतन तथा इससे भी बुरे अनेक परिणामोको रोकना है तो रोगके मूल कारण को दूर कर दो।

ग्राम-कार्यकर्त्ताओके लिए तकली

गावोमे बहुत से कार्यकर्त्ता वस्त्र-स्वावलम्बनका प्रचार करनेकी कोशिश कर रहे है। मै उनसे कातनेके साधनके रूपमे तकलीकी शक्तिपर ध्यान देनेके लिए कहूँगा। मै इस विषयमे पहले भी लिख चुका हूँ। बडी सावधानीसे इसका अध्ययन किया जाना चाहिए। वर्धाके सत्याग्रह आश्रम और अन्य सहयोगी सस्थाओने यह दिखा दिया है कि औसत कातनेवाला अगर तकलीको ठीकसे चलाये तो तकली चरखेके बराबर ही सूत देती है। जो व्यक्ति बिलकुल ही अशक्त नही है और जो पारिश्रमिककी दृष्टिसे नही, अवकाशके समयका उपयोग करनेकी दृष्टिसे कातना चाहता है, उसके लिए तो तकली हर तरहसे चरखेका स्थान ले सकती है। इसलिए कार्यकर्त्ताओको गावोमे चरखेकी जगह तकलीका प्रचार करनेके विचारसे उसके प्रयोगकी नयी पद्धति सीख लेनी चाहिए। बूढे और दुबल व्यक्तियोके लिए तो चरखा ही जरूरी रहेगा। चरखा 'लीवर' पद्धतिसे काय करनेवाला तकलीका ही प्रकार है। मासपेशिया कमजोर होनेके कारण लोग जितना वजन नही उठा सकते, 'लीवर'की सहायतासे उससे कई गुना वजन सहज ही उठा सकते है। इसी प्रकार जो चुटकीसे तकलीको पर्याप्त गति नही दे सकता, वह चरखेसे उसे गति दे देता है और चरखेमें तकलीकी तरह बार-बार हाथको ऊपर ले जाने और नीचे लानेकी भी जरूरत नही पडती।

ग्रामसेवककी यात्रा

श्री सीताराम शास्त्री ग्रामसेवकोकी ऐसी यात्राओका आयोजन कर रहे है जिन्हे हम तीर्थ-यात्रा कह सकते है। ये ग्रामसेवक अपने इद गिदके गावोमे ग्राम-सेवाका सन्देश लेकर जाते है। शास्त्रीजीने दूसरी तीर्थ-यात्राका जो सक्षिप्त विवरण मेरे पास भेजा है, उसका कुछ अश मै नीचे देता हूँ

> **दूसरी यात्रा १७ फरवरीके प्रात काल आरम्भ हुई और ४ मार्चकी शामको समाप्त हुई। इस यात्रा दलमें ८ आदमी थे। दलके नेता श्री एन० वेंकटचेलपति और श्री रामिनेनी अपय्या थे। दो ने चार चार दिन काम किया, एकने ग्यारह दिन, और पाँचने लगातार।**
>
> **ये लोग बापटला तालुका[1] के १३ गाँवोमें, टेनाली तालुका[2] के एक गाँवमें और रेपल्ली तालुकाके एक गावमें, इस तरह कुल १५ गाँवोमें गये। उन्होने रेलसे, मोटरसे, बलगाडीसे और पदल यात्रा की, कुल ७५ मीलकी यात्रा की।**
>
> **इन लोगोने ४ गावोमें मजिक लालटेनकी सहायतासे व्याख्यान दिये और ५ गावोमें ग्रामोफोनसे काम लिया।**

१ और २ आन्ध्र प्रदेशमें।

गाँवोमें उन्होंने नीचे लिखी चीजें बेचीं		रु० आ० पा०
खादी	मूल्य	१,०३०–१०–६
स्वदेशी चीजें	,,	१३५–१५–९
मिट्टीके बासन	,,	३– ७–०
तकलिया २	,,	०– ३–०
उस्तरे ५	,,	२–१३–०
भृंगामलक तैलम (२ पौंड १० औंस)	,,	४– ६–०
जूते और चप्पल (४२ जोडे)	,,	३४–१४–०
	कुल	१,२१२– ५–३

उस्तरे ओगोल तालुका[1] के अन्तगत चेरकम्पालमके बने हुए थे, और तकलिया और जूते तथा चप्पल खुद विनयाश्रममें तैयार किये गये थे।

इस यात्रामें पहली यात्राकी अपेक्षा बिक्री अधिक हुई। यात्रामें कुल रु० ३६–३–३ खच हुए।

कार्यारम्भ यह अच्छा है। पर मै सलाह दूँगा कि ग्राम यात्रियोको रेल, मोटर और गावकी बैलगाडियोतक की सवारीसे परहेज रखना चाहिए। अगर वे मेरी सलाह मानेगे तो देखेगे कि उनके कामका और भी अधिक असर पडेगा और असलमे एक पाई भी उनकी खच न होगी। दो-तीन आदमियोसे अधिक का यात्री-दल नही होना चाहिए। मुझे आशा है कि ग्रामवासी छोटे छोटे यात्री-दलोका अपने घरोमे टिका भी लेगे और उन्हे प्रेमसे रोटी-भाजी भी खिला देगे। भार तो बेचारे गाववालोपर बडे बडे यात्री दलोकी मेहमानीका पडता है, दो दो तीन तीन सेवकोकी छोटी छोटी टोलियोका नही।

इन ग्रामसेवकोको अधिक ध्यान ग्रामोकी आरोग्यता और स्वच्छतापर देना चाहिए। उन्हे गावोकी अवस्थाके तथ्य और आँकडे इकट्ठे करने चाहिए। गाववालोको ऐसी सलाह देनी चाहिए कि बिना अधिक पूजी लगाये वे कौन-सा उद्योग कर सकते है और किस तरह वे अपने स्वास्थ्य और आर्थिक अवस्थाको सुधार सकते है। अगर हमे गावोको अधिकसे-अधिक स्वाश्रयी बनानेका प्रयत्न करना है तो जिन गाँवोमे हम जाये वहा दूसरे गाँवोकी बनी हुई चीजोकी बिक्रीकी अधिक गुजाईश नही है। हाँ, वहाँकी बात दूसरी है जहाँ यह स्पष्ट हो जाये कि गाँववाले अपने गावोमे ऐसी चीजोको या तो तैयार करते नही या कर नही सकते। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग-सघने ग्रामसेवाका जो सकल्प किया है वह अनूठा है। शहरवालोके दल गाँवोमे सफाई करनके लिए, सिखानेके लिए और वहाँकी बनी चीजे खरीदनेके लिए

१ आन्ध्र प्रदेशमें।

जाये। और गाववालोके दल शहरोमे अपने यहाकी चीजे बेचने और उनकी उपयोगिता प्रदर्शन द्वारा प्रमाणित करनेके लिए भेजे जा सकते है।

इस ग्रामोद्धार आन्दोलनका उद्देश्य एक प्रकारसे विकेन्द्रीकरण है और यह है कि गाववालोके स्वास्थ्यमे सुधार किया जाये और वहाके कारीगरोकी कला को प्रोत्साहन दिया जाये।

गायका घी बनाम भैसका घी

डा० प्रफुल्लचन्द्र घोषने गाय और भैसके घी का तुलनात्मक अध्ययन किया है। वे लिखते है [1]

सामान्य पाठकके लिए यह अध्ययन बहुत ही शास्त्रीय है। इन दोनो पशुओके दूधके विषयमे तो निश्चित मत है, किन्तु घीके बारेमे राये इतनी असदिग्ध नही है। फिर भी रासायनिक विश्लेषणसे यह तो साफ हो ही जाता है कि भैसके घीमे गायके घीसे अधिक कोई गुण नही है। दोनो पशुओका साथ-साथ रक्षण सम्भव नही है। इसलिए हमे दोमे से एकको चुनना है ही। हर पहलूपर विचार कर लेनेके बाद गायको चुनना ही निश्चित होता है। यदि गायकी ठीक देखरेख की जाये और उसकी नस्ल सुधारते चले जाये तो हम जितना अच्छा और मधुर दूध पानेकी इच्छा कर सकते है, हमे गाय दे सकती है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २२ ३-१९३५

४५२ मन्दिर-प्रवेश

'हरिजन-सेवक' के पाठकोको यह तो मालूम ही है कि ठक्कर बापा हरिजन-कार्यके सिलसिलेमे आजकल दक्षिण भारतका दौरा कर रहे है। त्रावणकोरमे उनकी उपस्थितिका लाभ उठाकर वहाके कार्यकर्त्ताओने अरणमूलामें एक हरिजन-सम्मेलन किया, जिसका सभापति उन्होने ठक्कर बापाको बनाया। यह सम्मेलन १० मार्चको हुआ। काफी बडी संख्यामे लोग इस सम्मेलनमे सम्मिलित हुए। सवर्ण हिन्दुओ की तरह हरिजनोकी भी खासी अच्छी उपस्थिति थी। इस सम्मेलनमे हरिजनोकी ओरसे ठक्कर बापाको एक मानपत्र दिया गया। मानपत्रमे मन्दिर प्रवेशके प्रसगका यह अश काफी महत्त्वका है

यह हमारा अटल विश्वास है कि जबतक मन्दिरोके द्वार हमारे लिए बद है, तबतक अस्पश्यताका कभी अन्त नहीं हो सकता और न होगा। मन्दिर प्रवेश ही हमारे लिए इस हरिजन आन्दोलनकी सफलताकी सबसे खरी कसौटी है।

१ यहाँ नहीं दिया जा रहा है। श्री घोषने लिखा था कि वैज्ञानिक अध्ययनसे यह बताना सभव नहीं है कि दोनोंमें से खानपानकी दृष्टिसे कौन-सा घी अच्छा है।

जबतक हमे मन्दिरोमें प्रवेशका अधिकार नहीं दिया जाता, तबतक हमारे उद्धारके सारे प्रयत्न हमें झूठे मालूम होते ह। हमें मन्दिर-प्रवेशका अधिकार दिलानेमें आप हरिजन सेवक सघकी सारी शक्ति लगा दें, आपसे हमारी यही प्राथना है।

इसमे सन्देह नही कि जबतक प्रत्येक हिदूके लिए मन्दिरोके द्वार ठीक उसी तरह नही खुल जाते जिस तरह कि दूसरे हिन्दुओके लिए खुले हुए है, तबतक अस्पश्यताका अत नही होगा। पूजाका सावजनिक स्थान ही सव-सामाय धमका सबसे-अचूक प्रमाण है। इसमे आश्चय नही कि हरिजनको दूसरे तमाम प्रयत्न झूठे प्रतीत होते है। पर चूकि वे झूठे प्रतीत होते ह, इसलिए वे वास्तवमे झूठे ही है, यह बात नही है। सैकडो हरिजन-सेवक ऐसे ह जिनका अस्पश्यता दूर करनेका प्रयास सिफ इसलिए असत्य नही कहा जा सकता कि वे आज हरिजनोके लिए प्रत्यक मदिरका द्वार नही खुलवा सकते। जो बीज बो दिया गया है वह कभी मरनका नही, उसका जब समय आयेगा तब फल अवश्य लगेगा। बडे बडे वृक्षोके बीज अकुरित होनेमे बहुत समय ले लेते है, तो भी हर मिनट वे उगते रहते है। इसी तरह मन्दिर-प्रवेशका बीज धीरे-धीरे अकुरित हो रहा है। जबतक हरेक सावजनिक मदिर हरिजनोके लिए नही खुल जाता, तबतक सुधारक आरामसे नही बैठेंगे। ये तमाम सुधार-काय मदिर प्रवेशकी दिशाकी ओर ही ले जा रहे है। हम सब लोगोको, जो हरिजन-सेवा करना चाहते है, हरिजनोके उक्त मानपत्रने यह बात अच्छे समय पर याद दिलाई है कि चूकि आजकल अखबारोमे मन्दिर-प्रवेश सम्बन्धी कोई चर्चा नही रहती, इसलिए हम यह न सोचे कि यह प्रश्न छोड दिया गया है। वे इस प्रश्नपर सावजनिक आन्दोलन न करे, पर कायकर्त्ताओको चाहिए कि वे निजी तौरपर अपने पडोसियोको अपने पक्षमे मिलाते रहे और सम्बन्धित ट्रस्टियो तथा मन्दिरोमे जानेवालोको मदिर खोल देनेके सम्बन्धमे समझाते रहें।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, २२-३ १९३५

४५३ निर्देश अ० भा० ग्रामोद्योग सघके सदस्योको

जिस रूपमें प्रतिज्ञापत्र[1] हमारे सामने है, इरादतन उसी रूपमें बनाया गया है। यह सामान्य रूपका प्रतिज्ञापत्र है। यह एक भद्र पुरुषकी प्रतिज्ञा है। 'भारत-वषके ग्रामवासियोका सब तरहसे हित साधन करनेका सघका जो उद्देश्य है, उसे पूरा करनेके लिए मैं अपनी शक्ति और बुद्धिको अधिकसे-अधिक काममे लाऊँगा'— इन श दोका अथ प्रत्येक स्त्री या पुरुष सदस्यकी अपनी सत्यनिष्ठा पर छोड दिया गया है।

सदस्योने केवल सघकी उद्देश्य सिद्धिके लिए काम करनेकी ही नही बल्कि सघके आदर्शोको अपने आचरणमे उतारने तथा गावोकी बनी हुई चीजोको ही काममे लानेकी' भी प्रतिज्ञा की है।

इसलिए सिफारिश करते हुए व्यवस्थापक मण्डलका सदस्य यह जरूर देखेगा कि सदस्यताका उम्मीदवार अपनी प्रत्येक प्रवृत्तिमे ग्रामवासियोका हित हृदयसे चाहता है या नही। इससे यह अथ निकलता है कि ऐसा व्यक्ति कमसे-कम अपना कुछ समय नित्य गावोके काममे देगा। यह जरूरी नही कि वह काम गावोमे जाकर ही करेगा, पर यह जरूरी है कि वह गावोके लिए काम करेगा। इस तरह शहरमे रहनेवाला सदस्य किसी दिन अगर किसी आदमीको गावकी बनी कोई चीज बेचता है अथवा खरीदनेके लिए उसे समझाता है, तो यह माना जा सकता है कि उस दिन उसने कुछ ग्राम सेवा की है।

सिफारिश करनेवाला सदस्य यह भी देखेगा कि उम्मीदवार, जहातक सम्भव है, खुद गावकी बनी हुई चीजोको ही काममे लाता है—जैसे, मिलके कपडेकी जगह खादी, कारखानेके बने चीनी मिट्टीके बतनोकी जगह गावोके बने मिट्टीके बतन, होल्डरकी जगह बरूकी कलम, साधारण कागजके स्थानपर हाथका बना कागज, अत्यन्त ग दे और हानिकारक आधुनिक टूथब्रशके स्थानपर बबूल या नीमकी रोगाणु-नाशक दातुन, बाजारमे मिलनेवाली चमडेकी चीजोकी जगह गावोके कमाये हुए चमडेकी गाँवोमे बनी हुई चीजे, मिलकी शक्करके बदले गाँवोका गुड, मिलके चावलकी जगह हाथका कुटा चावल, आदि।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २२-३-१९३५

१ देखिए परिशिष्ट २१।

४५४ पत्र हरिभाऊ फाटकको

२२ माच, १९३५

प्रिय हरिभाऊ,

तुम्हारा १० तारीखका पत्र मुझे कल ही मिला। महादेव कलकत्ता चला गया था, इसीलिए चिटठी पत्रीके कामकी देखभाल नही हो सकी।

प्रदशनीकी तारीख क्या है? खैर, अगर वहा कोई आदमी तकली चलानेमे गति अधिक प्राप्त करना चाहता है, तो उसे एक हफ्तेके लिए यहा भेज दो। पूनामे एक या दो दिन उसका प्रदशन करने-भरसे वह मतलब पूरा नही होगा जो तुम्हारे दिमागमें है।

चावलका क्या हुआ? हम चावलको अपने हाथोसे ही कूटकर तैयार कर रहे ह।

तुम्हारा,
बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३७०) से।

४५५ पत्र आर० एस० हुकेरीकरको

२२ मार्च, १९३५

प्रिय हुकेरीकर,

मेरे खयालसे, जब काग्रेसके ग्रामसेवक कायकर्त्ताओको आमन्त्रित किया जाये, तो उन्हे वहा जाना चाहिए और बैठकमे अपने विचार रखने चाहिए। यदि किसी बात पर सहमति हो तो हमे सहयोगसे काम करना चाहिए। एक सच्चे ग्राम कायकर्त्ताके लिए प्रतिष्ठाकी बात तो कदापि उठनी ही नही चाहिए, वह प्रभाव या प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके लिए काम नही करता वह तो इसलिए काम करता है कि उसे वह अपना कत्तव्य मानता है। वह गाँववालोकी सेवा किये बिना नही रह सकता।

किन्ही निश्चित परिस्थितियोमे कोई क्या करे, यह तो उक्त परिस्थितियोपर आधारित उसके अपने निणयपर ही पूरी तरह निभर है।

हृदयसे आपका,

श्रीयुत आर० एस० हुकेरीकर
प्रान्तीय काग्रेस कमेटी
धारवाड, कर्नाटक

अग्रेजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४५६ पत्र वल्लभभाई पटेलको

२२ मार्च, १९३५

भाई वल्लभभाई,

पहले दिनके मौन[1] का रस चख रहा हूँ। राजकुमारीके साथ बोलनेकी छूट रखी है। वह खास तौरपर मिलने आई है, इसलिए उसका दिल कैसे दुखाऊँ? चार दिनसे आई है, परन्तु वास्तवमें बात तो आज ही कर सका हूँ।

मेरे खयालसे आप सिर्फ यह बतानेके लिए कि आपके यहाँ क्या हो रहा है, दिल्ली लिखें तो अच्छा हो।

[2] का प्रकरण दुःखद है। उन्हें लिख रहा हूँ। उन्हें आपके पास तो हरगिज नहीं बुलवाया जा सकता। मैं जो पत्र लिखूँगा उसकी नकल आपको भेजूँगा। उससे पता चल जायेगा।

आज अधिक नहीं लिखूँगा। मुन्शीका पत्र आ गया है। इसके बारेमें अधिक महादेव लिखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
बड़ौदा।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५४

१ गांधीजीने २२ मार्चसे १९ अप्रैलतक मौन व्रत लिया था।
२ साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिया गया है।

४५७ पत्र कोतवालको[1]

२२ माच, १९३५

भाई कोतवाल,[2]

तुम्हारा कागज मिला। रोज उगाई[3] होती होगी। जो नियमसर नही हो, तो बहुत मुष्केली आवेगी। मुझे लगभग रोजका हिसाब मिलना चाहिये। [4] मुझे साहित्य भेज दो।

बापू

वीणा, श्रद्धाजलि अक, अप्रैल मई, १९६९ से।

४५८. पत्र रा०[5] को

२२ माच, १९३५

ग०[6] को किसी रोज खत लिखना चाहीये। ठीक चल रही लगती है। उसका भाई आया है, कहता है उसको उसकी माताके पास भेजो। माता बीमार है और सुवावड वहा करना चाहती हैं। मैंने कहा रा० की सम्मतीके सिवाय म नही भेज सकता हू। तुमारा अभिप्राय लिखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २०८) से।

१ मूल पत्र, जो गुजरातीमें था, उपलब्ध नही है।

२ अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, इन्दौरके लिए नियुक्त प्रबन्ध समितिके सदस्य।

३ गाधीजीने हिन्दी साहित्य सम्मेलनके लिए एक लाख रुपया एकत्रित करनेको कहा था।

४ साधन सूत्रमें छोड दिया गया है।

५ व ६ नाम छोड दिये गये है।

४५९ समवेदना-सन्देश टी० ए० के० शेरवानीकी मृत्युपर[1]

नई दिल्ली
२३ माच, १९३५

शेरवानीकी मत्युसे देशका एक महान सदपुरुष तथा देशभक्त उठ गया। वे ऐसे समय हमारे बीचसे चले गये जब हमे उनकी बहुत जरूरत थी। कृपया हमारी हार्दिक समवेदना उनके परिवारतक पहुँचाये।

[अग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रानिकल, २४-३-१९३५

४६० पत्र जमनालाल बजाजको

२३ माच, १९३५

चि० जमनालाल,

इस पत्रके साथ सारे कागज़ात वापिस भेज रहा हूँ। पाटिलको लिखा पत्र भी साथमे है। तुम्हे अच्छा न लगे, तो मत भेजना।

सुचेता खुशीसे आये। जब इच्छा हो लेते आना। आज प्राथनाके लिए क० आ०[2] जाना है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० २९५८) से।

४६१ पत्र वैकुठलाल एल० मेहताको

२३ मार्च, १९३५

भाई श्री वैकुठ,

महादेवको लिखा तुम्हारा पत्र मैने पढ लिया है, तभी तुम्हे लिख रहा हूँ। तुम्हारी अतरात्मा जो कहे, वही करो। तुमपर दबाव डालना मुझे शोभा नही देगा और वह तुम्हारे साथ न्याय भी नही होगा। तुम्हारा पत्र यदि बतौर चेतावनीके हो, तो मुझे नही चुभता। किंतु यदि मेरे अथवा महादेवके किसी निणयपर पहुँचनेके

१ टी० ए० के० शेरवानी, सयुक्त प्रातके कांग्रेस कार्यकर्ताकी मृत्यु २२ मार्चको हुई थी और गांधीजी ने मृतकके परिवारके लिए अपनी समवेदना डॉ० अन्सारीकी माफत भेजी थी।

२ कन्याश्रम।

लिए ही, तो निणय तो तुम्हारे द्वारा ही लिया जा सकता है। मनुष्य अपने मनको अधूरा ही जानता है, पूरा तो भगवान ही जानता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० १३६१) से।

४६२ पत्र वल्लभभाई पटेलको

[२३ माच १९३५ के पश्चात][1]

भाई वल्लभभाई,

मौनका एक लाभ यह है कि हर दिनकी डाकका निबटारा उसी दिन हो जाता है। उसमे कमसे-कम तीन घटे लग जाते है, शेष समय पिछड गये कामोको पूरा करनेमे लगता है।

× × ×[2]

अब दिल्ली या बम्बई पत्र लिखनेकी जरूरत नही रह गई। भाईलालको तो खबर दे ही दी होगी।

महामारी-सम्बन्धी पत्रक पढ गया हूँ। सरकार या स्थानीय निकायोवाला वाक्य अच्छा नही लगा। अभी क्या यह सब असगत नही है? निश्चय ही इससे हमारा कोई लाभ नही होगा। स० प्रा० का काम जरा नाजुक है। तुम निभा पाओगे क्या?

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल
सत्याग्रह छावनी
बोरसद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पष्ठ १५७

१ वल्लभभाई प्लेगसे पीड़ित लोगोंके बीच सहायता कार्य करनेके लिए २३ माचको बोरसद पहुँचे थे।

२ साधन सूत्रके अनुसार।

४६३ पत्र अमतुस्सलामको

२४ मार्च, १९३५

चि० अमतुस्सलाम,

प्यारी बीबी,

तेरा खत मिला। मैं क्या कहूँ? अगर हरिजन वासमें दूसरे कोई रहे और मलकानी और देवदास इजाजत देवे तो जा। जिस तरह तबीयत अच्छी रहे, वही कर।

बायें हाथसे ज्यादा नही लिख सकता।

चरखा वगैरा मिल गया होगा और कुछ चाहिए तो लिखना। मैंने तो तुझसे आग्रह करना छोड ही दिया है। तुझे जैसा ठीक लगे वैसा करके तू तन दुरुस्त और मन दुरुस्त हो जा। डा० अन्सारी जैसा कहे वैसा कर। डा० खान साहब और मेहर ताजसे मिलती है क्या? न मिलती हो तो मिलना। शर्माके पास जाना हो तो जाना। लेकिन उसपर बहुत बोझ है। घरमें जगह नही होगी, लेकिन मैं जानता हूँ कि उसे तेरा आना बोझ नही लगेगा। डा० अन्सारीकी इजाजत लेकर जाना।

तुझे मैंने ईद मुबारक तो भेजा है न? मैं २० अप्रैलको इन्दौर होऊंगा। वहा चार दिन बीतेंगे। तुझे आना है? हिन्दी-साहित्य सम्मेलन और प्रदर्शनी है।

अब तो तेरे खतका जवाब बाकी नही रहता।

बापूकी दुआएँ

[पुनश्च]

तेरी झोपडी ३०० रु० म न हो तो ज्यादा खर्च भी किया जा सकता है।

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ३२०) से।

४६४ पत्र जमनालाल बजाजको

२४ मार्च, १९३५

चि० जमनालाल,

मदालसा काठगोदाममें तुम्हारे साथ हो ले, यह ठीक लगता है। इतनेमें उसके फोड़ेका भी पता लग जायेगा।

राजेन्द्रबाबूके विषयमें व्यावहारिक बात ही करना। गिरवी या बयनामा लिखाना ब्याज रखना। कमसे कम रखना।

भुवालीमें तबीयत ठीक न रहे तो तुरन्त छोड़ देना। लक्ष्मी नारायण गाडोदिया कमलाको शाकका पार्सल भेजते थे। कमला लिखती है कि वे अच्छे नहीं होते थे, इसलिए बन्द कर दिया है। शाक फलकी तलाश करना।

सरूपको अपने जानेकी खबर देना। मेरे बारेमें जो बताना ठीक समझो, बताना।

अपनी खुराकके बारेमें मदालसा खुद देख लेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० २९५९) से।

४६५ पत्र नारणदास गांधीको

२४ मार्च, १९३५

चि० नारणदास

तुम्हारा पत्र मिला।

दूसरा शिक्षक भी चला गया हो तो कोई चिंताकी बात नहीं। अंग्रेजी पढ़ानेके लिए क्या वहांसे कोई नहीं मिल सकता? भुजंगीलाल छायासे पूछो। वह पोरबन्दरके एक वकीलका लड़का है और मुझसे पत्र-व्यवहार रखता है। या नानाभाईसे पूछो। शिक्षकको तुम क्या दोगे? क्या तुम्हें यह स्वीकार होगा कि कोई केवल एक-दो घंटे आकर पढ़ा जाये?

सन्तोकने पत्र मुझे अवश्य लिखा था।

क्या तुम अमतुस्सलामको लिखते हो? वह दिल्लीमें है, देवदासके साथ। आजकल बीमार है।

मेरे मौनका यह तीसरा दिन है। इस बीच जो बहुत-सारा काम इकट्ठा हो गया था उसे ठीक गतिसे निपटाता जा रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माईक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४३३ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी।

४६६ पत्र वसुमती पण्डितको

२४ मार्च, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। लगता है ठीक काम कर रही है। भाजी खूब बो दो, तो बारह महीने खूब मिलती है।

मेरा वजन १०९ पौंड है।

दो दिनसे सब भापमें पक रहा है, जिससे समयकी खूब बचत होती है।

बापूके आशीर्वाद

श्री वसुमतीबहन
उद्योग मन्दिर
बोचासण (बोरसदके पास)

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९३९६) से। सी० डब्ल्यू० ६४२ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित।

४६७ पत्र घनश्यामदास बिड़लाको

२४ मार्च, १९३५

भाई घनश्यामदास,

यदि मलकानी और वियोगी हरिको हरिजन-कार्यसे असन्तोष है तो ठक्कर बापाके आफिस आनेके बाद ये तीन मिलकर रिपोर्ट देवें, और उसपर सोचकर यथा-सम्भव परिवर्तन करें। स्कालरशिप अगर लड़के लड़कियोंको पहुंचती है तो मुझे तो यह खर्च योग्य मालूम होता है। हां, इस प्रकारकी तालीम भले हम नापसन्द करें लेकिन हमारे लड़के वहीं पाते हैं, हमने अबतक और कोई चीज प्रजाके सामने अथवा हरिजनोंके सामने नहीं रखी है। जबतक ऐसी कोई जीवित वस्तु हमारे पास नहीं है तबतक हमारे स्कालरशिप देना पड़ता है। हमारी निजी पाठशालाओंमें सुधारके

लिये काफी स्थान है। हमारे पास अच्छे शिक्षक नहीं है। इसलिए दिल्लीका प्रयोग और साबरमतीका मुझे बहुत प्रिय है।

राजेन्द्रबाबूके बारेमे तार मिला था। हम सबकी चिन्ता दूर हुई। अब जमनालाल छपरा जाते है।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८००७ से, सौजन्य घनश्यामदास बिडला।

४६८ पत्र वियोगी हरिको

२४ मार्च, १९३५

भाई वियोगी हरि,

त्याग लेख योग्य है। लेख माला पढ़ुगा।

सतीशबाबुके कायमें क्या देखा? दूसरा भी जो मेरे जाननेके लायक हो मुझे बताना।

प्रभावतीका अभ्यास अब शरू किया जाय?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० १०९७) से।

४६९ पत्र चन्द त्यागीको

२४ मार्च, १९३५

भाई चन्द त्यागी,

तुमारा खत मिला था, बलवीरका भी मिला।

राजकिशोरी मजेमे है। तुमको बुनाई नही आती है क्या? ऐसा ही है तो शीघ्रातिशीघ्र सीख लो। कातनेसे तो बहोत आसान है। लोढना, धुनना तो अच्छी तरह जानते होगे। तकलीकी नयी रीत भी जानते है ना? नही तो वह भी सीख लिया जाय।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ३२६८) से।

४७० पत्र डेकन एज्यूकेशन सोसायटीको

२५ मार्च, १९३५

प्रिय मित्र,

शिक्षाके महान उद्देश्यके लिए डी० ई० सोसायटी तथा फर्ग्युसन कॉलिज की उच्चादर्शपूर्ण सेवाओंका रिकार्ड देखकर कौन उत्साहित न होगा?

मैं आगामी समारोहकी[1] सफलताकी कामना करता हूँ।

अभी इतना ही सन्देश भेजनेका समय मेरे पास है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७३५) से, सौजन्य डेकन एज्यूकेशन सोसायटी, पूना।

४७१ पत्र पुरातन जे० बुचको

२६ मार्च, १९३५

चि० पुरातन,

तुम्हारा पत्र मिला। [आश्रमको] भाड़ेपर देनेमें भावना क्यों नहीं होगी? हरिश्चन्द्र खुद बिक गये, उनकी स्त्री बिक गई, तो क्या उसके पीछे कोई भावना नहीं थी? हरिजनोंके हितके लिए आश्रम भाड़ेपर दिया जाये, इसमें भावनासा पोषण नहीं होता तो क्या होता है? मैंने आश्रम छोड़ा, तो भावनाके वश होकर ही तो।

इतने सारे मकानोंमें दीमक लग जाती है और वे बर्बाद हो जाते हैं। इसकी अपेक्षा वे भाड़ेपर दिये जायें और उनकी देखभाल होती रहे, यह कितना अच्छा है। जो हरिजन-सेवक नहीं हैं, वे सब हरिजनेतर व्यक्ति आज किराया दे रहे हैं, यह तो जानते हो न? सोनेकी कटार कमरमें ही शोभा देती है, लेकिन पेटमें भोंक दी जाये तो?

आश्रमके इतिहास आदिसे सम्बद्ध साहित्य यदि उस भूमिपर रखा गया, तो मैं अवश्य किराया मांगूंगा। वह भूमि हरिजनोंके लिए है। इसके सिवाय और कोई

1. सोसायटीका स्वर्ण जयन्ती समारोह।

भी उपयोग हो, तो उसके लिए किराया लेनेमे ही उस भूमिकी पवित्रताकी रक्षा हो सकेगी, यह साफ बात है?

क्या इतना समझना भी मुश्किल है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ९१७१) से।

४७२ पत्र नरहरि द्वा० परीखको

२६ मार्च, १९३५

चि० नरहरि,

कुमार मन्दिरकी सफलताके बारेमे मुझे सन्देह है। जहा हमारे बच्चे है, वही जो परिवर्तन कराये जा सकते हो कराकर हमे सन्तोष करना चाहिए। यह मेरे मनकी बात है, किन्तु वहाका वातावरण कैसा है, यह मै क्या जानूँ? निश्चयात्मक निर्णय लेनेके लिए मेरे पास साधन भी तो नही है। इसीलिए सरदारकी जो इच्छा थी, मैं उससे सहज ही सहमत हो गया हूँ। इसलिए यदि सारे कार्यकर्ता इस कामको सम्भव माने तो यह काम अवश्य करना। हा, तुम्हारा समय हरिजन कार्यके सिवाय और कही न दिया जाये, यह याद रखना। दुग्धालयका काम उसीमे है। टाइटसके अधीन, जहातक बने, हरिजन रखना। जबतक वहा एक अच्छा चर्मालय न हो जाये, चैन मत लेना। मुर्दा मवेशियोको प्राप्त करके उनकी चीर फाड करना हमे सीखना चाहिए। वालुजकर यहा यह काम बहुत खूबीके साथ कर रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९०७४) से।

४७३ पत्र वल्लभभाई पटेलको

२६ मार्च, १९३५

भाई वल्लभभाई,

महादेव सबेरे यवतमालकी एक सस्था देखने गये है। शामको लौट आयेगे।

आप आसफअली लिखते है, परन्तु मनमे शरीफा हामिदअली होगे।

प्लेगके टीकेके बारेमे लिखा पत्र इसके साथ है।

मुन्शी लिखते है कि लीलावतीको अभी तो कमीशन भी नही मिलता। रु० ५०,००० की खबर उन्होने कल ही दी थी।

नरहरिको अब तो साधारण उपचारोसे ही अच्छा होना है।

यह देशी कागज मुझे काफी परेशान कर रहा है। आप पढ सके तो काफी है।

मेरे खयालमें आपको रणजीत[1]का निमन्त्रण स्वीकार कर लेना चाहिए। काम मुश्किल है, लेकिन ऐसा लगता है कि स्वीकार करनेसे ठीक हो जायगा।

रसोईकी समस्याको काफी गहराईसे देख रहा हूँ। उसका ठीक हल निकालूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृष्ठ १५५

४७४ पत्र : अन्नपूर्णाको

२६ मार्च, १९३५

चि० अन्नपूर्णा,

तुमारा खत मिला। 'बच्चो घूमते थे'। नहीं 'बच्चे घूमते थे'। कोई हिंदी व्याकरण पढ लो। तुमने यात्राका वर्णन अच्छा किया है। हरिजन बालकोंको सत्रे दे दिये वह मुझे तो अच्छा लगा। लेकिन हरेकको ऐसे करना ही चाहिये ऐसी कोई बात नहीं है। देव-कपास[2] सूतका आंक लिखो। तकलीपर तुमारी गति कितनी हुई? बारी स्थानका नाम क्या रखा है?

बापुके आशीर्वाद

श्री अन्नपूर्णा कुमारी
मार्फत गोपबन्धु चौधरी
बारी, जिला कटक

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २७७९) से।

१. रणजीत सीताराम पण्डित।
२. कपासकी एक जाति।

४७५ पत्र अगाथा हैरिसनको

वर्धा
२७ मार्च, १९३५

प्रिय अगाथा,

मैं यह बहुत छोटा पत्र बायें हाथसे लिख रहा हूँ। दायें हाथमें तकलीफ है, उसे आराम देना जरूरी है।

म्यूरियलने एक लम्बे अर्सेतक खत न लिखनेकी तुम्हारी शिकायत की है। उसका पता है—वाई० एम० सी० ए०, शंघाई।

पारस्परिक सम्पर्क बढ़ानेकी हर कोशिशकी सराहना की जानी चाहिए। जहाँ लोग आशाका कोई आधार नहीं देख पाते, वहाँ भी तुम्हारी बलवती आशावादिता मुझे बहुत अच्छी लगती है।

सी० एफ० एंड्रयूजसे सम्बन्धित तुम्हारे उल्लेख अच्छे हैं और उचित हैं। उन्हें हर अगले कदमके लिए मार्गदर्शन मिलता रहता है, इसीलिए किसी भी इनसानी मदद या सुझावकी उन्हें जरूरत नहीं पड़ती।

शेष बातें सामान्य पत्रोंसे जान लेना।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४८६) से।

४७६ पत्र अमृत कौरको

२७ मार्च, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम अपने वचनकी पक्की हो। तुमने मुझे एक तार दिया, एक पोस्ट-कार्ड और एक अच्छा पत्र भी लिखा है। इसलिए कुमारप्पाकी विज्ञप्तिकी ओर ध्यान न देनेके लिए मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ। तुम्हारे लिए वह जरूरी भी नहीं था। तुम संघकी मेहमान भी न थीं। तुम परिवारकी एक सदस्याकी हैसियतसे ही आई थीं।

शम्मीको दिये गये कार्योंमें, अगर मैंने पहले न कहा हो तो, औषधि और खाद्यके रूपमें इमलीकी उपयोगिता भी लिखवाना। क्योंकि मैं इसका बहुत उपयोग कर

रहा हूँ और यहां लोगोंके मनमें इसके बारेमें कुछ रूढ़ धारणाएँ हैं, इसलिए मैं चाहता हूँ कि इसके सम्बन्धमें डाक्टरी सम्मति जल्दीसे-जल्दी मिल जाये।

स्नेह।

बापू

श्रीमती राजकुमारी अमृत कौर
जालंधर शहर, पंजाब

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२४) से, सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६३३३ से भी।

४७७. पत्र : सुधीर कुमार रुद्रको

२७ मार्च, १९३५

प्रिय सुधीर,[1]

सी० एफ० एंड्रयूजने इधर तुम्हारे बीमार पड़ जाने तथा ठीक होनेकी खबर दी है। भगवानको धन्यवाद। तुम्हें आगे कई सालतक सेवा-कार्य करना है। मुझे उम्मीद है कि खोया हुआ स्वास्थ्य फिर जल्दी ही प्राप्त कर लोगे।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री सुधीर कुमार
२०, अल्बर्ट रोड
इलाहाबाद (सं० प्रा०)

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९७४०) से, सौजन्य : राजमोहिनी रुद्र।

1. प्रिन्सिपल सुशील कुमार रुद्रके सुपुत्र।

४७८ पत्र अमृतलाल वि० ठक्करको

२७ माच, १९३५

भाई ठक्कर बापा

गणेशनके बारेमे मुझमे खूब झगडिए। मै आपको पूरी तरह सन्तुष्ट कर सकूगा। आप जैसा समझते है मैन पक्षपात करनेके लिए सलाह नही दी थी। मैने तो केवल हरिजनोका हित देखा था। मै गणेशनमे काम लेना ज्यादा अच्छा समझता हूँ। उसमे रुपया इकटठा करनेकी शक्ति बिलकुल नही है। उसमे शक्ति है तो काम करनेकी है लोगोकी देखभाल करनेकी है। किन्तु यदि वह बेईमान हो तो फिर बेकार है। पैसा तो कमेटी उगाहेगी किन्तु यह हुई भविष्यकी बात। पिछला कज कौन चुकायगा ? यदि कज 'हरिजन' के लिए लिया गया था, तो किसने लिया था ? क्या शास्त्री देगा ? लेकिन यह सब, जब मिलेगे तब। १९ से २५ तक इन्दौरमे हिदी सम्मेलन है, वहा जाना पडेगा। आप वहा आये, तो 'हरिजन' का भी कुछ करेगे और साथ साथ राबडी भी खायेगे।

बापू

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० २२७५२) से।

४७९ पत्र श्रीपतराव पटवर्धनको

२७ माच, १९३५

चि० श्रीपतराव,

जो व्यक्ति ब्रह्मचयका पालन करनेकी इच्छा करता है, वह विवाह न करे। किन्तु जिसे विवाह करनेकी इच्छा हो, वह ब्रह्मचयकी बातको अपने मनके किसी कोनेमे सहेजकर विवाह कर ले। बादमे पत्नीकी इच्छा जानकर जितना सयम वह पाल सकता हो, उतना पाले।

अपनी जातिके बाहर विवाह करनेके आग्रहका ऐसा अथ नही है कि जातिकी कन्याका विचार भी न किया जाये। यदि जातिकी लडकी सबसे अधिक योग्य हो तो विवाह उसीसे कर ले। जो विवाह करेगा वह सतान-उत्पत्ति भी करेगा ही, यह स्वाभाविक है। अप्पाके विषयमे समाचार मिला था। वह जो भी ले गया हो,

ले गया। ३५ वर्षके वर के लिए २५ वर्षकी कन्याका होना, मैं बेमेल नहीं मानूंगा। इतनेमें तुम्हारे सब प्रश्नोंका उत्तर हो गया न?

बापूके आशीर्वाद

श्रीपतराव पटवर्धन
पो० पावस
जिला रत्नागिरि

गुजरातीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

४८०. पत्र : वियोगी हरिको

२७ मार्च १९३५

भाई वियोगी हरि,

महादेवपर जो तुमने लिखा है, पढ गया। चर्खा संघका हमारे चार कालम देना है। मैंने इस बारेमें शंकरलालको लिखा है कि या तो अमुक संख्याके ग्राहक मिले या अमुक रुपये दे। हम कालमकी गारंटी दें लेकिन एकदम अखबारके कालम न बढा दें। बहुत चीज तो हम देते हैं बहुत लंबी रहती है। अनुभवसे बढते रहें।

सम्मेलनके बारेमें अवश्य मुझे लिखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७७) से।

४८१. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको

२७ मार्च, १९३५

भाई राजेन्द्रप्रसाद,

बंगालका प्रकरण आज सबसे कठिन व लज्जाजनक है। हमारे कमिटी बनानेसे कुछ भी नहीं हो सकेगा। बंगालके नेता आज कोई नहीं करेंगे। दूसरे कार्यकर्ताकी कौन सुनेगा? तो भी मेरा ख्याल है हमारे आल इंडिया डे मनाना चाहिये। दूसरी बातें कलकत्तेसे रिपोर्ट आने पर हो सकेगी।

सिलोनमें हमसे कुछ हो नहीं सकता। वहां जो भी होता है गवरमेंटकी मार्फत है। जयरामदास बिचारा कुछ करता है। बाकी होता है ऐसा मैंने नहीं पाया है। वहां पर कोई डाक्टर मिल जाय तो उसे भेजो। भास्करको भेजनेकी कोशिश की, वह नहीं जा सकता। फिर भी किसीको ढूंढनेका प्रयत्न तो कर रहा हूं।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ९७४८ से, सौजन्य डॉ० राजेन्द्रप्रसाद।

४८२ पत्र हीरालाल शर्माको

२७ माच, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। मेरी मनोदशा ऐसी हो गइ हे कि बच्चोको भी मैं हुकम नही करता हू। जब मैं निश्चय कर सकु तब तो अवश्य हुकम भी करूँ, लेकिन दिन-प्रतिदिन ऐसे ही होता है कि मैं दूसरोके लिये कया योग्य है कैसे जानु। अब तो वही रहे। पुस्तककी खोज चल रही है। पैसे बचानेमे यह सब होता है। इतना तो कह दू कि तुम दोनोका दिल इस ओर आनेको लगे तो आ जाना। वहा सबकी प्रकृति अच्छी न रहे तो भी आ जाना। आनेके बाद यहासे जाना ही नही है। हा, पश्चिम जानेका बने तो जुदी बात है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, पृ० १५३ के सामनेकी प्रतिकृतिसे।

४८३ पत्र हुसैनको

२८ माच, १९३५

मेरी समझमे तुम्हारी योजना असफल ही रहेगी।[1] जब किसी मकानमे आग लगी हो, उस समय आग बुझानेका अच्छेसे अच्छा तरीका सुझानेसे बढती हुई आग कम नही की जा सकती। पानीसे भरी बाल्टीका गलत या ठीक, किसी भी तरीकेसे इस्तेमाल करके ही आग बुझानेकी कोशिशमे कुछ कामयाबी मिल सकती है।

[अग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

१ हुसैनने हिन्दू मुस्लिम समस्यापर लेख लिखनेके लिए लन्दनसे गाधीजी रवीन्द्रनाथ टैगोर और अन्य लोगोंको पत्र लिखा था।

४८४ पत्र कृष्णदासको

वर्धा
२८ मार्च, १९३५

जिस आदमीको अजर-अमर परमात्माकी करुणा पहलेसे ही प्राप्त हो, क्या उसे किसी आदमीकी करुणाकी जरूरत होती है? जो इस तरहके सवाल उठाकर शक करते हैं, कृपा करके उन्हें समझाइये कि ग्राम-सेवा पर किसी एक आदमीका एकाधिकार नहीं है। अ० भा० ग्रा० संघ जिस क्षेत्रमें काम कर रहा है, उस क्षेत्रमें उस दृष्टिसे कोई दूसरा काम नहीं कर रहा है।

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

४८५ पत्र जी० सी० ताम्बेको

२८ मार्च, १९३५

प्रिय बन्धु,

'इन्दौर-विधि' पर भेजी गई आपकी पुस्तिकाके लिए धन्यवाद। मैंने बड़ी रुचिके साथ इसे पढ़ा है। मैं २० तारीखको इन्दौर पहुँच ही रहा हूँ, इसलिए मैं इस पद्धतिका प्रयोग भी देखना चाहूँगा। मेरी इच्छा है कि अगर सम्भव हो तो जो प्रदर्शनी हो रही है, आप उसमें इसका भी प्रदर्शन करें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री जी० सी० ताम्बे
फार्म सुपरिंटेंडेंट
इन्स्टिट्यूट आफ प्लांट-इन्डस्ट्री, इन्दौर

अंग्रेजीकी फोटो नकल (जी० एन० ७९६०) से।

४८६ एक पत्र[1]

२८ माच, १९३५

जिस बातका अनुवाद नही हो सकता, मेरे लिए उसे अपनी मातभाषामे रखना भी मुमकिन नही है। लेकिन मै यह कह सकता हूँ कि इन दो वाक्योको मने और मेरे कई अन्य साथियोने जिन्दगीमे जाचकर देखा है और सही पाया है।

[अग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौज`य श्री नारायण देसाई।

४८७ एक पत्र[2]

२८ माच, १९३५

मेरी रायमे जबतक श्री त० रामच`द्रराव यह वचन न दे कि उन्होने जो-कुछ किया है,[3] उसे दुबारा नही करेगे, और जबतक दानी इस बातसे पूणत सन्तुष्ट न हो जाये कि वे जिस उद्देश्यके लिए दान दे रहे ह, उसका इस्तेमाल उसी उद्देश्यके लिए किया जायेगा, उ`हे कुछ भी न दिया जाये।

[अग्रेज़ीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

१ एक अमेरिकन पत्र लेखकने, जिसका साधन सूत्रमें नाम नही दिया गया है, गाधीजी से प्राथना की थी कि वे अग्रेजीके इन वाक्योका अनुवाद करके भेजें

"ही दैट इज स्लो टु एंगर इज बैटर दैन द माइटी, ए`ड ही दैट रूलेथ हिज स्पिरिट दैन ही दैट टैकैथ ए सिटी।'

२ साधन सूत्रमें यह स्पष्ट नही है कि यह किसके नाम था।

३ उन्होने गाँवोंके लिए उपवास किया था और उसके जरिए धनी लोगोपर दबाव डाला था कि वे दान दें।

४८८ पत्र पुरुषोत्तम बावीशीको

२८ माच, १९३५

भाई पुरुषोत्तम,

आपका पत्र मिला। आपकी भेजी पुस्तिका पढ गया हूँ। मुझे अच्छी लगी। अपनी योजना सम्बन्धी पुस्तक भी भेजिये। म २० को इन्दौर पहुँचूगा। चार दिन वहा रहूँगा। इस बीच मिल सकेगे क्या?

मेरे जानने योग्य जो हो, वह मुझे भेजते रहिए।

बापूके आशीर्वाद

श्री पी० एल० बावीशी
शामपुर (मालवा)
ग्वालियर स्टेट

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० १२४) से। सी० डब्ल्यू० ४७४५ से भी, सौजन्य पुरुषोत्तम बावीशी।

४८९ पत्र भुजगीलाल छायाको

२८ माच, १९३५

चि० भुजगीलाल,

तुम्हारे दूसरे पत्रका उत्तर देना बाकी है। पहले पत्रमे उत्तर देने लायक कुछ था ही नही।

तुम्हारे पास समय बचता है, तो तुम नारणदास गाधीसे मिलो और उनसे कोई हलका-सा सेवा काय मागो।

बापूके आशीर्वाद

श्री भुजगीलाल छाया
पोरबन्दर स्टेट वकीलके यहा
राजकोट (सी० एस० काठियावाड)

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० २४२१८) से।

४९० पत्र . नारणदास गाधीको

२८ माच, १९३५

चि० नारणदास,

अप्रैलका महीना पास आ रहा है। मै ऐसा मान रहा हूँ कि इस ओर आनेके लिए तुम अभी भी तैयार हो। जमनालालजीके साथ तो इस विषयपर मैंने बात चीत की ही थी। आज विनोबाके साथ भी की। हम तीनोका यही मत है कि यदि तुम वहा जो काम चल रहा है उसे हानि पहुँचाये बिना और माता-पिताका जी दुखाये बिना वहासे मुक्त हो सको तो यहा आओ और कन्याशालाका भार सभालो। नैतिक जिम्मेदारी तो, जैसी आज है वैसी, विनोबाकी ही रहेगी। किन्तु इस कन्या आश्रमका काम है बहुत कठिन। नई लडकियोको प्रवेश देनेसे हम बहुत मुश्किलसे इनकार कर पाते है। हम सब लोगोकी यह धारणा है कि इस सस्थाके सचालनका बोझ तुम अच्छी तरह उठा सकोगे। और यदि तुम यहा हुए तो तुमसे थोडी-थोडी पर कुल मिलाकर बहुत-सारी मदद मुझे भी मिलेगी। इसी तरह जमनालालजीको भी मिलेगी।

फिलहाल, सचालनका काय बाबाजी मोघेके हाथमे है। काम और किसी प्रकार चलता न देखकर विनोबाने उन्हे इसमे रोक रखा है। उन्हे स्वय तो ग्रामसेवाका काम अधिक प्रिय है। वे उसमे लग भी गये थे, किन्तु कन्या आश्रमका यह काम साबरमती आश्रम तोड देनेपर एकाएक उपस्थित हो गया। इसलिए बाबाजीको विनोबाने इसमे लगा दिया। यदि उन्हे कन्या आश्रमके इस कायसे मुक्त किया जा सके तो विनोबा उनका उपयोग ग्रामसेवामे करना चाहते है। मै ऐसा मान रहा हूँ कि यदि तुम आये तो जमना आ ही जायेगी।

पुरुषोत्तम गुरुजनोकी सेवा करेगा। और वहा वह सावजनिक सेवाकाय तो कर ही रहा है। इसलिए मै मानता हूँ कि वह वही रहेगा। किन्तु यदि वह भी यहाँ आ सके तो मुझे उसका आना अच्छा ही लगेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४३४ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी।

४९१ पत्र क० मा० मुन्शीको

२८ माच, १९३५

भाई श्री मुन्शी,

आपकी प्रस्तावनाकी बात मै भला नही हूँ। आपकी पुस्तक मेरे सामने ही है। यह मौन ऐसे ही कामोके लिए है, किन्तु इसतक मै अभी पहुँच नही पाया हू। बाये हाथसे लिखनेमे समय बहुत लग जाता है, इसीसे आज दाहिनेसे शुरू किया है। देखता हूँ, काम कैसा चलता है। मेरी तबीयत ठीक है।

अ० भा० का० स० हिदीका काफी काम करती है, किन्तु सदस्योमे रुचि कौन उत्पन्न करे? हमारा सारा व्यवहार हिन्दीमे कहा होता है? दक्षिणके, बगालके लोग हिदी कहा सीखते ह? इदौरमे उसी समय लिपि सम्मेलन भी होनेवाला है। काकासाहब उसके अध्यक्ष होगे। क्या आप इदौर आ सकेगे? आये चाह न आये, लेकिन सुझाव तो जरूर भेजियेगा। और छ दिनके लिए टकसाल बद की जा सकती हो, तो दोनो जरूर आ जाइये।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५७०) से सौजन्य क० मा० मुन्शी।

४९२ पत्र जेठालाल जी० सम्पतको

२८ माच, १९३५

चि० जेठालाल,

तुम्हारा विस्तृत पत्र मिला। विनोबाको दे दूगा।

जो बहने वहा रहता है, उन्हे तैयार करना चाहिए। हमारे कामका एक ही विभाग समझ लेने लायक है। प्रचार-काय घरसे शुरू न करे, तो हम ठीक तरहसे अपनी शक्तिको नाप नही सकेगे।

विनोबा गहरेमें उतरे है। वे जो त्रुटियाँ देख सके और उनसे मैने जो अनुमान लगाया है, वह गलत सिद्ध हो ऐसा नही है। जहाँ पेड नही होते, वहाँ अरडका ही पेड माना जाता है। हम लोग एसे ही है। तुलनामे तो तुम्हारा काम मेरे हिसाबसे असामान्य है। इसीसे तुम्हे सन्तोष हो जाये, तो मानना पडेगा कि तुम्हारे कामका अन्त आ गया। पर यह डर मुझे नही है।

विनोबाके यहाँ रहनेका उद्देश्य तो यही है कि हम जो-कुछ करते है, उसकी त्रुटि उनसे समझ ले।

दोनो विभाग तुम्हारे कामके है स्वावलम्बी खादीका भी और परावलम्बी खादीका भी। स्वावलम्बी खादीके बिना परावलम्बी खादी लूली हो जायेगी। स्वाव लम्बी खादी गरीब लोगोको सन्तोष नही दे सकती। वे उसमे से जितनी पहन सकते है, उससे बहुत अधिक उत्पन्न कर सकते है। लेकिन खुद पहनेगे नही, तो बहुत डर है कि परावलम्बी खादीका उत्पादन ही बन्द हो जायेगा।

प्रार्थनामे श्रद्धा हो, तथापि कठमे स्वर न हो, ऐसा हो सकता है। इससे भजन न हो, श्लोक न हो, तो भी चल सकता है। रामधुन तो है न? यदि श्लोक बोले जाये, तो उनका उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। अन्यथा उनका अनुवाद ही पढा जाये। किन्तु यदि उससे मन ऊबता हो तो उसे छोड दिया जाये। भजन गानेके लिए उम्दा स्वर आवश्यक है। वह भी न मिले, तो उसे भी छोड देना चाहिए। रामधुन गाना तो सबको आता है। लेकिन उसके लिए भी थोडा अभ्यास चाहिए।

पुरबाई अकेली रहे, तभी सजेगी। समाजमे वह खपेगी नही। गगाबहन बोचासण छोडेगी, ऐसा नही लगता। हमारे पास इतनी अधिक स्त्रियाँ तैयार नही ह, इसलिए अभी तो जैसे बने तुम्ही को काम चलाना पडेगा।

पेशाबघर जो तुमने जमीनके नीचे बनवाया है, उससे किसी दिन बडा नुकसान हो सकता है। उसके बजाय तो मिट्टीके ढेरो पर पेशाब करके उन्हे रोज खतम डाल दिया जाये, तो दोनो प्रयोजन सिद्ध हो। पेशाब कीमती खाद है। किन्तु उसका उपयोग न किया जाये, तो बिगाड भी उतना ही करता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८५१) से, सौजन्य नारायण जे० सम्पत।

४९३ स्वावलम्बी खादी

श्री शकरलाल बैंकर आजकल गावोका दौरा कर रहे है। वे इस बातकी जाच कर रहे है कि वहा खादीको स्वावलम्बी बनाने तथा अन्य उद्योग धन्धोकी प्रगतिकी कहातक गुजाइश है।

स्वावलम्बी खादीका मतलब उस खादीसे है जो गाँववाले अपने-अपने व्यवहारके लिए स्वय कात-बुनकर बना ले, साथ ही, जहाँ सम्भव हो, उसके लिए कपासकी उत्पत्ति और उसकी ओटाई धुनाई आदि भी उसी गाँवमे की जाये। यही खादीका सच्चा ध्येय है। लेकिन इसमे सफलता तभी मिल सकती है जबकि लगातार गाँव-वालोके सम्पकमे रहा जाये। इस काममे होनेवाले आर्थिक लाभके साथ ही उन्हे इस कायका गौरव और महत्व भी समझना चाहिए। इस प्रकार, इस योजनाके अन्दर जो खादी बनाई जायेगी, वह गाँववालोकी रुचिको ध्यानमे रखकर ही बनेगी। खादीको

सुदर बनानेके फेरमे नही पडेगे, यहातक कि वह धुलाई करके नही बची जायेगी, पहननेवाले स्वय अपने कपडे धो लेगे। इस प्रकार जो खादी तैयार होगी वह चलनेमे बहुत मजबूत होगी, और इस लिहाजसे वह दूसरे सब कपडोसे सस्ती पडेगी। शहरोमे बिकनेवाली खादीमे तो उसकी बनावट, स्टॉक, लाने ले जानेका भाडा, कमीशन आदिके दूसरे सब खच भी शामिल रहते है, लेकिन गावकी खादीपर इनमे से एक भी खच नही पडता। अत गावोकी गाव-वालो[illegible] पूरी होनेके बाद जो खादी बने वही शहरोमे जानी चाहिए। कोई भी खादी भण्डार घाटेपर नही चलना चाहिए। अ० भा० चरखा-सघके भण्डारोको कलाके नामपर खाली ऊपरी तडक-भडकपर कभी ध्यान नही देना चाहिए, वे तो मुख्यत कपडेकी किस्म पर ही ध्यान रखे। सच्ची कला क्या है, यह मालूम ही किसको है? ज्यादासे ज्यादा यही कहा जा सकता है कि कला सापेक्ष है। अत अ० भा० चरखा सघके भण्डारोको चाहिए कि वे मौलिक बने ओर इस विश्वासके साथ शहरोमे ग्रामीण कलाका प्रवेश कराये कि एक-न एक दिन वे सफल होकर ही रहेगे। यह बहुत जरूरी है कि जो भी खादी बने वह मजबूत और टिकाऊ हो। देखनेमे सुदर पर चलनेमे कमजोर, ऐसी खादी नही बनानी चाहिए। ऐसा करनेसे तो खादीका ही खात्मा हो जायेगा। इसलिए अगर हम खादीको कमजोर किये बगैर सुन्दर न बना सकते हो तो हम इस सम्बन्धकी अपनी असमथता मजूर कर ले, पर खादीको नि सत्त्व न बनाये। मैने देखा है कि निखारी हुई खादी अक्सर पहली बार पहननेमे ही फट जाती है अत निखराईसे मै काफी भयभीत हो गया हूँ। निखारी हुई हरेक खादीमे ऐसा होता ही है, यह मेरा अभिप्राय नही है। लेकिन ऐसे काफी मामले मेरे सामने आये है जिन परसे मै यह कह सकता हूँ कि निखारी हुई खादीकी कमजोरीके कारण ग्राहक खादीसे असन्तुष्ट हुए है। अत सभी खादी भण्डारोको चाहिए कि मैने जो-कुछ कहा है उसको ध्यानमे रखते हुए वे अपनी व्यवस्थाको ठीक करनेकी कोशिश करे।

और जो बात खादीके लिए कही जा सकती है वही चमशोधन तथा अन्य ग्रामीण उद्योगोके लिए भी सच है। अत ग्राम सेवकोको चाहिए कि काफी अनुभव प्राप्त किये बगैर वे पुराने औजारो, पुराने तरीको और पुराने नमूनोमे दखल न दें। मूल को ज्यो-का-त्यो सुरक्षित रखते हुए उसमे सुधार करनेकी ओर उनकी प्रवृत्ति रहे, यही ठीक है। ऐसा करनेपर उन्हे मालूम पडेगा कि यही सच्ची अथनीति है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-३-१९३५

४९४ मन्दिर-प्रवेश

अभी कुछ दिन हुए त्रिचिनापल्ली जिलेके कुलीतलाई ताल्लुका निवासी पल्ला लोगोका एक सम्मेलन हुआ था जिसमे नीचे लिखे दो प्रस्ताव पास हुए

> **१ महात्माजीने असेम्बलीमे मन्दिर प्रवेश बिलके सम्बन्धमें जो रुख अपना रखा है उसे यह सम्मेलन दु ख और बडी निराशाके साथ देखता है, और इसलिए यह सम्मेलन महात्मा गाधीसे प्राथना करता है कि इस विषय पर उनके जो मौजूदा विचार ह उन्हे वे बदल दें, साथ ही इस विषयको पुन असेम्बलीमें पेश होने दें, उसका नतीजा फिर चाहे जो हो।**
>
> **२ अगर महात्माजी मन्दिर प्रवेश बिलके सम्बन्धमें अपनी मौजूदा राय न बदलना चाहे, तो इस सम्मेलनने देशभरकी दलित जातियोके लोगोसे यह प्रार्थना करनेका इरादा कर लिया है कि वे सबके-सब या तो मुसलमान या ईसाई हो जायें, या फिर ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलके प्रधानमन्त्रीने दलित जातियोके लिए पृथक निर्वाचनका जो निणय किया था, उसे ही कायम रखनेके लिए आन्दोलन करें।**

मुझे पहला प्रस्ताव पसन्द है। इस सम्मेलनने मन्दिर प्रवेशके प्रश्नमे जैसी दिलचस्पी ली है, मैं चाहता हूँ कि तमाम हरिजन वैसी ही दिलचस्पी ले। तब मेरा काम उतना मुश्किल नही रहेगा जितना कि आज है। पर वह मुश्किल हो या आसान, मैं तो हरिजनोके लिए हरेक सावजनिक हिन्दू-मन्दिरका द्वार खुलवा देनेकी दृष्टिसे जो माग सबसे अच्छा समझूगा, उसे जरूर पकडूगा। क्योकि, मेरी रायमे, जबतक अन्य हिन्दुओकी तरह हरिजनोके लिए तमाम मन्दिर नही खुल जाते, तबतक यह दावा नही किया जा सकता कि अस्पश्यता दूर हो गई है।

मगर यह दूसरा प्रस्ताव तो, जहाँतक सम्मेलनका सम्बन्ध है, मन्दिर प्रवेशके मूल पर ही कुठाराघात करता है। जो लोग अपने धमको छोड देनेकी धमकी सिफ इस वजहसे देते हैं कि उसी धमको माननेका ढोग करनेवाले कुछ अन्य लोग उन्हे मन्दिरोमे जानेसे रोकते हैं, वे कदापि धमनिष्ठ नही कहे जा सकते। ऐसे मनुष्य धमकी भावनासे प्रभावित हैं, यह कैसे कहा जा सकता है। मन्दिर तो उपासनागह है। वे उन सबके लिए हैं जिनकी कि उनमे आस्था है। यह धार्मिक जुल्म कुछ आजकी चीज नही है। जुल्म उतना ही प्राचीन है जितना प्राचीन स्वय धम है। यह जुल्म अपने धमसे न डिगनेवालोकी अग्नि परीक्षा लेता है और उन्हे कचन-सा शुद्ध कर देता है। हरिजन यदि इस यत्रणाको धैयपूवक बदाश्त कर सके तो अन्तमे विजयमाला उनके ही गलेमे पड़ेगी।

मगर जिस धर्मको वे सनातन कालसे बिना किसी शिकायतके मानते चले आ रहे हैं, उसे अगर वे आज इस वजहसे छोड़नेकी धमकी दें कि उन्हें मन्दिरोंमें नहीं जाने दिया जाता, तो उनकी यह धमकी ही उनके सारे मामलेको खारिज कर देती है। हरिजन अगर हिन्दू-समाजको छोड़ दें तो सनातनी शायद इसकी परवाह भी नहीं करेंगे। और लड़नेका अगर कोई आधार ही न रहा तो फिर सुधारक भी निरुत्तर हो जायेंगे। पर सौभाग्यसे ऐसे लाखों हरिजन मौजूद हैं जो इन सब यन्त्रणाओंके बावजूद अपने धर्मसे जरा भी विचलित नहीं हुए हैं।

धर्म निश्चय ही एक व्यक्तिगत चीज है। वह मनुष्य और ईश्वरके बीचकी वस्तु है। उसे हरगिज मोल तोलकी चीज नहीं बनाना चाहिए। कुलीतलाई निवासी पल्ला लोगोंके सम्मेलनके कर्णधारोंको मेरी तो यही आदरपूर्वक सलाह है कि वे मन्दिर प्रवेशके प्रश्न पर उसके गुण-दोषकी दृष्टिसे ही विचार करें और अपने दूसरे प्रस्तावमें उन्होंने धर्म-त्यागकी जो धमकी दी है, उससे इस प्रश्नको व्यर्थके विवादमें न डालें।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २९-३-१९३५

४९५. टिप्पणियाँ

एक उदार दान

ठक्कर बापा जब त्रावणकोरमें दौरा कर रहे थे, तब स्थानीय हरिजन-सेवक संघके अध्यक्ष श्री परमेश्वरन पिल्लैने केन्द्रीय संघको अपनी जमीनका एक हिस्सा हरिजन-आश्रमके लिए दान किया था। यह जमीन विठुर नेडुमगद गाँवमें है। श्री पिल्लैने सभामें इस दानके सम्बन्धमें जो छोटा-सा भाषण दिया था उससे उनके दानका उद्देश्य पूर्णतया समझमें आ जाता है। वह भाषण यह है :[1]

> **चौदह बरससे ऊपर हुए, जब यहाँ एक पाठशाला खोली गई थी। दस महीनेका अरसा हुआ कि मैंने करीब आठ सौ रुपये लगाकर इस पाठशालाका मकान फिरसे बनवा दिया। आजकल इस पाठशालामें तीन कक्षाएँ और ७५ विद्यार्थी हैं। इनमें ४० हरिजन हैं—३४ बालक तथा ६ बालिकाएँ, और १६ बच्चे 'कनी' जातिके पढ़ते हैं। मेरा बहुत दिनोंसे यह विचार था कि ऐसी पाठशाला जबतक किसी आश्रमके साथ न होगी, तबतक उसका उद्देश्य पूर्णतः सफल होनेका नहीं। ऐसे आश्रममें एक दो सेवक दिन रात रहें, और वे हरिजन-सेवाका काम अपने हाथमें ले लें, और उसे नित्य नियमपूर्वक करें। इसीलिए मैंने आश्रमके लिए यह एक छोटा सा मकान बनवाया है। आश्रमके निमित्त मैंने दस एकड़ जमीन भी अलग कर दी है, जिसमें से ८½ एकड़ जमीनपर करीब**

१. केवल कुछ अंश ही दिये जा रहे हैं।

दो हजार सुपारीके पेड लगवा दिये ह। दो सालमे इन पेडोमें फल आन लगेंगे। सुपारीके दाम तो अच्छे आ ही जाते ह, इससे आश्रमको आमदनीका एक अच्छा जरिया हो जायेगा। मेरा विचार ऐसे ५ हरिजन विद्यार्थियोको तुरत ही ले लेनेका है जो आश्रममें ही रहकर विद्याध्ययन करें। इनमें २ विद्यार्थी 'कनी' जातिके होगे। एक ऐसे कायसचालककी नियुक्ति कर दी गई है जो आश्रममे विद्यार्थियोके साथ रहेगा। छ महीने बाद ५ और विद्यार्थी दाखिल करनेका मेरा विचार है। इस तरह कुल १० विद्यार्थी हो जायेगे।

इस विचारसे कि ऐसी सस्था हरिजन सेवक-सघकी अग रहकर ही अच्छा काम कर सकती है, मने पाठशाला, आश्रमका भवन, और १० एकड जमीन — यह सब हरिजन-सेवक सघकी केरल प्रान्तीय शाखाके सुपुर्द कर दिया है।

इस उदार दानके लिए श्री पिल्लेको मै बधाई देता हूँ, और यह आशा करता हूँ कि इस आश्रमकी ओर चूकि दाताको स्वय प्रेमपूवक ध्यान देना है, इसलिए हरिजन इसका पूरा सदुपयोग करेगे।

पैसा-निधि

पैसा निधि, अगर पूरे ससारमे नही तो, भारतमे एक अनूठी सस्था है। इसके सस्थापक श्री अता जी० डी० काले एक गरीब आदमी है। पच्चीस वष पहले उहोने एक ऐसी सस्था स्थापित करनेकी बात सोची जिसे निधन निधिकी सज्ञा दी जा सकती थी। क्योकि उद्योगोको प्रोत्साहन देकर गरीबोकी मदद करनेके लिए वे शब्दश एक एक पैसा — चौथाई आना — एकत्र करना चाहते थे। इसका प्रत्यक्ष स्मारक पूनाके निकट स्थित तालेगाँव ग्लास वक्स है, जो सैकडो नवयुवकोको सन्तोषजनक आजीविका देनेका साधन बन गया है। इस निधिकी समितिने अभी-अभी अनेक मित्रोके आशीर्वादोके साथ इसकी रजत जयती मनाई है। मै इस उद्योगके लिए उज्ज्वलसे उज्ज्वल भविष्यकी कामना करता हूँ। रजत जयन्तीकी स्मतिमे समितिने एक बहुमूल्य और पठनीय ग्रथ प्रकाशित किया है जिसमे इस उद्योगका पूरा इतिहास तथा हिदुस्तान भरके तमाम काच उद्योगोके बारेमे प्रचुर सूचना दी गई है। इसे मत्री, ६२६, शानवार, पूना—२ के पास आवेदन देकर प्राप्त किया जा सकता है।

गायका घी बनाम भैसका घी

काशी हिदू-विश्वविद्यालयके औद्योगिक रसायन विज्ञानके अध्यापक डॉ० गोडबोलेने मेरी प्राथनापर गाय और भैसके घी का विस्तत और आलोचनात्मक विश्लेषण लिख भेजा है। साधारण पाठकके लिए यह बडी गूढ वस्तु है। इस महत्वपूण विषयका कोई भी विद्यार्थी चाहे तो म उसके पास प्रसन्नतासे इस विश्लेषण-विवरणको भेज सकता हूँ। इस बीच मै डॉ० गोडबोले जिस निणय पर पहुँचे है उसे ही यहा देकर सन्तोष मानता हूँ।

१ गायके घी में आयोडीनका तत्त्व है। भैंसके घीमें इस तत्त्वका मिलना प्रमाणित नहीं होता।

२ गाय और भैंस दोनोंके ही घी में विटामिन 'ए' और 'डी' है, पर गायके घीमें विटामिन 'ए' अधिक है, जबकि भैंसके घीमें विटामिन 'डी' की मात्रा अधिक है।

३ घी अन्य किसी भी प्रकारकी चर्बी या वनस्पतिजन्य घीकी अपेक्षा श्रेष्ठ है, इसमें तिलमात्र भी शंका नहीं।

४ गायका घी कुल मिलाकर भैंसके घीके मुकाबलेमें आसानीसे हजम हो जाता है, इसलिए वह बच्चों तथा कमजोर मनुष्योंके लिए अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल पड़ता है।

५ आर्थिक दृष्टिसे देखें तो गायसे भैंस अधिक घी देती है।

हमारी रायमें ऐसे प्रयोग हमारे यहाँ होने चाहिए कि तिलका तेल और नारियल आदिका तेल, जिनमें विटामिनोंकी मात्रा तो कम है पर जो अधिक सरलतासे पच जाते हैं, मनुष्यके शरीरके लिए कितने अनुकूल पड़ते हैं।

इन दोनोंमें भैंसके घी की अपेक्षा गायका घी मनुष्यके शरीरकी चर्बीसे अधिक मेल खाता है।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, २९-३-१९३५

४९६. पत्र : अगाथा हैरिसनको

वर्धा
२९ मार्च, १९३५

प्रिय अगाथा,

मेरा मौन-व्रत है, इसलिए तुम्हारा पत्र मिलते ही जवाब दे पा रहा हूँ।

जैसा कि अक्सर होता है, अखबारका समाचार एक ऐसी घटनाका बुद्धिहीन पूर्वानुमान-भर है जो कभी घटनी ही नहीं। हाँ, मैंने यदि पहलेसे सोच विचारकर कोई कदम उठाया तो तुमको अवश्य पहले सूचित कर दूँगा। मुझे अचानक ही कुछ करना पड़ जाये तो बात दूसरी है।

मुझे जोशुआ ओल्डफील्डकी बड़ी अच्छी तरह याद है। मैं जब एक युवकके रूपमें लन्दन गया था तो उन्होंने मेरी सबसे ज्यादा मदद की थी। वे मेरे ही जैसे एक सनकी महाशय हैं।

राजकुमारीने मुझे वचन दिया है कि वह वाट रचित ग्रन्थ मेरे लिए ढूंढ देगी। लेकिन अगर वे हेनरी[1] के पास हों, तो उनसे ले लिये जाने चाहिए।

१ हेनरी पोलक।

महादेवकी पुस्तक[1] का काफी अच्छा स्वागत हो रहा है। गाँवमे हाथसे बनने-वाले सभी कागज इसकी तरह घटिया नही होते। फिरसे काम शुरू होने पर, यह सबसे पहली खेपका कागज है। तबसे काफी सुधार कर लिया गया है।

महादेवने शायद तुमको बतलाया हो कि वे लोग किस प्रकार बदलेकी भावनासे कारवाई कर रहे है। यह सब सत्ताको सुदृढ बनानेके लिए ही किया जा रहा है!! वे यह अनुभव नही करते कि इससे सत्ता किस प्रकार कमजोर पडती है। एक विद्वान व्यक्तिने, जिसने सब-कुछ त्याग दिया है, जो इतना अहिंसक है जितना कि किसी भी आदमीके लिए होना सम्भव है, अपनी जेलकी पूरी सजा काट ली है। उसपर जुर्माना भी किया गया था। उस जुर्मानेको उन्होने उसके भाईसे वसूल कर लिया जिससे कि वह अलग हो चुका था। जुर्माना वापस करना पडा। यह सब कुछ सम्भवत एक साल पहले हुआ था। अब इस विद्वान व्यक्तिको, जो ग्राम-सेवाका काय कर रहा था, कैद कर लिया गया है और वह जुर्मानेके बदले छ सप्ताहकी जेल काट रहा है। इस तरहकी यह पहली वारदात नही है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४८७) से।

४९७ पत्र अमृतकौरको

दुबारा नहीं पढ़ा

२९ माच, १९३५

प्रिय अमृत,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। तुमने चीनीकी समस्या हल करनेमे बडी तत्परता दिखाई। अगर बा का धन्यवाद लेना चाहो तो ले सकती हो। हालाकि 'धन्यवाद' लेने-देनेका रिवाज अच्छा है, फिर भी परिवारके सदस्योमे इसका व्यवहार कुछ बनावटी लगता है। पर तुम स्वतन्त्र हो, जैसा रुचे, करो।

मुझे पूरा विश्वास है कि थाली और कटोरा खरीदनेमे किया गया खच ठीक है।

उम्मीद है कि खानखानामे प्लेगका जो रोग फैला था, अब पूरी तरहसे ठीक हो गया होगा। हम लोग क्योकि स्वास्थ्य तथा सफाईके नियमोकी उपेक्षा करते है, इसलिए हमे ऐसी सजा मिली — ठीक ही है।

गलती करनेवाले सेवकके सम्बन्धमे जो तरीका तुमने अपनाया है वह सही तरीका है, इसमे मुझे जरा भी सदेह नही है। उस व्यक्तिसे जो दूसरोके साथ बुरा बर्ताव करता है और लोगोको सदा शककी नजरसे देखता है और डीग मारता है

1. टू सर्वेन्ट्स ऑफ गॉड।

कि मैंने कभी धोखा नहीं खाया, ऐसा आदमी हजार गुना अच्छा है जो दूसरोंपर विश्वास करता है और धोखा खा जाता है। अलबत्ता, विश्वास करनेके पीछे भावना लालच देनेकी नहीं होनी चाहिए।

लेकिन अध्यक्ष द्वारा सोच समझकर की गई धोखाधड़ी बर्दाश्त नहीं की जा सकती। इस धोखेकी कलई खुलनी ही चाहिए और उसके लिए तुम्हें पूरी कोशिश करनी चाहिए। ट्रस्टीके इस प्रपंचपूर्ण कामको छिपाये रखना कदापि वैध नहीं है। और वकील तो कहते हैं कि हर गलत कामका उपाय है। इसलिए तुम्हारे अध्यक्षने जनताके साथ जो अन्याय किया है, उसका कोई हल तुम्हें ढूंढ़ना ही चाहिए।

कल मैंने शम्मीके पास कुछ प्रश्न आर भेजे हैं। उसे मेरा प्यार देना और कहना कि मैं उसे चैन नहीं लेने दूंगा। यह भी कहना कि मैं उसके सामने ऐसे ऐसे सवाल रखूंगा जैसे कि उसकी डाक्टरीके दौरान कभी नहीं आये थे।

ठीक कताई सीखनेकी सुस्त रफ्तारसे चिंतित होनेकी जरूरत नहीं है। तुम मुझसे अधिक मन्दबुद्धि तो नहीं ही हो सकती।

स्नेह।

बापू

श्री राजकुमारी अमतकौर
जालन्धर शहर

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२५) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३३४ से भी।

४९८ पत्र रेजिनाल्ड रेनॉल्ड्सको

२९ मार्च, १९३५

प्रिय अंगद[1]

यह पत्र तुम्हें सिर्फ इतना बतानेके लिए लिख रहा हूँ कि मैंने डेविड पायकको पत्र लिखा था। उसे बहादुर लड़का बनना चाहिए।

तुम मुझे अपने बारेमें कुछ क्यों नहीं लिखते?

मैं मौनका आनन्द ले रहा हूँ।

हम सबकी तरफसे प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४५४५) से, सौजन्य स्वाथमोर कालेज, फिलेडेल्फिया।

१ गांधीजी श्री रेजिनाल्ड रेनॉल्ड्सको रामदूत अंगद कहते थे, तत्कालीन वाइसरायके पास वे ही २ मार्च, १९३० का अन्तिम चेतावनी पत्र लेकर गये थे, देखिए खण्ड ४३, पृ० २९।

४९९ पत्र ट्रेक लेनबीहको

२९ माच, १९३५

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद।

कृपया यह न सोचिए कि मैं साक्षरताको कम महत्व देता हूँ। हाँ, म इस पर उतना बल नही देता, जितना कि आप। और मेरे तथा आपके कायक्षेत्रमे जो भेद दिखता है वह भी ऊपरी ही है। मलमे हम एक है। मनुष्यके सुख और कल्याणके आप उतने ही अभिलाषी है, जितना मै।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

डॉ० ट्रेक लेनबीह
मिण्डान (पी० आई०)

अग्रजीकी नकलसे। प्यारेलाल-कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

५०० पत्र नरहरि भावे[1]को

[२९ माच, १९३५][2]

मगनलाल गाधीके पिताने मुझे अपने चारो बेटे[3] सौंप दिये थे, उसी प्रकार आपने अपने तीनो बेटे[4] मुझे सौप दिये है। इससे आप कितने मेरे निकट आये है इस सम्बधमे तो मै क्या कहूँ? अब तो आप अपने जीवनका शेष भाग मेरे साथ रह-कर बिताये, ऐसी मेरी प्राथना हे। आपके विविध ज्ञानका मेरे ग्राम उद्योगके काममे भी बडा उपयोग होगा। मेरे इदौरसे लौटनेके बाद आप आ जाये, तो अच्छा रहेगा।

[गुजरातीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

१ विनोबा भावेके पिता।
२ साधन सूत्रमें यह इस तारीखके और पत्रोमें रखा पाया गया।
३ मगनलाल छगनलाल, नारणदास और जमनादास।
४ विनोबा, बालकृष्ण और शिवाजी।

५०१ पत्र मथुरादास त्रिकमजीको

२९ मार्च, १९३५

एक दृढ अस्वीकार छत्तीस मुसीबतें दूर करता है। अंग्रेजी साप्ताहिक 'पंच'की उपदेशावलीमें एक सिद्धान्तवाक्य है। वह यह है अगर जरा भी सन्देह हो, तो मत करो। "डोंट इज पंचस एडवाइस।"[1]

आजकलका वातावरण अत्यन्त अनीतिमय हो गया है, यह तो हम देख ही सकते हैं। ऐसी स्थितिमें मूक सेवा ही स्वर्णपथ है।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृष्ठ १५७

५०२ पत्र तगडूर रामचन्द्र रावको

३० मार्च, १९३५

तुम्हारे पत्रसे मेरी उस रायकी पुष्टि हो गई है जो मैं व्यक्त कर चुका हूँ।[2] तुम्हारा अनशन हिंसाका ही एक रूप था। तुम अपने प्रति बेरुखीको धीरजके साथ मौन तथा निस्वार्थ-सेवा करके ही सहानुभूतिमें बदल सकते हो।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

१ गांधीजी ने यहाँ मूल अंग्रेजी उद्धरणका ही प्रयोग किया है।

२ देखिए "एक पत्र", पृष्ठ ३८३।

५०३ पत्र वल्लभभाई पटेलको

वर्धा
३० मार्च, १९३५

भाई वल्लभभाई,

मैंने तो किसीसे हा कहा ही नही। अखबारमे पढा तब मुझे आश्चय हुआ। मेरी इच्छा इस समय कही भी जानेकी नही होती। मेरा बस चले तो मै मौनकी अवधि बढा दू। यह मुझे बहुत अनुकूल आ गया है। जरूरत पडने पर सूचनाएँ दे देता हूँ। परन्तु आपके वचनको कौन टाल सकता है? दूसरा कोई मुझे इस वक्त बाहर नही निकाल सकता था। अगर अब भी मुझे ज्यो-त्यो करके एक वष निकाल लेने दे तो निकाल डालू। लेकिन अगर मुझे कही ले ही जाना हो, तो वह जगह बोरसद ही हो सकती है। जहा अधिकसे अधिक महामारी हो वहा। मडपमे रहना अच्छा लगेगा। रासकी पैदल-यात्रा करेगे। मुझसे चार काम लीजिए अस्पृश्यता निवारण, खादी, ग्रामोद्योग और प्लेग-निवारण। किसानोके आसू पोछना कोई कायक्रम थोडे ही माना जा सकता है? मुझे और कही न ले जाये। कमसे कम दिन रखकर बिदा कर दे। मईके मध्यमे कोई भी तारीख रख ले। इन्दौरके बाद वापस आनेकी बात तो रहेगी ही।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५६

५०४. पत्र मीठूबहन पेटिटको

३० माच, १९३५

चि० मीठूबहन,

देखता हूँ तुम्हारा काम तो खूब चल रहा है। शहद बनाने लगोगी, यह अच्छी बात है। चमडेका भी कुछ करना। कपास भी बोना।

गुजरात आनेके बारेमें कुछ भी निश्चित नही है। सरदारने माँग अवश्य की है। विचार कर रहे हैं। गये तो भी बहुत करके एक ही जगह जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० २४३२०) से।

५०५ पत्र हरिभाऊ उपाध्यायको

३० मार्च, १९३०

चि० हरिभाऊ,

मुझे तो लगता है कि तुम बिलकुल ही गलत दिशामे भटक गये हो। जो व्यक्ति कोरी भावनाके वशमे आ जाता है उसका यही हाल हो जाता है। मेरी समझमे नही आता कि [1]के अभिभावकसे पूछे बिना को पूछनेका अधिकार तुम्हे कहासे मिल गया। एक ही सस्थाके होते हुए भी तुमने सचालकसे बातचीत करने जितना विवेक भी नही रखा। के मनको प्रेरित करनेका अधिकार तुम्हे कहासे आया? किसीके विरहमे छीज नही रही थी। अभी भी उसका हृदय एक कोरा कागज है। तुम्हे तो का स्वार्थ साधना है। तुम के सयमकी तारीफ करते हो। इससे जाहिर होता है कि सामान्य नीतिका तुम्हे बडा धुधला ज्ञान है। उसने दोनोके एक ही आश्रममे रहते हुए आश्रमके नियमोका उल्लघन नही किया, इसमे कौन-सी बडी बात हो गई। तब तो वे दूसरे लोग जिनके मनमे आश्रमकी लडकियोके प्रति कोई विकार पैदा नही हुआ देवताओसे भी बढ गये क्या?

बहनको कितना दुःख हुआ होगा, इसकी कल्पना तुम्हे कैसे हो सकती है? ऐसे मामलेमे को घसीटकर तुमने और भी बडा दोष किया है। जो तुमने के साथ किया यदि वैसा ही कोई के प्रति करे तो क्या तुम उसे अच्छा मानोगे? कोई भी चाहे जिस बेटीका बाप बनकर बैठ सकता है, क्या तुम ऐसा कोई अधिकार कबूल करते हो?

मेरी दृष्टिसे तो तुमने का और का अनिष्ट किया है। तुमने मेरी स्थिति कठिन बना दी। मुझे बहनको सावधान करना पडेगा। को आश्रमसे निकाल बाहर करना पडेगा। तुम्हारे पत्रका मैंने यही अर्थ निकाला है कि तुम सभी लोगोकी अवज्ञा करके के साथ का विवाह करानेका प्रयत्न करोगे और उसमे बेचारी को साधन बनाओगे। मुझे तुम यही करके आश्वासन दे सकते हो कि तुमने जो अधर्म किया है उसे समझ लो और बहनको निश्चिन्त कर दो तथा को उसके अधर्मका भान करा दो। किन्तु यदि तुमको ऐसा लगता है कि तुमने जो-कुछ किया है वह उचित किया है तो तुम मुझे तार कर देना कि 'अनकन्विन्स्ड'। इतनेसे मैं तुम्हारा अभिप्राय समझ जाऊँगा और तब बहनसे बात करूँगा। फिलहाल तो मैं किसीसे कुछ कहना नही चाहता। इसलिए तुम चिन्तामे मत पड जाना। यह चिटठी डाट फटकारके खयालसे नही है। इसका अभिप्राय केवल तुम्हे तुम्हारा धर्म समझाना है।

१ साधन सूत्रमें नाम छोड़ दिये गये है।

मुझे जहा उतारना ठीक समझो वही उतरनेका प्रबध कर लेना।

मुझे महाराजा[1]को लिखते हुए सकोच नही होता।

मुझे जो पैसा दिया जाना है उस पर सम्मेलनका कोई अधिकार नही होना चाहिए। प्रदशनीके बारेमे यथासमय।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० ६०८२) से, सौजन्य हरिभाऊ उपाध्याय।

५०६ एक पत्रका अश[2]

[३० माच, १९३५][3]

अपने बच्चे पालनेके लिए अथवा अपना भोजन बनवानेके लिए नई शादी करन जैसा ढोग शायद ही दूसरा कोई हो। मै समझता हूँ, अपनी विषयवासना तप्त करनेके लिए शादी करना है, यह नम्रतापूवक स्वीकार करके शादी करना ज्यादा अच्छा है। दूसरी शादी करनेवालेको मत पत्नीके प्रेमका ढोग छोड देना चाहिए, अथवा यह कहना चाहिए कि वह प्रेम विषयवासनाको तृप्त नही करता।

[गुजरातीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

५०७ पत्र: कासिम अलीको

३० मार्च, १९३५

सैयद साहब,

आपका पत्र मिला। इदौरमे उस बारेमे जाच परताल करूँगा। यो तो म पुस्तकके बारेमे तलाश करता हूँ।

१ आशय कदाचित् इन्दौरके महाराजासे है। वहाँ हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अधिवेशन होने जा रहा था।

२ पत्रलेखकने लिखा था कि मेरी पत्नी नही रही, और मेरे ससुर आग्रह कर रहे है कि मैं बच्चोंकी खातिर उनकी दूसरी बेटीसे शादी कर लूँ।

३ साधन-सूत्रमें यह पत्र इसी तारीखकी दूसरी सामग्रियोंके साथ रखा था।

ग्रा० उद्योग संघमें पुस्तक लिखानेका आरम्भ नहीं किया है। आपने अरजी कब भेजी थी? मैंने यहांके दफ्तरमें तलाश तो की है। अरजीकी नकल भेजीये। संघका काम किस क्षेत्रमें किस तरह करोगे?

आपका,
मो० क० गांधी

श्री सैयद कासिम अली विशारद
बैतूल
मध्य प्रांत

पत्रकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ९७४९) से।

५०८ पत्र भगवानदीनको

३० मार्च, १९३५

भाई भगवानदीन,

भाई अवधेश पर आया हुआ तुमारा पत्र मंने पढा है। अवधेशके जैसी गलती बहूत युवक करते हैं।[1] अवधेशने गलती महसुस की है, प्रायश्चित भी कर लिया है इससे अबी उस बारेमें कोई कलंक न माना जाय। 'हरिजन'[2] में भी मैं ऐसे लिख दूंगा।

मो० क० गांधी

पत्र की फोटो-नकल (जी० एन० ७३६) से।

५०९ पत्र. ब्रजकृष्ण चांदीवालाको

३० मार्च, १९३५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा खत मिला। अच्छा है वही इलाज हो रहा है। यहांसे जानेका हुआ यह भी अच्छा ही हुआ।[3]

मेरे उत्तर परसे जो पूछना है अवश्य पूछो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४३९) से।

१ देखिए पृष्ठ २९५।

२ देखिए पृष्ठ ४५८।

३ ब्रजकृष्ण चाँदीवाला वर्धामें लम्बे अरसेतक रहनेके लिये आये थे। परन्तु अस्वस्थताके कारण मार्चके मध्यमें वापस चले गये थे और इस समय कश्मीरमें स्वास्थ्य-लाभ कर रहे थे।

५१० पत्र हातिम अलवीको

३१ माच, १९३५

मुझे तुम्हारा दूसरा पत्र मिला, और उसके बाद तुम्हारे द्वारा भेजी गई पुस्तिका[१] भी। मैंने तुम्हारे पत्रको बडे गौरसे पढा है। तुम्हारा पक्ष निस्सन्देह मजबूत है। तुम्हारे द्वारा की गई मेरी इस प्रशसासे कि ऐसा कोई परिवार नही है जिसके साथ मेरा रिश्ता न हो, मै खुदको गर्वित महसूस कर रहा हूँ। फिर भी, मेरा फज है कि मै किसी औरके मामलेमे हस्तक्षेप न करूँ। जबतक एक ही परिवारमे मतभेद पाये जाते है उन मतभेदोका आदर तो करना पडेगा ही। हम सभी एक विशाल मानव-परिवार है। तुमने इससे आगेकी जो बात लिखी है, उससे मैं सहमत हूँ। ईश्वरके द्वारा पैदा किये गये सब प्राणी एक परिवार है। पर हमें कुछ मर्यादाओको भी मानना ही पडेगा। मुझे विश्वास है कि तुम्हारे इस झगडेमें बोहरा-जातिसे बाहरका कोई हस्तक्षेप नही होना चाहिए। अगर तुम चहारदीवारी तोडकर उससे बाहर चले गये थे, तो फिर तुम किसी बातकी शिकायत नही कर सकते। अगर तुम बोहरा-लोगोको कोई खास जमात मानते हो, तो तुम्हारे झगडेका फैसला भी उन्हीके बीच होना चाहिए। मामलेके उस हदसे बाहर चले जाने पर हम सभीको परेशानी होगी।

और फिर प्रश्न है कि अपनी धार्मिक-सस्थाका सम्मान न करके क्या तुमने ठीक काम किया? ध्यान रहे कि मै इस मामलेकी कानूनी नजरसे पडताल करनेकी कोशिश नही कर रहा हूँ। उसका नैतिक रूप ही इस समय मेरे सामने है। अहिंसाकी नजरसे देखें तो तुम्हें अपनी सस्था द्वारा दी गई आज्ञाको मान लेना चाहिए था। वातावरणमें तो पहलेसे ही जहर भरा हुआ है। तुम्हारा उद्देश्य था, और अब भी है कि तुम्हारे धम-गुरु तुम्हारी रायसे सहमत हो जायें, और अगर वे नही तो कमसे-कम बोहरा-जातिके लोग तुमसे सहमत हो। यह तुम्हे मसजिदमें जबदस्ती जानेकी कोशिश किये बिना ही करना था। तुम्हारा मकसद सचकी जीत है, अपने हकका दावा करना नही। मै नही जानता कि मैंने जो-कुछ कहा है, उससे तुम किस हद तक सन्तुष्ट हो सकोगे।

१ बोहरा युवक सघने प्रकाशित की थी। इसमें बोहरा समुदायके सुधारवादी और रूढ़िवादी लोगोंके बीच कलहकी चर्चा थी। सुधारवादी चाहते थे कि सभी बोहरा ट्रस्टोंको वक्फ़ एक्टके अन्तर्गत लाया जाये। ऐसा दृष्टिकोण अपनानेके कारण मुल्लाओंने उन्हें धर्मच्युत कर दिया था, परन्तु उन्होंने अदालतके निर्णयके आधार पर मस्जिदोंमें जानेका अधिकार प्राप्त कर लिया था।

स्नेह।

बापू

[अंग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

५११ पत्र ना० रा० मलकानीको

वर्धा
३१ मार्च, १९३५

प्रिय मलकानी,

पत्र मिला। मेरा खयाल है कि मैंने तुम्हें जो पत्र लिखा है उसमें कहा था कि इमारत बनानेमें जली पुरानी इंटों और ऐसे ही दूसरे पुराने सामानका उपयोग कर लो। अमतुलसलामके बारेमें तुम्हारी बात मैं समझ गया हूँ। वह भी एक जली इंट है, कुछ उसी जैसी। तुम उसे जितना प्यार दे सकते हो वह उसकी अधिकारिणी है। तुमने इन्दौर छात्रावासके बारेमें जो-कुछ कहा है, उसे भी मैं समझ गया हूँ।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१४) से।

५१२ पत्र मणिलाल तथा सुशीला गांधीको

३१ मार्च, १९३५

चि० मणिलाल तथा सुशीला,

तुम्हारे पत्र मिले। कुछ घोटाला हो गया है। देवदासके पत्रका कुछ अंश मुझे मिला है और मेरे पत्रका उसके पास चला गया है।

नये एजेंट[1] वाली बात समझ गया। महाराज सिंहने तेरी आलोचना की है, उसके बारेमें सोचना भी नहीं चाहिए। सार्वजनिक काम करनेवालेको यह सब बर्दाश्त करना ही पड़ता है। जिसे तू अपना धर्म मानता है, वह निर्भयतापूर्वक करता रह।

रामदासका कामकाज फिर पटरीसे उतर गया है। जिसके साथ हिस्सेदारीमें पड़नेवाला था, उसने वह खुद ही तोड़ दी। यह तो अच्छा ही हुआ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३५)से।

१ सैयद रजा अली, दक्षिण आफ्रिकामें भारत सरकारके एजेंट।

५१३ पत्र हरिवदनको

३१ मार्च, १९३५

भाई हरिवदन,

तुम्हारा पत्र मिला। समझ गया। अब परीक्षितलालको लिखता हूँ। मामा तो आकर मिल गये।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४००७) से।

५१४ पत्र अ० वि० ठक्करको

३१ मार्च, १९३५

भाई ठक्कर बापा,

मै मौन हूँ तो खरी खोटी सुननेसे बचनेके लिए नही, बल्कि लोग जो कुछ कहना चाहे उसे चुपचाप सुननेके लिए।

शास्त्री अकेला कॉलम सँभाल सकता है या नही, यह देखियेगा। गणेशनकी और उसकी बनेगी या नही, यह भी देखियेगा। गणेशनकी ईमानदारीके बारेमे सन्देह हो तो, उसे अवश्य कायमुक्त कर दे। जब उसके बारेमे कोई सदेह न हो तभी रखे रहे।

कर्ज यदि काग्रेसके नाम पर लिया गया हो, तब तो हमे भरना ही पड़ेगा। हुण्डियोका अगर कोई मूल्य नही है, तो मानना चाहिए कि वह सस्था निकम्मी है और एक कौडी भी नही देनी चाहिए।

मै इन्दौरमे २० से २४ तक रहूँगा। फिर यही।

बापू

श्री ठ[क्कर बापा]
हरिजन से[वक] सघ
त्रिचनापल्ली, एस० आई०

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११५४) से।

५१५ पत्र अवधेश दत्त अवस्थीको

३१ माच, १९३५

अच्छी बात है। मेरे निकट ही रहोगे जैसे आज है। तुमको कातना इत्यादि नही आता होगा तो सिखा दूगा। दूसरा देख लूगा। जहा तक रहोगे रु० १५ माहवार दिया जायेगा। खानेका खच उसमेसे कट जायेगा। खानेके खचका हिसाब करा रहा हु। दिलमे कुछ भावना पैदा होवे मुझे बताते रहो।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च]

अखबारमे भेज रहा हूँ।[1]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१९) से।

५१६ पत्र : अमृतकौरको

वर्धा
१ अप्रैल, १९३५

प्रिय अमत,

मैं नही चाहता था कि तुम इतनी मात्रामे मुझे चीनी और गुड भेजो। अगर यह इसी तरह चलता रहा तो मेरे लिए तो तुम अन्नपूर्णा बन जाओगी।

बहुत अधिक मेहनत करनेके खिलाफ तुम्हारी चेतावनी देखकर मन एक जुमला कसनेको करता है "हकीमजी, अपना तो इलाज करो।"

तुम्हे राइस जोन्सकी याद है? उसने मुझे कहा है कि शम्मीसे जितना भी ले सकू, काम लू। क्या मैं पहलेसे ही राइस जो स के मुताबिक नही कर रहा था?

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२६) से, सौजन्य अमतकौर। जी० एन० ६३३५ से भी।

१ देखिए "टिप्पणियाँ", पृ० ४५८ उपशीषक "पूर्ण प्रायश्चित्त"।

५१७ पत्र वालजी गो० देसाईको

१ अप्रैल, १९३५

चि० वालजी,

एक बात तुम्हे लिखना भूल गया था। जीवनजी कुछ दिन पहले यहा आये थे। वे कहते थे कि अपनी विशेष वतनीके तुम्हारे आग्रहके कारण तुम्हारी पुस्तकोकी बिक्रीमे कुछ अडचन होती है। वतनीके इतने अधिक आग्रहके पीछे कोई सिद्धात तो नही ही हो सकता। तो क्या जहाँ सिद्धातका प्रश्न न हो, वहा बहुमतका सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य नही है? यदि सब अपनी ही राय सही होनेका आग्रह रखे, तो न तो जनतामे एकता हो, न कोई सस्था ही चले। यदि तुम्हे अपनी वतनीका बहुत आग्रह है, तो पहले उसका प्रचार करके सफलता प्राप्त करो। किन्तु जबतक सफलता नही मिलती, तबतक तुम्हारे विद्यापीठने जिस वतनीको मान्यता दी है, उसे स्वीकार करो। यह भी हो सकता है कि तुम अपनी सभी पुस्तकोमें अपनी वतनीके नियम तथा उसके समर्थनमे तर्क दो, और यह लिखो कि जबतक वह तुम्हारे साथियोके गले नही उतरती, तबतक तुम उनकी चलाई हुई वतनीको स्वीकार किये रहोगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४७१) से, सौजन्य वालजी गो० देसाई।

५१८ पत्र वसुमती पण्डितको

१ अप्रैल, १९३५

चि० वसुमती,

लगता है, मुझे पत्रके साथ थोडी-थोडी अकल भी तेरे लिए भेजनी पडेगी। मैंने तो सामान्य रसोईघरकी बात सभी लोगोके लिए कही थी। उसके लिए इतना बडा कुकर है कि उसके भीतर मै और तू दोनो उबल जायें। उसमे दलिया, साग, दाल, भात और दूधके बर्त्तन एक ही साथ रखे जा सकते है। ऐसा कर देनेसे कुछ देखना तो पडता ही नही इधनकी भी बडी बचत होती है। प्रभावती, बा, किशोरी, सब देवली गाव प्रदर्शनीमे गये है। प्रभासे कहूँगा कि तुम्हे लिखे। शारदा कोटक यहाँ लगभग पन्द्रह दिन रह कर गई।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

गंगाबहन मजेमें होगी। दुर्गाको तो मैंने बोरीवली लिखा है।

श्री वसुमतीबहन
उद्योग संघ आश्रम
बोचासन, बरास्ता बोरसद

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९३९७) से। सी० डब्ल्यू० ६४३ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित।

५१९ पत्र अ० वि० ठक्करको

१ अप्रैल, १९३५

भाई ठक्कर बापा,

आपके भेजे कागज मिले। मैंने दोनों अध्यगारोंको लिख दिया है और कागज मलकानीके पास भेज दिये हैं।

१२ तारीखके बाद आपकी राह देखूंगा। तैयार बैठा हूँ।

बापूके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० २२७५३) से।

५२० पत्र वियोगी हरिको

१ अप्रैल, १९३५

भाई वियोगी हरि,

चर्खा संघ, उद्योग संघ, हरिजन संघके दफतर हिंदीमें रखनेकी समस्या बहुत कठिन है। तीनों दफत[र]में इंग्रेजी जाननेवाले ही कुशल आदमी मिले हैं। हिंदीके कार्यकुशल विशारद मिलते कहाँ? ऐसी हालतमें क्या किया जाय? मेरे व्याख्यानकी इसमें आवश्यकता नहीं है। यदि योग्य आदमी मिले तो तीनों दफतरमें आज परिवर्तन हो सकता है। इस बारेमें कुछ सूचना है तो भेजीये। इंदौरमें आओगे ना?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९५) से।

५२१ पत्र हीरालाल शर्माको

१ अप्रैल, १९३५

चि० शर्मा,

खत मिला। अबतक कुछ तार नही है इसलिये देवी अच्छा है[1] ऐसा मानता हूँ। मैंने तो अबतक किसी को इजेक्शन नही लगवाये ह्। मिट्टीकी पुलटीस इ० ही से काम लिया है। हा, यदि सीमले जा सकते हो तो अवश्य जाओ। किताबे भी यदि हाथ आयगी तो मैं भेजुगा। मौन छुटने के बाद का जो डर है वह व्यथ है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ३१५३) से।

५२२ पत्र पुरुषोत्तम बावीशीको

२ अप्रैल, १९३५

भाई पुरुषोत्तम,

मैंने आपको इन्दौर आनेके लिए २८ माचको पत्र लिखा था। आपके ३१ के पत्रसे मालूम होता है कि तबतक वह आपको मिला ही नही था। हो सकता है, पता[2] शाजीपुरके बदले शामपुर हो गया हो।

आप दोनो इन्दौर जरूर आइये। समय तो यहासे निश्चित नही कर सकता। लेकिन हम बात तो करेंगे ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२३) से। सी० डब्ल्यू० ४७४६ से भी, सौजन्य पुरुषोत्तम बावीशी।

१ हीरालाल शर्माके पुत्रको कुत्तेने काट लिया था जिसके घावका इलाज मिट्टीकी पट्टीसे किया जा रहा था।

२ गांधीजीने शामपुर ही लिखा था, देखिए पत्र पुरुषोत्तम बावीशीको ', पृ० ३८४।

५२३ पत्र लक्ष्मणदास कपूरको

२ अप्रैल, १९३५

भाई कपूरजी,

रोज सोचता था और रोज ही लिखना रह जाता था। माफ कीजियेगा। दूसरा चश्मा जो आपने भेजा है ठीक बैठता है और मैं रोज़ उसीसे काम ले रहा हूँ। आभार मानता हूँ।

बापूके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० २२१६) से।

५२४ पत्र वल्लभभाई पटेलको

२ अप्रैल, १९३५

भाई वल्लभभाई,

मणिलालको मिले जवाबकी[1] नकल भेजिये। उसकी भाषापर से दिल्ली लिखनेके पत्रके बारेमें सूझ जायेगा।

ऐसे जवाब तो अभी कुछ भी नही है। इससे भी अधिक अपमान होनेवाले है। इसीलिये हमे अलग रहकर जो हो सके सो करते रहना है। मै इसीमे अपनी शक्तिका सग्रह मानता हूँ। वैसे गुस्सा करना तो आसान ही है।

प्लेगका टीका लगवानेके बारेमें मेरे विचारोपर ध्यान न देकर चलनेमे शायद सुरक्षा हो। मै तो ऐसे खतरे उठाता ही रहा हूँ और दूसरोसे भी उठवाये है। लेकिन ऐसे वक्त मै हमेशा मौके पर हाजिर रहा हूँ। इस समय दूर बैठा अपने विचार फेका करूँ, तो उनका अनुकरण खतरनाक हो सकता है। इसलिए मेरी तो सलाह है कि डॉ० भास्कर कहे सो किया जाये। मैने अपने विचार उनके सामने रख ही दिये है। शायद वह पत्र आपने पढा भी हो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५७-५८

१ मणिलाल कोठारी गु० प्रा० कां० स० के सचिव। सजा पूरी होने पर उन्हें सौराष्ट्रमें ले जाकर छोड़ दिया गया था और ब्रिटिश सरहदमें प्रवेश न करनेकी आज्ञा दी गई थी। यहाँ आशय उसके बारेमें लिखे गये पत्रके सरकारी जवाबसे है।

५२५ पत्र अमतुस्सलामको

२[1] अप्रैल, १९३५

प्यारी बीबी,

मेरे खत मिले होंगे। खुर्जेमें क्या किया? अब तो हरिजनवासमें जानेका मौकूफ रहा? तुम्हारी सेहत अच्छी होगी। इन्दौर आती है क्या? यहां सब ठीक है।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१) से।

५२६ पत्र विमलप्रसाद चालिहाको[2]

वर्धा
३ अप्रैल, १९३५

प्रिय विमलप्रसाद,

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम मधुबनी हो आये हो। अब तुम्हें निश्चय ही अपने प्रान्तमें इन विविध प्रक्रियाओंका प्रचार करना चाहिए। तुम अ० भा० च० स० तथा अ० भा० ग्रा० स० दोनों संस्थाओंके सदस्य बन सकते हो। क्या तुम्हारे पास 'हरिजन' बाकायदा पहुँच रहा है?

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९७३६) से, सौजन्य असम सरकार।

१ साधन सूत्रमें तारीख स्पष्ट नहीं है।

२ १९६९-७० में दिल्लीमें आयोजित 'गांधी दर्शन प्रदर्शनी' में उक्त पत्रकी फोटो नकल असम कक्षमें प्रदर्शित की गई थी।

५२७ पत्र अमतुस्सलामको

३ अप्रैल, १९३५

प्यारी बीबी,

तुम्हारा खत मिला है। इदौरसे मैं वर्धा वापिस आ जाऊँगा। झोपडी तैयार होने तक वर्धामे रहो। और भी रह सकती है। झोपडीके बारेमे मलकानीको मै लिख देता हूँ कि पक्की इटके दो कमरे बनावे, भले थोडा ज्यादा खर्चा हो। मेरे आनेतक बिलकुल अच्छी हो जाएगी ना?

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२२) से।

५२८ पत्र ना० रा० मलकानीको

३ अप्रैल, १९३५

प्रिय मलकानी,

अच्छा यही होगा कि अमतुलके लिए तुम दो कमरे बनवाओ और जो सामग्री अन्य इमारतोके बनानेमे इस्तेमाल कर रहे हो, इन कमरोके लिए भी उसीका इस्तेमाल करो। जो अतिरिक्त खर्च होगा, उसकी चिन्ता न करो, क्योकि आखिरकार इमारत हमारी जायदाद हो ही जायेगी।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१५) से।

५२९ पत्र डॉ० पट्टाभि सीतारमैयाको[1]

३ अप्रल, १९३५

प्रिय डा० पट्टाभि

बिना बतन बिस्तर और पूव सूचनाके तुमने दो नवयुवकोको भेज कर मुझे बडी ही मुश्किलमे डाल दिया। हम खुद अभी यहा ठीकसे जम नही पाये है। हमारी जरूरतके लायक काफी जगह हमारे पास नही है। किसी सस्थाके सिर पर इस तरह लोगोको लाद देना क्या उचित है? मान लो दूसरे भी तुम्हारा अनुकरण करने लगे तो मेरी क्या दशा होगी?

सिखानेके विचारसे हमने अभीतक लोगोको लेना शुरू नही किया है। सिखानको कुछ ऐसा है भी नही। इसलिए मैने उनको रखकर यह कहा है कि अपने दूसरे कामोके साथ साथ वे हम सबकी तरह भगीका काम और मजदूरी करेगे। अब मेहरबानी करके फिरसे ऐसा मत करना।

अगर उनके घर या दोस्तोसे लेकर पैसा भिजवाया जा सके तो जानेके किराये और कुछ जरूरी खचके लिए पर्याप्त रकम भिजवा देना।

तुम अपने समयका क्या उपयोग कर रहे हो?

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
इन्सिडेन्टस ऑफ गाधीजीज लाइफ, पृष्ठ २२५

१ पट्टाभि कहते हैं "१९३५ में कोई सत्याग्रही जेलसे छूटनेपर मेरे पास आया और उसने परिचय-पत्र पाकर वर्धा जाकर आश्रम देखनेकी इच्छा जाहिर की। मैंने परिचय पत्र सहर्ष दे दिया। परिचय पत्र पाकर जब वह रवाना होने लगा तो रेलवे स्टेशन पर एक और मित्रको साथ ले जानेकी उसने इच्छा बताई। मैने उसका भी नाम उस पत्रमें जोड दिया।

५३० पत्र अम्बुजम्मालको

वर्धा
३ अप्रैल, १९३५

चि० अम्बुजम,[1]

तुम्हारे पत्रकी प्राप्ति स्वीकार करनेके लिए एक पक्ति लिख रहा हूँ। मुझे त्रिवेन्द्रमसे शहदका एक पासल मिला है। क्या वह भी तुमने भेजा है? जबतक मै न मागू मत भेजना। फिलहाल मेरे पास बहुत शहद है। लेकिन तुम बादाम फिर भेज सकती हो। यहा मुझे अच्छे बादाम नही मिल पाते।

यदि तुम आ सकती हो तो इन्दौर जरूर आओ। यदि माँ आयें तो उन्हे भी क्यो न लेती आओ।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजीसे अम्बुजम्माल कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

५३१ पत्र अब्बासको

३ अप्रैल, १९३५

चि० अब्बास,

बहुत दिनोमें पत्र लिखा। मै तो लिख ही चुका हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल, (जी० एन० ६३१०) से।

१ यह हिन्दीमें है।

५३२ पत्र जमनालाल बजाजको

३ अप्रैल, १९३५

चि० जमनालाल,

कमलनयन और वह कन्या, दोनो पूरी तरह राजी हो और सादगीसे रहनको तैयार हो, तभी सम्बन्ध निश्चित करना। उतावली करनेकी कोई जरूरत नही है। विवाह किये बिना कमलनयन पश्चिम नही जायेगा, उसका यह आश्वासन हमारे लिए काफी है। परिपक्व होनेके लिए कमलनयनको अभी बहुत कुछ सीखना है। उसे अथवा उस लडकीको आगे ज़रा भी दुख न हो, यह देखना हमारा काम है।

यदि कमला भवालीमें तुम्हारी उपस्थितिका खास तौर पर आग्रह न करे, तो सिहगढ जाना शायद ज्यादा ठीक होगा। फिर भी तुम इसपर सोचो। अपने शरीरका ध्यान पहले रखना है। [1] रास्तेमे रहा होगा।[2]

कमलनयन इन्दौर तो आयेगा ही, तब सब मालूम हो जायेगा। यदि सिंहगढ जाना तय हो और वह भी सम्मेलनकी तारीखोके आसपास, तो इन्दौर होते हुए जाओ, यह मुझे अच्छा लगेगा।

मदालसाका काम ठीक चल रहा है। गगा शान्त है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६१)से।

५३३ पत्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलनके मन्त्रीको

३ अप्रैल, १९३५

प्रधान मन्त्री
अ० भा० हिन्दी सा० स०
इन्दौर

प्रधान मन्त्रीजी,

मेरा खयाल रहा है कि सम्मेलन और प्रदर्शन करनेवाले प्राय एक ही है। मेरे साथ दोनोके बारेमें बात भी वही सज्जनोने की थी जो सम्मेलनके बारेमे आये थे। इसी कारण मैंने प्रदर्शनीका और एक व्याख्यानका कबूल कर लिया और वह भी उसी खतमें जिसमें सम्मेलनकी बात थी।

१ और २ साधन सूत्रमें कुछ शब्द अस्पष्ट हैं।

१९ ता० को यहासे मुझे कौनसी ट्रेनमे निकलना होगा और कसे पहूचना होगा।

मो० क० गाधो

वीणा, श्रद्धाजलि अक, अप्रैल मई, १९६९।

५३४ 'हरिजन' का पूनासे प्रकाशन

४ अप्रैल, १९३५

केवल खचकी बचत और आर्थिक दृष्टिसे 'हरिजन,' जो प्रारम्भमे आयभूषण प्रेस द्वारा पूनामे प्रकाशित किया जाता था पर कुछ समय पूव मद्रास स्थानान्तरित कर दिया गया था, अगले सप्ताहसे फिर पूनासे प्रकाशित होने लगेगा। श्रीयुत महादेव देसाई उसके सम्पादक होगे। इस प्रकार 'हरिजन'] अग्रेजी] तथा 'हरिजनबन्धु' [गुजराती,] दोनो समाचारपत्र एक ही प्रेस तथा स्थानसे प्रकाशित होगे। इसलिए, अब 'हरिजन' के लिए किया जानेवाला सारा पत्राचार आवश्यकतानुसार मैनेजर अथवा सम्पादक, आयबन्धु प्रेस, पूना ४ के पते पर ही किया जाये।

मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १३ ४-१९३५

५३५ पत्र ऐफी एरिस्टार्चीको

४ अप्रैल, १९३५

तुम्हारे पत्रसे अलेक्जेडर मायर्सीकी मत्युका समाचार ज्ञात हुआ। मरण एक अचूक और सच्चा मित्र होता है, और वह जब भी आये, हमे उसका स्वागत करना चाहिए। वह जन्मका ही जुडवा भाई है। हम एकका स्वागत करे और दूसरेसे डरे, यह बात मेरी समझमे कभी नही आई। अगर मत्युके बाद किसी प्रकारका जीवन निश्चित है, तो मत्यु-प्रदत्त परिवतनका हम स्वागत क्यो न करे?

[अग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

५३६ पत्र अगाथा हैरिसनको

वर्धा
४ अप्रैल, १९३५

प्रिय अगाथा,

तुम्हारी डाक मिली। म राजाजीको भेजनेके तुम्हारे सुझाव[१] का समथन करता हूँ। लेकिन मैं तुम्हारे सम्मुख इस बातको भी स्वीकार कर रहा हूँ कि इस प्रकार प्रतिनिधि भेजे जानेको बातोंमें मेरी कोई आस्था नही है। ब्रिटिश नीति रूढ और जड है। वे लोग किसी भी कीमत पर अपना बिल पास करवा लेना चाहते ह। वे भारतीयोकी प्रगतिशील राजनीतिक मागको छोड कर और सब कुछ स्वीकार कर सकते हैं। उन्हे पूण विश्वास है कि अगर वे भारतीय लोगोकी राजनीतिक मागका एक इच भाग भी मान लेगे तो फिर एक गजकी माग की जायेगी और एक गजकी इच्छा पूरी हो जाने पर भी उन्हे सतोष नही होगा। उनका यह विश्वास केवल सच्चा ही नही बुनियादी भी है। भारतीय जनता स्वतन्त्रताको अपना अधिकार मान कर ही उसकी माग करती है। अधिकारी-वग कहता है कि शासित बने रहनेके सिवा उनका और कोई अधिकार नही है। उनकी यह पक्की धारणा है कि भारतीय अपना शासन स्वय चलानेके अयोग्य ह। इसलिए वे हमे जो-कुछ भी देते ह, नाक भौ सिकोड कर ही देते हैं। कुछ भी दे दो उससे प्रगतिशील भारतीय राजनीतिज्ञोको सतोष नही होगा। प्रगतिशील भारतीय राजनीतिज्ञ जो मिले उसे लेकर अधिकके लिए लडता ही रहेगा। उन्होने निश्चित रूपसे यह नीति अपना ली है कि जनताकी मागको स्वीकार न किया जाये। वे लोग वही देंगे जो उनकी नजरमे ठीक है। इस सबसे मै खिन्न नही होता। हमे जो कुछ चाहिए, उसे हासिल करनेके लिए हमे अपनी आन्तरिक शक्तिको बढाना होगा।

अब देखो कि यहाँ हो क्या रहा है। पत्रके साथ सलग्न नये अध्यादेश पढो। थोडे से 'आतकवादियो' को कुचलनेके नाम पर समूची जनताको दण्डित और अपमानित किया जा रहा है। सरकार यह जाननेकी कोशिश नही करती कि आखिर लोग अपना जान इस तरह दाव पर क्यो लगाये हुए है। जो उन्होने पहले कभी करनेकी हिम्मत नही की, आज वे उसे कर रहे है। उन्होने एक नया दशन अपना लिया है।

हालात अपने-आप सुधरेंगे, लेकिन हमारी श्रेष्ठ प्रतिभाओको तुम्हारे वहाँ आयात करनेसे नही। फिलहाल तो तुम्हे मकसदको हासिल करनेके लिए रास्ता बनानेमे लगा ही रहना चाहिए। मै यह नही कहता कि यहासे किसीको नही जाना

१ अगाथा हैरिसनने अपनी भारत यात्राके दौरान गाधीजीको सुझाव दिया था कि किसी व्यक्तिको इग्लैंड जाकर "लोगोंको हालातकी ठीक जानकारी देनेमें मदद करनी चाहिए।"

चाहिए। डा० अन्सारी या भूलाभाई जैसे व्यक्ति अपने कामके सिलसिलेमे जायेंगे। और, तब वे कुछ राजनीतिक काय भी कर सकते ह।

अपनी इस रायके बावजूद मै राजाजीके बाहर जानेमे किसी प्रकारकी रुकावट नही डालूगा। सच तो यह है कि उनको भेजनेके लिए अपना प्रयास मैने शुरू कर दिया है। मै चाहूँगा कि वे तुम्हारी खातिर ही जायें।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४८८) से।

५३७ पत्र जी० सी० ताम्बेको

४ अप्रैल १९३५

प्रिय मित्र,

सोमवार मेरा मौन-दिवस है। लेकिन अगर किसी और दिन आपका आना सम्भव नही है, तो आपसे उस दिन मिल लूगा। मै तब देखना और सुनना पसन्द करता हूँ, बातचीत नही करता।

आपका,
मो० क० गाधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९६१) से।

५३८ पत्र भुजगीलाल छायाको

४ अप्रैल १९३५

चि० भुजगीलाल,

यदि तुम्हे अपने पिताजीकी चोरीसे मुझे पत्र लिखना पडता हो, तो हमारा कतव्य है कि न तुम मुझे पत्र लिखो न मै तुम्हे लिखू।

जो मनुष्य भविष्यमें किसी बडे धमका पालन करनेके प्रलोभनमें प्रस्तुत छोटे-से धमका पालन करनेमें हिचकिचाता है, वह मोहमें फँसा हुआ है। 'आज नो लावो लीजीये रे काल कोने दीठीती'—आजका लाभ ले लो, कलकी किसने देखी है? किन्तु यह छोटा-सा धम पालन करना ही चाहो, तो भी अपने पिताजीके साथ परामश करके उसमें हाथ लगाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० २४२२५) से।

५३९ पत्र नारणदास गांधीको

४ अप्रैल, १९३५

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला।

मेरे लिए तो तुम्हारे राजकोट न छोडनेका यही एक कारण काफी है कि पिताजी इसके लिए तैयार नही है। उनकी भावना मै समझ सकता हू। जमनादास वहा पहुँच गया है इसलिए सम्भव है कि अब वे मान जाये। किन्तु अभी तो यह सब सोचना व्यर्थ लगता है। पाठशाला ठीक चल रही है और जबतक वह किसी उपयुक्त व्यक्तिको नही सौप दी जाती तबतक तुम वहासे नही जा सकते, यह बात भी है। पाठशालाके विषयमे तुमने जो कुछ लिखा है वह बिल्कुल ठीक है। जो जाना चाहे उसे जाने दे और परिस्थितिके अनुसार जो किया जा सके उतना करके सन्तोष मानें, यही उचित है। अंग्रेजीके शिक्षककी तुम्हारी आवश्यकताको मै याद रखूंगा। जबतक न मिले तबतक तुमसे जो हो सके करना।

विनोबाको मै अच्छी तरह समझा नही सका। अभिप्राय यह था कि तुम्हारी या इस कामको जो भी उठाये उसकी अंतिम जिम्मेदारी कुछ हलकी की जा सके। मैथ्यूका प्रश्न कुछ अटपटा था। मुझे लगता है कि मै उसे हल कर सका हूँ। यह मामला अन्य सब लोगोके लिए कठिन ही था। अभी कुछ और समझाना शेष रह गया हो तो मुझे लिखना। किन्तु फिलहाल तो इसकी कोई जरूरत मालूम नही होती।

मैने जो प्रश्न किया था उसमे मेरा प्रमुख मुद्दा यह था कि पिताजीकी स्वीकृतिकी बात छोडकर बाकी सारी व्यवस्था तुम्हे इस प्रकार करना चाहिए कि तुम वहासे जब भी आवश्यक हो जाये तुरन्त मुक्त हो सको।

अमतुल इस समय तो इन्दौरमे अपने भाई मिया रशीदके साथ है। मै वहाँ जानेवाला हूँ। इसलिए वह वहा पहलेसे ही चली गई है।

क्या कुरैशी आजकल अपने लिए [पैसा] निकालते है?

शालाके लिए यदि जमीन खरीदना हो तो खरीद लो। 'ट्रस्ट डीड' के विषयमे यदि मैने अभीतक कुछ कहा न हो तो मुझे उसकी नकल भेजना। मेरा ऐसा खयाल है कि मै जमनादासको लिख चुका हूँ।

इसके साथ लीलावतीका पत्र है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४३५ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी।

५४० पत्र वल्लभभाई पटेलको

४ अप्रैल, १९३५

भाई वल्लभभाई,

खूब पकडे गये[1] लगते है। मणिका पत्र आया है। बिना कुटे चावल शायद आपसे न खाये जाये। यहा तो सबको पच जाते है। इनसे किसीको भी कब्ज तो नही होना चाहिए। परन्तु प्रयोग आपके लिए नही हो सकते। आप तो शरीरको टिकाये रखे, इतना काफी है। जरूरी भोजन करते रहेगे तो स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

अगाथाका पत्र आया है। वह राजाजीको विलायत भेजनेकी लगातार माग कर रही है। कोई भी जाये, वह इस समय वहा कुछ कर नही सकता। ऐसे लोगोके जानेका शायद भविष्यमे उपयोग हो सकता है।

अपनी राय बताइए।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५९

५४१ पत्र हरिभाऊ उपाध्यायको

४ अप्रैल, १९३५

हरिभाऊ,

प्रदर्शनीकी बात समझा।

जो हो सकता हो, सो करना। मेरे कुर्सी पर न बैठनेसे यदि महाराजा और महारानी कुर्सी पर बैठनेमे सकोच करे, तो उतनी देरके लिए मुझे कुर्सी पर बैठना पडेगा।

इन्दौरमे हिन्दी प्रचारके लिए चाहे जितना पैसा जमा हो, मुझे तो दक्षिण भारतको एक लाख देना है। द० भा० यानी वह भाग जहाँ चार द्राविड भाषाएँ बोली जाती है तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड। इसका अर्थ यह हुआ कि एक लाखकी थैली द० भा० मे हिन्दी प्रचारके लिए अथवा जहा मुझे ठीक लगे वहाँ हिन्दी प्रचारके लिए अलगसे सुरक्षित कर दी जाये। और जगह भी प्रचारके लिए यह

१ वल्लभभाईको बोरसदमें बुखार आने लगा था।

रकम खर्च की जा सके, इस विकल्पकी रिआयत इसलिए माग रहा हूँ, जिससे इच्छा हो तो असम जैसे प्रातोमे भी उसका उपयोग कर सकू। मुझे इस रिआयतकी जरूरत नही है, लेकिन इस रिआयतकी वजहसे अगर ज्यादा चदा मिलता हो, तो ठीक है।

इन्दोरकी मल-निस्तारण व्यवस्था उत्तम मानी जाती है। मुझे वह दिखाना मत भूल जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ६०८३) से, सौजन्य हरिभाऊ उपाध्याय।

५४२ पत्र हरिभाऊ उपाध्यायको

४ अप्रैल, १९३५

चि० हरिभाऊ,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हे [१]को शाति प्रदान करनेके लिए पत्र अवश्य लिखना चाहिए था। मेरे साथ भले ही अभीतक विचार विमर्श चल रहा हो, फिर भी तुम उसे लिख भेजो। मै अभी तुम्हारे पत्रका उपयोग नही कर रहा हूँ।

तुम भूलमे हो। तुम्हारा यह कहना कि [२]के विषयमे तुम यही नीति अपनाओगे, तुम्हारी बिना विचारे कही हुई बात है। यदि यही नीति अपनाओ तो मै कहूँगा, कि तुमने [३]के प्रति पिताके कर्त्तव्यको नही समझा है। पिताके नाते तुम्हारा इतना आग्रह तो होना ही चाहिए कि तुम्हारे प्रियतम मित्र भी यदि उससे कोई नाजुक बात करे, तो पहले तुमसे परामर्श करके ही। एक चतुर पिताके नाते तुम जितना [४]को जानते हो, उतना दूसरा कैसे जान सकता है? [५]के साथ बातें करना, सो भी ऐसी बाते, और वे भी उसके पिताके अनजानमे — यह अवश्य ही नीतिके विरुद्ध बात है।

किन्तु अब तो तुम [६] और [७]को सब-कुछ लिखकर अभय दो, यही काफी होगा। [८]के मन पर क्या असर हुआ है, यह तो भगवान जाने। उसका उपाय अब नही रहा। उसका मन अछूता रहना चाहिए था, इस विषयमे मुझे कोई सन्देह नही है।

[९] जो नही करना चाहिए, कर रहा है। किन्तु इससे माता-पिताका जो धर्म मै जानता हूँ, मैंने नही छोडा है। हो सकता है, यह उसे अभी अच्छा न लगता हो। किन्तु सच्चे माता पिता तो, उसके और अपने, सबके है न? वे थोडे ही किसीको भूलते हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ६०८६) से, सौजन्य हरिभाऊ उपाध्याय।

१ से ९ साधन सूत्रमें नाम छोड़ दिये गये हैं।

५४३ पत्र: रजब अलीको[1]

गुरुवार, ४ अप्रैल, १९३५[2]

भाई रजब अली,[3]

कसे डाक्टर हो तुम लोग! बीमारोसे कहते हो "पॉलिश्ड (कुटा) चावल खाना बन्द करो। अनपालिश्ड (अनकुटा) चावल खाओ। उससे तुम्हारा कब्ज दूर हो जायेगा।" और जब मरीज कहता है कि "साहब, बाजारमे तो यह चावल मिलता है," तब तुम उसे यह कहते हो कि "इसकी जाच करनेका काम मेरा नही है। इसके लिए तुम इडस्ट्रियल कमिस्टके पास जाओ। कोई कठिनाई नही होगी।" इसका तो यह मतलब हुआ कि उसे वहा फीस देनी पडेगी। अजब तुमने दुनिया खुदाया बनाई!

जेनाबहन[4], तुम कैसा चावल पकाती हो — पालिश्ड, अनपालिश्ड या जो नौकर लाता है सो?

बापूके आशीर्वाद[5]

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल। **हरिजन,** १३-४-१९३५ से भी।

१ महादेव देसाई लिखित 'वीकली नोट्स' से उद्धृत। साधन सूत्रमें पानेवालेका नाम नही दिया गया है। नाम गुजराती प्रतिसे दिया जा रहा है। इसमें पहले गाधीजीने रजब अलीसे कुटे और अनकुटे चावलोंके तुलनात्मक गुणोके बारेमें पूछा था। रजब अलीने कहा था "यह मेरा विषय नही है। कुटे और अनकुटे चावलोके बारेमें आप जो प्रश्न पूछते है वह तो औद्योगिक रसायन शास्त्र (इडस्ट्रियल केमिस्ट्री) का विषय है।"

२ गुजराती प्रतिमें यही तिथि दी गई है।

३ और ५ सम्बोधन और हस्ताक्षर गुजराती प्रतिसे लिये गये हैं।

४ गुजराती प्रतिसे लिया गया है।

५४४ पुर्जा बलवन्तसिहको

४ अप्रैल, १९३५

चि० बलवतमिह,

१ शामके लिए रोटी न रहे तो दोपहरको हमेशा थोडी बननी चाहीये। कल जो हुआ वह हमारे लिए शोभाप्रद नही था।

२ अब जो लकडी जलती है उसमे और कुकरके पहले जलती थी उसमे कुछ फरक है?

३ राजकिशोरीको आधा घटा या एक हिदी सिखानेमे दे सकते हू?

४ कालेवाले कमरेके बारेमे क्या है?

५ बडे प्लाटमे भाजी होगी?

बापु

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० १८७२)से।

५४५ पुर्जा बलवन्तसिहको

४ अप्रैल, १९३५

चि० बलवतसिह

तुमारी अस्वस्थता अच्छी नही लगती है। यदि तुमको वहा का जलवायु अनुकुल नही है और मन आनदित नही रहता है तो मै बलात्कार से रसोडेमे तुमको रखना नही चाहता हू। कहो तो कोई दूसरा काम दे द। सब से अच्छा शायद यह होगा कि अपनी देहातमे जाकर बैठो। सुरेन्द्र के साथ मशविरा करो।

एकातवास के लिये कमरा कैसे? एकातवास तुमारे लिये वक्षोके नीचे, हृदयकी गुफामे।

विश्वम्भरजी का लिखना उचित है। उनका यहा आना निरथक समजता हू।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १८७४)से।

५४६ पुर्जा बलवन्तसिहको

४ अप्रैल १९३५

चि० बलवतसिह,

मेरे साथ रहना और मेरे साथ रहनेवालासे प्रेम और परिचय नही रखना यह कहातक निभ सकता है? यदि यहा रहनेसे आनन्द आता है तो तुमको सब अच्छे लगने चाहिए, और है भी अच्छे। मेरे साथ रहनेमे और सीखना ही क्या है? सबकी सेवा करना है, इसलिए सबसे प्रेम करना है, ऐसा निश्चय करो। आप भले तो जग भला।

तुम उसको कमरा दे दो, क्योकि तुम तो पेडके नीचे भी रह सकते हो। तुम मुझे छोडकर भागनेवाले नही हो, लेकिन हरिलाल तो मुझसे दूर दूर भागता है। अब उसके दिलमे राम बैठा है और मेरे पास आया है, तो छोटी छोटी बातोके लिए मै उसको तग करना नही चाहता हूँ। अगर वह टिक जाये तो बहुत बडी बात होगी। सबसे बडा सन्तोष तो बा को होगा। बा की यह बडी शिकायत है कि मै हरिलाल पर ध्यान नही देता। लेकिन मै अपने ढगसे ही ध्यान दे सकता हूँ। मेरे मनमे मेरे और परायेका भेद नही है। जो मेरे रास्ते चलता है वह मेरा है। दूसरे रास्तोसे चलनेवालोका म द्वेष नही करूँगा, लेकिन उनकी मदद भी नही करूँगा। इसलिए तुमसे मै त्यागकी आशा रख सकता हूँ, हरिलालसे नही।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें, पृ० ७२

५४७ डॉक्टरी सहायताकी सीमा

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघकी प्रवत्तिया शुरू होते ही डॉक्टरी सहायताने कई कार्यकर्त्ताओके कार्यक्रममे यदि एकमात्र नही तो अत्यन्त महत्वका स्थान जरूर ले लिया है। इस सहायतामे डाक्टरी, आयुर्वेदिक, यूनानी या होमियोपथीकी दवाइया या ये सभी दवाइयाँ गाववालोको मुफ्त बाटनेका काम रहता है। इन दवाइयोके व्यापारी अपने पास आनेवाले कार्यकर्त्ताओको कुछ दवाइया देकर आभारी बनानेके लिए हमेशा तैयार रहते है। इन दवाइयोकी कीमत उन्हे बहुत थोडी चुकानी होती है और ये दवाइयाँ, उनकी अपनी रायमे, अगर वे इस दानको केवल स्वार्थकी दृष्टिसे ही देखे तो, बदलेमे उन्हे ज्यादा ग्राहक दे सकती है। गरीब बीमार इस तरह नेकनीयत लेकिन अधूरी जानकारी रखनेवाले या जरूरतसे ज्यादा उत्साही

कायकर्त्ताओके शिकार हो जाते है। इनमे से तीन-चौथाई दवाइया न सिफ बेकार होती है, बल्कि दश्य नही तो अदश्य रूपमे बीमारोको नुकसान भी पहुँचाती है। जहा वे बीमारोको थोडे समयके लिए ही राहत पहुँचाती ह, वहाँ गावके बाजारमे उनकी जगह लेनेवाली दवाइया भी आम मिलती है।

पश्चिमके चिकित्सक धीरे धीरे ही सही मगर निश्चित रूपसे यह समझते जा रहे है कि रोगियोको जितनी कम दवाएँ दी जाये, उतना अच्छा। अच्छे डॉक्टर तो अपने रोगियोसे यह कभी नही छिपाते कि उन्हे कौनसी दवाई दी जा रही है। वे नुस्खोमे जरूरतसे ज्यादा दवाएँ नही देते बल्कि सादी और निरुपद्रव औषधियाँ देते है। रोगीका ठीक निदान करके, उसका भय दूर करके सतत परिचर्या और भोजनादि परिवतनके द्वारा रोगका निराकरण करना ही वे अपना सबसे बडा काम मानते है। वे दिन ब दिन इस विचारके कायल होते जा रहे है कि प्रकृति ही सबसे समथ वैद्य है।

इसलिए जिस डाक्टरी सहाताका मैने वणन किया है, उसे अ० भा० ग्रामोद्योग सघ बिलकुल छोड रहा है। इसलिए उसका मुख्य काय स्वास्थ्य सम्बन्धी और आर्थिक बातोमे गाववालोको शिक्षा देना है। लेकिन क्या इन दोनोका कोई परस्पर सम्बन्ध नही है? क्या लाखो लोगोके लिए स्वास्थ्य ही धन नही है? उनके शरीर, न कि उनकी बुद्धि, धन कमानेके मुख्य साधन है। इसलिए ग्रामोद्योग सघ लोगोको बीमारीसे बचनेकी शिक्षा देना चाहता है। सब कोई जानते है कि देशके लाखो लोगोको पोषणकी दृष्टिसे बहुत घटिया खुराक मिलती है और जो-कुछ वे खाते है उसका दुरुपयोग करते है। सफाई और स्वच्छताका उन्हे बिलकुल ज्ञान नही है। गावोमे सफाईका नाम नही है। इसलिए अगर ये दोष दूर कर दिये जाये और गावके लोग सफाईके सादे नियमोको समझकर उनका पालन करने लगे, तो उनकी ज्यादातर बीमारिया बिना ज्यादा प्रयत्न या खचके गायब हो सकती है। इसलिए सघ दवाखाने खोलनेका विचार नही करता। इस बातकी जाच की जा रही है कि गाव दवाइयोके रूपमे क्या दे सकते है। सतीश बाबूके सस्ते इलाज उसी दिशामे किये गये प्रयत्न है। यद्यपि वे अत्यन्त सादे है, फिर भी सतीश बाबू इस बातका प्रयोग कर रहे है कि गुणकारिताको कम किये बिना उन इलाजोकी सख्या बहुत कम कैसे की जा सकती है। वे बाजारमे मिलनेवाली जडी बूटियोका अध्ययन कर रहे है, उनकी परीक्षा कर रहे है और उसी तरहकी अग्रेजी दवाओसे उनकी तुलना कर रहे है। हेतु यही है कि भोले-भाले ग्रामवासियोको रहस्यमयी गोलियो और दवाओके डरसे दूर रखा जाये।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ५-४-१९३५

५४८ पण्डे-पुजारी और अस्पृश्यता

सिबसागरसे एक सज्जन लिखते है [1]

गत वष जब मै हरिजन-कायके सिलसिलेमे असम प्रातका दौरा कर रहा था, तब मैने जाना था कि चायबागानके कुली वहा अस्पृश्य समझे जाते है और मीरी लोगोको भी वहा अस्पश्य ही मानते है। खैर, वह चाहे जो हो, पर यह एक गम्भीर प्रश्न है कि जहा लोगोके विश्वासका पण्डे पुजारी अनुचित लाभ उठाते हो, और जहा निरपराध पशु पक्षियोका बलिदान होता हो, क्या ऐसे मन्दिरमे हरिजनोके प्रवेशका आन्दोलन चलाना उचित है?

इसमे सन्देह नही कि मन्दिरोका सुधार एक अलग प्रश्न है। पर सुधार होने तक हरिजनोका मन्दिर-प्रवेश रुका थोडा ही रहेगा। तथापि म उन मन्दिरोको छोड देता हूँ जहा पशु पक्षियोकी बलि चढाई जाती है। जबतक यह पशु बलि बन्द नही हो जाती तबतक मै इन मन्दिरोकी बात नही करूँगा। मन्दिरोके भीतरी भ्रष्टाचारका भक्त पर असर नही पड सकता, क्योकि उसे उसका कोई पता ही नही चलता। पर इस पशु बलिके साथ तो प्रत्येक पूजा करनेवालेका घनिष्ठ सम्बन्ध है, क्योकि उसे ऐसी बलि चढानी ही पडती है। और पहले पहल जो हरिजन ऐसे मन्दिरमे जायेगा उमसे स्वभावत यह आशा की जायेगी कि वह जरूर एकाध निरीह पशु पक्षी चढानेको लाया होगा। वह मास खाता हो या न खाता हो, पर उसे एक निर्विकार हरिजनको यह सिखानेका पाप तो अपने सिर पर लेना ही होगा कि ईश्वर अपने भक्तोसे यह आशा रखता है कि वे उसे उन मूक प्राणियोके रक्तसे सन्तुष्ट करे जिन बेचारोने न कोई पाप किया है और न जिन्हे पापका कुछ भान ही है। मै चाहता हूँ कि असमके नेता देरगावके इस मन्दिरको पशु बलिके कलुष कलकसे मुक्त कर दें। इसका यह जवाब नही है कि इस सुधारका आरम्भ देरगाव जैसे अप्रसिद्ध मन्दिरस नही, बल्कि काली मन्दिरसे होना चाहिए। अविकाश सुधारोका आरम्भ मूलत अल्प रूपमे ही हुआ है। अगर ये छोटे छोटे मन्दिर निरपराध प्राणियोकी हत्याके पाप कलकसे अपनेको मुक्त कर ले तो फिर काली मन्दिरका विशाल पापगढ तो अपने-आप ही ढहकर गिर पडेगा।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, ५ ४-१९३५

१ पत्र यहाँ नही दिया जा रहा है। पत्र लेखकने देरगाँव (असम) के मन्दिरमें निरीह पशु पक्षियोंकी बलि दी जानेकी बात लिखी थी। उसने यह भी लिखा था कि इस मन्दिरमें चाय मजदूरो तथा मीरी जातिके लोगोको प्रवेश करने नही दिया जाता, क्योंकि उन्हें अस्पृश्य समझा जाता है।

५४९ पत्र अमृतकौरको

५ अप्रल, १९३५

प्रिय अमृत,

गुड और शक्कर[1] दोनो बढिया है। मै नही जानता कि बा शक्करके बारेमे क्या राय देगी। जब भी वह राय देगी, मै तुमको लिख दूगा।

गुड तथा इमलीके बारेमे शम्मीकी टिप्पणी बडी उपयोगी है और मै 'हरिजन'[2] मे उसका उपयोग कर रहा हूँ। मै जब भी कभी उसपर कामका अनुचित भार डालने लगू तो वह खुद या उसकी तरफसे तुम मुझे चेता देना। मेरे पास तो चिकित्सा तथा रसायन सम्बन्धी इतनी सारी पहेलिया सुलझानेको है।

जो कागज तुमने भेजे थे, उन्हे मै वापस भेज रहा हूँ। पढनेमे रुचिकर है। लेकिन हमे खुद ही अपना हल खोजना पडेगा।

तुम जब अभ्यस्त हो जाओगी, तब चिकने लिनेनकी जगह झीनी खादीकी चादरो को पसद करने लगोगी। खादीकी चादरोकी जसी मुलामियत मेरे मनमे है, वह उनकी अपनी ही विशेषता होती है। वह हल्की होती है और उसमे से हवा आ-जा सकती है। यह अतिशयोक्ति नही है। यह तो अनुभव करके ही देखा जा सकता है। हा, ठीक किस्मकी खादी लो। अगर प्राप्त करनेमे सफलता न मिले, तो मुझे अवश्य लिखना।

क्या मै यहासे अच्छी पूनिया भेज दू? तुम जब अगली बार आओगी, म तुम्हे रूई धुनना सिखा दूगा। यह बहुत आसान है। तुम पूनियाँ मुझसे मत मँगाना। उन्हे स्वय ही तैयार करना चाहिए।

सुबह होनेको है, अब मुझे लिखना बन्द करना चाहिए।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२७) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३३६ से भी।

१ बूरा।

२ हरिजनके २० अप्रैलके अंकमें प्रकाशित।

५५० पत्र प्रेमाबहन कटकको

५ अप्रैल, १९३५

चि० प्रेमा,

आज तेरे ८ २-१९३५ के और ३० ३-१९३५ के दोनो पत्रोका उत्तर देने बैठा हू। अब किसन कैसी है? क्या करती है? समय किस प्रकार बिताती है?

तेरा हल चलाने और चरस खीचनेका ध धा अब भी जारी है?

जिन लोगापर तेरा असर हो सके तुझे चाहिए कि तू उ हे ज म म रणके खचमे कमी करनेको कह। सब न माने तो भी कुछ तो मानेगे ही।

नरीमैनका और तेरा सवाद अच्छा है। यह सच है कि अधिकतर लोग अहिसाका नीतिके रूपमे ही पालन करते है।[1] पर तु तेरे जसे कुछ तो है ही, जो धम समझकर उसका पालन करनेका महाप्रयत्न कर रहे है। अ तमे तो यह अहिसा ही काम देगी।

भारतके स्वत त्र होनेपर भी सेना तो रहेगी ही। अपनी अहिसामे मै अभी इतनी शक्ति नही पाता जिससे लोग सेनाकी अनावश्यकताकी बात मान ले। और सेना होगी तो सैनिक शिक्षण भी होगा ही। यह तो अनुमान हुआ। ऐसा होना असम्भव नही कि यदि हम सचमुच अहिसासे स्वत त्रता ले ले तो सेनाकी जरूरत न रह जाये। जैसे अहिसाकी शक्ति अपार है, वसे ही अहिसककी शक्ति भी अपार है। अहिसक खुद कुछ नही करता। उसका प्रेरक ईश्वर होता है, इसलिए वह स्वय कैसे कह सकता है कि भविष्यमे ईश्वर उससे क्या काम करायेगा? इसलिए यहा सिद्धा तके साथ समझौतेका प्रश्न नही, शक्तिके मापका प्रश्न है। सापसे डरकर मै सापको मारूँ तो मै कोई समझौता नही करता। अपनी अशक्तिका प्रदशन करता हूँ। ईश्वरने इससे ज्यादा शक्ति मुझे नही दी अथवा ऐसी शक्ति पाने लायक आत्मशुद्धि मैने नही की — तप नही किया, यह कहा जायेगा। समझौता तो मनुष्य जान-बूझकर करता है।

पूण सत्याग्रही अर्थात ईश्वरका पूर्णावतार। तेरे मनमे क्या इस बारेमे शका है कि ऐसा पूर्णावतार जगतको हिला सकता है? यह कहनेमे अतिशयोक्ति नही कि यह जगत ऐसा अवतार पैदा करनेकी प्रयोगशाला है। हम सब अशरूपमे तैयारी करेगे तो किसी दिन पूर्णावतार जरूर प्रकट होगा, ऐसा हमे विश्वास रखना चाहिए। तब तुझे सेनाका प्रश्न पूछना नही पडेगा।

१ नरीमैनका कहना था कि काग्रेसने अहिसाको केवल नीतिकी तरह अपनाया है और देशके स्वतत्र हो जानेके बाद उसे सेना रखनी ही पड़ेगी।

सरकार यन्त्र है, मगर उसे चलानेवाला यान्त्रिक तो है न? गायन सुनने अथवा नृत्य देखनेमे दोष नही, यदि वह अश्लील न हो। परन्तु हमारे बदले कोई पसे दे और हम चले जाये, यह जरूर खटकेगा। एकको देगा, अनेकको कौन देगा? हम तो अनेक है। परन्तु इसमे सब अपनी शक्तिके अनुसार बरते।

पावरोटी सम्बन्धी महादेवका लेख सग्रहणीय है। कुओकी सफाईका प्रश्न बहुत बडा है। सीढियोवाले कुओकी सीढिया तू बन्द करा सके, तो बडा काम हुआ माना जायेगा।

तेल छाननेकी क्रिया मुझे अच्छी तरह लिखकर भेज, ताकि मै उसे आजमा सकू।

तेरा वजन भले ही बढे। खटाईका जरूरत है। मैने तो यहा इमली और प्याज दोनो शुरू किये है।

सुशीला परीक्षिका नियुक्त हुई है तो अपने पारिश्रमिक का हिस्सा दे और परीक्षा पत्र मौलिक तथा सरल बनाये।

मासिकधर्मके बारेमे मैने जो लिखा है वह ठीक है। ऐसी निर्विकारिता आनेमे बहुत देर लगती है। विकार ऐसी सूक्ष्म वस्तु है कि हम उसे सदा नही पहचान पाते।

जवाहरलालको छुडवानेकी दौड धूप यूरोप करे, यह ठीक है।

असेम्बलीके मतका आदर नही किया जाता, इससे मुझे निराशा नही होती। यह परिणाम तो ध्यानमे था ही। वहा जाना आवश्यक था और है।

हिन्दू मुस्लिम ऐक्यके बारेमे मौन रखता हूँ, क्योकि मै कुछ भी करनेमे असमर्थ हूँ। गजराज थक गये तो उन्होने मौन धारण कर लिया और प्रार्थना शुरू कर दी। उनकी प्रार्थना फली। मेरी स्थिति गजराज जैसी समझ। मेरी प्रार्थना चल रही है। मोक्ष तो जब आये तब सही। उसका काल निर्णय जाननेकी अनासक्तको क्या उतावली है?

यहा नये आदमी बहुत हो गये है। रसोईघर बिलकुल सादा हो गया है। सब कुछ भापसे पकाया जाता है। इसलिए एक ही बरतनमे तीनो चीजोके बरतन रखकर साथ साथ चढाते है। समय खूब बच जाता है। रोटी बनाना भर रह जाता है। रोटी बनानेकी क्रियाको भी आसान बनानेका तरीका खोज रहा हूँ।

तेलकी घानी चल रही है। पासका गाव रोज साफ होता है। मै तो एक ही बार गया था। महादेव रोज जाते है।

तुझे फुरसत मिले और तेरी इच्छा हो तब तू आ सकती है। इन्दौर आनेकी इच्छा हो तो तू वहा भी आ सकती है।

अब बस।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० १०३६९) से। सी० डब्ल्यू० ६८०८ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक।

५५१ पत्र वल्लभभाई पटेलको

५ अप्रैल, १९३५

भाई वल्लभभाई,

बैरी बुखार अब बिलकुल चला गया होगा। उसे तो आप अपने पास खडा ही न रहने दे।

स० प्रा० जाये तो अच्छा ही है। आप जो कहेगे वह किसीको खटकेगा नही। "आपके सच्चे नायक जवाहर है। हम तो उनके ट्रस्टी बनकर ही आपके पास खडे है।" यह ताना बनाकर उसमे जो बाना डालना हो डालिए। मुझे तो यही अच्छा लगता है कि आपको इतने आग्रहसे बुलाया गया है। [1]

आपकी पुस्तिकाएँ सब ध्यानसे पढ जाता हूँ। कलसे उन्हे सँभालकर रखने लगा हूँ। मणि रखती ही होगी। एक सेट यहा भी रह सकता है। पहले सात अक भेजनेको मणिसे कह दे।

आपको "लकी बग' मिले तो मुझे हिस्सा देगे न?

राजाजीको पत्र लिखिए। वे अकेले पड गये लगते है। सतत काम कर रहे है। दो बात किसीसे कर सके, ऐसा भी नही लगता।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १५९-६०।

१ साधन सूत्रमें कुछ अंश छूटा हुआ है।

५५२ पत्र अमृतकौरको

वर्धा
६ अप्रल, १९३५

प्रिय अमत,

तुमने गुड और शक्करके बारेमे जो कहा है उसे मै समझता हूँ।

मै इदौरसे सीधा लौट रहा हूँ। यात्रासे सम्बन्धित समाचार बिल्कुल गलत था। मुझे बादमे शायद गुजरात भी जाना पडे।

उम्मीद है कि जुलाईमे मै यही तुम्हारा स्वागत करूँगा।

स्नेह।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१२) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६८६८ से भी।

५५३ पत्र गोविन्द रावको

६ अप्रैल, १९३५

प्रिय गोविद राव,

यद्यपि लापरवाही सर्वथा अकारण थी — तुमने यही कहा है — तथापि तुमने अब श्री थॉमसनके प्रति अपने व्यवहारकी चूकका पूरी तरह प्रतिकार कर दिया है।

जहातक महिलाओकी बात है, अगली सर्दीके मौसम तक रुको। खैर, क्या वे अपने भोजनका खर्च देगी? क्या उन्हे हिन्दी आती है? उनको भेजनेका समय आने पर, तुम इस सम्बन्धमे प्रबन्धकको अवश्य लिख देना।

तुम्हारा
बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३८३) से।

५५४ पत्र नारणदास गांधीको

६ अप्रैल, १९३५

चि० नारणदास,

सलग्न पत्र पढना। इसका मैंने जो उत्तर दिया है उसकी नकल साथमे रख रहा हूँ। यदि वह इस शतपर आये तो उसे रख लेनेकी मेरी सलाह है। किंतु यदि तुम्हारा मन स्वीकार न करे तो तुम मुझे निसकोच 'न'का तार कर देना। तुम्हे 'न' कहना हो तो मैं तुमसे तार देनेके लिए इस कारण कह रहा हूँ कि यदि मैथ्यू आनेके लिए तैयार हो तो उसे बेकार प्रतीक्षा न करनी पडे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ९ श्री नारणदास गांधीने, खण्ड २, पृ० १८५। सी० डब्ल्यू० ८४३६ से भी, सौजन्य नारणदास गांधी।

५५५ पत्र भगवानजी पी० पण्ड्याको

६ अप्रैल, १९३५

चि० भगवानजी,

बलवतसिहको क्या कष्ट है? क्या उसके साथ किसीने अन्याय किया है? अथवा कोई उसे तग कर रहा है?

बापू

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ३०१४) से, सौजन्य भगवानजी पी० पण्ड्या।

५५६ पत्र वल्लभभाई पटेलको

६ अप्रैल, १९३५

भाई वल्लभभाई,

[1]ने मेरे नाम भी ऐसा ही पत्र लिखा था। यो पैसे मागता ही रहता है। मैने इसका कारण पूछा है। आपको न सतानेको लिख रहा हूँ। मेरे पास आना हो तो आ जायेगा।

चदूभाईको ठीक उत्तर दिया है। स यासमे क्या रखा है?

भूलाभाईके बारेमे पढा। ठीक है। हो सके सो कर डाले।

आज अधिक नही लिखूगा। आज उपवासका दिन है, यह तो मै लगभग भूल ही गया था।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६० ६१।

५५७ पत्र चन्दूलालको

६ अप्रैल, १९३५

भाई च दूलाल,

तुमने अपने प्रश्न भेजे, यह ठीक किया। भावोकी मेरी अनुभूति जितनी गहरी होती है उतनी किसी औरकी नही होती, ऐसा माननेमे कोई दोष नही है। यह तो अपनी अनुभूतिकी तीव्रताकी अभिव्यक्ति मात्र है। अपनी माके प्रति मेरे मनमे जो प्रेम है उससे ज्यादा किसी औरका हो सकता है, ऐसा मै नही मानता। क्या ऐसा कहनेमे तुम्हे कोई दोष दिखता है?

दूसरे वाक्यके विषयमे भी यही बात है। ज्यादा तपस्या करनेवाले करोडो लोग हो तो भी यदि मै ऐसा कहूँ कि मै उन्हे नही जानता, तो क्या मेरा ऐसा कहना अनुचित होगा? यदि मै कहूँ कि ऋषियोकी भाषा बोलते हुए मैने किसीको नही सुना, तो क्या तुम मेरे इस कथनका यह अथ करोगे कि मै सवज्ञताका दावा कर

१ साधन सूत्रमें नाम छोड दिया गया है।

रहा हूँ? ऋषियोकी भाषा बोलनेवाले करोडो लोग हो, किन्तु यदि मैने उन्हे नही सुना है तो क्या मुझे ऐसा ही कहना नही पडेगा?

समझमे न आया हो तो फिर पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

५५८ पत्र मूलचन्द अग्रवालको

६ अप्रैल, १९३५

भाई मूलचन्दजी,

हड्डीके[1] बारेमे कुछ खतका स्मरण नही है। उत्तर 'हरिजन' में दूगा।[2]

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ८३४ की फोटो-नकलसे।

५५९ पत्र कासिम अलीको

६ अप्रैल, १९३५

सैयद साहब,

मुझे पता चला है कि आपको उत्तर दफ्तरसे भेजे जा रहे है। लेखनका काम तो नही चाहीये। लेकिन १००० गावको छोडकर एक गाव भी अच्छी तरह चलावे तो बहूत काम होगा। एक हजार गावकी एजसी वह लेते है जिनके पास बीसो सहायक है।

'शिवा बावनी'[3] का मैने तो नाम भी आपसे सुना। अब पता चलता है कि यह पुस्तक पुराना है। और हकीकत इकटठी कर रहा हूँ।

मो० क० गाधी

सैयद कासम अली, विशारद
बैतूल
मध्य प्रान्त

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७५०) से।

१ यहाँ शायद भूलसे 'खुड़ी' के बदले 'हड्डी' लिखा गया है। देखिए "पत्र मूलचन्द अग्रवालको" पृ० ४३६ भी।

२ देखिए 'टिप्पणियाँ', पृ० ४५८, उपशीर्षक "अस्पृश्यताका परिणाम'।

३ भूषण कवि कृत, जो शिवाजीकी शौर्य गाथा है।

५६० पत्र हीरालाल शर्माको

६ अप्रैल, १९३५

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला। देवी अच्छा ही होगा। यदि रस्सी[१] लगाना है तो अब तो करीब हर अस्पतालमे लग सकती है। खुर्जेमे नही तो दिल्लीमे तो हे ही।

याद रखो कि यहा रहनेके लिये आनेका तुमको अधिकार है। आज्ञा तो देनेकी स्फुर्णा अबतक हृदयमें नही है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वष, पृ० १५४ के सामनेकी प्रतिकृतिसे।

५६१ पत्र कनु गाधीको

वर्धा
७ अप्रैल, १९३५

चि० कनैयो,

तू कसा मूख है? जब शुरूमे ही तुझे सदेह हुआ था कि मै तुझसे नाराज हूँ, तो उसी समय सदेहका निवारण कर सकता था। जो उदाहरण तूने गिनाये ह उनसे तो नाराजगी जैसा कुछ नही है। मै तुझसे खासा काम लेता हूँ, सो भी अपनी रुचिके अनुरूप। यह इसीलिए कि मै तुझसे प्रसन्न हूँ। कोई नाराजगी नही है। होती, तो छिपाता नही, तुरत कह देता। अत कोई कारण नही है कि तू दुखी अथवा निराश हो।

अग्रेजी नही आएगी, यह कोई बात ही नही है, और अग्रेजी न भी आए, तो इसमें निराशाकी क्या बात है? निराशाका और कोई कारण है क्या? मुझसे तुझे कुछ भी छिपाना नही चाहिए।

मुझे तुझसे पूरा सतोष है। असतोषका तूने कभी मौका ही नही दिया।

इसलिए तेरे कही जानेकी जरूरत नही है।

क्या अब भी, जिन उदाहरणोने तुझे खिन्न किया था, उनके बारेमे कैफियत चाहिए?

१ सूइ (इजेक्शन)।

तेरा पत्र वापिस भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

तेरे एक प्रश्नका उत्तर रह ही गया। गुजराती अच्छी तरह पक्की कर लेनेका तेरा निश्चय बिलकुल ठीक है। व्याकरण सीख ले। अंग्रेजी इसीसे अपने-आप आ जायेगी। गुजराती तू अगर ठीक ढंगसे सीख ले, तो दूसरी भाषा पर अपने-आप अधिकार हो जाये।

[गीताका] अठारहवां अध्याय याद कर ले। संस्कृतका अभ्यास बढ़ा।

पुरुषोत्तमकी खबर मुझे पहले ही देनी थी।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

५६२. पत्र : नारणदास गांधीको

७ अप्रैल, १९३५

चि० नारणदास,

मुझे तो आज ही यह खबर मिली कि पुरुषोत्तमका स्वास्थ्य फिर गड़बड़ा गया है। इसे सांताक्रुजमें रहकर गौरीशंकरका इलाज करना चाहिए। अथवा कुवलयानन्दका। शर्माके पास जाना है तो खुर्जा जा सकता है। किन्तु इस समय उसकी रुचि रोगियोंका उपचार करनेमें नहीं है। मेहताके पास जाना हो तो वहां चला जाये। किन्तु मेरा खयाल है कि मेहताके इलाजसे उसे सन्तोष नहीं था। यहाँ आना हो तो यहां भी आ सकता है। मैंने हार स्वीकार नहीं की। यहां गरमी सख्त पड़ती है। किन्तु वहां भी कम तो नहीं होगी। जैसे बने अच्छा हो जाये। आखिर, "नीरोग होना ही सुखका आधार है।" हरजीवनने सावधानी नहीं बरती, इसलिए अब उसे हड्डीका क्षय हो गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४३७ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी।

५६३ पत्र भगवानजी पु० पण्ड्याको

७ अप्रैल, १९३५

चि० भगवानजी,

साथका पत्र बलवन्तसिहको पढनेको देना। मेरे निर्देशोका पालन करो। झगडे-झझट मिटाओ। दूध आदिके सम्बन्धकी हरिलालकी शिकायतकी जाच करो। हरिलालको तो, मालूम होता है, बहुत कुछ कहना है।

घरके पत्र भी इसके साथ है।

बापू

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ३८५) से, सौजन्य भगवानजी पु० पण्ड्या।

५६४ पत्र वल्लभभाई पटेलको

७ अप्रैल, १९३५

भाई वल्लभभाई,

मणिलाल कोठारीको मिले जवाबमे[१] उद्धतताकी हद हो गई। सरकार अपने स्वभावके अनुसार करे, हम अपने स्वभावके अनुसार। मै मानता हूँ कि जवाबमे हिसाकी पराकाष्ठा है। किन्तु हमारी अहिसाकी हद कहा है? हिसाकी हद हो सकती है, अहिसाकी तो है ही नही। इसीलिए वह अजेय है। यह सारा पाण्डित्य आपके सामने क्यो रखू? परन्तु यह पाण्डित्य नही है। मनमे ये उद्गार आते है। मेरे मनमे जो विचार पैदा होते है, उन्हे आपके सामने रख देता हूँ। मुझे आपसे एक भी विचार छिपाकर थोडे ही रखना है?

आजके पत्रमे कलकी ही पुस्तिकाकी नकल है। उस पर जो न० १० पडा है वह भूलसे पड गया होगा।

बुखारकी कमजोरी जा रही होगी।

टीकेके बारेमे आपने ठीक कहा है।

बापूके आशीर्वाद

१ देखिए "पत्र वल्लभभाई पटेलको", पृ० ४०८।

[पुनश्च]

पुस्तिका ठीक है। कल मिली उसका नं० ९ था। ऊपरसे ही पढकर लिख दिया था। अब नं० १० पढी तो देखा कि चीज नई है।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६१

५६५ पत्र रतनलालको

७ अप्रैल, १९३५

भाई रतनलालजी,

आपका पत्र मुझे तो प्रिय लगता है। आपका विरोधका निश्चय अज्ञानजन्य है। मेरे पाससे आपको सब हकीकत जाननेका तो आपका धर्म था। राज्य प्रकरणी स्वराज्यके साथ हिन्दीका सम्बन्ध क्या? मैं पैसे चाहता हूँ सिर्फ दक्षिण भारतमें हिन्दी-प्रचारके लिए, इसमें विरोध कैसे? दक्षिणमें कितना भारी प्रचार हुआ है, आप जानते हैं? उसके कार्यमें खर्च हुआ है, आपने देखा है? उसकी आवश्यकता आप जानते हैं? यह पैसे हिन्दी प्रचारमें खर्चे जायेंगे, इस बारेमें शक लानेका आपके पास कुछ कारण है? और ऐसे कह देना कि यह राजनीतिक कार्यकर्त्ताके लिये खर्चा जायेगा आपके लिये शोभाप्रद नहीं है। मैं तो आपके विरोधकी नहीं, आपकी मददकी आशा रखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

एक प्रतिसे प्यारेलाल कागजात, सौजन्य प्यारेलाल।

५६६ पत्र मूलचन्द अग्रवालको

७ अप्रैल, १९३५

भाई मूलचन्द,

पत्र मिला। खूडी-काण्डके बारेमें जिस जगह इन्साफ मांगा जा सकता है मांगना चाहिये। सच्चा बयान मिल सकता है? वहां कोई तटस्थ आदमी जा सकते हैं? बहूतसे प्रश्न पैदा होते हैं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ८२९) से।

५६७ पत्र हिन्दी विश्वविद्यालय कमेटीके मन्त्रीको

७ अप्रैल, १९३५

मन्त्रीजी,

आपका पत्र मिला। मैंने जो द्रव्य मागा है वह दक्षिणमे हि दी प्रचार कार्यके लिए है। इसलिए एक लाखमे से तो आपको कुछ नही दे सकता हू। कोई अधिक देवे तो वह अकित हो सकता है। अवश्य आपकी सभाका काय अच्छा है ही।

आपका

मो० क० गाधी

श्री म त्रीजी
हि दी विश्वविद्यालय कमेटी
इ दौर
मध्य भारत

वीणा, श्रद्धाजलि अक, अप्रैल-मई १९६९ से।

५६८ पत्र डॉ० पट्टाभि सीतारमैयाको

वर्धा
८ अप्रैल, १९३५

प्रिय डा० पट्टाभि,

वे दोनो[१] तरुण यहाकी जिन्दगीसे ऊबने तक तो नही लौट रहे है। भोजन मौसम सभी उनके लिए विचित्र है। अगर उनके दोस्त पसा भेज सके तो मै सोचता हूँ जरूरत पडने पर वापसीका किराया भेजे और कुछ पैसा बिस्तरेके लिए भी। वे मीराबहनकी देखरेखमे है।

तुम्हारा
बापू

[अग्रेजीसे]
इन्सिडेन्टस आफ गाधीजीज लाइफ, पृ० २२५

१ देखिए "पत्र डॉ० पट्टाभि सीतारमैयाको' पृ० ४११।

५६९ पत्र मनु गाधीको

८ अप्रैल, १९३५

चि० मनुडी,

यह तू कैसे कहती है कि मैंने तुझे पत्र लिखना बद कर दिया। तेरा एक भी पत्र अनुत्तरित रह गया है क्या ? तू नही लिखती, तो फिर मेरे गले क्यों पडती है ? आज ही तेरा पत्र आया और आज ही तुझे उत्तर लिख रहा हूँ। पास हो गई, यह अच्छा हुआ। अधिक कक्षाएँ जल्दी जल्दी पास करनेके बजाय, जो सीखे वह पक्का सीखे, यह ज्यादा अच्छा होगा। अब मुझे लिखती रहना। और बाते तो बा अथवा और कोई लिखेगा। तू खुद तो अपने आपको १९ बरसकी नही समझती न ? सच्ची बात लिखना।

मौसियोको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २६६५) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला।

५७० पत्र नरहरि द्वा० परीखको

८ अप्रैल, १९३५

चि० नरहरि,

मै वहा आनेवाला हूँ, यह किसने कहा ? यहा तो हमें किसीको खबर नही है। यह बात अपने मनमें से निकाल दो।

गोशाला विषयक अपने विचार अवश्य लिखना।

पुरातनसे कहना कि वह जो कहता है, उसमे बहुत सार है। चर्मालयके सम्बन्धमे अभी मुझे और अनुभव प्राप्त करना है, और मै कर रहा हूँ। अगर जिन्दा रहा तो जरूर उसका मार्गदर्शन करूँगा।

साबरमतीकी असफलताका कारण मै जानता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९०७५) से।

५७१ पत्र वल्लभभाई पटेलको

८ अप्रैल, १९३५

भाई वल्लभभाई,

अन्सारी और क्या करे? वे किसीको ना नही कह सकते, फिर वह गरीब हो या अमीर। एक डाकू स्त्री चढ आइ थी, उसके आचलमे उन्होने —— —— खाली कर दिया था। इसलिए उन्हे मुक्त करनेमे दया ही है।

हम सत्ताके प्रति मौन धारण करके, जो हो सके करते रहे। पसन्द ही है कि याचना हरगिज न करे।

रासको वे लूटते है तो लूटे। हम इच इच जमीन वापस लेगे। तो आपके ही हाथमे है। मेरा जुलूस हरगिज न निकाले। बोरसद ले ले जाइए।

आपका स्वास्थ्य फिर न बिगडे तो अच्छा।

मणि नाकके कष्टकी बात लिखती है, सो क्या बात है?

बापूके

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६२

५७२ पत्र अमतुस्सलामको

८ अप्रैल, १९३५

प्यारी बीबी,

भाई साहबको राजी रखनेके लिए तो डा०को देखने दो। कुछ कहना मुश्किल है वर्धा कहा तक ठहर सकूगा। सब कहना मानेगी तो जरूर प्लूरी और दिलकी कमजोरी मिटा दूगा। कच्ची इटसे कमेटी झोपडी करने न देवे तो क्या किया जाये?

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो नकल (जी० एन० ३२३) से।

५७३ बातचीत जयकृष्ण भणसालीके साथ[1]

[८ अप्रैल, १९३५][2]

गाधीजी तुम्हे यह आहार अनुकूल पडता है?

भणसाली जी हाँ, बिलकुल अनुकूल।

गा० शायद नीमकी पत्तियोसे बहुत मदद मिलती होगी?

भ० नि सन्देह। जाडेके दिनोमें मुझे पत्तियाँ छोड देनी पडती ह, क्योकि इस शरीरमें कुछ कुछ सधिवातकी शिकायत रहती है।

गा० पत्तिया क्या बहुत कडवी नही लगती?

भ० नीमकी भी अनेक जातियाँ होती ह। कुछकी पत्तियाॅ कडवी होती ह, कुछकी उतनी नही होतीं। फिर जीभको खाते खाते टेव पड जाती है, यहातक कि वे ही स्वादिष्ट लगने लगती ह और यहाँ भी स्वादेंद्रियके निग्रहका प्रश्न आ खडा होता है।

गा० तुम सोते कहाँ हो? तुम्हारे पास ओढने बिछानेको तो कुछ भी नही है।

भ० चाहे जहाँ पड रहता हूँ। जो मिला वही ओढ़ बिछा लिया।

गा० गद्दा, चदरा और ओढनेका कपडा कोई दे तो तुम्हे कोई आपत्ति तो नही होगी?

भ० जी नहीं। पर म अकसर पेडके नीचे, या यो ही खाली जमीनपर आकाशके नीचे, और मरघटमें सो रहता हूँ।

गा० कभी साप या व्याघ्रादिने तो नही सताया?

भ० शायद ही कभी ऐसा हुआ हो। एक बार बिच्छूने काट लिया था, पर ऐसा लगा जैसे किसी कीडे-मकोडेने काटा हो। साँप तो कई बार मिला है। एक बार चीता भी मिला था। पर उनकी मेरे साथ कोई शत्रुता तो थी नहीं, और मुझे भय भी नही लगा।

१ महादेव देसाईके "साप्ताहिक पत्र" (वीकली लैटर) से उद्धृत। गाधीजीने आश्रमके एक बडे पुराने सदस्य तथा सहकर्मी, भणसालीके साथ कई बार बात की थी। भणसाली तीन वर्षोसे मौन व्रत लिये हुए थे और केवल गांधीजीसे बात करनेके लिए अपना मौन तोड़ना चाहते थे। वर्धामें गांधीजीसे मिलनेके लिए वे कई महीने नगे पैर और नगे बदन पैदल यात्रा कर चुके थे। वे भोजनमें पानीक साथ आटा और नीमकी पत्तियाँ लेते थे।

२ महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे। लेकिन इस डायरीमं एक ही तिथिका उल्लेख है, जबकि गांधीजीने भणसालीसे कमसे-कम तीन बार तो बातचीत की ही थी।

गा० मरघटका कोई अनोखा अनुभव ?

भ० मुझे मानना पडा है कि देहमुक्त वगके प्राणी होते ह, फिर भी उनमें विश्वास करना जरूरी नहीं है। मेरी उनसे भेंट हुई थी और यही भय कभी कभार मुझमें छा जाता है। लेकिन शीघ्र ही म साहस बटोर लेता हूँ।

गा० भिक्षा मागनेके लिए क्या तुम्हे कभी बोलना पडता है ?

भ० जी नही।

गा० आटा हमेशा मिल जाता है ?

भ० जी नहीं। कितनी ही बार मुझे भूखा रहना पडता है। एक बार तो लगातार तीन दिन भूखा रहना पडा। कुछ लोग मुझे खुशीसे खिला देते ह, पर कितने ही लोग मुझे सच्चा नहीं मानते—कुछ तो धूत समझते ह और कुछ खुफिया पुलिसका आदमी भी।

गा० अपने जिन पुराने मित्रो और सम्बन्धियोके लिए तुम इतने चिन्तित रहते थे, क्या उनमेसे किसीकी याद आती है ?

भ० कभी नही, उनकी याद अब नहीं आती। अब तो सब भूल-भाल गया हूँ।

गा० गावोकी यह दारुण दरिद्रता देखकर क्या तुम्हे दु ख होता है ?

भ० होता है। उसे देखकर मुझे आपके वे सब लेख याद आते हैं। आपके 'यग इडिया' में लिखे हुए वे 'पतग-नत्य' जसे हृदयविदारक लेख मुझे याद आते ह, और ऐसा लगा करता है कि वह 'पतग नृत्य' तो जारी ही है, उसकी प्रलयकर भीषणता तो बढती ही जा रही है। वह सब देखकर मुझे ऐसा लगता है कि जो यह मुटठी भर आटा खाता हूँ इसे खानेका भी मुझे हक नहीं। मुझे सन्तोष बस इतना ही है कि इससे अधिक मैं किसीका न कुछ चुराता हूँ न लूटता हूँ। और श्मशानमें मत्युका जो प्रत्यक्ष दशन होता है यह भी मेरे लिए आश्वासनरूप है।

गा० तो तुम किसी दिन फिर मेरे पास आ जाओगे न, और तुम्हारे सम्बन्धमे मै जो स्वप्न देखा करता था उसे पूरा करोगे न ?

भ० मै चाहता तो हूँ कि 'हाँ' कह सकू। पर म क्या जानू, जाननेवाला तो ईश्वर है। शायद ऐसा सयोग आ जाये। अस्पष्ट-सा सयोग सम्भव तो है।

गा० सारे दिन तुम क्या विचार किया करते हो ?

भ० सदा मन्त्र जपा करता हूँ। मुझे कोई वस्तु क्षुब्ध नहीं करती, न किसी वस्तुसे व्यथा ही होती है।

गा० तो यह कहा जा सकता है कि तुम्हारा सारा भय चला गया है ?

भ० जी हाँ। मै तो शान्तिके महासागरमें तैर रहा हूँ। यह सब आपका ही प्रताप है। आपने ही मुझे यह सब सिखाया है, म अपना वह अतीत काल तो बहुत करके भूल गया हूँ, पर आप 'गीता' और 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' पर जो प्रवचन करते

थे उनको नही भूला हूँ। मुझे अखण्ड शान्ति प्राप्त हो गई है। सोनेमें शायद ही स्वप्न बाधा देते है। लोग अकसर मेरा मजाक उडाते ह, मेरा तिरस्कार करते ह। इससे मुझे आनन्द आता है, और म अकसर चाहता तक हूँ कि मेरा मजाक उडाया जाये, मेरा तिरस्कार किया जाये। इस चाहका भी शमन हो जाये, इतनी ही चाह अब रह गई है। प्रशसासे मुझे आनन्द न हो, तो फिर उपहाससे क्यो होना चाहिए? मुझे तो अविचल समता चाहिए—मान और अपमानके विषयमें समत्व चाहिए, 'शीतोष्णसुखदु खेषु सम सगविवर्जित' यह स्थिति मुझे चाहिए। विपत्तिमे भी सुख न हो बस यही म चाहता हूँ। पर बापू, तब म कसा विलासी था। कसे विलासके दिन थे वे। यह सब मनकी ही माया है, जो नरकको स्वर्ग बना देती है और स्वर्गको नरक। आज मेरी शान्तिका पार नही। और तब उन दिनो मै कितने विलासमें डूबा हुआ था। यह कहकर भणसालीजी खिलखिलाकर हँस पडे।

गा० तुम सारे दिन कहा बैठे रहते हो?

भ० नीचे कोठरीमें। लोग आते ह और जाते ह। मुझे जरा भी बाधा नहीं होती। कौन आता है और कौन जाता है, यह भी मुझे मालूम नही पडता।

गा० यही सच्ची विजय है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १३ ४ १९३५

५७४ पत्र खुर्शेदबहनको

९ अप्रैल, १९३५

मै निद्रित अवस्थामे भी पूर्णत जाग्रत रहता हूँ। मेरी निद्रा विस्मृतिकी एक अवस्था नही है, वह नयी स्फूर्ति प्रदान करती है।

[अग्रेजीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

५७५ पत्र बाल कालेलकरको

९ अप्रैल, १९३५

जैसे तू परीक्षाकी तैयारी कर रहा है, वही हालत मेरी भी है। तू तो वही रह कर परीक्षा देगा और तेरे परीक्षक भी दो चार ही होगे। मुझे तो परीक्षा देने ठेठ इन्दौर जाना पडेगा, और परीक्षकोकी सख्या तो   बाप रे। देखे, क्या होता है।

काकाको भी तो परीक्षा देनी है न? यानी हम तीनो ही व्यस्त है।

[गुजरातीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

५७६ हरजीवन कोटकको लिखे पत्रका अश

९ अप्रैल, १९३५

जिनकी शादी नही हुई है, अथवा जो विधुर है, उनकी क्या दुर्गति होती होगी? आखिर ईश्वर भी किसीकी देखभाल करता होगा या नही? मै खुद तो शारदाको तैयार कर रहा हूँ, किन्तु उसके बिना तुम्हे ससार अन्धकारमय मालूम हो रहा है, तुम्हारी यह लाचार हालत समझमे नही आती।

[गुजरातीसे]

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी, सौजन्य नारायण देसाई।

५७७ पत्र मदनमोहन मालवीयको

९ अप्रैल, १९३५

भाई साहब,

आपका तार मुझे मिल गया था। और मै निश्चित हो गया। आपका प्रण है शतायु होनेका। उस पर कायम होनेके लिये शरीर रक्षाका कुछ प्रयत्न तो करना ही होगा।

मै अभी हिंदी साहित्य समेलनके लिए भाषण लिखनेका आरभ करता हूँ। उसके पहले आपके आशीर्वादकी भिक्षा माँग ल। यहाँसे तो १९को रवाना हूगा उसके पहले आपका आशीर्वाद आप मुझे भेज देगे तो मुझे प्रोत्साहन मिलेगा।

सभापतित्व तो आप ही का था। आपके इन्कारसे यह बोज मेरे सर पर आ गया है। आपका आशीर्वाद उसे हलका करेगा।

आपका कनिष्ट बंधु
मोहनदास

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

५७८ पत्र जमनालाल बजाजको

वर्धा
१० अप्रैल, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। लगता है, सब ठीक ही हो गया। अवश्य कुछ समयके लिए उस इलाकेमें जाकर रह आओ। सगाईके बारेमें मैं जानकी देवीसे बात कर लूंगा।

चन्द्रकान्ताके पिता लिखेंगे, तब जो उचित होगा करूँगा। तुम्हारा कान तो तकलीफ नहीं देता न?

फिलहाल और नहीं।

कमलाको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६२) से।

५७९ पत्र जीवनजी डी० देसाईको

१० अप्रैल, १९३५

भाई जीवनजी

'यरवदा मन्दिर' तो दस दिन पहले पूरा कर लिया। कल 'गा० वि० दो'[1] पूरा करनेका विचार है। लगता है, बाकी काम तो दूसरी बार मौन लूंगा, तब होगा। लेकिन देखूंगा। इस मौनमें एक मिनटकी भी फुरसत नहीं ली।

साथका पत्र पढ़ना। भेजना हो तो जहाँ मोहनलाल हो, वहां भेज देना। जो आवश्यक जान पड़े, वह करके मुझे लिखना। क्या 'यरवदा मन्दिर' एकदम चाहिए?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९३९) से। सी० डब्ल्यू० ६९१४ से भी, सौजन्य जीवनजी डी० देसाई।

1. गांधी विचार दोहन।

५८०. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

१० अप्रैल, १९३५

भाई वल्लभभाई,

आपकी पुस्तिकाएँ तेज होती जा रही हैं। अँधेरी कोठरीका ठीक वर्णन हुआ है। ऐसी तो कितनी ही हैं। इसकी सजा हम भोग रहे हैं। आप कर रहे हैं वही सच्चा काम है।

देव शर्माका पत्र साथमें है। उससे जो कुछ मिलनेकी आशा थी सो मिल गया। आपमें शक्ति आ रही होगी।

महुए[1]का प्रयोग ठीक कर रहे हैं। परिणाम बताइए।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६३

५८१. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

१० अप्रैल, १९३५

भाई घनश्यामदास,

हां, ठ० बापाने मुझे लिखा था। काम ऐसा ही है। साथमें पोलका खत भेजता हूं। उसके रोकनेसे मैं रुक गया। राजाजी भी जाहिर आंदोलन नहीं चाहते थे। पोलके दूसरे खतकी प्रतीक्षा करूंगा।

जूनके पहले हफ्तेमें समुद्र बहुत तेज रहता है। क्या उसके कुछ पहले नहीं जा सकते हैं? शूस्टरका खत अच्छा है। आदमी चाहता था बहुत कुछ करना लेकिन कुछ कर नहीं सका। उनकी आजकलकी नीतिमें मैं नम्रताका अंश तक नहीं पाता हूं। जनताके अभिप्रायके बारेमें उन्हें कुछ भी फिकर नहीं है। शस्त्रबल पर निर्भर हैं।

बापूके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ८००८ से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

1. वल्लभभाई उन दिनों सूर्योदयसे पहले महुएके पेड़के नीचे ताजे गिरे हुए आठ-दस फूल खाया करते थे।

५८२ पत्र अमृतकौरको

वर्धा
११ अप्रैल, १९३५

प्रिय अमृत,

अगर तुम्हे आदमपुरसे पूनिया प्राप्त करनेमे कोई दिक्कत पडे या जो तुम्हे मिले, वे अच्छी न हो, तो मेरी सहायता लेनेमे सकोच मत करना। तुम्हे अच्छी पूनिया नियमित रूपसे मिलती रहे, इसकी मै गारटी दे सकता हूँ।

वाट रचित १६ खण्डोके लिए तुमको चिन्ता करनेकी जरूरत नही। मुझे सक्षिप्त सस्करण मिल गया है, उससे काम चल जायेगा। उनका पूरा सेट मुझे खरीद देनेका एक प्रस्ताव कलकत्तासे आया था। मैने खरीद रोक दी है। इसलिए, फिलहाल, यही काफी होगा कि तुम मेरे लिए दूसरी पुस्तके प्राप्त करनेकी कोशिश करो।

मै वचन देता हूँ कि तुम जब जुलाईमे यहा आओगी, मै तुम्हे पिंजाईमे पूरी तरह कुशल बनाकर ही भेजूगा। धुनकी पर काम करनेमे ज्यादा मेहनत नही पडती।

अगर मै फिर यूरोप गया, तब तुम्हे साथ रखना मुझे अच्छा लगेगा। लेकिन इस समय तो हिन्दुस्तानसे बाहर जानेकी बहुत कम सम्भावना है। अभी तो मेरा मन ग्राम-सुधार कायमे ही रमा है।

तुम दोनोको स्नेह।

बापू

[पुनश्च]

अवश्य ही, अगाथा-जैसे मित्रोसे मिलनेवाली सहायताको हम साभार स्वीकार करते है।

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२८) से, सौजन्य अमतकौर। जी० एन० ६३३७ से भी।

५८३ पत्र आनन्द तो० हिंगोरानीको

११ अप्रल, १९३५

प्रिय आनन्द,

आश्चय है! तुम्हारे बारेमे पूछताछ करते हुए कल मैने जे०को पत्र[1] लिखा और आज तुम्हारा पत्र आ गया। स्थिति मै समझता हूँ। तुम्हे पिताके घरसे बिना किसी कडवाहट या उलाहनेके बाहर आ जाना चाहिए। माकी तुम सहायता नही कर सकते। तुम्हारे हस्तक्षेपसे बात और बिगडेगी ही। अगर वे उस घरको छोडती है तो तुम उन्हे अपने साथ रख सकते हो। तुम्हारा भरण पाषण ठीक ही होगा। जो कुछ मै दूगा उसे लौटाया जा सकता है। तुम्हे [उनकी] निजी जिन्दगीमे हस्तक्षेप नही करना है। विद्या जल्दी ही ठीक हो जानी चाहिए। जब तुम अलग घर ले लो तो मुझे लिखना। जयरामदास भी इसे पढ ले और मुझे पत्र लिखे।

तुम दोनोको स्नेह।

बापू

श्री आनन्द तो० हिंगोरानी
डी/३, कास्मोपालिटन कालोनी
कराची

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी।

५८४ पत्र भुजगीलाल छायाको

११ अप्रल, १९३५

चि० भुजगीलाल,

तुम्हारा पत्र निमल है। जब तुममे शुद्ध अहिंसा प्रकट होगी, तब तुम्हारा माग बिलकुल सरल हो जायेगा। मुझे तो अभी यही ठीक लगता है कि तुम अपना समय अपना अध्ययन पूरा करनेमे लगाओ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० २४२१७) से।

१ यह पत्र उपलब्ध नही है।

५८५ पत्र: जीवनजी डी० देसाईको

११ अप्रैल, १९३५

इसका ⅞ से अधिक अश तो मै सब देख गया। फिर समय कम बचा। इसलिए जहा तुमने निशान लगाये है, वही देखा है।

देखता हूँ, इसमे अपार परिश्रम किया गया है।

गुजरातीकी फोटो नकल (जी० एन० ९९४०) से, सी० डब्ल्यू० ६९१५ से भी, सौजन्य जीवनजी डी० देसाई।

५८६ पत्र वसुमती पण्डितको

११ अप्रैल, १९३५

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिलनेसे पहले ही मुझे खबर मिल चुकी थी कि तू सफाईके कामके लिए निकल पडी है। अच्छा किया। बा तो कब की आ गई और अब तारा बीमार है, सो दिल्ली जानेका विचार कर रही है।

सबको
बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो नकल (एस० एन० ९३९८) से। सी० डब्ल्यू० ६४४ से भी, सौजन्य वसुमती पण्डित।

५८७ पत्र बनारसीदास चतुर्वेदीको

११ अप्रैल, १९३५

भाई बनारसीदास,

तुमारा खत मिला। कुछ आघात नही पहोचा है। अतमे तो मनुष्य जो कर सकता है वही करे। मेरी सलाह है कि प्रथम तो तुमारे शादी कर लेना। हिदी प्रचारका काम करना। इसमे तीन अथ सिद्ध होते है 'विशाल भारत,' हिदी प्रचार और लेखन प्रवृत्ति।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २५५५) से।

५८८ पत्र चन्द त्यागीको

११ अप्रैल, १९३५

भाई च द त्यागी,

तुमारा खत भया [वह][1] है। मैंने उसे ज्योतिप्रसादजी को भेजा है। उसके साथ दृढतासे जैसा जानते हो ऐसा करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो नकल (जी० एन० ६६३२) से। सी० डब्ल्यू० ४२८० से भी, सौ न्य च द त्यागी।

५८९ पत्र मजर अली सोख्ताको

१२ अप्रैल, १९३५

प्रिय मजर अली,

क्या तुमने ही मुझे नही सिखाया था कि 'सोख्ता' का अथ है — भस्मीभूत ? तुम जबतक अपने अहको बिलकुल भस्म करके शू य नही कर देते, तुम्हे सफलता नही मिलेगी। तुम कहते हो कि तुम्हे धन चाहिए। किसलिए ? अपने पडोसियोकी गलियोकी सफाई या इस-जैसे और कामोके लिए नही, न अपने या दूसरोके चावल और गेहूँ कूटनेके लिए ही ? तुम्हे धनकी जरूरत नही है, अपनी मेहनत और पसीनेके बलपर कूडे-करकटसे सम्पदा पैदा करनेकी है।

तुम्हारा
बापू

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे, सौजन्य नारायण देसाई।

१ मूलमें यह शब्द अस्पष्ट है।

५९० पत्र हरिलाल गाधीको

रामनवमी, १२ अप्रैल, १९३५

चि० हरिलाल,

आज लिखूगा, कल लिखूगा, करते-करते भी वक्त नही मिला। आज तो निकाल ही लिया।

महादेवने मुझसे थोडी बात की थी। किशोरलालने लिख कर बताया था।

मै तरी उलझन समझता हूँ। तू अपने आपको अथवा मुझे धोखा देना नही चाहता। अभी तुझमे काम-वासना है, तो तुझे उसे तप्त करना चाहिए। जब तेरे मनमे तीव्र त्याग उत्पन्न होगा, तभी तू अपनी काम वासनाको दबा सकेगा।

मेरी मुसीबत यह है कि मै तो भोगके त्यागका उपदेश देता हूँ, तुझे प्रोत्साहन कैसे दे सकता हूँ? तेरी मदद कैसे कर सकता हूँ? तू पुर्नविवाह करे, यह मै बर्दाश्त कर सकता हूँ। किन्तु यदि तुझे दूसरी पत्नीकी खोज करनी है, तो वह तू मेरे पास रह कर कैसे कर सकता है? तेरी विवाह करनेकी इच्छा है, यह जानते हुए भी जो मैने तुझे बुलाया, सो इसलिए नही कि तेरा विवाह कर दू, बल्कि इस आशासे कि मेरे साथ रहते शायद तेरा मन शान्त हो जाये। साथ ही, तेरा हृदय परिवतन भी तो मुझे परखना ही था।

मुझसे जो बन सके, वह मदद मै तेरी करना चाहता हूँ। किन्तु यह तो तेरी भी इच्छा होगी कि वह मै अपनी मर्यादामे रह कर ही करूँ। अब यह सोचकर तुझे जो लिखना हो सो लिखना। जो कहना हो सो कहना।

तेरी बीडी अब छूटने पर आई या नही? या कभी नही छूटेगी?

इन मकानोको साफ करनेमे, यह स्नानागार धोनेमे मीराबहनके मजदूरोसे काम मत ले। जो हाथसे साफ हो सके, उन्हे साफ कर ले। मुझे तो मजदूरोका बगीचेमे काम करना भी अखरता है। वह भी मै लाचारीकी वजहसे ही बर्दाश्त करता हूँ।

अवधेशने १५ रुपया न लेनेका अपना निश्चय मुझे बताया है। मुझे लगा कि उस रोज तू अवधेशको कुछ ज्यादा ही चोट पहुँचा रहा था। वह तो झुक गया था। फिर इतना कहने सुननेकी क्या जरूरत थी?

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५३८) से, सौजन्य मनुबहन एस० मशरूवाला।

५९१ पत्र नारणदास गाधीको

वर्धा
१२ अप्रल, १९३५

चि० नारणदास,

इसके साथ रमणलालकी रिपोटकी नक्ल भेज रहा हूँ। दो-तीन दिनके लिए तुम साबरमती चले जाओ ओर हिसाबकी जाच कर आओ तो मेरा समाधान हो जायेगा ओर यह भी सूझेगा कि मुझे क्या करना चाहिए। टाईटसको काम आता नही है या वह ईमानदारीसे नही करता? या रमणलालने अपने पत्रमे जो-कुछ कहा है वह निराधार है?

यदि सम्भव हो तो यह काम जल्दी ही निपटा देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८४३८ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी।

५९२ पत्र विट्ठल ला० फडकेको

१२ अप्रैल, १९३५

चि० मामा,

मैने परीक्षितलालको लिखा तो है, किन्तु कोई जवाब नही आया। तुम्हारी पत्तले तो उम्दा होगी ही। नमूना कभी दिखाना। भाजीके बारेमे तो जो तुम कहते हो, वही ठीक है।

गाव पसन्द करनेमे जल्दबाजी तो नही ही करनी चाहिए। आलस्य भी नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८३०) से।

५९३. पत्र अवधेश दत्त अवस्थीको

१२ अप्रैल, १९३५

चि० अवधेश,

तुमारा खत अच्छा है। ठीक बात है तुमारा तनख्वा नही मानेगे। लेकिन जब तुमारे जानेका होगा तब किराया दे दूगा। तुमारा क्रोध निकाल दो। नम्र बन जाओ। यहा कोई न उच है न नीच है। सब एक-सा है। कोई सरदार नही है कोई नौकर नही है। हम सब सेवक है। किसी मजदूरीकी हमे शम नही है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२१०)से।

५९४ भेंट लॉर्ड फैरिंग्डनको[1]

[१३ अप्रैल, १९३५ से पूव]

लाड फरिंग्डन – ग्रामोद्योग सघका वास्तविक उद्देश्य क्या है?

गाधीजी – लोगोको यह बतलाना कि कचरेसे कचन कैसे पैदा होता है।

लॉ० फ० – इस उद्देश्यको आप किस तरह पूरा करना चाहते ह?

गा० – सर्वापण करनेवाले सेवकोकी सेना खडी करके। हमारे ये सेवक दिखायेगे कि भूखसे तडप तडपकर मरनेवाले लोग मत्यु मुखसे किस प्रकार बच सकते है। इससे बडा दूसरा कोई रचनात्मक कायत्रम लोगोके सामने नही है।

लॉ० फै० – तब तो आपको असख्य सेवक चाहिए। ये सेवक आपको किस प्रकार मिल सकेगे?

गा० – यदि समय आ गया होगा तो हमे काम करनेवाले सेवक मिल ही जायेगे।

ला० फ० – ग्रामोके कर्जके प्रश्नको आप किस तरह हल करना चाहते है?

गा० – इस प्रश्नको हमने हाथमे नही लिया है। यह तो राजसत्ताके प्रयत्नोसे ही हल हो सकता है। मै तो फिलहाल ऐसी ही चाजोका पता लगा रहा हूँ जि हे लोग राजसत्ताकी सहायताके बिना कर सके। यह बात नही है कि मै राजसत्ताकी

१ महादेव देसाई लिखित "वीकली नोट्स" (साप्ताहिक टिप्पणियाँ)से उद्धृत। चूँकि गांधीज का मौन व्रत था उन्होने अपना उत्तर लिखकर दिया था।

मदद नही लेना चाहता। पर मै यह जानता हूँ कि वह सहायता मुझे मेरी शर्तों पर नही मिल सकती।

लॉड फरिंग्डन साम्प्रदायिक प्रश्नके विषयपर गाधीजीके विचार जाननेके लिए अधीर थे।

यह सवाल आखिर कैसे हल होगा? उन्होने पूछा।

गा० — अभी तो इस प्रश्नको हल करना अशक्य हो गया है। मुझे लगता है कि इसे अब समय ही हल करेगा। अगर मै मुसलमानको कोरा चैक दे देनेकी बात हिन्दुओको समझा सकू तो यह प्रश्न आज हल हो जाये। पर दोनो सम्प्रदायोके बीच आज इतना अधिक अविश्वास भर गया हे कि निकट भविष्यमे इस प्रश्नका हल होना मुझे तो असम्भव ही मालूम देता है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १३-४-१९३५

५९५ निराशा कैसी ?

भारतके शायद सबसे पुराने राष्ट्र सेवक श्रीयुत हरदयाल नाग लिखते है[१]

यह देखकर मुझे निराशा होती है कि आपके इस अखिल भारतीय ग्रामोद्योग-सघका काम करनेके लिए आपके पास पर्याप्त ग्राम सेवक नहीं ह।

अपने सावजनिक जीवनके आरम्भसे ही मै ग्रामोद्योगोके प्रश्नके आर्थिक पहलूका अध्ययन करता रहा हूँ। आपका कायक्रम मुझे जो बहुत प्रोत्साहित नहीं करता, उसका यही कारण है कि उसमें मुझे उसका कोई आर्थिक रूप दिखाई नहीं देता।

आप कल्पना कीजिये कि हिन्दुस्तानमें सब जगह गावोका बना माल भरा पडा है मगर उस मालके खपानेवाले या खरीदार नहीं है, तो उससे लाभ ही क्या? हाथ-करघा खद्दर तैयार कर सकता है, पर वह उसके खरीदार थोडे ही पैदा कर सकता है। मेरा तो यह दु खपूण अनुभव है कि बहुत से कातनेवाले अपने हाथके काते हुए सूतका एक भी वस्त्र नहीं पहनते। गुड तैयार करनेवाला जरा सा गुड अपने देशके प्रति मौखिक भक्ति दिखानेके लिए भले ही चख ले, पर क्या वह अपनी चाय या दूधमें गुडकी डली डालेगा? गाँवका जूते बनानेवाला बाहरके बने हुए बढ़िया और काफी सस्ते जूतोके मुकाबलेमें क्या कभी अपना बनाया भद्दा जूता पहनेगा?

हमारे यहाके ग्रामवासियोको जबतक यह पाठ न पढ़ाया जायेगा कि

१ केवल कुछ अंश ही दिये जा रहे हैं।

जिन चीजोंको वे अपने कच्चे मालसे, और खुद अपने हाथ पैरकी मेहनतसे तथा अपने ही इस्तेमालके लिए तयार करते ह, उनके मुकाबलेमें विलायती चीजे सस्ती पड ही नहीं सकती, तबतक वे विदेशी चीजोके खरीदनेका मोह कभी छोडेंगे ही नहीं।

हरदयाल बाबूके अब विश्राम करनेके दिन हैं, और अगर वे अब तमाम सावजनिक कार्योंमे हट जाये तो किसीको इसकी शिकायत भी नही करनी चाहिए। मगर अपने तीनो प्रतिस्पर्धियो – पडित मालवीयजी, अब्बास तैयबजी और विजयराघवाचार्यकी तरह हमारे हरदयाल बाबूका भी काम करनेका हौसला कम नही हुआ। इसलिए वे यह आशा नही कर सकते कि आलोचकगण उनकी अवस्थाके कारण उनके साथ कुछ रियायत करेंगे। मै जानता हूँ वे ऐसी कोई आशा नही रखते। उनका शरीर और उनका मस्तिष्क देशके लिए अब भी वैसा ही बना हुआ है, उनमे कोई कमी नही आई है और देश चाहे जब उनसे अपनी सेवा ले सकता है।

हरदयाल बाबूको यह बतला देना मेरा कत्तव्य है कि जो लोग ग्रामोद्योगके इस क्षेत्रमे काम कर रहे हैं उनके सामने निराशा जैसी कोई चीज है नही। यह क्षेत्र इतना नया है कि तैयार होनेमे इसे अभी बहुत समय लगेगा। कायकर्त्ताओने जो काम अपने हाथमे लिया है, उसकी तह तक वे अभी पहुँचे नही हैं।

फिर हरदयाल बाबूको जो निराशा मालूम दे रही है मेरी रायमें, उसका वही कारण है जिसका उन्होने पहले उल्लेख किया है। कत्तव्यके प्रति उपेक्षाका अपराध उन्होने स्वय स्वीकार किया है। अगर उन्होने, जैसी कि उनकी प्रकृति है, यह काम हाथमे ले लिया होता, तो इसमे सन्देह नही कि वह उन्हे बहुत कठिन तो जरूर मालूम पडता, पर निराश तो वे निश्चय ही न होते। इस प्रवत्तिका जो आर्थिक रूप उन्हे दिखाई नही दे रहा है, उसका यही कारण है कि उन्होने उसे देखनेके लिए व्यावहारिक रीतिसे प्रयत्न नही किया।

हरिजन-कायमे मै पडा तो मुझे यह पता लगा कि अगर भारतवषको जीवित रहना है तो हमे सीढीके सबसे निचले डडेको सबसे पहले ठीक करना होगा, अपने कायका श्रीगणेश वहीसे करना होगा। अगर सीढीका पहला ही डडा सडा गला होगा, तो सबसे ऊपरके या किसी बीचके डडे पर हम जो काम करेंगे, अन्तमे वह सब निश्चय ही असफल होगा।

देशके सामने आज जो कायक्रम रखा गया है उसमे आर्थिक दष्टि तो है ही, इसके अलावा कुछ और भी है। इस कायक्रममे राष्ट्रको पौष्टिक आहार देनेका जिस ढगका खाका खीचा गया है, उससे अथ लाभ भी होगा और आरोग्य-लाभ भी। गावोके लोग अपना चावल ओखलीमे खुद कूटकर उसे ज्यो-का-त्यो चिलक-रहित रूपमे ही खाने लग जाये, तो इससे हर साल केवल तीस करोड रुपयेकी बचत ही नही होगी, बल्कि उनके स्वास्थ्यमे भी उन्नति होगी। पर दु खकी बात तो यह है कि साधारणतया बाजारोमे हमे ऐसा चिलक रहित अनकुटा चावल मिलता ही नही। कुछ दिन ठहरनेके बाद ही ग्रामोद्योग-सघ राष्ट्रको इस सम्बन्धमे कोई स्पष्ट रास्ता

दिखला सकता है। राष्ट्रको यह सब बतानेकी जरूरत है कि उसका क्या भोजन हो और उसे किस तरह तयार किया जाये।

गावोमे तडक भडकदार चीजे बनाने और उ हे बेमनसे खरीदनेवालोके मत्थे मढनेकी तो कोई बात इस कायक्रममे है ही नही। एक ही प्रकारकी विदेशी या स्वदेशी चीजोके साथ प्रतिस्पर्धाकी जब कोई बात है ही नही, तब असफलताका तो सवाल ही नही आता। गावोके लोग खुद तैयार करेगे और खुद ही खरीदेगे। अपने बनाये मालको अव्वल तो वे खुद ही खपा लेगे, क्योकि नब्बे फीसदी जनसख्या ग्रामवासियोकी ही है। शहरोके लिए तो वे उ ही चीजोको बनायेगे जिनकी शहरामे माग होगी और जि हे वे लाभकी दष्टिसे तयार कर सकेगे। दूध या चायमे गुड मिलानेकी सलाह लोगोको जरूर दी जायेगी, इसमे जरा भी स देह नही। उन्हे यह बतलाया जायेगा —— ओर आज भी बतलाया जा रहा है —— कि यह खयाल करना निरी भूल है कि दूध या चायके साथ गुड खाना स्वास्थ्यके लिए हानिकारक है। एक सज्जनने मुझे लिखा है कि मेरी स्त्रीने जबसे गुडकी चाय पीना शुरू किया है तबसे कब्जियतकी उसकी सारी शिकायत दूर हो गई है। मझे इसमे कोई आश्चय नही हुआ, क्योकि गुडमे जो थोडी रेचक तासीर है वह चीनीमे तो है ही नही। ग्रामोका शोषण मध्यम वगके लोगोने किया है। उनमेसे कुछ लोग गावोको यह अनुभव कराके अब अपना भूलको सुधार रहे है कि राष्ट्रीय विकासमे गावोका एक गौरवमय और महत्त्वपूण स्थान है।

अब सफाईका प्रश्न लीजिये। इस प्रश्न पर ठीक-ठीक ध्यान दिया जाये तो इससे हर साल मुल्कको प्रति मनुष्य दो रुपयेकी आमदनी हो सकती है। इसका यह अथ हुआ कि स्वास्थ्य और शक्तिमे तो उन्नति होगी ही, इसके अलावा साठ करोडकी सालाना आमदनी भी मुल्कको होगी। भारतके सात लाख गावोकी डगमगाती नैयाको अगर सभी तरहसे सँभालना है, तो इस कामको हम मौजूदा कायक्रमसे आरम्भ करके ही कर सकते है। यह काम तो बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था। भारतकी राजनीतिक अवस्था चाहे जैसी हो, इस कामको तो हमे पूरा करना ही है। भगीसे लेकर साहूकार तक सभी कोटिके ग्रामवासी इस कायक्रमको हाथमे ले सकते है। यह ऐसा काम है जिसमे सभी विचारोके लोग दिलाजानसे शरीक हो सकते है। अगर अच्छे कायकर्त्ता मिलते जाये तो असफलता तो इसमे हो ही नही सकती।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १३-४-१९३५

५९६ हरिजन और सूअर

लगभग दो महीने हुए आगरेके सेठ अचलसिहजीने मुझे एक पत्र लिखा था। उन्होने उस पत्रमे जीवनमे पहली ही बार देखे गये एक दश्यका वर्णन किया था। कुछ हरिजन रस्सीसे सूअरोके मुँह कसकर उन्हे जिन्दा ही भून रहे थे। यह हृदय विदारक दश्य उन्होने अपनी आखोसे देखा था। उस वर्णनने तो मुझे दहला ही दिया। मै यह जानता हूँ कि सिख तथा आन्ध्र देशके हजारो हिन्दू भी सूअरका मास खाते है। सम्भवत भारतके दूसरे प्रान्तोमे भी कुछ हिन्दू सूअरका मास खाते हो। निश्चय पूर्वक तो सिर्फ यही कहा जा सकता है कि निरामिष भोजियोके अतिरिक्त केवल मुसलमान ही कभी सूअरका गोश्त नही खाते।

वर्धाके मेरे साथियोने प्रत्यक्ष अनुभवके आधार पर मुझे बतलाया है कि जिनके हृदयमे कुछ दया होती है वे आनन फानन उसका दम घोटकर उसे तुरन्त समूचा ही भून डालते है। पर जिन लोगोके दिलमे दयाभावका लेश भी नही होता, वे उसे जिन्दा ही भूनते है। अच्छी मजबूत लाठिया लेकर चारो तरफसे लोग आगको घेर लेते है, और जब वह गरीब जानवर मारे दर्दके ऐठता हुआ इधर-उधर भागनेकी कोशिश करता है तब वे उसे लाठिया मार-मारकर उस दहकती आगकी तरफ ठेलते है। मैने श्री बापीनीडूसे पूछा था कि आन्ध्रमे सूअरको किस तरह मारते है। उनका यह जवाब आया है

आन्ध्रके भिन्न-भिन्न स्थानोमें सूअरको मुख्तलिफ तरीकोसे मारते है, और वे तरीके सभी अत्यन्त निर्दयतापूर्ण है। वे तरीके ये है

१ सूअरको पकडकर उसकी टागें एक काफी लम्बी रस्सीसे खूब कसके बाँध देते है, और फिर नथुनोके ऊपर उसका मुह एक दूसरी रस्सीसे खूब मजबूतीसे कस दिया जाता है। इससे उसकी सास रुक जाती है, और कुछ समय बाद दम घुटनेके कारण वह मर जाता है। आन्ध्र देशमें सबसे अधिक यही तरीका प्रचलित है।

२ जैसा कि ऊपर बतलाया गया है, सूअरकी टागोको खूब कसके बाँध देते है, और उसके मुहको रस्सीसे कसनेके बजाय, उसे पानीमें डुबो देते है, और वह वहीं तडपता हुआ मर जाता है।

३ तीसरा तरीका यह है कि टाँगोको बाँध देते है और भाला चुभो-चुभोकर उसे मार डालते है। सूअर चूकि बडा बलिष्ठ जानवर होता है, इस-लिए वह आसानीसे नहीं मरता और बडी देर तक तडपता रहता है।

४ एक तरीका मारनेका यह भी है कि उसकी पिछली और अगली टाँगोको अलग-अलग बाँध देते है और दो आदमी उसे चित लिटाकर उसकी

टाँगोको खूब जोरसे पकड़े रहते हैं, फिर एक तीसरा आदमी उसकी छाती पर तबतक खूब प्रहार करता है जबतक कि वह मर नहीं जाता। यह तरीका सबसे अधिक कष्टदायक है।

मुझे यह भी बतलाया गया है कि आजकल कुछ लोग बन्दूकसे भी सूअरको मारते है, पर यह तरीका बहुत ही कम प्रचलित है।

महँगा होनेके कारण सूअरका गोश्त यो हरिजन बहुत कम खाते है। पर किसी उत्सवके अवसर पर तो सूअरके मासके बिना चल ही नही सकता। कहीं कहीं हरिजन सूअरोके छोटे-छोटे बच्चे खरीद लेते है, और जबतक वे कत्ल करने लायक नहीं हो जाते, तबतक उन्हे पालते पोसते रहते है। फिर सारा गाँव मिलकर एक अच्छा मोटा-ताजा सूअर किसी हरिजनसे खरीद लेता है और उसे मारकर आपसमें बाँट लेता है। इस तरह उसका खर्च सबके हिस्सेमें बराबर-बराबर बँट जाता है।

श्री बापीनीडूने अपने पत्रके साथ अमेरिकाकी छपी हुई एक छोटी सी पुस्तिका भी भेजी है, जिसका नाम 'वी केन किल ए हॉग' (सूअर मारनेके तरीके) है। इस पुस्तिकामे इस बातका बडा दिल दहलानेवाला वर्णन है कि गोश्तकी खातिर सूअर कैसी कैसी बेरहमीसे मारे जाते है। पर मुझे तो वह चीज दिल थामकर किसी तरह पढनी ही पडी। सूअरोके मारनेके जो तरीके उसमे दिये गये है, उनमे निर्दयताकी दृष्टिसे कोई विशेष अन्तर नही है। अगर निर्दयताकी मात्राका खयाल किया जाये तो ऐसा लगता है कि सूअरोके मारनेके लिए अपार निर्दयताकी जरूरत होती है। मेरा लिखनेका मतलब यह है कि इस सम्बन्धमे हरिजन तो सबसे कम दोषी है। मै मानता हूँ कि वे ऐसा स्वेच्छासे नही करते, बल्कि निरी आवश्यकता उनसे मजबूरन यह काम कराती है। इसलिए सेठ अचलसिहने जो प्रश्न उठाया है, उससे स्वत इस निश्चयकी ध्वनि निकलती है कि यह सुधार हरिजनोसे सम्बन्ध नही रखता, बल्कि यह दया धर्मका एक व्यापक सुधार है। यह ठीक नही है कि जो भी बुरी बात हमारे देखनेमे आये उसे हम गरीब हरिजनोके मत्थे मढ दे।

मगर इस सुधारकी आवश्यकता इस बातसे कुछ कम नही हो जाती कि इसका हरिजनोके साथ कोई खास सम्बन्ध नही है। अगर हमारी सदासदविवेक-बुद्धि कुठित न हो गई होती, तो हम यह स्वीकार कर लेते कि मनुष्योसे पशुओके हक कुछ कम नही है। दयाधर्मका प्रचार करनेवाली सस्थाओका यह खास काम होना चाहिए कि वे लोगोको 'हृदय' की शिक्षा दे। मै जानता हूँ कि मनुष्यके धृष्टतापूर्ण प्रभुत्वके पैरो तले यह मानवेतर सृष्टि बुरी तरह कराह रही है। मनुष्य जब अपनी भूख शान्त करनेपर उतारू हो जाता है, तब, जा हो या बेजा, वह किसी भी प्रकारकी बेरहमीको अनुचित या निन्दनीय नही समझता।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, १३-४-१९३५

५९७ टिप्पणियाँ

पूर्ण प्रायश्चित्त

कुछ समय हुआ मैंने इस पत्रमें सार्वजनिक दान पर निर्वाह करनेवाले बहराइचके एक नवयुवकके विषयमें लिखा था।[1] बादमें वह युवक पूरा पश्चात्ताप करके मेरे पास लौट आया, यह बात भी इस पत्रमें लिखी जा चुकी है। अब भी वह मगनवाडीमें रहता है और हमारे साथ काम करता है। शारीरिक श्रममें वह अपना पूरा हिस्सा देता है। कुछ ही दिनोंमें वह बहराइच जाने लायक किरायेका पैसा कमा लेगा। पर मगनवाडीमें रह लेनेके बाद किरायेका पैसा कमाकर यहाँसे तुरंत ही चले जानेकी उसकी इच्छा नहीं है। उसका विचार यहाँ रहकर कुछ सीखनेका और कुछ अधिक लाभ उठानेका है। उसके सम्बन्धमें जो आलोचना हुई उससे उसके बहराइचके मित्रोंका दिल दुखा है। इस युवकका नाम अवधेश है। अवधेश मेरी आलोचनाका औचित्य तो स्वीकार करता है, पर अपने बचावमें यह कहता है कि वह दान ले-लेकर यात्रा करने या खाने-पीनेमें कोई पाप-जैसी चीज नहीं मानता था, क्योंकि उसके कथनानुसार रामानुज सम्प्रदायमें ऐसी प्रथा है। किन्तु अब चूंकि उसने अपनी गलती मान ली है, इसलिए फिरसे उस भूलको न करनेका उसने मुझे वचन दिया है। इस प्रकार उसने अपनी भूलसे लाभ उठाया है, और जो-कुछ भी कलंक उसे लगा हुआ था उसे उसने मेरी आलोचनासे धो डाला है। हम चाहते हैं कि दूसरे बहुत से लोग जो अवधेशकी तरह दान पर गुजर करते हैं, इस दृष्टान्तसे लाभ उठायें, और इसी तरह अपने जीवनमें नया अध्याय आरम्भ करें। मनुष्यसे भूल होना स्वाभाविक है। पर मनुष्यका गौरव इसीमें है कि जब उसे अपनी भूल पता चल जाये तो वह उसे सुधारने और उसे फिरसे न करनेका दृढ़ संकल्प कर ले।

अस्पृश्यताका परिणाम

कराईकुडीमें नट्टार लोग हरिजनों पर जो अत्याचार ढा रहे हैं, उससे 'हरिजन' के पाठक भली भाँति परिचित हैं। अब राजपूतानेसे भी वैसी ही एक खबर आई है। जयपुर राज्यके अन्तर्गत सीकरके ठिकानेमें खुडी नामका एक छोटा सा गाँव है। मेरे पास जो पत्र आये हैं उनमें यह बताया गया है कि गत २८ मार्चको राजपूतोंकी एक टोलीने जाटोंकी एक बारातको घेर लिया और बेचारे निहत्थे जाटों पर बुरी तरह लाठियाँ बरसाईं — गुस्ताखी उन बरातियोंकी यह थी कि उनका दूल्हा घोडेपर सवार था। दुनियाके इस हिस्सेमें यह रिवाज मालूम देता है कि शादी-ब्याहके अवसर पर जाटोंको हाथी या घोडेको सवारीके काममें नहीं लाना चाहिए। यह

१ देखिए पृ० २९५ उपशीर्षक "शर्मनाक"।

वश्वाम किया जाता था कि दोनो पक्षामे समझौता हो गया है और किमी भी अवसर पर जाट लोग हाथी या घोडेको सवारीके काममे ला सकते है। पर इन घटना ओसे तो यह जाहिर होता है कि जिसने यह करार कराया था वह उसका पालन करानेमे राजपूत लोगो पर जोर नही डाल सका। कहा जाता है कि राजपूतोने इम हमलेसे पहले ही एक जाटको कत्ल कर दिया। ४० से ऊपर आदमी लाठियोसे सख्त घायल हुए, और एक आहत तो बेचारा मर ही गया।

हमे आशा करनी चाहिए कि राज्यके अधिकारी इस मामलेकी पूरी पूरी जाच करेगे और गरीब जाटोको उचित सरक्षण देगे जिससे कि वे उन सामान्य अधिकारोको अमलमे ला सके जो न्यायत मनुष्य मात्रको प्राप्त है।

हमारे साथ इस घटनाका यहा यह सम्बन्ध है कि यह मूखतापूण अत्याचार इस अस्पश्यताका ही, इस विश्वासका ही प्रत्यक्ष परिणाम है कि ईश्वरने जो मानव सष्टि रची हे उसमे कुछ मनुष्य दूसरोसे बडे या ऊचे ह, और यह दप भावना इस हदतक पहुँच जाती है कि वे छोटे आदमी अस्पृश्य ही नही, अदशनीय तक हो जाते है। खुडी गावके जाटो पर जो अत्याचार हुआ है वह अस्पृश्यताका ही एक प्रकार है—'हरिजन'के पाठक अस्पश्यताके जिस रूपसे परिचित है उसमे यह अस्पन्यता सिफ मात्रामे ही भिन्न है। अस्पश्यताके उग्र रूपको नष्ट करनेमे जहा हम सफल हुए कि उसका शेष रूप निश्चय ही नष्ट हो जायेगा। इसलिए यह जरूरी है कि इस महा पिशाचिनीका अन्त हर तरहस और जल्द मे जल्द किया जाये।

सेवाका पुरस्कार

दरभगासे एक सेवकने लिखा है

> **होलीकी छुटिटयोमे म अपने गॉव गया था। वहाकी सडके बडी गन्दी देखी तो सोचा कि इन्हे साफ कर डालू। इस इरादेसे मने वहाके नवयुवकोसे कहा कि हमारी इस छुटटीका सबसे अच्छा उपयोग यह होगा कि आप लोग इस सारे कूडे कचरेको साफ करनेमें मेरा हाथ बँटायें। करीब तीस युवकोने मेरा साथ दिया। फावडे लेकर चार घटे हमने डटके काम किया। सारे कचरेको इकटठा किया और उसे एक गडढेमें गाड दिया। हमने सोचा कि चलो आज यह एक अच्छा काम हो गया। पर गावके बडे बढोको हमारा यह काम अच्छा नहीं लगा। भगियोका, नीचसे नीच अस्पश्योका काम करके हम सब खुद ही पतित हो गये ऐसा उन्हे लगा। उन्होने पचायत बुलाई और जिन्होने सडकोकी सफाईका यह काम किया था उन सबका जाति बहिष्कार कर दिया। यह खुशीकी बात है कि उनके इस जाति-बहिष्कारके हुक्मसे गावके नवयुवक जरा भी भयभीत नहीं हुए।**

इस अत्यन्त सराहनीय सेवा-कायके लिए यह सेवक और उसके नौजवान साथी हार्दिक बधाईके पात्र है। जाति बहिष्कारके इस पचायती हुक्मसे तो यही प्रकट होता

है कि सुधारकोको अभी कैसे कैसे अज्ञानका सामना करना है। इस तमाम विरोधको दबानेका एक ही रास्ता है, और वह यह है कि जो ऐसा अत्याचार करे उनपर क्रोध न किया जाये और चाहे जितनी आपदाएँ झेलनी पडे पर सेवाके मागसे न डिगा जाये। लोक-सेवक यह विश्वास रखे कि अगर वे अपने मनको शा त और स्थिर रखगे और यह सेवा करते रहेगे तो जो लोग उ हे आज पानी पी-पीकर कोस रहे है, कल वही लोग यह समझ जायेगे कि वे कैसी कीमती और उच्च सेवा कर रहे ह और तब उ हे आसीसेगे।

मलेके लिए गडढे

एक सज्जन पूछते है

१ मैलेके लिए फिर उसी स्थान पर एक फुटका गडढा बनानेमें कितने दिनोका अ तर होना चाहिए?

२ धान बोनेके बाद खेतोको प्राय तत्काल जोत दिया जाता है। यदि बोनेके लगभग १ हफ्ते पहले खेतोमें मला गाडा गया हो, तो क्या वह जोतते समय ऊपर नही आ जायेगा और किसान और बलोके पाँवोमें नहीं लगेगा?

१ 'पुरे' की पद्धतिसे यदि मैला गहरा न गाडा गया हो तो अधिकसे अधिक पन्द्रह दिनोके बाद बीज बेखटके बोये जा सकते है। अगले वष फिर वही जगह मैला गाडनेके काममे लाई जा सकती है।

२ जबतक मैला सोधी सुग धवाली खादके रूपमे नही बदल जाता, तबतक उस जगहमे कुछ नही बोना चाहिए। खाद बन जानेके बाद उसे निश्चि त होकर जोता जा सकता है।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, १३ ४-१९३५

५९८ मूक सेवा

आश्रमके एक पुराने साथी श्रीलका-निवासी श्रीयुत जयरामदास, जिनके जरिये वहाके हालके भयकर मलेरिया-प्रकोपके सम्बन्धमे थोडी बहुत जानकारी प्राप्त करनेकी मै कोशिश करता रहा हूँ, अपने एक पत्रमे लिखते है [1]

आपको यह लिखते हुए मुझे खुशी होती है कि अब सक्रामक मलेरियाकी बाढ उतार पर है, और हमने अपने ११ सेवागहोमें से ६ को बन्द कर दिया है।

नीचे लिखे रोगियोकी हमने सेवा शुश्रषा की है, जिनमें भाग्यसे एककी भी मृत्यु नही हुई।[2]

अब केवल ८५ स्वयसेवक काम कर रहे है, जिनमें २१ तो भिक्खु है और ६४ गृहस्थ। इसके अलावा, १२ भिक्खु और ७८ गृहस्थ हमारे काममें सहायता दे रहे है।

श्रीलकासे मेरे पास इस आशयकी अपीले आई थी कि मै इस सकट-कालमे वहाके लोगोकी कुछ सहायता करूँ। जितना मुझसे हो सका मैने इस विषयमे पूछताछ की। श्रीलकामे तमिल लोगोकी एक बहुत बडी आबादी है। जहा तक सम्भव था, उन्होने लागोको इस सकट कालमे मदद दी। सहायताका अधिकाश काम श्रीलका-सरकारके हाथमे था। मगर दरिद्रता और आरोग्य सम्बन्धी प्रारम्भिक नियमोके विषयमे अज्ञानता, इन दो चीजोके कारण उस सहायतासे लोग अधिक लाभ नही उठा सके। श्री जयरामदास जैसे कार्यकर्त्ताओने अवश्य स्वेच्छासे कुछ सेवा सहायता पहुँचाई। मलेरियाके इस भयकर प्रकोपसे सबसे बडा लाभ यह हुआ कि श्रीलकाके कुछ भिक्खु अपने-अपने विहार छोड-छोड कर सेवा करनेके लिए निकल पडे। ये लोग कोई परिश्रमका काम नही करते, बस थोडा अध्यापनका काम करते है। अगर चाहे तो, ये लोग समाजकी वास्तविक रूपमे सेवा करके इस सुन्दर सुहावने द्वीपको दरिद्रता तथा रोगसे मुक्त कर सकते है, और इसके जिस प्राकृतिक सौन्दयको मनुष्यने आज निर्दयतापूर्वक छीन लिया है, उसे वे लौटा ला सकते ह। भिक्खुओका यह धर्म और कर्त्तव्य होना चाहिए कि वे श्रीलकाकी हर झोपडीमे स्वच्छता देवीका सन्देश पहुँचा दे। यह अपराध नही तो क्या है कि जब बीमारीकी भयकरता कम हो जाये तब तो हम निश्चिन्त होकर बैठ जाये या सो जाये और जब बीमारी फिर सिरपर

१ केवल कुछ अश दिये जा रहे हैं।

२ विभिन्न ११ गाँवोमें खोले गये सेवागृहोके विवरणका खाका यहाँ नही दिया जा रहा है। कुल १८९६ मरीजोंकी सुश्रूषा की गई १७२९ चगे हुए और १६७ का इलाज उस समय चल रहा था।

नाचने लगे, तब जागे और घबराकर इधर उधर दौडने लगे? सच्ची सेवा तो इसीमें है कि ऐसे उपाय ढूढ निकाले जाये जिनसे कि बीमारी फिर सिर उठा ही न सके।

सरदार वल्लभभाई पटेल हमे आज एक प्रत्यक्ष पाठ सिखा रहे है। वे बोरसदमे, जहा प्लेग फैला हुआ है, सेवा सहायताके कायमे जी जान से जुटे हुए है। डा० भास्कर पटेल और कुछ स्वयसेवकोकी सहायतासे वे वहा रोगियोको दवा दारू की मदद दे रहे है। पर उनका स्थायी काम तो यह हो रहा है कि वे वहा तमाम गदगीको साफ करनेमे लगे हुए ह। प्लेगसे आक्रात तमाम गावोकी वे एक एक करके सफाई कर रहे है। लोगोस वे कहते है कि अपने इन अधकारपूण मकानोको छोड दो ओर मैदानमे जाकर तबतक अपने खेतोमे रहो। इस बीचमे वे मकानोके छप्परोको खुलवा दते है, और उनमे रोशनी, धूप और हवा आने देते है। और तमाम रोडे ओर मलबेको हटाते है, कूडे कचरेको साफ करते है और गदी छुतही जगहोके कीटाणुओको नष्ट कर देते है। गावोमे वे ऐसे लाखो पर्चे बँटवा रहे है जिनमे इस महामारीसे बचनेकी हिदायते लिखी हुई है। सरदार वल्लभभाईने न तो धनके ही लिए कोई अपील निकाली है और न स्वयसेवकोके ही लिए। स्वयसेवक सब स्थानीय ही भरती किये गये है। प्लेग सभी गावोमे नही है। और जिस जगह सकट आया हुआ है वहा अगर सहायताकी भावना जाग्रत नही की जा सकती, तो यह एक विवादास्पद प्रश्न है कि जबतक सहायताकी भावना वहाके लोगोमे न आये तबतक क्या उसके आनेकी प्रतीक्षा की जाये? यह हो सकता है कि विशेषज्ञोको बाहरसे बुलाया जाये और लोगोको वे रास्ता सुझाये। मगर कायकर्त्ता तो निश्चय ही इदगिदके होने चाहिए, और इसी तरह आस-पडोससे पैसेकी भी सहायता मिलनी चाहिए। बम्बई तथा दूसरे बडे बडे शहरोको उन स्थानोमे, जहा पसा नही मिल सकता, ऐसे कामोके लिए खूब दिल खोलकर पसा देना चाहिए। पर साथ ही यह भी जरूरी है कि विपदग्रस्त लोग अपनी सहायता आप करना सीखे।

[अग्रेजीसे]

हरिजन, १३-४-१९३५

५९९ पत्र : क० मा० मुन्शीको

१३ अप्रैल, १९३५

भाई मुन्शी,

आपका पत्र मिला। मैं १९ की शामको यहांसे चलूंगा। आप सीधे इन्दोर पहुँचे, इसमें ज्यादा सुभीता रहेगा। यहांकी ट्रेन असुविधाजनक है। खंडवासे इंदोरकी गाडी पकडनी है। हो सकता है, हम दोनों वहां टकरा जायें। मैं २० को सवेरे पहुँचूंगा। आपको जिसमें सुभीता लगे, सो करना।

आपका इतिहास मैं आजकल रोज थोडी देर पढता हूँ। जितने मनोयोगसे यह पढता हूँ, उतने मनोयोगसे गीता या रामायण पढूँ तो यह जन्म न सुधर जाये?

राजाजी बहुत थक गये हैं। दो महीनेसे मुझे तंग कर रहे हैं। अच्छा है, आराम करें। जरूरत होगी तब उनसे मदद नहीं मिलेगी, ऐसा तो नहीं ही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७५७१) से, सौजन्य क० मा० मुन्शी।

६०० पत्र : एल० एन० गुबिल सुंदरेशनको[1]

वर्धा
१४ अप्रैल, १९३५

मैं ऐसे किसी व्यक्तिको नहीं जानता जिसे भारतसे भेजा जा सके। मैं नहीं समझता कि कोई भी उत्साही कांग्रेसी इस कठिनाईका कोई हल सुझा सकता है। लेकिन मैं यह दिलसे मानता हूँ कि जबतक हम एक ऐसा सही भारतीय नहीं तलाश कर लेते जो प्रतिनिधिके कर्त्तव्योंको ठीक ठीक निभा सके, तबतक हम और अमरीकी लोग एक दूसरेको उतनी अच्छी तरहसे नहीं समझ सकते, जितनी कि चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १७-४-१९३५

१ सुंदरेशनने गांधीजीको जॉन हेन्स होम्सके इस सुझावके बारेमें लिखा था कि "भारतकी ओर अमरीकी जनताका ध्यान बनाये रखने" के लिए विशेष प्रतिनिधि भेजा जाना चाहिए।

६०१ पत्र अवधेश दत्त अवस्थीको

१४ अप्रैल, १९३५

चि० अ[व]धेश,

इसमें कुछ नहीं था। अवश्य दिलमें जो ख्याल आवे उसे लिखा करो। 'रामायण' का तुमारा ज्ञान कैसा है?

बापु

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२११) से।

६०२ पत्र अमतुस्सलामको

१४ अप्रैल, १९३५

प्यारी बेटी,

क्या बेटीको बीबी नहीं कह सकते हैं?[1] देवदासको पैसा वापिस करनेकी क्यों फिकर करती है? अब कांफ्रेंसका टिकट लेनेकी कोई जरूरत नहीं है। मेरे आनेके बाद देखा जायेगा।[2] बाकी मिलने पर।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२४) से।

६०३ पत्र पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासको

१५ अप्रैल, १९३५

भाईश्री पुरुषोत्तमदास,

तब आपको अथवा विशेषज्ञोंकी किसी संस्थाको पहला कदम उठाना चाहिए। समाचारपत्रोंमें गुमनाम लेखों द्वारा नहीं, बल्कि नामयुक्त, सप्रमाण, उत्तरदायी लेखोंके रूपमें यह लेखमाला ऐसी निकलनी चाहिए कि सरलतापूर्वक सामान्य मनुष्यकी समझमें आ सके। साथ ही एक सचिव भी होना चाहिए, जो विभिन्न संस्थाओंसे मत एकत्रित करे और उनपर हस्ताक्षर कराये।

१ प्रायः बहनको 'बीबी' कहकर पुकारा जाता है।

२ इस समयतक अमतुस्सलाम इन्दौर पहुँच चुकी थी।

मेरा दाहिना हाथ थक गया है, और यह पत्र सवेरेके चार बजे लिख रहा हूँ, इसलिए बाये हाथसे लिख रहा हूँ। आशा है, समझनेमे अडचन नही होगी।

मोहनदासके वन्देमातरम्

[गुजरातीसे]

पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

६०४ पत्र मणिलाल तथा सुशीला गाधीको

१५ अप्रैल, १९३५

चि० मणिलाल तथा सुशीला,

दाहिना हाथ दुखता है, कि तु किसी और तरीकेसे लिखा जा सके, इतना समय नही है। तुम दोनोके पत्र मिले थे। रामदासके आनेकी आशा छोड दो। जो बन सके सो करो और आगे बढो। किशोरलाल पूना आदि स्थानोमे घूमने गये है। ताराको कुकर-खासी हो गई है। बहुत दिन लेगी।

हरिलाल अभी मेरे पास ही है। दूसरी शादी करना चाहता है। देखें क्या होता है। रामदास बम्बईमे मारा-मारा फिर रहा है, लेकिन अभी तक कोई ठिकाना नही लगा। काति तो मेरे पास ही है।

मै मजेमें हूँ। बा भी मजेमे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३६) से।

६०५ पत्र सूरजमल जैनको[1]

१५ अप्रैल, १९३५

भाई सूरजमलजी,

मेरे साथ कितने होगे उसका निश्चय मै नही कर सका हूँ। क्योकि बहुत हमेशा मेरे साथ आना चाहते है। जो आवेगे उनके लिये कोई खास प्रबधकी आवश्यकता नही होगी। खाना बिलकुल मामुली होना चाहीये। बाहरसे कुछ मगवानेकी आवश्यकता नही है। जो कुछ इन्दोरमे ही मिल जाय उससे सबका निर्वाह हो जायगा। सभव है मेरे साथ २५ आदमी हो। यह सख्या यदि अधिक लगे तो मुझे तार दीजिये। हा, साथमें एडवोकेट मुनशी और उनकी धमपत्नि होनेका सभव है। और

१ हिन्दी साहित्य-सम्मेलनकी प्रबंध समितिके मत्री।

सोमवारको आचार्य ध्रुव आवेंगे। उनके लिये कुछ करनेकी आवश्यकता रहनेका संभव है।

थैलीके बारेमें एक लाख तक तो अंकित धन नहीं ले सकता हूं। उसमें दो चार हजार ऐसे आ जावे तो हरज नहीं है।

मोटर तो एकसे भी चल सकेगा।

आपका,
मो० क० गांधी

वीणा, श्रद्धांजलि अंक, अप्रैल मई, १९६९।

६०६ पत्र अमृतकौरको

वर्धा
१६ अप्रैल, १९३५

प्रिय अमृत,

मुझे दो पत्रोंकी प्राप्ति सूचना देनी है।

तुम्हारी गश्ती चिट्ठी अच्छी है। सफाईको उचित महत्त्व नहीं दिया गया। मैलेको जलानेकी जरूरत नहीं। वह तो नोटको जलाने जैसा होगा। शम्मी तुम्हें बतायेगा कि मेरी बातका क्या मतलब है। तुम जब जुलाईमें यहां आओगी, तब तुम्हें इसके बारेमें और अधिक जानकारी प्राप्त हो जायेगी। के० आन्ध्र चला गया है। अगले सप्ताह लौटेगा।

शम्मीको दर्द है, जरा कल्पना तो करो। 'डाक्टर, खुद अपना इलाज करो।'

तुम्हारा काता हुआ सूत आ गया है। नौसिखिएके लिए बहुत अच्छा है। जितने समयमें तुमने इतना कर लिया है, मैं नहीं कर पाया था। लेकिन मैं सीखनेके मामलेमें औसत आदमीसे कहीं ज्यादा सुस्त हूँ।

कृपया कुमारी रेनॉल्डसको बता देना कि दो गिन्नियां हरिजन-लडकियोंकी भलाईके लिए — वे भारतीय समाजमें सबसे अधिक तिरस्कृत हैं — इस्तेमाल की जायेंगी और वह भी वहां जहां इस समय बहुत अधिक भुखमरी है।

तुम अगाथाको जो भी लिखना चाहती हो, अवश्य लिखो। मैं जानता हूँ तुम क्या लिखने जा रही हो। लेकिन शायद तुम्हें यह पता नहीं है कि हमारे अध्यक्ष और सचिव भारतके सर्वाधिक समर्थ लेखापालोंमें से हैं। लेखे सार्वजनिक सम्पत्ति होते हैं।

हाँ, अगाथाने हम दोनोंको एक दूसरेके बहुत नजदीक ला दिया है। मुझे इस बातका अफसोस है कि राजाजी जैसे व्यक्तिको इंग्लैंड भेजनेकी उसकी बात मैं मान नहीं सका। वह यह नहीं समझ पाती कि सारा खेल एक ही व्यक्तिका है। सर एस०[1] कांग्रेससे समझौता करना नहीं चाहते। वे अविवेकसे काम ले रहे हैं। वे

१ सर सैमुअल होर।

नही जानते कि उनकी इच्छाको जबदस्ती लादनेके लिए किस तरहका आतक मचाया जा रहा है। यदि अहिंसा इस बुराईका इलाज है, जैसा कि है, तो हमे धैय रखना चाहिए और सब कुछ ठीक हो जायेगा। मेरी इच्छा है कि तुम अगाथाको समझा दो कि फिलहाल किसीको भी भेजनेसे कोई लाभ क्यो नही होगा।

मै कुछ पूनिया भेज रहा हूँ। तुम लिखना, कैसा काम दे रही है।

तुम्हे किसी लडके या लडकीको अपने पास रखना चाहिए, जो इन कामोको सीखकर दूसरोको सिखा सके। अगर तुम किसीको मेरे पास भेजो तो मै उसे थोडे ही समयमे प्रशिक्षित करा दूगा।

पत्राचारका बहुत-सा बकाया काम मैने निबटा दिया है। मै अपने मौनका आनन्द ले रहा हूँ और यह सोचते डरता हूँ कि इसे शुक्रवारको तोड देना पडेगा। तुरन्त ही बकाया फिर इकट्ठा हो जायेगा।

तुमने आश्रमकी लडकियोको मोह लिया है। वे अक्सर तुम्हारे बारेमे पूछती रहती है।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च] आर० का पत्र इसके साथ हे।

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३५२९) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६३३८ से भी।

६०७ पत्र : जी० एम० थावरेको[1]

१६ अप्रैल, १९३५

प्रिय मित्र,

अफसोस कि मै मेलेमे नही आ सकता। हरिजनोको आप यह समझानेकी कोशिश करे कि वे पण्डोको एक पैसा भी न दें। मन्दिरोके बारेमें आपकी शिकायत उचित है, लेकिन जोर-जबदस्तीसे उनको नही खुलवाया जा सकता। समझाने-बुझानेके तरीके पर अमल किया जा रहा है। आप इस बातसे निश्चिन्त रहे कि मन्दिरोको खुलवाये बिना हम दम नही लेगें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

[अग्रेजीसे]
हितवाद, २१-४-१९३५

१ श्री थावरे अखिल भारतीय दलित वर्ग सभा, नागपुरके सहायक महामंत्री थे। उन्होंने भंडारा जिलेके एक मेलेमें हरिजनोंके साथ अनुचित व्यवहार किये जानेकी शिकायत की थी।

६०८ पत्र बुलाखीदासको

१६ अप्रैल, १९३५

भाई बुलाखीदास,

मेरा अभी उस ओर आनेका कोई इरादा नही है। आया तो आपसे ज़रूर मिलूगा। अध्यवसायसे भावसार कई पुराने रगोका पुनरुद्धार कर सकते है।

मो० क० गाधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३१४०) से।

६०९ पत्र वालजी गो० देसाईको

१६ अप्रैल, १९३५

चि० वालजी,

सोनेकी कटारी कमरबदमें शोभा देती है या पेटमे? मगनकुटीमे साप खेले, दीमक दीवाले खा जाये, कबूतर घोसले बनाये — यह अच्छा है या उसमें कुछ जिन्दा आदमी रहे, यह। हरिजनोके हितके लिए यह सब दे देनेके बाद भी तुम जो उसके प्रति मोह बनाये हुए हो सो कैसे सधेगा? जो हमारे अनुशासनके चौखटेमें समा सके, ऐसे ही लोगोका आना सम्भव है।

मधुमक्खीवाला लेख मिला। जयकरनकी लेखमाला[1] छप रही है।

गोरक्षाके सम्बन्धमे तुम्ही कुछ लिख भेजो। उसका उपयोग करके मै कुछ लिख लूगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४७२) से, सौजन्य वालजी गो० देसाई।

१ जे० एन० जयकरनके 'मधुमक्खी पालन" शीर्षक दो लेख **हरिजन**के २० तथा २७ अप्रैल, १९३५के अंकोंमें प्रकाशित हुए थे।

६१० पत्र महावीर प्रसाद गुप्तको

१६ अप्रैल, १९३५

भाई महावीरप्रसाद,

तुमारी मत्रणा अच्छी है। मैं इन्दौरमें चर्चा करूँगा।

जब तेलका व्यापार करते हो तो तेलके बारेमे अपना अनुभव लिखो। तेल साफ कैसे किया जाये?

मो० क० गाधी

श्री महावीर प्रसाद गुप्त
रेडी गोदाम
डाकखाना बिन्दकी
जिला फतहपुर

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९६७१)से, सौजन्य महावीर प्रसाद गुप्त।

६११ पत्र आनन्द तो० हिंगोरानीको

१७ अप्रैल, १९३५

प्रिय आनन्द,

तुम्हारा दूसरा पत्र मिला। यह दूसरा जवाब है। तुम निश्चय ही कमजोर हो। किसी भी कीमत पर तुम्हे अपने काममें लगे रहना है। तुम्हारा भरण पोषण हो जायेगा। मुझे खुशी है कि विद्या मुल्तान गई है।

तुम्हारा,
बापू

श्री आनन्द तो० हिंगोरानी
डी/३, कास्मोपालिटन कॉलोनी
कराची

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे, सौजन्य राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी।

६१२ पत्र नरसिंहराव दिवेटियाको

वर्धा
१७ अप्रैल, १९३५

सुज्ञ भाईश्री,

अभी-अभी सुना कि आप खाट पकडे हुए है। भला यह कैसे निभेगा? अभी तो बहुत बरस जीना है और सेवा करनी है। सौ बरस तो जीनेका अधिकार है ही न?

इस पत्रका उत्तर देनेकी जरूरत नही है।

आपका,
मोहनदास गांधी

[गुजरातीसे]
नरसिंहरावनी रोजनीशी, पृष्ठ ६१७

६१३ पत्र अमतुस्सलामको

१७ अप्रैल, १९३५

प्यारी बेटी,

मेरी तो उम्मीद है कि तुम मेरे साथ ही रहेगी।[1] मुझे पता नही वहाँका इन्तजाम क्या है। अब तो कुछ दिन बाकी नही है। सब पता लग जायेगा।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२५) से।

१ अमतुस्सलाम इस समय इन्दौरमें थी और गांधीजी १९ तारीखको इन्दौरके लिए रवाना होनेवाले थे। सम्भवत: वे अपने भाईके साथ ठहरी थी।

६१४ पत्र अमृतकौरको

वर्धा
१८ अप्रैल, १९३५

प्रिय अमत,

कृपया सरदार देवराजके लोगोको मेरी सवेदना पहुँचा देना। हा, मुझे उनसे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वे स्वय एक सस्थाके समान थे।

मै २७को नही, ज्यादासे-ज्यादा २५ तक जरूर लौट आऊँगा।

उम्मीद है कि शम्मी शीघ्र ही फ्लूसे छुटकारा पा लेगा। पूनिया तुम्हे कल ही रवाना की है।

तुम दोनोको स्नेह।

बापू

श्री राजकुमारी अमृतकौर
जलधर सिटी
पजाब।

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३७१३) से, सौजन्य अमृतकौर। जी० एन० ६८६९ से भी।

६१५ पत्र जमनालाल बजाजको

१८ अप्रैल, १९३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारे दोनो पत्र मिले। कुमारप्पासे पूछा। जब ये फार्म छपवाये गये थे तब कोई अध्यक्ष नही बनाया गया था। खजानची तो थे ही। उनका नाम देना आवश्यक मालूम हुआ, इसलिए छापा गया। मुझे इसकी कोई खबर नही थी। कागज भी मने तुम्हारा पत्र आनेके बाद मँगवाकर देखा। अब आगे जो फार्म छपवाया जायेगा, उसमें परिवतन करके छपवानेको कहा है। इसमे कोई खास बात नही है।

कमलनयन सरहद पहुँच गया, ठीक है। पत्रोमे था कि उसे चोट आई है। पर उसमें कोई खास बात नही मालूम होती।

कमलाके बारेमें मालूम हुआ। कमलाकी इच्छा है कि जब वह जाने लगे तो बम्बई जाकर मैं उससे मिल आऊँ। तुम वहाँ हो ही, सो मुझे सलाह देना।

कान कैसा रहता है, इस प्रश्नका उत्तर नहीं है। आज ठक्कर बापा आये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६३) से।

६१६ पत्र: कनु गांधीको

१८ अप्रैल, १९३५

चि० कनैयो,

फिर तूने जल्दीमें निर्णय कर लिया। मुझे जो देखना है, सो सब यहीं का। हिसाब भी यहीं का रखना है। साथमें एक भी आदमी नहीं होगा, जिसका सामान देखनेकी जरूरत हो। रोजकी डाक कौन देखेगा? रोजका हिसाब कौन रखेगा? सिर्फ जोड़ने घटानेके लिए तुममें से किसीकी भी जरूरत नहीं है। मेरा सामान तो नहीं के बराबर होगा। केवल टाइप करनेके लिए किसीको नहीं ले जाना है। टाइप करने जैसा कुछ होगा ही नहीं। अतः यदि तुझे आनेका विशेष चाव ही न हो, तो तुम दोनों रह जाना और रोजका काम सँभालना। तू कुछ अध्ययनका कार्यक्रम बना लेना और कुछ औजार तैयार करना। कुछ तो खरीदने पड़ेंगे। समझा?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

६१७ पत्र: पुरुषोत्तम गांधीको

१८ अप्रैल, १९३५

चि० पुरुषोत्तम,

तेरा पत्र आज मिला। तू दीर्घायु हो और तेरी शुभकामनाएँ सफल हों। तेरा पिछला पत्र भी मिला था। जैसे भी बने तबीयत सुधार ले, तो बड़ा काम हो जाये। चोरवाड जानेका निश्चय किया है, यह अच्छा किया। सेवा तो हम जहाँ रहें वहीं की जा सकती है, है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

६१८ पत्र प्रेमाबहन कटकको

१८ अप्रैल, १९३५

चि० प्रेमा,

आज मेरा मौनका अन्तिम दिन है। मौनमें पीछेका काम काफी निबटा लिया है। तेरा पत्र आज ही मिला।

तेरे आनेके बारेमे तेरा लिखना बिलकुल ठीक है।

चावल, गुड, प्याज वगैरा खानेके लिए मै किसीको मजबूर थोडे ही करता हूँ? लोग जो चीजे खाते है उनके गुण-दोष मै बताता हूँ। इमली मै तो कच्चे शाकके साथ ही खाता हूँ। उसे भिगोकर उसका सत्त्व निकाल लेता हूँ। कच्चा शाक भी मुझे तो पिसवाकर ही खाना पडता है।

गावोके लोगोकी खुराकमे प्याजका बडा स्थान है। वह एक शाक है जो उनके लिए अमूल्य है। जहा प्याज हो वहा घी वगैराकी इतनी जरूरत नही रहती। इसलिए मैने प्रयोगके रूपमे शुरू किया है। जिनकी मरजी होती है वे खाते है। प्याजके बारेमे मैने अपना विचार इस हदतक बदला है कि जो इसे औषधिके तौर पर खाते है उनके ब्रह्मचर्यमें इससे बाधा नही होती। इसके लिए मेरे पास कोई प्रमाण नही है।

लाठी वगैराके शिक्षणसे अहिंसाकी वृत्ति मन्द पड जानेकी सम्भावना तो अवश्य है। लाठी रक्षाके लिए सिखाई जाती है न? परन्तु जो सिखाना चाहता है, उसे लाठीका उपयोग न सिखानेका नियम बनानेकी इच्छा नही होती।

सफेद खादीके बजाय रगीन खादी इस्तेमाल ही न की जाये, ऐसा तो मैने नही लिखा। लिखा हो तो उसे भूल समझा जाये।

स्वराज्य मिलने पर बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी बदल जायेगी कि आज देशी राज्योके बारेमे निश्चयपूवक कुछ भी कहना कठिन है। परन्तु आम तौर पर देशी राज्योकी शक्तिको स्वराज्य तन्त्र रोकेगा नही, ऐसा कहा जा सकता है।

लुहार, सुनार वगैरा वैश्य माने जायेगे।

कल इन्दौर जा रहा हूँ। २५ तारीखको वापस आ जाऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३७०) से। सी० डब्ल्यू० ६८०९ से भी। सौजन्य प्रेमाबहन कटक।

६१९ पत्र अनसूयाबाई कालेको

१८ अप्रैल, १९३५

प्रिय भगिनि,

तुमारे पूण उत्तरके लिये आभारी हूँ।

मो० क० गाधी

पत्रकी फोटो नकल (सी० डब्ल्यू० ६९०१)से।

६२० एक तार[1]

[१९ अप्रैल, १९३५के पूव][2]

थैलीकी राशिका उपयोग सिफ हिन्दी प्रचारके लिए किया जायेगा, किसी राजनीतिक या हरिजन कायके लिए कदापि नही। हिसाब कोई भी जब चाहे देख सकता है।

[अग्रेजीसे]

'मध्य प्रदेश और गाधीजी', पृ० ४९।

६२१ पत्र कोतवालको

[१९ अप्रैल, १९३५ के पूव]

भाई कोतवाल,[3]

मुझे उतारोगे कहा? मेरे साथ अधिक मनुष्य हो तो चलेगा क्या? इन्दौरके पास कोई ग्राम हो तो वहाँ झोपडेमें रहना मुझे पसन्द है।

बापू

वीणा, श्रद्धाजलि अक, अप्रैल मई १९६९।

१ साधन सूत्रमें पानेवालेका नाम नहीं मिला।

२ तार गाधीजीके इन्दौर प्रस्थानसे पूर्व ही भेजा गया होगा, जिसकी तारीख १९ अप्रैल थी।

३ हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी प्रबन्ध-समितिके सदस्य।

६२२ सदेश बगाल प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलनको[1]

[१९ अप्रैल, १९३५ या उससे पूर्व][2]

काग्रेससे अवकाश प्राप्त कर लेनेके बाद सम्मेलनमे मेरे शामिल होनेकी उम्मीद आप मत कीजिये। फिर भी, मै आशा करता हूँ कि आपका अधिवेशन सफल होगा।

[अग्रेजीसे]

अमृत बाजार पत्रिका, २४-४-१९३५

६२३ पत्र एन० वेंकट कृष्णय्याको

१९ अप्रैल, १९३५

प्रिय मित्र,

मैने अपने एक पत्रमे वस्तु-विनिमय प्रणालीकी कठिनाई बतलाई थी। मूल्यका एक सामान्य मापक होना चाहिए। जहाँ तक आपके दूसरे मुद्देका सवाल है, निस्सदेह, श्रमका विभाजन होना ही चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

श्री एन० वेकट कृष्णय्या,
खद्दर सस्थानम
वेजवाडा।

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२४२) से।

१ सम्मेलन दीनाजपुरमें हुआ था।

२ साधन-सूत्रमें इस पर तारीख १९ अप्रैल दी हुई है।

६२४ पत्र मार्गरेट स्पीगलको

१९ अप्रैल, १९३५

चि० अमला,

म बिल्कुल चगा और चुस्त हूँ। आज ही मौन तोडा है।

तुमने जिन योग्यताओका उल्लेख किया है, वे बिलकुल दुरुस्त है। तुमने जिस विनम्रतासे खद्दर त्याग देनेकी घोषणा की है, वह तुम्हारी अपनी ही विशेषता है। तुमने तो प्रगति करते जानेके लिए जैसे कमर कस ली है।

महादेव अजमेर गया है। वह और मैं २५ तारीखको लौटेंगे।

स्नेह।

बापू

[अंग्रेजीसे]

स्पीगल कागजात, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

६२५ पत्र परीक्षितलाल एल० मजमुदारको

१९ अप्रैल, १९३५

भाई परीक्षितलाल,

आपका पत्र मिला। हरिभाईके बारेमें मैंने आपकी राय पूछी है। आपकी क्या इच्छा है? इसने इतना खर्च किया, यह तो मुझे उचित नही लगा। फिर भी आपकी रायसे मुझे मदद मिलेगी।

अब उद्योग मन्दिरके पैसेकी बात। इस सम्बन्धमें मुझे कुछ भी याद नही है। नारणदाससे पुछवाना। इस महीनेके अन्तमे वहाँ आएगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४०३०) से।

६२६. भाषण प्रार्थना-सभामें[1]

१९ अप्रैल, १९३५

मैंने यह मौन[2] किया तो था सिर्फ इस विचारसे कि कागज पत्र लिखनेका जो बहुत-सा काम पिछड गया था, उसे इस बीच निपटा डालू, पर अब मै देखता हूँ कि उसके अलावा इस मौनसे मुझे और भी अनेक लाभ हुए है। चूकि मेरी दृष्टिके सामने सदा केवल आध्यात्मिक लक्ष्य ही रहता है, इसलिए मेरे इस मौनव्रतसे मुझे स्पष्ट ही आध्यात्मिक लाभ हुआ। जो अपने जीवनमे निरन्तर सत्यकी शोध कर रहा हो उसके लिए मौन बहुत आवश्यक है। किन्तु वह मौन मेरे इस मौनसे कही अधिक गम्भीर है। उसमें तो बातचीतका साधन यह लिखना भी बन्द कर देना चाहिए। अन्तरमे सत्य यदि होगा तो वह वाणीके बिना ही, लेखनीके बिना ही उसके प्रत्येक कार्यके द्वारा बोलेगा। उस दिन विनोबाका मुझे एक पत्र मिला था। भाऊने मुझे जो पूनिया बनाकर भेजी थी और उनके लिए मैंने उनकी जो प्रशसा की थी उसी सम्बन्धमे विनोबाका वह पत्र था। उसमे उन्होने लिखा था कि 'आपने भाऊकी जो प्रशसा की है, वास्तवमे वे उसके पात्र है, पर मै चाहता हूँ कि आपकी पूनिया और भी अच्छी हो। जिस रुईकी उन्होने पूनियाँ बनाई ह वह गाठकी रुई है। आपको ऐसी रुई काममे लानी ही नही चाहिए। जो रुई दबाई हुई नही होगी उसका असर तो कुछ और ही होगा।' नानीबहन बहुत बारीक सूत कातनेकी क्रियाओका अभ्यास करने नादेड गई थी। जब वहासे लौटकर उन्होने मुझे खास तौरपर बिना दबाई हुई रुईकी कुछ पूनियाँ बनाकर दी, तब मुझे इस बातकी सचाईका पक्का प्रमाण मिल गया। जब मैंने इन पूनियोको काता, तो मुझे काफी फर्क मालूम पडा। सूत टूटा तो जरा भी नही। यह बात नही कि मैंने कुछ खास ध्यानसे काता था। पर वह रुई ही अत्यन्त सावधानीके साथ साफ करके धुनी गई थी। मै यह बतलाने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि सत्यमे कितनी सावधानीकी आवश्यकता है और जो मधुर स्वाद 'करनी' मे है वह 'कथनी' मे कहा। कुछ वर्ष हुए कलकत्तेकी एक सभामें इतना ही कहकर मैंने मनमे सन्तोष मान लिया था कि 'आप लोग मेरी इन उगलियोका मूक भाषण ध्यानसे सुने जो यह तकली चला रही है।'

इस मौनमे एक गुण और मुझे दर्पणवत् दिखाई दिया। क्रोध जैसे सबको आता है मुझे भी वैसे ही आ जाता है। पर मै उसे सफलतापूर्वक दबा सकता हूँ। खैर, मुझे यह मालूम हुआ कि क्रोधको दबानेमें मौनसे जितनी मदद मिलती है उतनी शायद किसी अन्य साधनसे नही मिलती। मनुष्य जब मौन रहेगा तब क्रोध वह

१ महादेव भाईके "वीकली नोट्स" (साप्ताहिक टिप्पणियाँ) से उद्धृत।

२ गांधीजीने २२ मार्चसे चार सप्ताहके लिए मौन रखा था और तभी तोड़ा था।

कहासे प्रकट करेगा? नेत्राके द्वारा तो प्रकट नही करेगा। और जब उसने अहिसाका व्रत ले लिया है, तब शारीरिक हिसाके द्वारा तो वह क्रोधको उत्तेजन दे ही नहीं सकता। लिखकर भी वह क्रोधको प्रकट नही कर सकता, क्योकि लिखनेकी क्रिया आरम्भ करनेमे ही क्रोधका शमन हो जाता है।

मौनके और भी अनेक लाभोका मै वणन कर सकता हूँ, पर यहा तो इतना ही काफी होगा। एक बात मै आप लोगोसे कह दू। वह यह कि इस मौनव्रतकी समाप्तिके लिए मै कुछ आतुर नही हो रहा था। मुझे तो यह डर लग रहा था कि मौन-भग करनेका दिन अब आ पहुँचा। और मै तो चाहता हूँ कि महीने दो महीने का न सही, पर थोडे-थोडे दिनोका मौनव्रत तो मै बीच-बीचमें लिया ही करूँ।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २७-४-१९३५

६२७ सन्देश किसान-सम्मेलनको

[२० अप्रैल, १९३५ से पूर्व][1]

मुझे खेद हैं मै सम्मेलनमें शामिल नही हो सकता। सरदारके सभापतित्वमें सम्मेलनकी सफलता निश्चित ही है।

[अग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २१-४-१९३५

६२८ बातचीत जयकृष्ण भणसालीके साथ[2]

[२० अप्रैल, १९३५ से पूर्व][3]

गाधीजी तुम जब ध्यानावस्थित होकर बैठते हो तब क्या केवल 'ओकार' का ही जप करते हो?

भणसालीजी जी, हाँ।

गा० क्या दूसरे कुछ विचार मनमें आते है?

भ० जी, नहीं।

गा० क्या सारे दिन कोई अन्य विचार मनमें नही आते?

भ० यह बात तो नहीं है। आपके साथ जो बातें हो रही है उनका तो बारम्बार विचार आता है। और म आपके प्रश्न अपने अन्त करणसे बार-बार पूछता रहता हूँ।

१ साधन सूत्रमें इस रिपोर्ट पर २० अप्रैलकी तारीख है।
२ महादेव देसाईके साप्ताहिक पत्र "वीकली लेटर' से उद्धृत।
३ महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीमें इसकी रिपोर्ट १० अप्रैलमें दी गई है।

गा० ठीक। तुमने उस दिन कहा था कि अपने आसपास चारो ओर म जो दु ख दावानल देखता हूँ उससे मुझे पीडा होती है । तो क्या उसके निवारणके लिए कुछ करनेको तुम्हारा मन नही होता ?

भ० नहीं। वसे यह विचित्र लग सकता है।

गा० तब यह कहनेका अथ ही क्या हुआ कि तुम्हे उससे पीडा होती है ?

भ० दूसरोका दु ख देखकर पीडा तो होती है, पर यह भी लगता है कि मै लाचार हूँ, कुछ कर नहीं सकता।

गा० पर तुम्हारे पैरमे काटा लग जाये तो क्या तुम उसे निकालोगे नही ?

भ० जी, निकालूगा।

गा० तुम्हे जब भूख लगती है तो तुम कुछ खाते हो या नही ?

भ० खाता हूँ।

गा० तब अगर दूसरेके पैरमें काटा लगा हो तो तुम्हे क्या ऐसा लगता है कि यह काटा मेरे ही पैरमे लगा है, और क्या उसे निकाल देनेकी इच्छा नही होती ?

भ० जी हाँ, होती है।

गा० इसी प्रकार दूसरोकी भूख तुम शान्त कर सको तो करोगे या नही ?

भ० करूँगा, अगर मेरे सामथ्यमें होगा तो।

गा० यदि कोई मनुष्य कष्टसे पीडित हो और सिवा तुम्हारे दूसरा कोई भी उसके पास न हो, तो ?

भ० शायद कुछ उसके लिए करूँ। पर मुझसे अधिक हो ही क्या सकेगा? म तो अपनी लाचारी कबूल कर रहा हूँ।

गा० यह कहकर तुम्हारे जैसा व्यक्ति जिम्मेदारीसे छूट थोडे ही सकता है ?

इसके उत्तरमें भणसालीजी धीरेसे मुस्कुरा दिये।

गा० पर हमने इस वार्ताका आरम्भ ही तुम्हारी इस स्वीकृतिसे किया है कि आसपासका दु ख देखकर तुम्हे पीडा होती है । तुम उस दिन कहते थे न कि 'नवजीवन' का वह 'पतग-नृत्य' लेख आज भी कानोमे गूज रहा है।

भ० जी हाँ, वह लेख आज भी मेरे कानोमें गूज रहा है, पर म कहता हूँ कि मै लाचार हूँ।

गा० जो मनुष्य अपनी पूरी शक्ति लगा चुका हो वही यह कह सकता है कि अब वह इससे अधिक और कुछ नही कर सकता। अगर किसी लूले लँगडे आदमीकी उसे सेवा करनी है, तो उसकी वह सामर्थ्य-भर सेवा करेगा, उस एक मनुष्यकी सेवामें उसके लिए मनुष्यमात्रकी सेवा आ जाती है।

भ० पर म अपना ध्यान पीडितके कष्ट निवारणमें ही पूरी तरह लगा नहीं सकता। मै थोडा बहुत करूँगा, पर मुझे जल्दी ही अपनी लाचारी महसूस होने लगेगी।

गा० यज्ञ और सेवासे ही सारा ससार चल रहा है। 'गीता' ने कहा है न कि—

सहयज्ञा प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक ॥[1]

भ० यह ठीक है, पर ईश्वर-भजन भी तो एक प्रकारका धम ही है न ?

गा० ईश्वर परायणता कोई ऐसी अनोखी चीज तो है नही जो तिजोरीमे जवाहरातकी तरह ब द रखी जाये। वह तो हमारी कृतिमे दिखाई पडनी चाहिए। पर इसका जवाब मै अभी नही चाहता। चूकि तुम अपनी बातका विचार करते हो, इसीलिए मै तुम्हे इसपर विचार करनेके लिए छोड देता हूँ। और फिर तुम्हारे ऊपर इसका कोई दबाव भी नही पडना चाहिए। तुम्हे मेरे ये प्रश्न अच्छे लगते हो तभी मै तुमसे पूछूगा। यह तो तुम देखत ही हो कि मै तुम्हारे बारेमे कितना अधिक सोचता रहता हूँ।

भणसालीजीने जब यह कहा कि मै आपकी चि ताका कारण बनूं यह तो नहीं होना चाहिए, तब गाधीजीने कहा

गा० नही, सो बिलकुल नही है। मुझे लगा कि अपने विचार मुझे तुम्हारे सामने रखने चाहिए, इसलिए मैंने तुमसे यह चर्चा की।

भ० लेकिन आप मुझे छोड तो नहीं देंगे ?

गा० नही, मै यह नही चाहता कि तुम कोई भी ऐसा काम करो जो तुम्हे बुद्धिपूवक जँचता न हो।

दूसरे दिन भणसालीजी खुद गाधीजीके पास गये और फिर अपनी वही लाचारी प्रकट की।

गा० तुम्हे जो कहना था, वह तुम मुझसे कह चुके, पर मुझे तो अपना राग अभी अलापते ही जाना है।

भ० अवश्य, आपको अधिकार है, बापू। पर अपनी मनोवत्ति मै आपको बतला चुका।

गा० तुम्हारी मनोवृत्ति तो म जान गया। पर तुम्हारी तरह करनेका उल्लास मुझे क्यो नही होता ? तुम्हारी तरह भ्रमण करना तो मुझे अच्छा लगता है, और शरीर गवाही दे तो आटे और नीमकी पत्तियो पर भी निर्वाह करूँ, तो भी यह तो प्रतीत होता ही है कि तुम्हारे जीवनमे कोई भारी विचार-दोष पडा हुआ है। तुम्हारा यह माग यदि सत्य हो तो सत्यके शोधकके नाते उसपर चलना मेरा धम हो जाता है। इसके विपरीत, तुम्हारी वत्तिमें यदि कोई दोष मालूम पडता हो तो मुझे वह बात तुम्हारे कानमे डाल देनी चाहिए। मुझे जो दोष मालूम पड रहा है, वह तुम्हारे भ्रमणमे अथवा आटा और नीमकी पत्तिया खानेमे नही, कि तु तुमने 'यज्ञ-सह' ज म लिया है, फिर भी तुम इस देहके साथ सम्बद्ध वस्तुकी अवहेलना कर रहे हो।

भ० जरा इस यज्ञको और स्पष्ट कीजिये।

गा० भगवानने यह कहा है कि जो बिना यज्ञ किये खाता है वह चोरीका अन्न खाता है। जो भिक्षा माँगकर खाते है, वह ठीक है। पर उसे यज्ञधम करनेके बाद खायें।

१ अध्याय ३, श्लोक १०।

भ० मने इसे सुना है। आज सारे दिन म यही सोचता रहा कि म कोई काम तो करता नहीं, तब मुझे आटा और नीमकी पत्तियाँ खानेका अधिकार है या नही?

गा० तुमने जो यह सुना है सो तो ठीक ही है। पर सारा ससार जिस धमको जानता है उसे बर्तता उसी प्रकार है जिस प्रकार जैन साधु और सन्यासी। ये दोनो भिक्षाका अन्न तो खाते ही है, पर अपने मनमे ऐसा मानते है कि वे लोगोको जो धर्मोपदेश दते है, उतना ही यज्ञ उनके लिए पर्याप्त है। मै मानता हूँ कि इसमे वे थोडी भूल करते है। धमका बोध अवश्य देना चाहिए, पर उसके साथ ही उन्हे शारीरिक श्रम रूपी यज्ञमे भी अवश्यमेव भाग लेना चाहिए। ओर उस यज्ञका बदला चाहनेके बजाय उहे लोगोकी दया पर जीना पसद करके शुद्ध ब्राह्मण-धमका पालन करना चाहिए। इसलिए मै तुम्हे इतना बार बार समझाना चाहता हूँ कि जगतमे अभीतक किसीने जो नही किया उस अनाखी वस्तु — माया — से तुम दूर रहो। तुम जो कर रहे हो, यह कोई त्याग नही बल्कि सूक्ष्म भोग है, क्योकि उसमे मान सिक आलस्य है। मैने जो लिखा हे उसके पीछे समस्त जगतका अनुभव है और मेरा जीवित जाग्रत अनुभव भी उसका साक्षी है। भगवानकी प्रेरणासे प्रेमके वश होकर तुम यहा आये हो। इस प्रेमका बदला मै दू तो क्या दू? क्या अच्छा भोजन कराकर? नही, इसकी तुम्हे इच्छा भी नही। पर निमल प्रेम जो मुझसे कहला रहा है वह जरूर कहूँगा।

भ० अवश्य कहिये। आपने जो कहा है, म उसका मनन करूँगा।

इस विषय पर एक चर्चा और हुई। फिलहाल उसे अन्तिम माना जा सकता है।[1]

गा० तो, मैने जो कहा था उस पर तुमने विचार किया?

भ० किया तो, पर स्वीकार करता हूँ कि कोई परिणाम नहीं निकला। बात ऐसी है कि दस बरसोसे मेरी विचारधारा दूसरी तरह चलती रही है। म जब इग्लडमें था तब भी मै लौटने पर सन्यास लेनेकी बात सोचता रहता था। और समय बीतनेके साथ मेरे वही विचार दृढ़ हुए ह।

गा० हा, सो तो जानता हूँ, तुम्हारी यह धारणा बहुत पुरानी है।

भ० जी हाँ, और अभी तक मुझे उसे बदलनेका कारण नहीं दिखा है। अगर मेरी बातमें उद्दण्डता लगे तो क्षमा करेगे।

गा० उद्दण्डताकी इसमे कोई बात नही है। अगर मनकी बात साफ-साफ कहना उद्दण्डता हो तो फिर वह मुझमे भरी पडी है। तुम अपना विचार खुलकर प्रकट कर रहे हो, मुझे तो इससे प्रसन्नता ही हुई है। कितु मै तुम्हे यही छोड दूगा। तुम पर अधिक दबाव डालनेकी मेरी इच्छा नही है।

[गुजरातीसे]
हरिजनबन्धु, २०-४-१९३५

१ यह अश **हरिजन**में प्रकाशित अग्रेजी विवरणसे लिया गया है।

६२९ पापका पोषण

'पापकी मजदूरी मत्यु है', यह बाइबिलका वाक्य है। अपना अस्पृश्यता रूपी पाप करते हुए, हम कमाईके रूपमे नित्य-प्रति आर्थिक मत्यु प्राप्त कर रहे है, इस बातका दृष्टा त राजपूतानेके एक सज्जनके पत्रमे मिलता है। उस पत्रका सार यह है

> **इधर हमारी तरफ जहा भी म देखता हूँ ढोरोकी हड्डियाँ रास्तो पर पडी दिखाई देती ह। किसे पडी है कि उ हे इकट्ठा करता फिरे? इससे गाँवोके इदगिदकी तमाम जगह उपेक्षित श्मशान सी दिखाई देती है। तिस पर कुत्ते परिस्थिति और खराब कर देते है। आपने 'हरिजन' में इस विषयपर कभी-कभी लिखा तो है, पर क्या आप हरिजनो एव ग्राम सेवकोके पथ प्रदश नाथ इस सम्बन्धमें कुछ ठोस सलाह नही देगे? अगर आप इन हड्डियोको किसी हड्डी पीसनेवाली मिलमें भेजनेकी सलाह देंगे तो वह तो व्यथ-सी बात होगी, क्योकि वहाँ तक भेजनेका खर्चा बहु तज्यादा पड जायेगा। फिर आपको इस धार्मिक कट्टरताका भी खयाल रखना होगा कि हड्डियो आदिकी बनी हुई चीजोको लोग इस्तेमाल नही करते।**

इस देशमे चीजोका जो अपव्यय हो रहा है, वह सचमुच भयानक है। अस्पृश्यता पिशाचिनीके कारण जो बर्बादी हुई और हो रही है, अगर कोई अथशास्त्री उसके आकडे निकालकर रखे तो वे सचमुच दिल दहलानेवाले होगे। अस्पृश्यताके पापका पोषण करनेमे हम जो लाखो करोडो रुपये स्वाहा कर रहे है, उससे भूखो मरनेवाले करोडो आदमियोको बडे आरामसे रोटी दे सकते है। यह कोई छोटी मोटी बर्बादी नही है। यह भारतके पाच करोड मनुष्योकी जान बूझकर मानसिक और नैतिक वद्धि नही होने देती साथ ही यह उनकी पर्याप्त आर्थिक हानि भी कर रही है। मगर इस प्रश्नका कोई इतने बडे रूपमे विचार करने बैठेगा तो वह चक्करमे पड जायेगा। काय-कर्त्ताओके लिए तो यह प्रश्न काफी सरल है, क्योकि उ हे तो लाखो करोडोकी सख्यामे न धनका हिसाब लगाने बठना है और न जनका ही।

धार्मिक भावनाओमे भी परिवतन करना ही होगा। भारत जैसे देशमे, जहाँ पशुओका भी जीवन पवित्र माना जाता है, हमे अपनी मौतसे मरे पशुओकी लाशके तमाम भागोका भोजनके अलावा अ य उपयोग उतना ही पुण्यकार्य समझना होगा। मेरा खयाल है कि हरिजन सेवकोने अब इस स्थितिको अनुभव कर लिया है। मेरा यह अनुमान अगर ठीक है, तो गाँवके रास्तो पर उ हे जो हड्डियाँ पडी दिखाई दे उन सबको वे जमा करके तबतक किसी जगह रखे रहे जबतक कि उ हे कोई दूसरा आदेश न मिले। मै किसी ऐसे आसान तरीकेकी तलाशमें हूँ जिससे कि हड्डियोको

पीसकर उनका बुरादा बनाया जा सके। मुझे ऐसा लगता है कि हड्डियाकी खाद बनाना ही उन्हे ठिकाने लगानेका सस्तेसे-सस्ता तरीका है। खादी-प्रतिष्ठानके सतीश बाबू आजकल इस प्रयोगमे लगे हुए है कि गावके लोगोके लिए ऐसा कौन सा बढिया तरीका हो सकता है जिससे कि वे अपने पशुओकी लाशके तमाम हिस्सोका सबसे अच्छा आर्थिक उपयोग कर सके। सतीश बाबू अपने अनुसन्धानोसे जिन नतीजो पर पहुँचे है, उन्हे 'हरिजन' के पाठकोके आगे रखनेका मेरा विचार है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २०-४-१९३५

६३० एक कार्यकारिणी उप-समिति

अधिकाश समितियो अथवा उप-समितियोका गठन कुछ मामलोकी छानबीन करनेके लिए किया जाता है। लेकिन मुझे एक ऐसी उप-समितिके बारेमे जानकारी हुई, जिसका गठन शीघ्र कार्यवाही करनेके लिए हुआ है। फैडरेशन आफ इन्टरनेशनल फैलोशिपके अवैतनिक जनरल सेक्रेटरी श्रीयुत ए० ए० पॉलने फैडरेशन द्वारा नियुक्त एक उप-समितिकी रिपोर्ट भेजी है, जिसका कार्य कर्नाटक क्षेत्रमे ग्रामीण ऋणकी समस्या को हल करना है। उस उप-समितिकी रिपोर्टसे मुझे निम्न मनोरजक तथ्य प्राप्त हुए है[1]

> **मनमाना ब्याज लेनेकी कुप्रथा मानो मौसम है, हर व्यक्ति उसकी चर्चा तो करता है, पर हस्तक्षेप नहीं करता। आठ माह पूर्व हमारी इन्टरनेशनल फैलोशिप सस्थाने दलित वर्गके ग्रामवासी भाइयोको इस कुप्रथाकी पीडासे निस्तार दिलानेके लिए कार्य करनेका दृढ निश्चय किया। कहनेका यह अर्थ नहीं कि यह विभीषिका गाँवोमें ही विशेष रूपसे है। परन्तु क्योकि ग्रामवासी अपना बचाव करनेमें असमर्थ होते है तथा उनसे लाभ उठानेवाला वर्ग अधिक सगठित होता है, इसलिए वे आसानीसे उसके शिकार हो जाते है। एक खास गाँवकी ओर हमारा ध्यान दिलाया गया था। वहा गैर-कानूनी तरीकेसे पैसा वसूल करनेवालोकी एक अच्छी खासी जमात ही थी। उनका मुखिया कुछ साल पहले वहाँ लगभग खाली हाथ आया था, और अब उसकी दोमजिला पक्की इमारत है। गाँवमें वही एक पक्की दोमजिला इमारत है। गाँवका करीब-करीब हर आदमी उसका कर्जदार है। उसकी मौजूदा ब्याज दर सालाना ७५ प्रतिशत तक है। चारो तरफ घूमकर कर्ज देनेवाले पठान तो ३०० प्रतिशत तक ब्याज लेकर लोगोको लूटते है।**

१ यहाँ केवल कुछ अंश ही दिये जा रहे हैं।

इस समस्याको सुलझानेके लिए स्वेच्छासे कार्य करनेकी पेशकश करनेवाले एक हिन्दू तथा एक मुसलमान वकीलकी एक समितिका निर्माण किया गया। अगला कदम यह उठाया गया कि उस गांवके मद्रिकके एक छात्रसे सभी कर्जदारोंकी, उनके कर्जोंके विवरण सहित, एक फेहरिस्त बनवाई गई। विवरणका अध्ययन करनेके बाद हमारी समितिके सदस्य गाँवमें गये और हरएक कर्जदारसे उसके कर्जके बारेमें सवालात किये। जिन लोगोंने निडर होकर यह प्रमाणित कर दिया कि उन्होंने कर्जकी मूल राशि चुकानेके अलावा काफी मात्रामें ब्याज भी दे दिया है, उनके मामलोंको लेकर हमारे वकील सदस्योंने अपनी ओरसे निःशुल्क कानूनी नोटिस जारी किये और साहूकारोंको यह सूचना दी कि अब कर्ज बाकी नहीं रहा है। उसी समयसे कर्जदार व्यक्तियोंने ब्याज आदि देना बन्द कर दिया। करीब पचास नोटिस जारी किये गये। बिना किसी प्रकारके नोटिस जारी किये दूसरे गाँवोंमें भी लोगोंने पैसा देना बन्द कर दिया। अत्यन्त सावधानीसे तयार की गई एक टिप्पणी पुलिस सब-इन्स्पेक्टरको तथा सूद वसूल करनेवाले व्यक्तियोंको चेतानेके विचारसे भेजना भी हमने जरूरी समझा। साथ ही फलोशिपकी वार्षिक रिपोर्ट तथा इस प्रकारकी ठगीका काम करनेवाले लोगोंके नामोंकी सूची भी उसके साथ लगा दी गई।

पिछले आठ महीनोंमें तकरीबन सौ कर्जदारोंको अपने कर्जसे छुटकारा मिल चुका है और इस तरह उन्हें अपने परिवारकी भलाईकी खातिर खर्च करनेके लिए हजारों रुपयोंकी बचत हुई है।

गैरकानूनी तौरसे धन वसूल करनेवाले इन सूदखोरोंने कानूनी नोटिस जारी करनेकी छः माहकी अवधितक तो कोई जवाब नहीं दिया और इस तरह उनका पक्ष कमजोर पड़ा। बादमें तीन या चार मुकदमे दायर किये गये हैं। लेकिन उनका पक्ष बिलकुल कमजोर है, क्योंकि क्रूर और अनीतिपूर्ण तरीकोंसे किये गये उनके इस व्यापारकी गवाहियाँ मौजूद हैं।

इस सिलसिलेकी सबसे ताजी घटना, जिसे इस प्रवृत्तिके प्रति लोगोंकी प्रारम्भिक उदासीनताको देखते हुए बहुत उत्साहवर्धक कहा जा सकता है, यह है कि एक वकील मित्रने, जिन्हें इसके कारगर होनेमें शक था, अब कुछ आदर्शवादी युवा वकीलोंके सहयोगसे एक 'लीगल एड सोसायटी' बनाई है। उनकी योजना यह है कि वे ऐसे वकीलोंको (जो साधारणतः दलाल द्वारा मुवक्किल पानेकी प्रतीक्षामें बार-रूममें पड़े सड़ते रहते हैं) आसपासके गाँवोंमें ले जायेंगे जहाँ वे कई प्रकारके प्रचार साधनोंकी सहायतासे ग्रामवासियोंमें जागृति उत्पन्न करेंगे, खास तौरसे कर्जदारोंको अपने कानूनी-अधिकारोंके प्रति सचेत करेंगे और इस प्रकार उन्हें उचित और सही कानूनी मदद पहुँचायेंगे। अतिरिक्त

सौभाग्य यह है कि यह कायक्रम गाधीजीके हाल ही के गाँवोके पुर्नानर्माणके आह्वानके अनुकूल है। हम मानते ह कि विशेषाधिकार-प्राप्त वर्गोंको — हमारी 'इ टरनेशनल फलोशिप' में जो लोग ह, ऐसे लोगोको पीडित वगकी इन समस्याओके प्रति जागरूक रहना होगा। उनकी यह जागरूकता ही वह कीमत है जिसे देकर इन पीडितोकी, जिनसे नाजायज ढगसे पसा वसूल किया जाता है, स्वतन्त्रताकी रक्षा की जा सकती है।

यह एक ऐसा उदाहरण है जिसका अनुकरण किया जाना चाहिए। इसमे किसी प्रकारकी पूजी नही लगी। स्पष्ट ही आवश्यकता सिफ इस बातकी है कि ग्रामवासियोकी हिम्मत बधाई जाये ओर उनके लेनदारोसे (जैसा कि यहा हुआ) कहा जाये कि उनपर जितना कज था, अधिकाश लोग उससे भी अधिक अदा कर चुके ह।

[अग्रेजीसे]
हरिजन, २०-४ १९३५

६३१ स्वावलम्बी खादी

मैसूर-राज्य सदास ही इस बातको मान्य करता आ रहा है कि किसानके लिए हाथकी कताई एक सहायक धन्धा है। मैसूर इस उद्योगके ऐसे कई केन्द्र चला रहा है। इन केन्द्रोके व्यवस्थापक अपनेको अखिल भारतीय चर्खा-सघके सम्पकमे रखते है जिसस सघने खादीके क्षेत्रमे जो भी नवीनतम शोध तथा सुधार किये हो, वे बराबर उनके अनुसार अपने अपने केन्द्रमे काय कर सके। चर्खा-सघके मन्त्रीके नाम लिखे गये बडनवाल केन्द्रके इस पत्रको पाठक रसपूवक पढेगे, ऐसी आशा है

आपको यह सूचित करते हुए मुझे प्रसन्नता होती है कि मसूर सरकारने हमें इस नीतिपर चलनेकी स्वीकृति दे दी है कि जिस स्थानपर खादी तैयार हो, वहीं उसे बेचा जाये और गाँवोमें उसे लोकप्रिय बनाया जाये। अखिल भारतीय चर्खा-सघ द्वारा जारी किये गये परिवतनोके साथ-साथ चलनेकी नई नीति अपनानेका ही यह परिणाम है। इस इलाकेके असली बुनकरो और कतयोको खादी लागत दाम पर दी जाती है। १९३४ के नवम्बर माससे यह काम शुरू किया गया है। अब हमने करीब एक हजार कतैयो व कत्तिनोको २,०००) से ऊपर की खादी बेची है। हम उन्हे कपडा दे देते है और उनका सूत खरीदते समय उनसे हर हफ्ते किस्तोमें दाम वसूल कर लेते ह। अप्रलसे हम फिर बिक्रीका काम जोरोसे चलाना चाहते ह। हमारी मशा यह है कि इस समय फिर २,०००) की खादी, जिसमें खासकर गाँवकी साडियाँ होगी, बेची जायें। हम देख रहे है कि हमारा यह कायक्रम यहाँ बिलकुल ठीक तरहसे चल रहा है।

इसी तरहकी उत्साहवर्धक खबरें अनेक स्थानोंसे आ रही हैं। मैं कार्यकर्त्ताओंको यह सलाह दूंगा कि अब चूंकि खादीका सच्चा सन्देश उनकी समझमें आ गया है इसलिए उन्हें खादीके सम्बन्धके तमाम काम एक साथ ही हाथमें ले लेने चाहिए। कपासकी पैदावारसे श्रीगणेश किया जाये। कपासकी खेतीकी स्थितिका खूब अच्छा ज्ञान होना चाहिए। गांवके उपयोगके लिए तो करीब करीब सभी जगह कपास पैदा हो सकती है। बढ़ियासे बढ़िया जमीनपर तो हमें तभी अपना ध्यान एकाग्र करना चाहिए जब सारी दुनियाको कपास पहुँचानेकी हमारी आकांक्षा हो। पर जहां केवल गांवकी ही जरूरत पूरी करनेकी आकांक्षा है वहां तो इससे उलटी ही बात है। खेतके एक जरा से कोनेमें ही गांवके किसानके लिए आसानीसे काफी कपास पैदा हो सकती है, अथवा गांवके सब लोग अपने अपने उपयोगके लिए मिल जुलकर कपास पैदा कर सकते हैं। अगर यह किया जाये तो आप देखेंगे कि बाहरका कोई भी कपड़ा न तो दाममें इस स्थानीय खादीका मुकाबला कर सकता है और न टिकाऊपन में ही। इस तरीकेसे शक्तिका सबसे अधिक संरक्षण होता है। ऐसी आदर्श अवस्थाओं में ओटाई, धुनाई और बुनाईकी क्रिया आनन्ददायी और सरल हो जाती है। चर्खोंमें भी मरम्मतकी आवश्यकता रहती है। तकुआ जब यथेष्ट चक्कर नहीं लगाता, तब कतयेकी शक्तिका बहुत अपव्यय होता है। मेरा विचार है कि मैं खासकर इसी विषयके एक लेखमें इसकी चर्चा करूँ।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २०-४-१९३५

६३२ भाषण हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौरमें[1]

२० अप्रैल, १९३५

भाइयो और बहनो,

ईश्वरकी गति गहन है। अक्टूबर माससे मैं इस बोझको टाल रहा था। यह पद पूजनीय मालवीयजी महाराजका था। पर उनका स्वास्थ्य बिगड़नेके कारण और उनको विदेश जाना था इसलिए उन्होंने त्याग पत्र भेजा। दूसरा सभापति चुननेमें आपको कुछ मुसीबत थी। मेरा नाम तो स्वागत समितिके सामने था ही। मुझको जब स्वागत समितिका संकट बताया गया तो मैं विवश हो गया और पद ग्रहण करना स्वीकार कर लिया।

स्वीकृति देनेका मेरे लिए अन्य कारण तो था ही। गत वर्ष जब मेरे पास इस अधिवेशनके सभापतित्वका प्रस्ताव आया तब मैंने दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचारके लिए दो लाख रुपये माँगे। भला आजकल दो लाख इस कामके लिए कौन दे? 'हाँ, हम प्रयत्न करेंगे। आपके पद स्वीकार करनेसे सफल होंगे'—समितिकी ऐसी

१ सभापतिकी हैसियतसे यह गांधीजीका लिखित भाषण था, जिसे उन्होंने पढ़ा नहीं था।

बातोमे फँस जाऊँ, ऐसा भोला मै कब था? मैने तो दो लाखकी गारटी माँगी। मैने समझा कि इसपर मित्रोने मुझे छोड दिया।

लेकिन ईश्वरको दूसरी ही बात करनी थी। उसे मेरी मार्फत हिन्दी-प्रचारकी कुछ और सेवा लेनी थी। मालवीयजी महाराज न आ सके। उनको ईश्वर शतायु करे। मैने आपके अधिवेशनाकी रिपोर्ट कुछ अशोमे देखी है। सबसे पहला अधिवेशन सन १९१० मे हुआ था। उसके सभापति मालवीयजी महाराज ही थे। उनसे बढकर हिन्दी प्रेमी भारतवर्षमे हमे कही नही मिलेगे। कैसा अच्छा होता यदि वे आज भी इस पदपर होते। उनका हिन्दी-प्रचार क्षेत्र भारतव्यापी है, उनका हिन्दी ज्ञान उत्कृष्ट है।

मेरा क्षेत्र बहुत मर्यादित है। मेरा हिन्दी भाषाका ज्ञान नही के बराबर है। आपकी प्रथमा परीक्षामे मै उत्तीर्ण नही हो सकता हूँ। लेकिन हिन्दी भाषाका मेरा प्रेम किसीसे कम नही ठहर सकता है। मेरा कार्यक्षेत्र दक्षिणमे हिन्दी-प्रचारका है। सन १९१८ मे जब आपका अधिवेशन यहा हुआ था, तबसे दक्षिणमे हिन्दी-प्रचारके कार्यका आरम्भ हुआ है। वह कार्य तबसे उत्तरोत्तर बढ ही रहा है। धनाभावके कारण वह रुकना नही चाहिए। प० हरिहर शर्मा धनके लिए मुझे नित्य सताते है। उनसे मै कहता हूँ कि 'अब मुझे मत सताओ। दक्षिणसे ही आपको पैसे मिलने चाहिए। इतना भी करनेकी शक्ति यदि आपमे नही है तो आप अपना प्रयत्न निष्फल समझिए।' कहनेको तो मै यह कह देता हूँ, पर इतनी बडी सस्थाको २१ वर्षतक नाबालिग रहनेका भी तो हक होना चाहिए। इसलिए जब मौका आया तब मैने दो लाखकी माग की। इतना द्रव्य अधिक भी नही है। लेकिन जो सज्जन मेरे पास आये उन्होने रुईका दाम एकदम गिर जानेसे दो लाखके लिए अपनी असमर्थता प्रकट की। बात भी ठीक थी। जमनालालजीने भी उन भाइयोका पक्ष लिया। मैने भी हार मान ली और एक लाखकी शर्त कबूल कर ली। अब किसी-न-किसी तरहसे, पर सचाईके साथ, आपको मुझे एक लाख देना है।

आप पूछ सकते है कि केवल दक्षिण ही मे हिन्दी प्रचारके लिये क्यो? मेरा उत्तर यह है कि दक्षिण भारत कोई छोटा प्रदेश नही है। वह तो एक महाद्वीप सा है। वहा चार प्रान्त और चार भाषाएँ है—तमिल, तेलगु, मलयालम और कन्नड। आबादी करीब सवा सात करोड है। इतने लोगोमे यदि हम हिन्दी-प्रचारकी नीव मजबूत कर सके तो अन्य प्रान्तोमे बहुत ही सुभीता हो जायेगा।

यद्यपि मै इन भाषाओको सस्कृतकी पुत्रिया मानता हूँ, तो भी ये हिन्दी, उडिया, बगला, आसामी, पजाबी, सिन्धी, मराठी, गुजरातीसे भिन्न है। इनका व्याकरण हिंदीसे बिलकुल भिन्न है। इनको सस्कृतकी पुत्रियाँ कहनेसे मेरा अभिप्राय इतना ही है कि इन सबमे सस्कृत शब्द काफी है, और जब सकट आ पडता है तब ये सस्कृत माताको पुकारती है और उसका नवीन शब्द रूपी दूध पीती है। प्राचीन कालमे भले ही ये स्वतन्त्र भाषाएँ रही हो, पर अब तो ये सस्कृतमेसे शब्द लेकर अपना गौरव बढा रही है। इसके अतिरिक्त और भी तो कई कारण इनको सस्कृतकी पुत्रियाँ कहनेके है, पर उन्हे इस समय जाने दीजिए।

जो भी हो, इतनी बात तो निर्विवाद है कि दक्षिणमे हिंदी-प्रचार बडा ही कठिन काय है। तथापि अठारह वर्षोंसे हम व्यवस्थित रूपमे वहाँ जो काय करते आये है उसके फलस्वरूप इन वर्षोंमे छ लाख दक्षिणवासियोने हिंदीमे प्रवेश किया, ४२,००० परीक्षामे बैठे, ३,२८० स्थानामे शिक्षा दी गई, ६०० शिक्षक तैयार हुए और आज ४५० स्थानोमे काय हो रहा है। सन १९३१ से स्नातक परीक्षाका भी आरम्भ हुआ, और आज स्नातकाकी सख्या ३०० है। वहाँ हिन्दीकी ७० किताबे तैयार हुई और मद्रासमे उनकी आठ लाख प्रतिया छपी। सत्रह वर्ष पूव दक्षिणके एक भी हाईस्कूलमे हिंदीकी पढाई नही होती थी पर आज ७० हाईस्कूलोमे हिंदी पढाई जाती है। सब मिलाकर वहा ७० कायकर्त्ता काम कर रहे है और आजतक इस प्रयासमे चार लाख रुपया खच हुआ है, जिसमे से आधेसे कुछ कम रुपये दक्षिणमे ही मिले है। यहा एक और बात कह देना जरूरी है। काकासाहब अपने निरीक्षणके बाद कहते है कि दक्षिणमे बहनोने हिन्दी-प्रचारके लिए बहुत काम किया है। वे इसकी महिमा समझ गई है। वे यहा तक हिस्सा ले रही है कि कुछ पुरुषोको यह फिक्र लग रही है कि यदि स्त्रिया इस तरह उद्यमी बनेगी तो घर कौन सँभालेगा? क्या इतनी प्रगति सतोषजनक नही मानी जा सकती? क्या ऐसे वक्षको हमे और भी न बढाना चाहिए? आज जब कि मुझे यह स्थान दिया गया है तब भी मै इस सस्थाको चिरस्थायी बनानेका यत्न न करूँ, तो मेरे जैसा मूख कौन माना जा सकता है? मुझको यदि दुबारा यह पद लेनेका कुछ भी अधिकार है ता सिफ मेरे दक्षिण हिंदी प्रचारके कायके कारण ही। भले ही उस कायमे मैने कोई पद लेकर काम न किया हो, पर हर हालतमें उस वक्षको सीचनेमे तो मैने काफी हिस्सा लिया ही है। उसके सरक्षक श्री जमनालाल बजाज, श्री राजगोपालाचारी, श्री रामनाथ गोयनका, श्री पट्टाभि सीतारमैया और श्री हरिहर शर्मा है। इसका कौडी-कौडीका हिसाब रखा गया है, जो समय-समय पर प्रकाशित होता रहता है।

मैने आपको इस सस्थाका उज्ज्वल पक्ष ही दिखाया है। इसका यह मतलब नही है कि उसका काला पक्ष है ही नही।

जड चेतन गुनदोषमय, बिस्व कीन्ह करतार।
सत हस गुण गहहिं पय, परहरि वारि विकार।

निष्फलता भी काफी हुई है। सब कायकर्त्ता अच्छे ही निकले, ऐसा भी नही कहा जा सकता। यदि सब काय आरम्भसे अततक अच्छा ही रहता तो अवश्य और भी सुन्दर परिणाम आ सकता था। पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि यदि अन्य प्रातोके हिंदी-प्रचारमे इसकी तुलना की जाये तो दक्षिण भारतमें किया गया काम अद्वितीय ठहरेगा।

रही एक लाखके व्ययकी बात। क्या यह व्यय सम्मेलनके प्रयागस्थ केंद्रसे होना आवश्यक नही है? यदि ऐसा न किया गया तो क्या इससे सम्मेलनका अपमान नही होगा? —इन प्रश्नोके उत्तरमे मेरा नम्र निवेदन यह है कि इसमे अपमानकी कोई बात नही है। सम्मेलन न होता तो दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा भी न होती।

सन् १९१८ में इसी शहरमे इसी सम्मेलनकी छायामे इस सस्थाका उद्भव हुआ। बादके इतिहासमे जाना अनावश्यक है। अन्तमे इस सस्थाको सम्मेलनने स्वतन्त्र कर दिया, या यो कहिये कि 'डोमीनियन स्टेटस' दे दिया। इससे सम्मेलनका गौरव बढा ही है कम नही हुआ। यदि सम्मेलनसे सम्बधित सब सस्थाएँ स्वावलम्बी बन जाये तो इससे ज्यादा हषकी बात सम्मेलनके लिए कौन सी हो सकती है? आपसे जो एक लाख रुपयेकी भिक्षा मागी जा रही है वह इस स्वतत्र सस्थाके लिए है। उसको भी झडा तो सम्मेलनका ही फहराना है।

पर तब यह प्रश्न उठ सकता है कि क्या अन्य प्रातोकी बात छोड दी जाये? क्या अन्य प्रातोमे हि्दी प्रचारकी आवश्यकता नही है? अवश्य है। मुझे दक्षिणका पक्षपात नही है, और न अय प्रातोसे द्वेष। मैने अय प्रातोके लिए भी काफी प्रयत्न किया है लेकिन कायकर्त्ताओके अभावके कारण वहा इतनी क्या थोडी भी सफलता नही मिल सकी। बेचारे बाबा राघवदास उत्कल, बगाल और आसामसे हि्दी प्रचारके लिए अथक प्रयत्न कर रहे है। कुछ सफलता भी मिली है, लेकिन उसे नही के बराबर ही मानना चाहिए। जो-कुछ भी सहायता मै उनको दिला सकता था वह दिलानेकी चेष्टा भी मैने की है। बाबाजीकी माफ्त आसाममे गोहाटी, जोर हट शिवसागर और नौगावमे प्रयत्न हो रहा है। वहा १६० विद्यार्थी पढ रहे है। दो छात्रो और दो छात्राओको छात्रवत्ति देकर काशी विद्यापीठ और प्रयाग महिला विद्यापीठमे पढाया जा रहा है। एक आसामी भाई बरहज (गोरखपुर)मे हि्दी पढ रहे है और वहावालाको आसामी पढा रहे है। प्रतिष्ठित आसामी इस प्रचार कायमे कम रस लेते है। जो मदद बाबाजीको मिली भी है वह एक ही वषके लिए है।

उत्कलमे कटक, पुरी और बरहमपुरमे कुछ प्रयत्न हो रहा है। उत्कलके बारेमें एक बडी आशाजनक बात यह है कि श्री गोपबधु चौधरी और उनकी धमपत्नी रमादेवी हि्दी-प्रचारमे बहुत दिलचस्पी लेते है। अपने परिवारको भी उहोने हिन्दीका काफी ज्ञान प्राप्त करा दिया है। वे सब आजकल एक देहातमे रहते हुए ऐसी ही क्रियात्मक सेवा कर रहे है। ऐसे ही कुछ दूसरे भी त्यागी कार्यकर्ता उत्कलमे ह। इसलिए उत्कलमे हि्दी-प्रचारकी आशा अवश्य रखी जा सकती है।

बगालमे तो एक समिति भी बन गई थी, सब-कुछ हुआ था। हि्दीसे प्रेम रखनेवाले बगाली भी काफी है। रामान्द बाबू, श्री बनारसीदास चतुर्वेदीकी मददसे 'विशाल भारत' निकाल रहे है। यह कोई छोटी बात नही है। कलकत्तेमे हिन्दी-प्रेमी मारवाडी सज्जन भी कम नही है। तो भी बगालमे जितना-कुछ हो रहा है वह बहुत ही कम समझा जाना चाहिए।

पजाबकी बात मै छोड देता हूँ, क्योकि पजाबमें उदू तो सब समझते है। वहाँ तो केवल लिपिकी बात रह जाती है। इस प्रश्नपर विचार करनेके लिए काका साहबकी अध्यक्षतामें लिपि सम्मेलन हो रहा है, इसलिए मै इस बारेमे कुछ नही कहना चाहता। अब रहे सि्ध, महाराष्ट्र और गुजरात। इन तीनो प्रातोमे जो-कुछ हो रहा है वह शायद ही उल्लेखयोग्य हो। पर मुझे उम्मीद है कि इसी सम्मेलनमे हम वहाँके लिए भी कुछ न-कुछ रचनात्मक काय करनेका निश्चय करेगे।

सारी मुश्किल यह है कि सम्मेलनके उद्देश्योंमें तो अन्य प्रान्तोंमें हिन्दी प्रचार खासा स्थान रखता है लेकिन मेरा यह कहना अनुचित न होगा कि सम्मेलनने इस प्रचार कार्य पर उतना जोर नहीं दिया है जितना कि परीक्षाओं पर। मेरा निवेदन है कि इस सम्मेलनमें हम इस बारेमें ध्यानपूर्वक विचार करके इस सम्बन्धमें कोई स्पष्ट नीति ग्रहण करें।

मेरी रायमें अन्य प्रान्तोंमें हिन्दी प्रचार सम्मेलनका मुख्य कार्य बनाना चाहिए। यदि हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनाना है तो प्रचार कार्य सर्वव्यापी और सुसंगठित होना ही चाहिए। हमारे यहां शिक्षकोंका अभाव है। सम्मेलनके केन्द्रमें हिन्दी शिक्षकोंके लिए एक प्रशिक्षण विद्यालय होना चाहिए जिसमें एक ओर तो हिन्दी-प्रान्तवासी शिक्षक तैयार किये जायें और उनको जिस प्रान्तके लिए वे तैयार होना चाहें उस प्रान्तकी भाषा सिखाई जाये, और दूसरी ओर अन्य प्रान्तोंके भी छात्रोंको भरती करके उन्हें हिन्दी शिक्षा दी जाये। ऐसा प्रयास दक्षिणके लिए तो किया भी गया था, जिसके फलस्वरूप हमको पं० हरिहर शर्मा और हृषीकेश मिले।

आप जानते हैं कि मेरी सलाहसे काकासाहब कालेलकर दक्षिणमें प्रचार-कार्यका निरीक्षण करने और पं० हरिहर शर्माको मदद देनेके लिए गये थे। उन्होंने तमिलनाड, मलाबार, त्रावणकोर, मैसूर, आन्ध्र और उत्कल तक भ्रमण किया, हिन्दी-प्रेमियोंसे मिले और कुछ चन्दा भी इकट्ठा किया। इस भ्रमणमें उनका अनुभव यह हुआ कि कुछ लोग ऐसा समझते हैं कि हम प्रान्तीय भाषाओंको नष्ट करके हिन्दीको सारे भारतवर्षकी एक-मात्र भाषा बनाना चाहते हैं। इस गलतफहमीसे भ्रमित होकर वे हमारे प्रचारका विरोध भी करते हैं। मेरा खयाल है कि हमें इस बारेमें अपनी नीति स्पष्ट करके ऐसी गलतफहमियां दूर करनी चाहिए। मैं हमेशासे यह मानता रहा हूँ कि हम किसी हालतमें भी प्रान्तीय भाषाओंको मिटाना नहीं चाहते। हमारा मतलब तो सिर्फ यह है कि विभिन्न प्रान्तोंके पारस्परिक सम्बन्धके लिए हम हिन्दी भाषा सीखें। ऐसा कहनेसे हिन्दीके प्रति हमारा कोई पक्षपात नहीं प्रकट होता। हिन्दीको हम राष्ट्रभाषा मानते हैं। वह राष्ट्रीय होनेके लायक है। वही भाषा राष्ट्रीय बन सकती है जिसे अधिकसंख्यक लोग जानते-बोलते हों और जो सीखनेमें सुगम हो। ऐसी भाषा हिन्दी ही है कोई दूसरी नहीं। यह बात यह सम्मेलन सन् १९१० से बता रहा है और इसका कोई वजन देने लायक विरोध आजतक सुननेमें नहीं आया है। अन्य प्रान्तोंने भी इस बातको स्वीकार कर ही लिया है।

काकासाहबने कुछ लोगोंमें दूसरी गलतफहमी यह देखी कि वे समझते हैं कि हम हिन्दीको अंग्रेजी भाषाका स्थान देना चाहते हैं। कुछ तो यहांतक समझते हैं कि अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा बन सकती है, और बन भी गई है।

यदि हिन्दी अंग्रेजीका स्थान ले तो कमसे कम मुझे तो अच्छा ही लगेगा। लेकिन अंग्रेजी भाषाके महत्वको हम अच्छी तरह जानते हैं। आधुनिक ज्ञानकी प्राप्ति, आधुनिक साहित्यके अध्ययन, सारे जगतके परिचय, अर्थ-प्राप्ति, राज्याधिकारियोंके साथ सम्पर्क और ऐसे ही अन्य कार्योंके लिए अंग्रेजी ज्ञानकी हमें आवश्यकता है।

इच्छा न रहते हुए भी हमको अग्रेजी पढनी होगी। यही हो भी रहा है। अग्रेजी अ तर्राष्ट्रीय भाषा है।

लेकिन अग्रेजी राष्ट्रभाषा कभी नही बन सकती। आज इसका साम्राज्य सा जरूर दिखाई देता है। इससे बचनेका काफी प्रयत्न करते हुए भी, हमारे राप्टीय कार्योमे अग्रेजीने बहुत बडा स्थान ले रखा है। लेकिन इससे हमे इस भ्रममे कभी न पडना चाहिए कि अग्रेजी राष्ट्रभाषा बन रही है। इसकी परीक्षा प्रत्येक प्रान्तमे हम आसानीसे कर सकते है। बगाल अथवा दक्षिण भारतको ही लीजिये, जहा कि अग्रेजीका प्रभाव सबसे अधिक है। वहा यदि जनताकी माफत हम कुछ भी काम करना चाहते है तो वह आज हि दी द्वारा भले ही न कर सके, पर अग्रेजी द्वारा तो नही ही कर सकते। हिन्दीके दो चार शब्दोसे हम अपना भाव कुछ तो प्रकट कर ही देगे। पर अग्रेजीस तो इतना भी नही कर सकते। हा, यह अवश्य माना जा सकता है कि अबतक हमारे यहा एक भी राप्टभाषा नही बन पाइ है। अग्रेजी राजभाषा है। ऐसा होना स्वाभाविक भी है। अग्रेजीका इससे आगे बढना म असम्भव समझता हूँ, चाहे कितना भी प्रयत्न क्यो न किया जाये। हि दुस्तानका अगर सचमुच एक राष्ट्र बनाना है तो—चाहे कोई माने या न माने—राष्ट्रभाषा तो हि दी ही बन सकती है, क्योकि जो स्थान हि दीको प्राप्त है वह किसी दूसरी भाषाको कभी नही मिल सकता। हि दू-मुसलमान दोनोको मिलाकर, करीब बाईस करोड मनुष्योकी भाषा—थोडे बहुत फेरफारसे—हि दी यानी हि दुस्तानी ही है। इसलिए उचित और सम्भव तो यही है कि प्रत्येक प्रा तमे उस प्रा तकी भाषा, सारे देशके पारस्परिक व्यवहारके लिए हि दी, और अन्तर्राष्ट्रीय उपयोगके लिए अग्रेजीका व्यवहार हो। हि दी बोलनेवालोकी सख्या करोडोकी रहेगी, कि तु अग्रेजी बोलनेवालाकी सख्या कुछ लाखसे आगे कभी नही बढ सकेगी। इसका प्रयत्न भी करना जनताके साथ अ याय करना होगा।

मैने अभी 'हिन्दी-हि दुस्तानी' शब्दका प्रयोग किया है। सन १९१८ मे जब आपने मुझको यही पद दिया था तब भी मैने यही कहा था हिन्दी उस भाषाका नाम है जिसे हि दू और मुसलमान कुदरती तौरपर बगैर प्रयत्नके बोलते है। हिन्दुस्तानी और उदूमें कोई फक नही है। देवनागरी लिपिमे लिखी जानेपर वह हिन्दी और अरबीमे लिखी जानेपर उर्दू कही जाती है। जो लेखक या व्याख्यानदाता चुन-चुन कर सस्कृत या अरबी-फारसीके शब्दोका ही प्रयोग करता है वह देशका अहित करता है। हमारी राष्ट्रभाषामें वे सब प्रकारके शब्द आने चाहिए जो जनतामे प्रचलित हो गये है। श्री घनश्यामदास बिडलाने ठीक ही कहा है कि राष्ट्रभाषा-वादियोको चाहिए कि विभिन्न प्रान्तीय भाषाओमें जो शब्द रूढ बन गये है और जो राष्ट्रभाषामे आनेके लायक है उन्हे वे ले ले। हर व्यापक भाषामे यह ग्राहक शक्ति रहती ही है। इसीलिए तो वह व्यापक बनती है। अग्रेजीने क्या नही लिया है? लैटिन और ग्रीकमे से कितने ही मुहावरे अग्रेजीमे लिये गये है। आधुनिक भाषाओको भी वे लोग नही छोडते। इस बारेमे उनकी निष्पक्षता सराहनीय है। हिन्दुस्तानी शब्द

अंग्रेजीमें काफी आ गये हैं। कुछ अफ्रीकामें भी लिये गये हैं। इसमें उनका 'फ्री ट्रेड' कायम ही है। पर मेरे यह सब कहनेका मतलब यह नही है कि बगैर अवसरके भी हम दूसरी भाषाओके शब्द ले, जैसा कि आजकल अंग्रेजी पढे लिखे युवक किया करते है। इस व्यापारमे विवेक-दृष्टि तो रखनी ही होगी। हम कंगाल नही है, पर कंजूस भी नही बनेंगे। कुर्सीको खुशीसे कुर्सी कहेगे, उसके लिए 'चतुष्पाद पीठ' शब्दका प्रयोग नही करेंगे।

इस मौकेपर अपने दुखकी भी कुछ कहानी कह दू। हिंदी भाषा राष्ट्रभाषा बने या न बने, मै उसे छोड नही सकता। तुलसीदासका पुजारी होनेके कारण हिंदी पर मेरा मोह रहेगा ही। लेकिन हिंदी बोलनेवालोमे रवीन्द्रनाथ कहा है? प्रफुल्लचन्द्र राय कहा है? जगदीश बोस कहा है? ऐसे और भी नाम मै बता सकता हूँ। मै जानता हूँ कि मेरी अथवा मेरे जैसे हजारोकी इच्छा-मात्रसे ऐसे व्यक्ति थोडे ही पैदा होनेवाले है। लेकिन जिस भाषाको राष्ट्रभाषा बनना है उसमें ऐसे महान व्यक्तियोके होनेकी आशा रखी ही जायेगी।

वर्धामे हमारे यहा एक कन्या-आश्रम है। वहाँ सम्मेलनकी परीक्षाके लिए कई लडकिया तैयार हो रही है। शिक्षक-वर्ग और लडकिया भी शिकायत करती है कि जो पाठ्य-पुस्तके नियत की गई है उनमे से सब पढने लायक नही है। शिकायतके लायक पुस्तके शृंगार-रससे भरी है। हिंदीमे शृंगार साहित्य काफी है। इस ओर कुछ वर्ष पूर्व श्री बनारसीदास चतुर्वेदीने मेरा ध्यान खीचा था। जिस भाषाको हम राष्ट्रभाषा बनाना चाहते है उसका साहित्य स्वच्छ, तेजस्वी और उच्चगामी होना चाहिए। हिंदी भाषामे आजकल गन्दे साहित्यका काफी प्रचार हो रहा है। पत्र-पत्रिकाओके सम्पादक इस बारेमे असावधान रहते है अथवा गन्दगीको बढावा देते है। मेरी रायमे सम्मेलनको इस बारेमे उदासीन न रहना चाहिए। सम्मेलनकी तरफसे अच्छे लेखकोको प्रोत्साहन मिलना चाहिए। लोगोको सम्मेलनकी तरफसे पुस्तकोके चुनावमे भी कुछ सहायता मिलनी चाहिए। इस कार्यमे कठिनाई अवश्य है, लेकिन कठिनाईसे हम थोडे ही भाग सकते है।

परीक्षाओकी पाठ्य-पुस्तकोमे से एक पुस्तकके बारेमें एक मुसलमानकी भी, जो देवनागरी लिपि अच्छी तरह जानते है, शिकायत है। उसमे मुगल बादशाहके लिए भली-बुरी बाते है। वे सब ऐतिहासिक भी नही है। मेरा नम्र निवेदन है कि पाठ्य-पुस्तकोका चुनाव सूक्ष्म विवेकके साथ होना चाहिए और उसमे राष्ट्रीय दृष्टि रहनी चाहिए, और पाठ्यक्रम भी आधुनिक आवश्यकताओको खयालमे रखकर निश्चित करना चाहिए। मै जानता हूँ कि मेरा यह सब कहना मेरे क्षेत्रके बाहर है। लेकिन मेरे पास जो शिकायतें आई है उन्हे आपके सामने रखना मैने अपना धर्म समझा।

वीणा, श्रद्धांजलि अंक, अप्रैल-मई, १९६९ से

६३३ भाषण : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौरमे[१]

२० अप्रैल, १९३५

श्रीमान् महाराजा साहब, महारानी साहिबा, स्वागत-समितिके अध्यक्ष, भाइयो और बहनो,

मै आपकी तरफसे और अपनी तरफसे भी इस उद्घाटनके लिए महाराजा साहबको धन्यवाद देता हूँ और आपका आभार मानता हूँ। मै अपना सौभाग्य मानता हू कि जब मै पिछली बार इन्दौरमे यही सभापतिका स्थान ग्रहण करनेके लिए आया था, तब आप युवराज थे। तब उन पदवीसे आपने उस सम्मेलनका उद्घाटन किया था और अब आप महाराज है और इस हैसियतस आपने सम्मेलनका उद्घाटन किया है। उनका व्याख्यान आप लोगोने भी सुना है और मैने भी बहुत ध्यानसे सुना है। मै उनके लिए कुछ दे सकता हूँ तो धन्यवाद दे सकता हूँ। लेकिन महाराजा साहबने हिन्दी भाषाके लिए जो भाव प्रदर्शित किये है यदि उनको सारे भारतवर्षमे अमलमे लाना है तो उन जैसे महाराजाओको भी कुछ असली काम करना होगा। स्वागताध्यक्षने अपने भाषणमे यह याद दिला दिया है कि आठवा अधिवेशन जब इन्दौरमे हुआ था तो आपने दस हजारकी रकम हिन्दी-प्रचारके लिए दी थी। और इसी तरहसे अब भी मै उम्मीद करता हूँ कि स्वागत समितिकी ओरसे जो प्रार्थना की गई थी उसको पूर्ण करने लिए पूरी सहायता मिलेगी और मै तो इस बातके लिए अपना सद्भाग्य समझता हूँ कि उस समय आपने युवराजकी हैसियतसे मदद की थी तो इस समय महाराजाकी हैसियतसे मदद करेगे। हमारे करोडपति सेठ हुकमचन्दजी भी यही मौजूद है। आपने प्रातःकाल मुझे हार पहनाया था। यद्यपि वह हार तो कच्चे सूतका था, परन्तु उसकी कीमत पहनानेवालेकी हैसियतसे हो जाती है। रायबहादुर डा० सरजूप्रसादजी भी यही मौजूद है, वे बीमार ह। इसके लिए जैसा आप लोगोको दुःख है, वैसा ही मुझे भी दुःख है। परन्तु उनका हिन्दी भाषा अथवा सम्मेलनके प्रति प्रेम कम है, ऐसी तो कोई बात नही है। मुझे पूर्णतया आशा है कि जो काम करना है वह सफल हो जायेगा। यह होते हुए भी हिन्दी-ससारमे कुछ हलचल मच गई है। मुझे इस बातका पता वर्धामे चल गया था और यहाँ आनेके बाद मैने और कुछ अधिक समझ लिया है। यह हलचल कैसे मच गई, इस बातका पता तो अभीतक नही है। दक्षिण भारतमें जो हिन्दीका प्रचार हुआ है, उसका सम्बन्ध हिन्दी-साहित्य सम्मेलनसे है ही नही, ऐसी तो कोई बात है नही, क्योकि

१ गाधीजीने अपने लिखित भाषणके अतिरिक्त सम्मेलनके सभापतिकी हैसियतसे यह भाषण दिया था, देखिए पिछला शीर्षक।

प्रचार हिदी साहित्य-सम्मेलनका अविभाज्य अग है। उस प्रचारकी माता या पिता कहो तो वह साहित्य सम्मेलन है। यदि ऐसा माना जाए तो अब दक्षिण भारतमे जो ६,००,००० आदमी हिदी बोल या लिख सकते है, यह नामुमकिन बात है कि इसके लिए जो धन्यवाद है, वह साहित्य-सम्मेलनको न मिले। इसके लिए मुझको धन्यवाद नही दिया जा सकता, क्याकि मैने जो कुछ काम किया था, वह इसके सभापतिकी हैसियतसे ही किया था। इसमे मेरा व्यक्तित्व कुछ नही है। मै तो इतना कह सकता हूँ कि वह हिदी प्रचार इस सम्मेलनका अविभाज्य अग है। यह हिदी-साहित्य सम्मेलन हिदी भाषाका प्रचार न करके केवल साहित्यकी वृद्धि करे तो यह भाषा राष्ट्रभाषा कैसे बन सकती है? हा, साहित्यकी वृद्धि करना हमारा परम कत्तव्य है, किन्तु साहित्यकी वद्धिसे यह भाषा राष्ट्रभाषा नही बन सकती, क्योकि साहित्य तो बगालमे भी इतना है कि उसके बराबर किसी दूसरी भाषामे नही है। साहित्यमे दूसरा नम्बर मराठी रखती है। हिदीको तो शायद तीसरा या चौथा नम्बर मिल सकता है, इसमे भी मुझे तो शक है। किन्तु हिदी भाषाको बहुत आदमी बोलते ह, ओर यह भाषा सीखने और पढनेमे सरल है, इसीलिए यह राष्ट्रभाषा होनेका अधिकार रखती है। यदि हिदी प्रचार इस हिदी साहित्य सम्मेलनका अग न हो तो मेरे सरीखे व्यक्तिको इसका सभापति बनाना भी योग्य नही है, क्योकि इसके साहित्य विषयमे तो मने चचुपात भी नही किया है। मै अपने लिखे हुए भाषणको पढना चाहता था, किन्तु पूव वक्ताओने प्रस्ताव आदि रखकर वह समय ले लिया है। प्रस्ताव रखना तो व्यथ था, क्योकि मेरे अधिकारको तो कोई छीन नही सकता था। सम्मेलनका कायक्रम मिनिट-मिनिटका बँधा हुआ है। इसलिए ७–३० बजेके समयतक मै इसे खत्म कर देना चाहता हूँ। हिन्दी साहित्यकी दृष्टिसे तो मै बहुत कम योग्यता रखता हूँ। जो चन्द लडकियाँ यहा बैठी हुई है, उनमेसे बहुत सी प्रथमा उत्तीण हो चुकी है और मध्यमाकी तैयारिया कर रही है। यदि मै प्रथमामे ही बैठ जाऊँ तो ये पुरुषोत्तमदासजी मुझे उत्तीण होने लायक नम्बर ही न दे। क्योकि मै व्याकरण तो जानता ही नही। जायसवालजीने जसा कहा है वैसा माननेमे मुझे भी कोई एतराज नही। मुझे गुजरातीसे कोई पक्षपात नही। मुझे जो सभापति बनाया गया है, वह इसलिए कि मेरे द्वारा हिदीका कुछ प्रचार हो। अन्यथा, योग्यताकी ही कोई बात होती तो एक लडकीको भी यहा बिठा दिया जा सकता था। महारानी विक्टोरियाके लिए ऐसा ही हुआ था। सचिवने कह दिया था कि सारा काम तो मै कर लिया करूँगा, आप तो केवल सही कर दे। परन्तु ऐसा यहाँ नही है। मुझे तो सभापति चुना गया है और एक लाख रुपये देनेकी शत मजूर की गई है। वह इसलिए कि मेरे द्वारा हिदीका प्रचार हो। काव्यके कई विभाग हो गये है। उनकी बाते तो कवियोसे आप भरपेट सुन सकते है, किन्तु मेरे द्वारा तो आप केवल हिदी-प्रचारकी बाते सुन सकते है, क्योकि दूसरेपर मेरा अधिकार नही है।

जब मै इन्दौरमे इसी सभापतिके पदको लेनेके लिए आया था तो पुण्यश्लोक मालवीयजी महाराजसे आशीर्वादकी भिक्षा मागी थी। तब उन्होने एक लम्बा खत

लिखकर मुझे आशीर्वाद भेज दिया था। परन्तु अब तो वे बीमार पडे है और उनके पास काम भी बहुत है। मै केवल आप लोगोसे आशीर्वाद चाहता हूँ। मालवीयजीकी शारीरिक स्थिति भी बिगड गई है। उनको बाहर भी जाना था, इसलिए उन्होने यह पद ग्रहण नही किया। तब मजबूर होकर स्वागत-समितिने मुझे चुन लिया और मजबूर होकर मुझे ही यह पद ग्रहण करना पडा।

मालवीयजीका तार भी आ गया है, जिसमे उन्होने मुझे आशीर्वाद भी दिया है। बाकी तारका तरजुमा करनेकी आवश्यकता नही है। हमारी प्रार्थना है कि उनको भगवान शतायु बनाये और सौ वर्षतक क्षेम कुशल रखे। उनकी उम्र ७० वर्षकी है। परन्तु जब वे काम करते है तो १७ वर्षके जवानकी तरह करते है। अत भगवान उनको दीर्घायु करेगे। वे हिंदुस्तानकी अविच्छिन्न सेवा कर रहे है, वैसी करते रहे। मै तो उनका आशीर्वाद लेकर उनका प्रतिनिधि बनकर आया हूँ। उन्होने दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तोमे हिंदीका जो प्रचार किया है, वह किसीसे छिपा नही है। उसके लिए उनके हृदयमे उतना ही प्रेम है जितना आपको और मुझको है।

आज हमारे सामने तीन बाते उपस्थित है। उनका खुलासा कर देना आवश्यक है। पैसा देनेवालोके लिए तीन बाते उपस्थित है। पहली बात विश्वविद्यालयकी है जिसका उल्लेख महाराजा साहबने अपने भाषणमे किया है, और प्रसन्नता भी प्रकट की है। उसके लिए भी आपसे भिक्षा मागनी है। लोग उसमे पैसा देवे या सम्मेलनमे देवे या प्रचार कार्यमे देवे। जिनके पास तीन कौडी देनेको है उनके लिए तो कोई बात नही, परन्तु जिसके पास एक ही कौडी है वह किसको दे? क्योकि एक कौडीके टुकडे तो हो नही सकते। यहा पर महाराजा साहब, सेठ हुकमचन्दजी और डाक्टर सरजूप्रसादजी आये हुए है। वे भी नाही कर दे तो भी मै कहता हूँ इंदौर वासियोको पहले विश्वविद्यालयको सहायता देनी चाहिए, यदि उनको भली प्रकार विश्वास हो जाए कि यह कार्य अच्छा है और कार्यकर्त्ताओमे शक्ति है। उनमे असली काम करनेकी इच्छा भी है। कवि लोग तो इस प्रकारकी बाते सुना देते है, परन्तु जब उनसे पूछते है कि आप क्या करते है तब वे कह देते है कि हममे तो कवि शक्ति है। हम लोग तो आपको करनेके लिए कह देते है। परन्तु ऐसा नही होना चाहिए। आपको यह विश्वास हो जाये कि विश्वविद्यालयके सब साधन तैयार है, केवल आपके धनकी ही कमी है, तो आपको सबसे पहले उसमे योग देना चाहिए, फिर हिंदी-साहित्य सम्मेलनको और फिर दक्षिणमे हिन्दी-प्रचारको। यह बात मै सभापतिकी हैसियतसे कहता हूँ, क्योकि मेरे इस सम्मेलनका सभापति रहते हुए उसको कोई हानि न पहुँचे। आर्थिक सग्रहमे घाटा आये ऐसा कार्य मेरे हाथसे हो नही सकता और ऐसा कार्य मै नही करूँगा जो आपकी नियमावलीके विरुद्ध हो। क्योकि इस पदसे मैंने अपने सिरपर बडी भारी जिम्मेदारी ले ली है। इसका मैंने चन्द घण्टोमे ज्ञान कर लिया है। जिस कार्यका आरम्भ कर दिया है उसको सफल बनाना मेरा कर्त्तव्य है, इसलिए मुझमे जितनी शक्ति है और भगवान जितनी शक्ति देगा उसका इस्तेमाल इस कार्यको सफल बनानेमे करूँगा, ऐसा आप विश्वास रखें। हिंदी-

प्रचारके लिए लिपिका एक होना भी आवश्यक है। इसके लिए भी एक लिपि सम्मेलन होनेवाला है, जिसके बारेमे विशेष आपको काकासाहब सुनायेंगे। हिन्दी भाषा संस्कृतसे पैदा हुई है, आसामी और बंगला भी इसीसे बहुत सम्बन्धित है। दक्षिण भारतकी भाषाएं द्रविड मानी जाती है। मै तो यह मानता हूँ कि वे संस्कृतसे पैदा हुई है। यदि वे सच्चे है तो लोगोका कथन है कि द्रविड पहले अनार्य थे, पीछेसे आर्य बनाये गये। परन्तु तमिल लोगोका कथन है कि हम जंगली नही थे, हममे आर्यता और संस्कृति मौजूद थी। तमिल, तेलुगु, कन्नड आदि भाषाएँ संस्कृत शब्दोसे भरी हुई है। बंगला भी संस्कृत शब्दोसे परिपूर्ण है। जब उनको अपनी भाषामे कोई शब्द नही मिलता है तो वे संस्कृत शब्द लेते है और उनका प्रयोग करते है। अतः सब भाषाओकी लिपि एक होना आवश्यक है। इसके लिए हिन्दीमे शायद संशोधनोकी आवश्यकता भी है, परन्तु मै इस झंझटमे नही पडना चाहता। मैने तो एक खयाल आपके सामने रख दिया है। क्योकि लिपिके एक होनेसे भाषाओको सीखनेमे बडी सरलता और सुगमता होगी। इसकी बागडोर काकासाहबने अपने हाथमे ले ली है, और वे चलायेंगे। जब काका साहब दक्षिण भारतसे आसाम और उत्कल गये तो उनके सामने एक बडी भारी कठिनाई विन्ध्याचलके समान खडी हो गई। वहाके लोग कहने लग गये कि ये हमारे प्रान्तकी भाषाको मिटाकर हिन्दीका प्रचार करने आये है। परन्तु वास्तवमे बात यह नही है। अपने प्रान्तमे वह भाषा तो चले किन्तु हिन्दीका प्रचार विशेष हो, जिससे यह राष्ट्रभाषा बन सके। यो तो बंगलाका साहित्य भी बहुत है, परन्तु वह राष्ट्रभाषा कभी नही बन सकती। राष्ट्रभाषा तो केवल हिन्दी ही बन सकती है। परन्तु मै तो उसकी भी मर्यादा रख देना चाहता हूँ कि वह अन्य प्रान्तोकी भाषाओका स्थान न ले ले। इसके लिए साहित्य-सम्मेलनमें प्रस्ताव रखकर इस बातको साफ कर देना होगा।

हिन्दी भाषा हमारी राष्ट्रभाषा है। उसमे संस्कृतके ही शब्द भर दिये जाये ऐसा नही हो सकता। चाहे हिन्दू हो या मुसलमान हो वह उसे सीखे ऐसा हमारा मतलब नही है। यदि हम इसमे संस्कृत शब्द खूब भर दे तो इसका मतलब यह होगा कि हमारे मुसलमान भाइयोको भी संस्कृत सीखनी ही चाहिए, परन्तु ऐसा हो नही सकता। कई एक गद्य भी ऐसे आते है जो संस्कृत शब्दोसे भरे रहते है, जिसको ग्रामीण लोग बिलकुल नही समझ सकते। सात करोड मुसलमान भाइयोको छोडकर हम हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनाना चाहे यह बात भी आकाश पुष्पके समान होगी, याने आकाशमे पुष्प लगाकर उससे सुगन्ध लेनेके समान। ग्रामीण लोग बहुत भोले भाले है। उनके समझनेके लिए सीधी और सरल भाषा होनी चाहिए। यहाँ जो प्रदर्शनी की गई है उसमे यह बताया गया है कि इन्दौर स्टेटमे क्या होता है। आपके देहाती भाई क्या चीज बनाना जानते है? ये चीजे हमारे लायक है या नही? हमारा याने शहरी लोगोका सम्पर्क देहाती लोगोसे है या नही, ये बाते जानना आवश्यक है। शहरी लोग मानते है कि हमारा ग्रामीणोसे बहुत कम सम्बन्ध है, परन्तु मुझे जितना ज्ञान ज्यादा होता जाता है मै तो जानता हूँ कि शहरी लोगोका देहातियोसे

घनिष्ठ सम्बन्ध है। मैं तो कहूँगा कि जो-कुछ हिन्दुस्तानको मिलता है वह किसानोकी मारफत ही मिलता है। यदि वे लोग इनकार कर दे, आपका काय नही करे, तो आपको भूखा रहना पडेगा और उसमे महाराजा साहबका भी नम्बर आ जाये और सेठ हुकमचन्दका भी नम्बर आ जाये। क्योकि कोई भी चादी या सोनेसे पेट नही भर सकता। वे मेरी तरह सत्याग्रह करके नही किन्तु यह कहकर इनकार करे कि हमे भरपेट भोजन नही मिलता तो हम भूखे रहकर काम कैसे करे, तो शहरी लोगोको बडी मुसीबत उठानी पडे। भारतवषमे सात लाख देहात है। सारा काय देहातो पर निभर है। इसलिए जिसे वे समझ सके ऐसी भाषाका प्रयोग करनेकी आवश्यकता है। अरबी या फारसीका कोई शब्द आ जाए तो उसका हम एकदम तिरस्कार कर दे, यह ठीक नही। क्योकि ऐसा करनेसे हम हिन्दीको राष्टभाषा नही बना सकते। मै तो इस कायके लिए आप लोगोसे भिक्षा प्राप्त करना चाहता हूँ। यह काय महाराजा साहबके आशीर्वादसे चल सकता है। किसीको महात्मा कहो या कुछ कहो, जो अमली काम करे तभी यह सब काय सफल हो सकता है। मै आपका एक लाख रुपया लेकर भाग नही जाऊँगा, बल्कि इसी कायको विशेष विभूषित करनेके लिए प्रयत्न करूँगा।

हरिहर शर्मा प्रयागसे कुछ हिन्दी सीखकर मद्रासमे गये थे और उन्होने वहा जाकर हिन्दी-साहित्यका प्रचार किया, जिसका छोटा सा प्रदशन यहा लाये है। उसको आप लोग देखना चाहते है तो आज भी देख सकते है। उस ओर आपका ध्यान खीचना मेरा काम था।

अब दस मिनटमे कितना काय करना है और कब समाप्त करना है, यह तो अब महाराजा साहबकी बात है मेरे हाथकी बात नही।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन काय-विवरण, पृ० ८-१२ से।

६३४ भाषण ग्रामोद्योग प्रदर्शनीके उद्घाटनपर[1]

इन्दौर
२० अप्रैल, १९३५

प्रदशनीका मतलब यह नही कि गावोपर निभर करनेवाले शहरोके आस-पडोसके गाँवोके दस्तकारो और वहाँ बनी हुई वस्तुओको एक स्थानपर कर दिया जाये। भारतकी सभ्यता शहरो पर नही ७० लाख गावो पर टिकी है। हमारे अग्रेज अमलदार कहते है कि भारतके १० प्रतिशत लोगोको बिलकुल भोजन नही मिलता और बाकीको चावल, नमक तथा आटेकी थोडी थोडी मात्रा ही मिल पाती है। रसायनविद हमे बताते है कि भारतीयोको जितनी स्वल्प मात्रामे आहार मिलता है, उससे उनकी मानसिक, शारीरिक और आत्मिक शक्तिके विकासको बल नही मिलता। जो-

१ यह प्रदर्शनी बिस्कोई पार्कमें लगी थी।

कुछ हम खाते हैं, उससे हमें पर्याप्त पोषण नहीं मिल पाता, हम और ग्रामीण जन दोनों मृत्युगामी हो रहे हैं।

लोग कहते हैं कि भारतमें ग्रामोद्धार असम्भव है, लेकिन अमेरिका जैसे देश इसके विपरीत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। भारतमें जब मशीनोंका बिलकुल भी प्रचलन नहीं हुआ था, तब एक ही काम सैकड़ों व्यक्तियों द्वारा पूरा होता था और वे सभी रोजीसे लगे रहते थे। लेकिन आज दिन-दिन बढ़ती मशीनोंने १००में से ९८ लोगोंको बेरोजगार बना दिया है। अमरिकाको देखिए, वहाँ पर बड़ी-बड़ी मशीनें बिना किसी उपयोगके सड़कों पर पड़ी हैं। पश्चिमी संसारमें बेरोजगारीका मतलब है कि भोजनके लिए नमक और चावल तक न मिलना।

विपशेज्ञ लोगोंका कहना है कि बढ़ती हुई आबादीके लिए भारतमें पर्याप्त भूमि नहीं है लेकिन ऐसी बात नहीं है। प्रदर्शनीमें ऐसी वस्तुएँ होनी चाहिए जो कि रोजमर्राकी जिन्दगीमें इस्तेमाल की जाती हैं, ऐसी नहीं जिनको हम पसन्द करते या उपयोगमें लाना चाहते हों, जैसे कि शराब, इत्यादि है। शुद्ध घीको दुगने दाम देकर भी खरीदना बेहतर है। ऐसी खरीद सस्ते लेकिन मिलावटी घीकी खरीदकी बनिस्बत कहीं सस्ती पड़ती है।

महात्मा गांधीने स्पष्ट कहा कि गाँवोंमें बनी वस्तुओंका प्रदर्शन-भर कर देनेसे ग्रामोद्योग संघके उद्देश्यको पर्याप्त सहायता नहीं मिल जायेगी। अब समय आ गया है कि जनताको खाना और कपड़ा जुटानेके तरीके निकाले जायें। आज भारतके ग्रामोद्योग अपनी आखिरी साँस ले रहे हैं। और इसके लिए सबसे अधिक जिम्मेदार हमारी जनता है। वह अपने पापका प्रायश्चित्त सिर्फ इसी तरह कर सकती है कि वह नष्टप्राय ग्रामोद्योगोंके पुनरुद्धारमें सक्रिय सहायता दे। उन्होंने यह मत व्यक्त किया कि भारतीय गाँवोंकी कायापलट करनेका एक मार्ग यही है कि आबादीकी प्रत्येक छोटी इकाईको उसकी सभी आवश्यकताओंके मामलेमें आत्म-निर्भर बनानेकी प्राचीन प्रणालीको हम पुनः अपना लें।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २१-४-१९३५

६३५ पत्र राजेन्द्रसिह ब्यौहारको

इदौर
२१ अप्रल, १९३५

भाई राजेन्द्रसिह,

मेरी उमेद है कि हरिजन परिषद् सब प्रकारसे सफल होगी। अर्थात सवर्ण हिदु अपना धम समजेगे और उसका पालन करेंगे और हरिजन अपना धम समजेगे। दोनो समजे कि ऐसे द्वीविध आत्मशुद्धिके सिवाय हिदुधमका कायम रहना असभवित है।

मो० क० गाधी

राजेन्द्रसिह ब्यौहार कागजात से, सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय।

६३६ पत्र पुरुषोत्तम के० बावीशीको

२२ अप्रैल, १९३५

भाई पुरुषोत्तम बावीशी,

आपका पत्र कल मेरे हाथमे आया। आज दो बजे अपने मित्रके साथ आइए। मेरा मौन तो रहेगा, किन्तु उसकी चिन्ता नही है। अधिक तो आप ही को समझाना है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२२) से। सी० डब्ल्यू० ४७४७ से भी, सौजन्य पुरुषोत्तम के० बावीशी।

६३७ पत्र हरिलाल गाधीको

२२ अप्रैल, १९३५

चि० हरिलाल,

अमलाके पत्रको लेकर जल्दबाजी करनेकी कोई जरूरत नही है। मुझे लगता है, तुझे यह विचार छोडना पडेगा। उसे साफ लिख देना चाहिए कि जो बच्चे होगे उनका पालन-पोषण सादगीसे होगा और जो आजीविका भगवान देगे, वह वर्धामे ही होगी। साथ ही तू यदि विपयभोगमे पडे या शराब पिये, तो वह तुझे तुरन्त छोड सकेगी। लेकिन यह तभी जब तुझे उससे शादी करनी हो। अमलाके पत्रको मै अच्छा पत्र मानता हूँ। किन्तु जिस रूपमे वह अपने पत्रमे प्रकट होती है, वैसी मै उसे नही जानता था। इससे मेरी सलाह है कि तेरे बिना वह रह ही नही सकेगी, ऐसी वृत्ति यदि उसमे पैदा न हो, तो उसके साथ सुखी नही होगा।

तू अधीर नही हुआ, यह अच्छा ही है। धीरज धरकर, जो उचित हो सो करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १५४०) से, सौजन्य मनुबहन मशरूवाला।

६३८ पत्र मनु गाधीको

२२ अप्रैल, १९३५

चि० मनुडी,

तेरा पत्र मुझे इन्दौरमे मिला। तुझे बम्बई जाना चाहिए या नही, यह मुझसे नही पूछना चाहिए। जैसी मौसीकी इच्छा हो, वैसा करना चाहिए।

तूने उन्नीसवे वर्षमे प्रवेश किया है, यह मैने पढा जरूर था। किन्तु यह सब तू अपने मनकी कल्पनासे लिख रही है। यह सब क्यो लिखना पडा? मेरे मनमे तो ऐसा विचार एक बार भी नही आया। पर अब शायद आयेगा।

यह सब जो तूने लिखा है, इसका अर्थ यह है कि अब तुझे शादी करनी है? ऐसा हो तो तुझे कह देना चाहिए। इसमे शर्मिन्दा होनेकी कोई बात मै नही देखता। यह तो स्वाभाविक बात है। हाँ, मुझे तो तू बारह एक वर्षकी ही लगती है। लेकिन हो सकता है, इस बीच तेरे शरीरमें परिवर्तन हुआ हो। तो यदि तुझे लगता है कि तू बडी हो गई है, तो बस ठीक है। तेरी जो इच्छा हो, वह साफ-साफ लिखना।

हम बुधवार या गुरुवारको इन्दौर[1] वापिस पहुँचेगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५३९) से, सौजन्य मनुबहन मशरूवाला।

६३९ पत्र वल्लभभाई पटेलको

इन्दौर
२२ अप्रल, १९३५

भाई वल्लभभाई,

आपका भाषण पढ लिया। यह काम नही देगा। इस समय सरकारकी नीतिकी चर्चा आपने जिस स्वरमे की है, उस स्वरमे नही हो सकती। यह युग सरकारकी नीति या जमीदारोकी नीतिका निरीक्षण करनेका नही, आत्म निरीक्षण करनेका है। अपना घर साफ करने ओर रखनेका है। इसलिए इस समय हमे क्या करना चाहिए, इसके सिवा आप मेरे मुँहसे ओर कुछ सुननेकी कम ही आशा रखे। इस प्रस्तावनाके बाद मुझे तो यही समझमे आता है कि किसानाका कतव्य बताया जाये ओर सरकारका नाम तक न लिया जाये। नई दिल्लीको इस वक्त भूल जाना ही उचित है। परन्तु अगर यह बात आपको न जँचे, तो फिर हृदयका स्वामी जो सुझाए वही बोलिए।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, पृ० १६३ ६४

६४० पत्र वल्लभभाई पटेलको

२२ अप्रैल, १९३५

भाई वल्लभभाई,

सुबह तो आपको एक पत्र लिखा ही था। उसके बाद इतना लिखना पडा कि अब दाये हाथसे लिखा नही जाता।

मुन्शीको बोडका[2] मत्री बनानेकी आवश्यकता मालूम हो तो देख लीजिए। क्या असारीके चले जाने पर भूलाभाई अध्यक्ष बनेगे? राजाजीको किसी भी तरह समझाया जा सके तो समझाइए। क्या डा० विधानने भी अपनेको अलग कर लिया?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ सरदार वल्लभभाईने, प० १६४

१ शायद गाधीजीका तात्पर्य वर्धासे था जहाँ वे गुरुवार, २५ अप्रैलको लौटे।
२ काग्रेस ससदीय बोड।

६४१ पत्र जमनालाल बजाजको

२३ अप्रैल, १९३५

चि० जमनालाल,

कमलनयनके साथ मने काफी बात कर ली है। ऐसा लगता है कि सम्बन्ध जोडनेके पहले जो [1] वर्धा आ जाये तो मैं भी जरा उसे देख लू। कमलनयनको भी यह बात जँची है। इसलिए [2] को मैंने इस तरहका पत्र लिख दिया है।

तुम्हारा तार मिलनेके पहले ही राधाकिसनको सीकर भेज चुका था, इसलिए तार नही किया।

कानका क्या हाल है?

मदालसा कैसी है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९६४) से।

६४२ भाषण हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इन्दौरमें

२३ अप्रल, १९३५

महात्माजीने उपस्थित जनता और प्रतिनिधियोसे निश्चित समयपर न पहुँचनेके लिए खेद प्रकट किया। उन्होने कहा कि स्थायी समितिके सदस्योका चुनाव और प्रस्ताव आदिका काय इतना अधिक था कि म इच्छा होते हुए भी समय पर नहीं पहुँच सका। फिर उन्होने हि दी प्रचारकी सहायताके लिए अपील करते हुए कहा

मैं जिस भिक्षाके लिए आपसे अपील करता हूँ उसे आप तीन हिस्सोमे बाट सकते हैं। आप चाहे तो हि दी साहित्य-सम्मेलनके दफ्तरमे अपनी रकम जमा करा सकते है, अथवा हिन्दी विश्व विद्यालय जिसको इसी इ दौरमे खोलनेका आयोजन हो रहा है उसमे भी सहायता दे सकते है, या दक्षिण प्रा तमे तथा अन्य प्रान्तोमें हिन्दी भाषाके प्रचारके लिए दे सकते है। यदि आप रकम देते समय हिन्दी-विश्वविद्यालयके लिए या हिन्दी-प्रचारके लिए ऐसा नही लिखायेंगे, तो वह रकम हि दी-साहित्य-सम्मेलनके लिए समझी जाकर सीधी हि दी-साहित्य-सम्मेलनके दफ्तरमे भेज दी जायेगी। आपको हि दी-विश्वविद्यालय और हि दी-प्रचारके लिए विशेष सहायता करनी चाहिए। मेरे कहनेका यह मतलब नही है कि आप हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका ध्यान न रखें।

१ और २ नाम छोड दिये गये है।

परन्तु इन दोनोका काम बहुत जरूरी और शीघ्र करनेका है। हिन्दी-साहित्य सम्मेलन तो अपने पैरोके बल पर खडा है। परीक्षा लेनेका जो उसका काम है और उसमे जो खर्च होता है वह विद्यार्थियोकी फीससे, चाहे वह थोडी ही हो, चल जाता है। हिन्दी प्रचारके कार्यके लिए उसने दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा जैसी स्वतन्त्र सस्थाएँ खोल दी है जो उसके ऊपर भारस्वरूप नही है। वे अपना खर्च आप निकाल लेती है। हिन्दी साहित्यको प्रकाशित करनेके कार्यमे पुस्तकोकी बिक्रीसे खर्चकी पूर्ति हो जाती है। जैसे अभी मुझे यह आज्ञा अभिनन्दन ग्रन्थ भेट किया गया है। इसकी छपाई आदिमे जो खर्च हुआ है वह राजा महाराजाओसे इकट्ठा किया ही जाता है। क्योकि ऐसे ग्रन्थोकी छपाईमे लेख लिखवानेमे तथा चित्र बनवानेमे बहुत ज्यादा खर्च होता है। इस ग्रन्थके लेख तो मुफ्तमे मिल गये है। इसलिए इसमे खर्च कम हुआ है और कीमत भी १२) कम रखी गयी है, नही तो इतने बडे ग्रन्थकी कीमत ५०) ६०)से कम नही होती। मेरे कहनेका मतलब यह है कि इसमे जो खर्च होता है वह तो राजा महाराजाओसे ले लिया जाता है और फिर धीरे धीरे वह साहित्य बिकता रहता है। मै समझता हूँ कि अब आप लोग मेरे कथनका मतलब समझ गये होगे। सम्मेलनकी ओरसे जिस सग्रहालयकी नीव डाली गयी है और आधेसे ज्यादा इमारत बन भी गई है, उसके लिए कुछ रकमकी जरूरत है, क्योकि उसके बिना वह अधूरा ही पडा है और जो लकडी वगैरह मँगाई गई थी वह भी यो ही पडी हुई है। जो काम आरम्भ किया जाता है, उसे यदि पूर्ण नही किया जाये तो थोडे दिनोमे वह जीर्ण हो जाता है। उसके लिए अभी १० १५ हजार रुपयोकी जरूरत है। जबतक आप उसके लिए पैसा नही देगे तबतक उसका द्वार बन्द रहेगा। इसके सिवाय दक्षिण प्रचारके लिए भी, जिसका बोझ हिन्दी साहित्य सम्मेलन पर नही है, मै आपसे भिक्षा मागता हूँ। 'अधिकस्य अधिक फल ।' आप जितना अधिक पैसा देगे उतना अधिक फल आपको मिल सकता है। अब मै आपसे दुबारा कह देना चाहता हूँ कि आप दान देनेसे पहले कह सकते है कि यह रकम सम्मेलनके दफ्तरको या हिन्दी विश्वविद्यालयको अथवा अन्य प्रान्तोमे हिन्दी प्रचारके लिए देता हूँ। आप कुछ भी नही देना चाहते है तो यह आपके अधिकारकी बात है। यह कोई कानूनके विरुद्ध बात नही है और न देनेसे कोई दुःखकी भी बात नही है। हिन्दी-प्रचारके लिए आप एक कौडी न देकर दफ्तर या विश्वविद्यालयको देगे तो मै समझूगा कि मुझे दिया। इससे मुझे कोई दुःख नही हो सकता। इस वर्ष तो कर्त्तव्य पालनकी दृष्टिसे भी मेरा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि मै आपसे सम्मेलनके लिए भिक्षा मागू। अब मै आपसे ज्यादा नही कहना चाहता और अपने कार्यको रेलगाडीकी रफ्तारसे शुरू करनेसे पहले मै आपसे यह भिक्षा माग लेता हूँ कि आप शान्तिपूर्वक भिक्षा दे। आपके पास यदि इस समय पैसा हो तो अभी दे सकते है। अभी न हो और घर पर रखा हो तो आप अपना नाम और पता अकित करा सकते है। बादमे स्वागत-समितिके सदस्यगण आपसे वसूल करके दफ्तरमे भेज देगे। यहा स्वयसेवक भाई है। वे आपके पास आ जायेगे।

आप जो-कुछ देना चाहत है वह दे मकते ह अथवा अकित क्ग सकत है। यह तो आप जानत ह कि मै बहनाक पासमे भी उनका जेवर छीन लेना चाहता हूँ। इसलिए वे भी समझ गई ह कि उसक (गा ीजीके) सामने जेवर पहन कर क्या जाये। इस प्रकार वे चोरी करती है तो कर ले, मै बहनोसे कहता हूँ कि इ दौरमे विश्वविद्यालय स्थापित हानेसे और अ य प्रा तामे हि दी प्रचार होनेसे जो गरीब भाई-बहनोकी सेवा होगी उसका लाभ आपको भी मिलगा। अत जो बहने अपना जेवर देना चाहती है, वे दे सकती है। आप लोग जो दान इसमे दे वह कजूसीसे न दे उदारतासे दे। अब आपके पास स्वयसेवक लोग आयेगे, क्याकि बहुत-से प्रतिनिधि तो ऐसे है जो स्वय पैसा नही दे सकते। अत प्रेक्षक लोग जिनके पास पैसा है वे शीघ्र दे दे। फिर मुझे जो काय करना है वह रेलगाडीकी रफ्तारसे करना होगा, क्योकि साढे पाँच बजे यह काम खतम करके मुझे यहाँसे भाग जाना है। इ दौरके पण्डित लक्ष्मीनारायणजी त्रिवेदीने अपना 'जग नाथ त्रिवेदी-भवन', पचास हजारकी लागतका, हिन्दी-विश्वविद्यालयको देनेकी कृपा की है। अत वे अवश्य धन्य-वादके पात्र हैं। यहाके लोग यदि इसी तरहसे काम करेगे और महाराजा साहबकी कृपा हो जायेगी तो आपका विश्वविद्यालय उस्मानिया विश्वविद्यालयकी तरह इ दौर हि दी विश्वविद्यालय बन सकता है। अब मै अपने भाषणको यहीपर खत्म करता हूँ और आपके पास स्वयसेवक लोग आयेगे। उनको आप अपनी इच्छानुसार धन दे दें।

'**अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन काय-विवरण**, पृ० ४१-४३ से।

६४३ भाषण सार्वजनिक सभा, इन्दौरमें[1]

२३ अप्रैल, १९३५

यहाँ एकत्र लोगोमें से अधिकाश इ दौरके नागरिक है। गावोसे भी लोग आये है, लेकिन बहुसख्या इ दौरके लोगोकी है। आप लोगोने प्रदशनी देखी ही होगी। बदकिस्मतीसे बेमौसमकी बरसातने इसका रग फीका कर दिया है। इसका आयोजन इसलिए किया गया है कि नगरवासियोको ग्रामीणोके प्रति उनके कत्तव्यकी याद दिलाई जाये। इतने वर्षों तक हम इस कत्तव्यको भूले रहे है, लेकिन अब ऐसा करेगे तो हमे भारी हानि उठानी पडेगी। हमे शायद इसकी जानकारी न हो, लेकिन हम व्यक्तिश और एक राष्ट्रके रूपमें धीरे-धीरे नष्ट हो रहे है। दूसरे लोगो—सरकार, राज्य या जमीदारों—को इसके लिए दोषी ठहरानेसे कोई फायदा नही। वे भी

१ महादेव देसाई द्वारा लिखित 'अवर ड्यूटी टू दि विलेजर्स' शीर्षक विवरणसे उद्धृत। यह सभा हिन्दी साहित्य सम्मेलनके पडालमें हुई थी और इसमें लोग बडी सख्यामें शामिल हुए थे।

हमारी इस शोचनीय स्थितिके लिये जिम्मेदार अवश्य है। लेकिन हम खुद भी कम जिम्मेदार नही है, और अच्छा होगा कि हम अपनी जिम्मेदारी पर फिरसे विचार करे।

हमारे गावोमे व्यक्तिकी औसत आयु इतनी कम क्यो है, हम लोग दिन-दिन दरिद्र क्यो होते जा रहे है? इसका कारण यही है कि हमने अपने ७,००,००० गावोकी उपेक्षा की है, हमने उनपर ध्यान दिया जरूर है, लेकिन सिर्फ अपने मतलबके लिए उनका शोषण करनेकी हदतक ही। हमने भारतके प्राचीन वैभवके—कभी दूध और शहदकी नदियास भरी अपनी इस भूमिके हृदय गुदगुदा देनेवाले वृतान्त पढे है। लेकिन आज इस देशमे करोडो लोग भूखसे पीडित है। हम बिजलीकी रोशनीकी चकाचौधके बीच इस पडालमे बैठे है, लेकिन हम यह नही जानते कि हमने यह रोशनी गरीबोका शोषण करके पाई है। अगर हम उन लोगोके इस ऋणको याद नही रखते तो हमे इस रोशनीके इस्तेमालका कोई हक नही।

पूर्वकी, भारतकी सभ्यता और पश्चिमकी सभ्यतामे फर्क है। वह फर्क किस बातमे है इसे अकसर महसूस नही किया जाता। हमारा भूगोल अलग तरहका है, हमारा इतिहास दूसरी तरहका है, हमारे रहनेके तरीके दूसरी तरहके है। हमारा महाद्वीप काफी बडा होनेपर भी सम्पूर्ण पृथ्वीकी सतह पर एक बिन्दु-जैसा ही है। लेकिन चीनको छोडकर यह भाग सबसे अधिक घना बसा हुआ है। तो फिर, जिस जमीन पर आबादीका दबाव अधिक है, उस देशकी आर्थिक अवस्था और सभ्यता उस देशसे अलग प्रकारकी होगी जिसकी जमीन पर आबादीका दबाव कम है। कम घने बसे हुए अमरीका जैसे देशको मशीनोकी जरूरत पड सकती है। भारतको इसकी जरूरत नही है। जहापर लाखो श्रमिक निठल्ले बैठे हो वहाँ श्रमकी बचत करनेके साधनो पर विचार करना एकदम गलत है। अगर कोई ऐसी मशीन लगाता है जिससे खानेके लिए हाथोका उपयोग ही जरूरी न रहे, तो भोजन आनन्ददायी न रहकर एक त्रस्त करनेवाली चीज बन जायेगा। हमारे उद्योगोका विनाश और उसके कारण उत्पन्न होनेवाली बेरोजगारी हमारी गरीबीके कारण है। कुछ साल पहले हिन्दुस्तानमे खेती करनेवालोकी संख्या ७० प्रतिशत बतलाई जाती थी। कहा जाता है कि आज वह ९० प्रतिशत है। इसका यह मतलब नही है कि ९० प्रतिशत लोग किसान है, बल्कि यह है कि अब ७० प्रतिशतकी बजाय ९० प्रतिशत लोगोको विवश होकर जमीनोपर गुजर बसर करनी पड रही है। दूसरे शब्दोमे, कुछ समय पहले जो २० प्रतिशत लोग अपने धधो तथा हस्त कौशलसे पेट भरते थे, उनके पास अब वह काम नही रहा और वे खेतीका काम करके गुजारा चलाने पर मजबूर हो गये हैं। उनकी रोजी इस तरह उनसे छिन गई, इसलिए नही कि वे ऐसा चाहते थे, बल्कि इसलिए कि जमीन जितनी है, उतनी ही तो रहेगी।

इसका यह मतलब भी नही है कि देशके ३५ करोड लोगोको खिलाने लायक जमीन हमारे पास नही है। यह कहना कि हिन्दुस्तानमे आबादी अधिक है और जो जनसख्या अतिरिक्त है उसको मौतके मुहमे चले जाने दो, बिल्कुल बेतुकी

बात है। मुझे विश्वास है कि हमारे पास जितनी जमीन है, उसका अगर ठीकसे उपयोग किया जाये और जितना उत्पादन सम्भव है उतना उत्पादन किया जाये तो वह हमारी सारी आबादीके लिए पर्याप्त होगा। हमें सिर्फ मेहनती बननेकी जरूरत है, और इस समय जहां अन्नकी एक मंजरी आती है, वहां हमें चाहिए कि हम दो पैदा करें।

इस समस्याका हल यह है कि हम अपनेको गांवके गरीब आदमीके साथ जोड़ें और उसकी इस बातमें मदद करें कि उसकी जमीन भरपूर उपज दे। जो चीजें हमें चाहिए उनकी पैदावारमें हम उसकी सहायता करें और जो चीज वह उत्पन्न करता है हम उसीका इस्तेमाल करें। जैसा वह रहता है वैसे रहें और उसे अधिक अच्छे रहन सहनके लिए प्रेरित करें।

हम शक्तिचालित चक्कीका पिसा आटा काममें लाते हैं। बेचारा ग्रामीण भी आधा मन गेहूँ सिर पर लादे हुए पासकी किसी ऐसी चक्की तक चलकर आटा पिसवानेके लिए जाता है। क्या आप जानते हैं कि हम अपने लिए जितना अन्न उत्पन्न करते हैं, उसके अलावा भी आस्ट्रेलियासे उच्च कोटिका गेहूँ मँगवाते हैं? हम हाथसे पिसा आटा इस्तेमाल नहीं करते और बेचारा ग्रामीण भी अज्ञानवश हमारी नकल करता है। इस तरह हम सोनेको मिट्टी और अमृतको विष बना लेते हैं। चोकर-सहित अन्न ही श्रेष्ठ है। मिलका पिसा आटा विटामिन-रहित होता है, मिलका पिसा आटा कई दिनोंका हो जानेके कारण विटामिन रहित ही नहीं, दूषित तक होता है। लेकिन हम रोज ताजा आटा खानेके विचारसे रोज पीसनेके बजाय, हीनसत्व खाद्य खाते हैं और बीमारी खरीदते हैं। यह कोई जटिल आर्थिक सिद्धान्त नहीं है, यह तो रोज हमारी आंखोंके सामने घटनेवाला तथ्य है। यही बात चावल, गुड़ और तेलके सम्बन्धमें भी लागू है। हम मशीन द्वारा साफ किया अल्प गुणयुक्त चावल खाते हैं, कम पौष्टिक चीनी खाते हैं और सो भी अधिक पौष्टिक गुड़की बनिस्बत अधिक दाम चुका कर। हम बाहरका बना मिलावटी तेल खाते हैं। इससे गाँवमें तेल निकालनेवालेको हमने परेशानीमें डालकर उसका पेशा खत्म कर दिया है। हम गायको पूजते हैं, लेकिन उसकी सार सँभाल न करके, उसे धीरे-धीरे मृत्युकी ओर ढकेलते चल रहे हैं। हम शहद निकाल लेते हैं और शहदकी मक्खियोंको मार डालते हैं इसका नतीजा यह निकला है कि शहद अब एक ऐसी अप्राप्य वस्तु बन गई है कि वह या तो मेरे जैसे 'महात्मा'को मिल पाती है या उन्हें जिन्हें उसे दवाके साथ अनुपानके रूपमें लेनेकी सलाह दी जाती है। अगर हम मधुमक्खियोंको हानि पहुँचाये बिना वैज्ञानिक तरीकेसे उनके पालनेका ढँग सीख लें, तो हमें यह सस्ता मिलने लगेगा और हमारी सन्तानोंको इससे वह शर्करा तत्व पूरी तरह मिल जायेगा जिसकी उन्हें जरूरत है। अपने खानेकी हर चीजमें हम मूल-तत्वकी रक्षाकी चिन्ता नहीं करते, अधिक ताकत देनेवाले मटमैले गुड़की अपेक्षा हम हड्डी-सी सफेद चीनीको ज्यादा पसन्द करते हैं, और चोकरवाली भूरी रोटीकी तुलनामें पीली-सफेद रोटी हमें ज्यादा अच्छी लगती है।

हमारी ख्याति है कि हम लोग रोज स्नान करते है। बेशक हम नहाते तो रोज है, लेकिन इस स्नानका कोई अथ नही होता। क्योकि, हम गन्दे पानीसे स्नान करते है। हम अपने तालाबो और नदियोको गन्दा बना डालते है और उसी पानीका पीने और नहानेके लिए इस्तेमाल करते है। हम, डिग्रीधारी वकील ओर डाक्टर लोग स्वास्थ्य विद्या और सफाईके प्रारम्भिक सिद्धान्त भी नही सीखना चाहते। हमने पाखाना सफाईके सस्त तरीको पर कोई विचार नही किया और अपने खुले स्वास्थ्य-प्रद स्थानोको रोग उत्पन्न करनेवाली जगहोमे बदल डाला है।

मै आप लोगोसे प्राथना करता हूँ कि जडताको हटाइए, जीवन सम्बन्धी सामान्य जानकारी प्राप्त करनेकी कोशिश कीजिए अधिक समनदारीसे जीवन व्यतीत कीजिए और मिट्टीको सोना बनाना सीखिए। मने जीवनके सीधे सादे तथ्योको आपके सामने रखा है। अगर हम सदियोसे अपनाई गई जडताको त्याग दे तो हम शीघ्र ही इन बातोका महत्व पहचान कर इनपर अमल करने लगेगे। हम शरीरश्रमसे बचते ह, इस प्रकार हमारी बुद्धि कुठित हो गई है। हम भोजन ओर व्यवहारमे विवेकरहित तरीके अपनाते रहकर भी सन्तुष्ट है। हमे सावधान हो जाना चाहिए ओर तय कर लेना चाहिए कि अपने शरीर और दिमाग—दोनोको अधिक चुस्त बनाकर रहेगे।

आपने मेरी सारी बाते इतने धैय और ध्यानसे सुनी, इसके लिए मै आपका आभारी हूँ।

[अग्रेजीस]
हरिजन, ११ ५ १९३५

६४४ भाषण गुजरातियोकी सभामे[१]

इन्दौर
[२४ अप्रैल १९३५][२]

कहा जाता है कि आप लोगोके बीच दो गुट बने हुए थे। मुझे खुशी है कि मेरी यात्रा उनको खत्म करानेमे निमित्त बन गई है। लेकिन अब मै आपसे कहता हूँ कि आप इससे एक कदम और आगे बढे। आप उस क्षेत्रकी भलाईके बारेमे सोचे जहा आप जीविकोपाजन कर रहे है। आपको अपनी सारी बचत अपने परिवारोको भेजनेकी बात नही सोचनी चाहिए, बल्कि उसका एक अश उन मराठी और हिन्दी भाषी लोगोके लिए खच करना चाहिए जिनके मध्य आप रह रहे है। यह सोचना गलत है कि व्यवसाय और नैतिक आचरणका परस्पर कोई मेल नही बैठ सकता। मै

१ महादेव देसाई द्वारा लिखित ' इन्दौरके अन्य समारोह" (अदर फकशस ऐट इन्दौर) शीषक विवरणसे लिया गया है। इन्दौरके गुजरातियोंने गांधीजीके सम्मानमें एक समारोह आयोजित किया था और उन्हें एक थैली भेंट की थी।

२ तारीख **गांधीजीनी दिनवारी**से दी गई है।

जानता हूँ कि ईमानदारी और सच्चाई पर दृढ़ रहते हुए भी लाभकारी व्यवसाय किया जा सकता है। जो लोग यह तर्क देते हैं कि व्यवसाय और नैतिकताका कोई सम्बन्ध नहीं, वे वे लोग होते हैं जिनके सामने स्वार्थके अलावा कोई बड़ा उद्देश्य नहीं रहता। वह व्यक्ति जिसे केवल अपना स्वार्थ दिखता है, वह सभी उचित-अनुचित साधनोंसे उसकी प्राप्तिकी चेष्टा करेगा। लेकिन जो व्यक्ति अपने समाजकी सेवा करनेके लिए जीविकोपार्जन करता है, वह सत्य या ईमानदारीकी बलि नहीं देगा। आपको यह बात मनमें बैठा लेनी चाहिए कि आपको यह अधिकार अवश्य है कि आप जितना चाहे कमायें लेकिन उसे मनमाने ढंगसे खर्च करनेका अधिकार आपको नहीं है। एक अच्छे कायदेके रहन-सहनकी आवश्यकताओंकी पूर्तिके बाद जो-कुछ भी शेष बचता है, वह समाजका है।

यहाँ एक भी गुजराती ऐसा नहीं बचना चाहिए जिसे हिन्दीका ज्ञान न हो। मेरी यह बात स्त्रियोंपर भी लागू होती है, इसलिए कि उनको यहाँकी हिन्दीभाषी स्त्रियोंसे सहयोग करना चाहिए और जनसाधारणके सामान्य सामाजिक उत्थानके कार्यमें हिस्सा बँटाना चाहिए।

गुजराती युवक लोगने गांधीजीसे अनुमति चाही कि उनको अलगसे भाषण करके समारोहमें भाग लेने दिया जाये। उनसे गांधीजीने कहा

क्या यह बेहतर नहीं रहेगा कि आपकी भाषणबाजीके लिए आपको कुछ मिनट देनेके बजाय मैं ही आपके चन्द मिनट ले लूँ। ठीक है, मैं आपको मौनका सन्देश दे रहा हूँ। कार्यका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किये बिना जो भी भाषण दिया जायेगा, उसमें भावकी विशुद्धता तथा परिष्कारका अभाव रहेगा। मैं आप लोगोंसे कहता हूँ कि आप जुबानसे कम काम लें और समाजकी सेवाके लिए अपने हाथों और पैरोंसे अधिक काम लें। जब आप कुछ वर्षोंतक ऐसा कर लेंगे, तब आपकी कही बातका वजन बढ़ जायेगा और वह कभी भी प्रभावित किये बिना नहीं रहेगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-५-१९३५

६४५. भाषण : हरिजन स्कूलमें[1]

इंदौर

[२४ अप्रैल, १९३५][2]

सवर्ण हिन्दू जो भी करें या कहें, उसकी तरफ ध्यान मत दीजिए। आपको जो करना है, केवल उसीका ध्यान कीजिए। यह कोई छोटी-मोटी चीज नहीं कि जो धर्म आपको दबाकर रखता है, आप अब भी उसकी परवाह करते हैं। मैं नहीं जानता कि मैं इसका श्रेय धर्मकी महानताको दूं या आपकी सहन-शक्तिको। लेकिन, कारण जो भी हो, मैं आपसे कहूँगा कि आप थोड़े समय और धैर्य रखें और जिस धर्मका पालन आप उसके हर उतार-चढ़ावमें करते आये हैं, उसको ही गौरवान्वित करते रहें। अपने जीवनको पवित्र बना कर, अपनी आन्तरिक और बाह्य स्वच्छता बनाये रखकर और यदि आपकी ऐसी आदत पड़ गई हो तो मरे हुए पशुओंके माँस और मदिराका परित्याग करके तथा परमात्मासे प्रार्थना करके आप ऐसा कर सकते हैं। अगर हम राम-नामका स्मरण आस्थावान और विशुद्ध हृदयसे करें तो इसमें चमत्कारी शक्ति है। तब अस्पृश्यता देखते-देखते लुप्त हो जायेगी और आपको समाजमें अपना स्थान प्राप्त हो जायेगा। ईश्वर आपका कल्याण करे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-५-१९३५

१. महादेव देसाई द्वारा लिखित विवरण "इन्दौरके अन्य समारोह" (अदर फंक्शन्स एट इन्दौर) से उद्धृत।

२. साधन-सूत्रमें तिथि विशेषका उल्लेख नहीं है। लेकिन विवरणमें महादेव देसाईने इस बातका जिक्र किया है कि उस दिन उत्सवोंकी भीड़ रही और गांधीजी गाड़ी चलनेके समयतक निराहार रहे। उन्होंने इन्दौरसे प्रस्थान २४ अप्रैलको किया था।

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघके प्रबन्ध-मण्डलकी कायवाहीका साराश[1]

निम्नलिखित छ व्यक्तियोका स्थायी न्यासी मण्डल होगा जो सघकी ओरसे कोष और सम्पत्तिपर काबू रखेगे और प्रब ध-मण्डलके निर्देशोके अनुसार उन्हे खच करेगे। कि तु यदि उक्त निर्देश यासियोके मतानुसार सघके उद्देश्य या उसके सर्वोत्तम हितके विरुद्ध हो तो प्रबन्ध-मण्डल तथा न्यासियोकी मिली जुली बैठक होगी और यदि बावजूद मिली-जुली बैठकके दो तिहाई न्यासी प्रब ध-मण्डलके निर्देशोको सही नही माने तो ऐसे निर्देश व्यथ हो गये माने जायेगे।

(१) श्रीयुत श्रीकृष्णदास जाजू, कोषाध्यक्ष (वर्धा)
(२) श्रीयुत जे० सी० कुमारप्पा (वर्धा)
(३) श्रीयुत जमनालाल बजाज (वर्धा)
(४) डा० खानसाहब (उ० प० सीमाप्रात)
(५) श्री गोपीच द (लाहोर)
(६) श्रीयुत वैकुठ एल० मेहता (बम्बई)

किसीके इस्तीफा देनेसे या मर जानेसे अथवा किसी अ य कारणसे कोई स्थान खाली होनेपर उसकी पूर्ति बाकी यासी पाच वपसे चले आ रहे साधारण सदस्योमे से करेगे, या यदि स्थान खाली होनेके समय सघके अस्तित्वकी अवधि उतनी न हुई हो तो वह जगह उन सदस्योकी सूचीमे स भरी जाये जो उस समय हा और ३१ माच १९३५को या उससे पूव सदस्य बन चुके हो।

७ निम्नलिखित व्यक्ति सघके सस्थापक सदस्य होगे और यही प्रथम प्रब ध-मण्डल बनायेगे। यह प्रब ध मण्डल आज ३ फरवरी १९३५ से लेकर सात सालतक पद पर रहेगा। साथमे वे सदस्य भी होगे जो यहाँपर दिये गये ढगसे बादमे लिये जायेगे।

(१) श्रीयुत श्रीकृष्णदास जाजू
(२) श्रीयुत जे० सी० कुमारप्पा
(३) श्रीमती गोसीबहन कैप्टेन
(४) डॉ० खान साहब

१ देखिए पृ० २७०७१ और २७४।

(५) श्रीयुत शूरजी वल्लभदास
(६) डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष
(७) श्रीयुत शकरलाल बैंकर
(८) श्रीयुत लक्ष्मीदास पी० आसर

श्रीयुत श्रीकृष्णदास जाजू प्रथम अध्यक्ष होगे और श्रीयुत जे० सी० कुमारप्पा सगठनकर्त्ता और सचिव।

प्रथम प्रबन्ध-मण्डलके कार्य कालकी समाप्ति पर बादके मण्डलोका चुनाव हर तीन साल बाद वे साधारण सदस्य अपने बीचमे से करेगे जो कमसे-कम तीन सालसे सदस्य है।

मण्डलका प्रत्येक सदस्य अलग-अलग ओर सम्मिलित रूपसे सघकी नीति अमलमे लानेके लिए जिम्मेदार होगा ओर इसलिए उससे आशा की जायेगी कि जब मण्डलकी बैठक न हो रही हो तब अपनी योग्यतानुसार उसका प्रतिनिधित्व करे ओर अपने प्रभाव-क्षेत्रमे उसकी नीति ओर कार्यक्रम पर अमल करे।

८ कोई भी व्यक्ति जो इसके साथ दी गई शपथ लेता है, जिसकी सिफारिश प्रबन्ध-मण्डलका कोई सदस्य करता है और जिसका दाखिला उक्त मण्डल स्वीकार कर लेता है, वह सघका साधारण सदस्य होगा।

९ साधारण सदस्योमे स मण्डल एजेट चुन सकता है, जो बिना किसी तनख्वाहके किसी गाव, गावो या जिलेमे मण्डलका प्रतिनिधित्व करेगे ओर वे अपने कार्यक्षेत्रके ज्ञान, अपनी सगठन क्षमता और अपने क्षेत्रमे प्रभावशाली होनेक कारण चुने जायेगे और वे उन उपनियमोका पालन करनेके लिए बाध्य होगे जिनमे उनके कर्त्तव्य बताये गये है।

१० एजेट और साधारण सदस्योसे भिन्न अवैतनिक कार्यकर्त्ता होगे और उन्हे मण्डलका कोई सदस्य या एजेट मान्यता देगा। ऐसे कार्यकर्त्ता सघकी कुछ ठोस सेवा करेगे।

११ वैतनिक कार्यकर्त्ताओको या तो मण्डल ,या ऐसे व्यक्ति जिन्हे इसका अधिकार दिया गया हो, चुनेगे। दूसरी हालतमे, मण्डल द्वारा उनके चुनावकी पुष्टि जरूरी होगी। ये कार्यकर्त्ता अपना पूरा समय ओर ध्यान सघके कार्यमे लगायेगे।

१२ कोई भी व्यक्ति जो सघके उद्देश्यसे सहानुभूति रखता है और कमसे-कम १०० रु० सालाना देता है, वह सघका सहयोगी सदस्य होगा और जो व्यक्ति एक ही बारमे १००० रु०की राशि देगा, वह आजीवन सहयोगी सदस्य गिना जायेगा।

३१ जनवरी तक कुल प्राप्ति ११,२६५-७-६ की थी।

फोरमैंस क्रिश्चियन कालेजके प्रिंसिपल डॉ० एस० के० दत्त सलाहकार मण्डलमे रहनेको राजी हो गये है।

श्रीयुत मोहनलाल कुँवरजी (बम्बई) और सोनीराम पोद्दार (रगून) आजीवन सहयोगी सदस्य बन गये है और श्रीयुत शालिग्राम रामचन्द्रजी (धूलिया), रामेश्वरदास जोहारमल (धूलिया) और वेनीलाल मोदी (बडौदा) साधारण सहयोगी सदस्य बने है।

सम्बन्धन

सम्बन्धनके लिए निम्नलिखित नियम बनाये गये और पास किये गये

१ जिन संस्थाओंके उद्देश्योंमें ग्रामोद्योगोंकी प्रगति करना और ग्रामीणोंका हित करना है और जिनके संविधान और नियमोंमें कोई ऐसी चीज नहीं है जो इस संघके आदर्शोंके प्रतिकूल हो वे संघसे सम्बद्ध किये जा सकते हैं, बशर्ते कि वे यह वचन दें कि वे संघके विद्यमान नियमों और विनियमोंका तथा उपनियम सं० ८ के अधीन प्रबन्ध मण्डल द्वारा समय-समयपर बनाये जानेवाले नियमों और विनियमोंका पालन करेंगे।

२ संघ ऐसी सम्बद्ध संस्थाओंकी जाँच और निगरानी करेगा।

३ हर तीसरे महीने वे उस अवधिमें किये गये अपने कामकी रिपोर्ट देंगी।

४ सम्बन्धनकी फीस १२ रु० सालसे कम नहीं होगी।

५ ऐसी सम्बद्ध संस्थाओंको संघ द्वारा प्रकाशित समग्र साहित्यकी निःशुल्क प्रतियाँ और सलाह तथा मार्गदर्शन पानेका अधिकार होगा।

प्रमाणीकरण

प्रमाणीकरणके लिए निम्नलिखित नियम बनाये गये व पास किये गये

१ जो संस्थाएँ और व्यक्ति इस संघके कार्यक्षेत्रमें आनेवाली ग्रामोत्पादित वस्तुओंका व्यापार करनेको तैयार हैं और जो संघके नियमों और विनियमों तथा संघकी तरफसे प्रबन्ध मण्डल द्वारा समय-समयपर बनाये जानेवाले नियमोंके अनुसार चलनेका वायदा करते हैं, वे प्रमाणित किये जा सकते हैं।

२ संघ इन प्रमाणीकृत संस्थाओंकी जाँच व निगरानी करेगा तथा वे समय-समयपर, जब भी उनसे कहा जायेगा तब, उनके कार्यके सम्बन्धमें केन्द्रीय कार्यालयको जिस जानकारीकी जरूरत होगी, वह जानकारी देंगी।

प्रमाणीकृत संस्थाओंके अधिकारी और कर्मचारी तथा प्रमाणित व्यापारियोंसे यह आशा की जायेगी कि वे अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके सिद्धान्तोंके अनुसार चलें।

३ वे मण्डल या मण्डल द्वारा इस कामके लिए अधिकृत व्यक्ति द्वारा निर्धारित फीस देंगे।

४ ऐसी संस्थाओंको इस संघ द्वारा प्रकाशित समस्त साहित्यकी निःशुल्क प्रतियाँ तथा वे जब भी जो सलाह और मार्गदर्शन मांगें, वह पानेका हक होगा।

विविध

यह तय किया गया कि जो एजेंट और कार्यकर्त्ता आवेदन करें उन्हें 'हरिजन' की एक एक प्रति (अंग्रेजी, हिन्दी या गुजराती) निःशुल्क दी जाये।

यह तय किया गया कि किसी एजेंट द्वारा जो भी सहयोगी सदस्य बनाये जायें उनसे प्राप्त सालाना चन्देका ७५ प्रतिशत उसी जिलेमें कामके लिए दिया जाये, बशर्ते कि दाताने उसे किसी खास क्षेत्र या कार्यके लिए ही कहकर न दिया हो।

बम्बईके श्रीयुत वैकुंठराय एल० मेहता, बिहारके बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद और लाहौरके श्री गोपीचन्द भार्गव प्रबन्ध-मण्डलके अतिरिक्त सदस्य नियुक्त किये गये।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २२-२-१९३५

परिशिष्ट–२

अ० भा० ग्रा० सं० के सहयोगी सदस्यों, वैतनिक कार्यकर्त्ताओं तथा अवैतनिक कार्यकर्त्ताओंके लिए प्रतिज्ञा-पत्र[1]

सहयोगी सदस्यके लिए

संघके प्रति सहानुभूति रखनेवाले व्यक्तिके नाते मैं जहाँतक हो सकेगा अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ द्वारा चलाये जानेवाले आन्दोलनकी भावनाको अपनाऊँगा और यथासम्भव गाँवोंमें बनाई गई चीजोंका ही प्रयोग करूँगा।

तारीख हस्ताक्षर

वैतनिक कार्यकर्त्ताके लिए

मैं अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके उद्देश्यमें विश्वास रखता हूँ और अपनी योग्यतानुसार केवल ग्रामवासियों द्वारा तैयार की गई चीजोंका ही उपयोग करनेका प्रयत्न करूँगा। मैं जब जिन लोगोंके नियन्त्रणमें रखा जाऊँगा तब उनके निर्देशोंका ईमानदारीसे पालन करूँगा और उनको अमलमें लाऊँगा।

तारीख हस्ताक्षर

पुष्टि-तिथि

अवैतनिक कार्यकर्त्ताके लिए

मैंने अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघका उद्देश्य और संविधान पढ़ा है और उस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए प्रयत्नशील कार्यकर्त्ताके नाते मैं अपनी योग्यता भर प्रयत्न करूँगा कि स्वयं ग्रामोंकी तैयार की गई चीजें प्राप्त करूँ और अपने उपयोगमें लाऊँ और अपने पड़ोसियों तथा उन लोगोंमें जिनके सम्पर्कमें मैं आऊँ, उन चीजोंके प्रयोगका प्रचार करूँ। मैं ग्रामवासियोंकी ऐसी सभी सेवाएँ करनेके हर मौकेकी तलाशमें रहूँगा जो मेरी ताकतमें होगी। अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघकी ओरसे की गई अपनी कार्यवाहियोंकी रिपोर्ट मैं संघके सचिवको हर तीसरे महीने भेजूंगा।

तारीख हस्ताक्षर

अनुमोदनकर्त्ता

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २२-३-१९३५

१. इनका मसविदा संघकी १६/१८ मार्च, १९३५ को हुई बैठकमें तैयार किया गया था, देखिए पृ० ३६४ भी।

सामग्रीके साधनसूत्र

गाधी स्मारक सग्रहालय, नई दिल्ली गाधी साहित्य और सम्बन्धित कागजातका केन्द्रीय सग्रहालय तथा पुस्तकालय। देखिए खण्ड १, पृष्ठ ३४९ (प्रथम सस्करण) तथा पृष्ठ ३५५ (द्वितीय सस्करण)।

जामिया मिलिया इस्लामिया पुस्तकालय, नई दिल्ली।

नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

साबरमती सग्रहालय पुस्तकालय तथा आलेख सग्रहालय जिसमे गाधीजीके दक्षिण आफ्रिकी काल तथा १९३३ तकके भारतीय कालसे सम्बन्धित कागजात रखे हैं। देखिए खण्ड १, पृष्ठ ३४९ (प्रथम सस्करण) तथा पृष्ठ ३५५ (द्वितीय सस्करण)।

'अमृत बाजार पत्रिका' कलकत्तासे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'गुजराती' बम्बईसे प्रकाशित गुजराती साप्ताहिक।

'बॉम्बे क्रानिकल' बम्बईसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'लीडर' इलाहाबादसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'वीणा' श्रद्धाजलि अक, अप्रल–मई, १९६९, मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति प्रेस, इन्दौर।

'हरिजन' हरिजन सेवक सघकी ओरसे प्रकाशित अग्रेजी साप्ताहिक।

'हरिजनबन्धु' 'हरिजन' का गुजराती सस्करण।

'हरिजनसेवक' 'हरिजन' का हिन्दी सस्करण।

'हितवाद' नागपुरसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हिन्दुस्तान टाइम्स' नई दिल्लीसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'हिन्दू' मद्राससे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'इसिडेट्स आफ गाधीजीज लाइफ' (अग्रेजी) चन्द्रशकर शुक्ल द्वारा सम्पादित, वोरा एण्ड क० पब्लिशास, बम्बई, १९४९।

'कन्टेम्पररि इडियन फिलासफी' (अग्रेजी) डा० एस० राधाकृष्णन और जे० एस० म्यूरहेड, दि मैकमिलन कम्पनी, न्यूयाक, १९३६।

'टू सर्वेन्ट्स आफ गाड' (अग्रेजी) महादेव देसाई, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली, १९३५।

'दिल्लीका राजनैतिक इतिहास' भाग–२ राजेन्द्रप्रसाद, अर्जुन इलैक्ट्रिक प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली, १९३५।

'नरसिंहरावनी रोजनीशी' (गुजराती) नरसिंहराव भोलानाथ दिवेटिया, गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद।

'पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद' काका कालेलकर द्वारा सम्पादित, जमनालाल सेवा ट्रस्ट, वर्धा, १९५३।

'बापुना पत्रो–६ गं० स्व० गंगाबहेनने' (गुजराती) काका कालेलकर द्वारा सम्पादित, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, १९६०।

'बापुना पत्रो–२ सरदार वल्लभभाईने' (गुजराती) मणिबहन पटेल द्वारा सम्पादित, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, १९५२।

'बापुना पत्रो–४ मणिबहन पटेलने' (गुजराती) मणिबहन पटेल द्वारा सम्पादित, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, १९६०।

'बापुना पत्रो–९ श्री नारणदास गांधीने' भाग–२ (गुजराती) नारणदास गांधी द्वारा सम्पादित, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६४।

'बापुनी प्रसादी' (गुजराती) मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९४८।

'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष', हीरालाल शर्मा, ईश्वरशरण आश्रम, इलाहाबाद, १९५७।

'मध्य प्रदेश और गांधीजी' सूचना एवं प्रकाशन निदेशालय, मध्यप्रदेश, १९६९।

'महात्मा लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी' खण्ड–४ (अंग्रेजी) डी० जी० तेन्दुलकर, विट्ठलभाई के० झवेरी और डी० जी० तेंदुलकर, बम्बई, १९५२।

'माई डियर चाइल्ड' (अंग्रेजी) एलाइस एम० बार्न्ज द्वारा सम्पादित, नव-जीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, १९५६।

अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन कार्य विवरण, इन्दौर।

पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास कागजात नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्लीमें सुरक्षित।

प्यारेलाल कागजात, श्री प्यारेलालके पास सुरक्षित कागजात।

महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरी स्वराज्य आश्रम, बारडोलीमें सुरक्षित।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१६ दिसम्बर, १९३४ से २४ अप्रैल, १९३५ तक)

१६ दिसम्बर गाधीजी वर्धामे थे।

२०-दिसम्बर अ० भा० ग्रा० स० के उप नियमोको समाचारपत्रोके लिए जारी किया।

२९ दिसम्बर प्रात काल दिल्ली पहुँचे। 'एसोसिएटेड प्रेस' के प्रतिनिधिको भेट।

३० दिसम्बर हरिजन औद्योगिक प्रदशनी, दिल्लीमे भाषण।

१ जनवरी 'हिदुस्तान टाइम्स' के प्रतिनिधिको भेट।

२ जनवरी या उससे पूव हरिजन सेवक सघके केद्रीय बोडकी बैठकमे भाषण।

२ जनवरी हरिजन सेवक सघके नये सविधानके स्वीकृत होनेसे पहले उसके सम्बधमे बातचीत। हरिजन वस्ती, दिल्लीका शिलान्यास किया। नरेलामे हरिजन सम्मेलनका उदघाटन किया।

३ जनवरी काल हीथको लिखे पत्रमे सयुक्त ससदीय समितिकी रिपोटपर अपनी आपत्तिया बतायी।

४ जनवरी श्री रघुवीर नारायणसिहके नेतत्वमे आये शिष्टमण्डलने गाधीजीसे भेट की तथा ग्रामोद्योगोके पुनरोत्थानमे आनेवाली कठिनाइयोको उनके आगे रखा। उन चमारोके शिष्टमण्डलसे भी बातचीत की जिनके साथ गाँवके जमीदारने दुव्यवहार किया था।

५ जनवरी अखिल भारतीय हरिजन सेवक सघके केद्रीय बोडकी बैठकमे भाग लिया।

८ जनवरी अहमदाबाद मिल मालिक सघके शिष्टमण्डलके साथ बातचीत। श्रीमती सी० कुटटन नायरको भेट।

९ जनवरी हालिद अदीब हानुमको भेट।

१० जनवरी समाजवादियोके साथ बातचीत।
सरकारके ग्राम विकास योजना सम्बधी परिपत्रके बारेमे समाचारपत्रोको भेट।

११ जनवरी अहमदाबादके मिल-मालिको तथा मजदूरोके साथ बातचीत।

१२ जनवरी पशु प्रजनन केन्द्र, दिल्लीमे गये।

घ० दा० बिडला तथा अन्य लोगोके साथ हरिजनोत्थान कार्यके सम्बन्धमे बातचीत।

१३ जनवरी अहमदाबादके मिल मालिको और मजदूरोके झगडेको निपटाया।

१४ जनवरी "टू सर्वेन्ट्स ऑफ गाड" का प्राक्कथन लिखा।

१५ जनवरी माडन हाई स्कूल, दिल्लीमे गये। राजेन्द्रप्रसाद और च० राजगोपालाचारीके साथ बातचीत।

१६ जनवरी काग्रेस काय समितिके सदस्योके साथ विचार-विमर्श।

१७ जनवरी आमन्त्रित व्यक्तिकी हैसियतसे काग्रेस ससदीय दल्की बैठकमे भाग लिया।

१८ जनवरी काग्रेस असेम्बली पार्टीकी प्रथम बैठकमे भाग लिया।

१९ जनवरी जामिया मिलियामे श्रीमती हालिदा अदीब हानुमकी व्याख्यान सभाकी अध्यक्षता की। सासियोकी बस्तीमे भाषण।

२१ जनवरीसे पूव सतति निग्रहकी समथक श्रीमती एडिथ हावे मार्टिनके साथ परिचर्चा।

२१ जनवरी 'यूनाइटेड प्रेस' के प्रतिनिधिको भेट।

२३ जनवरी कस्तूरबा गाधी, डा० जाकिर हुसैन, कृष्णन नायर तथा अन्य लोगोके साथ दिल्लीके इदगिद अपनी त्रिदिवसीय गाव-यात्रा शुरू की तथा नरेला और बखनीर गये।

२४ जनवरी थड, सुलतानपुर तथा बवाना गावोमे गये।

२५ जनवरी हुमायुपुर, मुनीरका तथा रामताल गावोमे गये।

२७ जनवरी दिल्लीमे हुई विधान-सभाके सदस्योकी बैठकमे भाषण।

२८ जनवरी दिल्लीसे वर्धाके लिए प्रस्थान।

२९ जनवरी वर्धा जाते हुए नागपुर स्टेशनपर काग्रेसियोसे कहा कि लडकियोको औद्योगिक शिक्षा देनेकी आवश्यकता है।

४ फरवरी वर्धामे अ० भा० ग्रा० सघकी बैठकमे भाग लिया।

९ फरवरी एडिथ हावे मार्टिनके साथ बातचीत।

११ फरवरी वर्धाके लक्ष्मीनारायण देवस्थानमे भाषण।

२२ फरवरी रसोई-सभा, वर्धामे भाषण।

२३ फरवरी नागपुरमें इतवारी खादी भण्डारका उद्घाटन किया।
सीताबर्डी खादी भण्डार नागपुरके उद्घाटन-अवसरपर भाषण। गांवके कार्य-कर्ताओंकी बैठकमें भाषण। नागपुरकी सार्वजनिक सभामें भाषण।

२४ फरवरी वर्धा लौटे।

१० मार्च वर्धामें अखिल भारतीय चरखा संघके सदस्योंके साथ विचार विमर्श।

११-१२ मार्च वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीके साथ बातचीत।

१६-१८ मार्च अ० भा० ग्रा० संघके बोर्डकी बैठकमें भाषण। अ० भा० ग्रा० संघके सदस्योंके साथ बातचीत।

२२ मार्च चार सप्ताहका मौन-व्रत शुरू किया।

२३ मार्च टी० ए० के० शेरवानीकी मृत्युपर संवेदना-सन्देश भेजा।

१० अप्रैल जयकृष्ण भणसालीके साथ बातचीत।

१९ अप्रैल चार सप्ताहका मौन व्रत तोड़ा। वर्धामें प्रार्थना-सभामें भाषण, शामको इन्दौरके लिए प्रस्थान।

२० अप्रैल हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, इन्दौरमें भाषण। इन्दौरमें ग्रामोद्योग प्रदर्शनीके उद्घाटन-अवसरपर भाषण।

२३ अप्रैल हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, इन्दौरमें भाषण। इन्दौरमें सार्वजनिक सभा, गुजरातियोंकी सभा तथा हरिजन-स्कूलमें भाषण।

शीर्षक-सांकेतिका

विविध

साकेतिका

आ

इ

ई

ख

ग

फ

ब

भ

म